

1374

తెలంగాణ ప్రజాపత్రిక

1934

నవంబరు

సోషలిస్టు పత్రిక

రాజ్య ప్రభుత్వం కులసంఘము క్రొత్త పాఠశాలలు కట్టించునట్లు

క్ర.సం.	గ్రామం	కులం	బుద్ధ	సంఖ్య	మొ.ర.	మొ.ర.	మొ.ర.
9	142 47 51	145 41 46	102 59 8	154 46 43	180 17 18	124 36 46	299 48 12
10	143 45 51	158 2 3	103 37 0	156 28 45	180 28 40	125 50 41	299 44 6
11	144 50 16	170 34 12	104 14 51	158 10 47	180 40 0	127 4 36	299 40 0
12	145 33 33	183 18 55	104 52 30	159 48 18	180 51 55	128 18 42	299 36 28
13	146 41 0	196 18 36	105 30 9	161 25 49	181 3 50	129 32 48	299 32 55
14	147 39 25	209 28 33	106 7 48	163 3 20	181 15 44	130 46 54	299 29 22
15	148 37 53	222 53 11	106 45 27	164 40 51	181 27 38	132 1 8	299 25 49
16	149 36 28	236 32 24	107 23 6	166 18 22	181 39 32	133 15 6	299 22 16
17	150 35 0	250 36 10	108 0 18	167 49 41	181 51 27	134 29 23	299 18 42
18	151 31 31	264 35 7	108 37 30	169 21 0	182 3 22	135 43 40	299 15 7
19	152 31 11	278 59 30	109 14 42	170 42 19	182 15 16	136 57 57	299 11 33
20	153 30 48	293 34 6	109 51 54	172 23 30	182 27 10	138 12 14	299 7 59
21	154 29 28	308 17 36	110 29 5	173 54 57	182 39 5	139 26 30	299 4 25
22	155 28 9	323 2 35	111 6 22	175 22 13	182 51 33	140 40 56	299 1 35
23	156 26 53	337 41 44	111 43 39	176 49 29	183 4 1	141 55 22	298 58 46
24	157 25 9	352 7 18	112 20 55	178 16 45	183 16 23	143 9 48	298 55 57
25	158 24 26	6 13 20	112 58 11	179 44 0	183 28 56	144 24 14	298 53 8
26	159 23 16	19 54 52	113 35 27	181 11 15	183 41 22	145 38 40	298 50 19
27	160 22 9	33 10 36	114 12 24	182 31 13	183 53 30	146 53 10	298 47 28
28	161 21 2	46 1 32	114 49 21	183 51 30	184 6 18	148 7 40	298 44 39
29	162 20 0	58 29 39	115 26 18	185 11 37	184 18 46	149 22 10	298 41 50
30	163 18 57	70 39 34	116 3 15	186 31 45	184 31 14	150 36 40	298 39 1
1	164 17 58	82 36 21	116 40 0	187 51 51	184 43 40	151 51 10	298 36 12
2	165 17 5	94 25 4	117 16 38	189 5 47	184 56 25	153 6 0	298 34 14
3	166 16 3	106 11 31	117 53 6	190 19 43	185 9 10	154 20 50	298 32 16
4	167 15 9	118 0 33	118 29 34	191 33 39	185 21 55	155 35 40	298 30 18
5	168 14 16	129 57 40	119 6 2	192 47 35	185 34 40	156 50 30	298 28 20
6	169 13 28	142 4 14	119 42 30	194 1 28	185 47 26	158 5 20	298 26 21
7	170 12 40	154 24 57	120 18 44	195 5 55	186 0 12	159 20 18	298 23 58
8	171 11 53	167 1 21	120 54 58	196 10 22	186 12 58	160 35 16	298 21 36

N. B. రాజ్య ప్రభుత్వం కులసంఘము క్రొత్త పాఠశాలలు కట్టించునట్లు

12

TEI... LIBRARY
గ్రంథాలయము. LIBRARY
Acc. No. 51458
9-4-96

క్ర.సం.	యంత్రవివరం.	కాలం	కాలం	కాలం
10	బుధచంద్రసమాగమం	8 - 26	6 8	బుధుడు
11	గురుచంద్రసమాగమం	7 - 15	6 14	గురుడు
12	శనిచంద్రసమాగమం	20 55	2 88	చంద్రుడు
13	బుధగురుయుతి	17 - 7	8 18	గురుడు
14	కుజచంద్రసమాగమం	12 - 70	8 0	కుజుడు
15	శుక్రచంద్రసమాగమం	22 - 12	7 40	శుక్రుడు

క్ర.సం.	యంత్రవివరం.	కాలం	కాలం	కాలం
12	సప్తం కుజునకు పుష్య	6 0		
15	" " ఆశ్వి	16 49		
18	" " బుధునకు శాశ	18 50		
25	" " చిత్త	14 8		
"	" " స్వాతి	40		
9	" " గురునకు స్వాతి	7 12		
10	" " శుక్రునకు మఘ	12 18		
21	" " తూ-ఫ	11 28		
28	" " కృ-ఫ	2 20		
15	" " శనికి ధనిష్ఠ	18 50		

పాఠ ముద్రణశాలము
10 సప్తం—పు.ప్ర.
మధ్యకాలం గం. 18 54
22 సప్తం—పు.ప్ర.
మధ్యకాలం గం. 19 5
22 సప్తం—పు.ప్ర.
మధ్యకాలం గం. 24 0
7 ఆశ్వి—పు.ప్ర.
మధ్యకాలం గం. 22 12

భాద్రపదమాస ఫలం:— ఈ గ్రంథము సామాన్యముగా వర్షమునందు. తజాది 8 శతకము సామాన్యముగా వర్షమునందు. సూర్యుడు మహాసంక్రమణమునందు సూర్యుడు వర్షమునందు గల్గును. రక్తద్రవ్యములకు అవగాళి కందులు, వివిధ వ్యాధులకు ధరలు ప్రారంభమగును. బహుళమునందు పెరుగును. శనియు, శుక్రుడు, కేలం, శాశ్వరి, వాగరాలకు ధర నిర్మియునది మహాసంక్రమణ తరుణము. భాద్రపదమునందు, బహుళమునందు పెరుగును, శనియు, శుక్రుడు, కేలం, శాశ్వరి, వాగరాలకు ధర నిర్మియునది మహాసంక్రమణ తరుణము. భాద్రపదమునందు, బహుళమునందు పెరుగును, శనియు, శుక్రుడు, కేలం, శాశ్వరి, వాగరాలకు ధర నిర్మియునది మహాసంక్రమణ తరుణము.

అమృతంజనము దంతి మార్గము తామర త్రైలము

అమృతంజనము దంతి మార్గము తామర త్రైలము

[illegible][illegible]

అవ్యతాంజనము: తలనొప్పి మందుకీల్ల రాక్షసబిది

రెవెన్యూ దేవరమునాపాత్ర వ గుర్తింపునకు ప్రాధికారము కలదు. అట్లయినచో గుర్తింపునకు గలదు.

రే.ది.	69			70			71			72			73			74			75			76			77			78			79			80			81			82			83			84			85			86			87			88			89			90			91			92			93			94			95			96			97			98			99			100			101			102			103			104			105			106			107			108			109			110			111			112			113			114			115			116			117			118			119			120			121			122			123			124			125			126			127			128			129			130			131			132			133			134			135			136			137			138			139			140			141			142			143			144			145			146			147			148			149			150			151			152			153			154			155			156			157			158			159			160			161			162			163			164			165			166			167			168			169			170			171			172			173			174			175			176			177			178			179			180			181			182			183			184			185			186			187			188			189			190			191			192			193			194			195			196			197			198			199			200			201			202			203			204			205			206			207			208			209			210			211			212			213			214			215			216			217			218			219			220			221			222			223			224			225			226			227			228			229			230			231			232			233			234			235			236			237			238			239			240			241			242			243			244			245			246			247			248			249			250			251			252			253			254			255			256			257			258			259			260			261			262			263			264			265			266			267			268			269			270			271			272			273			274			275			276			277			278			279			280			281			282			283			284			285			286			287			288			289			290			291			292			293			294			295			296			297			298			299			300			301			302			303			304			305			306			307			308			309			310			311			312			313			314			315			316			317			318			319			320			321			322			323			324			325			326			327			328			329			330			331			332			333			334			335			336			337			338			339			340			341			342			343			344			345			346			347			348			349			350			351			352			353			354			355			356			357			358			359			360			361			362			363			364			365			366			367			368			369			370			371			372			373			374			375			376			377			378			379			380			381			382			383			384			385			386			387			388			389			390			391			392			393			394			395			396			397			398			399			400			401			402			403			404			405			406			407			408			409			410			411			412			413			414			415			416			417			418			419			420			421			422			423			424			425			426			427			428			429		
--------	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--	-----	--	--

వ్యక్తిగతంగా ముద్రపర్చు ఈ ప్రకటనను ఈ లిప్తి పాఠశాలకు పంపించి, కలెక్టరు గారికిగా, వారు గౌరవ వహించి చర్యలు

[illegible]

అప్పుతాంజనము :- అనగా శరణాగతి మంది


చివ్రుతుల పంకజరామకృష్ణపే గణపంబడిప శ్రీధరవనామసంకల్పర కార్తీకమాస గ్రహస్థిరములు

శే.ది.	రవి	చంద్ర	కుజ	బుధ	గురు	శుక్ర	శని	రాహు	అక్షర
	° ' "	° ' "	° ' "	° ' "	° ' "	° ' "	° ' "	° ' "	అక్షర
8	202 4 48	215 47 8	139 7 50	191 54 7	192 57 7	199 25 37	298 14 36	231 55 57	
9	203 5 5	229 43 10	139 41 58	191 0 31	193 10 11	200 41 7	298 15 36	231 52 46	
10	204 5 26	243 47 37	140 16 6	190 6 55	193 23 15	201 55 26	298 16 58	231 49 35	
11	205 5 42	257 55 8	140 49 42	190 11 27	193 35 9	203 11 49	293 18 42	231 46 24	
12	206 6 4	272 3 24	141 23 18	190 16 0	193 49 3	204 27 13	298 20 44	231 43 14	
13	207 6 23	286 11 3	141 56 54	190 20 32	194 1 57	205 42 37	298 22 46	231 40 3	
14	208 6 53	300 14 23	142 30 30	190 25 4	194 14 51	205 58 1	293 24 48	231 36 52	
15	209 7 21	314 15 12	143 4 6	190 29 35	194 27 45	208 13 25	298 26 50	231 33 41	
16	210 7 47	328 16 3	143 37 6	191 18 0	194 40 39	209 23 48	298 28 52	231 30 31	
17	211 8 18	342 9 46	144 10 6	192 6 25	194 53 33	210 44 11	298 30 54	231 27 20	
18	212 8 48	355 58 26	144 43 6	192 54 50	195 5 27	211 59 34	293 32 56	231 24 9	
19	213 9 23	9 38 0	145 16 7	193 43 15	195 19 21	213 14 57	293 34 58	231 20 58	
20	214 10 0	23 5 23	145 49 7	194 31 40	195 32 15	214 30 20	29 37 0	231 17 48	
21	215 10 34	36 17 53	145 21 26	195 45 16	195 45 9	215 45 45	298 40 1	231 14 37	
22	216 11 9	49 13 13	146 53 45	196 54 52	195 58 3	217 1 10	298 43 2	231 11 26	
23	217 11 47	61 51 41	147 26 5	198 12 28	196 10 57	218 16 35	293 46 3	231 8 15	
24	218 12 2	74 12 55	147 58 25	199 2 4	196 23 51	219 32 0	298 49 4	231 5 5	
25	219 13 12	86 19 45	148 30 45	200 39 40	196 35 15	220 47 25	298 52 5	231 1 54	
26	220 13 51	98 15 27	149 2 45	202 5 21	197 47 51	222 2 51	293 55 6	230 58 43	
27	221 14 35	110 4 7	149 34 45	203 31 2	197 0 27	223 18 17	298 58 6	230 55 33	
28	222 15 2	121 51 2	150 6 43	204 55 43	197 13 3	224 33 43	299 1 7	230 52 22	
29	223 16 6	133 40 25	150 38 42	206 22 24	197 25 39	225 49 9	299 4 7	230 49 11	
30	224 17 0	145 40 37	151 10 41	207 48 5	197 38 15	227 4 35	299 7 8	230 45 0	
1	225 17 45	157 54 13	151 41 59	209 18 12	197 50 24	228 20 2	299 11 2	230 42 50	
2	226 18 37	170 26 0	152 13 17	210 43 19	198 2 33	229 35 30	299 14 55	230 39 39	
3	227 19 28	183 20 37	152 44 35	212 18 25	198 14 42	230 50 55	299 18 43	230 35 28	
4	228 20 20	196 38 49	153 15 55	213 43 33	198 26 51	232 6 23	299 21 41	230 31 18	
5	229 21 16	210 20 6	153 47 13	215 18 40	198 39 0	233 21 50	299 25 35	230 30 7	
6	230 22 7	224 23 45	154 17 49	216 50 58	199 51 9	234 37 18	299 30 23	230 26 56	

నవంబరు 1894

గ్రహయుతులు					నక్షత్రగ్రహయోగములు			పాతమన్యకాబిము
శే.ది	యుతివరం.	కాలము. గం. ని.	అంతరం. ° ' "	ఉత్తమంవరి గ్రహము.	యోగం. గం. ని.	నక్షత్రం.	గం. ని.	నక్షత్రం. — శే.ప్ర. మన్యకాలము గం. ని. రే.
14 నవం	శనిచంద్రసహగమం	8 85	2 58	చంద్రుడు	23 నవం	కుజనకు ఉప	20 42	5 నవం — శే.ప్ర. మన్యకాలము గం. ని. రే.
18 ,,	కుజచంద్రసహగమం	23 4	5 51	కుజుడు	29 ,,	బుధనకు విశాఖ	23 18	
4 డిసెం	గురుచంద్రసహగమం	15 4	6 17	గురుడు	14 ,,	శుక్రనకు విశాఖ	13 44	5 డిసెం — శే.ప్ర. మన్యకాలము గం. 4 రే.
8 ,,	బుధచంద్రసహగమం	21 25	7 17	బుధుడు	24 ,,	,, అమా	5 24	
					27 ,,	,, శ్రేణ	1 85	


కార్తీకమాస ఫలం:—కుక్షపక్షమున స్వల్పముగా వాయువు, వృద్ధియున్న గల్లును. కృత్తికపక్షములో వర్షాదేశముందు వర్ష ముండునగాని అంధ్రదేశమున గురుడు. ఈ న్ని, వస్త్రములు, కండులు, పెనగలు, విరిగి, రావడగైరాబడు ప్రాదర్భాసులో భద్రలు క్షేమముగా విహారములు పెరుగును. భాస్కరు, వెంశి, గోధుమలు, చెలికు మొదలగువాటికి కష్టముగా ధర్మ క్షేమము, బంగారము, పసుపు మొదలైనవాటికి ధర్మ నిర్వీయుంశి మాసాంతమున పెరుగును.



అమృతాంజన మనగా తలనొప్పి మందని

హిందూదేశమం దంతటను ప్రసిద్ధిచెందినది

విజ్ఞానసర్వస్వములు ఘోషించుచున్నవి



తమస్యరంజనము, శ్రీకృష్ణరంజనము, సైత్యము

గ్రహయాత్రలు					నక్షత్రగ్రహయాగములు		పాత మన్యకాలము	
తేది.	యాత్రావరం.	కాలము. గం. ని.	అంతరం. " "	ఉత్తరభంపరి గ్రహము.	యోగం. గం. ని.	18 దిశం —	నై ప్ర	
7 దిశం	శుక్రచంద్రసమాగమం	6-89	8 5	శుక్రము	8 దిశం బుధునకు	అనూ 0 85	మన్యకాలము	
1 "	శనిచంద్రసమాగమం	17-0	8 9	చంద్రుడు	10 " "	శ్రీకృష్ణ 8 18	గం. 9-18.	
9 "	కుజచంద్రసమాగమం	11-4	6 29	కుజుడు	20 " "	మూల 28 30	1 జనవరి 85 —	
1 జనవరి	గురుచంద్రసమాగమం	10-42	6 9	గురుడు	28 " "	అభిశిక్ 18 50	మన్యకాలము	
5 "	బుధచంద్రసమాగమం	18-00	5 9	చంద్రుడు	1 జన 85 "	ఉ-హ 1 2	గం. 17-30	
					10 దిశం శుక్రసమకు	మూల 5 25	మూర్త్యుల మూస	
					19 " "	అభిశిక్ 18 46	ఫలం —	
					28 " "	ఉ-హ 15 02	మందు తప్ప ముండుడు.	
					1 " "	శ్రీకృష్ణ 20 53	అరచివనముందు స్వ	
					4 " "	ఉ-హ 8 00	స్వప్నములు. వాని.	

9281 05258 1925

	1885		1886		1887		1888		1889		1890		1891		1892		1893		1894		1895		1896		1897		1898		1899		1900		1901		1902		1903		1904		1905		1906		1907		1908		1909		1910		1911		1912		1913		1914		1915		1916		1917		1918		1919		1920		1921		1922		1923		1924		1925		1926		1927		1928		1929		1930		1931		1932		1933		1934		1935		1936		1937		1938		1939		1940		1941		1942		1943		1944		1945		1946		1947		1948		1949		1950		1951		1952		1953		1954		1955		1956		1957		1958		1959		1960		1961		1962		1963		1964		1965		1966		1967		1968		1969		1970		1971		1972		1973		1974		1975		1976		1977		1978		1979		1980		1981		1982		1983		1984		1985		1986		1987		1988		1989		1990		1991		1992		1993		1994		1995		1996		1997		1998		1999		2000		2001		2002		2003		2004		2005		2006		2007		2008		2009		2010		2011		2012		2013		2014		2015		2016		2017		2018		2019		2020		2021		2022		2023		2024		2025		2026		2027		2028		2029		2030		2031		2032		2033		2034		2035		2036		2037		2038		2039		2040		2041		2042		2043		2044		2045		2046		2047		2048		2049		2050		2051		2052		2053		2054		2055		2056		2057		2058		2059		2060		2061		2062		2063		2064		2065		2066		2067		2068		2069		2070		2071		2072		2073		2074		2075		2076		2077		2078		2079		2080		2081		2082		2083		2084		2085		2086		2087		2088		2089		2090		2091		2092		2093		2094		2095		2096		2097		2098		2099		2100		2101		2102		2103		2104		2105		2106		2107		2108		2109		2110		2111		2112		2113		2114		2115		2116		2117		2118		2119		2120		2121		2122		2123		2124		2125		2126		2127		2128		2129		2130		2131		2132		2133		2134		2135		2136		2137		2138		2139		2140		2141		2142		2143		2144		2145		2146		2147		2148		2149		2150		2151		2152		2153		2154		2155		2156		2157		2158		2159		2160		2161		2162		2163		2164		2165		2166		2167		2168		2169		2170		2171		2172		2173		2174		2175		2176		2177		2178		2179		2180		2181		2182		2183		2184		2185		2186		2187		2188		2189		2190		2191		2192		2193		2194		2195		2196		2197		2198		2199		2200		2201		2202		2203		2204		2205		2206		2207		2208		2209		2210		2211		2212		2213		2214		2215		2216		2217		2218		2219		2220		2221		2222		2223		2224		2225		2226		2227		2228		2229		2230		2231		2232		2233		2234		2235		2236		2237		2238		2239		2240		2241		2242		2243		2244		2245		2246		2247		2248		2249		2250		2251		2252		2253		2254		2255		2256		2257		2258		2259		2260		2261		2262		2263		2264		2265		2266		2267		2268		2269		2270		2271		2272		2273		2274		2275		2276		2277		2278		2279		2280		2281		2282		2283		2284		2285		2286		2287		2288		2289		2290		2291		2292		2293		2294		2295		2296		2297		2298		2299		2300		2301		2302		2303		2304		2305		2306		2307		2308		2309		2310		2311		2312		2313		2314		2315		2316		2317		2318		2319		2320		2321		2322		2323		2324		2325		2326		2327		2328		2329		2330		2331		2332		2333		2334		2335		2336		2337		2338		2339		2340		2341		2342		2343		2344		2345		2346		2347		2348		2349		2350		2351		2352		2353		2354		2355		2356		2357		2358		2359		2360		2361		2362		2363		2364		2365		2366		2367		2368		2369		2370		2371		2372		2373		2374		2375		2376		2377		2378		2379		2380		2381		2382		2383		2384		2385		2386		2387		2388		2389		2390		2391		2392		2393		2394		2395		2396		2397		2398		2399		2400		2401		2402		2403		2404		2405		2406		2407		2408		2409		2410		2411		2412		2413		2414		2415		2416		2417		2418		2419		2420		2421		2422		2423		2424		2425		2426		2427		2428		2429		2430		2431		2432		2433		2434		2435		2436		2437		2438		2439		2440		2441		2442		2443		2444		2445		2446		2447		2448		2449		2450		2451		2452		2453		2454		2455		2456		2457		2458		2459		2460		2461		2462		2463		2464		2465		2466		2467		2468		2469		2470		2471		2472		2473		2474		2475		2476		2477		2478		2479		2480		2481		2482		2483		2484		2485		2486		2487		2488		2489		2490		2491		2492		2493		2494		2495		2496		2497		2498		2499		2500		2501		2502		2503		2504		2505		2506		2507		2508		2509		2510		2511		2512		2513		2514		2515		2516		2517		2518		2519		2520		2521		2522		2523		2524		2525		2526		2527		2528		2529		2530		2531		2532		2533		2534		2535		2536		2537		2538		2539		2540		2541		2542		2543		2544		2545		2546		2547		2548		2549		2550		2551		2552		2553		2554		2555		2556		2557		2558		2559		2560		2561		2562		2563		2564		2565		2566		2567		2568		2569		2570		2571		2572		2573		2574		2575		2576		2577		2578		2579		2580		2581		2582		2583		2584		2585		2586		2587		2588		2589		2590		2591		2592		2593		2594		2595		2596		2597		2598		2599		2600		2601		2602		2603		2604		2605		2606		2607		2608		2609		2610		2611		2612		2613		2614		2615		2616		2617		2618		2619		2620		2621		2622		2623		2624		2625		2626		2627		2628		2629		2630		2631		2632		2633		2634		2635		2636		2637		2638		2639		2640		2641		2642		2643		2644		2645		2646		2647		2648		2649		2650		2651		2652		2653		2654		2655		2656		2657		2658		2659		2660		2661		2662		2663		2664		2665		2666		2667		2668		2669		2670		2671		2672		2673		2674		2675		2676		2677		2678		2679		2680		2681		2682		2683		2684		2685		2686		2687		2688		2689		2690		2691		2692		2693		2694		2695		2696		2697		2698		2699		2700		2701		2702		2703		2704		2705		2706		2707		2708		2709		2710		2711		2712		2713		2714		2715		2716		2717		2718		2719		2720		2721		2722		2723		2724		2725		2726		2727		2728		2729		2730		2731		2732		2733		2734		2735		2736		2737		2738		2739		2740		2741		2742		2743		2744		2745		2746		2747		2748		2749		2750		2751		2752		2753		2754		2755		2756		2757		2758		2759		2760		2761		2762		2763		2764		2765		2766		2767		2768		2769		2770		2771		2772		2773		2774		2775		2776		2777		2778		2779		2780		2781		2782		2783		2784		2785		2786		2787		2788		2789		2790		2791		2792		2793		2794		2795		2796		2797		2798		2799		2800		2801		2802		2803		2804		2805		2806		2807		2808		2809		2810		2811		2812		2813		2814		2815		2816		2817		2818		2819		2820		2821		2822		2823		2824		2825		2826		2827		2828		2829		2830		2831		2832		2833		2834		2835		2836		2837		2838		2839		2840		2841		2842		2843		2844		2845		2846		2847		2848		2849		2850		2851		2852		2853		2854		2855		2856		2857		2858		2859		2860		2861		2862		2863		2864		2865		2866		2867		2868		2869		2870		2871		2872		2873		2874		2875		2876		2877		2878		2879		2880		2881		2882		2883		2884		2885		2886		2887		2888		2889		2890		2891		2892		2893		2894		2895		2896		2897		2898		2899		2900		2901		2902		2903		2904		2905		2906		2907		2908		2909		2910		2911		2912		2913		2914		2915	
--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--

N. B. రాజుగృహములో 180° కలిపినవో (త్రివేదినవో) కనుప్య బహుముఖము.

గ్రహములు					నక్షత్రగ్రహయోగములు			పాత ముద్రకాలము	
శ్రే.ది.	యోగివివరం.	కాలము. గం. ని.	అంతరం. ° '	శత్రుమందలి గ్రహము.	యోగం గం.	ని.	14	—	జనవరి 19
6	జన 85 శుక్రచంద్రసమాగమం	7 - 0	2 20	చంద్రుడు	8	జనవరి	మృగాశ్రవ	2	80
9	శనిచంద్రసమాగమం	5 - 88	8 82	చంద్రుడు	7	బుధునకు	శ్రవణ	17	52
26	శుక్రచంద్రసమాగమం	15 - 20	6 41	శుక్రాడు	9	పుష్య	మృ	11	10
27	బుధశనియోగి	19 - 52	0 12	బుధుడు	27	శని	ధని	0	58
29	శుక్రచంద్రసమాగమం	2 - 56	5 58	గురుడు	28	గురునకు	విశాఖ	16	18
31	బుధశనియోగి	2 - 86	1 8	బుధుడు	27	శుక్రనకు	ధని	1	50
34	శనిశుక్రయోగి	11 - 52	1 52	శని					
8	జనవరి బుధశుక్రయోగి	12 - 6	5 27	బుధుడు					

[illegible]

五

五

మార్చి 1985

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																	
1	281 28 55	282 48 21	178 24 54	808 28 2	208 21 28	809 54 6	805 22 88	277 16 11																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																													</

N. B. గాఢమును, బ్రహ్మను 180° కంటే నవ్వు (తీసివేసివచ్చు) క్రితమును ముగించు.

మాకు
మానఫలం:-
దక్షిణదేశమందు
అధిక వృష్టియను
న్న, అంధ్రదేశ
మున స్వల్పము
వార వృష్టియను
న్న గల్లము.
మాన, తిలలు,
మినుములు,
కౌసలు, ఇనుము
మొదలగునాటికి
ధరలు తక్కువ.
ధానశ్రీము,
గోధుమలు, కం
దులు, మిర్చి
మొదలగునాటికి
అదిలో ధరలేక
క్రమముగా
పెరుగును. అం
గారము పశువు
మొదలగునాటికి
కుక్క పక్షములా
ధర పెరిగి కృష్ణ
పక్షములా
క్రమముగా
శాంతము
తగును.

గ్రహములు				
శ్రేణి.	యూరిపివరం.	కాలము. గం. ని.	అంతరం. ° ।	ఉత్తరమందిరి గ్రహము.
4	శనివం ద్రసమాగమం	21 - 4	8 55	చంద్రుడు
5	బుధశనిద్రసమాగమం	8 - 21	0 32	బుధుడు
"	కుక్రశనిద్రసమాగమం	5 - 35	6 8	చంద్రుడు
15	బుధశనియూరి	9 - 43	8 31	బుధుడు
28	కుజశనిద్రసమాగమం	7 - 38	6 34	కుజుడు
35	గురుశనిద్రసమాగమం	14 - 7	5 49	గురుడు
8	బుధశనిగ్రహము	17 - 19	0 56	బుధుడు
4	శనిగ్రహము	18 - 39	4 21	శనిగ్రహము

నక్షత్రగ్రహయోగములు			సాల మధ్యకాలములు		
	యోగం.	గం. ని.	11 ఫిబ్రవరి	—	మధ్యకాలం
11 ఫిబ్రవరి కుజనకు చిత్ర	12	12			మధ్యకాలం
18 " " స్వాతి	18	20			గం. 6-48.
10 " శుక్రనకు కరకపిష	8	40 22			" — 50 ప్ర
20 " " పూ-భా	5	50			మధ్యకాలం
					గం. 10-2

శుభమునూర్తములు: — మాకు కుడ 3 ము
వారం ఉ. భా. మిసం అ. ౨౬-గరి వివాహమును. కు ౫
కుక్రవారం అగ్ని ధమస్సు అ. ౨౫-ర. ఉపనయన. కు ౧౦
బుధవారం మగ్గి పేదం ఉ. ౧౧-౧౩ అన్న పానము

ఈ దా సమకాలిక ప్రసిద్ధిని పొందినది ఆ 19-20 వినానాడును. ఈ గాకనీకవారం ప్రస్తుత మినం ఆ 20-21 వినానాడును. ఈ గాకనీకవారం ప్రస్తుత కాలం ఆ 21-22 వినానాడును. ఇక ముగిసినది ఆ. ప. కాలం ఆ 22-23 వినానాడును.

మజచార:	బంగు శత్రు బు ౨-౧౦	గరమం వికా 3 కులాయం	బజు అశ్వి 3 కు ౧౨-౧౦				
కూబుది వక్ర వ్యా ౧-౦	రళ శత్రు బు ౨-౫౦	వక్రీ గురు ౪౦-౦	రళ అశ్వి 3 కు ౫౬-౨౦				
బడమం చిగవక్ర 3౦-౦	ఉమం శత్రు బు 3 ౩-౪౪		ఇబు భరగ కు ౪౦-3 ౨				
	౪౫ పూభా ౧ బు ౪౫-౧౦	మృగచార:	గౌత భర ౨ కు ౨౬-౨౦				
బుధచార:	౧౨౮ పూభా ౨ బు ౧౬-౧౬	కురకు శేవత కుక్ర: 3 ౫-౧౦	గర మ: భర 3 కు ౧౨-3				
కూబు భని ౨ బు ౬-౪౦	గరమ పూభా 3 బు ౨౦-3 ౦	ఇసో రేవ 3 కుక్ర: ౧౨-౨౦	శనిచార:				
ఇసో భని 3 కుం శే 3 ౬-౪		౧౦ గు శేవత కుక్ర: 3-౧౪	కుర కు ప్రాచీన కృని:				
గౌగ కు భర బు ౨౦-౪౦	గురుచార:	౧౨౪ అశ్వి ౧ కు ౪౬-౨౩	కుం గు శత్రు శని: ౫౫-౦				
గర సో శత్రు బు 3 ౫-3 ౪	కుల ఆ గురు వ. కారం భ:	గర మం అశ్వి ౩ కు 3౦-3 ౨	కాచు వ. కుచార: ౫౫-౦				

అమృతాంజనము

అనగా తలనొప్పి మందని ఆసేతుహిమూదలమందంతటను
ప్రసిద్ధిచెందినదనియు విజ్ఞానసర్వస్వములు ఘోషించుచున్నవి
తలనొప్పి, మెడనొప్పి, ఒంటితలనొప్పి, వాతనొప్పి, వీపునొప్పి
యివి యవి యన నేల? సకలమైన నొప్పులను పరిహారును
ప్రతిపాపుయందును దొరకును.

బొంబాయి, మద్రాసు,

అమృతాంజనం డిపో,

కలకత్తా, రంగూను.

ఆంధ్ర విజ్ఞాన సర్వస్వము

(రెండవ ముద్రణము) మొదటి సంపుటము

ఇందు చరిత్రలు, ప్రకృతికాస్త్రములు, దీప్తికములు, నీతి, మత, సాంఘిక, చైతన్య, రాజకీయాది
విషయములు, భూగోళము, వ్యాయము, శిల్పము, తోయకము మొదలగు సమస్తవిషయములు చర్చింపబడును.

ఈ సంపుటమున 'ఆ' నుండి 'అధ్యర్థ' వఱకు గల నాలుగువందల షడములకు షడబదింపిన విషయ
ములు చక్కగా వివరింపబడినవి. అంధముగ ముద్రితములయిన రంగుల బొమ్మలు ఎనిమిది, సాదాబొమ్మలు
౧౩౫ ఉన్నవి.

దెబ్బి నాలుగుపుటలపైజాన ౬౦౦ పుటలు, మేరైనకాగితము. బంగారురేకు చెక్కడపు అచ్చుకట్టు,
పేరు మొదలయినవి కల చక్కని స్వదేశీయ తోలుకైండు. వెల పది రూపాయలు మాత్రము. తపాలు లేక, రైలు
ఖర్చులు ప్రత్యేకము.

తపాలు వ్యయము ఒకటిన్నర రూపాయ, రైలుద్వారా అయిన, ఖర్చు దూరమునుబట్టి ఎచ్చును, తగ్గను
వచ్చును. రు. ౧౧-౦-౦ మణిఅర్థరూపాయా పంపినవారికి పుస్తకము రిజిస్టరు తపాలుద్వారా పంపబడును.
వి. పి. గా పంపగోరువారు అయిదు రూపాయలు అడ్వాన్సు పంపవలెను. చిరునామా (అద్రేసు) స్పష్టముగా
వ్రాయవలెను. రైలుద్వారా పంపగోరువారు తమ గ్రామమునకు దగ్గరపండు స్టేషన్ పేరు తెలుపవలెను.

కొలదిప్రకారే నిలువయున్నది. త్వరపడవలయును. రెండవసంపుటము త్వరలో వెలువడవచ్చును.

మనోజుడు, ఆంధ్ర విజ్ఞాన సర్వస్వ కార్యాలయము,

నెం. ౭, తంజునెట్టి రోడ్, మద్రాసు.

హిందీ తెలుగు భాషాభివృద్ధి	0	6	0
మొదటి వార్షికము	0	6	0
ఆరోగ్యసాధనము	0	4	0
సామాన్యజీవితము	0	8	0
శిశుసామగ్రి	0	4	0
నవనాళిచరిత్రము	0	12	0
నవలనిర్మితము	1	8	0
కామమునుండి	0	4	0
సర్వవిద్యుత్తు	1	0	0
మనశ్శాస్త్రములపై పరిశోధనలు	1	0	0
కళాకళలు చరిత్ర	1	4	0
భగవద్గీత - సంస్కృతము (తెలుగులోకి) వాల్మీకి	1	8	0
సంప్రదించు (పరి 1-2)	1	4	0
శిశువుల కళానిర్మాణము	1	0	0
మొదటి వార్షికము	1	0	0
మనశ్శాస్త్రము	1	0	0
అభివృద్ధి	1	0	0
అభివృద్ధి	8	0	0
అభివృద్ధి	0	1	0

అన్యుతాంజనము వనమూలికలచే తయారు చేయబడినది.

అ మృతాంజనం డిపో

వారి

తామర తైలము

డబ్బీ 1-4 0-6-0.

12-8 8-8-0.

తామర ఒకవిధమైన పురుగులవలన చర్మము మీదగాని, లోనగాని, పెండ్లుకలలోగాని, గోళ్లలోగాని, పుట్టవచ్చును. పురుగులలో భేదములబట్టి తామరలోను రెండు మూడు భేదములు గలవు.

గుర్తులు :— దురద, ఉంగరములవంటి చుట్టు, పొక్కులు, రసి గాఢుట, పెండ్లుకలు ఊడిపోవుట మొదలగునవి కొంచెముగా లేచి శరీరమం దంతట వ్యాపించి నిద్రపట్టని జల యేర్పడును.

ఒకసారి ఈ తైలము వాడి చూచిన మీఠే నిజము తెలియగలదు.

మాడరాను, బొంబాయి, అ మృతాంజనం డిపో,

కలకత్తా, రంగూన్.

మోహినీ తైలము

శ్రీ పురుషూని వాడుటకు యోగ్యమైనది.

5 తులీ నూనెగల సీసా 1-8 రూ. 0-12-0.

మెదడునకు, కంటికి చలువ నిచ్చి సౌందర్యమును పెంపొందించి కుసులను బెంచును. మనోహరమగు సువాసన నిచ్చి ఆనందమును కలిగించును. నుఖనిద్ర, విశ్రాంతిల నిచ్చును.

దంత చూర్ణము

డబ్బీ 1-8 0-2-0.

12-8 1-4-0.

పటిపోటును బాపి, నోటి దుర్గంధమును బోగొట్టి పండ్లు తోముటకు బాగుండును. చిగుళ్లనుండి రక్తము కారకుండును.



2,22,00,000 ఆంధ్రమహాజనులకు ఇది యొక్కటే దైనికపత్రిక.

ఆంధ్రదేశవార్తలను, భారతదేశవార్తలను ప్రపంచవార్తలను, ఏరోజున కారోజున ప్రకటించుచుండును. వార్తలకు పంబంధించిన పటములు ప్రచురింపబడును. ఆంధ్రపత్రికను మించిన పత్రికయే లేదు. ఆంధ్రుల జ్ఞేమమును పెంపుచేసి ఆంధ్రత్వసిద్ధికై పోటునడుపుతూ ఆంధ్రపత్రికయే. ఆంధ్రపత్రికను పోషించుట ఆంధ్రమహాజనుల ప్రధానవిధి యగుచున్నది. కైలి నీలభాషా ఎల్లరకును గ్రాహ్య మగురీతిని పత్రికావ్యాసము లలరాచునుండును.

చందా యేర్పాట్లు

దిన పత్రిక

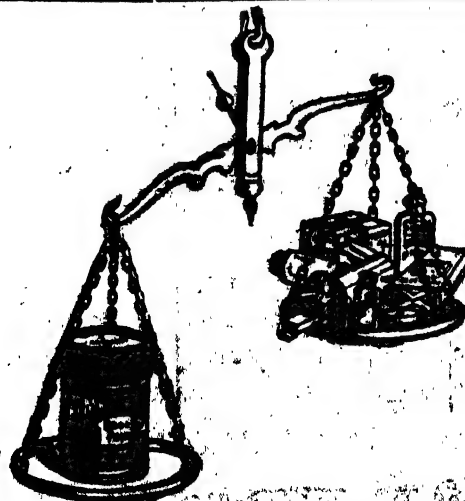
వాతపత్రిక

నూతనసంవత్సరాది నంచిక

దినపత్రిక సంవత్సర చందా రూ. 24 0 0	వాతపత్రిక సంవత్సరం 1-8, దినపత్రిక సంవత్సర చందాదారులకు ... 1 0 0
అర్ధ సంవత్సరము ,, ,, 12 0 0	కలకత్తా రూ. 4 0 0 దినపత్రిక సంవత్సరపు తక్కువ చందాదారులకు 1 4 0
మూడు నెలలు ,, ,, 6 4 0	వారపత్రిక సంవత్సరమునకు వాతపత్రిక చందాదారులకు ... 2 4 0
నూనెమునకు ,, ,, 2 2 0	తక్కువచందాకు పంపబడును ... 2 0 0

(వి. సి. ఖర్చులు ప్రత్యేకము.)

ఆంధ్రపత్రికా కార్యాలయము, నెం. 7, కలకత్తా పోస్ట్ బాక్సు, మద్రాసు.

[illegible]

ਦੀਨਾ

యితరమందు లేనియు
సరితగాగజాలరు

స్వచ్ఛమైన

ఆమృతాంజనం

మదరాసు,

హాంబూర్గ్,

అనుభవం దీని,

1944

SECRET



జానకమ్మ, మధరాను, పరిమళకాంక్షిని దీనిలో, పరిమళకత్తా, రంగులు.

కలకత్తా రంగు.

ఆత్మతాంజనము

తల్లి నొప్పులకు చికిత్స

తల్లి నొప్పులకు చికిత్స

అంధునికానికీ, అక్షునికీ మధరాను.

❖ అమృతాంజనము ❖

కీళ్లనొప్పులు
 షార్కనొప్పులు
 కణితనొప్పులు
 వాయువుపోట్లు
 తేలు-జెడ్డికాట్లు
 వక్షనాతము
 పడిసేము

మాన్యురు.



అమృతాంజనము

అస్తి
 నొప్పులకు చివ్యామృతము
 అమృతాంజనం డిపా
 హంబాయి ౬ మదరాసు

❖ అమృతాంజనము ❖

కంఠశైత్యము
 రొమ్మశైత్యము
 ఉబ్బసము
 జెణుకులు
 సంధినాతము
 గాయములు
 వాపులు

మాన్యురు.

భారతి

సచిత్రమాసపత్రిక

ప్రతి చాంద్రమాసాదిని ప్రచురింపబడును.

ప్రతి సంవత్సరమున 3, ౪ వర్ణచిత్రములు, ఇతరచిత్రములుండును.

చందా సం॥ ౧-౩ రూ॥ ౧-0-0.

విడిపత్రిక పెరి రూ॥ 0-౩-0.

స్థాంపులను పంపిననే పంపబడును. ఉచితముగ పంపబడదు. మాదిరి పత్రిక తెప్పించుకొన్నతర్వాత చందాదాత్తులకు డేటువారు ఆసామ్మను మినహాయిచుకొని తక్కినసామ్మ మాత్రము పంపవచ్చును.

ప్రకటన ధరలు:—

ఒక నెలకు మాత్రము సాధారణ పుట 1-౩ రూ॥ 30-0-0 సాధారణపుట 1/2-౩ రూ॥ 15-0-0
 సాధారణపుట 1/2-౩ రూ॥ 8-0-0. నెలనెలకు అంతకుపైన సాధారణపుట 1-౩ నెలకు 1-౩ రూ॥ 25-0-0.
 నెలకు పుట 1/2-౩ రూ॥ 12-0-0, నెలకు పుట 1/2-౩ రూ॥ 7-0-0.

మేనేజరు, "భారతి" తపాలపెట్టె నెంబరు 212, మదరాసు.

ఆంతయు స్వదేశి

సర్వము స్వదేశి

అన్నియు స్వదేశి

భారతదేశమునందే భారతీయులచే స్థాపించబడిన యంత్ర సహాయము

వలసతయారుచేయబడిన పావలికొవర్టింగ్, ఇతర పలురకముల వర్టింగులు, తోటుగుడ్డులు, చీరలు, ఆంగవస్త్రములు, ధోవతులు, లాంగ్ క్లాత్, ట్విత్, టెడ్ షీట్లు, జాకెట్టురకములు, వగైరా స్వదేశీ జవీరీరకము లన్నియు సిద్ధముగానున్నవి. మామూలుకాతాదారులందరికి చాలత్వప్రీతిగిగినది. గాన ఇతరులకు తప్పక తృప్తికలుగుననియే మా దృఢసమ్మతము.

కృష్ణా ఆండుకో, 242-244 హైనాబజారురోడ్డు, (జమేదారుఘాటుకెదుట) మద్రాసు.

ప్రతిగృహమందును, ప్రతిప్రయాణీకునివద్ద నుండదగిన రెండు ఔషధరత్నములు

అమృత కల్పము



ఇది మిక్కిలి ఘాటుగల ద్రావకము. అనుపానభేదములచేత అనేకవ్యాధులకు వజ్రాయుధమువలె పనిచేయును. దీనిని లోపలికి పుచ్చుకొవచ్చును. పైన రాయవచ్చును. వాయువు, శైత్యము మొదలగువాటిచే కలుగు అన్నివ్యాధులకు రామబాణము వంటిది. తిలనోప్పులు, పార్శ్వపునోప్పులు, పక్షివాయువులు, జలుబు, శైత్యము, జ్వరములు, పైత్యవాయువులు, వాంతులు, భేదులు, కలరా, గ్రహణి, ప్లేగు, ఋతుశూలలు, సర్వశూలలు, కడుపునోప్పులు, కడుపుబ్బరములు, పండ్లనోప్పులు, చెవిపోటు, అంటువ్యాధులు, అశీర్ణములు, విషదోషములు, సన్నిపాతములు, చిన్నబిడ్డగుణములు, నులిపురుగులు, బెణుకులు, గాయములు, పుండ్లు, తీట, యితరచిర్రురోగములు, తేలు, విషజంతువులకాటు, మొదలగువాటిని ఖండించును. ప్రతివారు ఒకసీసా వద్ద నుంచుకొనిన తాత్కాలిక వ్యాధులబాధనుండి గులభముగా తప్పించుకొనవచ్చును.

1/2 ఔస్సు పెద్దసీసా 1 కి రు. 1—4—0.

1/4 ఔస్సు చిన్నసీసా 1 కి రు. 0—10—0.

సంజీవన కల్పము

ఇది కొన్ని భస్మములచే తయారుచేయబడినది

ఉష్ణాధిక్యము ఉష్ణముచే కలుగు వ్యాధులన్నిటికిని అమోఘముగా పనిచేయును. జ్వరములు, జ్వరహింద్యములు, దాహము, తాపము, కొన్నివిధములగు దగ్గులు, అల్ల, కీళ్లనోప్పులు, నడుమునోప్పులు, కీళ్లవాపు, అన్ని మేహములు, మూత్రకృచ్ఛములు, మూత్రపుంబు, శరీరవేడిమి, రక్తవాంతి, రక్తభేదులు, గుండెలోనొప్పి మంట, శగరోగము, శూల, కుగుమవ్యాధులు మొదలగు అనేకవిధములగువ్యాధుల కిది అమృతతుల్యము. ప్రతిగృహమందుండదగినది. 5 కు. పాడరుగల సీసా రు. 1—4—0. 2 కు. పాడరుగల సీసా రు. 0—10—0. పొట్టుఖర్చులు అన్నిటికి ప్రత్యేకము.

ఇంకా మావద్ద అనేకరకముల ఔషధములు గలవు. కొన్ని ఔషధములు ఈసంచిలోనే యితరచోట్ల చూడవగును.

మా అడ్రసు:—

పి.శి.ఎ. ఆండుకంపెని. ఆయుర్వేదసమాజం-పెరిదేపి, నెల్లూరుజిల్లా.

మా ఔషధములు ఈక్రింది బ్రాంచిఆఫీసులలోగూడా విక్రయించబడును:—

బెజవాడ:—గవర్నరుపేట-బ్రాంచిలో, నెల్లూరు:—టంకురోడ్డు - బ్రాంచిలో, పాలకొట్టు:— కాసానిస్వామి ఆండు సమీపంలో, గుంటూరు:—పట్టంబజారులో, బ్రాంచిలో-కాకినాడ:—జి. యస్. మూర్తిబ్రదర్స్ - జగన్నాథపూరు, నర్సారావుపేట వద్ద. మద్రాసు :- 161 బ్రాడ్వేలో.

చింతలూరు, ఆలమూరు పోస్టు, తూర్పు గోదావరి జిల్లా.

బ్రాంచి { 1 కళిందా } 2 రాజమండ్రి { 3 పిన్నాపట్టణం } 4 అనకాపల్లి { 5 పెద్దాపురం } 6 ఏలూరు
 ఆఫీసులు: { నేనాలయపేర్ } హైరోడ్డు { హైరోడ్డు } హైరోడ్డు { హైరోడ్డు } హైరోడ్డు
 ఢిల్లీ, మదరాసు, నెల్లూరు, తెనాలి, గ్రీకాకుళం, పిజయనగిరి, రాజమండ్రి, కళిందా, మొంట్టణములులో
 జరిగిన విద్యనైర్వహణములందు స్వచ్ఛందములను, యోగ్యతాశ్రములను బహుమింసములను బిందిన

“వైద్యరాజ” ద్వితీయాంశం వెంకటేశ్వర్లుగారి సుప్రసిద్ధాపదములు

వసంత కుసుమాక రము

మధుమేహము, శుక్రగూర్జరము, సానకరుద్రపుంస, రుక్రతుయము,
శుక్రవృష్ణము, బుహీమిత, దిదకాలపు తెల్లగునుమ, సుఖవాగ్దళము
జీర్ణింపుచుచే కలుగు సకలయాత్రాశాస్త్రాగ్రాహక ప్రసిద్ధిక్రిన
రాశిమగము. గుంపు 1 కి గు. 20-0-0.

సిద్ధమక రథ్యజము

ఇందు బంగారుకలను. పూ.నీయిచ్చెను.

జననస్థితి దనుకు బలవృద్ధి కావచ్చును. వృక్షజీవులు, కీటకజీవులు, సమస్త జీవులు, శాస్త్రానుకూలము, సత్యముల బలములను, జీత బలములు మునులను దీని వాగ్దానమున దీర్చివేయును.

శుభము 1 కి 24-0-0. 60 వార్షికము గు. 10-0-0.

ఏకో త్రరప్తద్ధిమహాలక్ష్మినిరాసరసము

చ్యవన పాశము

క్షయకోనులకు అప్పుతో పరానములను దివ్యవధములు.

చిక్ కాలము శ్రమనాధిచే పీడింపబడుచు శ్వాసశిష్టమున
సంపన్నుడగు నూరనూర పాపమును ఆశ్రియమును కలిగించును.
శ్రమ శ్వాసకాణము ఈ బుబ్బము కృతకతో కలసి గర్భమునకు
రక్తహీనునై శూన్యత్యము నొందుచు గర్భాల్పము దీని కాలమునుండి
బాధించు ముండుబుట్టలు, మొడులనానిని జయించును. బుబ్బము, కాంతి
శుక్రమును పట్టించేయును. ఇన్ని తత్వములకు సరిపడును.

రెండు జైలుగములు కలిపి సేవించవలెను. పరిశు రు. 13-12-0.

రసరాజరసము

హిందూ దేవతలను నివసించే స్థానము ముఖ్యము.

అతినిద్ర, నిద్రలేమి, నవ్వులు, ఏడ్పులు, అనంపకప్రలాపము, ఆధైర్యము, భయము, తలతిరుగుట, పక్షిపోవుట, నోటి నురుగు వచ్చుట, వెలిమాపు చూచుట మొదలగు హిక్మీరియా లక్షణములను నివర్తింపజేయును. బలవర్ధకము తొలగిం గు. 10-0-0.

కామచూడామణి రసము

మధ్య నవుండుకత్తమును పోగొట్టి క్రొత్తనుక్రమును పుట్టించి
ఉత్పాదమును కలిగించును. చిరకాలమువరకు శుక్రసూత్రమును
నిలుపును. సంపూర్ణశక్తిని బలమును కలిగించును. నేవించినవారికిగాని
దీనిస్వము చక్కగా తెలియదు. తులం రు. 10-0-0.

స్వర్ణక్రవాదరసము

అశీర్వాదా 'వధయుల' సందేహ మొనర్చు పేర్కొనవలయును

చేరకాలకునుంచి బాధించు అవస్థయూ, కష్టపుబృథము ప్రేమలరచుట,
 గాథ, ముక్తత్రేణి హేమవర్ధిని ముగిలించునని నిశాశించిచేయును. బల
 ముగియదు. శుభం దు. 4-0-0.

రజిత చంద్రోదయము

రక్షవృద్ధి పుంస్త్వము, కలించును. ఇది తాపము సీతద్రవము
శోరము యెల్లప్పుడు నేటిగానుండును, పూలనీరుతనముచే చిక్కిపోయిన
పిల్లలయొక్క అనారోగ్యము కుష్ఠపేషము నివర్తింపజేయును.
ఉష్ణదేహాలకు మిగుల ఉపయోగకరము. సమశీతోష్ణమయిన
ద్రావ్యము. శుభం దు. 3-0-0.

ప్రదర్శనోహము

స్త్రీల తల్లికుటుంబమున గ్రహాలకు దిగి గ్రహము. తెలుపు దె గుపు
పడుపు నలుపు జూములుగల కుడుములు ని వా రించును. కుక్షిగూల కక్షి
గూల దేహగూల సర్వంగములలు నివర్తించును. దీనిని అశోకారిష్ట
మతో నేవించుట అశ్రితంబు నుచుదాయకము. 40 మాత్రలు రు. 3.

అఫోకారిషము (కుసుమలకు) పోనూ 1-8-0

(దాఖలీష్టము (గుం డెజ్యునకు) ,, 1-8-0

ముఖ్యమంత్రి (ముఖ్యమంత్రి) 18 మాత్రం 2-0-0

చందనాద్వితైలము (తెలనొప్పులుకు) సీసా 1-0-0

బాలసంబీవి (శిశువ్యాఘ్రము) తులం 0-12-0

మహానాగిళ్ళాంజనం (కంటిజిల్లా) నీసా 0-8-0

మాదీఫలరసాయనం (పైత్యములకు) ,, 0-12-0

1934 నం॥ ఫిబ్రవరి 1-న తేదీనుండి కొన్ని బాపధములకు ధరలు తగ్గించితిమి. కొత్తకేటాగునకు వాయుడు.

228 ఔషధములు గలవు. కేటలాగు, కేలండరు ఉచితము.

ఇకపూయంజా! వ్లేగు!! కలరా!!!



వీటికి పరమాషధము.

టి. సి. యన్.

స్వచ్ఛమైన

నీలగిరి

యూకలిప్టస్

ఆయిల్.

వైద్యమునందు ప్రసిద్ధిచెందిన ఒక వైద్యని వల్ల చెప్పబడిన ఈ వైలము వాంతిభేది, వ్లేగువ్యాధి, తేలు మొదలైన విచజంతువుల కాటులు, కత్తి మొదలైన గాయములు, నరముల చురుకు, నిస్స మొదలైన వాటినల్ల కలిగెడు అనేకతరహాలైన నణములు, ఇన్ ఫ్లూయంజా, మలేరియా, అనేక విచబ్బరములు, దగ్గు, ఉబ్బనము, వాయువులవల్ల కలిగెడి పోట్లు, నొప్పలు, పల్లునొప్పి, తలనొప్పి, ఒంటితలనొప్పి, కండ్లుమంట, శీతభేది మొదలైన వాటికి అనుభవ సిద్ధాషధము. అన్ని షాపులలోను దొరకును.

చిరునామా:—

T. C. నాగలింగప్ప ఆంధ్రుకంవెని,

పోస్టుబాక్సు నెం. 516.

నెం. 280, వాల్టాక్సు రోడ్డు,

పార్కుటవున్, మదరాసు.

సోల మేజంట్లు: పటేలు స్టోర్సు,

నంజీవిని ప్రెస్సు సమీపమున, పోలీస్ స్టేషన్ రోడ్డు,

గవర్నరుపేట, బెజవాడ.

రత్న పురుష లేహ్యము

ఈ ఔషధము అనుశృతముగ మంచే నూరుసంవత్సరముల నుండి చేయబడుచున్నది. ఆయుర్వేదశాస్త్రమందు రత్న పురుష యను మూలికయొక్క ప్రభావము వర్ణనాతీతము. ప్రత్యేకము పచ్చి మూలికను 15 గోళాలు భుజించినంతమాత్రముననే మంచినీర్యవృద్ధి కలుగనియున్నది. యింక రత్న పురుషయు అనేకబలవర్ధకములగు మూలికలు భిస్మములు చేర్చబడియున్నవి. ఈ ఔషధమును సేవించిన అయిదుగోళాలకై మంచినీరుము కనుపరచును. దీనివలన శుక్లస్వము, వీర్యము పలుచబడుట, స్వప్నస్కలనము, మాత్రము వెంటిశుక్లము పోవుట, నడుమునొప్పి, కాళ్లుచేతులు లాగుట, అతిమాత్రము, మేసాములు, నరములబలహీనత, నపుంసకత్వము, ఆశీర్గము, మలబద్ధము, బలహీనత, గర్భహీనత, నిస్సమైవ, నిద్రావృత్తికపోవుట, శరీరతూక్తిము తగ్గుచుండుట, పోగొట్టి మంచినీరలము, రక్తము, వీర్యము, పుంసత్వము, వృద్ధిచేయును. అలసటచెందిన సరములకు నూతన జవసత్వములనిచ్చును. శరీరమునకు కాంతినిచ్చును. పశ్యము లేదు.

20 గోళాలకు సరిపడు 20 తులముల లేహ్యము రు. 1-0-0

మావద్ద ఆయుర్వేదశాస్త్రము లన్నియు దొరకును. అనుపాన మందాగు సారితాతం గానితము.

ఈశ్వర పార్కసీ,

సాలకొల్లు, పశ్చిమగోదావరిజిల్లా.

మోడరన్ పెయిన్ బామ్



అన్ని విధములగు నొప్పలకు అమోఘ మయినది. ఇదియును మిక్కిలి ఘటు గలిగి సువాసనగా నుండును. తలనొప్పలు, పొద్దుపునొప్పలు, వాతినొప్పలు, కీళ్ల నొప్పలు మొదలగు బాధల నన్నిటిని వైసరాచిన మాత్రముననే హరించగలదు.

సీసా రు. 0-5-0.

డబ్బెన్ సీసాలు రు. 2-0-0.

తామరతైలము

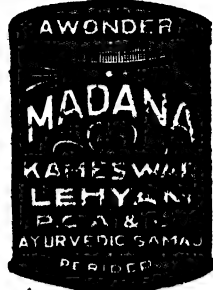
ఇది అనేకమందులు చేర్చి బహు శ్రేష్ఠముగా తయారు చేయబడినది. బజారుమందులకంటిదికాదు. అన్ని విధ ములగు చర్మరోగములను పోగొట్టును. తామర, తీబు, గజ్జక రామబాణము. ఎట్టి విధములగు తామరతైలము 3-4 పూతలలో నిర్మూలము చేయును. దుద్ది 1-3 రు. 0-5-0.

వి. పి. చార్లీ ప్రత్యేకము. డబ్బెన్ దుద్ది రు. 2-0-0.

పి. సి. ఎ. అంధుకో.

అయ్యంగోడపూజం, పెరిదేపి, నల్లూరుజిల్లా.

పి. శి. ఎ. అండు కంపెనీ, ఆయుర్వేద సమాజమువారి శ్రేష్ఠమయిన ఆయుర్వేదీయఔషధములు



మదన కామేశ్వర లేహ్యము

ఇందు సాలామిక్రి, సఫేదామిక్రి మొదలగు శ్రేష్ఠమయిన వస్తువులు చేర్చితయారుచేయబడినది. మేహము, నిక్కాక, నిస్సత్తుక, శుక్లవజ్రము, అతిమూత్రము మొదలగు వ్యాధులను ఖండించి బలమును, పిర్య వృద్ధిని, రక్తవృద్ధిని, సంభోగశక్తిని, సంతానప్రాప్తిని కలిగించు వరప్రసాదము. వేలకొలది డబ్బీలు విక్రయమగుచున్నవి. 2 డబ్బీలు చాలును. 20 కు. డబ్బీ రు 1-4-0.

పాలసుగంధిలేహ్యము

రక్తశుద్ధికి శ్రేష్ఠమయినది. సవామేహములు, మేహములు, మేహపాడలు, మచ్చలు, పుండ్లు, చర్మరోగములు, క్షీణ నొప్పులు మొదలగువానిని ఖండించుటలో శ్రేష్ఠమయినది. 4 డబ్బీలు చాలును. 20 కులముల డబ్బీ 1-4-0.

రోజాఫష్ప లేహ్యము

మలబద్ధమును ఖండించుటలో శ్రేష్ఠమయినది. అశీర్ణము, గర్భవాయువ మొదలగువాటిని హరించి కాలప్రవృత్తిని చక్కగా కలిగించును. 15 కు. డబ్బీ 1 కి రు 0-10-0

క్షయారిష్ట లేహ్యము

క్యాసకాసలు, దగ్గు, ఉబ్బసము, అల్ల మొదలగువాటికి శ్రేష్ఠమయినది. 15 కు. డబ్బీ రు 1-0-0

మహాఖండాద్ధిక లేహ్యము

రుచికరమైనది. పైత్యములు వాంతులు భర్తి ఎక్కిళ్లు అప్లు పైత్యము మొదలగువాటిని హరించును. 15 కు. డబ్బీ రు 1-0-0

చ్యవనప్రాస లేహ్యము

క్షయదగ్గు, ఉబ్బసము, బలహీనత, అశీర్ణి మొదలగువాటిని హరించును. 15 కు. డబ్బీ రు 1-4-0.

గంధకరసాయనము

ఇది రక్తశుద్ధికి శ్రేష్ఠమయినది. మేహపాడలు, మచ్చలు, జీర్ణించినపాతసుఖివ్యాధులు, చర్మరోగములు మొదలగువాటిని ఖండించుటలో జగత్ప్రఖ్యాతిని బడసియున్నది.

10 కు. సీసా రు. 1-12-0

ఘనసారచందిని

శగరోగములకు శిద్ధౌషధము. ఎరుపు, తెఱపు, పసుపు మొదలగు శగరోగములు, స్త్రీలకుసుమవ్యాధులను ఖండించును.

సీసా 1 కి 1-4-0.

దీనిని చందిని అత్తరు అనుపానముతో చేర్చి పుచ్చుకొన న మిక్కిలి శీఘ్రముగా నుగము గలిగించును. చందిని అత్తరు సీసా రు 1.

కందమూల రసాయనము

ఇది మూలవ్యాధి (మొలలజాఘము)నకు మంచిమందు.

15 కు. డబ్బీ రు 1.

మహాద్రాక్షాదిచూర్ణము

దీనియందు అభ్రోనిందూరము చేర్చబడియున్నది. ఇది రక్తక్షయ, పిత్తము, స్త్రీల కుసుమవ్యాధులను, ప్రమేహము, వంధ్యారోగము మొదలగువాటిని హరించి స్త్రీలకు సంతానమును గలిగించుటలో అమోఘమయినది. 5 కు. రు 1.

అజీర్ణనాయువ మాత్రలు

బిడ్డలకుగలగు గర్భవాతిము అశీర్ణము హరించి 2, 3 విరోచనము లగును. సీసా 1 కి రు 0-4-0.

సుఖివిరోచన మాత్రలు

తిక్కిగాని వికారముగాని రోక చక్కగా 2, 3 విరోచనము లగును. 50 మాత్రల సీసా రు 0-4-0.

యింకా అనేకఔషధములు గలవు. ఖాసినవారికి మాసచిత్రమును కేట్లాగును పంపెదము. పోస్టుఖర్చులు ప్రత్యేకముగా యివ్వవలెను. రు 5-0-0 లకు పైబడిన ఆర్డర్లకు రు 1 కి రు 0-2-0 కమిషన్ యిచ్చెదము.

పి. శి. ఎ. అండు కంపెనీ, ఆయుర్వేదసమాజము-పెరిదేవి-నెల్లూరుజిల్లా.

మా ప్రాంతీకులు:-గుంటూరు, బెజవాడ, నర్సారావుపేట, తెనాలి, నెల్లూరు, మద్రాసు.

ప్రస్తావన

శ్లో. ఓమ్ నమః ప్రణానాం శుద్ధజ్ఞానైక మూర్తయే,
నిర్మలాయ ప్రకాశాయ దక్షిణామూర్తయే నమః.

శ్రీ సచ్చిదానందస్వభావస్వరూపపరిణామ మవాజ్ఞానన గోచరము. నిరపేక్షమైన సత్తు దేశకాలపాత్రావరణములందు సాపేక్షమైన చిదానందపరిణామమును పొందుచు పరిస్ఫుట మగుచున్నది. సత్తు నిగ్గుణము, నిరాకారము, నిరంజనము, నిరాశ్రయము, నిరపేక్షము, అవ్యక్తము. అవ్యక్తమైన సత్తు చిద్యోగ్యాశ్రయమునను, చిద్యోగ మానందయోగ్యాశ్రయమునను నేక స్థాయియందు సచ్చిదానందయోగ్యాశ్రయమునను పరిస్ఫుట మగుచున్నది. సత్తు చిదానందయోగ్యాశ్రయమునను సగుణము, సాకార, సాంజన, సాశ్రయ, సాపేక్షపరిణామమునను పరిస్ఫుట మగుచున్నది. సత్తు సత్యము, సత్త్వము, భావరూపపరిణామమునను దేశకాలపాత్రావరణములందు విశ్వాధారమై విశ్వవ్యాప్తమై సచ్చిదానందస్వరూపస్వభావములను సర్వత్ర ప్రత్యక్షమగుచున్నది. అవ్యక్తమైన సత్తు నాదమూలమునను, నాదము అక్షరరూపమునను, అక్షరముశబ్దరూపమునను, శబ్దము వాగ్రూపమునను, వాక్కు భాషారూపమునను, భాష భావరూపమునను, భావము అర్థమూలమునను, అర్థము ఇచ్ఛాక్రియాజ్ఞానశక్తిమూలమునను ప్రపంచపరిణామమునం దనంతభావ రూపములను సువ్యక్త మగుచున్నది. అకారాదిక్షకారాంతముగల అక్షరామ్నాయము ప్రపంచపరిణామమునకు చిద్దర్శనము. అక్షరామ్నాయమునందు “అహమ్” సద్రూప స్వభావమును అహంకారపరిణామమున సువ్యక్తము చేయుచున్నది. నిరపేక్షమైన సత్తు సాపేక్షమైన ఓంకార రూపమునను బ్రహ్మాండావృతమై సకలార్థసిద్ధికిని సాధనముగ నున్న విధము మహాత్ముల యనుభవము. పిపిలికాదిబ్రహ్మ

పర్యంతముగల బ్రహ్మాండము సచ్చిదానందానుభవ పరమైన ఆత్మోద్ధరణమూలమున ననవరతము బ్రహ్మాండ పరిణామమునకు వినియోగపడుచున్నది. చరాచర స్వరూపమైన సకలప్రపంచమునకును సగుణనిర్గుణమును, సాపేక్షనిరపేక్షమును, సాకారనిరాకారమును, సాశ్రయనిరాశ్రయమును “సత్యస్వరూపమైన” “ఆత్మ” బీజము, శక్తి, కీలకము. సాపేక్షమైన ఆత్మ నిరపేక్షమైన ఆత్మపరిణామానుభవమును బడయుటకు కర్మయోగము బీజము, ధర్మయోగము శక్తి, బ్రహ్మయోగము కీలకము. సాపేక్షములైన దేశకాలపాత్రావరణములందు నిరపేక్షమైన ఆత్మయొక్క, సంస్కరణపరిష్కానములకు, దేశకాల పాత్రల సంస్కరణము, సంకీర్తనము పరిష్కానము, సాధనములుగ నున్నవి.

అనంతమైన విశ్వప్రవృత్తియందు దేశకాలపాత్రములు, నిరపేక్షమైన ఆత్మప్రవృత్తియందు సాపేక్షములైన తరంగములు. దేశకాలపాత్రములు నిరపేక్షమైన ఆత్మయందు ప్రతిబింబము నొందుచున్నవి. అనంతమైన విశ్వమునందు భూగోళ మొక పరమాణువు. కాలమహాప్రవృత్తియందు భూగోళకాల మొకక్షణము. అనంతములైన దేశకాలప్రవృత్తులందు దేశకాల పరిగణనములు సాపేక్షములు. జ్యోతిషశాస్త్రజ్ఞుల భూగోళకాలపరిగణనమునందు మఱియొక చాంద్రమానాబ్దము ముగిసినది. భూగోళమునందు కాలపరిగణనము చంద్రసూర్యనక్షత్రాదుల స్థితిగతుల ప్రమాణముల ననుసరించి నిర్ణయింపబడుచున్నది. చంద్రగ్రహము భూమికి ౨,౩౯,౦౦౦ మైళ్లదూరమున గంటకు ౨,౧౬౦ మైళ్ల వేగమున నాకాశమార్గమునందు సంచరించుచున్నది. చంద్రుడు

ఒకరాశినుండి వేరొకరాశికి చేరుటకు ౨౯ దినములు ౧౨ గంటలు ౪౪ నిమిషములు ౩ క్షణములు పట్టును. అమావాస్యనుండి పాడ్యమివరకును చంద్రుడు ఓక భూప్రదక్షిణము చేయుచు నొకరాశినుండి మరొకరాశికి భూమితో పాటు చేరుచుండును. భూగోళము క్షణమునకు ౧౮౪ మైళ్ల వేగముతో నాకాశమార్గమున ౨౩ గంటల ౫౪ నిమిషములకాలమునందు సూర్యునకు నిత్యప్రదక్షిణము చేయుచున్నది. ఆకాశమార్గమునందు భూకక్షయందు దినమును, మాసమును, సంవత్సరమును, భూగోళమును, చంద్రుడును చేయు ప్రదక్షిణములు సామాన్యముగను కాలపరిగణనకు సాధనములు. చంద్రోదయాస్తమయములు, సూర్యోదయాస్తమయములు కాలగ్రహణ నిర్ణయమునకు ప్రధానసాధనములైనను భూమ్యక్షము, భూసంభ్రమణమార్గము, గ్రహకర్షణగతులు, నిత్యప్రదక్షిణమునందు కాలభేదమును గలుగజేయుచున్నవి. అనంతములైన స్థలములు అనంతములైన కాలవిభేదములను గలుగజేయుచున్నవి.

అనంతమైన బ్రహ్మాండమునందనేకములైన రవిమండలములును రవిమండలమునందు భూమి, చంద్రుడు, కుజుడు, బుధుడు, శుక్రుడు, గురువు, శని, యూరేనసు, నెప్ట్యూను, ప్లూటో మొదలగు గ్రహములును, అనేకములైన యువగ్రహములును గలవు. నభోమండలమునందు గల నక్షత్రములు, తారలు, గణనాతీతములు. నభోమండలమునందాకాశగంగావధము కేంద్రస్థానముగనుండి నక్షత్రమండలముల నాకర్షించుచున్నది. అనంతములైన నభము లాకాశగంగామార్గము నాశ్రయించి సంచారము చేయుచున్నవి. నభోమండలమునందు ౫౦,౦౦,౦౦,౦౦,౦౦౦ నక్షత్రములు కలవు. నభములు భూమికి ౨౦,౦౦,౦౦౦ కాంతిసంవత్సరముల దూరమునందు గలవు. దూరస్థములైన నభములు, నభోగణములు భూమికి ౧౪,౦౦,౦౦,౦౦౦ కాంతిసంవత్సరముల దూరమునందు గలవు. (కాంతి క్షణమునకు ౧,౮౬,౩౨౫ మైళ్ల వేగముతో సంచరించును) కాంతి సంవత్సరమునకు ౧౮౬,౩౨౫ X ౬౦ X ౬౦ X ౨౪ X ౩౬౫ = ౮,౪౦,౦౦,౦౦,౦౦,౦౦,౦౦,౦౦౦ సామాన్య సంవత్సరములు. పరిపూర్ణమైన సత్తున కనంతములైన దేశకాలములు మహాతరంగములవలెను సాపేక్షములు. భూమండలము, చంద్రసూర్యమండలములు, గ్రహములు, నక్షత్రములు, తారాగణములు, నభోమండలములు సద్యోగాశ్రయములై విశ్వపరిణామమునకు వినియోగపడుచున్నవి.

సూర్యమండలము బ్రహ్మాండవృత్తము లయిన యనేక రవిమండలములందొకమండలము. సూర్యమండలమునందు సూర్యాధారమున నితరగ్రహములు నియతమార్గములందు సంచారమును జేయుచున్నవి. సూర్యుడు భూమికి ౯,౨౮,౯౨,౪౦౦ గ్రహములు మైళ్లదూరమునందు గలడు. సూర్యుని అక్షము ౮,౬౪,౧౦౦ మైళ్లు. సూర్య గ్రహగోళము భూగోళమునకన్నను ౩,౩౩,౪౩౨ రెట్లు పెద్దది. నవగ్రహములు సూర్యునిచుట్టు ప్రదక్షిణము చేయుచున్నవి. నవగ్రహములందు గురుగ్రహము భూమికన్నను ౩౧౮ రెట్లు పెద్దది; సూర్యునకు ౪౮౩,౩౦౦,౦౦౦ మైళ్ల దూరమునందు గలడు. శనిగ్రహము భూమికి ౯౫ రెట్లు పెద్దదై రవికి ౮,౮౬,౦౦,౦౦౦ మైళ్ల దూరమునందు గలడు. కుజగ్రహము సూర్యమండలమునందు భూకక్షకు బయటను సంచారము చేయుచు ప్రాణపోషణరక్షణముల కనుకూలముగ నున్నదని శాస్త్రజ్ఞులన్వేషణమును జేయుచున్నారు. కుజునకు రేడియో శక్తి సందేశహరణము సాధ్యమని పండితాభిప్రాయము. నవగ్రహములును సూర్యమండలమునందు నియతమార్గమున సంచారముచేయుచు చిరకాలమునుండియును ప్రజాలక్ష్యము నాకర్షించినవి. ద్వాదశరాసులు, నవగ్రహములు, అశ్విన్యాదినక్షత్రములు, వారములు చిరకాలము నుండియును శుభశుభనిమిత్తములందు కాలనిర్ణయమునకు వినియోగించుట యాచారమయినది. ఆ యాచారముతో

సూర్యమండలము బ్రహ్మాండవృత్తము లయిన యనేక రవిమండలములందొకమండలము. సూర్యమండలమునందు సూర్యాధారమున నితరగ్రహములు నియతమార్గములందు సంచారమును జేయుచున్నవి.

సూర్యుడు భూమికి ౯,౨౮,౯౨,౪౦౦ గ్రహములు మైళ్లదూరమునందు గలడు. సూర్యుని అక్షము ౮,౬౪,౧౦౦ మైళ్లు. సూర్య

గ్రహగోళము భూగోళమునకన్నను ౩,౩౩,౪౩౨ రెట్లు పెద్దది. నవగ్రహములు సూర్యునిచుట్టు ప్రదక్షిణము చేయుచున్నవి. నవగ్రహములందు గురుగ్రహము భూమికన్నను ౩౧౮ రెట్లు పెద్దది; సూర్యునకు ౪౮౩,౩౦౦,౦౦౦ మైళ్ల దూరమునందు గలడు. శనిగ్రహము భూమికి ౯౫ రెట్లు పెద్దదై రవికి ౮,౮౬,౦౦,౦౦౦ మైళ్ల దూరమునందు గలడు. కుజగ్రహము సూర్యమండలమునందు భూకక్షకు బయటను సంచారము చేయుచు ప్రాణపోషణరక్షణముల కనుకూలముగ నున్నదని శాస్త్రజ్ఞులన్వేషణమును జేయుచున్నారు. కుజునకు రేడియో శక్తి సందేశహరణము సాధ్యమని పండితాభిప్రాయము. నవగ్రహములును సూర్యమండలమునందు నియతమార్గమున సంచారముచేయుచు చిరకాలమునుండియును ప్రజాలక్ష్యము నాకర్షించినవి. ద్వాదశరాసులు, నవగ్రహములు, అశ్విన్యాదినక్షత్రములు, వారములు చిరకాలము నుండియును శుభశుభనిమిత్తములందు కాలనిర్ణయమునకు వినియోగించుట యాచారమయినది. ఆ యాచారముతో

ములనే పంచాంగములు, జాతకములు, జ్యోతి
శాస్త్రములు, భిన్నరీతులను పరిస్ఫుటము
చేయుచు ప్రజలక్ష్యము నాకర్షించుచున్నవి. నిత్య
కర్తానుష్ఠానమునందు తిథివారనక్షత్ర గ్రహయోగాదుల
పరిజ్ఞానము యోగసిద్ధికి సాధనముగ నున్నది. నూతన
సంవత్సరారంభమున పంచాంగశ్రవణమననములు భావి
కార్యసంసిద్ధి కుత్సాహజనకములుగ నుండగలవు. అనంత
ములైనను ననిత్యములైన దేశకాల పాత్రావరణములు
నిత్యమైన పురుషార్థసిద్ధికి సాధనములుగ నుండుటకు
పంచాంగశ్రవణము ధర్మార్థసాధనముగ నున్నది నిత్య
మైన ఆత్మజ్ఞానము ననంతములైన ప్రకృతి విలాసముల
సాధనమునను పరిస్ఫుటము చేయుటకు దేశము, కాలము,
పాత్రలు పరమార్థ సాధనములు.

యస్మిన్ శోతి మధుశుక్లపక్షకే వర్ష నాశనదివాదికం ఫలమ్,
ప్రాల్మయా ద్ధురితము కృపిగ్రహ శ్చాయా రథ మకులం యశ స్సుఖమ్.
రాజామంత్రి సస్య నాథోరసానా మికాస్సార్ధంస్వామినోగీరసానామ్,
అర్హాధీశఃకించ మేఘాధినాథో ద్యుష్టిశ్చేయస్కృణ్వతాం తత్ఫలం.

ప్రభవాదిచాంద్రమానాబ్దములం దేడవయేడు
శ్రీముఖ సంవత్సరము గతించి, ౮-వ యేడు భావసం
వత్సర మారంభమైనది. నిత్యసత్య
పంచాంగము మైన ఆత్మసంస్మరణమునకును, సంక
ల్పమునకును ప్రాచీన సంప్రదాయసిద్ధ మైన క్రింది
సంకల్పము సాధనముగ నున్నది.

శంభోరాజ్ఞయా ప్రవర్తమానస్య ఆద్య
బ్రహ్మణః ద్వితీయపరాధే, శ్వేతవరాహకల్పే, వైవ
స్వతమన్వంతరే, కలియుగే, ప్రథమపాదే, జంబూ
ద్వీపే, భరతవర్షే, భరతఖండే, మేరో ర్దక్షిణదిగ్భాగే,
శ్రీశైలస్య ఆగ్నేయప్రదేశే, కృష్ణాకావేర్యోర్మధ్యదేశే,
భావనామ సంవత్సరే, ఉత్తరాయణే వసంతఋతౌ,
చైత్రమాసే, శుక్లపక్షే, ప్రథమ్యాం, ఉత్తరాభాద్ర
పక్షతే, భాద్రపదాసరే.....”

సద్యోగాశ్రయములైన దేశకాలములందు ద్వీప
ములు, వర్షములు, ఖండములు, గోళములు, మండల

ములు, విశ్వములు, సంవత్సరములు, శకములు, యుగ
ములు, మన్వంతరములు, కల్పములు, పరార్థములు
సాపేక్షములు. శ్రీముఖ సంవత్సర నిర్గమనమును,
భావసంవత్సరారంభమును కాలమహార్ణవమునం దొక
బిందువును పోలియున్నను ఆత్మజ్ఞానకు పంచాంగ
శ్రవణరూపమునను పరమార్థసాధనముగ నున్నది.
కాలమహార్ణవమునందు శాలివాహన శకాబ్దములు
౧౮౫౬, విక్రమార్కశకాబ్దములు ౧౯౮౮, హుణ
శకాబ్దములు ౧౯౩౩, ఫసలిశకాబ్దములు ౧౩౪౨,
భరతశకాబ్దములు ౫౦౭౬, కలియుగాది సారాబ్దములు
౫౧౩౫, సృష్ట్యాదిసారాబ్దములు ౧,౯౫,౫౮,౫౫,౦౩౫
లయమును పొందినవి. కలియుగాదినుండియును ౮౩
చాంద్రమాన చాంద్రాయణ పరివృత్తులు ముగిసి ౮౪ వ
పరివృత్తియందు దేడేండ్లు గతించి యెనిమిదవయేడు భావ
సంవత్సర మారంభ మైనది. బ్రహ్మకల్పమునందు,
ద్వితీయపరార్థమునందు, ప్రథమవర్షమునందు, ప్రథమ
మాసమునందు, ప్రథమపక్షమునందు, ప్రథమదినము
నందు, ౧౩ ఘటికలు, ౪౨ విఘటికలు గతించినవి. అనంత
మైన కాలచక్రమునందు గతించిన శ్రీముఖాబ్ద మొకక్షణ
ముగను శ్రీముఖేతిహాసములు పరమాణువులుగ నున్నవి.
నిరపేక్షమైన ఆత్మస్థితియందు సాపేక్షము లైన దేశకాల
సంకీర్తనలు క్షణమాత్రములైనను సత్యమైన ఆత్మపరి
జ్ఞానమునకు సాధనములుగ నున్నవి.

చాంద్రమానభావాబ్దమునకు శుక్రకుడు రాజు,
మంత్రి, గ్రామపాలకుడు, మేఘాధిపతి; ఫలము: సస్య
సంకులము, సుజలపూరితనదీనదములు, ఫలసహితవృక్ష
ములు, గోకులాభివృద్ధి, పార్థివసౌఖ్యము, జలసమృద్ధి,
ధాన్యసమర్థము, శలభనూషకమహిష రాహిషి కాభి
వృద్ధి, అతివృష్టి, సుఖము, సస్యవృద్ధి, క్షీరసమృద్ధి,
శ్వేతధాన్యసమృద్ధి. శుక్రకుడు రాజును, మంత్రియు నగుట
వలన జనులకు చోరాగ్ని శస్త్రబాధ. గురువు నేనాధి
పతి, అక్షాధిపతి, దైవజ్ఞుడు; ఫలము: నయపాల
నము, కరపాలనము, దేశసౌఖ్యము, ద్విజశాస్త్రాధ్యన

నము, సువృష్టి, భూసురయజ్ఞపరాయణత్వము, నిత్యోత్సవము, మంగళతూర్యనిస్వనము, దైవజ్ఞబుద్ధికుశలత, నరాధిపుల నీతియైక్యత్వము, విపులమంత్రయైక్యత. చంద్రుడు సన్యాసిఁతి; నీరసాధిఁతి, పురోహితుడు; ఫలము: ప్రజాసౌఖ్యము, గోక్షీరాభివృద్ధి, వర్షాభివృద్ధి, ధాన్యసాగుపూర్ణత్వము, దేవద్విజారాధన తత్పరత, ముక్తాఫలరత్నసువర్ణబీజకాంస్యాదివస్త్రాభరణాదుల యభివృద్ధి, సర్వసన్యసమృద్ధి, విద్యాభ్యాసనిరతి. శని ధాన్యాధిఁతి; ఫలము:—కృష్ణసూక్ష్మధాన్యాభివృద్ధి, కృష్ణభూమిసన్యాభివృద్ధి. బుధుడు రసాధిఁతి; ఫలము:—పిప్పలి, శొంఠి, ఇంగువ, ఉల్లి, ఘృతము, తైలము, చెరుకు ఇత్యాదులు దుర్లభములు. రవి షరీక్షకుడు; ఫలము:—ఎండ, రక్తసన్యాభివృద్ధి, సంగ్రామము. కుజుడు గణకుడు; ఫలము:—విపాగ్నిశస్త్రబాధ, పరస్పరవిరోధము, అంత్యసన్యవివాశము. గోపాలకుడు శశుపాలకుడు; ఫలము:—శశువృద్ధి, సుఖీక్షము, బహుసన్యార్థసంపత్తి, తృణవృష్టిసంపూర్ణత్వము. శ్రీకృష్ణుడు స్థానరక్షకుడు. ఫలము:—గోక్షీరాభివృద్ధి. భావసంవత్సర సామాన్యఫలము:—

భావాదే ప్రచురా రోగాః మన్యా స్సస్మాన్మృత్యుః,
గాజానో యుష్మనిరతా ప్రభాపి సుఖినో జవాః.

భావసంవత్సరమునందు శుభగ్రహములైన శుక్రుడు రాజు, మంత్రి, గురుడు, సైన్యాధిపతియునైనను ప్రపంచఁ దిస్థితులు భయంకరములై సంతాపకరములుగనున్నవి. సకలరాజ్యములును సంగ్రామసన్నాహములందు మునిగి తేలుచున్నవి. ప్రపంచావృతమైన ఆర్థికదురవస్థ ప్రజాజీవనమును దుర్లభము చేసినది. మహారాజ్యములందు వ్యాపారఁదిశ్రమలు క్షీణించి నిరుద్యోగసమస్య భయంకరముగ నున్నది. ప్రపంచమునకు షరిపాటిమైన ఆర్థిక సిద్ధాంతము లంతర్ధానములైనవి. సకలరాజ్యములును స్వప్రయోజన పరాయణత్వమును బూని ప్రళయకాల భైరవునకు బలిదానములను సిద్ధముచేయుచున్నవి. సంగ్రామదావాసలదగ్ధములైన రాజ్యములు శాంతిఁజేయు

చున్న ప్రయత్నములు నిరర్థకములుగ నున్నవి. మాటల యందు శాంతియును, తలపులందు సంగ్రామము శాంతికి సాధనములు గావు. ప్రపంచేతిహాసములందు శ్రీముఖ సంవత్సరేతిహాసములు విషాదపూరితములై భావిఁచి నామ మంధకారబంధురముగ నున్నది.

అనంతమైన ప్రవృత్తియందు భూగోళోదంత మతి స్వల్పమైనను మానవుల యహంకారాభిమానములు ప్రముఖము చేయుచున్నవి. భూగోళ విస్తీర్ణము, ౧౯,౬౯,౫౦,౦౦౦ చదరపుమైళ్లు. జనసంఖ్య ౧,౮౪,౯౫,౦౦,౦౦౦. ఆప్రదేశమునందుగి, ౭౫,౧౦,౦౦౦ భూప్రదేశము. ౧౩,౯౪,౪౦,౦౦౦ జలప్రదేశము. భూప్రదేశము నందు ఆఫ్రికా ౧,౧౫,౦౦,౦౦౦, ఉత్తర అమెరికా ౮,౦౦,౦౦,౦౦౦, దక్షిణ అమెరికా ౬౮,౦౦,౦౦౦, యూరపు ౩౭,౫౦,౦౦౦, ఓషియానియా ౪౦,౦౦,౦౦౦, ధ్రువప్రదేశములు ౬౨,౦౫,౦౦౦, ఆసియా ౧,౭౦,౦౦,౦౦౦ చదరపుమైళ్లు. భూప్రదేశమునందు సుత్రములు, ౩౩౦,౦౦,౦౦౦, ఎడారులు ౫౦,౦౦,౦౦౦, ఉన్నతప్రాంతములు ౧౯౦,౦౦,౦౦౦ చదరపుమైళ్లు.

ప్రపంచమునందుగల ౧,౮౪,౯౫,౦౦,౦౦౦ జనులందును మంగోలియనులు ౬౮,౦౦,౦౦,౦౦౦ కాకేషియనులు ౭౨,౫౦,౦౦,౦౦౦, సిగ్రోలు ౨౧,౦౦,౦౦,౦౦౦, సెమిటికులు ౧౦,౫౦,౦౦,౦౦౦, మలయనులు ౧౦,౪౫,౧౦,౦౦౦, అమెరికా ఇండియనులు ౩,౦౦,౦౦,౦౦౦ కలరు. మతముల ననుసరించి క్రైస్తవులు, ౬౯,౨౪,౦౦,౦౦౦ యూధులు ౧,౬౧,౩౦,౦౦౦ మహమ్మదీయులు ౨౦,౯౦,౨౦,౦౦౦ జౌద్ధులు ౧౫,౦౧,౮౦,౦౦౦ హిందువులు ౨౩,౦౧,౫౦,౦౦౦ కన్యాషియనులు టాయిస్టులు ౩౫,౦౬,౦౦,౦౦౦ పింట్లోలు ౨,౫౧,౦౦,౦౦౦, జంతుపూజకులు ౧౩,౫౬,౫౦,౦౦౦, ఇతరులు ౫,౦౮,౭౦,౦౦౦ కలరు.

ప్రపంచమునందలి వివిధ దేశము లందును గోధుములు ౬,౧౩౦,౦౦,౦౦౦, రాయిలు ౧౯,౦౦,౦౦,౦౦౦,

ఓటులు రర, ౧౦, ౦౦, ౦౦౦, బార్లి
ఖనిజములు : ౨౨, ౬౦, ౦౦, ౦౦౦ మొక్కజొన్నలు
పాడిపంటలు గిగి ౬౦, ౦౦, ౦౦౦ క్వార్టలు తృన్న
ములగుచున్నవి. బియ్యము ౩, ౦౦, ౦౦, ౦౦౦ జొన్నలు
౩౦౦, ౦౦, ౦౦౦ బంగాళాదుంపలు ౨౦, ౦౦, ౦౦, ౦౦౦
దుంపశర్కర ౧౦, ౦౦, ౦౦౦ చెఱుకుశర్కర ౧, ౬౦, ౦౦,
౦౦౦, తేయాకు ౮, ౨౦, ౦౦౦, కోకో గి, ౧౦, ౦౦౦
పెద్దచిక్కుడు ౬గి, ౦౦, ౦౦౦, అవిశలు ౨౯, ౦౦,
౦౦౦, ప్రత్తిగింజలు ౧, ౧౦, ౦౦, ౦౦౦, దూది గి, ౦౦,
౦౦, ౦౦౦, ఉన్ని ౧, ౦౬, ౧౦, ౦౦౦, జ్యూటు ౧౦,
గి, ౦౦౦, పట్టు గి, ౦౦, ౦౦౦, మాయపట్టు ౨, ౨గి, ౦౦౦
రబ్బరు ౭, ౨౦, ౦౦౦, పెట్రోలియము ౧౮, ౦౦, ౦౦,
౦౦౦, రాగి ౧౦, ౦౦, ౦౦౦, సీసము ౧౧, ౦౦, ౦౦౦,
తగరము ౯౦, ౦౦౦, తుత్తినాగము ౮, ౦౦, ౦౦౦,
అల్యూమినము ౧, ౧౦, ౦౦౦, ఇనుము ౪, ౦౦, ౦౦, ౦౦౦
ఉక్కు గి, ౦౦, ౦౦, ౦౦౦, పొగాకు ౨౦, ౦౦, ౦౦౦,
అయస్కాంతము ౨౩, ౧౦, ౦౦౦, సున్నపు ఫాస్ఫేటులు
౧, ౧౦, ౦౦, ౦౦౦, పొటాషులు ౧౪, ౦౦, ౦౦౦, లవ
ణము ౨, ౪౦, ౦౦, ౦౦౦, బొగ్గు ౯గి, ౦౦, ౦౦, ౦౦౦,
నిక్కెలు ౨గి, ౦౦౦ టన్ను లు తృన్నము లగుచున్నవి.
విద్యుచ్ఛక్తి ౨౬౦, ౦౦, ౦౦, ౦౦, ౦౦౦, కిలోవాటు
లును, బంగారము ౨, ౪౦, ౦౦, ౦౦౦ ఔన్సులు, వెండి
౧౬, ౦౦, ౦౦, ౦౦౦ ఔన్సులు, ప్లాటినము ౨, ౭గి, ౦౦౦
ట్రాయి ఔన్సులును పుట్టుచున్నవి.

ప్రపంచమున మేకలు ౯౦, ౯౦, ౦౦, ౦౦౦, కోళ్లు
౮౯, ౭౮, ౬గి, ౦౦౦, గుఱ్ఱములు ౭, ౩౨, ౧౮, ౪౦౦, పశు
వులు ౪౧, ౭౪, ౦౭, ౦౦౦, గొట్టెలు ౪౨, ౭౩, ౮౭,
౦౦౦, పందులు ౧౨, ౪౭, ౧౦, ౦౦౦ కలవు. ప్రపంచము
నందు గల పాడి పంటలు జంతువులు మానవుల
జీవయాత్రకు చిరకాలము సరిపోవు నని పండితాభిప్రాయము.
ప్రపంచమునందు జనాభివృద్ధి ౬౦౦ కోట్లకు
పెరిగినను అన్నపానీయముల కభ్యంతరములు కలుగవని
పండితుల యభిప్రాయము. ప్రపంచమునం దంతటను

మానవపోషణమున కవసరమైన పాడిపంటలు, జీవజాల
ములు, నీటివసతులు, భూవనతులు. సమృద్ధిగ నున్నను
ప్రపంచము నావరించిన దురాశాపిశాచము పరమానర్థ
ములకు మూలముగ నున్నది. శ్వేతజాతులు పూనిన
పరాక్రమణవిధానము సర్వసంహారమునకు వినియోగ
పడుచున్నటులు ప్రపంచోద్ధరణమునకు వినియోగ
పడుటలేదు.

ప్రపంచేతిహాసములందు గతించిన ౧గిం ఏండ్ల
చరిత్రమును యూరపురాజ్యముల చరిత్రముగ పరిణ
మించినది. శ్వేతజాతులు సాయుధపాణులై పరదేశముల
నాక్రమించిన చరిత్రము దారుణా
శ్వేతజాతులు ధ్యాయముగ నున్నది. పాశ్చా
త్యులు పరదేశాక్రమణమును స్వప్రయోజనార్థ
మును, స్వీయవ్యాపారార్థమును చేసినను ప్రపంచోద్ధ
రణమునకు చేసినట్లు ఘోషించుట పరిపాటియైనది.
శ్వేతజాతుల ప్రముఖులు నిరంతరము “తెల్లజాతుల భార
ధర్మమును” నకలదుర్లయములకును కారణముగ పరి
గణించుట వారి దురహంకారమునకు నిదర్శనము.
ఆఫ్రిలియారాజ్యము ౩౦, ౦౦, ౦౦౦ చదరపు మైళ్ల
విస్తీర్ణమును గలిగియున్నను ౬౦, ౦౦, ౦౦౦ తెల్లవారికి
స్వాస్థ్యముగ నున్నది. ఈవిశాలదేశమునందు పరజాతీ
యులు స్వదేశస్థులు ౬, ౦౦, ౦౦౦ మాత్రమెయున్నను
శ్వేతేతరజాతులకు ప్రవేశము నిషేధింపబడుచున్నది.
శ్వేతజాతులు అమెరికా, ఆఫ్రికా, ఆసియా మొదలగు
ఖండములను బలవదన్యాక్రమణమును జేసి కలుగ
జేసిన దుర్లయములు మానవ ధర్మేతిహాసములందు
విషాదాధ్యాయములుగ నున్నవి. ఉత్తరదక్షిణ అమె
రికాఖండములు ౧౪౮, ౦౦, ౦౦౦ చదరపుమైళ్ల విస్తీర్ణ
మును, ౨౧, ౦౦, ౦౦, ౦౦౦ ప్రజలను గలిగియున్నను
శ్వేతప్రజాధిపత్యమునకు నిలయములుగ పరిణమించినవి.
అమెరికాసంయుక్తరాష్ట్రములవికాసము ప్రపంచపరిణా
మమునం దుద్యోగపర్వముగ నున్నను శ్వేతేతరు

లనుభవించిన దుఃఖపరంపరలు పరమ విషాదమును గలుగజేయుచున్నవి.

అమెరికా సంయుక్తరాష్ట్రములు 32,00,000 చదరపుమైళ్ల విస్తీర్ణమును, 11,00,00,000 ప్రజలను కలిగి వికాసమును పొందుచున్నను స్వీగ్రో లనుభవించుచున్న నిర్బంధములు హేయముగ నున్నవి. గతించిన 20 ఏండ్లయందు తెల్ల ప్రజల సంఖ్య 25 లక్షల నుండి 1,000 లక్షలకును, స్వీగ్రోల సంఖ్య 25 లక్షల నుండి 100 లక్షలకును అభివృద్ధిని బొందినవి. ఆదిమవాసులైన ఇండియనులు 3,12,330 మాత్రమే కలరు. పాశ్చాత్యసంఘర్షణమునం దాదిమవాసులు సకలదేశములందును సంపూర్ణవినిశనమును పొందిన విధమున కమెరికాచరిత్రము పరమప్రమాణముగ నున్నది. అమెరికాసంయుక్తరాష్ట్రములు సహజ సంపదలకును, వ్యవసాయపరిశ్రమల యభ్యుదయమునకును, విద్యాభ్యాసమునకును, సంపదలకును సగ్రగణ్యములుగ నున్నవి. అమెరికాయందు వ్యవసాయము ప్రధాన పరిశ్రమముగ నున్నది. పొలములందు 100 - 150 యకరములవి 13,10,000, 150 - 200 యకరములవి 13,20,000, 200-300 యకరములవి 13,30,000 మొత్తము 1,00,00,000 ట్లీత్రములు 100 సంవత్సరాంతమునందు కలవు. వ్యవసాయ ఫలము 100 యందు 1,00,00,000 నుండి 100 సంవత్సరములందు 1,00,00,000 డాలరులు. ఖనిజముల విలువ 100 సంవత్సరములందు 3,00,00,000 డాలరులు. వస్తువులందు పెట్రోలియము, దూది, ఇనుము, ఖాగ్న, బంగారము, వెండిమొదలగు పదార్థము లన్నియును కలవు. దేశమునందు 100 యందుగల 1,20,00,000 పరిశ్రమాలయములందును 1,00,00,000, 1,20,00,000 విలువగలపదార్థములు నిర్మింపబడుచున్నవి.

రెండేండ్లలో పరిశ్రమపదార్థములవిలువ 2,000 కోట్ల డాలరులనుండి 1,000 కోట్లకు తగ్గినది. అమెరికాయందు సంవత్సరమునకు 10 లక్షల మోటారు కార్లు నిర్మింపబడుచున్నవి. 1933 సంవత్సరమునందు అమెరికానుండి మోటార్ల యెగుమతులు 100 కోట్ల డాలర్ల విలువగలవి. 100-150 సంవత్సరమునందు 1,00,00,000 మైళ్లరైలుమార్గములును 1,20,000 మైళ్ల నీటిమార్గములును 30 లక్షల మైళ్ల గ్రామరోడ్లను, 3,00,000 పెద్దరోడ్లను గలవు. పెద్దరోడ్లకు 100 సంవత్సరమునందు 1,00,00,000 డాలర్ల వ్యయము చేయబడినది. గతసంవత్సరమునందు 100 వేల పోస్టాఫీసులు 1,00,000 కోట్లవస్తువులను ప్రజలకు అందజేసినవి. 100-150 సంవత్సరమునందు ఆదాయము 100 కోట్ల డాలర్లు, వ్యయము 100 కోట్ల డాలర్లు. అమెరికా సంయుక్తరాష్ట్రములకు 1,000 కోట్ల డాలర్ల అప్పు గలదు. ఇతరరాజ్యములు 1,000 కోట్ల డాలరులు బాకీ యున్నవి. తల 1 కి స. 1-1-10 పన్ను వసూలుగుచున్నది. వ్యాపారము 100 యందు 1,000 లక్షల సవరనులనుండి 100 సం. 1,200 లక్షల సవరనులకు 100 కి 30 వంతునను తగ్గినది. అనేకదేశములకు ప్రతికూలవ్యాపారము కలిగినను అమెరికాకు అనుకూల వ్యాపారమే వర్తమానాధికదృష్టియందును కలిగినది.

విద్యావ్యాపనమునకు సంవత్సరమునకు 100 కోట్ల డాలర్ల వ్యయము చేయుచున్నది. విద్యావ్యాపనమునకు 1,00,000 సామాన్య పాఠశాలలు, 1,000 విశ్వవిద్యాలయములు, 300 ఉపాధ్యాయశిక్షణశాలలు 100 వర్సింగుశిక్షణశాలలు కలవు. సైన్యశిక్షణ పోషణములకు 100 లక్షల సవరనులు వ్యయము చేయబడుచున్నవి. యుద్ధవిమానములు 1,000 గలవు.

గతసంవత్సరమునందు ప్రపంచమునకు సంప్రాప్తమైన ఆర్థికదృష్టి అమెరికాకును సంక్రమించినది. బీదకుటుంబములకువలెను బీదదేశములకును ఆర్థికవ్యవహార

ములను సద్గుణాలు చేసికొనుట రూజువెట్టు సాధ్యమైనను పెద్ద రాజ్యములకు సాధ్యము కాదు. ౧౯౩౧ - వ సంవత్సరమునందు గ్రేటుబ్రిటను బంగారపుప్రమాణమును విడుచుటవలనను లాభమును పొందినది. ఈ విధానము అమెరికాకు విశేషముగ నష్టమును కలుగజేసినది. గతసంవత్సరము నందు అమెరికాయను గ్రేటుబ్రిటనుమార్గము నవలంబించినది. అమెరికాసంయుక్తరాష్ట్రములకు ప్రెసిడెంటు రూజువెట్టుగా రపూర్వమైన ఆర్థికవిధాన మవలంబించి అమెరికాఋణతని వృద్ధిచేయుటకు చేసిన నిర్ణయములు నిందాస్తోత్రములకు మూలములైనవి. రూజువెట్టుగారు బంగారుప్రమాణమును విడుచుటయే గాక డాలరునందలి బంగారు ప్రమాణమునుకూడ తగ్గించెను. స్వదేశము నుండి బంగారు ఎగుమతులను ప్రతిషేధించి బంగారు ధరను పెంచి విదేశములనుండి బంగారు దిగుమతులను ఆకర్షించెను. అర్బుదములను వ్యయముచేసి ప్రజోపయుక్తకార్యములను ఆరంభించెను. దేశమునందు వ్యాప్తమైన నిరుద్యోగసమస్యను అంతరింపజేయుటకు ౫,౦౦౦ లక్షల డాలర్లను సహాయము చేయుటకును, ౩,౩౩,౦౦౦ లక్షల డాలర్లను ప్రజోపయుక్తకార్యములకు వినియోగపరుచుటకును ౩౦,౦౦౦ లక్షల డాలర్లను రైతులకు సహాయముచేయుటకును చేసిన నిర్ణయములు ప్రపంచమునం దంతటను కలవరమునకు కారణమైనను విశాలమైన అమెరికా రాజ్యవ్యవహారములకు తగియున్నది. వ్యవసాయ ఋణములను నియమించి వస్తువులధరలను వృద్ధిచేసెను. రూజువెట్టుగా రవలంబించిన ఆర్థికవిధానము ప్రపంచమునం దంతటను గొప్ప కలవరమును గలుగజేసినను ఆర్థికపునర్నిర్మాణమునందు అపూర్వమైన సంవిధానమును సమకూర్చినది. రూజువెట్టుగారు అవలంబించిన వ్యాపారార్థికసంవిధానము డాలరు మారకపుకేటు కంతర్జాతీయవ్యాపారవ్యయములందు నిలుకడను కలుగజేసినది. అమెరికా వ్యాపారము ఎగుమతులయందును, దిగుమతులయందును అభివృద్ధిని పొందినది.

ఆర్థికరంగమునందువలె నితరరంగము లందును రూజువెట్టుగారి రాజనీతి శ్లాఘాపాత్రము. సోవియెట్రమ్యతో వ్యాపారసంధిని చేసికొనుట యొకవిశేషము. చిరకాలమునుండి ఆశపెట్టుచున్న ఫిలిప్పైను ద్వీపములకు స్వాతంత్ర్య ప్రదానమును మహావిశేషము. రూజువెట్టుగారు రాజకీయార్థికవ్యాపార ఋణశ్రమాదులం దవలంబించుచున్న నిరంకుశాధికార నిర్వహణము ప్రజాస్వామికమునకు స్థానమైన అమెరికా సంయుక్తరాష్ట్రము లందును నితరరాష్ట్రములందును నాశాధంగకరమైనను కార్యనిర్వహణదక్షత్వమునకు ప్రమాణముగ నున్నది. గతించిన పదేండ్లనుండియు వాడుకయందున్న మధ్యపాననిషేధన శాసనమును రద్దుచేయుట పాశ్చాత్య సంస్కారమునకు సహజమైనను మానవధర్మాభ్యుదయమునకు ప్రతికూలము. వర్తమానార్థికస్థితియందు పలుకుబడిగల ప్రభుత్వములు మిగిలినవలెను లాభనష్టములను గణనముచేయక ప్రజలయోగక్షేమములకు పాటుపడగల విధమును రూజువెట్టుగారి కార్యవిధానము వెల్లడిచేయుచున్నది.

ఐరోపామహాసంగ్రామానంతరము ప్రపంచమునకు గలిగిన వైరాగ్యము క్రమముగ నంతరించినవిధము గతించిన పదియైదేండ్ల వ్యవహారములును వెల్లడిచేయుచున్నవి. ప్రపంచమునందు పునర్నిర్మాణ భారము అమెరికామీద వలె బ్రిటిషు సామ్రాజ్యముమీదను కలదు. సూర్యాస్తమయము లేని బ్రిటిషుసామ్రాజ్యము భూమండల వ్యాప్తమై పునర్నిర్మాణమునకు సకలవిధముల ననుకూలముగ నున్నది. బ్రిటిషుసామ్రాజ్య విస్తీర్ణ జనసంఖ్యలు.

	మొత్త విస్తీర్ణము.	జనసంఖ్య.
యూరపునందు	౧,౨౧,౫౧౨	౪,౮౦,౦౦,౦౦౦
ఆసియాయందు	౧౮,౨౪,౫౫౦	౩౬,౫౦,౦౦,౦౦౦
ఆఫ్రికాయందు	౪,౫౫,౦౦౦	౬,౦౦,౦౦,౦౦౦
ఉ.అమెరికా	౩౮,౯౩,౦౨౦	౯౦,౦౦,౦౦౦

మధ్యలమెరికాయందు	౮,౬౦౦	౫౦,౦౦౦
వెస్టు-ఇండిసునందు	౧౨,౩౦౦	౨౦,౦౦,౦౦౦
దక్షిణ-అమెరికా	౯,౭౮,౦౦౦	౩,౨౦,౦౦౦
ఓషియానియా	౩౩,౦౦,౦౦౨	౯౦,౦౦,౦౦౦

మొత్తము ౧,౯౯,౧౯,౭౮౨ ౪౯,౩౩,౭౦,౦౦౦

గ్రేట్ బ్రిటనునందు అధినివేశరాజ్యములందు ౭ కోట్ల మంది తెల్లజాతివారును, శేషించిన ప్రజలందు ౩౫,౨౮,౩౭,౭౭౮ హిందూదేశీయులును, ఇతరులు ౭ కోట్లమందియు వివిధప్రాంతములందును గలరు. ప్రజలందు హిందువులు ౨౧ కోట్లమంది, మహమ్మదీయులు ౧౦ కోట్లమంది, క్రైస్తవులు ౮ కోట్లమంది, జాడ్లు ౧,౨,౦౦,౦౦౦, శేషించినవారు ఇతరమతస్థులు. ఈ మహాసామ్రాజ్యమునకు గ్రేట్ బ్రిటను మూలస్థానము. సామ్రాజ్యాంతర్భాగములందు స్వపరిపాలనాధికారము గల అధినివేశరాజ్యములును, మధ్యమాధికారము గల క్రానుకాలనీలును, నిరంకుశాధికారము గల పరాధీన రాజ్యములును, వివిధములైన పరిపాలనవిధానములు గల ప్రదేశములును గలవు. తెల్లజాతులుగల ప్రదేశములందు స్వపరిపాలనమును తెల్లవారులేని స్థలములందు నిరంకుశ పరిపాలనమును బ్రిటీషు రాజ్యాంగములకు కీలకములు. బ్రిటీషుసామ్రాజ్యపరిపాలనము పూర్వమువలెనే బ్రిటీషు ప్రయోజనములకును, తెల్ల వారిప్రయోజనమునకును వినియోగపడినటులు స్వదేశీయుల ప్రయోజనములకును, శ్వేతేతరజాతుల ప్రయోజనములకును వినియోగపడుట లేదు. ప్రపంచమునందు కాలక్రమమున మానవస్వాతంత్ర్యవికాసము సంప్రాప్త మగుచున్నను బ్రిటీషుసామ్రాజ్యనిర్వాహకులు పూర్వపరిస్థితులనే సంరక్షించుచు సామ్రాజ్యక్షేమమునకును, సామ్రాజ్యాంతర్భాగ వికాసమునకును ప్రతిబంధకములను కల్పించుట రాజనీతిగ పరిణమించినది.

విరోధాసంగ్రామ సమయమునందు సామ్రాజ్యాంతర్భాగములకు గలిగిన సంయోగము కాలక్రమ

మున శిథిల మగుచున్నది. సామ్రాజ్యసంరక్షణకును సామ్రాజ్యవ్యాపారమునకును సాధనము లైన సంయోగ సాహచర్యములు ప్రపంచావృతము లైన ఆర్థిక దురవస్థలందు దూరస్థము లగుచున్నవి. బ్రిటీషురాజ్యాధికారులు నిర్ణయించెడి ఆర్థికవిధానములును వ్యాపార సంరక్షణవిధానమును బ్రిటీషుయోగక్షేమములకు సాధనభూతములుగ గనుపడినను, ప్రతికూలపరిణామము నొందుచున్నవిధమును సామ్రాజ్య వ్యవహారములు బోధించుచున్నవి. ఒకకాలమునందు బ్రిటీషుద్వీపముల యోగక్షేమములకు వినియోగపడిన స్వేచ్ఛావ్యాపారము రక్షణ వ్యాపారముగ మారుట దురదృష్టము. బ్రిటీషు వ్యాపార పరిశ్రమలనిరోధమే రక్షణవ్యాపారదుర్ణయమునకు మహావ్యాఖ్యానము. బ్రిటీషుప్రభుత్వాదాయము ౧౯౨౨-౨౩ నందు ౧,౧౨,౪౮,౮౦,౦౦౦ సవరణనుండి ౧౯౩౩-౩౪ నందు ౬౯,౮౭,౭౭,౦౦౦ సవరణలకును, వ్యయము ౧,౦౭,౯౧,౮౭,౦౦౦నుండి ౬౯,౭౪,౮౬,౦౦౦ సవరణలకును తగ్గినది; అప్పు ౭,౭౬,౮౯,౭౦,౦౦౦ సవరణలకు పెరిగినది. ఇతరరాజ్యములును సామ్రాజ్యాంతర్భాగములును, ౧,౦౬,౦౪,౩౫,౦౦౦ సవరణలు బాకీయున్నవి. బ్రిటీషుసామాన్యవ్యాపారము ౧౯౨౭ నందు ౨,౦౫,౦౩,౭౫,౨౫౨నుండి ౧౯౩౨ నందు ౧,౧౧,౯౧,౧౪,౧౦౩ సవరణలకును, ప్రత్యేకవ్యాపారము పై సం|| లందే ౧,౮౦,౪౪,౬౯,౫౭౪ నుండి ౧,౦౨,౭౩,౫౬,౯౧౭ సవరణలకును తగ్గినది. గ్రేట్ బ్రిటనునందు ప్రధానములగు బొగ్గు, ఇనుము, దూదిపరిశ్రమలు క్షీణించినవి. ౧౯౩౨ నందు గ్రేట్ బ్రిటనుకు ౨౮,౭౦,౦౦,౦౦౦ సవరణల వ్యాపారము ప్రతికూలముగ నేర్పడినవి. గత సం||మునందు పైన్యమునకు ౩,౭౯,౫౦,౦౦౦, విమానములకు ౧,౭౪,౨౬,౦౦౦ నౌకాదళమునకు ౫,౩౫,౭౦,౦౦౦, మొత్తము ౧౦,౮౯,౪౬,౦౦౦, సవరణలు సం|| గ్రామసన్నాహములకు వ్యయము చేయబడినది. ప్రపంచ వ్యాప్తమైన సామ్రాజ్యముగల గ్రేట్ బ్రిటను నౌకా

దశమునందు వెనుకబడి ౮౩౮విమానములను మాత్రమే కలిగియున్నది. గ్రేటుబ్రిటనునందు పన్ను ౧౯౧౩ నందు తల ౧-కి ౩-౧౧-౦ నుండి ౧౯౩౩ నందు స. ౧౬-౮-౦ నకు హెచ్చినది. ఒటావా యొడంబడిక యును బంగారుప్రమాణ విసర్జనమును వ్యాపారాభివృద్ధిని కొంత గలుగజేసినను నది సంతృప్తికరముగాదు. గత సంవత్సరమునందు మద్యపానమునకు ౧౧,౨౮,౧౮, ౦౦౦ సవరనులు వ్యయమైనవి. ప్రజలు తల ౧ కి మద్యమునకు స. ౫-౩-౦ ను పన్నులకు ౧౬-౮-౦ సవరనులును చెల్లించుట బ్రిటిషుభాగ్యస్థితికి నిదర్శనమైనను శుభస్థితికి నిదర్శనము కాదు. ఖీణించుచున్న బ్రిటిషువ్యాపార పరిశ్రమాదుల సుద్ధరించుట కాత్మ విశ్వాసమును స్వయంసహాయమును సాధనములు కాని వ్యాపారరక్షణమును పరాక్రమణమును సాధనములు కావు. కన్సర్వేటివుకవచమును ధరించిన జాతీయప్రభుత్వము పూర్వవాసనలను విడిచి అమెరికా సంయుక్త రాష్ట్రములందు రూజువెల్టుగా రవలంబించుచున్న పునర్నిర్మాణ విధానమును స్వస్థలమునందును సామ్రాజ్యంతర్భాగములందును నిర్వహించుట కుపక్రమించుట వివేకమును, ధర్మమును.

జాతీయప్రభుత్వ నామమున ౧౯౩౧ సంవత్సరమునం దేర్పడిన బ్రిటిషు పార్లమెంటునందు ౪౭౨ కన్సర్వేటివులు, ౧౩ జాతీయ కార్మికులు, ౩౫ జాతీయ లిబరలు, ౩౩ లిబరలు, ౩ జాతీయస్వతంత్రులును విజయమునొందిరి లేబరుసభ్యులు ౫౨, స్వతంత్రలిబరలు ౪, స్వతంత్రులు ౩ మొత్తము ౫౯ సభ్యులు ప్రతిపక్షులును, ౫౫౦ ప్రభుత్వపక్షమువారును నేర్పడిరి. ౪౭౨ కన్సర్వేటివులుగలజాతీయపక్షము నామమునకుమాత్రమే జాతీయపక్షము. కన్సర్వేటివులు జాతీయ ప్రభుత్వమును నడపుచు సామ్రాజ్యమునం దంతటను కన్సర్వేటివు పరిపాలనను వ్యాపింపజేయుచున్నారు. లేబరు నాయకుడైన రామ్సే మాగ్డొనాల్డుగారు కన్సర్వేటివు

పక్షాదేశములను శిరసావహించుచు కార్మికాదర్శములను కార్మికపక్షమును ధ్వంసము చేయుచున్న విధము కార్మికుల ఆగ్రహమునకు గురియగుచున్నను గత్యంతరము గనపడకున్నది. జాతీయప్రభుత్వము, ప్రభుత్వము నుండి కొలదిమంది చీలిపోవుచున్నను, ౧౯౩౬-వ సంవత్సరమువరకును ప్రభుత్వమును నిర్వహించుటకు నిశ్చయించినది. ప్రభుత్వము. గత సంవత్సరమునందు నిర్ణయించిన, ఆయుధవిసర్జన సభానిర్ణయములు, ఆర్థికసభానిర్ణయములు విఫలములైనవి. కన్సర్వేటివు నాయకులు బార్డ్లెనుగారును, ఇర్వినుప్రభువు, శాంకీ, సైమన్, మొదలగువారలును నిస్సహాయులై కన్సర్వేటివు పక్షాదేశములను జాతీయప్రభుత్వ నామమున నిర్వహించుచున్నారు. చర్చిలు, పేషిక్రాఫ్టు, బీవరుబ్రూకు, రోధరుమియరుమొదలగు కఠిన కన్సర్వేటివు పక్షవాదులు సామ్రాజ్యమునందు కలుగజేయుచున్న సంక్షోభమును ప్రతిఘటించుటకు నాయకులకు శక్తి చాలకున్నది. జాతీయపక్షము చుక్కానిలేని నావ వలె సామ్రాజ్యాభిమానార్థవమునందు కొట్టుకొని పోవుచున్నది. కన్సర్వేటివు పక్షమునకు నిరంకుశాధికార నిర్వహణమునందును, స్వప్రయోజన పరాయణత్వమునందును, పూర్వాభ్యాసములందును గల విశ్వాసము ప్రజాస్వాతంత్ర్యమునందును, పరహితార్థమునందును, సూతనాదర్శములందును గలుగకున్నది. నూరేండ్లక్రిందట ప్రపంచము నిద్రావస్థయందు మునిగియున్న సమయమందు వలెనే నేడును సకల వ్యవహారములందును కన్సర్వేటివులు తామే లాభములను పొందగోరుట అవివేకము. సామ్రాజ్యంతర్భాగములు వికసించి స్వయంపోషణమును, స్వాతంత్ర్యమును నభిలషించుచున్నపుడు, పారతంత్ర్యమును, పరావలంబనమును శాసించుట బ్రిటిషు ప్రయోజనములకును, సామ్రాజ్య ప్రయోజనములకును నిరుపయోగము. వ్యాపారపరిశ్రమలందు ప్రపంచమునందు గలిగిన యభివృద్ధిని వెనుకకు నెట్టుట యెవ్వరికిని సాధ్యముగాదు. ఖీణించుచున్న వ్యాపారాదాయములు,

పెరుగుచున్న పన్నులు, వ్యాప్తమైన నిరుద్యోగము, దిన దిన ప్రవర్ధమాన మగుచున్న విశ్వాసరాహిత్యము, ప్రచండమైన స్పర్ధ, బ్రిటిషు రాజ్య నిర్వాహకులకు వారి కర్తవ్యమును వ్యక్తము చేయుచున్న జ్ఞానోదయము గలుగకుండుట దురదృష్టము.

హిందూస్థానము, సింహళము మొదలగు సామ్రాజ్యాంతర్భాగములందు రాజ్యాంగ సంస్కరణముల రూపమునను జాతీయ ప్రభుత్వము కల్పించుచున్న నిర్బంధ పాశములు జాతీయనామమునే పరిహసపాత్రము చేయుచున్నవి. బలవంతులకు భయముకలిగినపుడు కలిగెడి బీభత్సము, బలహీనులవలనను కలుగజాలదు. చర్చిలు సోమరువెల్లువర్గము నావహించిన సామ్రాజ్య భయాభిమానములకు శ్వేతపత్రము పట్లను కఠినాత్ములు పూనిన ప్రతిఘటనము ప్రమాణముగ నున్నది. బ్రిటిషు ప్రజలయందు జాతీయప్రభుత్వముపట్లను విశ్వాసము క్షీణించుచున్న విధమును లండను కొంటి కొన్నిలు ఎన్నికలందు లేబరుపక్ష విజయము వ్యక్తము చేయుచున్నది. ఎన్నికలందు మ్యూనిసిపలు రిఫారముపక్షము ౮౩ నుండి ౫౫ తగ్గినది. లేబరుపక్షము ౩౫ నుండి ౬౯కి పెరిగినది. నామరూపములు లేని లిబరలుపక్షము ౬ నుండి నామరూపములు లేకను అంతరించినది. జాతీయోద్ధరణ నిర్మాణము లందు దారితెన్ను తెలియకను గంతులువేయుచున్న కన్సర్వేటివుపక్షమునకు ౮౯ ఆస్వాల్డుమోస్లిగారి ఫాసిటు విధానమాశాజనకముగనున్నది. బాల్టువినుగా రాస్వాల్డు మోస్లిగారి ఫాసిటు నిరంకుశవిధానమును నిరసించినను బీవరు బ్రూకు రోధరుమియరు ప్రభువుగారులును వారి యనుచరులును నాశీకర్షించుచున్నారు. ప్రపంచవ్యాప్తమైన మానవస్వాతంత్ర్య ధర్మపరివర్తనము నాపుట దుస్తరమై ప్రళయాగ్నివలెను వ్యాపించి సకలమును పరివర్తనమయము చేయుట సహజము.

ప్రపంచము నెదుర్కొనిన యపూర్వ పరిస్థితులను ప్రతిఘటించుటయం దెప్పటి నాటకములె మారు రూపనామములను ప్రత్యక్షమగుచున్నవి. గ్రేటుబ్రిటను

నందు శ్రీపురుషుల కెన్నికహక్కులున్నను శ్రీమంతులు, ప్రభువులు, మతగురువులు, పరిశ్రమాధిపతులును ప్రభుత్వము చేయుచున్నారు. రాజరక్షణ చాఛదనమునను పూర్వాచారవ్యవహార సంప్రదాయములు విజయమును పొందుచు నవీనాదర్శ వ్యవహారములు నిరాదరణమును బడయుచున్నవి. రాజత్వము, కులీనత్వము, కుబేరత్వము, సామ్రాజ్యత్వము గ్రేటుబ్రిటనునందు లేబరుపక్షమును నిరూపము చేసినవి. బ్రిటిషుప్రజలకు క్షీణించుచున్నను సామ్రాజ్యభాగ్యభోగములను, గౌరవాభిమానములను, పరాక్రమణమును రక్షించుటయందుగల యభిమానావేశములు సాంఘిక పరివర్తనమునందును, కమ్యూనిస్టుపరివర్తనమునందును గలుగుట దుర్లభము. గ్రేటుబ్రిటనునందను, బ్రిటిషు సామ్రాజ్యాంతర్భాగములందును, త్రేడుమునియనులును, కార్మికపక్షమును సాంఘికపరివర్తనము నపేక్షించినను సంకల్పసిద్ధికి కర్మయోగము దుర్లభము. మోస్లిగారు స్థాపించి విరమించిన "Action" "కర్మ" పత్రికోదంత మిందులకు నిదర్శనము. భాగ్యవంతమైన గ్రేటుబ్రిటనునందు కన్సర్వేటివులకును, కార్మికులకును ప్రవర్ధమానంబగుచున్న సాంఘిక సంరంభమునందు పురాతన నూతనసంస్కారములును, పక్షములును సామ్రాజ్యలాభాభిమానములును లంతర్ధానములై స్వప్రయోజనపరాయణములైన యుభయపక్షములకును ధర్మనిర్వహణము దుర్లభమైనను సాధ్యముగ నున్నది. సాంఘిక పరివర్తనరంగములైన యూరపు రాజ్యములకు సాహచర్య మసాధ్యమైనను గత్యంతరము గనుపడకున్నది. పైమను ఈడెనుగారల శాంతియాత్రలు నిరర్థకములైనవి. సోవియటు రష్యాతో వ్యాపార మనివారమైనది. ప్రపంచవ్యాప్తమైన రాజకీయార్థిక సాంఘికపరివర్తనమునందు బ్రిటిషుప్రజానాయకులకును అమెరికా ప్రాన్సు, ఇటలీ, జర్మనీ, ఆస్ట్రీయారాజ్యములందువలెను కార్యపరత్వముగలపభుత్వస్థానముశరణ్యముగనున్నది

ప్రాన్సు దేశము ఆదికాలమునుండియును యూరపు రాజ్యములందు రాజ్యాంగపరివర్తనమునకును, భాష

పరివర్తనమునకును నిలయము. ప్రాచీన మానవ స్వాతంత్ర్య చిహ్నములైన “సమత్వము, స్వాతంత్ర్యము, సోదరత్వము” ప్రాచీన దేశమునందు వికసించి ప్రసవించినవి. గ్రేటుబ్రిటను, జర్మను రాజ్యముల నడుమను చిరకాలమునుండియును పరాసుభూమి రణరంగముగను పరిణమించినది. రెండు రాజ్యముల నడుమను చిక్కినను స్వాతంత్ర్య ధ్వజమును రక్షించి వ్యాపింప జేసినది. జోఆఫ్ఆఫ్ఆక్సు-ప్రాచీన విమోచనముచేసిన యితిహాసము దివ్యఘట్టము. గతించిన అయిరోపా మహాసంగ్రామ సమయమునందువలెను వర్తమానకాలమును నీ పరిస్థితులనే వెల్లడి చేయుచున్నది. ఆదికాలమునుండియును జర్మనీ ప్రాచీనరాజ్యములకు గల వైర ముషళమించుటకు సాధనములు దుర్లభములు. జర్మనీయందు గతవత్సరమునందు నాజీ పక్ష విజృంభణము తిరిగి ౧౯౧౮-వ సంవత్సర పరిస్థితులను సమకూర్చుచున్నది. ప్రాచీనదేశము పూర్వము వలెనే సంగ్రామసన్నాహములను చేయుచున్నది. గత సంవత్సరమునందు పైన్యములకు ౫,౯౦,౦౦,౦౦౦ సవరనులు వ్యయమైనవి. ౩౦౦౦ విమానదళమును గలిగి విమానబలమునందు మొదటిదిగనున్నది.

ప్రాచీనదేశమునందు గత సంవత్సరాదాయము ౩౦,౦౦,౦౦,౦౦౦ సవరనులు; అప్పు ౩,౫౦,౮౦,౦౦,౦౦౦ సవరనులు. ఇతర రాజ్యములందువలెనే ప్రాచీన దేశమునందును గతసంవత్సరమునందు గలిగిన ఆర్థిక దుస్థితి కలవరమును గలుగజేసినను ప్రాచీనప్రభుత్వము బంగారు పరిమాణమును విడువకను వ్యాపార పరిశ్రమలను రక్షించినది. పశ్చిమోత్తరదిశలందు అర్బుదముల ద్రవ్యమును వ్యయముచేసి దుర్భేద్యములైన దుర్గావళులను నిర్మించినది. గత సంవత్సరమునందు ౫ ప్రభుత్వములు మారిపోయినవి. డలాడియరు ప్రభుత్వ పతనానంతరము పారిసు నగరమునందు జరిగిన కొట్లాటలు పరదేశీయులకు సంశయములను గలుగజేసినను ఫ్రెంచి ప్రజల నిశ్చలదేశ భక్తిని స్వాతంత్ర్యప్రభుత్వమును

చలింపజేయలేదు. పారిసు నగరమునందు సాంఘిక పక్షమునకును ప్రభుత్వపక్షమునకును గలిగిన సమరము మంత్రాంగములను వెల్లడిపరచినను, ఫ్రెంచిప్రజల దేశాభిమానము ఆపత్సమయమునందు పూర్వమువలెనే స్థిరపడినది.

డొమర్గీగారు నిర్ణయించిన మంత్రవర్గము ఫ్రెంచి ప్రజలదేశభక్తిని సంయోగశక్తిని నిదర్శనము. మంత్రవర్గమునందు సాంఘికాభిమానులు, ప్రజాస్వామికాభిమానులు, వివిధపక్షములవారు కలరు. ఎనుబదియేండ్లు నిండిన డొమర్గీగారు ప్రధానమంత్రిగను, ౭౮ ఏండ్లు గల మార్షలు పేటగారు యుద్ధాంగమంత్రిగను, బార్తోగారు విదేశాంగమంత్రిగను, హెరియట్ టాడ్టూ మొదలగు ప్రసిద్ధనాయకు లితర మంత్రులుగ నేర్పడుటయును ఫ్రెంచి ప్రభుత్వమునకు స్వదేశమునందును విదేశములందును మహాబలమును సమకూర్చినది. ఫ్రెంచిప్రభుత్వ నిర్మాణము గ్రేటుబ్రిటను, జర్మనీ, ఇటలీ, రష్యా దేశములందును, చిన్న రాజ్యములందును కర్తవ్యాకర్తవ్య నిర్ణయములకు అవకాశములను గలుగజేసినది. ప్రాచీనరాజ్యము ౧౯౧౮-వసంవత్సరమునకు పూర్వమువలెనే ఇప్పుడును రష్యా రాజ్యముతో సంధిని జేసికొనుట ఫ్రెంచిప్రజల స్వభావమును యూరపురాజ్య తంత్రముల పరమార్థమును తెలుపుచున్నది. ప్రాచీన స్వాతంత్ర్య రక్షణమునకు నిరంకు శాధికార నిలయమైన జారుప్రభుత్వమును, కమ్యూనిస్టులకు ఆకరమైన సోవియటు ప్రభుత్వమును సమానములు. రష్యా ప్రాచీనప్రభుత్వముల మిత్రత్వము మధ్య యూరపురాజ్యములకును ఆత్మవిశ్వాసము గలుగజేసినది. కమ్యూనిస్టు విధానమును నిర్మూలించుటకు సమకట్టిన నాజీ ఫాసిస్టుపక్షములకు జిజ్ఞాసకు కారణమైనది. ఐరోపాసంగ్రామమునకు పూర్వమువలెనే వర్తమాన కాలమునందును యూరపురాజ్యము లన్నియును పక్షములుగజేరి రాజ్యబలసంరక్షణమును ప్రబలరాజ్యభంజనమును జేయుటకు చేయుచున్నప్రయత్నములు సం

గ్రామ స్వరూపమును చాల్చుట సహజమైనను సంగ్రామ ఫలము మానవ స్వాతంత్ర్య ధర్మాభ్యుదయమునందు గోచరమగుచున్నది. పూర్వమువలెనే వర్తమానకాలమునందును వివిధ రాజ్యములును షక్షములుగ నేర్పడినను వివిధరాజ్యములందును నిరంకుశాధికార నిర్వాహకులు సర్వాధికారములను నిర్వహించుచున్న సమయమందు ప్రాన్సుదేశము వివిధషక్షముల సంయోగబల సాధనమునను ప్రభుత్వనిర్వహణము నేయబూనుట స్వాతంత్ర్య ధర్మాభ్యుదయమునకు శుభసూచకముగ నున్నది. దేశస్వాతంత్ర్యము, సామ్రాజ్య రక్షణము, మానవస్వాతంత్ర్య వికాసము, మానవ స్వాతంత్ర్య ధర్మఐరిణామమునందు సమాన ప్రతిపత్తిని గలిగియుండుటకు చిరకాలమునుండియును ప్రాన్సుదేశమునందు సంప్రాప్తిములైన రాజ్యాంగఐరివర్తనములు సాధనములు గాగలవు.

ప్రపంచఐరిణామమునందు ఆదికాలమునుండియు వ్యక్తులకును, సంఘములకును అధికారనిర్వహణమునందు సంరంభము సహజము. వ్యక్తులు గురువులైనను, ప్రభువులైనను, పండితులైనను, వీరులైనను, తత్వజ్ఞులైనను ప్రజాసంస్కారమున కనురూపముగ ఐరివర్తనమునకు అధికారదాసు లగుదురు. ప్రజల నిస్సహాయస్థితియును భయమును వ్యక్తుల నాయకత్వమునకు వినియోగపడుచున్నవి. వర్తమానకాలమునందు ఇటలీ ముస్సోలినీ యందు ముస్సోలినీ, జర్మనీయందు హిట్లరు, ఆస్ట్రీయాయందు షోల్ఫస్, టర్కీయందు కెమల్ పాషా, రష్యాయందు స్టాలిన్, అమెరికాయందు రూజువెల్ట్, హిందూస్థానమునందు గాంధీ మొదలగు ప్రముఖులు నిర్వహించుచున్న నాయకత్వము ప్రజాసంస్కారమున కనురూపముగ నున్నది. ఇటలీయందు నల్లపక్షుల నాయకుడు ముస్సోలినీ నిరంకుశధ్వజమును స్థాపించి నిర్వహించుచున్న వ్యవహారములు నిందాస్తోత్రములకు పాత్రము లగుచున్నవి. పదేండ్లలో ముస్సోలినీనామము యూరపునందు మారుమ్రోగినది. యూరపమందు సాంఘికవాది

మైన ముస్సోలినీ మధ్యమదశయందు ఫాసిస్టుగ మారుటయును, ఇతరరాజ్యములకు మార్గదర్శకు డగుటయును విచిత్రము. ఐరోపామహాసంగ్రామానంతరము ప్రపంచమునందు కలిగిన ఉత్సాహనిరుత్సాహములు ఇటలీయందును వ్యాపించినవి. మతాధిపతి పోపు రాజ్యాధిపతి విక్టర్ ఆమాన్యుయల్ నడుమను ప్రజలు కాలయాచన జేయుచుండిరి. ఐరోపా మహాసంగ్రామమునందు ఇటలీరాజ్యమునకు ౧,౯౨,౦౦,౦౦,౦౦౦ సవరనులు వ్యయమైనవి. ప్రజలు మతాచారవ్యవహారములకును, దురాచారములకును దాసులై కాలయాచన చేయుచుండిరి. యువజన హృదయాంతర్గతమైన కార్యకర్తత్వమును సాధించుటకు ముస్సోలినీగారి కార్యోత్సాహ వినియోగపడినది. ఇటలీయందువలెనే ఇతరరాజ్యములందును వ్యాపించియున్న నిస్సహాయస్థితి ఫాసిస్టువిధానము నాకర్షించినది. గతసంవత్సరము ఇటలీ దిగుమతులు ౮,౯౦,౦౦,౦౦౦, ఎగుమతులు ౭,౪౦,౦౦,౦౦౦. ఆదాయము ౧౪,౮౩,౪౪,౦౦౦ సవరనులు. ఫాసిస్టు ప్రభుత్వము తలపెట్టిన అభ్యుదయము దేశమునకు సాధ్యముకాకపోయినను దేశమునందు తాత్రభావము విజృంభించినది.

గతసంవత్సరమునందు నౌకాదళమునకు సైన్యాదులకు ౨ కోట్ల ౩౦ లక్షలు, సవరనులు వ్యయము చేయబడినవి. ఫాసిస్టువిధానము సాధ్యముచేయని ఆర్థిక పారిశ్రామికాభివృద్ధిని విదేశవ్యాపారాక్రమణమూలమునను, రక్షణవ్యాపారమూలమునను, సాధ్యము జేయుటకు ముస్సోలినీప్రభుత్వము యత్నించుచున్నది. ఇతరరాజ్యములందువలెనే ఇటలీయందును నీ ప్రయత్నము సఫలమగుటలేదు. ముస్సోలినీలక్ష్యము ఆస్ట్రీయా, హంగరీ, జకోస్లావోకా, రుమేనియా రాజ్యములను ఇటలీషక్షమునకు నాకర్షించుటకు వినియోగపడుచున్నది. కార్యశూరుడును ధీరుడును నైన ముస్సోలినీ నిరూపించిన ఫాసిస్టుకార్యవిధానము ప్రపంచలక్ష్యమును ఆకర్షించుచున్నది.

జర్మనీయందు నాజీపక్షమునకు గతసంవత్సరము నందు గలిగిన అపూర్వవిజయము యూరపునందు మహా సంచలనమును గలుగజేసినది. నాజీపక్షము యూదులు, జర్మని హిట్లరు కమ్యూనిస్టులు, ప్రేడుచూనియనులు మొదలగువారిపట్ల చూపిన దుర్మార్గ హము ప్రపంచమునందు అసహ్యమును కలుగజేసినది. నాజీపక్షనాయకుడైన హిట్లరుగారు పార్లమెంటుసమ్మతిని జర్మనీయందు నిరంకుశాధికారమును వహించిరి. పార్లమెంటునందు నాజీపక్షము సంపూర్ణాధికారమును గలిగియున్నది. హిట్లరుగారు నిరంకుశాధికారనిర్వహణమున కుపక్రమించిన ప్రస్థానము నాజీలకు షరమోత్సాహమును గలుగజేసినను యూరపు రాజ్యములందు కలవరమును గలుగజేసినది. సంగ్రామానంతరము జర్మనీ యవలంబించిన ఆర్థికవిధానము బ్రిటిషు రాజ్యతంత్రజ్ఞుల యామోదమును బడసినను నిగుపయోగము. సంగ్రామానంతరము జర్మని క్రేటుబ్రీటను నితరరాజ్యములనుండి ౧,౦౦,౦౦,౦౦,౦౦౦ సవరనుల నప్పచేసినది. అప్పునకు వడ్డీ ౬,౫౦,౦౦,౦౦౦ సవరనులనిచ్చుటకు జర్మని నిరాకరించినది. ఆయుధవిసర్జనము సకలరాజ్యములకును సమానముగ నుండవలయుననియును, వర్సెలుసంధి జర్మను సంహారమున కేర్పడినదనియును హిట్లరుగారు ప్రకటించిరి. అక్టోబరు మాసమునందు ఆయుధ విసర్జనసభను, నానాజాతి సమితిని జర్మని రాజ్యము విడిచినది. సంగ్రామానంతరము విషాదస్థితియందు ముగియున్న జర్మనులకు హిట్లరు నాయకత్వము క్రిందను నాజీమంత్రోచ్చారణము మహాశక్తినిసమకూర్చినది. నాజీశూర సైనికులు స్వదేశమునందు వివిధపక్షములను నిర్మూలముచేసినతరువాతను వారి లక్ష్యమును, ఆస్త్రియా, పోలాండు, ప్రాన్సు మొదలగు రాజ్యములకు మరల్చిరి. జర్మనికి సహజసంస్కారమైన ఔత్తరీలము నాజీపరిణామమును పొందినను యూరపురాజ్యములకు దుస్సహముగనున్నది. హిట్లరుగారు శాంతి మార్గమునను ఆస్త్రియామొదలగు దేశములందు గల

జర్మనుల సంయోగమును జేయుటకు పన్నినతంత్రమును ఇటలీ, ప్రాన్సు, క్రేటుబ్రీటను, ఆస్త్రియా మొదలగు రాజ్యములు ప్రతిఘటించినవి. జర్మనియందు నాజీపక్షము (Nationalist Socialist) నామమునను జేయుచున్న ఔత్తరవిజృంభణము క్రేటుబ్రీటనునందు జాతీయ ప్రభుత్వము సంకల్పించిన ఔత్తరవిజృంభణమువలెను సాంఘికపక్షప్రయోజనవ్యాపనమును నిర్మూలము చేయుటకు వినియోగపడగలదు.

వర్తమానకాలమునందు ప్రపంచలక్ష్యము సంయుక్త సోవియటు రష్యారాష్ట్రములమీదను ప్రసరించుచున్నది. సంయుక్తరష్యారాష్ట్రములు ౮౨,౮౧,౬౨౩ చదరపుమైళ్లు విస్తీర్ణమును ౧౬,౨౧,౮౩,౦౦౦ ప్రజలనుకలిగి యూరపు ఆసియాఖండములందు వ్యాపకమును గలిగియున్నది. రష్యారాష్ట్రములందు హిందూస్థానము నందువలెనే నూటికి ౮౦ మంది గ్రామసీమలందే నివసించుచున్నారు. సంయుక్తరష్యారాజ్యములందు స్వఛరి పాలనముగల ౫౦ ప్రభుత్వములు గలవు. గ్రామము నుండి రాష్ట్రమువరకును వ్యాప్తమైన స్వఛరిపాలనభాగములందు సోవియటుప్రాతినిధ్య పరిపాలనము వ్యాపించియున్నది. సోవియటుఛరిపాలనావిధానము మొదట సందేహములకు మూలమైనను కాలక్రమమున నితర రాజ్యములకును విచారణయోగ్యమగుచున్నది. విద్యావిధానమునందును దేవాగారములందును సోవియటుప్రభుత్వము దేవతారాధనమును నిషేధించి మతగురువుల యాగ్రహమునకు గురియైనది. సోవియటుప్రభుత్వ మవలంబించిన పంచవర్ష నిర్మాణకార్యవిధానము రష్యారాజ్యవికాసమునకు వినియోగపడినట్లు విమర్శకు లభిప్రాయపడుచున్నారు. సోవియటు రష్యా జారు ప్రభుత్వము చేసిన అప్పలను నిరాకరించుటవలన యూరపురాజ్యముల యాగ్రహబహిష్కారములకు గురియైనది. కాని కాలక్రమమున యూరపురాజ్యములన్నియును రష్యా వ్యాపారమును తిరిగి ప్రారంభించినవి. ౧౯౩౧ నందు బ్రిటిషు

దీప్తిపములనుండి ౯,౦౪,౦౦౦ నవరసుల దిగుమతులును బ్రిటిషు దీప్తిపములకు ౩,౨౧,౭౯,౦౦౦ నవరసుల యెగుమతులును చేయబడినవి. రష్యానుండి యూరపు రాజ్యములకు ఖనిజములు, ధాన్యములు, కలశ, పెట్రోలియమ్ మొదలగు పదార్థములు ఎగుమతి చేయబడుచున్నవి. ౧౯౩౨-౩౩ సంవత్సరమునందు దేశాదాయము ౩౫,౦౧,౦౯,౦౦,౦౦౦ వ్యయము ౩౩,౨౩,౦౯,౦౦,౦౦౦ రూబులులు సోవియటురష్యా ప్రభుత్వము స్థాపించిన తరువాత ౮,౫౦,౪౫,౦౦,౦౦౦ రూబులులు అప్పులు చేయబడినవి. సైన్యశిక్షణ వ్యాపనమునకు సోవియటురష్యా యావచ్ఛక్తిని వినియోగించుచున్నది. సైన్యనిర్మాణముతోపాటు విమాననిర్మాణమును, నౌకానిర్మాణమును చేయుచున్నట్లు వ్యవహారములు తెలుపుచున్నవి. ౧౯౩౨ నందు మొదటి గి ఏండ్లవిధానము ముగిసినది. తిరిగి గి ఏండ్లవిధానము ప్రారంభింపబడినది.

రష్యాదేశమును స్థానినుగారి ప్రభుత్వము రాజకీయాధిక పార్లీశ్రామిక విషయములందు ప్రముఖ దేశమును చేయుటకు యావచ్ఛక్తిని వినియోగించి బలవంతముగ ప్రజలచేత పనిచేయించుచున్నది. ఈ సంవత్సరమునందు రష్యాయందు ౯,౦౦,౦౦,౦౦౦ టన్నుల ధాన్యము పండినట్లు తెలియుచున్నది. శరిశ్రమలందువలెనే వ్యవసాయమునందును ప్రజలను బలవంతముగ పనిచేయించుచు లాభము నష్టము ప్రభుత్వము పొందుచున్నది. దేశమునందు గల అయిదింట నాల్గవవంతు భూమిని ప్రభుత్వము వ్యవసాయము చేయించుచున్నది. వ్యవసాయవిధానమునందు నవీనయంత్రసాధనములు వాడబడుచున్నవి. అనుభవమును, శాస్త్రపరిజ్ఞానమును గల పనివాండ్ల నాయకులుగ నేర్పడి వ్యవసాయ శరిశ్రమలందు పనులను చేయించుచున్నారు. శరిణామ మెటులున్నను ప్రపంచమందు మానవస్వాతంత్ర్య శరివర్తనమునందు నూతనాధ్యాయమును నిర్మించుటకు సోవియటు ప్రభుత్వవిధానములు వినియోగపడగలవు. సోవియటు ప్రభుత్వము

కమ్యూనిస్టు ప్రచారము కొంతవరకు విరమించి కారణి రూపమున సోవియటువిధానమును ప్రపంచమునకు పరిపాటి చేయుటకు ప్రయత్నించుచున్నది. సోవియటు ప్రభుత్వము మతశిక్షణమునందు, దైవారాధనయందు, వివాహసంబంధమందు, విద్యాశిక్షణమునందు, వ్యవసాయ శరిశ్రమనిర్వహణమునందు, సంగ్రామసన్నాహములందు, యంత్రాద్యుపకరణోపయోగములందు, వైద్యసహాయమునందు చూపుచున్న సాహస ధైర్యములు, నిరర్థకములైన ప్రాచీనాచార సంస్కారములను విడిచి, ప్రయోజనకరములైన నవీనసంస్కారసాధనముల నవలంబించుటకు ప్రపంచమునకు వినియోగపడగలవు. సోవియటు శరివర్తనము భావికాలమునం దెటులు శరిణమిచ్చినను మానవస్వాతంత్ర్యసంరంభమునందు నూతన శకనిర్మాణమునకు వినియోగపడగలదు.

ఆసియాఖండము భూభాగములందు విశాలమైన ప్రాచీనఖండము. ఆసియా భూతలమునందు మూడవ వంతు విస్తీర్ణమును ౧,౦౧,౩౦,౦౦,౦౦౦ ప్రజలను కలిగి యున్నది. భూగోళమునందు ఆసియా గల ౧౮గి కోట్ల ప్రజలందును ౧౦౧ కోట్లు ఆసియాయందు కలరు. చీనాయందు ౪౨, హిందూస్థానమునందు ౩౫, ఆసియా రుష్యా యందు ౫, నెదర్లాండునందు ౬, జపానురాజ్యమునందు ౮ కోట్ల ప్రజలు కలరు. ఆసియాఖండము ప్రకృతినంపదల కాకరమై ఆదికాలమునుండియును మానవాభ్యుదయమునకు వినియోగపడినవిధమును ప్రపంచేతిహాసములు వ్యక్తముచేయుచున్నవి. యూరపురాజ్యముల వ్యాపనాధిపత్యము లాసియాఖండవాసులను నిరర్థకులను నిర్వీర్యులను నిర్ధనులను జేసినది. ఆసియా ఆఫ్రికా ఖండములయాధిపత్యము యూరపురాజ్యముల భాగ్యభోగములకువలెను విజ్ఞానమునకును మూలాధారము. ఆసియాయందు ౨౦ లక్షల విస్తీర్ణమును ౩౬ కోట్ల ప్రజలును గల బ్రిటిషుసామ్రాజ్యంతర్భాగములు గలవు. బ్రిటిషు దీప్తిపము లాసియాఖండమునందలి బ్రిటిషు సామ్రా

జ్యోతిర్భాగములకు 3౨ కోట్ల సవరనుల ఎగుమతులను, సామ్రాజ్యోత్సాహములనుండి 3౦ కోట్ల సవరనుల దిగుమతులను జేయుచు ౯౨ కోట్ల సవరనుల నప్పు నిచ్చినది. ఆసియాసామ్రాజ్యోత్సాహములందు హిందూస్థానము బ్రిటీషుసామ్రాజ్యశుభస్థితికి మకుటముగ నున్నది. యూరపురాజ్యము లాసియాఖండభాగములను తాత్కాలికమైనబాహుబలముచేతను జయించినను ఆసియాఖండము యూరపు రాజ్యములను నిత్యమైన ధర్మబలముచేతను జయించినది. యూరపు రాజ్యముల విజ్ఞానమునకు మూలాధారము లైన యవన రోమక సంస్కారములును ఆసియా విజ్ఞాన ఫలములు. యవనతత్త్వశాస్త్రమును రోమక ధర్మశాస్త్రమును ఆసియావిజ్ఞానసంస్కారఫలములు ఆసియా యందలి అలెగ్జాండరువిజయములును, రోమకసామ్రాజ్యవిజయములును నామరూపములు లేకను జీర్ణించినను ఆసియావైజ్ఞానికవిజయము లవిచ్ఛిన్నముగను పల్లవించి ప్రసవించుచున్నవి.

యూరపు మతధర్మ సంస్కారము నకు మూల బీజమైన క్రైస్తవమతమున కాసియాఖండము జన్మస్థానము. క్రైస్తవమతము పశుప్రాయులైన యూరపు ప్రజలను మానవధర్మ పరాయణులను చేసిన విధమును యూరపు దేశచరిత్రములు వెల్లడి చేయుచున్నవి. యూరపు రాజ్యములు క్రైస్తవమతమును స్వీకరించినను క్రైస్తవధర్మవికాసము ప్రాచ్యదేశములందువలెను పాశ్చాత్యదేశములందు సాధ్యము గాని విధమును క్రైస్తవమత వ్యాపనము భోధించుచున్నది. ప్రపంచవ్యాప్తము లైన క్రైస్తవమహమ్మదీయమతములకును తత్త్వశాస్త్రములకును నాసియాఖండము జన్మస్థానము. ఆరంభమునందు యూరపురాజ్యముల పశుబల మాసియాఖండవాసులకు సంభ్రమసమ్మోహములను గలుగజేసినను సహజమైన ధర్మసంస్కరణము సమ్మోహనాస్త్రములను శిథిలము చేయుట కుపక్రమించినది.

జపానీయుల బాహుబల విజయములు ప్రాచ్యుల కాత్మ సంస్కరణమునకును, ఆత్మ విశ్వాసమునకును, వినియోగపడినవి. సంగ్రామరంగములందువలెను ఆర్థిక వ్యాపార పారిశ్రామిక రంగములందును జపానీయుల విజయములును పాశ్చాత్యుల పరాజయములును శ్వేత జాతుల యాన్నత్య భ్రమను శ్వేతేతర జాతుల నీచత్వ భ్రమను తొలగించి ఆసియా వాసులకు ప్రత్యభిజ్ఞానము గలిగించినవి. ఆసియాఖండవాసులకు ముఖ్యము గను జపాను ప్రజలకు గలిగిన ప్రత్యభిజ్ఞానము భయంకరమైన సంగ్రామపరిణామమును పొందుట సంభవము. కాలాంతరమునందైనను యూరపు పరాజయమును, ఆసియావిజయమును ధ్రువములైనను సన్నిహితభావిపరిణామము దారుణముగ నున్నది. మంచూరియారంగము నందు రుష్యా-జపానురాజ్యములు చేయుచున్న సంగ్రామ సన్నాహములు పాశ్చాత్యరాజ్యముల యాదరణమునకు పాత్రములై భయంకర పరిణామమునకు బీజము లగుచున్నవి. మంచూకో స్వతంత్రరాజ్య స్థాపనమునకు, నానాజాతీసమితిరూపమునను యూరపురాజ్యములును, అమెరికా - సంయుక్త రాష్ట్రములును ప్రతిఘటించినను తన దృఢసంకల్పమును సార్థకము చేయుటకు జపానున కాయుధవిసర్జనసభను విసర్జింపవలసిన యవసరముగలిగినది. కెయిజరు 3౦ ఏండ్లకుపూర్వము నిర్ణయించినటులు శ్వేతజాతులన్నియును జేరి పింగళజాతులను నల్లజాతులను నిర్జింపబూనుట సహజము. శ్వేతజాతుల సంస్కారమే ప్రపంచేతిహాసములందు సుందోషసుందో పాఖ్యానముగను పరిణమింప గలదు. ఆసియా ఖండవాసులకు ప్రాణ మాన ధన ధర్మ రక్షణముల కాసియాఖండవాసుల సంయోగ మత్యంతావసరము. ఆసియాఖండసంయోగమునకు చీనా హిందూస్థానముల సానుభూతిని బడసి జపాను నాయకత్వమును వహించుట సంకల్పసిద్ధికి సాధనముగ నుండగలదు. ప్రపంచమునందు శాంతిని ధర్మమును స్థాపించుట

కాసియాధర్మవిజయమునకు బలవిజయమును నవసరముగ నున్నది.

దూదిపరిశ్రమవ్యాపార నిర్వహణ విషయములందు జపాను హిందూస్థానములకును జపాను లాంకాపైరులకును జరుగుచున్న రాయబారపు వార్తలు భావిపరిణామమునకు ప్రస్తావనలు. బ్రిటీషు రాజ్యాధికారులు హిందూస్థానమునందు వలెను ప్రపంచమునం దంతటను వ్యాపార పరిశ్రమల పంపకమును జపానుకును స్వదేశములకును ప్రతికూలముగను గోరుచున్నారు. ఆసియాఖండసంయోగావసరమును జపాను ప్రకటించినవిధము మానవస్వాత్మత్ర్యధర్మాభిలాషుల కభివృద్ధిపాత్రము. శ్వేతప్రజల స్వప్రయోజనపరాయణత్వమునకు ౧౦౦౦ కోట్ల ప్రజలను నిరంతరదరిద్రదాస్యావరణములందు నిలిపియుంచుట మానవధర్మాభ్యుదయమునకును, విశ్వకల్యాణమునకును శ్వేతముఖలస్వప్రయోజనములకును నిరుపయోగము. నిస్సహాయస్థితియందున్న ఆసియారాజ్యములకు దైవమే శరణ్యముగ నున్నది.

ప్రపంచరాజ్యములం దత్యంత ప్రాచీన సంస్కారము గల చీనారాజ్యోదంతము గజేంద్రమోక్షోదంతముగ నున్నది. పరమసాధువులైన చీనా ప్రజలు పాశ్చాత్యులకు పరిహాసపాత్రులైనవిధమునకు చీనారాజ్యము పాశ్చాత్య నవల లంఘిలి వర్ణనలు ప్రమాణములు. ౪౧ కోట్లసాధుజనుల ప్రబోధము ప్రపంచ పరిణామమునందు మహోదయమునకు వినియోగపడగలదు. స్వదేశమునం దన్యోన్యకలహములు, జపాను విజృంభణము, రుష్యాప్రతిఘటనము చీనాభావిపరిణామమును దురూహము చేయుచున్నను చీనాప్రబోధవికాసములు విజయమును బొందుచున్నవి.

ప్రపంచవ్యవహారములందు దుర్భరమైన ఆసియా ఖండ స్థితిగతులు హిందూస్థాన స్థితిగతులను దుర్భర

తరము చేసినవి. బంకించంద్రుని హిందూస్తానము “వందే మాతరం” గీతమును స్మరించిన భారతీయులకు హిందూస్థానము నావ

రించిన నిస్సహాయస్థితి పరమవిషాదమును గలుగజేయుచున్నది. సుజల పూరితములైన నదీనదములను, విశాలమైన సముద్రతీరమును, అపారమైన సహజసంపదలను, విశేషమైన పాడిపంటలను, ప్రాచీన సంస్కారమును, ౩౫ కోట్ల ప్రజలను గల్గియున్న హిందూస్తానము వర్తమానకాలమం దనుభవించుచున్న సందిగ్ధావస్థనర్ణనాతీతము. వివిధమతములకును, భాషలకును, సంప్రదాయాచారములకును నిలయమైన హిందూస్తానమందు పారతంత్ర్య స్థితియందు సంయోగ సాహచర్యములు దుర్లభములుగ నున్నవి. హిందూస్తానము ౯ పెద్దరాష్ట్రములుగను, ౪ చిన్నరాష్ట్రములుగను, ౬౦౦- స్వదేశ సంస్థానములుగను విభజింపబడినది.

హిందూదేశ ప్రధాన రాష్ట్రములు

	విస్తీర్ణము (చ.ర.పు.మైళ్లు)	జనసంఖ్య	జనసంఖ్య చ.ర.పు.మైళ్లు కు
బర్మా	౨,౩౩,౭౦౦	౧,౪౬,౭౦,౦౦౦	౬౩
మదరాసు	౧,౪౨,౩౦౦	౪,౬౭,౪౦,౦౦౦	౩౨౯
బొంబాయి	౧,౨౩,౬౦౦	౨,౧౮,౦౦,౦౦౦	౧౭౬
సంయుక్తరాష్ట్రములు	౧,౦౬,౩౦౦	౪,౮౪,౧౦,౦౦౦	౪౫౫
మగ్యరాష్ట్రములు,			
బీరారు	౯౯,౯౦౦	౧,౫౫,౧౦,౦౦౦	౧౫౫
పంజాబు	౯౯,౦౦౦	౨,౩౫,౮౦,౦౦౦	౨౩౮
బీహారు, ఒరిస్సాలు	౮౩,౦౫౦	౩,౭౬,౮౦,౦౦౦	౪౫౪
తెంగాలు	౭౭,౫౦౦	౫,౦౧,౧౦,౦౦౦	౬౪౬
ఆసాము	౫౫,౦౦౦	౮౬,౨౦,౦౦౦	౧౫౭

రాష్ట్రములందు హిందువు లధికముగాగల రాష్ట్రములు ౭. మహమ్మదీయు లధికముగా గల రాష్ట్రములు ౪. ఉత్కల సింధురాష్ట్ర నిర్మాణమువలన నొక మహమ్మదీయ రాష్ట్రమును నొక హిందూరాష్ట్రమును నేర్పడగలవు. హిందూ మహమ్మదీయ సమ్మేళనము నందు రాష్ట్రముల ఆధిక్యము సాంఘిక సంరంభమునకు

కారణమైనది. హిందూదేశమునందు 37 కోట్ల ప్రజలు 2,727 పట్టణములందును, 1,73,536 గ్రామములందును 2,00,12,220 గృహములందును నివసించుచున్నారు. 30 కోట్లమంది గ్రామములందును, 8 కోట్లమంది పట్టణములందును నివసించుచున్నారు. ప్రజలందు హిందువులు 2,360, మహమ్మదీయులు 222, బౌద్ధులు 122, క్రైస్తవులు 12, సిక్కులు 13, జైనులు 12, పార్సీలు 1, ఆరణ్యకులు 52 లక్షలుగలరు. ప్రజలందు 100 కి 15 హిందువులు, 22 మహమ్మదీయులు, క్రైస్తవులు 15, సిక్కులు 15, ఇతరులు 15. వంతున గలరు. హిందూదేశమునందు 7,00,000, 220 నిమ్నజాతిప్రజలు కలరు. వీరు క్రమముగ క్రైస్తవ, మహమ్మదీయమతములను స్వీకరించుచు మహమ్మదీయ క్రైస్తవజనమతాభివృద్ధికి తోడ్పడుచున్నారు. ప్రజలలో 100 కి 15 మందికి వ్యవసాయపరిశ్రమజీవనాధారముగ నున్నది. మగ్గములపరిశ్రమ 100 కి 10 మందికి జీవనాధారముగ నున్నను తీరించుచున్నది. దేశమునందు 277 భాషలు వాడుకలోనున్నను ఈక్రిందివి ప్రధానభాషలు :

పశ్చిమహిందీ	2,07,22,300
బీహారీహిందీ	2,27,22,300
బెంగాలీ	7,32,27,300
ఆంధ్రము	2,13,22,300
మరాఠీ	2,07,22,300
తమిళము	2,02,22,300
పంజాబీ	1,13,27,300
రాజస్థానము	1,37,27,300
కన్నడము	1,12,02,300
గుజరాతీ	1,07,27,200
ఓడ్రము	1,11,22,327
బర్మీసు	77,10,372
మళయాళము	71,32,107
ఇంగ్లీషు	2,07,000

హిందీహిందుస్థానీభాషలు క్రమముగ వ్యాపించుచున్న విధము దేశపరిస్థితులు విశదము చేయుచున్నవి. హిందీ భాష వ్యాపించుచున్నను హిందువులసంఖ్య యన్ని రాష్ట్రముల యందును క్రమముగ తగ్గుచు మహమ్మదీయ, క్రైస్తవుల సంఖ్య వృద్ధిని పొందుచున్నది.

హిందూదేశమునకు ప్రధానపరిశ్రమయైన వ్యవసాయపరిశ్రమ గత సంవత్సరమునందు దుర్గతిపాలైనది. హిందూస్థానమునందు వ్యవసాయమునకుతగిన 83,22,70,000 యెకరములభూమియందును 22,000, 000 యెకరములు వ్యవసాయము చేయబడినవి. వ్యవసాయమునందు 20 కోట్లయెకరములు ఆహారపదార్థములకును, 7 కోట్ల యెకరము లితరపదార్థములకును వినియోగపడినవి. ఆహారపదార్థములందు బియ్యము 330, 000, 000 ములు 10, చెరుకు 30, అవిశేలు 77, ఆవాలు 10, వేరుశనగ 22, నువ్వులు 8 లక్షల టన్నులుపండినవి. గత సంవత్సరమునందు 80,10,000 దూదిబస్తాలు ఉత్పన్నమైనవి. నాలుగేండ్లలో దూదిపంట 10 లక్షలబస్తాలు తగ్గిపోయినది. విదేశవ్యాపారము తగ్గిపోవుటవలన వ్యవసాయదారుల ఆర్థికస్థితి దుర్దశనందినది. హిందూదేశమునందుగల వ్యవసాయ తేత్రములందు 8,72,72,000 యెకరములకు మాత్రమే నీటిపారుదల కలదు. వ్యవసాయాభివృద్ధికి నాల్గుకోట్ల యెకరముల భూమియున్నను తగిన సదుపాయములు లేకున్నవి. దేశమునందు గల జలాశయములను, ప్రవాహములను నీటినదుపాయములను గల్పించుటకు వినియోగించుట వలన వ్యవసాయ వ్యాపనమున కవకాశములు గలవు. తోటపంటలను వ్యాపింపజేయుటకును దేశమునం దంతటను నీటివసతులను కల్పించుట ప్రభుత్వధర్మము. రాజ్యాదాయమునందు 30,72,000 రూపాయలు భూమిసిస్తునుండి వచ్చుచున్నను వ్యవసాయాభివృద్ధికిని, రైతులతేమమునకును ప్రభుత్వము చేయుచున్న సహాయము స్వల్పము.

వ్యవసాయమువలె వ్యాపార పరిశ్రమలును ప్రపంచావృతమైన ఆర్థికదురవస్థవలన వెనుకబడుచున్నవి. గత సంవత్సరమునందు హిందూదేశపు ఎగుమతులు ౧౩౬ కోట్లు, దిగుమతులు ౧౩౩ కోట్లు, దిగుమతులందు ౭ కోట్లు అభివృద్ధియున్నను యెగుమతులందు ౨గి కోట్లు తగ్గినది. గతసంవత్సరమునందు ౨,౧౨౬ లక్షల విలువగల బట్టలును ౧౫౯ లక్షల పట్టును ౭౨ లక్షల మాయపట్టును ౧౩౪ లక్షల పున్ని సరకులు హెచ్చినవి. దిగుమతులందు అభివృద్ధికి జపాను పోటీయును లంకాపైరు బలవంతమును కారణములు. జ్యూటు, వేరుసెనగ, నూనెగింజలు, దూది, తేయాకు, నూలు, బట్టలు, తోళ్లు, లోహములు తగ్గుటవలనను పండిన పంటలకైనను తగిన ధరలు లేకను రయితుల యార్థికస్థితియును, దేశార్థికస్థితియును దుర్భరము లైనవి. ఎగుమతులందు ౧౦౦-కి ౧గి వంతునను ౨గి కోట్లు తగ్గినవి. ఎగుమతులు తగ్గినను హిందూస్థానమున కనుకూల వ్యాపారము ౬౮ కోట్లు గలిగినదని సర్. సామ్యుయలుహోరుగారును, షూస్టరుగారును నానందించుట పండిత లక్షణము. హిందూస్థానమునకు సహజమైన అనుకూల వ్యాపారము ౧౯౨గి-౨౬ నందు ౧౦౯ కోట్లరూప్యములంది కలిగినది. అనుకూల వ్యాపారము క్రమముగను ౬౮ తగ్గినను మామూలు ఎగుమతులును దిగుమతులును ఉన్నపుడు విచారించ వలసిన యవసరము గలుగదు. హిందూస్థానమునకు ౧౯౨౨-౨౩ నుండి ౧౯౩౦-౩౧ వరకును ౨౬౪ కోట్ల బంగారము దిగుమతియగుచుండినను గతించిన రెండేండ్లయందును హిందూస్థానమునుండి ౧౨౭ కోట్ల బంగార మెగుమతి చేయబడినది. గతసంవత్సరమునందు ఎగుమతియైన ౬౫౪ కోట్ల బంగారమును అనుకూల వ్యాపారమునకు మూలము. బంగారము ఎగుమతికి మారకమురేటు ౧౮గ్లె యునువిని యోగపడినది. మారకపురేటు౧౮గ్లె యుండుటబ్రిటీషు దిగుమతులకు ప్రయోజనకరములైనను హిందూస్థానపు

దిగుమతుల కనర్థకముగ నున్నది. వ్యవసాయ పదార్థముల నెగుమతిచేసి అనుకూల వ్యాపారము గలుగుటకు ౧౬ మారకము రేటును, బంగారు ప్రమాణమును నుపయోగములుగ నుండగలవు. గ్రేటు బ్రిటను నిర్ణయించిన ౧౮గ్లె, మారకపు రేటును స్వర్లింగు విధానమును, బంగారపు టెగుమతులును దేశార్థికస్థితిని తారుమారు చేసినవి.

హిందూస్థానవ్యాపారమునందు చీనాజపానుదూది బట్టలవ్యాపారముచిరకాలమునుండియునులాభద్రముగ నున్నది. జపానుపోటీవలనను క్రమముగను చీనాదూది బట్టలవాప్యారము క్షీణించినది. జపానుకు దూదిఎగుమతులు ౧౯౨౯-౩౦ నందు ౨౦ కోట్లనుండి ౧౯౩౧-౩౨ నందు ౧౧ కోట్లకు తగ్గినది. జపానునుండి బట్టల దిగుమతులును ౧౨ కోట్లనుండి ౫ కోట్లకు తగ్గినది. జపానుబట్టలమీదను వేసిన సుంకములు వ్యాపారము తగ్గుటకు గారణము. ఇండియాజపానుదేశములకు జరిగిన దూదిపరిశ్రమనిర్ణయములు ౧౯౨౯-౩౦ నందు గల స్థితిగతులను దూదిపరిశ్రమకు గలుగజేయునని విశ్వాసము గలుగుచున్నది. లాంకాపైరు బట్టలవ్యాపారము క్రమముగ క్షీణించినది. స్వదేశముల్లులపోటీకిని జపాను మిల్లులపోటీకిని నిలువజాలని లాంకాపైరెన్నిమామో పాయములనుపన్నినను ఎన్ని లీసుమోడి యొడంబడికలను జేసినను నిరుపయోగములు. లాంకాపైరుమిల్లుల నిర్వాహకులు దూదికొనుట విషయమై మాటలతో కాలయాపనముచేయకను క్రియాయోజనమునను సార్థకము చేయుట ప్రయోజనకరము.

పరిశ్రమలందు దూది, జ్యూటు, బాగ్గు, పెట్రోలియము, శర్కర, ఇనుము, వెండి, మాంగనీసు మొదలగు నవి ప్రధానములు. దూదిపరిశ్రమ, పరిశ్రమలు లాంకాపైరు జపానుపోటీ లున్నను క్రమముగను స్థిరపడుచున్నది. దేశమునకవసరమైన ౪,౦౦౦ కోట్లగజములబట్టలందును రెండువంతులు

దేశమునందు తయారగుచున్నది. శేషించిన బట్టయును దేశమునందు తయారై గిట్టింపగుటకు సుంకములను వేయుట న్యాయసమ్మతము. స్వదేశమున దవకాశములున్నపుడు విదేశములనుండి ఒకగజముగ్గునుకొనుటయు న్యాయముకాదు. కాని స్వాతంత్ర్యరహితమైన దేశమున కిది సాధ్యముకాదు. శర్కరపరిశ్రమ యిదేండ్లలో ౧౭,౭౮,౦౦౦ టన్నుల నుండి ౩౨,౪౫,౦౦౦ టన్నులకు పెరుగుట శుభకరమైనను సంతృప్తికము కాదు. ఒక టన్ను శర్కరనుకూడ పరదేశమునుండి దిగుమతి చేయవలసిన యవసరము కనుపడదు. బాల్మునందున్న శర్కరపరిశ్రమమీదను ఎక్సైజును మేటయన్యాయము. శర్కరపంటను తగ్గించుటకై తయారవుండు జరుగుచున్న ప్రయత్నములను భారతప్రభుత్వము ప్రజలును ప్రతిఘటించుట సకలవిధములను శ్రేయస్కము. ఉక్కుపరిశ్రమయును రక్షణసాధనమునను వికసించుచున్నది. టారిఫుబోర్డు నిర్ణయించిన రక్షణవిధానంబయిన బ్రిటిషు ప్రయోజనములకువలెను భారతప్రయోజనములకు వినియోగపడజాలదు. స్వాతంత్ర్యమునని రాజ్యములందు వర్తమానార్థిక దుస్థితియందు రిశామిక వికాసము దుర్లభము. దేశమునందు ౧౯౩౦ యందు ౮,౧౪౮ పరిశ్రమాలయములందు ౧౫,౨౮,౩౭౭ ప్రజలు పనిచేయుచున్నారు.

హిందూస్థానముయొక్క ఆర్థికస్థితి శతాబ్దమునకైనను కుదుటబడుట దుర్లభము. బంట్రులు బ్యాంకింగు విచారణసంఘము పల్లెటూళ్ల గ్రస్తత ౯౦౦ కోట్లందునటులు యించి ఆర్థికస్థితి నది. ఋణగ్రస్తత బీహారునగిగి, మద్రాసునకు ౧౫౦ కోట్లను కలదు. బీహార్వాస్తీతిని భూకంపము దుస్సహముచేసినది. పశ్చిమవెస్ట్ బెంగాలు ౧౦౦ కి ౧౨ నుండి ౩౭ వరకును అప్పులను తీర్చుట దుష్కరమైనది. భూమిధరలును లభరలును సబ్సిడీయినవర్తమానసంవత్సరమునందు స్తుత చెల్లినపు డప్పులమాటను తలపెట్టవలసినపనిలేదు.

దేశమునందు విదేశ బ్యాంకులు ౧౮, ఇండియను బ్యాంకులు ౮౪, కోఆపరేటివు బ్యాంకులు ౨౦౪, ఇంపీరియలు బ్యాంకుకలిసి ౫౦౦ కోట్లధనమునుకలిగియున్నను రగుతుల కుపకృతి కొంచెమైనను కలుగకున్నది. షాహు కారులు ౨,౦౦,౦౦౦ మందివారిష్టానుసారముగనప్పుల నిచ్చుచు ప్రజలను పీడించుచున్నారు. వడ్డీని అప్పులను నియమించుటకు సంజాబు మద్రాసు రాష్ట్రములందే కాకను హిందూస్థానమునం దంతటను శాసనమును నిర్మించుట యత్యంతావసరము. ౧౯౩౦-౩౧ లందు ౯౦,౦౬౪ పరపతిసంఘములు ౩౮,౯౦,౭౬౮ సభ్యులను ౧౦౬౦ లక్షల మూలధనమును ౬౧౩ లక్షల డిపాజిటులను గలిగి ౩౭ కోట్ల నప్పుల నిచ్చినవి. గతసంవత్సరమునం దీ ప్రయోజనమును తగ్గినది. దేశావృతమైన ఆర్థికదురవస్థయందు పూర్వపు ఋణదాత లంతరించుటయును బ్యాంకులకు విశ్వాసములేకుండుటయును రయితులస్థితిని పూర్తిగను ముగించేసినవి. నూతనముగ నిర్మితమైన రిజర్వు బ్యాంకునియమములందును రయితుల కుపకృతిని గల్పించుటకు చేసిన ప్రయత్నములు విఫలములైనవి. కరెన్సినోటులవ్యాపన మొత్తము ౧౭౭ కోట్లనుండి ౧౬౦ కోట్లకు తగ్గినది.

హిందూస్థానమునందుగల ౩౫ కోట్ల యందును ౫ సంక్లు దాటినవారియందు చదువనేర్చినవారు ౨,౮౧,౩౮,౮౫౭ మాత్రము కలరు. ౧౯౩౧ యందు ౧౮ విశ్వవిద్యాలయములందు ౮౫,౦౦౦ విద్యార్థులు విద్యాభ్యాసము చేసిన విద్యార్థులందు ౧౧,౧౧౮ మాత్రము కృతార్థులయిరి. విద్యార్థులందు ౧౦౦-కి ౧౩ మంది కృతార్థులగుట విద్యా విధానమునందలిలోపమును విశదముచేయుచున్నది. విద్యార్థులందు ౧౦౦-కి ౮౭ మంది కృతార్థులుగాకను ననుభవించెడి వ్యయప్రయాసలు పరమానర్థములకు మూలములగుచున్నను విద్యాప్రవృత్తియందు మార్పు గలుగలేకన్నది. స్వభాషాపాండిత్యము గలుగకను పరభాషాముఖమునను విద్యాభ్యాసము చేయుట విద్యార్థు

లకును విజ్ఞానవ్యాపనమునకును హానికరము. డిల్లీయందు గూడిన అంతర్విశ్వవిద్యాలయోప సంఘము స్వదేశ భాషలందు విద్యాభ్యాసమును జేయుట కేర్పడిన తీర్మానమును నిరాకరించుట పరసంస్కార ప్రభావమును వేనోళ్లను చాటుచున్నది. మదనమోహనమాలవ్య, అప్పారూపదరిగారలవాదము లరణ్యరోదనము లైనవి. రికగ్నిషనుపొందినవి ౨,౭౭,౧౮౯ పొందనివి ౩౪,౮౭౯, విద్యాలయములందును పురుషులు ౧,౦౫,౯౮,౪౧౫ స్త్రీలు ౧౪,౫౮,౪౨౨, మొత్తము ౧,౨౬,౯౬,౦౮౬ విద్యాభ్యాసమును జేయుచున్నారు. విద్యాశీక్షణమునకు ౧౯౩౧ యందు ౨౮ కోట్లు వ్యయము చేయబడినది. వ్యయమునందు ౧౦౦-కి ౪౮.౧ ప్రభుత్వము, ౧౫.౫ స్థానికనిధి, ౨౧.౭ జీతములు ౧౪.౭ వంతులితరవ్యవస్థలు భరించుచున్నవి. సకుటున ఉన్నతవిద్యాలయములందలి బాలురకు సంవత్సరమునకు రూ. ౫౨, బాలికలకు ౯౧, మధ్యమ పాఠశాలలందలి బాలురకు రూ. ౨౦, బాలికలకు ౩౬ వ్యయ మగుచున్నది. మనిషికి రూ. ౧౦౦ ఆదాయము గల దేశమునందు విద్యార్థికి రూ. ౫౨ వంతున వ్యయము చేయుటయును, విద్యాభ్యాసానంతరము నిర్వాహరత్వమును, నిస్సహాయత్వమును, విజ్ఞానరాహిత్యమును విద్యాప్రవృత్తియందు సంపూర్ణపరివర్తనావసరమును చెప్పక చెప్పుచున్నవి. రుష్యాయందు పదేండ్లయందు ౧౦౦-కి ౫౩ వంతునను విద్యావ్యాపనము గలిగినను హిందూస్థానమునందు ౧౦౦-కి ౧౮ మంది మాత్రమే విద్య నభ్యసించుచు నన్ని దేశములకును వెనుకబడియున్నది. అంతర్విశ్వ విద్యాలయోపసంఘము ప్రాథమిక మాధ్యమిక విద్యాభ్యాసము స్వదేశభాషలందు జరుగవలయునని నిర్ణయించుట గ్రుడ్డిలో మెల్లగ నున్నది. కాని తీర్మానము నాచరణమునందు జెట్టుట కెంతకాలము పట్టునో దేవున కెరుక.

మహాఖండమువలె నున్న హిందూస్థానమునందు గమనాగమనసాధనము లయోమయముగ నున్న విధ

మనుభవైకవేద్యము. ప్రజలు విశేషభాగము గ్రామ సీమలందు నివసించుచున్నను గమనా గమనసాధనములు దుర్లభములు. ౧౯౩౧-౩౨ సంవత్సరాంతమునందు ౪౨,౮౧౩ టైల్ రైలుమార్గములు ౮౭౬ కోట్ల రూప్యములు వ్యయముచేసి నిర్మింపబడినను గ్రామవాసులకు విశేషమైన ప్రయోజనము గలుగలేదు. రైలుమార్గాదాయము ౫౨౬-౨౭ లందు ౧౧౨ కోట్ల నుండి ౧౯౩౨-౩౩ లందు ౯౭ కోట్లకు తగ్గి ౯ కోట్లు నష్టముగలిగినది. దేశావృతమైన ఆర్థికదుస్థితి వలనను ప్రయాణికు సంఖ్యయును ౭౦ కోట్లు తగ్గినది. ప్రయాణికులందు ౧౦౦ కి ౯౫ వంతున నున్న మూడవ తరగతి ప్రయాణికులకు తగినసౌకర్యములను గలుగజేయలేదు. రైల్వేశాఖయందు గల యుద్యోగస్థులందు చిన్న పనులు భతీయులవశమునందున్నను పెద్దయుద్యోగము లన్నియు యూరపియనులు యధీనమునం దున్నవి. మోటారు, బస్సులు వెలసిన తరువాతను గ్రామస్థులకు కొవరకును గమనాగమనసౌకర్యము లేర్పడినను రోడ్డులకు మోటారుబస్సులు వ్యాపనము సాధ్యము గాకున్న ౧౯౩౩-౪ సంవత్సరమునందు ౧,౯౪,౦౨౧ మోటారుబస్సులు మాత్రమే వాడుకయందున్నవి. అమెరికాయుక్తరాష్ట్రములందు ౨౫౮ లక్షలు, బ్రిటన్ ౨౦ లక్షలు మోటారుబండ్లు వాడుకయందున్నవి. హిందూస్థానపుసంఖ్య ఫిరత్వమునకు నిదర్శనముభుత్వ యాజమాన్యమునందు గల రైల్వకును వ్యక్త్రాజమాన్యమునందు గల మోటారుబండ్లకును పోటీనపుడు గ్రామముల కీస్వల్ప సౌకర్యములును సమాగ నంతరించగలవు. ప్రభుత్వ ప్రజాఅత్యము రైల్వే రోడ్లకును మోటారులకును మరలవలసిన యము గలిగినది. రైల్వనష్టము రోడ్లను నిర్మించుట నః పూడునుగాని బస్సులను నిర్మించుటవలనను పూలదు. వర్తమాన నార్థిక దుస్థితియందు అమెరిక సంయుక్తరాష్ట్రముల వలెను హిందూస్థాన

ప్రభుత్వమును రోడ్ల నిర్మాణమునకు పూనుకొనుట రైల్వే ఆదాయయాభివృద్ధికిని, విదేశాదాయాభివృద్ధికిని, వ్యవసాయాదాయాభివృద్ధికిని, ప్రజాసౌకర్యాభివృద్ధికిని సాధనము గాగలదు. వర్తమానవిషాదస్థితియందు సకలరాజ్యములకును వలెను హిందూస్తానముకును ఆదాయమును పెంచుటయును వ్యయమును తగ్గించుటయును అవసరములు.

హిందూస్తానమునందు ౧౯౩౨-౩౩ లందు కేంద్ర ప్రభుత్వాదాయము ౧౨,౪౫౯ వ్యయము ౧౩,౬౧౮ రాష్ట్రాదాయములు ౧౦,౦౪౦ వ్యయము ౯,౮౯౦ లక్షలు. వ్యయమునందు పరిపాలనము ఆదాయ వ్యయములు ౧౯౮, సైన్యము ౫౫౮౮ లక్షలు మిగులుచున్నవి. రాబడి తగ్గినందునను శర్కర నిష్పవేట్టెలమీదను ఎక్సైసుసుంకము నిర్ణయింపబడినవి. పన్నులనిర్ణయమునందు గ్రేటుబ్రిటనునకు గల ప్రతిపత్తి హిందూస్తానవ్యవహారములపట్లను గనుపడదు. ఆదాయమునందు ౧౦౦ కి ౪౨ వంతున సైన్యవ్యయమగుచున్నది. సైన్యవ్యయము ౧౯౨౧-౨౨ లందు ౬౮ కోట్లనుండి ౧౯౩౩-౩౪ లందు ౪౬౨౦ లక్షలకు తగ్గినను భాగ్యవంతములయిన యితర దేశముల వ్యయముతోను పోల్చినపుడు మిక్కుటముగ నున్నది. గ్రేటుబ్రిటను ౧౦౦ కి ౧౪, ఫ్రాన్సు ౧౦, ఇటలీ ౧౦, జపాను ౧౦౪, జర్మనీ ౫ వంతునను సైన్యవ్యయము చేయుచున్నపుడు హిందూస్తానము ౪౨ వంతునను జేయుట న్యాయముకాదు. వ్యయమునందు విశేష భాగము బ్రిటీషుసైనికులకు వినియోగపడుచున్నది. హిందూస్తానమునందుగల ౬౦,౦౦౦ బ్రిటీషుసైనికులకును సోల్దరులకు రూ. ౧౨౩౭ ల చొప్పునను ౧,౫౦,౦౦౦ హిందూస్తాన సోల్దరులకు రూ. ౪౩౩ చొప్పునను వ్యయముచేయబడుచున్నది. ౩౫ కోట్ల ప్రజలు గల దేశమునందు ఖాత్రతేజముగల జాతులెన్నియొన్నవి. దేశరక్షణమునకు స్వదేశీయులను సిద్ధము చేయుట పుణ్యము, పురుషార్థమును, బ్రిటీషుసైన్య వ్యయవిషయమున

మున చేసిననిర్ణయ మితరనిర్ణయములవలెనే హిందూస్తానమునకు ప్రతికూలముగ నున్నది.

మద్రాసురాష్ట్రము హిందూస్తానమునందలి ౧౪ రాష్ట్రములం దొక మహారాష్ట్రముగ నున్నది. రాష్ట్ర విస్తీర్ణము ౧,౪౩,౮౭౦ చదరపుమైళ్లు. రాష్ట్రమునందు

గల ౪,౭౧,౯౩,౬౦౨ ప్రజలు ౩౫౦ మద్రాసు రాష్ట్రము పట్టణములందును ౫౧,౯౯౦ గ్రామములందును గల ౯౩,౪౧,౭౯౩

గృహములందు నివసించుచున్నారు. ప్రజలందు ౬౪ లక్షలు పట్టణములందు ౧౧,౫౨,౪౪౩ గృహములందును, ౪౦౭ లక్షలు గ్రామములందు ౮౧,౯౯,౩౪౬ గృహములందును నివసించుచున్నారు. జనసంఖ్య ౧౮౯౧ యందు ౩౬౦ లక్షలనుండి ౧౯౩౧ యందు ౪౭౧ లక్షలకు వృద్ధిపడినది. పురుషులు ౨,౩౩,౦౧,౧౪౫ స్త్రీలు ౨,౩౮,౯౨,౪౫౭. పురుషులసంఖ్యకన్న స్త్రీల సంఖ్య ౫,౯౧,౩౧౨ హెచ్చినది. గతించిన ౧౦ ఏండ్లయందును పట్టణములసంఖ్య ౩౩ హెచ్చినది. పట్టణస్థానము నుండి ౭ తగ్గినవి. క్రొత్తవి ౪౦ పట్టణములందు చేరినవి. పట్టణములందు జనసంఖ్య ౮,౬౦,౫౯౫ హెచ్చినది. మద్రాసురాష్ట్ర ప్రజలందు

బ్రాహ్మణమతహిందువులు	౪,౧౬,౮౫,౧౮౮
మహమ్మదీయులు	౩౩,౩౨,౧౫౮
క్రైస్తవులు	౧౭,౭౪,౨౭౬
అడవిజాతులు	౩,౪౮,౭౬౩
జైనలు	౩౧,౨౩౭
బౌద్ధులు	౧,౩౫౯
పార్శ్వలు	౫౦౭
యూదులు	౨౩
సిక్కులు	౫౩౭
ఆర్యసామాజకులు	౧౨౨
బ్రహ్మమతస్థులు	౬౩౧
రాధాస్వామిమతస్థులు	౭
ఇతరులు	౬౫

మద్రాసురాష్ట్ర ప్రభుత్వ మొదలుదుడుకులు లేకను చక్కగ సాగుచున్న విధమును ౧౯౩౨-౩౩ షరిపాలన నివేదిక తెలుపుచున్నది. ప్రభుత్వశాఖలు రెండును, మంత్రివర్గమును, కార్య నిర్వాహక శాసనసభ వర్గమును కలిసి రాజ్యాంగరథమును నడుపుచున్న విధమును షరిపాలనోదంతము వెల్లడిచేయుచున్నది. ప్రధానమంత్రి శ్రీ బాబ్బిలి రాజాగారును, రివిన్యూమెంబరు సర్ ఆర్పిబిల్లు క్యాంబెలుగారును కలిసి ల్యాండు యెస్టేటుశాసనమును, స్థానిక సంస్థల శాసనమును నిర్మించిన విధము ద్వంద్వ ప్రభుత్వ నందలి రెండు శాఖలను కలిసి పని చేయగల విధమును వెల్లడిచేయుచున్నది. ల్యాండు-ఎస్టేటు శాసనమునందు అగ్రహారములకును ఎస్టేటు నిర్వహణము చేయుటవలన అగ్రహారీకుల కన్యాయము గలిగినది. ప్రభుత్వశాసనమునందు నిర్మింపబడినవి. అనధికారసభ్యుల మరుమకటయ్యంశాసనము, నంబూదిశాసనము ఆమోదింపబడినవి. హోముమెంబరు సర్ మహమ్మదు ఉస్మా సాహెబుగారును, లామెంబరు సర్ కృష్ణ నాయరు గారును కలిసి (లాను-ఆర్డరు) న్యాయశాంతి షరిపాలనమును కాపాడినవిధమును రాష్ట్రమునందలి ప్రశాంత స్థితి తెలుపుచున్నది. కాంగ్రెసు ప్రచారము నాపుటకు ప్రభుత్వ నిర్బంధవిధ సము సఫల మగుటయందు విచిత్రము గనుపడదు. వ్యక్తిశాసనోల్లంఘనము, శాసనోల్లంఘన ప్రస్తానధర్మమును సమర్థించుటకును, షరిపాలన విధానమును ఖండించుటకును శాంతిసాధనము. ప్రయోజనము ధర్మనిర్వహణము కాని పటాటోషము కాదు. మద్రాసునందును నితరస్థలములందువలెను విప్లవోద్యమాంకురములు బయలుదేరుట దురదృష్టము. శాసనసభయందు ౧౯౨౪ తీర్మానములు ప్రతిపాదించబడినను ౧౯ మాత్రమే చర్చింపబడినవి. శాసనసభయందు సభ్యులు సూచించిన ౧౦౯౪ కోతమోషను లంధును ౩౦ చర్చింపబడి ఒకటిమాత్రమే సభామోక్షమును

బడసినది. సభ్యులు వేసిన ౧౧౪౦ ప్రశ్నలందు ౮౦౯ ప్రశ్నలకు జవాబు లొసంగబడినవి. శాసనసభాకాలము ౧౯౩౩ నవంబరు ౧-వ తేది వంతము నొందినను మరొక సంవత్సరకాలము పెంచబడినది. సభ్యుల యభిప్రాయములను ప్రభుత్వము నిరాదరించెడి విధమును భూమిశిస్తు రిమిషను విషయమై సభ యామోదించిన తీర్మానమును ప్రభుత్వముచూపిన నిరాదరణము విశదము చేయుచున్నది. శాసనసభ వాగ్వివాదములకును, ప్రభుత్వావలంబనమునకును వినియోగపడినట్లు ప్రజోపయుక్త కార్యములకు వినియోగపడుటలేదని సభ్యుల యనుభవమును ప్రజానుభవమును విశదము చేసినవి. సర్ మహమ్మదు ఉస్మా సాహెబుగారు ౭ ఏండ్లు హోం మెంబరుగ నుండి మేమాసమునందు గవర్నరుగటయదృష్టము.

చెన్నరాష్ట్రమునందు ప్రజలకు వ్యవసాయము జీవనాధారముగనున్నది. గతసంవత్సరమునం దతివృష్టి అనావృష్టిదోషములవలనను పంటలు చెడిపోయినవి.

పంటలందు ప్రధానమైన వడ్లకు ధర వ్యవసాయము తగ్గినది. ప్రభుత్వము రిసెటిల్మెంటు చేసి యనేకజిల్లాలందు భూమిశిస్తును పెంచినది. జమీందారీ ప్రదేశములందును సిస్తు విశేషము వృద్ధిచేయబడినది. గతించిన రెండేండ్లయందును మద్రాసు రాష్ట్రమునందు భూమిశిస్తును తగ్గించుటకై యాందోళన మేర్పడినను ప్రభుత్వము నిరాదరణమును జూపుచున్నది. వ్యవసాయదారులకు జీవనమును గడపుటయె కాకను సిస్తులను చెల్లించుటయును సాధ్యముగాకపోయినది. రయితులు నగల నమ్మియును తాకట్టుపెట్టియును, భూమిని తాకట్టుపెట్టియును సిస్తులను చెల్లించిరి. వడ్ల ధర ౧౦౦-కి ౬౦ వంతునను తగ్గినపుడు నిత్యదారిద్ర్యము ననుభవించెడి రయితున కప్పుచేయుట తప్ప గత్యంతరము లేకున్నది. ధరలు తగ్గుటవలనను దేశమునందంతటను ధనము తగ్గి రయితున కప్పుపుట్టుటయును నసాధ్యమైనది. చెన్నరాష్ట్రదాయము ౧౯౩౨-౩౩లందు రూ. ౧౬,౪౦,౨౪,౨౦౪ లు, ఆదాయమునందు భూమ్యా

దాయము సెన్సులు సహా రూ. ౮,౭౧,౩౮,౬౨౭ లు. రివిన్యూ మొత్తమునందు ౧౦౦-కి ౯౮.౦౮ వంతున వసూలు చేయబడినను వసూలు చేయుటయందు నేలు, అట్టాచిమెంటు నోటీసులు హెచ్చినవి. రూ. ౯౩,౮౧౮ సిస్టుబాకీకి రూ. ౬,౮౭,౯౬౭ విలువ గల స్థిరాస్తి రూ. ౧,౧౩,౦౫౮ లకు విక్రయింపబడినది. ఏలంపాటలందు పాటపాడినవారు లేనందునను ప్రభుత్వము ౧౦,౬౭౫ యకరములనుకొన్నది. ధరలు తగ్గుట వలనను వ్యవసాయప్రదేశమును ౩౯,౦౦౦ యకరములు తగ్గినవి. రిసెట్టిల్మెంటు రేటులందు తగ్గించినరిమి షనువలనను ౩౨ లక్షలు రిమిషనీయబడినది.

భూమిసిస్టు నిర్ణయము, వసూలు, రిమిషను మొదలగువ్యవహారమంతయును మారవలసినయవసరమును పై లెక్కలు తెలుపుచున్నవి. వ్యవసాయము ౧౦౦కి ౭౦ మందికి జీవనాధారమైన రాష్ట్రమునందు ప్రభుత్వక్షేమ మంతయును రయితులక్షేమముమీద నేయాధారపడియున్నది. ప్రజల యార్థికదుస్థితి మధ్యములవాడుకను తగ్గించినను మద్యాదాయము తగ్గలేదు. కల్లుఆదాయము రూ. ౧, ౯౭,౬౬,౦౩౦ ల నుండి రూ. ౨,౦౬,౮౬,౧౩౧ లకు పెరిగినది. సారాయము ఆదాయము రూ. ౧,౫౬,౬౬,౦౦౦ ల నుండి రూ. ౧,౮౩,౦౦,౦౦౦ లకును విదేశమద్యాదాయము రూ. ౧౫,౧౯,౮౭౩ నుండి రూ. ౧౮,౨౧, ౯౦౬ లకును తగ్గినవి. గంజాయినుండి రూ. ౨౦,౧౭, ౦౦౦ ను నల్లమందునుండి రూ. ౩౭,౫౨,౦౦౦ ను ఆదాయమువచ్చినది. కల్లుత్రాగుట పెరుగుటకు పికెటింగు లేకపోవుటయును, సారాయాదాయము తగ్గుట కార్థికదుస్థితియును కారణములగుటయును నిచిత్రవాదము. పికెటింగు లేనందున మద్యాదాయము పెరుగుటకు విచారము గలుగవలయును కాని సంతసము గలుగజాలదు. స్టాంపుల ఆదాయము ౨౩౬ లక్షలు. గత సంవత్సరాదాయముకంటెను ౬ లక్షలు హెచ్చినది.

వ్యవసాయపరిశోధనలందుచెఱుకు, వరి, కొబ్బరి విత్తనములను పంటలను నభివృద్ధిచేయుటకు చేయుచున్న

ప్రయత్నములు ఫలవంతము లగుచున్నను ప్రజలందు వ్యాపకము చేయుట యవసరము. పరిశ్రమ వ్యవసాయశాఖలు చెఱుకురసమును పాలబెల్లముగ చేయుటకును, శర్కరచేయుటకును చేయు ప్రయత్నములు ప్రజలయందు వ్యాపకమును పొందవలసి యున్నవి. చేపలపరిశ్రమను తూర్పు పశ్చిమతీరములందు గల పట్టణందును, చెరువులందునువృద్ధిచేసి పల్లెకారులకు జీవనోపాధిని వృద్ధిచేయుట యవసరము. బోరింగు శాఖ చేయుచున్న పని కేవలము పురాతనమై సామాన్యరయితున కందుబాటునందు లేకున్నది. క్రొత్త పద్ధతుల నేర్పాటుచేసి వ్యయమును తగ్గించుటవలనను రయితునకును ప్రభుత్వమునకును లాభము గలుగగలదు. పడమటితీరమునందుగల కేరళసబ్బుసాక్షరివలెను తూర్పుతీరమునందును సబ్బుసాక్షరిని పెట్టుటవలనను లాభము గలుగగలదు. వ్యవసాయాభివృద్ధిని రయితుల జ్ఞానమునకును ప్రతిజిల్లాయందును వ్యవసాయక్షేత్రములను, పశుశాలలను నిర్మించుట పశువృద్ధినిపాడిపంటల యభివృద్ధిని మూలము. పశుపాలనశాలను చింతలదీవి, గుంటూరులనుండి యెత్తివేసి హోసూరునందుమాత్రమే యుంచుటవలన నుపయోగము తగ్గిపోయినది. తూర్పు తీరమునం దొకశాలను స్థాపించుట పశుపోషణాభివృద్ధి కత్యంతావసరము. ప్రజలయొగక్షేమములకు మూలాధారములైన యీరెండు శాఖలందును అభివృద్ధిశాఖ చేయుచున్న పని స్వల్పమును, చేయవలసిన పని యపారమును కలదు. అభివృద్ధిశాఖ గ్రామసేవలందు నివసించుచున్న రయితులకు మార్గములను, వైద్యసహాయమును, నీటిసదుపాయములను, విద్యాసౌకర్యములను, గృహ పరిశ్రమల సౌకర్యములను గలుగజేయుట ప్రయోజనకరము కాని శాసనములను గల్పించుట ప్రయోజనకరముగాదు.

గతసంవత్సరమునందు విద్యాలయముల సంఖ్య ౫౩,౫౮౫ నుండి ౫౧,౦౭౩ లకును, విద్యార్థుల సంఖ్య ౨౮,౭౭,౫౦౮ నుండి ౨౮,౬౮,౫౯౭ లకును తగ్గినది.

విద్యావ్యాపనమును ౧౦౦ కి ౬.౩
విద్యా - వైద్య సౌకర్యములు నుండి ౬.౨ లకు తగ్గినది. విద్యా వ్యయము రూ ౫,౬౭,౬౨,౦౦౦ ల నుండి రూ ౫,౩౧,౫౯,౦౦౦ లకు తగ్గినది. ప్రభుత్వ వ్యయము ౧౦౦ కి ౬౧ నుండి ౬౦ కి తగ్గుటయును ప్రజా వ్యయము ౩౯ నుండి ౪౦ కి హెచ్చుటయును సంభవించినది. ఆదిఆంధ్ర, ఆదిద్రావిడ పాఠశాలల సంఖ్య ౧౧,౨౧౫ నుండి ౯,౫౭౭ లకు విద్యార్థులసంఖ్య ౩,౩౯,౭౮౯ నుండి ౩,౨౬,౬౫౩ లకును తగ్గినది. అభివృద్ధి శాఖపట్లను హరిజనులపట్లను దౌర్జన్యప్రభుత్వమునకు గల నిక్కమైనప్రేమకు ప్రభుత్వ నివేదికయందలి లెక్కల ప్రమాణములు.

గత సంవత్సరమునందు ౧౬,౨౭,౩౮౧ జననములు, ౯,౯౨,౦౨౪ మరణములు సంభవించినవి. జ్వరములు ౨,౯౧,౧౪౬, రక్తభేదులు ౮౦,౪౧౦, కలరా ౫,౨౭౮, మశూచి ౫,౩౬౩, శ్వాస వైద్య సహాయము కాసలు౯౪,౩౧౨, ఇతరములు ౪౦,౦౦౦ మరణ కారణములు. ప్రసూతి వలన ౧౦౦౦ కి ౧౫ తల్లులు, ౧౮౨ పిల్లలు మరణముల పాత్రైరి. జ్వరములచావులను, బాలింత చావులను తగ్గించుటకు వైద్యశాఖ చేయుచున్న ప్రయత్నములు స్వల్పములు. మన్యజ్వరము, కేర్పాటు చేసిన వైద్యసంస్థయును తీసివేయబడినది. ప్రతిజిల్లాయందొక బాలింతశాలవైనను సేర్పాటు చేయుటయును, ముత్రసానులను తయారు చేయుటయు జిల్లాబోర్డులకును ప్రభుత్వమునకును విధి కృత్యము. వైద్యసహాయార్థము గ్రామములందు ౧౩౩౭, పట్టణములందు ౨౧౮ వైద్యాలయములు పనిచేయుచున్నవి. వైద్యాలయములసంఖ్య ౯౨ పెరుగుట సంతృప్తికరముకాదు. వైద్యసహాయ వ్యయమును ౮౧.౨౦ వేలనుండి ౮౦౭౭ వేలకు తగ్గినది. ఆరోగ్యప్రదర్శనములును శిశుప్రదర్శనములును ౯౪౫౩ నుండి ౮౩౬౩ లకు తగ్గినవి. గ్రామసీమలందు ఆరోగ్యాభివృద్ధికి ప్రభుత్వము చేయుచున్న ప్రయత్నములు స్వల్పములు. అభి

వృద్ధిశాఖ విద్యాభివృద్ధికివలెను వైద్యసహాయమునకును చేయుచున్న ప్రయత్నములు స్వల్పములు.

మద్రాసురాష్ట్రమునందు ౧౯౨౧ యందువలెను ౧౯౩౨ నందును ౧౦౦ కి ౭౧ మందికి వ్యవసాయమును వ్యవసాయోపవృత్తులును జీవనమున కాధార

ములు. వ్యవసాయభూములందు నడ్లు, పశుశ్రమము ౧,౧౬,౭౭,౫౨౯, వేరుసెనగ ౩౫, ౭౧,౯౭౮, ఆముదములు ౨,౮౩, ౨౩౮, కొబ్బరి ౫,౬౫,౯౭౧, చెఱకు ౧,౧౪,౮౭౭, ప్రత్తి ౨౦,౪౧,౨౮౪, పొగాకు ౨,౪౨,౬౪౪, నువ్వులు ౭,౪౫,౮౭౨ మొదలగువైరులు ౩,౯౧,౯౩,౨౦౧

యకరములందు పండింపబడుచున్నవి. వ్యవసాయానంతరము నేతఃపరిశ్రమ ముఖ్యఃపరిశ్రమగ నున్నది. మద్రాసు రాష్ట్రమునందలి దూదియంత్రాలయములందు ౭౪౫ లక్షల రతులనూలు, ౬౪౦ లక్షలగజములబట్ట, ౨౭౦ వేల డజనుల మేజోట్లు తయారుచేయబడినవి. స్వదేశ మిల్లులనూలు విదేశములమిల్లులనూలును ౨౦ నుండి ౨౦౦ నంబరువరకును చేతిమగ్గములమీదనువాడబడు చున్నది. మద్రాసురాష్ట్రమునందు ౨,౦౦,౦౦౦ మగ్గములువాడుక యందున్నవి. లుంగీలను నేయుటకు ౪౦,౦౦౦ పట్టును నేయుటకు ౧౮,౦౦౦ వాడుకయందున్నవి. ఇతరఃపరిశ్రమలవలెనే చేతిమగ్గపుఃపరిశ్రమయును క్షీణించుచున్నది. మద్రాసునుండి ప్రతియేటను షుమారు మూడుకోట్ల చర్మములు నాలుగుకోట్లవిలువగలవి ఎగుమతిచేయబడుచున్నవి. తోళ్లపరిశ్రమలను అభివృద్ధి చేయుటవలన దేశమునందు నిమ్మజాతులపనివాండ్రకు జీవనోపాధి కలుగగలదు. పెద్దఃపరిశ్రమలవలెను చిన్న గృహపరిశ్రమలును అంతరించుచున్నవి. గాజులు, కాగితములు, కలంకారీఅద్దకము, జీలుగదండులు, సంగీతోపకరణములు, కొండపల్లి, నక్కపల్లిబొమ్మలు, లక్కసామానులు, జలతారు, కుండలు మొదలగుపరిశ్రమ లన్నియును క్రమముగ క్షీణించి దేశమునందంతట నిరుద్యోగ సమస్య వ్యాపించినది. చెన్నరాష్ట్రమునందు ౨౭

దూదియంత్రాలయములును, 3 జాటుయంత్రాలయములును పనిచేయుచున్నవి. ఇవిగాక ౧,౦౦౭ పత్రికమాలయములందు ౬౮,౪౯౮ మంది పనిచేయుచుండిరి. పత్రికమాలయములందు ౧,౩౨,౪౬౦ మంది పనిచేయుచుండిరి. ఖాదీపత్రికమయమును ౧౦,౦౦౦ పనివాండ్రకు పని కల్పించినది. చెన్నరాష్ట్రమునందు గల ప్రజలకు యంత్రాలయములందు ౨,౦౦,౦౦౦ మందికి మాత్రమే పనిగలదు. వ్యవసాయపత్రికమతోపాటు గృహపత్రికమలను, చేతిమగ్గములపత్రికమలను, ఇతరచేతిపత్రికమలను అభివృద్ధిచేయవలసినయవసరమును ప్రజలును ప్రభుత్వమును గ్రహించవలసియుందురు. రూజువెల్లుగారు అమెరికాయందును, హిట్లరుగారు జర్మనీయందును నూతనయంత్రాలయనిర్మాణము నాపివేసిరి. ద్రవ్యములేని మద్రాసురాష్ట్రమునందు యంత్రాలయస్థాపనము దుర్లభము. పారిశ్రామికశాఖయును, వ్యవసాయశాఖయును గృహపత్రికమల యుద్ధరణాభ్యుదయము కు పాటుపడవలసినయవసరమును దేశావృత్తమైన ఆర్థికదుస్థితి విశదముచేయుచున్నది. భగవంతుడు ప్రజాపోషణ కవసరమైన అన్నవస్తుముల కవసరమైన వస్తుసముదాయమును దయచేసినను వానిని సద్వినియోగము చేయజాలక పోవుట ప్రజాప్రభుత్వము నావరించిన క్లిబత్వమునకు నిదర్శనము.

హిందూస్తానపరిస్థితులును మద్రాసురాష్ట్రవ్యవహారములును ఆంధ్రరాష్ట్రవ్యవహారముల యవలోకనమునకును వినియోగపడుచున్నవి. హిందూస్తానపరి

త్రమునం దాదికాలము నుండియును ఆంధ్రరాష్ట్రము ఆంధ్రదేశము వ్యక్తిత్వముగలిగి వికసించినది. ప్రాచీనపు గ్రీక రాజ్యములందు నాంధ్రరాజ్య మొకరాజ్యము. ఆంధ్రరాజు లొక కాలమునందు దక్షిణపీఠభూమినుండి మగధవరకునుగల భూభాగము సంతతిమానముగను పాలించినవిధము చరిత్రాంశము. ఆంధ్రభాష ద్రవిడభాషాకుటుంబమునందు మధ్యస్థకుటుంబమునకు చెందియున్నది. ఆంధ్రులు దక్షి

ణమునందున్న ద్రవిడులకును ఉత్తరమునందున్న ఆర్యులకును భిన్నములైన గుణశీలములను వేషభాషలను రూపవిలాసములను వ్యక్తిత్వమును గలిగి చిరకాలమునుండియును వర్ధిలుచున్నారు. చిరకాలమునుండియును వ్యక్తిత్వముకలిగివర్ధిలుచున్న జాతిని వర్తమానకాలమునందును కాపాడుటపురోభివృద్ధికిసాధనము. సంయుక్తహిందూస్తాన రాజ్యములందు ప్రత్యేకవ్యక్తిత్వముగల రాష్ట్రములను కాపాడుట ప్రజాక్షేమమునకు సాధనము. పాశ్చాత్య రాజ్యాంగవేత్తలు లయొనలు కర్చిను, సర్ థామస్ హోబ్స్ బెర్న్సు సర్. బి. ఫుల్లెరుగారులు మొదలగు వారును హిందూస్తాననాయకులు గాంధీ మహాత్ముడు, బాలగంగాధర తిలకు, సర్ తేజబహద్దరు సప్రూ, మోతీలాలు నెహ్రుగారులు మొదలగువారను భాషాప్రయుక్తరాష్ట్ర విభజనావసరమును నంగీకరించుచున్నారు. కాంగ్రెసువ్యవహారములం దాంధ్రరాష్ట్రము ప్రత్యేకముగను వ్యవహరింపబడినది. మద్రాసు శాసనసభ ఆంధ్రరాష్ట్రనిర్మాణ ప్రతిపాదనము నామోదించినది. భావిరాజ్యాంగమునకు కీలకమైన ఫెడరేషను విధానమునకు భాషాప్రయుక్తరాష్ట్రములు బీజములు.

ఆంధ్రరాష్ట్రము విస్తీర్ణమునందును, ఆదాయమునందును, కళావిజ్ఞానములందును, సంస్కారమునందును ప్రత్యేకరాష్ట్ర నిర్మాణమునకు సకలవిధములను తగియున్నది. ఫెడరేషను రాజ్యాంగమును స్థాపించుటకు పూర్వమే దేశమునవసరములబట్టి భాషాప్రయుక్తరాష్ట్రములుగను విభజించుట రాజ్యాంగనిర్వహణమునకుసాధనము. ౨౫,౦౦౦ చదరపుమైళ్లవిస్తీర్ణమును ౧౮౦ లక్షల ప్రజలను ౮౦౦ లక్షల ఆదాయమును గల ఆంధ్రావని ప్రత్యేకరాష్ట్రనిర్మాణమునకు సకల విధములను తగియున్నది. సరిహద్దు ప్రాంతములందు సరిహద్దులను, జాతినీ, భాషను, ప్రజాభిప్రాయసౌకర్యములను, పరిపాలనా సౌకర్యములనుబట్టి నిర్ణయించుటయును పెంటనే భాషాప్రయుక్తరాష్ట్రములను నిర్మించుటయును ప్రయోజనకరము. ఉత్కళరాష్ట్ర-సరిహద్దులను నిర్ణయించుట

విద్యావ్యాసమును ౧౦౦ కి ౬.౩
విద్యా - వైద్య నుండి ౬.౨ లకు తగ్గినది. విద్యా
సాకర్ణములు

వ్యయము రూ ౫,౬౭,౬౨,౦౦౦ ల
నుండి రూ ౫,౩౧,౫౯,౦౦౦ లకు తగ్గినది. ప్రభుత్వ
వ్యయము ౧౦౦ కి ౬౧ నుండి ౬౦ కి తగ్గుటయును ప్రజా
వ్యయము ౩౯ నుండి ౪౦ కి హెచ్చుటయును సంభ
వించినది. ఆదిఆంధ్ర, ఆదిద్రావిడ పాఠశాలల సంఖ్య
౧౧,౨౧౫ నుండి ౯,౫౭౭ లకు విద్యార్థుల సంఖ్య ౩,౩౯,
౭౮౯ నుండి ౩,౨౬,౬౫౩ లకును తగ్గినది. అభివృద్ధి
శాఖపట్లను హరిజనులపట్లను దౌర్జన్యప్రభుత్వమునకు గల
నిక్కమైనప్రేమకు ప్రభుత్వ నివేదికయందలి లెక్కలె
ప్రమాణములు.

గత సంవత్సరమునందు ౧౬,౨౭,౩౮౧ జనన
ములు, ౯,౯౨,౦౨౪ మరణములు సంభవించినవి. జ్వర
ములు ౨,౯౧,౧౪౬, రక్తభేదులు ౮౦,౪౧౦, కలరా
౫,౨౭౮, మశూచి ౫,౩౬౩, శ్వాస
కాసలు ౯౪,౩౧౨, ఇతరములు ౪,౯౦,
౦౦౦ మరణ కారణములు. ప్రసూతి

వైద్య
సహాయము

వలన ౧౦౦౦ కి ౧౫ తల్లులు, ౧౮౨ పిల్లలు మరణముల
పాలైరి. జ్వరములచావులను, బాలింత చావులను తగ్గిం
చుటకు వైద్యశాఖ చేయుచున్న ప్రయత్నములు స్వల్ప
ములు. మన్యజ్వరము, కేర్పాటు చేసిన వైద్యసంస్థయును
తీసివేయబడినది. ప్రతిజిల్లాయందొక బాలింత శాలవైనను
సేర్పాటు చేయుటయును, ముత్రిసానులను తయారు
చేయుటయు జిల్లాబోర్డులకును ప్రభుత్వమునకును విధి
కృత్యము. వైద్యసహాయార్థము గ్రామములందు ౧౩౩౭,
పట్టణములందు ౨౧౮ వైద్యాలయములు పనిచేయు
చున్నవి. వైద్యాలయముల సంఖ్య ౯౨ పెరుగుట
సంతృప్తికరముకాదు. వైద్యసహాయ వ్యయమును ౮౧౨౦
వేలనుండి ౮౦౭౭ వేలకు తగ్గినది. ఆరోగ్యప్రదర్శన
ములును శిశుప్రదర్శనములును ౯౪౫౩ నుండి ౮౩౬౩
లకు తగ్గినవి. గ్రామసీమలందు ఆరోగ్యాభివృద్ధికి ప్రభు
త్వము చేయుచున్న ప్రయత్నములు స్వల్పములు. అభి

వృద్ధిశాఖ విద్యాభివృద్ధికివలెను వైద్యసహాయమునకును
చేయుచున్న ప్రయత్నములు స్వల్పములు.

మద్రాసురాష్ట్రమునందు ౧౯౨౧ యందువలెను
౧౯౩౨ నందును ౧౦౦ కి ౭౧ మందికి వ్యవసాయ
మును వ్యవసాయోపవృత్తులును జీవనమున కాధార

ములు. వ్యవసాయభూములందు నడ్లు,
పశుశ్రమము ౧,౧౬,౭౭,౫౨౯, వేరుసెనగ ౩౫,
౭౧,౯౭౮, ఆముదములు ౨,౮౩,

౨౩౮, కొబ్బరి ౫,౬౫,౯౭౧, చెఱకు ౧,౧౪,౮౭౭,
ప్రత్తి ౨౦,౪౧,౨౮౪, పొగాకు ౨,౪౨,౬౪౪, నువ్వులు
౭,౪౫,౮౭౨ మొదలుగువైరులు ౩,౯౧,౯౩,౨౦౧
యకరములందు పండింపబడుచున్నవి. వ్యవసాయాంత
రము నేతఃపరిశ్రమ ముఖ్యఃపరిశ్రమగ నున్నది. మద్రాసు
రాష్ట్రమునందలి దూదియంత్రాలయములందు ౭౪౫
లక్షల రతులనూలు, ౬౪౦ లక్షలగజములబట్ట, ౨౭౦
వేల డజనుల మేజోట్లు తయారుచేయబడినవి. స్వదేశ
మిల్లులనూలు విదేశములమిల్లులనూలును ౨౦ నుండి ౨౦౦
సంబరువరకును చేతిమగ్గములమీదనువాడబడు చున్నది.
మద్రాసురాష్ట్రమునందు ౨,౦౦,౦౦౦ మగ్గములువాడుక
యందున్నవి. లుంగీలను నేయుటకు ౪౦,౦౦౦ పట్టును
నేయుటకు ౧౮,౦౦౦ వాడుకయందున్నవి. ఇతరఃపరి
శ్రమలవలెనేచేతిమగ్గపుఃపరిశ్రమయును క్షీణించుచున్నది.
మద్రాసునుండి ప్రతియేటను షుమారు మూడుకోట్ల
చర్రములు నాలుగుకోట్లవిలువగలవి ఎగుమతిచేయ
బడుచున్నవి. తోళ్లపరిశ్రమలను అభివృద్ధి చేయుటవలన
దేశమునందు నిమ్మజాతులపనివాండ్రకు జీవనోపాధి
కలుగగలదు. పెద్దఃపరిశ్రమలవలెను చిన్న గృహపరి
శ్రమలును అంతరించుచున్నవి. గాజులు, కాగితములు,
కలంకారీఅద్దకము, జీలుగదండలు, సంగీతోపకరణ
ములు, కొండపల్లి, నక్కపల్లిబొమ్మలు, లక్కసామా
నులు, జలతారు, కుండలు మొదలగుపరిశ్రమ లన్ని
యును క్రమముగ క్షీణించి దేశమునందంతట నిరుద్యోగ
సమస్య వ్యాపించినది. చెన్నరాష్ట్రమునందు ౨౭

దూదియంత్రాలయములును, 3 జాటుయంత్రాలయములును పనిచేయుచున్నవి. ఇవిగాక ౧,౦౦౭ పరిశ్రమాలయములందు ౬౮,౮౯౮ మంది పనిచేయుచుండిరి. పరిశ్రమాలయములందు ౧,౩౨,౮౬౦ మంది పనిచేయుచుండిరి. ఖాదీపరిశ్రమయును ౧౦,౦౦౦ పనివాండ్రకు పని కల్పించినది. చెన్నరాష్ట్రమునందు గల ప్రజలకు యంత్రాలయములయందు ౨,౦౦,౦౦౦ మందికి మాత్రమే పనిగలదు. వ్యవసాయపరిశ్రమతోపాటు గృహపరిశ్రమలను, చేతిమగ్గములపరిశ్రమలను, ఇతరచేతిపరిశ్రమలను అభివృద్ధిచేయవలసినయవసరమును ప్రజలును ప్రభుత్వమును గ్రహించవలసియుండును. రూజువెల్లుగారు అమెరికాయందును, హిట్లరుగారు జర్మనీయందును నూతనయంత్రాలయనిర్మాణము నాపివేసిరి. ద్రవ్యములేని మద్రాసురాష్ట్రమునందు యంత్రాలయస్థాపనము దుర్లభము. పారిశ్రామికశాఖయును, వ్యవసాయశాఖయును గృహపరిశ్రమల యుద్ధరణాభ్యవయము కు పాటుపడవలసినయవసరమును దేశావృత్తమైన ఆర్థికదుస్థితి విశదముచేయుచున్నది. భగవంతుడు ప్రజాపోషణ కవసరమైన అన్నవస్త్రముల కవసరమైన వస్తుసముదాయమును దయచేసినను వానిని సద్వినియోగము చేయజాలక పోవుట ప్రజాప్రభుత్వము నావరించిన క్లిబత్వమునకు నిదర్శనము.

హిందూస్తానపరిస్థితులును మద్రాసురాష్ట్రవ్యవహారములును ఆంధ్రరాష్ట్రవ్యవహారముల యవలోకనమునకును వినియోగపడుచున్నవి. హిందూస్తానపరి

శ్రమునం దాదికాలము నుండియును ఆంధ్రరాష్ట్రము ఆంధ్రదేశము వ్యక్తిత్వముగలిగి వికసించినది. ప్రాచీనపు గ్రీకు రాజ్యములందు నాంధ్రరాజ్య మొకరాజ్యము. ఆంధ్రరాజు లొక కాలమునందు దక్షిణపీఠభూమినుండి మగధవరకునుగల భూభాగము సప్రతిమానముగను పాలించినవిధము చరిత్రాంశము. ఆంధ్రభాష ద్రవిడభాషాకుటుంబమునందు మధ్యస్థకుటుంబమునకు చెందియున్నది. ఆంధ్రులు దక్షి

ణమునందున్న ద్రవిడులకును ఉత్తరమునందున్న ఆర్యులకును భిన్నములైన గుణశీలములను వేషభాషలను రూపవిలాసములను వ్యక్తిత్వమును గలిగి చిరకాలమునుండియును వర్ధిలుచున్నారు. చిరకాలమునుండియును వ్యక్తిత్వముకలిగివర్ధిలుచున్న జాతిని వర్తమానకాలమునందును కాపాడుటపురోభివృద్ధికిసాధనము. సంయుక్తహిందూస్తాన రాజ్యములందు ప్రత్యేకవ్యక్తిత్వముగల రాష్ట్రములను కాపాడుట ప్రజాక్షేమమునకు సాధనము. పాశ్చాత్య రాజ్యాంగవేత్తలు లయెనలు కర్మిసు, సర్ థామస్ హోబ్బార్నెసు సర్. బి. ఫుల్లెరుగారులు మొదలగు వారును హిందూస్తాననాయకులు గాంధీ మహాత్ముడు, బాలగంగాధర తిలకు, సర్ తేజబహద్దరు సప్రూ, మోతీలాలు నెహ్రుగారులు మొదలగువారును భాషాప్రయుక్తరాష్ట్ర విభజనావసరమును సంగీకరించుచున్నారు. కాంగ్రెసువ్యవహారములం దాంధ్రరాష్ట్రము ప్రత్యేకముగను వ్యవహరింపబడినది. మద్రాసు శాసనసభ ఆంధ్రరాష్ట్రనిర్మాణ ప్రతిపాదనము నామోదించినది. భావిరాజ్యాంగమునకు కీలకమైన ఫెడరేషను విధానమునకు భాషాప్రయుక్తరాష్ట్రములు బీజములు.

ఆంధ్రరాష్ట్రము విస్తీర్ణమునందును, ఆదాయమునందును, కళావిజ్ఞానములందును, సంస్కారమునందును ప్రత్యేకరాష్ట్ర నిర్మాణమునకు సకలవిధములను తగియున్నది. ఫెడరేషను రాజ్యాంగమును స్థాపించుటకు పూర్వమే దేశమునవసరములబట్టి భాషాప్రయుక్తరాష్ట్రములుగను విభజించుట రాజ్యాంగనిర్వహణమునకుసాధనము. ౭౫,౦౦౦ చదరపుమైళ్లవిస్తీర్ణమును ౧౮౦ లక్షల ప్రజలను ౮౦౦ లక్షల ఆదాయమును గల ఆంధ్రావని ప్రత్యేకరాష్ట్రనిర్మాణమునకు సకల విధములను తగియున్నది. సరిహద్దు ప్రాంతములందు సరిహద్దులను, జాతినీ, భాషను, ప్రజాభిప్రాయసౌకర్యములను, పరిపాలనా సౌకర్యములనుబట్టి నిర్ణయించుటయును వెంటనే భాషాప్రయుక్తరాష్ట్రములను నిర్మించుటయును ప్రయోజనకరము. ఉత్కళరాష్ట్ర-సరిహద్దులను నిర్ణయించుట

యందును ప్రజాభిప్రాయ ప్రయోజనములను రక్షించుట ధర్మము. కాని జమిందారులయభీష్టములను గమనించుట ధర్మముకాదు. పల్లాకిమిడిని రెండుభాగములుగను విభజించుటకు పల్లాకిమిడిరాజుగారి పక్షమునను సత్యమంగళంజమిందారు, డాక్టరు సుబ్బరాయనుగారును నితరులును గవర్నరుగారిని ప్రార్థించుట వారిపలుకుబడిని దుర్వినియోగముచేయుటయై యున్నది. గవర్నరుగా రీయన్యాయమున కొడిగట్టుకొనకుండురు గాత.

గంజాం విశాఖపట్టణ మండలము లందు ప్రజాభిప్రాయమునకు . ప్రతికూలముగ నాంధ్రులను, నిస్సహాయులైన ఆరణ్యకుల నుత్కల రాష్ట్రమునందు జేర్చుటవలన నుభయులకును ప్రయోజనము గలుగదు. ఒకప్పుడాంధ్రరాష్ట్రనిర్మాణావసరమును రాండుటేబిలు సమావేశమునందు వ్యక్తము చేసిన శ్రీ బాబ్బిలి రాజుగారిపుడు ప్రతికూలురగుట దురదృష్టము. ఇది అధికారసింహాసన మాహాత్మ్యము. ఆంధ్రరాష్ట్ర మెపుడు సమకూడినను ౨౬ లక్షల యాంధ్రు లాంధ్రాభ్యుదయమునకై నిరంతరము పాటుపడుట ఆత్మసంరక్షణమునకును, దేశాభ్యుదయమునకును సాధనము. రాయలసీమవాసులం దుదయించిన యపోహలను తొలగించుటకు శాంతిమార్గమున నాంధ్రప్రజానాయకులు పనిజేయుట యవసరము. ప్రపంచవ్యాప్తమైన వర్తమాన సందిగ్ధావస్థయందు సంయోగసాహచర్యము లభ్యుదయమునకును, వియోగవిభేదములు విలయమునకును మూలములగుచున్న విధమును ప్రపంచేతిహాసములు బోధించుచున్నవి. ఆంధ్రులసంయోగ బలమును సాహిత్యకళావికాసమునకును సాంఘికార్థిక ప్రయోజనములకునైనను వినియోగించుట వివేకము, శ్రేయస్కరము.

ఆంధ్రాభ్యుదయము వర్తమానపరిమిత నందర్భములందును పర్యాప్తమగుచున్న విధమును విషయావలోకనము విశదముచేయుచున్నది. ప్రజావికాసమునకు

మూలాధారమైన సాహిత్యాభ్యుదయమును, భాషాభ్యుదయమును సంఘాభ్యుదయమును ఉచితరీతిని పర్యాప్తములగుచున్నవి. గతసంవత్సరమునందు ౪౬ వార్తాపత్రికలు, ౩౮౧ గ్రంథములును ప్రచురింపబడినవి. గ్రంథములందు విశేషభాగము మతమునకు సంబంధించినవి. నవలలు నాటకములును ప్రజాదరణమునకు పాత్రములగుచున్నవి. సాహిత్యరాధకులైన శ్రీ చెళ్లపిళ్ల వేంకటశాస్త్రిగారికిని, గిడుగు రామమూర్తిపంతులుగారికిని జరిపిన షష్టిపూర్తి సప్తపూర్తి ర్మ్యత్సవములు ప్రజలసాహిత్యాభిమానమును విశదచేయుచున్నవి. రాజమహేంద్రవరమునందు శ్రీ రాయప్రోలు సుబ్బారావుగారి యాధిపత్యమునను జరిగిన అభినవకవితా మండలి ప్రజలయందు ప్రవర్ధమానంబగుచున్న సాహిత్యోపాసనాభిలాషను సువ్యక్తముచేసినది. యువజనుల నూతనకావ్యకల్పన లాంధ్రవృద్ధయమునందు గలిగిన సంచలనమునకు నిదర్శనములు. బెజవాడ కాకినాడలందు జరిగిన చిత్రకళాప్రదర్శనములు, గ్రంథాలయప్రదర్శనములు, చిత్రకళారచనలం దాంధ్రుల వ్యక్తిత్వమును కళోపాసనానురక్తిని సువ్యక్తము చేసినవి. శ్రీకౌతా ఆనందమోహనుగారి “చాయలు”, “సానపెట్టువాడు” లండను చిత్రకళాప్రదర్శనమునందును, శ్రీ కేశవరావు, రామారావుగారల చిత్రములు మద్రాసు చిత్రకళాప్రదర్శనమునందును ప్రశంసలను బడసినవి. ఆంధ్రచిత్రకళోపాసకుల సంఖ్య దినదినప్రవర్ధమానం బగుచు కళాప్రపంచమునం దాదరమును బడయుచున్నది. డిసంబరు మాసాంతమునందు మద్రాసునందు శ్రీయుత రాఘవాచార్యుల వారి యధ్యక్షత్వక్రింద సమావేశమైన నాట్యకళాపరిషత్తు ఆంధ్రులకు నాట్యకళయందుగల యభినివేశాభిమానములను పరిస్ఫుటము చేసినది. నాటకకర్తలకు బహుమానము నేర్పాటు చేయుటయును, నాటకకళాభ్యుదయమునకు శుభచిహ్నము. స్త్రీలు నాటకరంగమునందుజేరి పాత్రధారణము చేయుటయును సభ్యుదయచిహ్నము.

సాహిత్యమునందు వలెను సంగీతము నందును ఆంధ్రులందు ప్రవర్ధమానం బగుచున్న అభినివేశాభిమానములను గాయకులు, గాన సభలు పరిస్థుటము చేయుచున్నవి. విజయనగరము, కాకినాడ, రాజమహేంద్రవరములందు స్థాపితములైన గానకళాశాలలు గానకళాభిరుచిని ప్రజ్వలంపజేయుచున్నవి. శ్రీ హరి నాగభూషణము, ద్వారం వెంకటస్వామి నాయుడు, పారేపల్లి రామకృష్ణయ్యగారులు మొదలగువారల గానాభినివేశము దాక్షిణాత్య పండితుల యాదరణగౌరవములకు పాత్రమైనది. ఆంధ్రరస హృదయము సంగీతసాహిత్య కళాంగములందు వికాసమును పొందుచు నాత్మోపలబ్ధికి ధర్మయాత్రను చేయుచు ప్రపంచ పరిణామమునకు వినియోగ పడుచున్నది. స్త్రీలును పురుషులవలెను సాహిత్యసంగీత చిత్రకళాదులందు జాపుచున్న స్వాంత్యాభినివేశాభిమానములు పురోవృద్ధికి శుభలక్షణములు.

ఆంధ్రాభ్యుదయము సాహిత్యకళారంగములందు వలెను సాంఘికరాజకీయరంగములందును స్వయంసహాయమునను సాంఘికవ్యవస్థలందును పర్యాప్తం బగుచున్నవిధమును శ్రీ పునర్వివాహములు, హరిజనోద్ధరణము మొదలగు విషయములు విశదముచేయుచున్నవి.

సాంఘిక
వికాసము,
హరిజనులు

డిసంబరు మాసాంతమునందు గాంధిమహాత్ముడు ప్రకమించిన హరిజనయాత్రాసందర్భములం దాంధ్రావనిచూపిన యుత్సాహప్రోత్సాహము లాంధ్రుల సంస్కరణప్రియత్వమును వెల్లడిచేయుచున్నవి. హిందువులు వర్ణభేదములను పాటింపకను హరిజనులలో కలిసి గాంధిమహాత్ముని కఖండమైన స్వాగతంబు నొసంగిరి. గాంధిమహాత్మునకు వివిధకులములవారును సమర్పించిన సన్మానపత్రములును, దక్షిణలును, ప్రజలకు మహాత్ముని పట్లగల గాఢభక్తిని వెల్లడిచేసినవి. వర్ణాశ్రమధర్మాభిమానులకు మహాత్ముని హరిజనయాత్ర జ్ఞానోదయమును గలుగజేయకపోయినను జిజ్ఞాస కైనను సాధనమగుట

ధర్మము.. కోట్లజనుల నంటరానివారినిగ నుంచుట మానవప్రయోజనములకే నిరర్థకము. మహాత్ముని శాంతము, సహనము, మందహాసము, కార్యపరత్వము నిరుపమానములు. నియతకర్మానుష్ఠానమునకు మహాత్ముని జీవయాత్ర పరమార్థప్రమాణము. మహాత్ముని హరిజనయాత్ర ఆంధ్రదేశమును పవిత్రముచేసి సవర్ణావస్థలకు ధర్మనిర్వహణావసరమును ధర్మారాధన విధానమును వ్యక్తము చేసినది. అంటరానితనము పోవుటకు గాంధిమహాత్ముడు పేక్షించునది పరిశుద్ధహృదయము. గాంధిమహాత్ముడు హరిజనయాత్రయందు జేసిన ధర్మప్రచారమును ఆంధ్రులు సార్థకము చేయుదురుగాత!

ఆంధ్రవిశ్వవిద్యాలయము వైసుచాన్సెలరు శ్రీ రాధాకృష్ణయ్యగారి నాయకత్వముక్రిందను, త్వరితగతినభివృద్ధిని పొందుచున్నది. శ్రీ విక్రమదేవవర్మ మహారాజగారి యనుగ్రహమునను శాస్త్ర

ఆంధ్ర
విశ్వవిద్యాలయము

కళాభవనముల నిర్మాణము పూర్తిమైనది. విశ్వకళాపరిషత్తు నందు

ఆనర్గు తరగతు లారంభములైనవి. సామాన్యమైన భౌతికరసాయన గణితశాస్త్రములెకాకను సాంకేతికవిద్యలను, వాణిజ్యవిద్యను నేర్పుట కేర్పాటులు చేయబడినవి. కళాపరిషత్తునందు ప్యాసుతరగతులను నేర్పాటుచేయుట ఖండనమునకు మూలమైనను సముచితముగ నున్నది. సుప్రసిద్ధపండితులున్న స్థలములకు విద్యార్థుల నాకర్షించుట విజ్ఞానవ్యాపనోపలబ్ధికి సాధనము. ఆరోగ్యమునందును, శాస్త్రపరిజ్ఞానమునందును ఆంధ్ర సాహిత్యమునందును ప్రజల కభిరుచిని గలుగజేయుటకు బహుమానముల నేర్పాటుచేయుటయును శుభసూచకముగ నున్నది. రాయలసీమయందలి కళాశాలల నాంధ్రవిశ్వవిద్యాలయమునందు జేర్చుటకును, విద్యార్థులకుపవేతనముల నొసంగుటకును జేసిన నిర్ణయము శ్లాఘ్యముగ నున్నది. ఆంధ్రవిశ్వవిద్యాలయమును సాహిత్యాభ్యుదయమునకును, ఆంధ్రుల సంయోగసాహచర్యములకును వినియోగపడుటకు ప్రజలును విశ్వవిద్యాలయ నిర్వాహకులును పని బూనుట పరమావసరము.

రామల సీమ విద్యార్థులును, ఉపాధ్యాయులును నా ఫలసిద్ధికి పాటుపడి విశ్వవిద్యాలయ ప్రయోజనమును సార్థకము చేయుదురు గాత! శ్రీ రాధాకృష్ణ పండితుని తిరిగి యుపాధ్యక్షులుగ నెన్నుకొని విశ్వకళాశాలియు స్వధర్మనిర్వహణమును జేసినందుల కభినందనపాత్రము. ప్రజాదేశ తేమములకు సాహిత్యముతోపాటు న్యవసాయపారిశ్రామిక విద్యాభ్యాసము తత్వజ్ఞానమువలెను శాస్త్రకళాశిక్షానమును నవసరములు. ప్రజ్ఞావంతులైన రాధాకృష్ణయ్య గారును, విశ్వవిద్యాలయ నిర్వాహకులును, పండితులును విద్యావిధానమును నవయుగావసరముల కనుకూపముగను నిర్ణయించి నిర్వహించుట సమజసము. విద్యాప్రవృత్తిని దేశభాషాముఖమునను వ్యాపింపజేయవలసిన యవసరమును ఢిల్లీయందుగూడిన అంతర్విశ్వవిద్యాలయసభ వ్యక్తముచేసినది. ఆంధ్రవిశ్వవిద్యాలయనిర్వాహకు లీసమస్యను సఫలముచేయుట యవసరము.

ప్రపంచ పంచాంగశ్రవణానంతరము స్వీయపంచాంగశ్రవణము రుచింపకున్న ను నియతకార్యము. బాంబయియందు కీలకసంవత్సరమునందు ప్రారంభమైన ఆంధ్రపత్రిక ఆంధ్రపత్రికకు శ్రీముఖసంవత్సరము నందు ౨౫ ఏండ్లు నిండి శ్రీయుత చల్లాశేషగిరిరావుగారి యాధిపత్యముక్రిందను రజతోత్సవము జరుపబడినది. శేషగిరిరావుగా రాంధ్రపత్రికకు చేసిన సేవ యద్వితీయము. శేషగిరిరావుగారి శాంతస్వభావము, సాజన్యము, సాహృద్దము, కార్యశీలత్వము, సాహిత్యప్రియత్వము, స్వరాజ్యాభిలాష, సహాయ నిరాకరణశీలత్వము ప్రతికానిర్వహణమునకు సకలవిధముల వినియోగపడినవి. ఆంధ్రపత్రికానిర్వహణమే పరమార్థముగను నమ్మి ౧౭ ఏండ్లు పత్రికయందాత్మార్పణము చేసిరి. వర్తమాన క్లిష్ట పరిస్థితియందు వారి యకాలమరణము ప్రతికానిర్వహణభారమును దురారాధ్యముచేయుచున్నది. శేషగిరిరావుగారి నిరాశంబర సేవకు ప్రతికానిర్వాహకులు పరమకృతజ్ఞులు. భావసంవత్సరాదిసంచిక

౨౫ వ సంవత్సరాది సంచిక. ఇరువదియైదేండ్లయందు ప్రపంచ వ్యవహారములందు ప్రవర్ధమానంబైన భావరూపపరివర్తనములు భావ సంవత్సరాదిసంచికయందు వ్యక్తము లగుచున్నవి. కీలకప్రాంతములం దారంభమైన స్వదేశస్వభాషోద్యమాంకురములు పల్లవించి ప్రసవించి ఫలించుచున్నవిధమును భావసంచిక భావసంచిక యందలి విషయములు మనోగతము చేయుచున్నవి. శ్రీగురజాడ అప్పారావుగారు ప్రారంభించిన ముత్యాలనరములు దేశమునందంతటను పూలనరములుగ పరిణమించినవి. భావాబ్ధిసంబోధకములైన భావగీతములును, పద్యములును సాహిత్యరంగమునందు గలిగిన భావపరివర్తనమును భాషాపరివర్తనమును వెల్లడిచేయుచున్నవి. భావసంచిక నలంకరించెడి వ్యాసములు, విమర్శనలు, కథలు ప్రజాసామాన్యమునందు ప్రవర్ధమానంబగుచున్న స్వభాషాభిమానమును వ్యక్తము చేయుచున్నవి. సంచికయందలి ఛాయాచిత్రములు, త్రివర్ణచిత్రములు చిత్రకళారచనలందు ప్రవర్ధమానంబగుచున్న వికాసమును తెలుపుచున్నవి. ముఖపటము గాంధీమహాత్ముని హరిజనోద్ధరణయాత్రకు చిహ్నముగ నున్నది. వేలమంది దర్శనమును జేయుచు హరిజనోద్ధరణమునకు కానుకలను సమర్పించుచున్నారు. హరిజనులు యథార్థముగను హరిజనులుగా గల విధమును శ్రీశంకరస్వాముల కాశీనగర చండాలోదంతమును, నందనారుని చిదంబర తేత్ర నటరాజోదంతమును చిత్రమునందు మనోహరముగను చిత్రింపబడినవి. మానవులందు నీచోచ్ఛదశలు స్వయంకృతాపరాధఫలములు. జన్మవలనను నీచులయినను, కర్మసంస్కారమువలనను తరించుటకు సకల జనులును సధికారులు. ముఖపట మీశరమార్గమును గంభీరముగను ద్యోతకము చేయుచున్నది. మానవారాధన పరమైన భగవదారాధనమునందు సర్వ మతములును, ధర్మములును, సమన్వయమును పొందగలవిధమును మహాత్ముల ధర్మజీవయాత్రలు సార్థకము చేయుచున్నవి.

బీహారునందు సంప్రాప్తమైన, భయంకరమైన భూకంపార్తులు ధర్మపరాయణులైన ఆంధ్రులసహాయమునకు పాత్రులు. సకలదేశములవారును జాతిమత కులభేదములను పాటింపకను సహాధుకంప సహాయము యముచేయుట ప్రశంసనీయము. పెరునుండి పెకింగువరకు గల దేశముల వారందరును దుఃఖార్తులకు సహాయమును జేయుచున్నారు. గాంధీమహాత్ము డాపన్నులకు సహాయమును జేయుటకును జేయించుకొనుటకును బీహారునందు సంచారమును జేయుట కుపక్రమించెను. ఆంధ్రమహాజనులందరును యథాశక్తిని నాపన్నులకు సహాయమును జేయప్రార్థితులు.

భగవదనుగ్రహమునను ఆంధ్రమహాజనులయూదరణసహాయమునను భావసంవత్సరాదిసంచికను ఉగాదిని ప్రచురింపఁజేసినందులకు, ప్రచురణమునకు సహాయభూతులైన సకలజనులకు కృతజ్ఞులము. వ్యాసలేఖకులకును, చిత్రకారులకును, ఇతరవిధములను సహాయమును చేసిన మహాజనులకును ప్రత్యేకవందనములు.

గతసంవత్సరమునందు ప్రపంచావృతమైన ఆర్థిక దుస్థితిని తొలగించుటకు చేసినప్రయత్నములందు ఆర్థికమహాసభ గణనీయము. ౧౯౩౩ జూను ౧౨ తేదీని లండనునందు ప్రధానమంత్రి అధ్యక్షతక్రింద ఆర్థికమహాసభ కూడినది. సభకు ౬౩ రాజ్యముల ప్రతినిధులు హాజరైరి. హాజరైన సభ్యులందు ౨౦౦౦ విషయ పరిజ్ఞాతలు చేరియుండిరి. జూలై ౨౭ తేదీని ప్రయోజనము కలుగకుండ ఈసభ ముగిసినది. సభకు ౩౦,౦౦,౦౦౦ వ్యయమై యుండును. సభయందు సమావేశమైన ౬౬ రాజ్యముల ప్రతినిధులును వారివారి లాభములనే కోరునపుడు యెవ్వరిలాభములును సాధ్యములు కాకపోవుటయేగాక ప్రపంచ ఆర్థికలాభములును దుర్లభములు. మాడ్జొనాల్డు రుస్సిమన్ చేంబర్లెన్ గార్ల సద్యావములు వారికి సంత్పత్తిని కలుగజేసినను ప్రపంచార్థికప్రయోజనమునకు నిరర్థకములైనవి.

ఆర్థికమహాసభ వలె ఆయుధవిసర్జనమహాసభ యును గతసంవత్సర వ్యవహారములందు గణనీయము. రెండేండ్లప్రయత్నముల తరువాత ఆయుధవిసర్జనమహాసభ ఈసంవత్సరారంభమునందు నిర్గమించినది. మొదట జపానురాజ్యమును, తదనంతరము జర్మనురాజ్యమును, ఈసభను విడచినపుడు సభాప్రయోజనమే యంతరించినది. జపాను శ్వేతరాజ్యముల నిర్బంధమును నిరాకరించినది. జర్మనీ విజయమును పొందినరాజ్యముల నిర్బంధముల నిరాకరించి స్వయంసహాయమున సంకల్పమును సాధించుటకు నిశ్చయించినది. స్వార్థపరత్వము ధర్మసంస్థాపనకు ఎప్పుడును ప్రయోజనకారి కాజాలదు.

ఆర్థికసభానిర్గమనమును ఆయుధవిసర్జనసభానిర్గమనమును నానాజాతినమితిని నిరుపయోగముచేసినవి. ౧౯౨౦ సంవత్సరమునందు సంగ్రామానంతరము మహాశయములతో నారంభమైన నానాజాతినమితి నిర్గమనము శాంతికాములకు విచారము కలుగజేయుచున్నది. నానాజాతినమితి శ్వేతరాజ్యములప్రయోజనములకును, విజయమును పొందిన రాజ్యముల ప్రయోజనములకును యేర్పడినను సంగ్రామసంతప్తమైన ప్రపంచమునకు శాంతిసంస్థాపనమునందు ఆశకలిగినది. ప్రారంభమునుండి యును అమెరికాసంయుక్తరాష్ట్రములు సమితియందు చేరలేదు. బలీయమైన సంయుక్త సోవియటు రష్యా రాష్ట్రములును చేరలేదు. గ్రేటుబ్రిటను బ్రిటిషు సామ్రాజ్యాంతర్భాగములను బలవంతముగచేర్చి పోల్లబలమును సంపాదించినది. సైన్యసమరమునకు టారిఫు సమరము తోడ్పడినపుడు నానాజాతినమితి సభ్యులకు అంతర్జాతీయ సంరంభమువలె సంయోగ సాహచర్యములు సాధ్యములు కావు. యూరపురాజ్యాంగ చదరంగమునందు జాతీయాభిమానప్రియులైన ప్లానిన్, ముస్సోలిని, హిట్లర్, డాల్ఫస్, బాల్డ్విన్ గారలు మొదలగు నాయకులు ధర్మబలమునకు బదులు బుద్ధిబలమును వినియోగించినపుడు వివిధసభల ప్రయోజనములు నిరర్థకము లగుచున్నవి.

సంస్థానమునందు స్వరాజ్య సంస్థానము గాంధీమహాత్ముని నాయకత్వముక్రింద కాంగ్రెస్ ప్రారంభించిన శాంతిసమరము నిర్బంధములకు పాలైనను యథాప్రకారము సాగుచునేయున్నది. ప్రభుత్వము కాంగ్రెసుసమావేశమును ప్రతిషేధించినను ౪౭ వ కాంగ్రెసు మహాసభ కలకత్తానగరమునందు శ్రీమతి నల్లీ సేను గుప్తాగారి యధ్యక్షతక్రింద ఏప్రిల్ ౧ తేదీ సమావేశమైనది. నానాప్రాంతములనుండి ౨౫౦౦ ప్రతినిధులు సమావేశమైరి. రక్షకభటులు సభను నిలిపివేసిరి. కాంగ్రెసు అక్రమసంఘము కాకపోయినను అక్రమోద్యమములకును, అక్రమప్రచారములకును పూనుకొనుటవలన కాంగ్రెసుసమావేశము నిషేధింపబడినది ౧౯౪౭ హరిజన్ గార్లు తెలిపిరి. పూనాయందు ఆసేగారి అధ్యక్షతక్రింద కూడిన నాయకుల సభయందు సమిష్టి శాసనోల్లంఘనము నిలుపుదల చేయబడినట్లు ఆసేగారు ప్రకటించిరి. కాంగ్రెసుసంఘము లన్నియును ఉపసంహరింపబడినవి. వ్యక్తి శాసనోల్లంఘనము, నియంతల నిర్ణయములను, ఆసేగాడు ప్రతిషేధింపలేను. ఆసేగారి నిర్బంధానంతరము వచ్చిన అధ్యక్షులు సర్దారు శాస్త్రి సింగుగారు నిర్ణయమును పైతము ప్రతిషేధించెను. శాసనోల్లంఘన ప్రస్థానము తీవ్రరూపమునను పర్యాప్తము గాకపోయినను అవసరమయినపుడెల్ల సాగుచున్నది. పశుబల సమరమునకు ఆద్యంతములు గోచరమయినను శాంతి సమరమునకు ఆద్యంతములు లేక ప్రవర్ధమాన మగుట ప్రకృతిధర్మము.

జాయంటు పార్లమెంటుకమిటీ విచారణను ముగించి విషయవిమర్శనమున కుపక్రమించినది. శ్వేత పత్రముపట్ల నిరుడుగలిగిన సంశయములే నేడును బాధించుటయే కాకను ద్విగుణీకృతములైనవి. కన్సర్వేటివులము చర్చిలుగారి నాయకత్వముక్రిందను సంస్కరణములను ప్రతిఘటించుటకు నిర్ణయించినది. ౧. రక్షణములు. ౨. కేంద్రప్రభుత్వబాధ్యత. ౩. ఫెడరేషను. ౪. రాష్ట్రీయ స్వపరిపాలనము పర్వతముల నడుమను

శ్వేతపత్రవిధానమైనను సాధ్యముకాదని రాజ్యాంగ పరిస్థితులు విశదము చేయుచున్నవి. ఆగాఖానుగారి రాయబారము సఫలమయినది. మహమ్మదీయపక్షము లన్నియును కలిసి సంస్కరణముల నుపయోగించుటకు నిశ్చయించినవి. సర్విసులు, గవర్నరులు, గవర్నరు జనరలు, డ్లైటు సెక్రటరీ, పార్లమెంటు మెట్టుకుపై మెట్టు గను నిర్బంధములను నిర్మించుట సంభవమైనపుడు సంస్కరణము లేచోటను స్వాతంత్ర్యమును గలుగజేయఁగలమని శాసనసభల యాశాపాశము లిప్పటినుండి యును సమ్మోహమును గల్పించుట బ్రతిఘ ప్రభుత్వ రాజ్యసీతికి పరమార్థము. నియంతల మమకారాహంకారములు సత్త్వమును నిరర్థకము చేయుచుండును. వ్యక్తులు, సంఘములు, జాతులు మమకారాహంకారములకు దాసులై మానవస్వాతంత్ర్య ధర్మాభ్యుదయమును దుస్తరము చేయుదురు. అశోకచక్రవర్తివలెను నియంతలు దండయాత్రలను విడిచి ధర్మయాత్రలను జేయవలసిన యవసరము గలిగినది. దండయాత్రలకు ప్రయత్నములను జేయుచు ధర్మయాత్రఫలము నపేక్షించుట నిరర్థకము.

ప్రపంచపరిస్థితులు సకలరాజ్యములందును సందిగ్ధముగనున్నవి. ఆర్థిక సాంఘికమత రాజకీయరంగము లందు సంప్రాప్తమగుచున్న సంరంభమునకు పరమార్థము పరివర్తనము. సకలదేశములందును సంప్రాప్తమైన ఆర్థికదుస్థితియందు ప్రథమమున నార్థికసంరక్షణమునకు ప్రయత్నములు జరుగుచున్నవి. వ్యాపార రక్షణము వ్యాపారవికాసమునకు బదులు వ్యాపారక్షయమునకు వినియోగపడుచున్నది. వ్యాపారక్షయము భయభ్రాంతులను గలుగజేయుచు నూతనాధికారము నభిలషించుచున్నది. నూతనాధికారము నిరంకుశాధికార నియంతరూపమును చాల్చుచు నూతనవిధానములను నిర్ణయించుచున్నది. భయంకరమైన పరధర్మము ప్రయోజనకరముగను గనుపడినను నిరర్థక మగుచున్నది. యూరపురాజ్యములందు ప్రజాస్వామిక మంతరించి

నియంత లేర్పడుటకు భయభ్రాంతులు కారణములు కాని విశ్వాసప్రయోజనములు కారణములు కావు. ప్రజలనిరాశయును నిస్సహాయస్థితియును వృద్ధినిజెందిన కొలదియును నియంతల బలాధికారములును వృద్ధిని పొందుచున్నవి. రుష్యాయం దారంభమైన కమ్యూనిస్టు విధాన మితరరాజ్యముల ప్రతిఘటనమునకు గురియైనది. ప్రతిఘటనము వివిధరాజ్యములందును వివిధ భావ రూపములను ధరిణమించినది.

పాశ్చాత్య సంస్కారమునకు జాతీయాహంకార ప్రయోజనములు ఛరమార్గములు. జాతీయాహంకారము పైన్యబలమునుండి ధనబలమునకును, ధనబలము నుండి సంఘబలమునకును సంక్రమించినవి. పైన్యధనబల ప్రయోగములు దుర్లభములైన క్షిప్రఛరిస్థితులందు నాయకుల లక్ష్యము సంఘబలమునందు లగ్నమగు చున్నది. సంఘబలనిర్మాణ నిర్వహణమునందు కార్య సిద్ధికి నియంతల నిర్ణయములు వెంటనే ఫలప్రదము లగు చుండును. అమెరికా-సంయుక్తరాష్ట్రములును, బ్రిటీషు ప్రభుత్వమును ధనబలమునను సంఘబలమును నిర్జించుట కుపక్రమించినవి. ముస్సులోని, హిట్లరుగారులు సంఘబలమునను ధన, పైన్యబలముల నరికట్టుటకు ప్రయత్నించిరి. ధనములేని దేశములందు సంఘబలమును నియంతయె యుపయోగించుచు సంక్షోభమును గలుగ జేయుచుండును. ఈ విషమవృత్తిమునం దాద్యంతములు గనుపడకను సంఘమునకును నియంతకును సంరంభము సహజముగను గలుగుచున్నది. సంరంభము బహిర్గతము

కాకపోయినను నవసరమైనపుడు ప్రళయాగ్నివలెను ప్రజ్వలించును యూరపురాజ్యములందు నియంతల లక్ష్య మంతయును చిరకాలాభ్యస్త మైన స్వజాతీయ బాహ్యప్రయోజనారాధనములందు లగ్నమై నిరంతర సంరంభములకు సాధనంబుగ నున్నది. నియంత కమ్యూనిస్టుయినను, నాజీయైనను, ఫాసిటీయైనను, కన్సర్వేటివైనను లేబరుషతానంబుననుండైనను ప్రయోజనము సమానము. నియంతలశ్రద్ధ వారి సత్త్వానురూపముగను ధరిణమించుచు స్వప్రయోజనములకు వినియోగపడుచున్న విధమును నాజి, ఫాసిటు సంఘనిర్మాణములు విశదము చేయుచున్నవి.

గాంధిమహాత్ముని హరిజనధర్మయూత్ర నియంతలకు నియత ధర్మానుష్ఠానము నుపదేశించుటకు వినియోగపడుచున్నది. ధర్మారాధనమునకు ప్రయోజనము ఆర్థికమైనను, రాజకీయమైనను, సాంఘికమైనను లక్ష్య మాత్మగతమైనపుడు సుఖమును బాహ్యగతమైనపుడు దుఃఖమును గలుగజేయుచున్నది. సకలార్థములందును ధర్మారాధన మాత్మగతమగుటకు సత్యారాధనము సాధనముగనున్నది. ధర్మారాధనము స్వరాజ్యమున కైనను, హరిజనోద్ధరణమునకైనను, భూకంప సహాయ నిధికైనను సత్యధారమైనపు డాత్మగతమై సర్వజనామోదమును బడయగలదు. నియంతలు గాంధిమహాత్ముని వలె ననాసక్తయోగారులుకలై కర్మయూత్రను, ధర్మయూత్రను జేయునపుడు ప్రపంచయూత్రయందు సకలార్థములును సార్థకములు గాగలవు.

శ్లో. సత్త్వానురూపా సర్వస్య శ్రద్ధా భవతి భారత, శ్రద్ధామయోఽయం పురుషో యో యచ్ఛ్రద్ధ స్స ఏవ సః.

ఆత్యద్భుత ఉపాసనా మహిమ

స వ గ్ర హ శాంతి

సవగ్రహముల సంపత్తి స్థానవలన ఉచ్చ నీచ శుభ పాప గ్రహ మగ్ర్యస్థ మిత్ర శస్త్రు గ్రహయుక్త దశాంతర్దశలు మొదలగుచానివలననే, అధివ్యాసులు సుఖదుఃఖములు కలిమిలేములు లాభనష్టములు జయాపజయములు గౌరవాగౌరవములు ఉద్యోగనిరుద్యోగములు శత్రుత్వమిత్రత్వములు సుగుణగుర్గుణములు శుభాశుభములు మున్నగు ననేక చిత్రవిచిత్రములు మానవులకు గల్గుచుండుట లోకవిదితము.

గ్రహాగులు వ్యతిరేకములై బాధించునపుడు, శాంత్యాదుల వలన మేలు గల్గుననుట అనుభవైకవేద్యము. గతవర్షగ్రహముల మునను గ్రహాకాలమునను సవగ్రహములకు మహామంత్ర శాస్త్రురీత్యా జపహోమ పూజార్చన శాంత్యాదులు గావించి మహామంత్ర బీజాక్షరయంత్రములను ప్రశ్నోకముగా నిద్రము చేసి వెండితామ్రపులతో సుంచబడియున్నవి.

ఇట్టిగ్రహముల గ్రహాకాలములందు చేయబడిన ఈతామ్రపును ధరించినవారికి దీనిమహిమ తెలియగలదు. మని మార్డర్ ద్వారా సామ్యునుపంపి తామ్రపును తెప్పించుకొనుడు. పోస్టుఖర్చులు వగైరాలతో సహా తామ్రపు 1-కి రూ. 5-0-0.

అడ్రెస్ :—

“మాంత్రికచక్రవర్తి” మెన్మరిస్టు, అండ్ అక్కబ్లిస్టు,

ప్రాఫెసర్ అంజ్జ ఎం. ఇ. హనుమదుపాసి, బెజవాడ.

భ విషయ త్ఫలములు

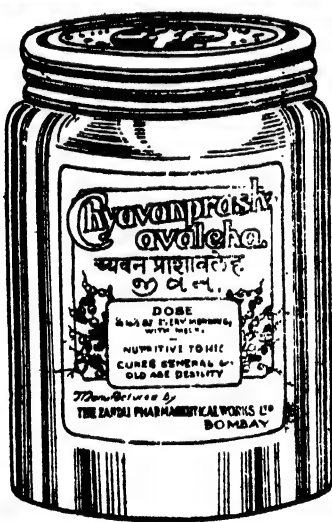
మీ మీ భవిష్యత్ జాతకములందలి జీవితరహస్యములను ఆత్యద్భుతమోగప్రభావమున తెలిసి సంహోషింపజేయుదురు. 5 ప్రశ్నలకు రూ. 1-4-0. 12 ప్రశ్నలకు రూ. 2-4-0.

భూత ప్రేత పిశాచ బ్రహ్మరాక్షసాదిబాధలకు మహామంత్ర శాస్త్రురీత్యా ఆత్యంతవైపుణ్యముతో తగుచికిత్సకేసి మహామంత్ర యంత్ర తామ్రపుల నొసగుదురు.

గృహములలోని వాస్తుభూగర్భశల్క్యాదిదోషములకును, పశుశాలలు మొదలగువానియందలి దోషములకును, నివారణోపాయములను తెల్పి అష్టదిగ్బంధన యంత్రముల నొసగుదురు.

మలీయు కోరినవారికి కోరినవిధమున మహామంత్రతామ్రపులను, యంత్రములను, శాస్త్రురీత్యా తయారుచేసి పంపుదురు.

లోకమునకు విరపరిచితులై వేలకొలదిప్రముఖుల యభి నందనముల బహిర్యున్నారు. ఆలంపక నేడే న్రాసి కనుగొనుడు. విషయము ననుసరించి కట్టుములు నిర్ణయింపబడును. అడ్రెసు వగైరాలను విపులముగ వ్రాయుడు.



జండు గార చ్యవనప్రాస (తేహాసము)

శరీరమునకున్న మెదడునకున్న వృష్టినిచ్చును.

ధర 1 పా 2\8 1/2 పా 1\5 1/4 పా -\13


సోల్పజెంట్లు దామోదర అంతు కంపెనీ

78, బైనాబజారురోడ్డు, మద్రాసు.

రాజమండ్రి-ఈశ్వరదాస్ & కో. కాకినాడ-లక్ష్మీనారాయణ & కో. ఒంగోలు-తాతాబాలయ్య శెట్టి. అమలాపురం-డి డెట్టామెడికల్ స్టోర్సు. విశాఖపట్టణము-నీలం & కో. నరసాపూరు-చై. సత్యనారాయణ. కడప-సాహేబు అండు కో.

బెజవాడ-శ్రీచంద్రమూర్తిశర్మ & కో. మచిలీపట్టణము-కే. వి. మాణిక్యరావు. హిందూపూరు-కె. ఆర్. భాస్కరయ్య & బ్రదర్సు. బళ్లారి-ప్రేమచిత్తాయము. గుంటూరు-అంగ్ర అయ్యుల్స్ డిస్ట్రీబ్యూటర్సు. మారుతీపురం-డి గోదావరి మెడికల్ స్టోర్సు.

కెల్లాను-డి. ఆర్థర్ ఫార్మసీ, ట్రంకుకోడు. తెనాలి-డి. కృష్ణాఫాస్ఫీ స్టోర్సు. నరసరావుపేట-ధనలక్ష్మి మెడికల్ స్టోర్సు. మదనపల్లి-ఓ. పట్టాభిరామయ్య అండు సో. చిత్తూరు-శ్రీ వేంకటేశ్వర బుక్ డిపో. గుత్తి-జి. యస్. శర్మ అండు సో. తాడేపల్లిగూడెం-గో. బ్రదర్సు.



ప్రాణసుధ

**బలవర్ధకములగు ఔషధములకంటెను
శ్రేష్ఠమయినది!**

నరములకు సూతన బలమునిచ్చును. క్షీణించిన
వీర్యశక్తిని స్థిరముగా పూర్తి చేయును. మెదడు
చే పని చేయువారికి ఉత్తమమయిన మిత్రము.

ధర 6 అవున్సులబుద్ధి 2-8-0.

Consulting Physiologist
అయుర్వేదాచార్య N. మాధవమేనన్, A.M.A.C.
మలబార్ ఆయుర్వేదిక్ స్టోరు.
Catalogue free. 107, బ్రాడ్వే, మదరాసు.

మాయేజెంటు:—

- | | |
|---|--|
| <p>1. D. సుబ్రహ్మణ్యంగారు
జానకిరాం లైండింగ్ వర్క్స్, తెనాలి.</p> <p>2. Dr. Ch. రాజారావుగారు
బ్రాడిపేట, గుంటూరు.</p> | <p>3. D. V. కృష్ణమూర్తి అండు కో.,
బెబనాడ.</p> <p>4. C. V. శాస్త్రి అండు కో.,
అవన్యూకోడ్, బెంగళూరు.</p> |
|---|--|

శ్రీ
రస్తు.

ర సాయ న చాయ శాల,

గట్టిచాయ రంగునూలు వ్యాపారం, తూర్పువాకిలి, మధుర (S. I. Ry.)
ఋణవిధ సూతన గట్టిచాయ రంగునూలు రకములు తయారుచేయుటలో “ఇండియా”లో
నెల్లను మొదటివారని ప్రఖ్యాతిజెందినవారు.

నెం 20రు లగాయతు నెం 150రు (2/64 & 2/81 డైమెంట్) వరకు నూలుపైన, ఇండంట్రిక్, సల్ఫర్, నప్టాల్ అలిజైరెక్, మొదలగు చాయలో మేలైన పెక్కువిధ రంగులు అద్దకింపబడుచున్నవి. మన రంగు నూలు రకములు పడుగుకున్న చాయకున్న గ్యారంటీయివని.

జప్తలీలు తయారుచేయు గొప్ప వ్యాపారులు, మగ్గంజనివారు మన రంగునూలు రకాలను ఉపయోగించి, ప్రఖ్యాతియును తగులాభమును పొందుచున్నారు గాన మా రంగునూలు ఓనుచును నొక పర్యాయముపయోగించినవారు యితర రకములను కొనిరనుటకు సందియములేదు.

మాచే తయారుకాబడు రంగునూలు పెట్టెలమీద మన కంపెని పేరుతో గూడిన, బడి, యశోదా కృష్ణుడు, నటరాజు, అనాస్ బిల్లులు గలవు. సదరు బిల్లుగల నూలు పెట్టెలు చూచికొనుడు.

శాంపిల్ ఆర్డర్ వ్రాయించేది.

బ్రాంచి: 78, ఏ టంకశాలవీధి, }
పార్కుటవున్, మద్రాసు.

RASAYANA SAYA SALAI.,
EAST GATE, MADURA, (S. I. Ry.)

“భావా! స్వాగతమేవా?”



వాణిజ్య దగ్గర బామరాల్ విసరుచుక సేవింపఁ జింతామణి
శ్రీవిభ్రాజిత సింహాసీకమున సుశ్రీ విరాజి గూర్చుండి సర్వ
భావం బొప్పగ నెల్లవిష్టపములక బాలించు శ్రీదేవి యీ
భావాబ్ధంబున నెల్లవారలకు సౌభాగ్యంబుఁ జేహర్చుతన్.

శ్రీముఖాబ్ధమునకుఁ జిన్నితమ్మండంచు సహృదయుండంచుం బ్రశస్తిగన్న
భావసంపత్సరప్రభు వధీకారియై లీలఁ గాలమును బాలించుకొఱకు
వచ్చె; నీవర్షాధిపతికి స్వాగతపూర్వకముగఁ జేయుచును సత్కారములను
సంతోషముగ నొక్కసంవత్సరము నిండుదాక నీతనిజేరు పిలచుకొనుచు
వర్తనంబుఁ జేయువార లెన్నె మహా
త్పవములకు సదా నిధాన మగుదు
ర వలఁ దదనుజుండు యువ రాజుగా వచ్చి
ముదముఁ గూర్చు దేశమునకు శివము.

స్వాగతము నీకు భావా!
స్వాగతము త్వదధిక్యతులకు సందాక్షకును నీ
స్వాగతము సకలజనులకు
స్వాగత మగు వర్షదేవ! స్వాగతమేవా.

పురాణం - సూర్యనారాయణతీర్థులు.

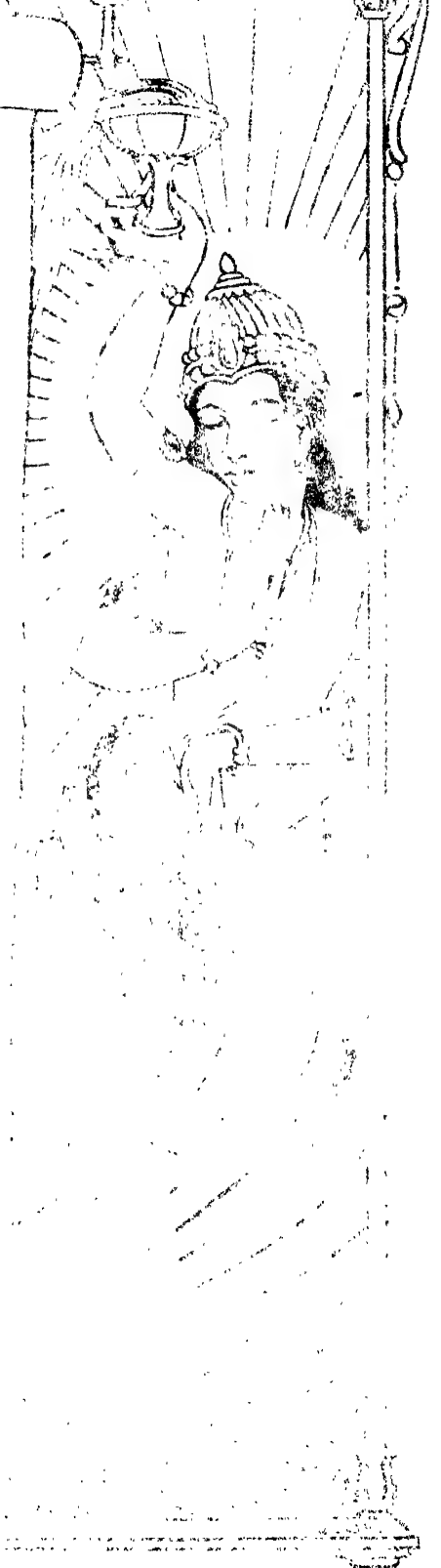


వనితాభావము నిజ
భావముతోఁ గలియ, స్వప్రభావముచేత
భావభవుఁ గన్న కరుణా
భావుఁడు భావసమఁ దనస్వభావము నెఱపున్.

భావకవీశ్వరప్రతిభాని మెండుగ నొండొకళ్ల సం
భావన చేసికొంచు, నవపద్మకులం బికపారి రమ్యుతో
భావన వృక్షశాఖలను బాడఁదొడంగ నిగూఢభంగి : నీ
భావసమన్ సమంచితకుభంబులు మాధవుఁ డిచ్చుఁ గాపుతన్.

శ్రీవనలక్ష్మీసతీవివాహమున ద్విజావళి పడసె సంభావనలను ;
భానుండు పూర్వదిగ్భామావదనమగ్ధమునఁ దోచెఁ గుంకుముబొట్టుపొల్కి ;
వలపు లూనెను బుష్పవతులైన లతహాన లీతటిఁ జేతనాచేతనములు ;
సంరంగమున భక్తజనులు శ్రీరామలీలమహోత్సవసమారంభు లైరి ;
“వచ్చె ! వచ్చెఁ గ్రొత్తవత్సరం ! బిది మఱా
త్సవదినం,” బటందు జనములు నగ
రముల గ్రామములను, బ్రమదంబు నొందిరి :
ముదిముల పెనుగాది యిది యుగాది.

కవిభూషణ, నెట్టి - లక్ష్మీనరసింహము,
కవి తా సమితి.



ప్రపంతంబుని భట్టబాణకవివిశ్వామిత్రసంతానమున్

భూషశ్రేష్ఠః బ్రతాపదుద్రవ్యపతి బుట్టించె నేయాంధ్ర యా
చూపుంగోపులు గల్గు కాంత యెపుడున్ శుద్ధాత్మయై యాంధ్రులన్
రేపున్ మాపును గాచుఁగాత సుతులం బ్రీతిం బిసాళించుచున్.

పెల్లఁబోయెద వేల విశ్వేశ్వరునిఁ గాంచి హంపీవిరూపాక్షు నరయరాదె
డంబువీడెద వేల టాజమహల్ గాంచి యమరావతీస్తూప మరయరాదె
ప్రభాంతిచెందెద వేల వారణాసినిఁగాంచి దక్షవాటికఁ గాంచి తనియరాదె
కళలు వీడెదవేల కాళిఘట్టము గాంచి వైశాఖపురిఁ గాంచి పరఁగరాదె
గాంగజలములఁ గనుగొని కలఁగెదేల - గౌతమీగంగ కనులారఁ గాంచరాదె
యఖిలసాభాగ్యములు నీకు నమరియుండఁ - దెలివిమాలెద వేమోయి తెలుఁగుబిడ్డ!

శాతవాహనహేతి సప్తార్చికీలలు దండిగా నేటికి మండుచుండఁ
గాకతీయుల భజాగర్వనర్తకి నేడు వాడవాడలయందు నాడుచుండ
వేఁగిదేశాధీశ విస్తారతేజంబు నలుగడ లందింక వెలుఁగుచుండ
తుభువరాశ్వురుష జలరాశి యిప్పుడు మేరను మీఱుచుఁ బాటుచుండ
నాత్తరాహుల దోశ్యక్తి కబ్బురంబు - నందనేటికి నీవింక ముందు కరిగి
నడుము బిగియించి తొల్లిటి కడిఁదిశక్తి - నడరిపెంపొందు మాంధ్రుఁడా, దుడుకువిడిచి.

ఆతిపోవఁగలేదు యాంధ్రరాజన్యుల పరికింపఁగారాని పౌరుషంబు
మాసిపోవఁగలేదు మనరెడ్డిరాజుల విజయాంకచిహ్నముల్ వేఁగినాటఁ
దొలఁగిపోవఁగలేదు వెలమరాజుల ధాటి యంతఃపురాంగనాస్వాంతములను
గరఁగిపోవఁగలేదు కమ్మరాజుల చేతి కత్తివేటులఁ గాటు గడ్డనల్ల
సమసిపోలేదు తెలగాల సాహసమ్ము - బ్రాహ్మణప్రతిభ యొకింత పాసిచనదు
ఇన్ని శక్తులు నీలోన నున్నవన్న - నిలిచి పరికించుకోవన్న తెలుఁగుజోడ !

అగపర్చు మెందేని నఖిలసంతర్పియా విశ్వదాతను బోలు విమలయశునిఁ
గనుపర్చు మెందేనిఁగాని రాధాకృష్ణసంతటి నిఖిలవేదాంతవిదునిఁ
గాన్పించు మెందేని గాలించి పట్టాభి సాటియా రాజ్యాంగచతురు నితరుఁ
జూపింపు మెందేని శోధించి రామలింగారెడ్డివంటి విజ్ఞానఖనిని
ఔత్తరాహులె ఘనులనియాంధ్రులుత్త - రిత్తమానిసు లని యేలత త్తరింతు
వీరలందఱు నీవాకు కారయోయి - యాంధ్రపుత్రుఁడ, తెలిసికోవయ్య నిజము.

అంధ్రపత్రిక - భావ సంవత్సరాది సంచిక

‘దక్షిణాఫ్రిక’ నేలి దక్షతఃజూపిన రెడ్డినాయఁడు తెల్లుబిడ్డ గాఁడె
యలప్రయాగజ్జేత్రమందుఁ బెంపొందెడు చింతామణి తెలుఁగు జెట్టి గాఁడె
యఖిలప్రపంచవిఖ్యాతుండు శ్రీకోడి రామమూర్తి తెలుంగురెడ్డి గాఁడె
మధ్యహిందూదేశ మాణిక్యమై వెల్లు రాఘవేంద్రుఁడు తెల్లు ప్రభువు గాఁడె
రామకృష్ణచౌదరి సొంటిరామమూర్తి - దిట్ట వేంకటపతిరాజుఁ డెలుఁగువారు
కారె ? యిట్టియోధులు తెలుంగాణమందుఁ-గలుగ నీ కేమి లోటోయి తెలుఁగుబిడ్డ !

ఆలించినావెందుఁ ద్యాగరాట్కీర్తన లాంధ్రభూమినిఁగాక యన్యభూమి
నాలకించితి వెందు నధ్యాత్మ కీర్తన లాంధ్రభూమినిఁగాక యన్యభూమి
రహివింటి వెచ్చోట రామదాస్కీర్తన లాంధ్రభూమినిఁగాక యన్యభూమి
మొగి వింటి వెయ్యెడ బాబ్బిలిపాటల నాంధ్రభూమినిఁగాక యన్యభూమి
వింటి వెచ్చటఁ బల్నాటివీరచరిత - మాంధ్రభూమినిఁ గాకున్న నన్యభూమి
నాంధ్రపద మెంతమధురమోయాంధ్రతనయ! - తెలిసికొని, నేటి కేనియుఁగులుకవోయి!

భోజరా జిచ్చోటఁ బుట్టలే దందువా? యాంధ్రభోజనిమాట యరయుమోయి !
రాణాప్రతాపుండు కానరాఁడందువా? శ్రీరామరాజు విశేష మరయు
ఝాన్సిలక్ష్మీభాయి జనియింప దందువా? మాంచాలచరితమ్ము నెంచవయ్య
తులసిదా సిచ్చటఁ గలుగలే దందువా? పోతన్న కత తలపోయవన్న
యెందునుంగూడ లో టింతయేని లేదు - ముందునకు వచ్చి నిలబడి సందడిగను
నీదుశక్తిని నీవెంచి నెగడుమోయి ! - యమలగుణగణవార, యో యాంధ్రవీర !

మాడరక రిహూలు మనకు లే వందువా? వెలుగొందుఁగాడె త్రివేణివాణి
మాధురీపత్రిక మనకు లేదందువా భారతిపత్రిక ప్రబలుఁగాడె
కవిసార్వభౌములు గానరా రందువా? నాఁడును నేఁడునుంగూడఁ గలరు
దైనికపత్రికల్ దనరార వందువా? యాంధ్రస్వరాజ్యల నరయరాడె
వారపత్రిక లుండె నవ్వారిగాఁగ - దేనఁగూడను గొఱత యేమేని లేదు
నడుము బిగియించి ముంగలి కడుగువెట్టి-యాంధ్రరాజ్యమ్ము నార్జింపు మాంధ్రయోధ!

సంఘసంస్కర్తలు జనియింప రందువా? వీరేశలింగముతీరు గనుమ
ఁరపతి నిలిపెడువారు లేరందువా? నరసింహదేవర నరుస గనుమ !

జాతీయ నాయకుల్ జన్మింప రందువా? సర్దారు ప్రభృతుల సరణిఁగనుమ !

జాతీయకవు లిందు జనియింప రందువా? వేంకటశర్మ వివేకిఁగనుమ !

రైతునాయకులకుఁగూడ బ్రాతిలేదు-రంగనాయకుఁ గనుమ యథంగమతిని !

ఇన్ని సదుపాయములునీకునున్న యపుడె-యాంధ్రరాష్ట్రంబుసాధింపు మాంధ్రయోధ !

చిట్టివడాలను జేర్చినపోవుతోఁ గమ్మనైన పనసకాయకూర

అల్లముకరివేపయాకుతోఁ దాల్చింపుగా నొప్పు లొకవంకాయకూర

ఆంధ్ర పత్రిక - భావ సంవత్సరాది సంచిక

ఘ్రాణేంద్రియంబుతో రసనేంద్రియముఁ దన్ను పసమీఱు విజీచిన పాలకూర
గరమసాలాలతో గమగమవలచెడు వసలేని లే జీడిపప్పుకూర

బుట్టుగుం జూచబియ్యము పూతచుట్ట - లాదిగాఁగల దివ్యపదార్థవితతి
యాంధ్రులకెకాని మఱియేరికైనఁ గలదె - నేతుశీతాద్రిమధ్య విశేషభూమి.

కాలునేతులును వంకరలువోవఁగఁజేసి వణఁకించు పెనుచలిబాధ లేక
బండతాఘలఁగూడ మెండుగా బీటలు వాటించు నాతపబాధ లేక
ఏఱు లూఘులుఁగూడ నేకమై ప్రవహించు వట్టోడుతతవర్ష బాధ లేక
బండుగనాఁడైనఁ బట్టెఁ డన్నము లేక రొట్టెలే తినియుండు రోత లేక
చూచితూచినయట్టుగాఁ దోచుచుండు - నీతు నెండయు వానయుఁ బూతమైన
యమలరాజాన్నమునుగల్గునాంధ్రభూమిఁ-దలచికొనిపొంగుమెటనున్నఁ దెలుఁగుబిడ్డ!

కాశ్మీరదేశంబుఁ గాలఁ దన్నఁగఁజాలు కోననీమను మదిలోనఁ దలఁచి
ప్రాలేయగిరిమించు వాలాయమును మించు భద్రప్రదము మహేంద్రాద్రి నెంచి
మేనుధరాధరామేయసంపదఁగేరు జయపురాచలముదౌ హోయలు నెన్ని
రాముని మాతులు రాజధానీపురి దక్షిణకోసల మత్సులఁ గని
గంగఁ గాళింది శారద భంగఁజఱచి - పాఱు గోదఁ, గృష్ణను,దుంగభద్ర మ్రొక్కి
నిక్కి పెంపెక్కి యెల్లెడ నెగడుమోయి-యాంధ్రుఁడనుపేరు విజయాంక హూచుఁదనర!

ఆంధ్ర ప్రబోధము

తిరుపతి వేంకటకవులు

వండమాతర మార్యచుంబితపదా మానేతుశీతాచల

ప్రఖ్యాతాం కమనీయవైలవిపిన స్వాదూదక హ్రాదినీమ్,
వైకస్వాదిమపూరపూరితఞ్చల క్షౌరుట్సమేతోర్వరాం
నానాభాషితభూషితాం చ విదుషీం వీరప్రసూశేఖరామ్.

అభ్రచుంబితశిరోద్రభంబులగు పూర్వ శశ్విమోత్తరగిరి ప్రతతిచేత
మధురనిర్మలఁ యఃప్రథితంబు లౌచు సంతతముగఁ బ్రవహించు నదులచేత
తరులతాగుల్మకందవనౌషధీనిధానములచేఁ దగు కాననములచేత
సంపూర్ణ సర్వ సస్యప్రశస్యము లైన కమనీయభూమిభాగములచేత
నుష్పతోఁ దొమ్మిదింటి కింకొకప్రదేశ - మునకుఁ బోకుండ సంసారమును భరించి
శూరులును పండితులు నగు సుతులఁ గన్న-తల్లులకుఁ దల్లి భరతమాతకు జయంబు.

చాళుక్యభూపాల సర్వతోముఖరాజ్య పరిపాలనంబున గరిమవడసి

కాకతీయనరేంద్రకలితసింహాసన శాసనంబున సుప్రశస్తి గాంచి

ఆర్య్విటింశజాతోర్వీశ్వర ప్రాభవమున నిస్తులిత వైభవముఁ జెంది

విజయనగరరాజ్య విక్రమసాహచర్యంబుచే విఖ్యాతి నధిగమించి

రెడ్డిరాజులచేతఁగీర్తిని వహించి - వెలమనంస్థానములచేత వినుతికెక్కి
నేటి కాంగ్లేయసామ్రాజ్య పాటవమునఁ-బ్రబలు మన యాంధ్రమాతకు పండ్లనములు.

గోదావరీనదీపాదోదకము ద్రావి ఫలియించు కేదారవసతివలన
కృష్ణానదీ మహోత్కృష్ట నీరప్రయోగముచే ఫలించుభూగరిమ వలన
తుంగభద్రానదీతోయంబు సస్యసంపూర్ణంబు గావించు పుడమివలన
పెన్నాతరంగిణీ సన్నతామల నీర నీరంధ్ర మగు పంటనేలవలన
మఱియు ఋషికుల్య మొదలైన ఝరులవలన-తనుజులనుకన్యపడిపెంచుకొనుచు నాత్మ
గౌరవముతోడఁ దనసరివారిలోనఁ - దనరు మాయాంధ్రమాతకుఁ బ్రణతిశతము.

రాజరాజనరేంద్రు తేజోవిభూతితో నెయ్యంబుఁ గన్న నన్నయ్యవలన
మనుమసిద్ధిన్యపాలు మహానీయకీర్తిచే మన్ననం గన్న తిక్కన్నవలన
అనవేమభూపాలు ఘనయశోలక్ష్మికిం బట్టైన శ్రీనాథభట్టువలన
కృష్ణరాయనికీర్తి కిరవులై పేరుచెందిన ఘనుల్ పెద్దనాదికులవలన
మఱియు సోమన పోతన మారనాది - కవులవలనఁ గవిప్రసూఖ్యాతిఁ గాంచి
ఆంధ్రభాషాప్రపంచ మేమటక నేటి - దనుక నిలిపిన యాంధ్రమాతకు జోహారు.

మన భాషతోడనే మనతల్లికి సఞ్చర్య విసువులేకుండఁ గావింపవలయు
మన యింటిపెత్తనం బానరించుచును మన యమ్మయే మనలఁ గాపాడవలయు
మనమండలంబున మనతల్లి వేటవసింపఁగా గృహముఁ గట్టింపవలయు
మనసహోదరులు సామంజస్యమున నేర్పు చదువులే మనమెల్లఁ జదువవలయు
మనము గావింపఁ దగు ప్రయతనములెల్ల - సులభమగురీతిగా మనసోదరులకు
మాతృభాషనె వార్తఁ బంపంగవలయు - నాంధ్రదేశీయు లైన మాయన్నలార!

ఆంగ్లేయ సామ్రాజ్య మధిపతిస్వాతంత్ర్యము నొసంగ మన కిది మొదటిమెట్టు
మనమెల్ల సస్యసంపదమీఱఁ గావించు మనపురోవృద్ధికి మనికిపట్టు
మనభాష కభివృద్ధి ఘనతయు సర్వశాస్త్రప్రచరిపూర్తి వహింప రచ్చపట్టు
మాతృనేవ త్యజించి మనమన్యనేవకై దాఁటిపోనీయని త్రాళ్లకట్టు
మొనయు సంఘదురాచారములను నెట్టు - రాజభక్తిని గూర్చుని రాతిగట్టు
స్వీయగౌరవ మరికట్టు చెంపపెట్టు - మానకుం డాంధ్రజనులార మనలపట్టు.

విభజించియును బ్రజాభిప్రాయమునుబట్టి వంగదేశముగలుపంగలేదె ?
కోరినమాత్ర బేహారురాష్ట్రం బది ప్రత్యేకముగఁ జేయఁబడఁగలేదె ?
శాసనసభకుఁ బ్రజాప్రతినిధులను నెన్నుకో నధికార మీయలేదె ?
అనుమతింపఁగలేదె హైందవం బగు విశ్వవిద్యాలయంబు స్థాపించుటకును
కోరికలు కోరినంతఁ జేకూరలేదు - మాకటంచుఁ బ్రయత్నముల్ మానరాదు
పట్టుదల మానకుం డాంధ్రధట్టులార ! - తెగువఁ జూపింపుఁడీ ! తెల్లుదిట్టులార !

ఆంధ్ర వత్రిక - భావ సంవత్సరాది సంచిక - ప్రకటనలు

నరములకు శాశ్వతబలము కావలెనన్న సదానర్వకాలము

గుజరాత్ ఫార్మసీవారి

సువర్ణమిత్రజీవన్ము

ఉపయోగించుడు.

యుక్తి, మోచనను బుద్ధిని అధికపరచి దేహస్థాయమును ప్రసాదించును.

అంశరు వైద్యులున్న దీనినే శిఫార్సు చేయుచున్నారు.

ఒకలేప మప మోగించిన దీనియొక్క మేలిమిని తెలియనగును.

ధర 1 పాసు రు. 5/-; 1/2 పాసు రు. 2/8/-; 1/4 పాసు రు. 1/5/-

For Catalogue of Medicines write to

పోల్ ఏజెంట్లు:—సీతారాం మెడికల్ షోర్సు

2/177 చైనాబజారురోడ్డు, పాత ఆనందభవనం హోటలువద్ద, మద్రాసు.

Sub Agents.

1. Bellary: C. S. Shastry Esq.
Prop. Aryavaidyalaya Brucepet.
2. Nellore: K. V. Naidu & Co.,
Chinna Bazar.

3. Narsapur: Kakiletty Chinna Tammaya.
4. Tirupati: Y. V. Sabbaiah & Co.,
General Merchants.

N. B.—Wanted Agents and Stockists in every big Towns. For terms write to Sole Agents.

ROY & CO.,

Homeopathic Chemists, Druggists and Publishers.

PRINCESS STREET, BOMBAY No. 2.

The premier and the leading house for Homeopathic and Biochemic Remedies. Founded in 1889. From an humble beginning it has now grown to be an institution of the first rank of its kind in India.

REVIEWED IN 10TH ALL INDIA MEDICAL CONFERENCE EXHIBITION GUIDE

Sole Agents for :- **Boericke & Tafel.**

(The world renowned Homeopathic Pharmacists & Publishers) PHILADALPHIA. U. S. A.

Their medicines are the best.

(Literature supplied on request.)



పి. కోదండరామపిళ్ల (లేట్ పి. యస్. పొన్ను స్వామి పిళ్లగారి పుత్రుడు)

1854-వ సం. లో స్థాపించబడినది.

పి. పొన్ను స్వామిపిళ్ల బిల్డింగు, మేలైన గృహోపకరణ నిర్మాతలు, నష్టయిదారులు
89, వెస్టు ఎస్ట్ నేట్, పార్కు రోడ్డు, మదరాస్.

ఎంట్రన్సు హాలు, డైనింగ్ రూము, లైబ్రరీ, హాల్లు, ఇంక అఫీసులకుకావలసిన అన్నివిధముల ఫర్నిచరులు, టేకుసామానులు, నల్లప్రాసు, తెల్లప్రాసులతో అనేక రకములతో ఇత్తడి చట్టములు పొన్నుతో సహా, చక్కగచేర్చి, గట్టిగాను భద్రము గాను చేయబడును.

కోరినవారి కవిధమున సామానుల కైవసుసర్వ కొయ్యపనులకై ననుసరే ఎక్స్ మేటు యివ్వబడును. ఒకసారి మావస్తుప్రదర్శనఫోలు చూచినచో మీకు తృప్తి కలుగును. దూరపు స్థలమునుండి వస్తు అర్థరులు సామానుల కనులైత్య చార్జీకిగాను వాని కిమ్మకులలో మూడవవంతు సామ్యుపంపిన తోడనే క్రొద్దగా పి. పి. చేయబడును.

P. KOTHANDARAMA PILLAI,

Cabinet Maker, 39 Esplanade, MADRAS.

ఫోను : 2190.

సి. పి. రాం ఆండ్ కో.,

ఔషధములు, మూలికలు విక్రయించువారు.
శుభ్రమైన మూలికలు, ఔషధములు, పేటెంటు
మందులు, శస్త్రచికిత్సాచరికరములు మున్నగునవి
స్వయముగా దిగుమతి చేయువారు.

260, చైనాబజారు రోడు,

= (రాజుగారి ప్రతిమకు ఎదురుగా) =
మద్రాసు.

మా గ్యారంటీ :—

శుభ్రమైన వస్తువులు

ఔషధ మిశ్రమములు జాగ్రత్తగా కలుపుట.

వైద్యుల సలహా.

శ్రద్ధగా అనుసరింపబడుచున్నవి.

బాలరకు
సంజీవిమాత్రలు

50 మాత్రలు బుడ్డి అణాలు 8 ; 1 డజన్ రూ. 5.

బిడ్డలకు యేవిధమయిన వ్యాధులు రాకుండా కాపాడును. జ్వరము, మలబద్ధము, దిగు, పడికము, క్రిములు, జ్వరబల్లలు, మాండ్లము, నాతయ్యాపులు మొదలగు సర్వవ్యాధులకు రామబాణమువంటిది. తెలిసితెలియని యేవ్యాధి నయినను నివర్తించుటకై బహుశోప్పపద్ధతిని వైద్యసామర్థ్యమును ఉపయోగించి పరోపకారచింతతో తయారించినది. బాలర ఆపత్కాలములో కాపాడి ఆరోగ్యమును ప్రసాదించుటలో దీనికి సాటిలేదు లేదు. వివరములకు కేటలాగు చూడుము.

డా॥ కోటాన్ ఎమ్. ఎస్.

మెడికల్ హాలు,

146, బ్రాడ్వే, మద్రాసు.

Catalogue and Consultation free. Healing by post is a speciality. Wanted Agents to sell Dr. Kotah's specialities.

Coffee
Ours for Quality

PEABERRY COFFEE

AND
Other Grades

DELIVERED FREE AT
YOUR DOORS IN MADRAS

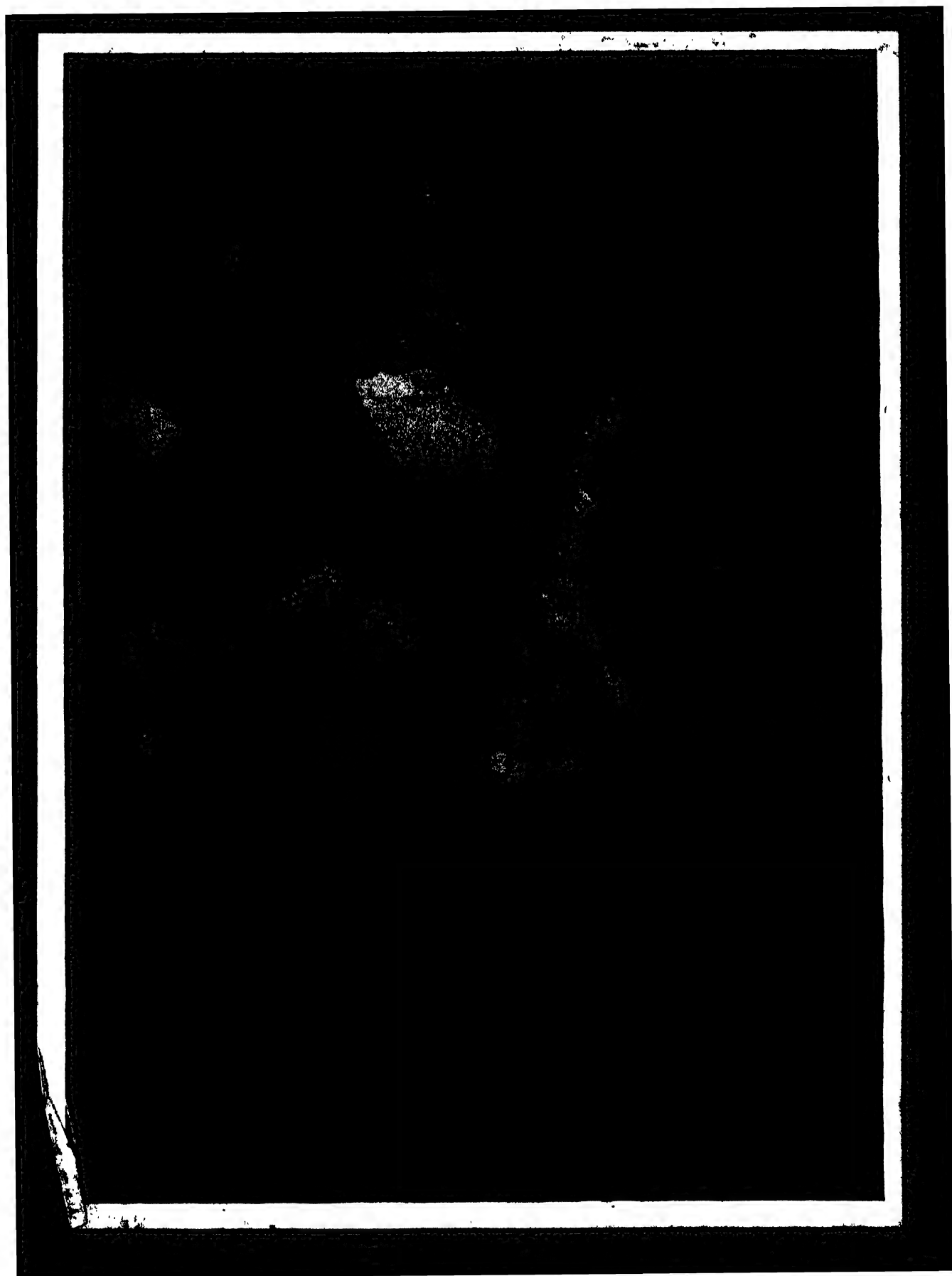
MOFUSSIL ORDERS
ARE SENT BY U.P. RAIL
CHARGES OR POSTAGE EXTRA

WE SUPPLY FROM A 7½-LB. BAG TO A SHIP LOAD
AVAILABLE IN SEVERAL GRADES TO SUIT ALL

GANESHA & CO.
79, TRINIDAD CHETTY ST. MADRAS

Retail Branch :—

285, China Bazar Road, MADRAS.





“ఘనజన్యంబగు నా తుపానుజడి యుగంబాటచే బద్ధిసీ
మణి యాత్మేశకరోపగూహన విరామప్రాప్తి గర్హించి యిం
దనుకన్ నేడు ప్రశాంతి వాటిల నితాంతామోద భద్రాత్మమై
యినసౌవర్ణకర్తృహోత్సవము హాయి నొప్పందు నబ్జాసనా !

కూటికి నోటికి స్నేహము గోటివిఘాతము లన్నరీతి నా
నాటనె పెండ్లియానని యసంతమహోత్సవ మొందునంత బో
రాటము వచ్చె నట్లు ప్రచురంబగు వైధనతారవోలె, నీ
నాటికి గాదె యీశుకృప నాపయి నీపయిగల్గె బ్రేయసీ !

కదనము సల్పి వచ్చితి నఖండపరాక్రమలీల నాజిలోఁ
గదీసినగాయము ల్లుదిరెగాని రణోర్వికి నన్ను బంపున
య్యదనున నస్మదీయహృదయంబున గల్గిన తావకోగ్రవా
క్ప్రదరవిదారణవ్రణనికాయము మానుటలేదు మానినీ !

అలనాఁ డీ వటులాడుటే మనకు శ్రేయబయ్యె గాకున్న నేఁ
గలన నొప్పుట కేఁగియుండ నిక జోక బోయినన్ సంగర
స్థలమం దప్రతిమానశౌర్యమున యుద్ధింబు నొప్పనర్పం జమా
లలనా, నీదుప్రబోధనంబె యని బోరంగలెనా నబ్రమే ?

రణరంగంబున కేఁగి కిండ్ల దగు వీరవ్రాతమున్ సంగరాం
గణము స్ఫీతిని జేసి పాటుజనమున్ ఖడ్గాహతిం జంపె భీ
షణిరోషంబున రాయ, లాపగిది నన్ జానీక రక్షించె నీ
గణనాతీతసుబోధనంబు హరిచక్రప్రక్రియన్ గామినీ !

భీరుడు వీర డటన్న చెడుపేరును నేగొనకుండఁగాచి నా,
వారణసీమ సాహసబలాభినివేశము లూని పోరున
ద్వీరుని జేసినా, విపుడు పెండిలియాడి త్వడీయభర్తగా
మారిచినావు—దేశికుఁ, డమాత్యుఁడుఁ బ్రేయసి నీవ నాకికన్.”

ఁతి యారీతినిఁ బల్కుఁ బ్రేమలత మేల్వాల్చాపుతేం ట్లమ్మహీ
ఁతినంశోద్భవు పాదపంకజసుధాపానంబుఁ జాలించి య
ద్భుతమామాడ్కిఁ జకోరపక్షులయి సమ్మోదంబుమైఁ దత్ప్రియ
స్మితచంద్రాతపమున్ గ్రహించెఁ బ్రణయశ్రీమంత్రమూలంబునన్.

“వలపున్, రాగము, సోయగంబు, సుమనోభావంబు, లేఁబ్రాయమున్
బాలుపారన్ లతకూన పూనికను తత్పున్నాగము న్నూడి ని
స్తులహా నాశ్రయ మొంది తద్గుణతరుస్సూర్జనమహాగౌరవం
బెలమి న్గోరుచు ద్వంద్వధర్మమును నెంతేఁ జాటు నీక్షించుమా!

అలనాఁ డీవు తురుష్కువేషమున డాయన్వచ్చి న స్టూచి ని
స్తులభీతావహావాక్యము ల్వలికి సంతోభంబుఁ జేకూర్చినా,
నలవాచాహతి నిష్పడు న్వడఁకు మే నాపాదమ స్తంబు నో
చెలికాఁడా, బిగిఁ బట్టుకొ” మృనుచుఁ దాఁజేర్చెన్ బతిన్ గౌగిటన్.

“ప్రియుఁడా, నీమదిఁ గల్గుగాయముల వేవేగన్ దగన్ మాన్పు నెం
తయు దక్షిణబగు తత్పుధారసము మద్వశ్యైషధంబాట నీ
వయయో! భీతిలనేల? జాల మిఁకనేలా?” యంచుఁ దా నిచ్చెఁ ద
త్ప్రియహా సయ్యధరామృతంబుఁ బ్రణయోద్రేకంబు దీపింపఁగన్.

చిత్తరువందు బొమ్మలటు చేప్టల నేది వధూవరుల్ సుధా
మత్తతచేత నొంపొరుల మాటికిమాటికిఁ గౌగిలించికొం
చత్తుక కొంతనేపు తగి, యాపయి వీడ్వడి, హ్రీ నటించి త
ల్కోత్తఁగఁ గూరుచుండి రొగి నొక్కరిఁకక్క నికొక్క రంతటన్.

సలలితమంత్రముగ్ధగిరిసర్పముల ట్లదంపతుల్ నిజ
స్థలములనుండి వల్కుక సుధామధురేక్షణరూపభాషణం
బులఁ బ్రణయైకవాదము, లమోఘగతి న్బొనరించికొంచు వ
ర్తిలుసమయాన దాసరులు రింగునఁ బాడెడుపాట విన్నజెన్.

నైజగృహాంగణంబున విసంబడు దాసరిపాట విన్న యా
రాజనిభాస్య భర్తఁ గని రాజతవైఖరి రాయచూరుఘా
రాజినిఁ గూర్చి పాడఁగ రయంబున వారలఁ దెమ్ము లోని కే
నోజ విసం గుతూహలము నొందుదు నన్న నతండు నొననెన్.

జలయంత్రపుత్రికలతో - ఫలపుష్పభరాతినమ్రపాదపములతోఁ
గోలఁకులతోఁ గిలకిలమను - పులుఁగులతోఁ జంద్రకాంతపుం దిన్నెలతో.
చెలువౌ నుద్యానవన - స్థలి నంతట విడిచి నూత్న దంపతులు కళా
విలసద్భవనముఁ జొచ్చిరి - లలిఁగొని విన రాయచూరురణగీతంబున్.
మోములఁ బంగనామములు పూని, గులాబిరుమాళ్లు నెత్తిపై
గోముగఁ జాట్టి, ఖంజరులు గోలలు దట్టి, చితార్లు మీటి యా
ప్రేమలతాగృహాన నొకవేదిక నెక్కొని పాటగాండు సం
గ్రామము గూర్చి యిట్లుచితరాగముమీఱఁగఁ బాడి రంతటన్:



(రణగీతము)

జయజయాంధ్రజన జననీ! దేవీ!-సకలరాష్ట్రరాజ్ఞీ!
జయజయభారత మాతృకుమారీ!-సద్యశోవిహారీ!

* * * *

శ్రీరమ్మందై, సింగారందై, శ్రీకారాకృతిమై
సారాహారపదార్థసమృద్ధిస్థూనాపమమై
విజయనగరసామ్రాజ్యవృద్ధియమై, విపులజలావృతమై
ప్రజానిపాలిటఁ బారిజాతమై, చైరిభీకరందై

వివిధాయుధముల కగారవరమై, వీరనివాసందై
యవనీతలాన నమరావతియై, యత్యంతోన్నతమై
హరులకుఁ గరులకు నాయతనందై, యమరరక్షితందై
తురకజోదులకు సురికంబందై, దుర్గమదుర్గందై
విజయాంధ్రపతాకాలంకృతమై, భేరిస్వనితందై
విజయనగరరాజులవశమయి మును వెలయుచుండె బలమై
రాయలసీమకు రత్నమకుటమై, రమ్యశిల్పయుతమై
రాయచూరుదుర్గంబు చూపరుల కాయతాద్భుతందై. జయ.

భీరుడు వీర డటన్న చెడుపేరును నేగొనకుండఁగాచి నా,
వారణసీమ సాహసబలాభినివేశము లూని పోరు స
ద్వీరునిఁ జేసినా, విపుడు పెండిలియాడి త్వదీయభర్తగా
మారిచినావు—దేశికుఁ, డమాత్యుఁడుఁ బ్రేయసి నీవ నాకింకన్.”

ఁతి యారీతినిఁ బల్కుఁ బ్రేమలత మేల్వాల్చాపుతేం ట్లమ్మహీ
ఁతివంశోద్భవు పాదపంకజసుధాపానంబుఁ జాలించి య
ద్భుతమామాడ్కిఁ జకోరఁతులయి సమ్మోదంబుమైఁ దట్పియ
స్మితచంద్రాతపమున్ గ్రహించెఁ బ్రణయశ్రీమంత్రమూలంబునన్.

“వలపున్, రాగము, సోయగంబు, సుమనోభావంబు, లేఁబ్రాయమున్
బాలుపారన్ లతకూన పూనికను తత్పున్నాగము న్నూడి ని
స్తులమా నాశ్రయ మొంది తద్దనతరుస్సూర్జనృహగౌరవం
బెలమి న్గోరుచు ద్వంద్వధర్మమును నెంతేఁ జాటు నీక్షించుమా!

అలనాఁ డీవు తురుష్కవేషమున డాయన్వచ్చి న స్టూచి ని
స్తులభీతావహవాక్యము ల్వలికి సంక్షోభంబుఁ జేకూర్చినా,
వలవాచాహతి నిప్పుడు న్వడఁకు మే నాపాదమ స్తంబు నో
చెలికాఁడా, బిగిఁ బట్టుకొ” మృదుచుఁ దాఁజేర్చెన్ బతిన్ గాఁగిటన్.

“ప్రియుఁడా, నీమదిఁ గల్లుగాయముల వేవేగన్ దగన్ మాన్పు నెం
తయు దతుంబగు తత్పుధారసము మద్వశ్యోపధంజాట నీ
వయయో! భీతిలనేల? జాల మింకనేలా?” యంచుఁ దా నిచ్చెఁ ద
త్ప్రియహా సయ్యధరామృతంబుఁ బ్రణయోద్రేకంబు దీపింపఁగన్.

చిత్తరువందు బామ్మలటు చేష్టల నేది వధూవరుల్ సుధా
మత్తతచేత నొంపొరుల మాటికిమాటికిఁ గాఁగిలించికొం
చత్తుక కొంతనేపు తగి, యాపయి వీడ్వడి, స్త్రీ నటించి త
ల్కొత్తఁగఁ గూరుచుండి రొగి నొక్కరిప్రక్క నికొక్క రంతటన్.

సలలితమంత్రముగ్ధగిరిసర్పముల ట్లదంపతుల్ నిజ
స్థలములనుండి వల్కుక సుధామధురేక్షణరూపభాషణం
బులఁ బ్రణయైకవాదము, లమోఘగతి న్బొనరించికొంచు వ
ర్తిలుసమయాన దాసరులు రింగునఁ బాడెడుపాట విన్నడన్.

వైజగృహంగణంబున విసంబడు దాసరిపాట విన్న యా
రాజనిభాస్య భర్తఁ గని రాజితవైఖరి రాయచూరుఁ ఘో
రాజినిఁ గూర్చి పాడఁగ రయంబున వారలఁ దెమ్ము లోని కే
నోజ విసం గుతూహలము న్బొందుదు నన్న నతండు నొననన్,

జలయంత్రపుత్రికలతో - ఫలపుష్పభరాతినమ్రపాదపములతోఁ
గోలఁకులతోఁ గిలకిలమను - పులుఁగులతోఁ జంద్రకాంతపుం దిన్నెలతో.
చెలువౌ నుద్యానవన - ఫలి నంతట విడిచి నూత్న దంపతులు కళా
విలసద్భవనముఁ జొచ్చిరి - లలిఁగొని విన రాయచూరురణగీతంబున్.
మోములఁ బంగనామములు పూని, గులాబిరుమాళ్లు నెత్తివై
గోముగఁ జుట్టి, ఖంజరులు గోలలు దట్టి, చితార్లు మీటి యా
ప్రేమలతాగృహన నొకవేదిక నెక్కొని పాటగాండు సం
గ్రామము గూర్చి యిట్లుచితరాగముమీఱఁగఁ బాడి రంతటన్.



(రణగీతము)

జయజయాంధ్రజన జననీ! డేవీ!-సకలరాష్ట్రరాజ్ఞీ!
జయజయభారత మాతృకుమారీ!-సద్యశోవిహారీ!

* * * *

శ్రీరమ్మంబై, సింగారంబై, శ్రీకారాకృతిమై
సారాహారపదార్థసమృద్ధిస్వర్ధనూపమమై
విజయనగరసామ్రాజ్యహృదయమై, విపులజలావృతమై
ప్రజానిపాలిటఁ బారిజాతమై, చైరిభికరంబై

వివిధాయుధముల కగారవరమై, వీరనివాసంబై
యవనీతలాన నమరావతియై, యత్యంతోన్నతమై
హరులకుఁ గరులకు నాయతనంబై, యమరరక్షితంబై
తురకజోదులకు నురికంబంబై, దుర్గమదుర్గంబై
విజయాంధ్రపతాకాలంకృతమై, భేరిఘ్రినితంబై
విజయనగరరాజులవశమయి మును వెలయుచుండె బలమై
రాయలసీమకు రత్నమకుటమై, రమ్మోల్పయితమై
రాయచూరుదుర్గంబు చూపరుల కాయతాద్భుతంబై. జయ.

కలకల! కొండొకకాలంబునఁ దురకలవళమయ్యెఁ దదీ
యాద్భుతదుర్గం బాంగ్రులదురదృష్టతిశయంబుననాన్.
రాయమారుఁ గోల్పశినవిజయనగరాధీశ్వరులారా!
తమబలంబు, సామ్రాజ్యము, సర్వస్వముఁ గోల్పశినట్లే
సంతతిచింతాక్రాంతస్పృహయులై సరసన నాకోటన్
జయించి క్రమ్మి నాంగ్రుల సామ్రాజ్యంబునఁ గలుపంగాఁ
బరిపరినిశ్చప్రయత్నములు సల్పంగఁజొచ్చి రాపైఁ
గాని యాంగ్రులకు స్వాధీనం బది కాకపోయెనకటా!
రాయమారు గెలిచెనునాశనుగొని రాజువెన్న రాజై
యెంచి రీర్ధినను దుర్గముమాత్రం బందె నిలిచె నాహా! జయ.

* * *

అంతట సాశ్వవృసింహరాజు పట్టాభిషిక్తుడై తా
నాంగ్రులసామ్రాజ్యంబున కంతకు నందఱుఁ దనిపె నహా!
సాశ్వవృసింహుని బలాహసదేశాభిమానముల నా
నలువకైన మఱియింపఁజేసికొనెను దెలుపఁగఁ దలమా!
గురుకుగ సాశ్వవృసింహరాయ లాకోటమరల నెట్లో
తాను జయింపఁగఁ బ్రతిసంబట్టి యాధ్యంబును సర్వే నహా!
కాని యాతనికి స్వాధీనం బది కాకపోయె నాపైఁ
బ్రాణ ముండుచో నాదుర్గంబును బట్టకపోవుదునా?
యనుచుఁ బ్రయత్నములహరహంబుఁ దానొసరించుచు మన నా
క్షౌత్రలనాథుని నకాలమరణము కబళించెను కట్టా! జయ.

* * *

ఆతనిమృతిచే సమరమహానల మారలేదు వినుఁడీ!
బ్రతికియుండి తా సంతఁజేసి నో పరమపదించియు నా
క్షీణికుఁ డొసరిచె సంత కెక్కు దాప్రతిస సాగుచున్నె;
మరణశయ్యఁ బడి యున్నపుడును దా మరువకుం డెనోహా!
రాయమారుసంపాదినవిషయం బాయవసీకుఁ డహా!
మరణశాసనము నాతఁడు వ్రాసెను మరణమునకు మున్నే
యన్ని మరణశాసనముల కయ్యది మిన్నగుశాసనమా,
మరణశాసనం బేమనివ్రాసెనో మనవిఁ జేతు వినుఁడీ!
“ప్రస్తుతాంగ్రసామ్రాజ్యరమాధీశ్వరవరుండ నగుశ్రీ
సాశ్వవృసింహస్వపాలమాళినాఁ జను నే గుడ్డుండనై
యస్మజ్జీవితపరమాశయమై, యాంగ్రస్వప్నంబై
ప్రజ్వరిల్లు తద్రాయమారు దుర్గావాప్తికి మున్నే
మిత్తివాతఁ బడనుంట నేనెఱిగె మేను విడకమున్నే
స్వస్థచిత్తమున, స్వాంతస్ఫూర్తిగ వ్రాయనదేమనఁగా—
“శ్రీయుతులారా! యాంగ్రవిజయలక్ష్మీకుమారులారా!
విజయనగరసింహాసనాసీనవీరవర్ధులారా!
రాయమారుదుర్గం బిల మనసామ్రాజ్యంతర్గతమై
మనకు వశంబై మలయావరకు మీరనుపమబలధైర్య

స్థైర్యాభినివేశప్రతాపసాహసశౌర్యంబులతోఁ
బోరుసల్పుఁడీ! యాంగ్రమాతృ సేనారతి మీ కగుచో
విజయనగరసామ్రాజ్యక్షేమాభిష్టాన్వితు లగుచో
గతసోదరశీవితసంస్మృత్యం దితమకు లీ రగుచో
నాంగ్రరక్తమే మీ నాశులతో సంతటఁ బర్వితుచో
నాయాత్మ శాంత నాకావాసానందముఁ గొనఁ గనుచో”
నని యాజనపతి మరణశాసనంబును వ్రాసె నాహా! జయ.

* * *

నాటఁగోలె నాకోటకొలనుఁ బోరాటం బగుచుండెన్
రాయలు సింహాసన మెక్కుననుక మాయురె! పదేపదే!
వాసుచున్న వరిచేనిపైని బతు వానసోనవలెనే
కడలిఁ బడిన జనకాంఠము గను రక్షకపోతమువలెనే
శేవనారలకు లభించు జాభ్యాపెన్నిధిగముననే
తిమిరములోఁ దిరుగామవారు గను దీపముతీరుననే
రాయలు రాజ్యము నేయవచ్చెఁ దత్ప్రబలు పొంగిపోవన్.

విజయనగరసామ్రాజ్యము నవనవిఖ్యాతిని గొనఁగాఁ
గృప్తంజేయన నేలుచుండె శ్రీకృష్ణదేవుఁ డొర! జయ.

* * *

ఆంగ్రరాజ్యరమ నాగతి శ్రీరాయలు పాలింపంగాఁ
దురకలక్షింపగు నడితఁషాహ యాదుర్గ మేలుచుండెన్.
తెనుఁగు తీని కాతురకనవాబున కొనర మైత్రి యెట్లో
యాకతమున రాయలు సవాబుతో ననిఁ దలఁపఁడోహా!
సందిగావస్థను బడె శ్రీకృష్ణదేవరాయలహా!
జెనుకగోయి ముందుననూయి మహీకున కపుడయ్యె సయో!
సాశ్వవృసింహస్వపాలుమరణశాసనమును గావెనునా?
తనమిత్రుండన నవాబుతోడుత నని సల్పంజనునా?
పితరులయాజ్ఞకు వ్యతిరేకముగా హితునిఁగూర్చుకొనునా?
హితు ననిలో నోడించి పితరులకు హితవుగూర్చు గనునా?
యేమిచేయుటకుఁ దోచెకఁయుండె మహీకున కెట్లులైనన్
గారణంబులే కడితఁషాహతోఁ బోరొసరించుటకై
మనకులేక రాయలు సమయంబును గనిపెట్టుచు నుండెన్. జయ.

* * *

అట్లుండఁగ సయ్యదుమర్కా రనునాట్లేద్భుతమై చెతుగై
గుఱ్ఱంబులు గొనుమిషచే ధనమును గొంతఁ దీసికొని శ్రీ
కృష్ణరాయలను మోసించి తా నేఁగ సరభసముగా
నడితఁషాహరాజ్యంబున కతిభితాం దితమిత్తుండై
రాయలకోపమునుండి తన్నెటులొ రక్షింపవేడఁగా
“అల్లా” సాక్షిగ నడితఁషాహ సయ్యదు గాజెద ననియెన్.
సయ్యదుమర్కా రడితఁషాహరాజ్యమున నుంట వినఁగాఁ

గోరె రాయ లా గుడిలో మహా నపు ధారాబుము మీఱన్
మర్కాయను దిన కప్పుచునుని మాసముదినములలో
నడితో మహా యట్లానర్పకుండె మతాభిమానయుతుండె.

కాగలకార్యము నాగంధర్వులు గానించినయట్లే
యుద్ధకారణము గల్గెగదా యని యుద్ధై రాయ లాపై
శత్రుతని నిశ్చేషంబుగఁ దా జయించునూహను శ్రీ
రాయ లనంతప్రయత్నంబు లీరణమునకై చేసెన్. జయ.

* * *

మించియుండఁ బదిలకుల కల సూమీకునిపై న్యమహా!
వయసుకొన్న ప్రతిపాదుఁడు పదియవాహినీలో జేరెన్.

రక్తగజతురగపఠాతిపై న్యములు రాయలు విశివిశిగా
విభాగించి పై న్యాధిపులుగ రణనిశారదుల మంచెన్.
నడచుచుండెను కొంఠపిండులునా నాగము లుండె నహా!
సాంద్రారణ్యసమానముగా రథసమాహ మొప్పెనహా!
కంధితుంగభంగంబులవలె దురగంబు లెసంగ బరే!
నేల యీనిన ట్లుండెను వీరభిబాళి చాలభిరరా!
హరులకుఁ గరులకు నరపై న్యంబున కాహారార్థంబై
మార్గమగ్యమున సౌకర్యము లమ్మహీనుఁ డొనరించెన్.
చలువపందిరులు, సత్రంబులు, శస్త్రాగారాదు లహా!
తినుబండారము లుడుపులతో నింకినబహు లెన్నో
నింకి మార్గమగ్యంబునఁ గన్నులపండువోమఁ జనఁగాఁ
పిదవాహిని విశిషిత ప్రతిసీమయు ద్వారావతి యయ్యెన్. జయ.

* * *

అతిసంరంభముతో వచ్చెను రాయలనుచుఁ దా నెంతో
జాగరూకుండె యడితో మహా తనపై న్యము బలపఱచెన్
రాయచూరుదుర్గమునకుఁ దగినమరామత్తులుచేసెన్
రణబోదికులను పై నికులను దుర్గంబున విడియించెన్
బో రొకసంవత్సరమైనను సరిపోవుమాహా నన్నో
యాహారపదార్థంబులు దుర్గమునందుఁ గూర్చి యాపై
పిదగిద్దోపరిశతఃస్మృతి నిడి తద్వారము మాసెన్.

తనదుర్గంబును రాయలపై న్యము పరియరకమునుచే
త్రోవ నెదుర్కొన నడితో మహా యుద్ధుక్తుండె వడిగాఁ
దా నొకపై న్యంబును దీసుక కృష్ణానదిదరి దరియన్
రాయలపై న్యం బంతట నటకు బిరాన వచ్చి చేరెన్.

ఒకవాహిని నింకొకవాహిని చలమాని యెదుర్కొనఁగా
సాగరసంగమసీమ నెసంగెడు సంరంభంబారా!
ప్రళయకాలభీషణనిర్హోమలు ప్రబలఁజొచ్చె వినుడి!
యాసంరంభము నభివర్ణింపఁగ నజాఁ డశక్తుఁ డనఁగా
భూలోకకవీశ్వరుల కద్దానిఁ బొగడ శీకృమనునా?

కరులను గరులును, హరులనుహరులును, నరులునరుల నాహా!
ధీశాని, చేశాని, మేశాని, పైశాని, వీకను బోరంగా
గడగడగడమని పుడమి వడఁకఁ బదికడలు వలిక నోహా!
ధైర్యసాహసాభినివేతబల సైర్యశార్యములతో
నిరువాసులవా రహీనవిధమున దురము సల్పి రంతన్. జయ.

* * *

అటులు కొంతవఱ కౌహవాగ్ని కీలాతపతీప్రులుగాఁ
దురకలధాటికి నిలువలేక యాంధ్రులపైనికు లరెరే!
వెన్నుఁజూపి పరువెత్తుట కారంభించిరి సనసనగాఁ
బిల్లిహానలే తెబ్బులులై తగువేళనుదనవారా
వీరసింహు లాపిల్లిహానలలు తెదరిచనుఁగ గని శ్రీ
కృష్ణదేవరాయలు సమయస్ఫూర్తిజ్ఞత మెరయంగా
నానాఁ డాహవరంగమువిడువా రాంధ్రులు గారనుచున్
సమరతలము విడిచను ప్రతిపైనికుఁ జంపవలయు నని స్వీ
యాజ్ఞను జాటించెను పైనికు లాహాకారము లూనన్.
భరిభరి! రాయలసమయస్ఫూర్తినిఁ బ్రస్తుతింపఁ దరమే!
ప్రళసము నేసినఁ బారిపోయిననుఁ బ్రాణము లేగుఁగదా!
పిరికిపంది లనిపించుకొన్నపయ మరణించుటకన్నన్
దురమునఁ బోరుచు నరిఖడ్గంబుల కెరయగుటే మేల
జయమొందుట యో, సంగ్రామంబునఁ జచ్చుటయో కాదే
యాంధ్రక్షత్రియధర్మాశయ మీయభిలాంధ్రావనిలోఁ
బ్రాణంబులపైఁ దీపిచేత నిజరాజద్రోహముపై
చేతద్రోహముఁ దామెనరించుట నాశోహేతు వనుచున్
ఘనగర్జారావము లొనరుచు మేఘవ్రాతంబట్లే
విహగ్నితీవ్రార్పులు గ్రక్కెడు నహివితాన మనునట్లే
యాదరిచే గుహ లెవరి వీకఁ జను నలసింగములట్లే
యొఁ దీసినపెనుతరవారులవలె నొరపుమోపులట్లే
ద్విగుణీకృతపౌరుషసాహసబల తేజంబులు మెఱయక
బుగిడుపై న్యంబంతయుఁ గ్రమ్మరే భండన మొనరింపన్. జయ.

* * *

బ్రహ్మాండంబులు పలక జండితరభండన మంతట నా
తురకతోదులకు నాంధ్రయోధులకు జరిగఁ దిరుగ భరిరా!
వారిని వీరును వీరిని వారును మారిమనఁగనట్లే
చేరిపోరి వరవీరులఁ జెండుట కారంభింపంగా
క్షుణకాలములో రక్తాంధోధిగ సమరతలము మాతెన్.

హరులహేమలును, గరులఘంకృతులు, వరవీరస్వరముతో
ఖణ్ణేల కేల్కము ఖడ్గరివహాసంఘర్షణశబ్దంబుతో
పతితయోధజనవర్గ వినిర్గత ప్రబలారాతవముతో
ప్రళయకాలభీషణనిర్హోమప్రకార మెసగంగా
మృత్యుదేవి యారణరంగంబున నృత్యమాడె నోహా!

బుసకొ టైడుపాములవలె జోడులయసులు కసిమసంగంగా
లెక్కకుమిక్కిలి యక్కడనంబునఁ బెక్కురు సుక్కిరహా !
జయ.

* * *

ఆంధ్రులబల మది యప్రతిహతిమై యభివృద్ధినిఁ గొనఁగాఁ
దురకసిపాయిలదోర్బల మంతటఁ దరుగఁజొచ్చె వినుఁడీ !
తమపై న్యం బంతకునంతకు నొగిదిగ్గుటఁ గనఁగానే
వ్యాఘ్రరాజములముండుట భయఁపడి పాటులేళ్ళవలెనే
చంఢభాను తీజంబున కొడుదుఁ జనుచీకటులట్లే
జంఝూమారుతజవమును పై పక జనునుబ్బులవలెనే
యాంధ్రుల యప్రతిహతశౌర్యమున కాఁగలేక భళిరా !
శురువక్త్రపై న్యము పటాపంచలయి దురము మాని పాటెన్
దశదిశలం దాంధ్రుల జయవిజయధ్వానంబులు నిండెన్, జయ.

* * *

సంప్రార్థ జయోత్సాహంబునుగొని చనియె రాయ లాపై
రాయచూరుదుర్గంబును బృథగ్ రొద్రమా ర్తియగుచున్.

“కృష్ణానదిపరి మనసవాబు తా నెప్పు డోటువడెనో
యపుడే యీదుర్గంబును రాయల దయ్యె ననంజనదే ?
యంతటిపై న్యము నతఁ డవలీలగ నంతంబొనర్చుగా
మనమునఁగా నేపాటివార మమ్మునజేతున కారా !
రాయలతోఁ బోరాటము నేయుట మాయురె మనవశమా !
సాగువంబుతోఁ గోడిపిల్లలకు నాలము మేలగునా ?
యందని ప్రాకులపండ్లకు నట్టుల నాశఁ జూచనేలా ?
యేటికి ఖూటిగ నెదురై యెవరే నీఁదుటసాగ్యంబా ?
యంబుధి పొంగిపొరలివచ్చెనుతటి నగకట్టంపరహా ?”
యని యాదుర్గమదుర్గత్తుకులు ననినేయక లేరీ !
గుర్గద్వారములు దెట్టి చని చేతులు మోడిచిగొని శ్రీ
కృష్ణ రాయలకు వశులై పోయిరి కృష్ణాజినములు నాన్.

కృష్ణానదిపరి నోడినందులక కింకిరి దాఁబడఁగా
రాయచూరు దుర్గపై నికులు రాయవశంవదులై
పోవుట వినఁగా వివర్ణ ముఖుండై పోయె సర్వ ముఁ తా
చినప్రాణంబుల నడితోపాహ రక్షణము నేసికొనఁగా
బ్రహ్మసేను విడి పిటికపండుయై పాటిపోయె నెటకో. జయ.

* * *

కాంక్షికుఁ డాయడితోపాహ యను కబురును వినఁగానే
చియామయుండగు కృష్ణ రాయభూధాపుఁడు కాంతియుతుండై
శస్త్రవిసర్జన మొనరిచి హతశేషపై న్యతలి కాహా !
యభయదాన విడి శత్రుపై న్యమున కాత్తుఁడు తానయ్యెన్.

పారులయిండ్లను దోచుకొన్నతనపాహు దండించి తా
నెవరిసాత్తు వారల కిప్పించిన యవనిపుఁ డితఁడొకఁడే !
యిట్టిసర్వంగరిష్ఠుం డిల జనహితుఁ డొటబ్రంచే ?
కృష్ణ దేవరాయల యాదార్యముఁ గీర్తి జెప్పఁ దరమే ?
యతఁడు ధర్మరాజావతారమే యను టాశ్చర్యంచే ?
యాంధ్రులయదృష్ట మతనిరూపమున నవతరించె గాడే ?
శత్రుశిబిరమున లభించె శ్రీకృష్ణ రాయలకు వహ్య !
యనంతగనధాన్యరాసులును గజహయశస్త్రము లెన్నో
హతశేషపై న్యచితియుఁ బ్రజలును నతనివశులు కాఁగా
సార్వభౌముఁ డవ్వారలఁ గన విస్తారగౌరవముతో. జయ.

* * *

సౌమ్యుండగు నాగార్వభౌముఘనచర్యలు వినఁగానే
రాయల నభినందించుచు నవాబు రాశీకబు రంపెన్
రాశీపరతు లవేవో వినుఁడీ ! రాజితమతులారా !
తనకు రాయచూరు నొసంగెడుచో ననయం బడతువనో
కృష్ణ రాయలకు సామంతుఁడుగా నెనఁగుదు ననఁగానే
యడితోపాహ తన పాదాక్రాంతుం డైన నల్లకానీ
యనుచు రాయ లాయడితోపాహకడ కాచారుని బంచెన్.

రాయలపాదాక్రాంతుం డొటకుఁ బ్రయత్నించె గానీ
యడితోపాహ శ్రీకృష్ణుని దిరియం జడిసిపోయె నారా !
యెంతిచ్చెప్పిననుఁ బులిచెంతకు నొకయిట్టిపిల్ల చనునే ?
యల్పుఁ డథికునెడ స్వాభావికభయ మందగుంట్ల కలదే ?
తానుగోరినటు లానవాబు పరితప్తమానసుండై
బతిమాలినచో రాయ లతనియొడఁ బ్రసన్నుఁ డగునేమా ?
కాని నవాబున కతనిదిరియ ధృతి కలుగకుండె నాహా !
ఆకారణమును బురస్కరించుక గంగాధ్రవిజయలక్ష్మీ
నాధుండే శ్రీకృష్ణ రాయభూనాధుఁడు కుపితుండై
నవాబురొబ్బింపంబును దా నెవారిగాఁ జేసెన్
రాయచూరుదుర్గోపరివిజయాంధ్రధ్వజంబు నాటెన్
సాశ్వతసంహుని యాత్మశాంతికి జలాంజలుల నిడియెన్
తల్లీ ! రాజ్యరమా ! నీయుఁమిడ చెల్లించితి ననియెన్.

ఆనాటిజయధ్వానంబును విని యంతకుఁబూర్వముహా !
రాయచూరుదుర్గావా ప్రికి దమప్రాణంబుల నేయే
వీరు లొసంగిరొ వారల సూక్ష్మకారంబులు గోదోం
తరమున నశాంతితోఁ దిరుగాడుట విరమించుచు నపుడే
యాంధ్రరాయలను దీవించి ప్రసన్నాంతరంగులై తా
మూర్ధ్వలోకమున శేగిరి బిరబిర నొడవ కామ్యమనుచున్. జయ.

* * *

అంగ్రరాజ్యలక్ష్మినేవను చా నటులొనర్చి భరిరా!
తినవారును శాత్రువు లొక్కపగిదిఁ దిన్న నుతింపంగా
జయవిజయధ్వని పై న్యము సేయఁగ జయదుందుభు లులియన్
మంగళగానము చెంగలింపఁ గవిమంజరి భరింపఁగా
నడుగ నునన కాయతో నితంబిని హారను లొసఁగంగా
విజయలక్ష్మి నుద్వాహమాడి తా జేవెలుండువలెనే
శ్రీవీరవగప్రతాపబిరుదుఁడు కృష్ణరాయ లోహా!
విజయముచే సార్థకనామకమున విజయనగరి జేరెన్. జయ.

* * *

శ్రీమతులకు సింహస్వప్నంబై, సచ్చరితాన్వితమై
సకలతురుష్కుల హృదయశల్యమై, క్లామాపాత్రంబై
పేదలపాలింఁ బెన్నిధానమై, వీర్యాపాఠికమై
యాంధ్రకృత్జ్ఞత కాలవాలమై, యగుల కంటినలుపై
యాంధ్రదరిత్రాలంకారంబై, యమలయతోన్వితమై
రాయలనామము వెలయుఁ గాక శ్రీరామరక్షితంబై
జయ, జయ, జయ, గిర్విజయభవ! కృష్ణరాయభూపాలా!
జయజయజయజయ, జయవిజయభవ! జయాంధ్రజనపాలా!

జయ, జయాంధ్రజనజనీ! దేవీ! సకలరాష్ట్రరాజ్ఞీ!
జయ, జయ, భారతమాతృకుమారీ! సద్యశోవిహారీ!



బేరా! శ్రీహరి! బాపురే! కటకటా! యాహోహా! యిస్సీ! బలే!
నేరే! యం చొగి రేవగల్ పగిది నార్తన్ రక్షిఁ దా మొందుచు,
బోరన్ నిల్చుచుఁ జప్పటుల్ జటచుచున్ భూమించుచున్ దూరుచున్
బారావారము లట్ల పొంగి విని రాపాటన్ దగన్ దంపతుల్.

పాట ముగించునంతనె సెబాసని దాసరులన్ నుతించి, యీ
పాటను విన్న యాంధ్రజనవర్గము శౌర్యము నొందకుండ దే
నాటికి నంచుఁ గానికలు నచ్చఁగ నిచ్చి సగౌరవంబుగాఁ
బాటకులన్ దగం బనిచి ప్రస్తుతి కెక్కిరి నూత్నదంపతుల్.

ఆసదనంబులో నపుడు హాటకసంజరమందు నిల్చి యో
హో సఖ! యోసఖా! యనుచు నొంజొరుఁ బిల్చుక కీరదంపతుల్!
భాసిలుచుండ వాని దయవారఁగఁ జేరి వధూవరుల్ సుధా
హాసమెలర్చ నున్నలుకు లాడి యొసంగిరి తేనెతేటలన్.

తిక్కనద్రాపదీసాందర్యవర్ణనము

నండూరి బంగారయ్య

ద్రాపదీసాందర్యమును కవిబ్రహ్మ విరాటశర్వములో పోతపోసియున్నాడు. ఇట్టిచిత్రచనము మన వాఙ్మయమునకేకాదు, ప్రపంచవాఙ్మయమునకెల్ల నపు యాపమీ. వ్యక్తివర్ణనమందు కవులుచూపు శిల్పనైపుణి ద్వివిధము. రవివర్మచిత్రపటములవలె ఆపాదమస్తకస్థూల రూపవర్ణన మొకవిధము. దీని కీక్రిందిపద్యము మనోహరమగు నుదాహరణము :

కర్ణావళగిసిత కర్ణికారప్రభ
గండభాగద్యుతి గడలుకొలుప
భువనమోహనమైన భూవిలాసంబుతో
వామభాగానతవదన మొప్ప
సవ్యకరమృదులాంగుళీనాతుర
వడ్డధ్వనికి ముర్రునరణి జూప
నాకాలిమి నైవడ్డముసాచున పసవ్య
పదనఖిద్యుతి భూమి బ్రబ్బికొనగ
హాళిగించము గంఠదామమును మెలయ
విలసితగ్రావముగ నొక్క వేణువండు
బ్రహ్మగాంధర్వగీతంబు బరగజేసె
చతురనటమూర్తి గోపాలచక్రవర్తి.

ఇది వేణుగాన మొనర్చునప్పటి కృష్ణనిభోతో ! కృష్ణనిముఖము కుడివైపున కెన్నిడ్డిగ్రీలు వంగినదో కూడ చూసినాడా యనునంత 'తుచ'లు తప్పకుండ నాతనిస్థూలవిగ్రహము చిత్రింపబడినది. కాని కొందరు కవు లీపద్ధతి నవలంబింపరు. వారికి ఆత్మతేజమే ప్రధానము. అందుచే నాత్మతేజమును, వ్యక్తిత్వమును పోషింప జాలిన లక్షణములనుమాత్రము వారు చిత్రించి స్థూల

విగ్రహవర్ణనమును వెనుకకు ద్రోసివేయుదురు. మహాకవి యగు రవీంద్రనాథ ఠాగూరు గ్రంథములనుండి భావప్రధాన మగు నిట్టి చిత్రముల కుదాహరణములు పెక్కులు లభించును.

"In the hushed shade of mango grove beyond the city-walls Sudas stood before Lord Budha on whose lips sat the silence of love and whose eyes beamed peace like the morning star of the dew washed autumn."

(Fruit Gathering, XIX.)

ఇందు కవి రెండు మూడు శంక్తులలో బుద్ధుని విగ్రహమును చిత్రించినాడు. బుద్ధునివిగ్రహము నాపాద మస్తకము నీతడు వర్ణించలేదు. కాని బుద్ధుని తేజోమూర్తి యిందు బ్రత్యక్ష మగుచున్నది. బుద్ధభగవానుడగుట నిలునబడినపుడు మన కాతనియెడల నెట్టి గౌరవ ముదయించునో అట్టిగౌరవము నీవర్ణనమూలమున నుదయించుచున్నది. చిత్రించిన back ground ను బట్టికూడ బుద్ధునిప్రభావము వెల్లడియగుచున్నది. hushed mango grove అనుటవలన బుద్ధునితేజమునకు మామిడితోపుకూడ వెఱగంది నిశ్శబ్దత వహించిన దని ధ్వనించుచున్నది. ఆపెదవులు హాసముద్రను ధరించినవట. కాని యీ హాసముద్ర హాధ్యమువలన జనించినదా? కాదు. అంతరంగము ప్రేమపూర్ణమగుటచే నిండుకుండవలె బుద్ధుడు తొణకకుండ నున్నాడు. ఆకన్నులు శుక్రజ్యోతివలె శాంతతేజమును గుఱియుచున్నవట! మహాకవి ఈతీరున బుద్ధుని ప్రత్యక్షపఱచుచున్నాడు. భాగవతమునందలి కృష్ణవిగ్రహము గ్రాహ్యమయినంత సులభముగ నిది

కీ॥ శే॥ చల్లా శేషగిరిరావుగారు



(ఆంధ్రపత్రికా సంపాదకులు)

కీ॥ శే॥ ఎ. రంగస్వామయ్యంగారు



(హిందూపత్రికా సంపాదకులు)

స్వరాజ్యము

అనుభవమైన రాజనీతిశాస్త్రముయొక్క యద్వైతము స్వదేశీరిశ్రమలను నిర్మించి వృద్ధిపరచుటచే. అట్టిరిశ్రమలే యున్నప్పుడు, “స్వదేశీయత్వత్వం”ను మాత్రమే కొనుట ప్రతియొకదేశీయుని విధిమైయున్నది. మన విద్యావంతులయందు అట్టిసంకల్పము లోపము కాలేదు. “దేశభక్తి” యనుపదము ప్రతిభారతీయుని పెద పుల చివరను గలదు. కాని అన్ని విషయములందువలెనే, యిందును కూడ నోటి పొడిమాటలవలని ప్రయోజనము లేదు. ఆచరణలో పెట్టవలెను. ఇంత యెందులకు? ఒక్క యుదాహరణమును చూడుడు. సబ్బుల టగుమతులమీద భారతదేశమునుండి విదేశములకు ప్రతిసంవత్సరము రూ. 166,68,406 లు పోవుచున్నవి. భారతదేశముననే యీరిశ్రమనభివృద్ధిపరచినయెడల, మనసామృతయుమన దేశముననే యుండునుగదా.

బెంగళూరులో యుండు గవర్న మెంటు సోప్ ఫ్యాక్టరీ ప్రపంచమునకెల్ల గొప్పవగుసబ్బుల కొన్నింటిని తయారుచేయుచున్నది. ఒక బిల్ల మైసూరుచందనసబ్బును వాడి పరీక్షింపుడు. మైసూరు శ్రేష్ఠమైన చందనపుమానులకు సుప్రసిద్ధమైనది. మైసూరు చందనసబ్బునందు బ్రిటిష్ ఫార్మకోపియా రకపు చందననూనె గ్యారంటీగా కలిసియున్నది. ఇట్టి గ్యారంటీ ప్రపంచములో నెవ్వరును యివ్వరు. మైసూరుచందనసబ్బుయొక్క పరిమళము యింతై, అసమానమై, అద్భుతమై యుండును.

మైసూరు చందనసబ్బు నుపయోగింపుడు.

ప్రతిచోటను దొరికును.

మై సూ రు గ వ ర్న మెం టు
సోప్ ఫ్యాక్టరీ,

బెంగళూరు.



మీ మనస్సునకు ఒకవిధమైన

ఆనందమేగాక

మిగులంతలములకు చక్కనికాంతి, నిగనిగ

కేశరంజను

తలనూనె వాడినదో గలుగును



మనోహర పరిమళసమేతమైన

చక్కని తలనూనె

అమృతవల్లి కషాయ

శ్రేష్ఠమైన హైందవనదనపరిల్లా. రక్తశుద్ధిని
గావించి, ఆరోగ్యమునుతిరిగి మకూర్చును.

సీసా 1-కి రు. 1-8-0 పోస్టేజి వద్దెరా 0-12-0

KAVIRAJ

N. N. SEN & CO. Ltd.,

18-1 & 19, Lower Chitpore Road,
CALCUTTA.

మంచిఅచ్చు!

చక్కనిబైందు!!

సద్గ్రంథరత్నములు

ఆంధ్ర శ్రీమద్రామాయణము, సకల

వ్యాఖ్యానసారము, నిర్వచనము,

ఏడు కాండములు, 3 సంపుటములు

12-0-0

7

,

14-0-0

ఆంధ్ర బ్రహ్మాండపురాణము

5-0-0

తెలుగు బ్రహ్మపురాణము

4-0-0

ఆంధ్ర లలితోపాఖ్యానము

1 8-0

శ్రీ కృష్ణావతారతత్త్వము, 12 సంపుట

ములు, ఒక్కొక్కటి (నవచనము)

1-8-0

అన్నియు నొకసారి కొనువారికి

15-0-0

శ్రీ రామావతారతత్త్వము-6 సంపుట

ములు సిద్ధములు. ఒక్కొక్కటి

1-4-0

ఉత్తమమార్గము, భక్తిస్వరూపము

0-10-0

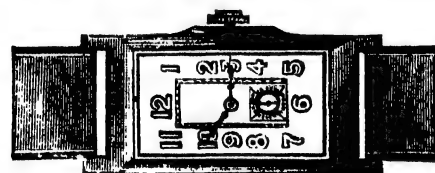
భగవద్గీత, విస్తృతాంధ్రటీక

1 0-0

జరమంచి కేషాద్రిశర్మ,

లలితావిలాసము, కడప.

In honour of the NEW YEAR
Accurate Wrist Watch Rs. 2/10/0



Each approved by big Govt. Officers & Zamindars. Strong Roscope Lever Machinery Bright Nickel Case, round Military size Rs. 2/10/- Superior small size Rs. 3/6/- Golden Case Rs. 3/15/-. Attractive Rectangular shape as illustration with silver nickel case Rs. 6/12/- Gold plated case Rs. 7/8/- and 10 years guaranteed Rolled Gold Rs. 11/8/- only. If purchased any three watches postage free. Each guaranteed 4 years. New year Calendar and catalogue free with each order.

Apply to:-UNITED WATCH Co.,
161, Upper Chitpore Road, CALCUTTA.

గ్రాహ్యము కాదు. కాని ఈవర్ణనమువలన నెక్కుడు భావోన్నత్యప్రకటనము, రసప్రచారము సిద్ధించుచున్నది. ఇది నిశితరమును, ప్రాథతరమును, ధ్వనిప్రధానమును అగు శిల్పము. తిక్కన ద్రాపదీవర్ణనమున నీ రెండు శిల్పములును సమన్వయమొందినవి. మొదటివర్ణనము లోని విస్తృతతయు, రెండవ వర్ణనములోని గాంభీర్యమును గూడ నాతడు తన చేతలో నేకీభవింపజేసినాడు. ద్రాపదిని ఘోటోతీసినట్లుగ ఆమెస్థూలవిగ్రహమును మనయెదుట బెట్టినాడు. కాని అంతటితో నాగక జగన్మోహనమూర్తి యగు నామెయూత్మతేజమునుకూడ మనము కనులార నందర్శించి “ధన్యోస్మి” యను కొనగలుగునట్లు ప్రత్యక్షపఱచియున్నాడు. ఈ సందర్భమున ననుకూలమగు నవకాశమునుసహితము కవి యెట్లు తన కనుకూలముగ మార్చుకొనియున్నాడో గమనింపవలసియున్నది. ద్రాపదీవివాహమును తిక్కన వ్రాసియుండినయెడల అచ్చట ద్రాపదీసాందర్యవర్ణనమును తనయిష్టమువచ్చినంత ప్రాథమముతో కొనసాగించుట కవకాశ మేర్పడియుండును. కాని ప్రచ్ఛన్నవేషమును ధరించి తన “మూర్తియుజ్జ్వలత్యము” ను బ్రకాశింపకుండ జేయవలెనని యామె ప్రయత్నపడునన్నివేళములో నామెను వర్ణింప సంకల్పించినాడు. కీచకు డామెను జూచి మోహవివశుడగుట కొంత కవికి తోడ్పడినది. కాని కీచకుడు కేవలము నీచుడే! అట్టికష్టాత్ముడు తలపెట్టినచరదారాహరణమునందు ద్రాపదీసాందర్యవర్ణనము నుదాత్తరసోదంచితము గావించుట యెట్లు? ఈ క్లిష్టసమస్యను బూరించుటలో కవిబ్రహ్మ చూపిన నేర్పు కొనియాడదగినది. ఆతడు కీచకునకు వైదగ్యమును బ్రసాదించినాడు. సామాన్యసాందర్యవతు లాతని కొకపట్టున నచ్చరు. ఆతడుచూచిన చేతులు వందలకు మిగిలియున్నవి. స్త్రీసంభోగ మొకలలితకళగ నభ్యసించిన మహాపురుషు డాతడు. అందుచే వివిధస్త్రీలసాందర్యము నందలి తారతమ్యమును, విశేషములను గ్రహింపగల నిపుణుడు. ఇంతయేల? కీచకుడు కవివలె సాందర్య

పాసకుడు. ఈతరుగ కీచకునిపాత్రమునకు వ్యక్తిత్వమును గల్పించి విరాటపర్వమున రత్నము లనదగిన పద్యరాజములను కవి కీచకునినోట నుంచినాడు. ద్రాపదీసాందర్యవర్ణనమునందు ప్రాథమము నెలకొల్పుట కును, కీచకునకు వ్యక్తిత్వమును స్థాపించుటకును “ఏకక్రియా ద్వ్యర్థకరీ” అనునట్లుగ కవి యొక్కటే సూత్రము నవలంబించినాడు. సృష్టిరహస్యములవలె మహాకవుల కళారహస్యములుగూడ అద్భుతములు! మొత్తముమీద పరికించినచో కవి ద్రాపదిని బ్రత్యక్షపఱచుటకై ఆయాసందర్భముల ననుసరించి మూడు సూత్రముల నవలంబించినట్లు కానవచ్చుచున్నది. అందు మొదటిది పూర్ణవిగ్రహవర్ణనము;

ఎలదీగ గప్పిన లలితపరాగంబు
క్రియ మేన మేదినీరేణు వొప్పు
జంకంబున నవసారభం బెనగెడి
కరణి నాసిక వేడిగాడ్చు నిగుడ
దోయజదళముల తుది మంచుదొరగెడు
గతి కిన్నుగవ నశ్రుకణము లుడల
నిందుబింబముమీది కందుచందంబున
గురులు నెమ్మొమున నెరసియుండ
సర్వజనపద్యయైన పాంచాలి సింహ
బలునిచే నివ్వెధంబున భంగపాలు
దనకు వచ్చిన నెంతయు నైన్యమొంది

* * * *

సాధారణముగా తెనుగుకవులందరు నీపద్ధతినే యవలంబించిరి కాని తిక్కన పనివానితనములోనున్న సన్నదనము, నాజూకుదనము వారిలో గానరావు. ఇదిగాక, ఒక్కొక్కరేఖచేతనే విగ్రహమునంతను స్ఫురింపజేయు చిత్రకారునివలె పూర్ణవిగ్రహవర్ణనమునకు గడంగక తిక్కన ఒక్కొక్కలక్షణముచేతనే విగ్రహమునంతను ధ్వనింపజేయుచు వచ్చినాడు. ఈ యంశము నొకటిరెండుదాహరణములు విస్తృతపఱచుచు, వేషయోజన సందర్భమున ధర్మరాజు,

మనవంశంబున వృత్తం
బును బెంపును గావజాలు పుణ్యసతివి దు
ర్జనులగు తులువల తలపులు
గనుగొని యేమరక మెలగగావలయుజమి.

అని ద్రాఢదిని హెచ్చరించినపు డామె “అనాదరమండ
స్మితసుందరవదనారవింద యయి” న దట. ఇక్కడ
‘ననాదర’ యను నొక్కపదముచేతనే యాత్మవిశ్వాస
మాకారము వైకొనినట్లున్న ద్రాఢది మూర్ఛియంతయు
మనకు బ్రత్యక్షమగుచున్నది. ఇట్లే,
తనతలచీర యరసికొని య
వ్వనితారత్నంబు వినయ వైభవము సతీ
తనువొందిన చందంబున
జనియెం గేకయసుతానుచారికలబడిన్.

అనుపద్యములో “తలచీరయరసికొని” యనుటవలననే
యామెవినయవైభవమెల్ల మనకు గరతలామలక మగు
చున్నది. ఇదిగాక ఆమెను బ్రత్యేకముగ వర్ణింపకుండ
ఆమె చొచ్చినప్రదేశములందును, ఆమెను సందర్శించిన
జనులయందును ఎట్టిసంచలనము కలిగినదో దానినిబట్టి
యామెను, స్వరూపమును బ్రత్యక్షపఱచుట మూడవ
పద్ధతి.

పదతలంబునకెంపు పరగినతలము కుం
కుమలిప్తమైనచందము వహించ
నంగంబు నునుగాంతి యడరినగోడలు
వేదులు మణిమయవిధము నొంద
గనుగవమెఱుగులు గదిరినముందర
బుజ్జీపహారంబు పొలుపుదాల్చు
వేనలికప్పఁర్చిన మీదు సలదు
కూలంబు మేల్కట్టు కొమరునడయ
తానుజొచ్చినకతన మత్స్యక్షీ తీశు
నింట నిమ్మొయి క్రొత్తయొప్పెనకమెనగ
* * * * *

ఆమెస్వరూపము సన్నిహితమగుటవలన నచేతన
పదార్థములం దిట్టిమార్పు కలిగినది. ఇక చేతనపదా

ర్థములందో? సుదేష్ట యామెను జూడగనే ఆమె
యెవ్వరో, ఏకులముత్రీయో తెలిసికొనకుండనే యవశ
ముగ నాననమునుండి లేచి చేతులు ముందుకు సాచి
యామెపట్ల నమ్రతను, గౌరవమును బ్రకటించుటను
కవి యీతీరున వర్ణించుచున్నాడు:

కనుగొని గౌరవంబును మొ
గంబున గేలు బుర్రఃప్రసాదముం
దనువున నమ్రభావమును
దంతమరీచులు సామినిర్గమం
బును దనలో గడల్కొనగ
భూరితరాదరరేఖ నిందుర
మృనవుడు నంతనంత ద్రుప
దాత్యజ చేరి వినీతి నిల్చినన్.

సుదేష్ట ద్రాఢదియెడల నిట్టి గౌరవము జూపిన దనుట
కంటె ద్రాఢీసౌందర్య మామెచే తనకు జోహారు
చేయించుకొన్న దనుటయే యుక్తముగా నుండునేమో.
ఇక పౌరజను లేమనుకొనుచున్నారా?

ఇయ్యంతిప్రాపున నయ్యనంగుడు పార్వ
తీశునైనను దక్క నేకున్నె
యిన్నాతిచెలువంబు గన్న శచీప్రియుం
డైనను గనుకలి నవయకున్నె
యిత్తన్నికెనలేమి కెదిరి పన్నిదము భా
షావిభతోనైన జఙవరాదె
యిత్తలోదరి జీవితేశున కిందిరా
పతి నైన మెచ్చక పలుకవలదె
కుసుమబాణుని బాణముల్ గూడ నైదు
గరగి నేరిమి వాటించి కరువుగట్టి
పోసి చేసి చైతన్యసంపుటము దగ ఘ
టించిరోకాక యిట్టి చేడియలు గలరె!

దీనిజన్మంబున తేజంబునందిన
యింతియు బతియును నెవ్వరొక్కా!
దీనినామాకృతిగా నోచి పడసిన
యింపగువర్ణంబు లెన్నియొక్కా!

(ఎదుటిప్పులులో ' ఇయ్యంతి ప్రాపున ' పద్యమునకు అర్థము ఈ కంఠపులును చనువుకొనవలసివడి.)

హోహిణియొండె నొండెను న
రుంధతి కాక మనుష్యజాతిగో
యిహరిణాశ్చ చెల్వమున
నేడ్డెఱచూడ్కుల నాచికోలగా
దాహితగౌరవం బగు శు
భాంగము దేజము చూడబుద్ధి స
దేహము బొందుచున్నది న
తీజన మిట్టిచె యెజ్జగబుల్.

స్త్రీవర్ణనములేని తెనుగుప్రబంధమే లేదు. అందు ప్రతివారికన్నులు కలువచేకుటే, ఊగువులు రంభాస్తంభములే, వేణి నల్లత్రాచే, శరీరము కుందనమే. ఇట్లు పుంఖానుపుంఖముగ గానవచ్చు ప్రబంధములయందలి స్త్రీవర్ణనకును, తిక్కనస్త్రీవర్ణనకును ఏమైన తారతమ్యమున్నదా? అనుప్రశ్న మునకు మనము సమాధానమియింపవలసియున్నది. ఆతనినివానితనములో నున్న వైశిష్ట్యమితరులకు లేదని యిదివరకే సూచించియున్నాము. ఇదిగాక ద్రౌపదిసౌందర్యమునం దాతడు మూడు ప్రత్యేకలక్షణముల బ్రతిష్ఠించియున్నాడు. ఇవి తెనుగువారు వర్ణించిన తిక్కనస్త్రీలయందు మృగ్యములు.

అందు మొదటిది కాంతిసమృద్ధి. ఇప్పటిచిత్రకారుల చిత్రములలోని పరివేషములు దేవకాంతలను మనుజకాంతలనుండి వేరుచేయుచున్నట్లే అతిలోకలావణ్యవతియగుద్రౌపది తేజస్సు ఆమెను తిక్కనతెనుగు ప్రబంధనాయకలనుండి వేరుపఱచుచున్నది. జనులకనులను మిఱుమిట్లుగొనజేయు సూర్యబింబమువలె వెలుగుచున్న యామెదేహకాంతిని “ చూడ్కులనాచికోల ” కాక పౌరులు ‘ వెక్కన ’ మంది చూచుచున్నారట! పరమనీచమగు శీచకలులాయమునహిత మీకాంతి ప్రవాహమున నెట్లు స్నానమాడినది, కవి యీతీరున వర్ణించుచున్నాడు:

పాలతుకకాంతి యింతపాలి
వోవగ నీ కెనలార తార ని

శృంగిత గడగి కోలికొన
జాలుట గీచకముఖ్యులోచనం
బులు ‘ నయనంప్రధాన ’ మను
పూర్వవచస్థితి దప్పకుండగా
నెఱిమి వహించె దక్కుగల
యింద్రియవర్గము ధిక్కరించుచున్.

తన్వంగి మన్వంపు తనులత నెనగెడు
నునుగాంతివెల్లున మునుగబొహ
గిసలయహస్త కెంగేల నేపాదు క్రొ
మ్మించను లేయెండ మిగులుబర్వ
గమలాస్య ముద్దుమొగంబు లేమలుగుల
మొత్తంబు పరిచుట్టు ముట్టుకొనగ
ధనభాతీతొంగలి తఱచు తొప్పుచెన్ను
కప్పును చీకటి గలియుడేర
బెగ్గలం బంతకంతకు నగ్గరిగ
నదవుచెమతతో జిత్తంబు సెదరి యెండు
మెలగ దలవేది యాసింహబలుడనంగ
పట్టియాడెడు జంత్రింబుపగిది నుండె.

ఈ సౌందర్యమునందలి రెండవలక్షణము పవిత్రత. ఇన్ని తెనుగు కావ్యములను జదువుచున్నాము కాని ఎంతటి పవిత్రతను వర్ణించినను సరే, సౌందర్యవర్ణనము వచ్చునరికి మొగముమొత్తునట్లు దేహసౌష్ఠ్యమును వర్ణించుటయే కాని, యాదేహకాంతియందు బ్రతిఫలించు నాత్మను ధ్వనిప్రధానముగ జిత్రించి మనస్సును పవిత్రభూముకు గొనిపోజాలినవా రెందరున్నారు? పరమసీచుడగు కీచకునినోట నుంచబడినను ద్రౌపదిసౌందర్యవర్ణనమును కవి యెంతయందముగ, నెంతపవిత్రభావోద్బీకముగ జిత్రించుకొనివచ్చినాడు! సాధ్వీమహుల భీలమునందేకాక వారి సౌందర్యమునందుగూడ నొకవిధమగు పవిత్రత వెలుగొందుచు. నపరిచితులకయిన వారియెడల గౌరవప్రకృతుల నుదయింపజేయును. విరాటపగరమున

నున్న ప్రజలు సైరంగధీవేషమున నున్న చౌఁదిని
జూడగనే

రోహిణియొండ నొండెను న

రుంధతిగాక మనుష్యజాతియే

ఈహరిణాక్షి చెల్వమున

నేడైరచూడ్కుల నాచికోలగా

దాహితగౌరవం బగు శు

భాంగము తేజముజూచి బుద్ధి సం

దేహము బొందుచున్నది స

తీజన మిట్టిదె యెజ్జగంబులన్.

అనుకొనిరట! ఈషద్యమునందలి మొదటిపాదమున నరుం
ధతీప్రసక్తినిబట్టియు, మూడవపాదమునుబట్టియు చౌఁది
ఁవిశ్రత లెస్సగ ద్యోతమాన మగుచున్నది. అత్యంత
కలుషాత్మయగు సుదేష్టుకునయిత మీమెయెడ నెట్టి
గౌరవప్రసక్తు లుండెనో వెనుక నుదాహృతమగు “కను
గొనిగౌరవంబును మొగంబును” అనుషద్యమువలన దెలి
యవచ్చుచున్నది. ఇంతయేల? షరమనీచుడగు కీచకుడు
కూడ ఆఁవిశ్రమూర్తినివర్ణించుట నల్లీలోక్తిగాని, య
సభ్యవర్ణనమునకుగాని గడంగక ఆసౌందర్యమును మైలఁ
డనీయకుండు నెంతో జాగరూకతతో గాపాడుచున్నాడు.



ప్రతిక్షణము

—యస్. వి. యస్. రామరావు.

దీనివల్ల భుడనగా నిల సాబగుసాం
పెనగ వర్తిల్లువా డెవ్వడొక్కో!
దీనివసించుట దా నోప్పి పెంపున
నేపారు మందిరం బెద్దియొక్కో!
* * * * *

ఇందు మొదటిపద్యములోని తేటగీతిలో నొకవిశేషము గానవచ్చుచున్నది. కుసుమబాణుని బాణములను గరగించిపోసి చేసిరేమో యనుటతో సామాన్యకవి యాగును. కాని యట్లాగినచో నా చిత్రరచనమున నాత్మతేజము లోపించును. అందుచే తిక్కన అంతటితో నాగక 'చైతన్యసంపుటము' దగ ఘటించిరోకాక యనికూడ పలుకుచున్నాడు.

ఇందు రెండవపద్యములో దీని నామమెద్ది, దీని మందిరమెద్ది అనుటకు మారుగా వక్రోక్తులకు గడం గుటవలన సమకూరిన కళానైపుణ్యమును గమనించు నది. మొదటిపద్యములో త్రిమూర్తులను, దేవేంద్రుని మాత్రమే తలపెట్టుచుండుటచే నామెదర్శనమువలన సంభోగవ్యసనపరాయణుడగు నాతని యాత్మయందు కూడ నెట్టి పవిత్రభావములు సంచరించినవో మనకు స్పష్టమగుచున్నది. రెండవపద్యమున ప్రభారాశి యగు నామెను జూచుటవలన నామెయం దుదయించిన గౌరవముచే 'నీకు నామ మెద్ది?' యని కుటచగ ప్రశ్నింపలేకుండ నున్నాడు.

అనేకవిశేషములం దీ సన్నివేశమునకు సరి పోల్చదగిన సీతారావణుల సంవాదమునుండి రావణుడు సీతాసాందర్యమును ఎర్పించినవిధమును బరికించితిమేని సీతయందుగూడ నీ కాంతినమృద్ధిని, పవిత్రతను వాల్మీకి చిత్రించినట్లు మనము జూడగల్గుదుము.

తా ముత్తమాం శ్రీయంలోకేపద్మహీనామివశ్రియమ్,
విభ్రాజమానాం వపుషా రావణః ప్రశశంసహ.

కా త్వం కాంచనవర్ణాభే, పీతకాశేయవాసిని,
కమలానాం శుభాం మాలాం పద్మినీవహి భిభ్రతి.

ప్రీః శ్రీః కీర్తిః శుభా లక్ష్మీ రప్పరా వా శుభాననే,
భూతి ర్వా త్వం వరాహోహే, రతిర్వా ప్వైరచారిణీ.

సమా శ్శిఖరిణః స్నిగ్ధాః పాణ్డురా దశనాస్తవ,
విశాలే విమలే నేత్రే రక్తాస్తే కృష్ణతారకే.

విశాలే జఘనం పీన మూరూ కరికరోషహ,
ఏతా పుషచితౌ వృత్తౌ సంహతౌ సంప్రవర్ణితౌ.

పీనోన్నతముఖౌ కాస్తౌ స్నిగ్ధౌ తాళఫలోషమా,
మంక్రివేకాభరణౌ రుచిరౌ తే పయోధరా.

చారుస్మితే, చారుదళి, చారునేత్రే, విలాసిని,
మనో హరసి మే కాస్తే, నదీ కూల మివామ్భసా.

(౧౪-౨౦ సర్గ. ౪౬. అరణ్యకాణ్డ)

ఇందు రావణుని రాక్షసస్వభావమునకు, కామాతురతకు అనుగుణముగ పయోధరవర్ణన మెక్కుడుగ జేయింప బడినను రావణుడుపైతము సీతను పవిత్రస్త్రీలతో బోల్చుటనుబట్టి యామెసాందర్యమున బవిత్రత వ్యక్తీ కరింపబడినది. "విభ్రాజమానాం వపుషా" అని యిందు సూచింపబడిన యామెశరీరకాంతిని కవి యిట్లు విశ దీకరించుచున్నాడు.

పూర్ణచంద్రాననాం సుభ్రూం చారువృత్తపయోధరామ్,
కుగ్ధంతీం ప్రభయా దేవీం సర్వా విలిమిరా దిశః.

(సుందరకాణ్డ, సర్గ ౧౫, శ్లో. ౨౮)

ఆమెశరీరప్రభదిక్కులనుండిచీకట్లను తరిమివేయు చున్నదట! సుందరకాండలో వర్ణింపబడిన సమావేశ మును బట్టికూడ పైరెండంశములే ప్రకటమగుచున్నవి.

ఏకవేణీధరా శయ్యా ధ్యానం మలిన మంబరమ్,
అస్థానే పుష్పవాసశ్చ నైతా న్యోషయికాని తే.

(సుం. కాం. సర్గ ౨౦, శ్లో. ౮.)

దీనినిబట్టి సీతాదేవిపవిత్రతయు,

త్వాం కృత్వోఽరతో మన్యే రూపకర్తా స విశ్వస్మత్,
నహి రూపోషమా త్వన్యా తవాస్తి శుభదర్శనే.

య ద్య త్వత్వామి తే గాత్రం శీతాంశు సదృశాననే,
తస్మిన్ స్తస్మిన్ పృథుశోణి చక్షు ర్మమ నిబధ్యతే.

(సుం. కాం. సర్గ. ౨౦. శ్లో. ౧౩, ౧౪.)

అనుశ్లోకములనుబట్టి యామెరూపాతిశయమును గోచరించుచున్నది.

కాని సీతాసౌందర్యమునకును ద్రౌపదీసౌందర్యమునకును ఒకగొప్పభేదము గానవచ్చుచున్నది. స్వభావమునందుగాని, సౌందర్యమునందుగాని సీత ద్రౌపది యంతటి గంభీరురాలు కాదు. ఆమెమనస్సులో నున్న భావ మేదోముఖమున గోచరింపవలసినదే. అట్లే ఆమెసౌందర్యముకూడ ప్రాధికపులకావ్యమువలె భవప్రధానము కాదు. కాని తరచినకొలది ద్రౌపది సౌందర్యమునకు నూత్నవైదగ్య మేర్పడుచుండును. ఆమెసౌందర్యమునందు కవిబ్రహ్మ ప్రతిష్ఠించిన ఛాయా భేదములు, భావగంభీర్యము నిరుపమానములు. దానిని బట్టి తిక్కనచేసిన సౌందర్యశత్యమథనము లోకోత్తరమని మనకు స్పష్టపడుచున్నది.

గండుమీలకు బుట్టి కాముభాణములలో
గలసియాడెడునట్టి కన్నుగవయు
బినకాండములశిక్ష బెరిగి లేచిగల
మెచ్చకయున్నట్టి మృదుకరములు
చివుళ్ళులతో సంఘి నేసి యంబుజముల
పై నెత్తి చనునట్టి పదతలములు
గలకంతములయొద్ద గలచిన విద్య వీ
ణల కిచ్చునట్టి తిన్ననియెలుంగు
నత్తెలుంగున రేఖయు నవ్వభంబు
గలుప చందంబు నమ్మెయి కలికితనము
నట్టిచెన్నును సైరంధ్రియందకాక
కలవె యొరులకు నెఱుగక పలికి తబల!
వామాక్షి రుచిరలావణ్యంబు భావించు
దన్వంగియాపు చిత్తమున నిలుపు
గంబుకంఠర చెన్నుకైవడి దలపోయు
నంగనసౌకుమార్యము దలంచు

భామిని సహజవిభ్రమ మెద గీలించు
బడతిచెయ్యులు మది బట్టికొలుపు
మానిని గరువంపుమాటపొం దూహించు
దళితాబ్జముఖితిన్నదనము మెచ్చు.

* * * * *

ఈ పద్యములను బట్టి ద్రౌపదీసౌందర్య చిత్రలేఖన మెంత భావప్రధానమైనదియు విస్పష్ట మగుచున్నది. క్రింద గీటుగీచిన మాటలనుబట్టి ద్రౌపదీసౌందర్యమున నెన్ని విశేషములు బ్రదర్శింపబడినదియు తెల్లమగుచున్నది. విషయమునుబట్టి మాత్రమేకాక విధానమునుబట్టికూడ తిక్కనకు వాల్మీకికి తారతమ్య మేర్పడుచున్నది. “సీ కన్నులు విశాలములు. నీదంతములు శుభ్రములు, శితాగ్రములు” అని సూటిగ వాల్మీకి సీతను వర్ణింపజేసినాడు. కాని కీచకుడో, వక్రోక్తులకు గడంగినాడు. “ఓనిపేరెద్ది?” అనుటకును, “దీనినామాకృతిగా నోచి పడసిన యింకగు వర్ణంబు లెవ్వియొక్కొ” అనుటకును గలతారతమ్యము రసజ్ఞు లూహించుకొందురుగాక! కీచకుడు చేసిన వర్ణనమందు నాజూకుదనము, నగిషీపని యెక్కుడుగ నున్నది. ద్రౌపదీసౌందర్యమువలన కీచకుడు కాముకు డగుటయే కాక తాత్కాలికముగ కవికూడ నైనాడు. అందుచే నాతనివాక్యములలో రసప్రచార మెక్కువగ నున్నది. వక్రోక్తి పేరు చెప్పి ప్రబంధకపులవలె నస్వాభావికవర్ణనలకు గడంగకుండ, అట్లని సూటితనముపేరుచెప్పి నీరసముగ ప్రాయకుండ గావ్యరసమనిన నేమో సరిగ్రహించిన కవిత్వతత్వ వేత్త తెనుగులో నొక తిక్కనయే కానవచ్చుచున్నాడు. అజంతాశిల్పములకైనను శైలిల్యమున్నది కాని వాఙ్మయమైన తిక్కనద్రౌపదీచిత్రమునకు శైలిల్యము లేదు. అజరామరంబైన యాదివ్యసుందర మూర్తి ననుగ్రహించి యాత డాంధ్రులను శాశ్వతముగా ఋణగ్రస్తులను జేసివైచినాడు.

కవి : కవికొండల వేంకటరావు

పూరాణములనుండి : —

నన్నయ

జగంబులు పుట్టింపను మనుషను సమయింపను
గర్తలైన దేవతలకు నెట్లు నడచిన నెగ్గులేదు. నేను గర్భ
భూమిని జనియించి కర్మమండ నైతి.

తిక్కన

ఈరెండుదెలుగులవారును బంచి కుడిచి సుఖం
బున్న నఖిలభూజకును బ్రమోదం బగుంగావున నట్లు
సేసి యందఱచేత దీవనలు వడయవయ్యె.

ఎఱ్ఱాప్రగడ

నీ గౌరవంబంతయు నెఱింగికాదె వహ్నిసమా
నుండైన యీమహాముని నారాధించుటకు నీయందు
భారం బెక్కించెద.

ప్రబంధములనుండి : —

మనుచరిత్ర

అనిన నత్రైతవ యక్కఱకరింపలుకుల కులికి
గఱిగఱిం గఱవ గరకరిం జెఱకుమిలుకాడు పరిగించు
విరిదమ్మిగొంకతలు.

పారిజాతాపహరణము

ఇవ్విధంబున నభీష్టఫలసిద్ధిసంతోషితస్వాంతు
లును, నిఖిలలోకైకసంస్తాయమానమహామహిమోదా
త్తులు నై నిరంతరసౌఖ్యవర్ధిష్టులగు నాసత్యాకృష్ణులను
జూచువేడుకం గ్రమ్మఱునొక్కనాడు.

శృంగారనైషధము

ఇట్లంతర్హితుండై రాజమార్గంబున నిరర్గళవేగం
బునం జని యారాజకుంజరుండు మదకుంజరఘటాసుంద
రంబగు రాజమందిరంబు డాసి.

విజయవిలాసము

ముముక్షుజనహృదయంగమంబగు త్రివేణీసంగ
మంబున దానంబులుం దానంబులు గావించి, యచ్చట
మాధవు నారాధించి, భవరసానుభవభీరుసానుక్రోశం
బగు పంచక్రోశంబు బ్రవేశించి.

ప్రభావతీప్రద్యమ్నము

దానవేంద్రా, నీలికినట్ల మన మిరుదెగలవార
ముం గళ్యపుసంతానం బగుటంజేసి మనయెల్లవివాదం
బులు నతండ తీర్చ నర్హుండు.

పదములు, కీర్తనములు, కథలునుండి : —

రామదాసుచరిత్ర

ఓభద్రాద్రీశ్వరా! నేను పూర్వజన్మంబున జేసిన
కర్మశేషమో, లేక మీకరుణకు పాత్రుండను గాననియో,
యీదుర్మదులచే గొట్టించుటకు మనస్సుగలిగియో
యివ్విధంబుగా నన్ను జేయించుట తగునా యని స్తుతి
చేయుచున్నాను.

మైరావణచరిత్ర

ఓతల్లి, అనేకకోట్లరాక్షసులు యుద్ధముగోరివచ్చు
చున్నారు. వారల నందరిని నీకు బలియివ్వబోవుచు
న్నాను. యీరామసామితులను.....

భారతసావిత్రి

విష్ణుభక్తిలేనివాడు శూద్రుం డనబరగు. నా
యెడ భక్తిగలిగిన చండాలునైన నవమానించుట బుద్ధి
మంతులకు నుచితంబు గాదు.

సర్వాయిపాపదుకథ

పన్నెండుమంది నేస్తులాతో శకునమెల్లి వస్తు
వుంటె చాకల లొక్కయెల్లయైన చిక్కుతీసి కొప్పు
బెట్టి శ్రీగంధపుచుక్కబెట్టి హంసలామొగ్గలరవిశేషకు

మీద తొడిగినాది. కండ్లకు కాటికవేసీ పండ్లకు దాసీనా వేసి బోర్ మెట్ల వేసుకోని బామ్మంచు చీరె గట్టి పిల్లవాణ్ణి చంకపెట్టి కూటిబుట్ట యెత్తుకోని యెదురుగుండ తాను వొచ్చి పెళ్లుపెళ్లున తుమ్ముతున్నాదీ ఆ యెల్లమ్మ.

నేటియొకనాటకము

తరువాత నోప్రభా, మున్నుమూర్ఖిల్లిన ముని బాలుండు నిద్దరనుండి లేచినట్లు లేవ నాసోదరులిద్దఱు నితాంతసంతోషక్రాంతస్వాంతులై.

నేటియొకనవల

ఆనలువురు నానూతనపురుషునితో లోన ప్రవేశించి మందరద్వారంబులను మూసివైచిరి. లోన నేమి జరుగునో వినుట కామెకు కుతూహల ముదయించెను.

నేటి మఱికొన్నివిధముల రచనలనుండి :—

లండనుఁ న్యాసములు

వేర్వేరుసంఘముల ప్రతినిధులతో సంప్రతించి అందరికిని సమ్మత మగునట్లుగా సాంఘికసమస్యను పరిష్కరించు ఏర్పాటేదియు చేయలేకపోతినని ప్రకటించుట కెంతోవిచారమును చిన్నదనమును కలుగుచున్నది.

పల్లెటూరికథలు

కరణం సంకురాత్రిపండుగకు అల్లుణ్ణి తీసుకు రావడానికి వెళ్లాడు. పడవదగ్గరకు రాలేదనేకోపంతో అల్లుడు పండుగకు రానన్నాడు.

చిత్రాంగి

కాని మీరు పొడుంకాయతోటే సహజంగా పుట్టారా?

ఏమమ్మా, మీ మామగారు వొచ్చారు. అందరినీ యింట్లోకి రమ్మంటున్నారు. మాకు రాణీవి కాబోతున్నావు. ఇదేం వేషం, ఆయనముందే?

నలభీమపాకశాస్త్రము

అయిదు శేర్లసీళ్లు పట్టే కళాయిపాత్రలో నాలుగు శేర్ల మంచినీళ్లు పోసి పొయ్యిమీద కాచవలెను.

నేటిపత్రికలనుండి :—

ఆంధ్రభూమి

బైబిలునందు ఒకకథ కలదు. ఇసుకమీద నొకటియు, రాతిమీద నొకటియు రెండుఇండ్లు కట్టబడినవి.

గృహలక్ష్మి

దేశారాధకుల 'మనుకొనుచున్నవారు' లెస్సగ యోచించి యీమహాతరుణమందు దేశభ్యదయము అట్టి యమాయికుల యోగక్షేమములపై నాధారపడి యుండు ననుసత్యము.

ఆంధ్రపత్రిక

వాయువిమానములనుండి బాంబులను విసరు పద్ధతి హిందూదేశమునందే గాక ఇంగ్లండులోగూడ ఏవ్యత గలిగించె ననుటకు సందియము లేదు.

కృష్ణాపత్రిక

బర్మావిభజనమున కన్నియు అమారగుచున్నవి. బర్మాప్రజలు విభజనమున కంగీకరింతురో లేదో తెలియకపూర్వమే.

వామకనుండి :—

రైతుమాటలు

ఎందుకంటి ఈవానలు. బుడంకర్రలు కోసుకునే వాళ్లకి నష్టం. కొన్నికట్టేతమీదుంటాయి. కొన్ని కోతకు సిద్ధంగా వుంటాయి. ఉడుపుచేలకు కొంచెం నయమనుకోండి. తాటాకుతెగులుపట్టి దంటారు. దాని క్కొస్తమెటుగు. కందిచేలు ఊటెక్కిచస్తాయి.

ఒక ఇల్లాలుమాటలు

చంటిపిల్లల పోట్లాటలు. ఎందుకంటార మనం - అవసరంమాలినపుల్లలకు అగ్గిపెట్టగుల్లలకు. అవియెంతో పనిముట్లు అవిపాళ్లకు.

ఒకకూలివానిమాటలు

పొద్దున్నే అబద్ధమాడుకుంటే నా కేం వస్తుంది? పనిచేసేవోణ్ణి నే నబద్ధమాడుకుంటానా?

ఈప్రకారముగ యాథాలాపముగఁ జదివినపున్త కమునుండి, చూచినపత్రికనుండి, విన్నమనిషినుండి

మనము భాషను నేకరించి గమనించి చూచితినా, ఎంత మంది తెనుఁగుభాషను వ్రాయుచున్నారో, ఎంతమంది వాడుచున్నారో అన్ని విధముల తెనుఁగున్నట్లగపించు. - తెనుఁగుజాతికి జెందినవా రెవరోయి యన్న 'నేను నేను' అని కొన్ని కోట్లమంది మాటువలుకునట్లు.

కాని తెనుఁగుజాతినిగుఱించి తెలిసికొనవలయు నన్న మూఁడుకోట్లమంది తెనుఁగువారిని వరుసగ నిలువఁ బెట్టి వారిముఖవర్చస్సు గమనించుచున్నామా? గమనింపఁగలమా? తెనుఁగుజాతియని యనుకొనుటలో నేవో కొన్ని లక్షణములు హృదయావలంబనము గొనుచున్నవి. ఆలక్షణము లున్నజనుల నందఱిని తెనుఁగువారినిగ గుర్తించుచున్నాము. ఆలాగుననే తెనుఁగుశైలినిగుఱించి 'తెలిసికొనుటలన్నను. మనకు తెనుఁగువారందఱును మాటలాడు, వ్రాయు సమస్తమును నేకరించి విమర్శించుటలు సాధ్యమా! ఒక్కనాటికి గాదు. కాని తెనుఁగుశైలి యని యనుకొనుటలో మన కేదో యొకవిధమగు మాటలపొందిక, ఏస, నడక, నాలుకపైఁ దాండవించుచుండును. నిజముగ నాయుద్దేశ్యమం దది నిర్వచింపఁబడనేరనిది; అనుభవించవలసినది. 'పంచదార తీసి' యనియన్న, పంచదార తినుటలో మనకుఁ దట్టు తీయందనమనికదా యర్థము. అట్లే తెనుఁగుశైలి యన్నఁ దెనుఁగును వాడుటలోఁ దట్టు నొకానొక యొయ్యారపు టుచ్చారణ. కావున నాయీవ్యాసము యొక్క యభిప్రాయమును బూర్తిగ నెఱుంగవలతురేని తెనుఁగున మాటలాడుచు నందలియుచ్చరించు పొందిక యిట్టిదని స్మరణకుఁ దెచ్చుకొన్నఁగాని బోధపడదు.

తెనుఁగునకును సంస్కృతమునకును నవినాభావమున్నది. తెనుఁగునకుఁ దురకమునకుఁ, దెనుఁగునకు నాంగ్లేయమునకు నంపర్కమున్నది. తెనుఁగునకు నరవమునకుఁ గన్నడమునకు మైత్రి యున్నది. తెనుఁగు బంగాళీ, తెనుఁగుహిందీ, తెనుఁగుమరాఠీ,—యివి యన్యోన్యపరిచయము లేనివి కావు. కాఁబట్టి కేవలము తెనుఁగుదృష్టి యలవరచుకొనవలెనన్నఁ, దెనుఁగుశైలి

కనిపెట్టవలెనన్న మనము ఎట్టిదృక్పథమున నిలువవలెను? సంస్కృతసంబంధములేని, తురకము, ఆంగ్లేయము, కన్నడము, అరవము, మరాఠీ, హిందీ, బంగాళము—వీనిసంపర్కము లేని యొకానొకనైజపుఁ బోకడఁ బోవుదానిని గ్రహించుకొనవలసియుండును. అదెట్లని పెక్కుమందికి సంశయము వొడమవచ్చును.

ఒకయావుపాలును మఱియొక యావుపాలును గలసిపోయినట్లు కలసిపోయినవే తెనుఁగుసంస్కృతములు, వానిని విడఁదీయుటెట్లు? పంచదార కాఫీ కషాయము పాలు కలసిపోయినట్లు కలసిపోయినవే తెనుఁగు తురకము ఆంగ్లేయము. వీని నొకదానినుండి యొకదానిని విడఁదీయుటెట్లు? అని యీవిధముగ నందఱ కన్ని సర్గపుఁ దెనుఁగుదెలిసికొనుట యసాధ్యముగఁ బొడగట్టవచ్చును.

అయినప్పటికిని నిదానించి చూడవలతును. మనము హూణభాషను మాటలాడుచు నడుమనిట్టే తెనుఁగునకు దిగుచుండుము. చటక్కన వలవైచిపట్టు కొన్నట్టా తెనుఁగుముక్కలను నాల్గింటినిం గొనుండు. బజారులందు గుద్దులాటల, సరాగాల, ఇండ్లకబుర్ల, పొలాలమీఁదఁబదాల, దెనుఁగునుడికారము సమయోచితముగ బయల్పెడలునప్పుడు హృదయ మాంధ్రోద్దీపితమై "ఇదితెనుఁ" గనిపించును. అది మీమనంబుల కెక్కించుకొనుండు. దాని నాధారభూతముగఁ జేసికొని తెనుఁగుశైలి యేమొకోయని యోజించుండు. అది నామనవి.

అట్లు విమర్శించునప్పుడు ముఖ్యముగ నాకు గోచరించున దిది—"మన కింకను దెనుఁగుభాష యున్నది. అది పోలేదు. అది యప్పటప్పట బయల్పెడలి భావమును, బ్రకటించుచున్నది." అని. "ఎల్లప్పుడట్లనే మాటలాడి యట్లనే భావమును బ్రకటింపఁగలవార మైతిమా!" అనికూడ నూహపోవుటయును గద్దు. భూమి నేప్రకారముగ నిరంతర మాంధ్రభూమిగ నుండఁ దలపోసికొనుచున్నారమో మన నాలుకకూడ నిరంతరము తెనుఁగునాలుకగ నుండవాంఛింతు.

కాని యొక్క డాండ్రరాష్ట్ర మనుకొనుభాగము ఉత్కళరాష్ట్రమునఁ గలసిపోయినచో నది యాండ్ర రాష్ట్ర మెట్లు కాదో, యొక్క డంతయును దెనుఁగై యున్న మనయినాటుక యాండ్లయమును బఠించి, సంస్కృతమును నేర్చి, హిందీగఱచి, తెనుఁగుచవికి వెలి యగుచున్నా మంతోయింతో. అయినప్పటి కుత్కల రాష్ట్ర మన్నంత, తెనుఁగుమనిషిని గుర్తించుట మాని నామా? అట్లే ఎన్నెన్నిభాషలఁ గలగలవైనను 'నిట తెనుఁగుకైలి కలదు' అని స్ఫురింపక మానదు. అది నిర్వక్రముగఁ జూఱగొనవలెనన్న నొకటే సాధనము. తెనుఁగువారిని జూచుచు, తెనుఁగుదేశమం దభిమానము వహించుచు, తెనుఁగువచ్చినవారితోఁ బడేపడే తెనుఁ గున మాటలాడుచు, తెనుఁగుపుస్తకములను విరివిగఁ బఠించుచు, వల్లించుచు, 'తెనుఁగు తెనుఁగు తెనుఁగు' అని దానిని శ్రద్ధాభక్తులతోఁ బ్రత్యక్ష మొనరించుకొందు మేని తెనుఁగుకైలి యూరక కర్ణపుటంబుల నినదించు.

అప్పుడు మీరు మఱచిపోదురు నారికేళపాకము, ద్రాక్షపాకము, కదళీపాకము అనుమాటలు, గ్రామ్య గ్రాంథికవిభజనములు. అప్పుడు మీకుఁ దట్టగలపు తెనుఁగువారి పురాణకైలి, తెనుఁగువారి ప్రబంధకైలి, తెనుఁగువారి గేయకైలి యనునవి.

నారికేళపాకమన్న నదియొక తెనుఁగునుడికార ము యొక్క పొందికను సూచించుమాట కాదు. అది తెనుఁగుపదములు తక్కువపెట్టి, సంస్కృతసమాసముల నెక్కువ జొనిపి తెనుఁగువారి కర్థముగాకుండ వ్రాసిన పుస్తకములయొక్క గుణసంకీర్తనసందర్భమున వెలు వడినపదము. అట్లనే ద్రాక్షపాక కదళీపాకశబ్దములును. ఆపదములు తెనుఁగువారు పుస్తకములు వ్రాయుటలోఁ గాని, తెనుఁగునిజగమనము సూచించుటలోఁగాని యుపకరించవు. సంస్కృతము బాగుగవచ్చినతెనుఁగు

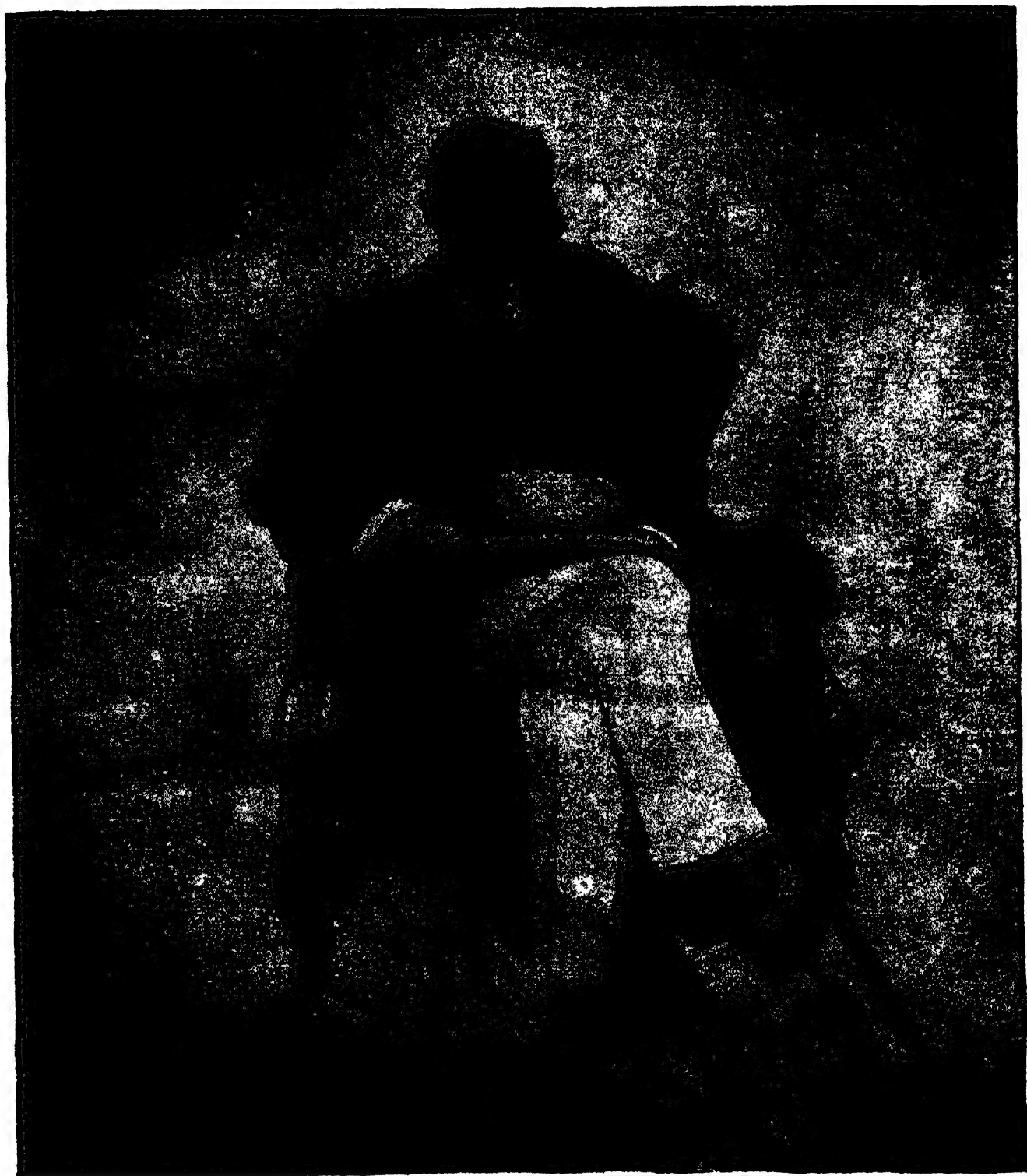
వానికి నారికేళపాకగ్రంథము లేతగుంజునే యిచ్చి దిగ మ్రింగుట కనువుపడును. సంస్కృతమురాక యాండ్లయ మెక్కుడువచ్చినవానికి 'గురిడ్డి' కానచ్చును. భాషాజ్ఞాన మునుబట్టి యొకానొకగ్రంథము సులభముగ నర్థమగుట, కాకపోవుట యనునది తెనుఁగుకైలిని నిర్వచింపనేరదు.

కైలియన మాటలపొందిక, వాక్యములకూర్పు. ఒకమానవుఁ డొకమానవునికి తనభావమును ఊతముగ వెల్లడించుట. తెనుఁగుకైలియన్న తెనుఁగుమాటల పొందిక, తెనుఁగుకూర్పు, తెనుఁగునూతము. పురాణ పఠనమందుఁ దెనుఁగువారి మాటలపొందిక, ఏస, నడక వేటు; ప్రబంధఘక్తి వేటు; పదములు పాటలు విన్న ప్పడు వేటు.

ఎంతటిమార్పు చెందినను నాయామాటలు తెనుఁగువారిచే నిరంతర మాయాసందర్భములందు వాడఁబడుచు "ఇది తెనుఁగునుడికారము" అని తట్టఁ జేయుచుండును. కావున ప్రతితెనుఁగువానిని నేను నేడు హెచ్చరించునది, "ఇందు సంస్కృతము హెచ్చా, తెనుఁగు హెచ్చా? ఇందు సంస్కృతము దెనుఁగుకలగలపు లెట్లున్నవి? వీ రితరభాషల నేర్చి వ్రాయుచున్నారా, నేర్వక వ్రాయుచున్నారా?" అను స్తనశల్యపరీక్షకుం దిగక, మాటమాట, నక్షరమక్షరము విడదీసి చదువక నేకముగ గుర్తించి 'ఇది తెనుఁగు పురాణకైలియా? ఇది తెనుఁగుప్రబంధకైలియా? ఇది తెనుఁగుగేయకైలియా?' అని ప్రబోధించుకొనుట శ్రేయస్కరము" అని.

అందుల కర్వత యెవరికిఁగలదన్న నెవ రెన్ని తెనుఁగుపురాణములను బఠించి యెవ రెన్ని తెనుఁగు ప్రబంధములను జదివి, ఎవ రెన్ని తెనుఁగుగేయములను బాడి యానందించుచు ఎం దాయానంద మున్నదో గ్రహింపఁదొరకొందురో వారికే యాయర్హతకలదు.

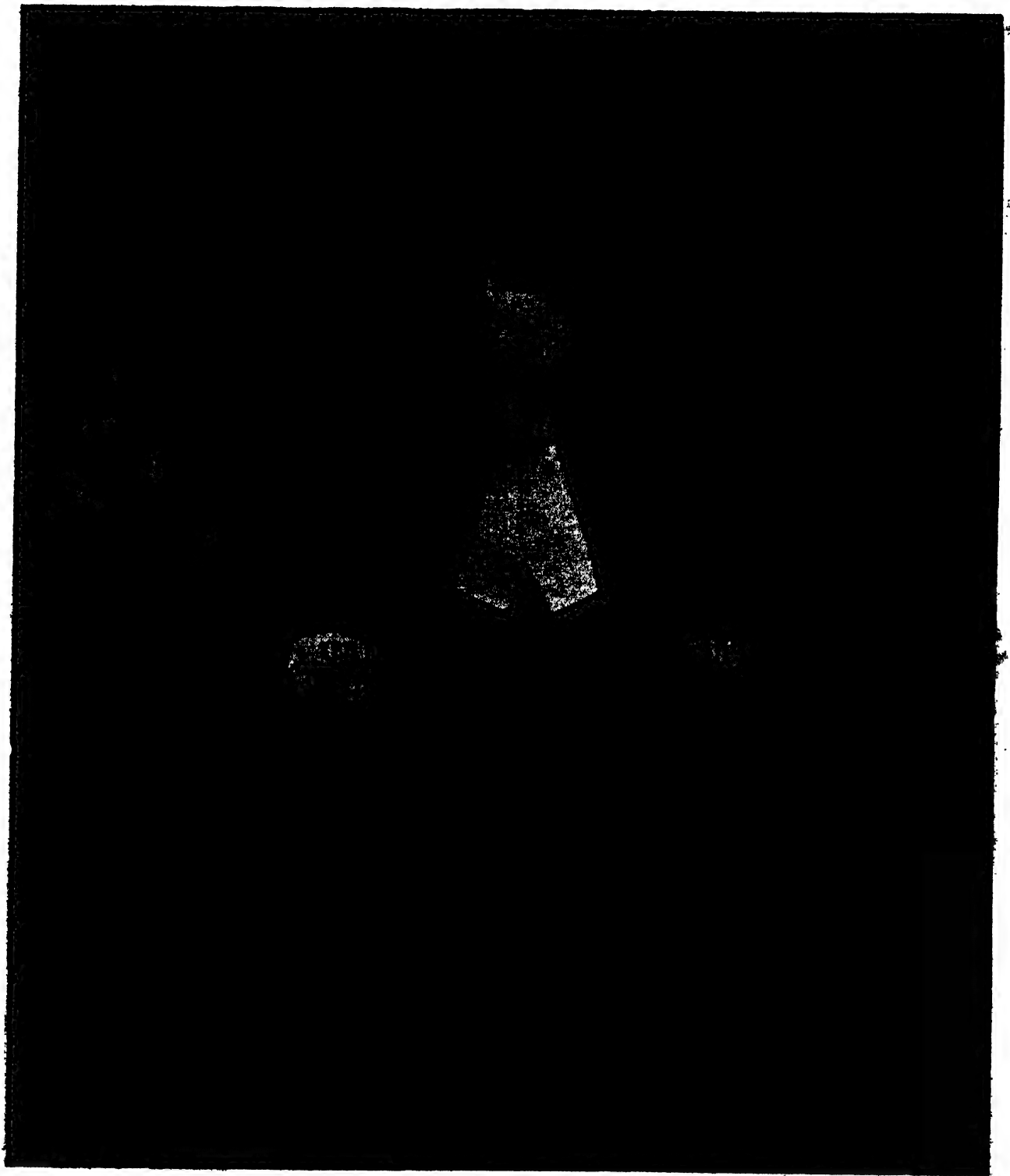
అంత్రిక - భావ సంవత్సరాది సంచిక



హిజ్ ఎక్సరెన్సీ లాల్
విల్లింగ్డను
(రాజ్యప్రతినిధి)



హిజ్ ఎక్సలెన్సీ రెఫ్. కాల్. డి రైట్ ఆనరబిల్
నర్ జార్జి ఫ్రెడరిక్ స్టాన్లీ, పి. సి., జి. సి. ఐ. ఇ., సి. యం. జి.
(ముద్రాసు గవర్నరు)



అనరబుల్ ఖాన్ బహదూర్

గర్ మహమ్మద్ ఉస్మాన్ సాహెబ్ బహద్దూరు, కె. సి. ఐ. ఇ.

(అక్టింగ్ గవర్నరు)



బాబ్బిలి మహారాజగారు
(ప్రధానాపకర్తలు)

ఆర్ధరసాయనశాల, ముక్త్యాల

అక్షరభక్తి

తు. 1-కి రు. 5.



తు. 1-కి రు. 30.

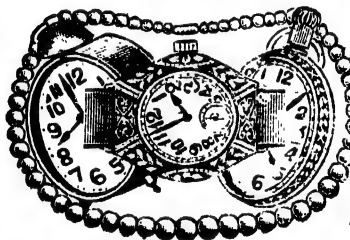
వసంతకుసుమాకరము

ఎటువంటి సహ మేహముల నుండి నుగుర్చును. నుగుము ప్రత్యేకము అనుభవవద్దము. అనేకులు వాడి మెచ్చియున్నారు. 60 ఏండ్ల వైద్యానుభవము గల శ్రీ శ్రీ సుందర శాస్త్రిగారు దీనిని కనుగొనిరి. వాడువిధము మందుతో పంపబడును. వివరములు కోరిన పంపగలము. 50 మాత్రలు సీసా 1-కి రు. 5/- Consulting Physician.

భీషగ్వర, వేటూరి, శంకరశాస్త్రి, ఎ. యం. ఏ. సి.

స్వయముగాగాని ఉత్తరములద్వారాగాని, రోగులు ఫలహాపించవచ్చును. సమస్తవివరములుగల 160 పేజీల 'ఆయుర్వేద చికిత్సాదర్శనము' అను గ్రంథము ఉచితము. వెంటనే వ్రాయుడు.

ఇదివర కెవరును కని విని యుండలేదు.



మా ఆంగ్లో-ఇండియన్ వేక్ మోనా మంచి సువాసన గలిగి మెదడునకు చల్ల సవము కలిగించుచున్న గాక మన స్మృతకు ఆహ్లాద మొనగూర్చును. దానిని

వ్యాపక మునర్చుటకుగాను 12 బుడ్లు రు. 1-15-0 లకు విక్రయింపబడుచున్నవి. ఈ కొద్ది ధరలోగూడ ఉచితముగా పట్టాతో ఒక బొమ్మల చేతిగడియారము, గొలుసుతో ఒక పిల్లల తమాషా జేబుగడియారము, కాలము సరిగా చూపు ఒక 'వి' టైంపీసు (10 సం॥లు గ్యారంటీ) ఒక యివి 'టేషల్' ముత్యాలపరమువంటి వస్తువులు నొసంగబడును.

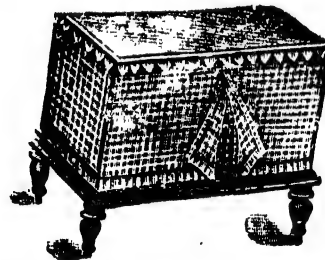
ప్యాకింగు పోస్టేజీ వేరు.

(తృప్తిగాలేనిచో సొమ్ము వాపసు చేయబడును.)

విరునామా :

International Trading Co.,
P. O. Box No. 6714, Calcutta,
(Sec. S. A. 20.)

సౌఖ్యప్రదమైనది ఆరోగ్యమునకు మూలము.



మీరు మా షక్తిని దోచు తెరను కొనినచో సౌఖ్యప్రదమైన నిద్ర లభించును. అది మిమ్ముల దొమలు మున్నగు కీటకములబాధ నుండి కాపాడి చూడుగా నిద్ర పట్టించును. ధరలు అన్ని రంగులకును సమానమే. ప్యాకింగు పోస్టేజీ

వేరు. 6 దోమ తెరలు ఒకసారి కొనువారికి ఆదేశకము ఒక తెర ఉచితముగా నొసబడును. కాని రూ. 8/-లు ముందుగా అడ్వాన్సు పంపుడు. చాపపు వెడల్పు ఎత్తు సామాన్యము మేలురకము శ్రేష్ఠము

8 అ॥	8 1/2 అ॥	9 1/2 అ॥	రు. 1-14-0	2-14-0	3-14-0
6 అ॥	4 అ॥	4 అ॥	రు. 2-14-0	3-14-0	4/-, 5/-,
7 అ॥	5 అ॥	5 అ॥	రు. 3-14-0	4-14-0	7/-, 10/-,

మేము తయారుచేసిన అన్ని రకముల నూటులు, డ్రెస్సులు, బాడీలు, సమజాలు, విక్రయమునకు దొరకును. ధరలు సరసము.

వివరములకు 0-2-0 తపాలచిట్టలను పంపి వ్రాయుడు.

విరునామా :

B. D. PANDE,
Post Box, No. 6714. No. 62, Clive Street,
CALCUTTA.



ముసలితనముగా కనపడు టెండులకు?

నమోనా ఉచితము.

మా "రాజవైద్య తలరంగు" తెల్ల వెండ్రుకలను తక్కువే తుమైన
తెక్కలవలె నల్లగానుండునట్లు చేయును. ఈ "రాజవైద్యతలరంగు" శ్రేష్ఠ
మైనది. చౌక. వాడుకు మిక్కిలి సులభము. ఒకబుడ్డి వెల రు 1-2-0 లు.
చిన్నబుడ్డి 0-10-0 లు. 1 ముదలు 3 బుడ్లవరకు పోస్తే 0-6-0 లు.
0-4-0 లు పంపినచో, పోస్తే లేకుండు నమోనాబుడ్డి పంపబడును.



ఒక్కరోజులో జ్వరము నివృత్తించును.

చలిజ్వరము, మలేరియా, యిక్ష్మాయంజ.

ప్రా.సంశీవిని:—ప్రాణమునకు సంశీవివంటిది. ఒక్కరోజులో అన్ని విధములైన జ్వరములను
పోగొట్టును. (ప్రేగుల శుభ్రపరచును.) ఆకలిగల్గును. ప్రతి సంగలము 1,00,000 మంది రోగివిముక్తు
లగుచున్నారు. పెద్దబుడ్డి వెల రు. 1-0-0. చిన్నబుడ్డి 0-8-0 లు. పోస్తే 0-10-0 లు.
టోకుధరకు కమిషన్ యివ్వబడును. కోరినవారికి 1934 సం॥ క్యాలెండరు ఉచితముగ పంపబడును.

Rajvaid Sri Bamandasji Kaviraj,

Telegrams: "Rajvaid" Calcutta.

152, Harrison Road, Calcutta.



మీకు సౌఖ్యప్రదమగు రాత్రులు కావలెనా?



వెంటనే త్వరపడి, చౌక దోమతెరలకు ఆర్డరు చేయుదు.

తెల్లని అల్లకములలో దృఢముగా తయారుచేయబడినవి. చక్కగానుండి చిరకాలము మనును.
అదేధరలో రంగుల తెరలుగూడా దొరుకును. ప్రత్యేకపునైజాలు 24 గెల్లలో తయారుచేయబడును.

పొడవు.	వెడల్పు.	ఎత్తు.	ధర.
6 అ	4 అ	4 అ	రు. 2-0-0, 2-8-0, 3-8-0
7 అ	5 అ	5 అ	రు. 3-0-0, 4-0-0, 5-8-0

కోరినచో సచిత్రమైన క్యేటలాగు, అల్లికనమోనా పంపబడును. కిద్దముగానున్న మా
మాటలు, బాడీలు, సమజాలు, అమ్మబిడ్డల ఏజెంట్లు కాకలెను.

హా ర్లో ని య ము

సుఖమైన మనోహరమైన స్వరము. మంచితకము రీడ్లు. మాచే ప్రత్యేకముగా తయారు
చేయబడినవి. ప్రాంసుదేశమునుండి తెప్పించబడిన సామానులు. ప్రతికిడు పరీక్షించి
వేయబడినది. ఇది డీలక్సు హా ర్మోనియం. ఆకర్షణీయమైన చాలకాలము పనిచేయును.
ఛేతతో చేయబడినది. 4 సంగలు గ్యారంటీ.



3 ఆక్టా.	సింగిల్ ఆర్గన్	రీడ్ 4 స్ట్రాపులు	మామూలుధర రు.	25-0-0	తగ్గింపువెల	12-8-0
"	"	జర్మన్	" " "	"	"	15-0-0
"	"	హార్మోనిస్	" " "	"	"	25 0-0
"	"	డబుల్ ఆర్గన్	" 5 " "	"	"	22-8-0
"	"	జర్మన్	" " "	"	"	27-8-0
"	"	క్లిష్టమైన ఆర్గన్	" " "	"	"	35-0-0
"	"	జర్మన్	" " "	"	"	40-0-0

G. M. SHARMA, Post Box No. 6706, Calcutta.



రొక రై
కొదలి వెంట చుట్టారావు

'హంపిక్షేత్రము'

చిరుమామిళ్ల
శివరామకృష్ణప్రసాదు, బి. ఏ.,



వ్యాసకర్త
చిరుమామిళ్ల శివరామకృష్ణ ప్రసాదు

భావికాలమున చక్కగా కొనలుసాగి పుష్పించి లోకమున
కమే మానందమును గూర్చువలసిన తుసుమవల్లరి, చండభానుని
కిరణములు సోకకపూర్వమే, ఏమికారణముననో తలవంచి నేలవ్రాలి
నది. పరాత్పరుడు దానిగుఱుసంపదను గాంచి మరులుకొని, దొంగి
లించుకొనిపోయి తనవీట నాటుకొనినాడు. నిర్గుణుడగు విశ్వమయుని
వింతచెయిదముల నెవరు ప్రశ్నింపగలరు ?

అచిరకాలములోనే సరస్వతీదేవిచేత పట్టునెల్లాలు కట్టించ
గల డీకవియని మిత్రులనుకొనుచున్న సమయముననే కొదాలి సుబ్బా
రావుగా రీలోకమును వదిలి చనిరి. అతడు మృతదీవి. చిరునగవు పెద
వులపై చిందులుద్రొక్కుచుండ, కల్మషరహితముగు వాత్సల్యమును
విరజిమ్ము వారిపలుకు లింకను వినబడుచునేయున్నది. వెనుకచూపు
లేని సాహసము, సాహసమునకు తగినసామర్థ్యము, సామర్థ్యమున
కనువగు సౌజన్యము వారికి విలువనుగూర్చిన భూషణములు. నిరా
డంబరముగు వేషము, సంతృప్తిని వెలువరించుకనులు మిత్రుల
నాకర్షించుటకు వారికి సమహర్షుబడినవి. గృహమునందుండినను, వెలు
పలకు వచ్చినను చుట్టును మిత్రులై.....అందులకే యాదుర్ది
నమున, ఆశ్చర్యనావాటికకడ వేలకొలదివిద్యార్థులు, పెద్దలు గుమి
కూడిరి.....అత డొకమహారాజా ? కాదు; దేశనాయకుడా ?
కాదు; హృదయమొసగి హృదయముల వశపరచుకొనిన సద్గుణా
కరుడు. ఆశచే తుదివర కంద రచ్చట నిలిచియుండిరి; రిక్తహస్తము
లతో గృహములకు తిరిగివచ్చిరి.

కవి :

శ్రీ కొదాలి సుబ్బారావుగా రొక విచిత్రమైనవ్యక్తి. ఆయ
నతో కొలదిదినములు - దినములేకాదు, కొలదిమాసములు - నేపా
మొనర్చినను, ఆయననిజస్వభావ మెంతవానికిని గోచరముకాదు.
ఆయనపలుకులను వినినచో పాశ్చాత్యనాగరకతాప్రపంచమున బడి
పోవు నేటి యావకులవరుసలోనివారే యని ప్రథమున లోపకపాడు.
కాని వానివ్యాధియ మట్టికిగాదు. మాతృభూమియందలి భక్తి చేతను,

ఆంధ్రోద్యమమునందలి యాసక్తిచేతను అది నిండియున్నది. జ్యోతి
శ్శాస్త్ర మనిన వీరి కెంతయో సమ్మతముండెడిది. పిన్ననాటనుం
డియు వీరి విషయమున కృషిసల్పిరి. అందులకే తమతల్లిగారి
మృతినిగూర్చి కొలదివత్సరములక్రింద 'భారతి' యం దొకకేయము
వ్రాయుచు

“మాతృకారుడు చంద

మామ రాహువు నాడ

కుంభాన కేతువుతో

హర్షుండె నారింట

నని జోస్యులంటారురా

అందుకీ యనుభవం బంటారురా.”

అని సుషీలియున్నారు. వీరు చనిపోయిన దినమున వీరి చొక్కా
జేబునందు, చనిపోవుకాల మొకకాగితముపై సరిగా వేసియుండెనట.

“కానేపు కూనేపు

కాదు యీ యనుభవము

కడలేరి నీలోన

కలసిపోయేదాక

కలకవేయుచునుండురా

దైవమా—కడుపుమందుచునుండురా”

అని సుబ్బారావుగారు తమతల్లిగారి మరణమునుగూర్చి తల్లడిల్లిపోవు
చున్నారు. తమబాహువులనీడలయందు కాపురముండి, సర్వకాలము
లందు తమే నమ్మియుండి, నే డెట్టియండయు లేక లోకమున నిలచి
యున్నవ్యక్తు లిట్లు తలపోయవలసినవారేకదా ! నేటికి తమహృద
యము కాంతివహించినది... తమాశ్రయించియున్నవారల హృద
యములో ?

గ్రంథస్వరూపము, మూలము :

ఈగ్రంథమునకు మాగురువర్యులగు శ్రీ విశ్వనాథసత్యనారాయణ
(యం.ఏ.)గా రొకయమూల్యమైనపీఠికను వ్రాసియున్నారు. కావున

మరల నీవిమర్శనమును వ్రాయదొరకొనుట సాహసము కాకపోదు. శ్రీ సుబ్బారావుగారును మాకునురువులగుటచే, వారి కళాప్రతిభలను పత్రికా ముఖమున ఆంధ్రాక్షరాస్యుల కెఱుకపరుపదలచి, వాకొలదికి వెలువక నే నీప్రయత్నమునకు గడంగితిని. మాగురువర్యులు రచించి యిం దినసేతిక నా కీవ్యాసముపట్ల చాలవరకు సాయపడినది.

ఈహంసీక్షేత్రమును గ్రంథము ఆశ్వాసములుగా విభజింప బడలేదు. దీనిని ఖండకావ్యములసంపుటమని యనవచ్చును. హంసీ స్థాపింపబడినదాది హంసీవివాళమునవరకు జరిగినవిషయము లీ గ్రంథ మున ప్రస్తరింపబడినవి.

ప్రథమమున హంసీక్షేత్రముయొక్క నేటిస్థితి వర్ణింపబడినది. శ్రీ సుబ్బారావుగారు రచ్చటకేగి ప్రతివిషయమును తిలకించి, తమకు గలిగిన యావేశమునే యీ పద్యములందు వెలువరించిరి. హంసీస్థాపన మును వివరించునపు డచ్చటిజను లనుశ్రుతముగ జెప్పుకొనుకథ నాధారముగాఁజేకొనిరి. తరువాత హంసీయందు నేటికిని నిలవియున్న విద్యారణ్యులవారి శిలావిగ్రహమును గాంచినంతనే కల్గినయావేశము నాధారపరచుకొని, కొన్ని పద్యములను వ్రాసియున్నారు. మఱియు 'రాజ్యప్రదానము', 'పశ్చాత్తాపము' మొదలగువిషయముల కను శ్రుతముగా వచ్చుచున్నకథలే యాధారము. 'కనకాభీషేకము', 'తల్లికోటయుద్ధము', 'ఆనెగొండకాపు' అనువిషయముల కొకింత సరిత్ర నాధారముచేసికొనియుందురు. 'పాణిగ్రహణము' అను విషయమున కాధారము 'మాతు రాయలకును గూర్చునాడు' అను పెద్దన్నగారిచాటువు. మఱియు, ఆముక్తమాల్యద చదువగా కలిగిన యావేశమే 'కృష్ణరాయలు' అనుశీర్షికక్రింద నున్న పద్యముల కాధారమని వివరించియున్నారు.

కథావస్తువు-కూర్పునేర్పు :

హంసీక్షేత్రముయొక్క నేటిస్థితి ప్రథమమున వర్ణింపబడినది. గ్రంథములందు హంసీవిభవమును పఠించి కవి యది యతిశయోక్తి యనుకొనినాడు. కాని 'కల్ల నిజమయ్యె నీవు సాక్షాత్కరింప' అని తాను హంసీ కేగివచ్చినతరువాత నాశ్చర్యమును వెల్లడించు చున్నాడు. హంసీక్షేత్రమునం దాత డెన్నియోక్తాత్మవిషయము లను గాంచి యానందించినట్లు విశదముచున్నది. అచ్చటికొండలు సహితము 'మానవులచేట్టలం దోనమాలు దిద్దు'చున్నవట! ఈగ్రంథము నందు గల కొండలవర్ణనను చదువుచున్నప్పుడు శ్రీనిశ్యనాథసత్య నారాయణగారు 'కొండపీటి పొగమబ్బులు' అను శీర్షికక్రింద 'భారతి'లో వ్రాసినపద్యములు జ్ఞాపింపవచ్చును. హంసీక్షేత్రము చుట్టునుగల యున్నతమైన పర్వతపంక్తులను గాంచి కవి, శత్రురాజుల కవి యభేద్యములైనవని తొలిసారి సంతసించెను గాని వెంటనే నేటికిని తలచుకొని "అచలము లంచెలంచెలగ నల్లినకొటల దాట్ల.....తెగింపలేక చకితులైనమూఢులు వికర్తన కర్తలపే తుదిన్ నృపుల్" అని వాపోవుచున్నాడు. 'సాగసులో'

'పారువలలోన' 'చుట్టుపట్ల చిందుశీకరములలోన' 'జీవనముల లోన' 'పంపాస్రవంతిక, సానువులను నేలుమేఘప్రవాహాల' నేలు కొను'నని నుడివి, యచ్చటనున్న పంపాసరస్సుయొక్క యంత్రప్రవృత్తి తను వెల్లడించి, తెలుగునుశికారమునందలి యొకయొక్కయ్యారమును ఆభావమునందు కవి సమూహులైన. హంసీక్షేత్రమునందలి రమ్య మైన కట్టచములను గాంచి కవి తనయుడైనాడు. ఆంధ్రవైభవక్షీ సర్వసౌభాగ్యములతో నలరారినదినములలో, తమ్మిమాలినైనను నిర్మాణశాలమున గెలువగల మేటిశిల్ప లుండెడివారని మన మెఱు గుదుము. అట్టివారి శిల్పనైపుణ్యమునకు నిదర్శనముగా మనదేశమునం దిచ్చటచ్చట కొన్ని శిథిలములయిన దేవాలయములు గలవు. వీనిని గాంచి నేటికిని ఆంధ్రుడు కంటతడివెట్టుచున్నాడు. హంసీక్షేత్రము నందు 'మరలులేకుండ యంత్రాలమహిమలేక', 'కొక్కెముల్ రాతి నొక్కలుగాగ ఉయ్యాల సలిపినా డొకకొండవలక తొలిచి', 'సోపానముల్ రాతిసుట్లుగాగా నుయ్యికొట్టినా డొకకొండవలక తొలిచి', 'మూలముల్ రాతిబాచులెగాగ హర్యమ కట్టినా డొక కొండవలక తొలిచి' 'వేదు లెల్లను రాతివిరుపులుగా రచ్చుదిద్దినా డొకకొండవలక తొలిచి'.....'ఆమహాశక్తికిని హేతు వరయలేమని సర్వజ్ఞుడగు కవియే ఆశ్చర్యమును వెల్లడించుచున్నాడు. 'ఈపెను కొండబండ లెటులెత్తిరా ఆకసనుంట్ల లాఘవప్రాపితకార్యమా యిది' అని ప్రశ్నించుచున్నాడు. తిమ్మరుసుకచ్చేరిని వర్ణించు సంవిరభమున కవి పాఠకునియొద్దకు రానున్న విపాదసంఘటనమును, మంత్రిశేఖరుని కొలదియిడరాని ప్రతిభను ఎట్లు ప్రదర్శించు చున్నాడో తిలకింపుడు :

"తిండికి లేక ఎంగిలి జరించిన మేనున తెల్లరాజమా

రౌండునిలేరుపై ప్రణవతత్త్వము దెల్పడి బాలకృష్ణుడై
యొండైన మంత్రిమిత్రుడు డోపాల పావనమైన రచ్చలో
మండినమంటతో నదియు మారె మనీషుగ మాచరిత్రలో."

రామరాజు సకలాంధ్రావనిని పరిపాలించి మేచ్చులను కెక్కు సారు లోడించి వారిపట్టణములను కొల్లగొనినవీరుకు. పోర్చుగీసు వారితోడను, ఇతర మహమ్మదీయసుల్తానులతోడను సంధి యొన రించుకొని, వారిలోవారికి కలహములను బెంచి తనకీసామర్థ్యములను చాటిన రాజ్యతంత్రప్రవీణుడు. తుదకు తల్లికోట యుద్ధమునం దహంకారమువలన సర్వమును గోల్పోయిన దురదృష్టవంతుడు. అట్టి ప్రతిభాశాలి, ఒక చాకలికన్నె వాలుమాపులయందు చిక్కు కొనినాడు. దాని కొక దివ్యభవనమును గట్టించినాడు. మహమ్మ దీయులు బ్రద్రులుకొట్టినను దాని పూర్వవైభవము నశింపలేదు. అందు లకే కవి యాభవనమును వర్ణించునపుడు, 'శిల్పవిద్యాకృషిలోన శిల్పికి సతం బొకభావము లూరువ్యాఖ్యయో' నని దానియం దలరు చున్న శిల్పనైపుణ్యమును ప్రశంసించుచున్నాడు. 'చాకలిమాటలో మురికిచాలులయందు 'శాంతి, సేవ, ఓర్పు' గలవని నమ్మి ఆ

‘చాకలికన్నె లేనగవుచాలున ముత్తైపుపంట మాససవ్యాకులమైన
తచ్చరణవాతరయోధధూళిఘాసర స్వీకృతమస్తపండుయి వసింపగా
అదివ్యభవనమును నిర్మించెనట. లోకప్రవృత్తిని, మానవుల స్వభావ
మును ఎఱిగిన కవిచంగ్రు డెంతచక్కగాసమర్థించెనో యూహింపుడు.

ఈప్రథమకావ్యమునందు ‘దురంత స్మృతి’, ‘దేవాలయ
ములు’, ‘మహర్షి నమిశాల’, ‘స్నానాలచెరువు’, ‘నర్తనశాల’
అనుకీర్తికలక్రింద మఱికొన్ని సీసపద్యములు గలవు. ఈపద్యములను
గ్రామ్యసందర్భమున కవి తన్ను దామరవిపోయి, భావోన్మాదమున
లేఖినిని నడపియుండువచ్చును. ఒకపద్యమునందున్న కూర్పునేర్పు
చేరొకదానియందు గన్నట్టిక, వింతరీతులతో నలరారుచున్నవి.
పాశుని పరుగెత్తుమేళముల గమలుగోనికీ గొనిపోయి, వానికి వింత
దృశ్యముల జూపి వాని డెందమునం దవ్యమానందమును గూర్చు
చున్నవి. తనహృదయమునందలి యాంకోళనమును పాశకునిహృద
యమునం దుత్పన్నమగునట్లు చేయగలుగుటయే మహాకవికి కావలసినది.
తా నే కన్నులతో లోకమును జూచుచున్నాడో, ఏహృదయ
ముతో లోకమును భావించుచున్నాడో, ఏపలుకులతో లోకమును
అలరించుచున్నాడో, ఆకన్నులనే, ఆహృదయమునే, ఆపలుకులనే
పాశకున కొకత్రుటి కాలమైనను సమహర్షవలయును. పాశుని వశ
పరచుకొని, సమయానుపూలమగ, కథావస్తువున కనుగుణముగ తన
కూర్పునేర్పువలన అతనిహృదయమునం దానందమును, దుఃఖమును,
ఆశ్చర్యమును, భయమును ఆరిని కెఱుక లేకయే సమహర్షవల
యును. తనతో వెంటగొనిపోయి, పుష్పాడిదుమారములందు విహ
రింపజేసి, చలువగెలయేటినిట జలకమాడింది, కోకిలగానఘోషలయం
దుయ్యాలలూగించి, తనగ్రంథమును ముగించి తలమొత్తుసరికి బాహ్య
ప్రపంచమును గని స్ఫుల్లిపడి, పాశకుడు భావనాప్రపంచమునందలి
మాధుర్యమున కచ్చెరువుపడునట్లు చేయగలవాడే సుకవి; అతడే
గవ్యశు. వానిగ్రంథము లాంధ్రవాణికి మిగుల యలంకారమును
గూర్చు భూషణములు. ఆధునికాంగ్రకవిప్రపంచమునం దట్టి
కవులు లేకపోలేదు. వారిలో సుబ్బారావుగా రొకరు.

“బాకుపోటున చిమ్మబడిననెత్తురుజల్లు
వెల్లవేసెనె రాజవీధి నిచట”

* * * *

“అంత్యసందేశగాఢాలింగనంబుల
కలియనొత్తెనె చురకత్తి యిచట”

* * * *

“శిరము తెగి మొండైమై కోటబురుజుమీద
పడకనిలదిన ‘కాపలా’ భయముచేత

కాత్రవులు కోట కెగబ్రాక జంకి సమయ
మునకు నేమక తలదాచుకొనిరె యిచట.”

* * * *

ఈపలుకులు వినినంతనే పాశకునిహృదయమునం దింతవర కధి
వసించియున్న ప్రకాంతిత కరగిపోయెను. వివరింప వీలులేని యావేశ
మేదియో, ఆతనియం దుద్భవించుచున్నది. అతనికనులయెదుట
గన్నట్టుచున్న దృశ్యము లొకత్రుటికాల మతని నెచ్చటికో గొనిపోవు
చున్నవి.....ఆ నెత్తురుజల్లు బాకుపోటున చిమ్మబడినదట! ఆచుర
కత్తి, అలింగనసమయమున, అందును ‘అంత్యసందేశగాఢాలింగన’
సమయముట.....కలియ నొత్తెనట!..... కోటబురుజుమీద శిరము
తెగిపోయినను అట్లే నిలచియున్నాడట కాపలావాడు!.....ఎంత
టిరాజధిక్షి!...ఎంతటి యకుంతితమును కార్యదీక్ష!
అచ్చటే, హారతిపాగల తావికి కత్తు లెగయుచున్నవట,.....ఏమి
కోలాహలము!.....ఈ పలుకులకు, దాశ్యశృంగిలములచే బంధింప
బడియున్న ఆంగ్రనిహృదయము కట్టతెగినచెరువవలె, నురుగులు
గ్రక్కుచు కదలిపారుచున్నదే!

* * * *

విల్పాలయముకడ, తెలుపుచుక్కలతో రమ్యముగానున్న
శిలావేదులను గాంచి,

‘ఏదేవి చిలికెనో ఈపాలమీగడ

విల్పాలయశిలావేదులందు’

అని నుడిచి, ఎన్నియో భావములను హృదయమునం దుత్పన్నమగునట్లు
చేయుచున్నాడు. “ఏరాజుతూగెనో ఈతులూడోలలో తులసి బం
గారుమొక్కలకు మ్రొగి” అని యచ్చటనున్న ‘రాజుగారిత్రాసు’
అను రాతిస్తంభములను గాంచి నుడిచి, తనతో పాశకునకుగూడ విషాద
మును గల్పించుచున్నాడు.

స్నానాలచెరువును వర్ణించుటయందు కవి ప్రదర్శించినచాక
చక్ర మపారము. ఆంగ్రవైభవము ఊణించుటకు ప్రారంభించినది
మొదలు, తెలుగువాని యానందము, ధైర్యము ఏరీతి సన్నగి
లెనో విచిత్రముగ కవి చిత్రించినవిధము నొకింత తిలకింపుడు:

“అతిగులస్నానాలకై త్రవ్వినారటో పనిబూని యీరాతిపలకచెరువు
పొడిపించినారటో మడిబట్ట తగిలిన రకరకంబుల గుబ్బరాతిమేకు
జపతపంబులకయి సమహర్షినారటో పుణ్యాంగనలు రాతిపూలపీట
కరగించినారటో గంధాక్షతద్రవ స్ఫటికశోణిత రాతిపాలసురుగు

నానతడవినధూమియై సానవడిన
ఇనుపకమ్మియునై శోతగనినకొయ్య
ముక్కయై నీటిబొట్టులమొనలు కరుగు
చందనంబయ్యె తెల్లవజ్రాలగుండె
నాడు, తురకలు భేదించునాడుగూడ.”

ఈపద్యమునందలి క్రమాలంకారమువలన, కవి పాశకునిహృద
యమునం దెంతటిభావములను రేపబ్రయత్నించుచున్నాడో కను
గొనుడు. ఈపద్యమును చదువునపుడు దైజయంతిలీలాసమునందలి

“ఆ విప్రోత్తము వజ్రపంజరనిభంబై నిశ్చలంబైన స
ద్భావం (బంగనసాహచర్యగుణసంపర్కంబునన్) లోహమై
గ్రావంబై దృఢదారునై తరుణవృక్షంబై ఫలప్రాయమై
పూవై తన్యకరందమై కరగబో బోనీశ్వరుంబల్పనై.”

అనుపద్యము జ్ఞాపితివచ్చును. తెలుగువజ్రాలగుండె, ఇనుపకమ్మయునై
కోతగిన కొయ్యముక్కయై, తుదిని నీటిబొట్టులమొనలుకరగు
చందనం బయ్యెనట. ఇందు సీసపద్యమునందలి ‘రాతిపలకచెరువు’,
‘రాతిమేకు’, ‘రాతిపూలపీట’, ‘రాతిపాలనురుగు’ అనుశబ్దము
లకును, గీతమునందలి ‘వాసతడసినభూమి’, ‘సానవడినఇనుపకమ్మ’,
‘కోతగినకొయ్యముక్క’, ‘నీటిబొట్టులమొనలుకరుగుచందనము’,
అనుపదములకును గలసంబంధమునందలి యౌచిత్యము పాఠకుల కమే
యానందమును గూర్చుననుటలో నాశ్చర్యము లేదు. ఈమార్పు
నందలిక్రొత్తపద్ధతి మిగులప్రశంసించదగినది. మఱియు నర్తనశాలను
వర్ణించుచు,

“కాళ్ళపారాణి చిక్కిన నృత్యవేళలచెనుటలో కరగిపోసిన—‘చార’
చక్రభ్రమణవేళ జలతారుతలకట్టు తెగినముత్యాలుదిద్దిన—‘ముగ్గు’
విశ్రామకేళికావేళ వాదించి పచ్చీసుగోనెంచి కచ్చిన—‘పాపు’
నృత్యగానపరీక్ష నెత్తి దినాభ్యాసమునకు ధరించి విప్పిన—‘గజ్జె’”

నేటికిని ‘కిన్నరాంగనానిచయ మాండ్రరాజకన్యానుసరణపరత్వమందు
తెలుగునర్తనశాలలో తిరుగుతన లేగిపోలేదు, చెరగలేదు, పంట
గడితప్పులేదు. సప్తస్వరాల కనుగుణంబుగ మానినదిలేదని కవి క్రమా
లంకారసహాయమున పాఠకున కిప్పటికిని ఆంధ్రనైభవము నశింప
లేదని ధైర్యమును గఱపుచున్నాడు.

మనస్విత మహామేధావుల కుండులక్షణములలో నొకటి.
వారియూహ లభ్యున్నతములై సామాన్యులకు చేరువలో నుండువు.
ఒకవస్తువును తిలకించునపుడు మనము గ్రహింపనేరనివిషయముల
నెన్నిటికో వారు గ్రహింపగల్గుదురు. వారియూహలను గుర్తించు
టయే మనకు కష్టము. ఈపద్యపాదములందలి భావమును తిలకింపుడు:

“ఈజీర్ణకుగ్రామ మేమిమాపించును తెనుగురారాజుపండినయశస్సు”

“ఈపాడుగుళ్లలో నేమిశేషించెను తెలుగుభక్తుడు కత్తితెగినయెరుపు”

ఆధునికకవికుమారులయం దిట్టిలక్షణములుకలవా రుండుట ముదా
వహము.

కొంతవర కిట్లు హంపీక్షేత్రముయొక్క నేటిస్థితిని వర్ణించి,
కవి సర్వసాభాగ్యముల కాకరమై వెలసినపట్టణ మీరీతిని నిర్మాత
మగుటకు కారణము నూహించుచున్నాడు. ఎన్నియో సంశయములు
వచ్చినవి:

“గురుపూజలో తృప్తి కుదురని సన్నాధిపిరుసప్రయోగములక వంచించె
నేమొ

నిరీగర్వమున దృష్టి చెదరిన సిద్ధాంతి గుణకారలభి సంకుచితమేమొ

కవిరాజుపద్యసంకల్పహర్షంబున విషమాక్షరంబు కన్పింపదేమొ
దాసియయ్య పతివ్రతాత్మభంగముకోడి నిట్టూర్పులోనగ్గినిలిపెనేమొ
తెలుగురాజుకు పుట్టిన తెనులుపురువు

తొలిచెనో యేమొ ఆంధ్రుల తొలకరిసిరి

కానినో ఎన్న డనుకొన దీనచరిత

కాస్పదంబయిపోవునే ఆంధ్రమాత!”

అని వాపోవుచున్నాడు. శ్రీసుబ్బారావుగారి కళాప్రతిభలను
చాటుట కీ ప్రథమకావ్య మన్నివిధముల తగియున్నది. ఇం దొక
కథ వర్ణింపబడలేదు. ఒకరాజుచంద్రుని చరిత్ర ప్రస్తరింపబడలేదు.
కాని ప్రకృతిసౌందర్యము శిథిలమైన రమ్యహర్ష్యములవర్ణనలుమాత్ర
మే యిందు పొందుపరుపబడినవి. ప్రకృతి నారాధించు కవివర్యుని
ప్రతిభ వెలువడుట కిట్టివే మిగుల తగినస్థలములు. హంపీనైభవమును
తాము తలచినట్లు శ్రీసుబ్బారావుగారు పాఠకుని కన్నులయెదుట
గప్పించి ధన్యులైనారు.

హంపీ స్థాపన :

హంపీస్థాపనమును గూర్చి ఎన్నియోకథలు వాడుకలో గలవు.
ఆనెగొండప్రభువగు జంబుకేశ్వరరాయలు మొగలుచక్రవర్తి మహ
మూదులతో నేనాని యగు బహాద్దీక్ అనువానికి అభయహస్త
మిచ్చెనట. తనపై తిరుగుబా టొనరించినవానికి సహాయమొసరించిన
జంబుకేశ్వరరాయలపై గోపించి మొగలుచక్రవర్తి పెద్దసైన్యమును
వానిపైకి బంపెను. కంపిలానగరముకడ జరిగినయుద్ధమునందు జంబు
కేశ్వరరాయలు మృతు డయ్యెను. ఆనెగొండి తురుష్కులవశము
కాగా, మల్లిక్ సాహెబు అనువానిని, సుల్తాను, తాతప్రతినిధిగ నేర్ప
ఱచి స్వదేశమునకు వెలిపిపోయెను. వెంటనే ప్రజలు తిరుగబడిరి. ఇది
గాంచి, కారాగారమునం దుంచబడిన సోదరుల నిరువుర వదలి
యందు హరిహరునకు సుల్తాను రాజ్యమునొసగెనని యొకకథ గలదు.
“హంపీక్షేత్రము”నందలి కథకును, ఈ వైకథకును చాలభేదములు
గలవు. మొత్తముమీద కా. శ. ౧౨౫౮ ధాతృనామసంవత్సర
వైశాఖశుద్ధసప్తమినాడు పుష్యమినక్షత్రయుక్తసింహులగ్నమున శంకు
స్థాపనము గావించబడెను. నూనిజ్ అనుచరిత్రకారు డీవిషయమును
బలపరచుచున్నాడు. కాపలూరుకాసమునందు వైపుతాంతమంతయు
కలదు.

ఓరుగల్లు ఢిల్లీపాదుషాలవశముకాగా, హరిహరుబుక్కరాయ
లను జూచినాగానుంచుకొని యుద్ధములో తనకై నఖర్చునంతయు నొస
గినవారిని వదలివేసెదనని ఢిల్లీపాదుషా పలికెనట. కాని తెలుగువారు
డబ్బు పంపలేదు. కొన్నిదినములవరకు వేచియుండి, తుదిని లాభము
లేదని తలచి పాదుషా వారిని విడిచి వెల్లిపొయిననియు, అన్న
దమ్ముల సిగ్గువలన అడవులలో తిరుగుచుండగా, విద్యార్థిగణ్యస్వామి
వారిరాజలక్షణములను గాంచి హంపీలో వారిని ప్రభువులుగా నిలిపి
వట్లు వేరొకకథ గలదు. అనాదర్శనవలన కోపించి, విద్యార్థిగణ్యస్వామి

తుదినీ కపించినవిషయ మిచ్చట మార్పుచేయబడినది. ఈపైకథనే శ్రీ సుబ్బారావుగారు గ్రాహించిరి.

ఈ కార్యమును ప్రారంభించుటయందు కవి మిగుల చతురితము చూపియున్నాడు. సోదరులను విడచుటకు పాదుషా ధనముతోరి నపుడు, తెలుగుతల్లు లోరుగల్లుపురవీధులందు నిలచి,

“ప్రారంభోదయ నైజజేజులును పారంపర్యశౌర్యాగ్నికి
లారక్తాక్షులు దీనులై తురకసమ్రాడ్వద్దలై, వాంచి నా
రా రత్నా ర్పితశీర్షముల్? జలదధారాభిన్నమై మేరువే
నీ రైపోయెన? చూతురా తెలుగురాణీగర్భనిర్భదముల్?”

అనిఘోషిల్లి పలికినారట. హృదయములను తాండ్రివింపజేయగల పలుకులను తెలుగుతల్లులు పురవీధులందు నిలచి పలికినను ‘కాసుగూడ బండికృతతూత్యుత్పన్ననిరతిన్ వ్యయపెట్టలేదట తెల్లవారు. అందు లకే వదలివేయబడిన సోదరులు,

“సిగ్గుపడిపోయి శక్తిలో మ్రగ్గిపోయి
కారడవులందు తిరుగుచున్నార బాలి
బ్రహ్మవిద్యాఫలప్రాప్తి ప్రభలజిమ్ము
మాధవస్వామి కరగి సన్మానమిచ్చి.”

అపుడు, ‘కుండేళ్లుబోయల ననుకరించు వేటకుక్కల తరుము పవిత్ర దేశ మరసి’ అచ్చట తన పేర నొకపట్టణము నిర్మించి, హరిహరుని రాజుగా జేసెనట విద్యారణ్యులు :

“విష్ణువర్ధను డవుడు. నన్నెనట, హర్ష
బాష్పపులకితశంపాభవంబు నూత్ను
లేజ మొక్కటి ఆంధ్రధూడేవు నొసట
తోచినది యంట దేవదుందుభులు మొరయ.”

ఆశుభసమయమునం దరుదెంచిన భూసురులతో నొకరు ‘తృప్తిం జెందగాలేక కోపించె’ నట!

“ఆకోపమె కాపంచై
కాకోలనిమిగ్ని రేచి కాలినదట ను
శ్రీకము విద్యారణ్యుని
దైకము హంసీపురీమహాశ్వఖరమున్.”

విజయనగరవివాళసమును వర్ణింపవలసివచ్చినందులకు దుఃఖించి, కవి చేయునది లేక, ఒకసారి దాని పూర్వవైభవమును నెమరువేయుచు తుద కెట్లు హృదయమున కాంతిని నెలకొల్పుకొనుచున్నాడో తిలకింపుడు:

“నిలిచినన్నాళ్లు నొకతీరు వెలిగినదియు
వెలిగినన్నాళ్లు మిథమిట్లు గొలిపినదియు
విజయనగరము చరిత్రలో విస్మృతముయి
కవిసువాక్షిరజీవితాంకము వహించె.”

విద్యారణ్యులు :

“తెల్లభువనప్రళయంబున కడ్డుకట్టవేసిన మహనీయుమూర్తి” యగుటచే విద్యారణ్యస్వామిని కవి మిగుల గొనియాడెను. ఓరుగల్లు

పురము మహమ్మదీయులవశము కాగా, ఆంధ్రసామ్రాజ్యలక్ష్మి నిలువ నీడలేక, అల్లాడుచున్న సమయమున చేరదీరి, విజయనగరమున నివసించుతగు పరిస్థితులనుగూర్చిన విద్యారణ్యస్వామి ప్రతి యాంధ్రుని వలనను పూజింపబడవలసినవాడేకదా! అందులకే

“చెరచినదాని బాగుపడచేయుట దుర్లభ, మట్టితెల్లురా
జ్యరమను, ఓరుగల్లునిలయంబున కోటలుపడ్డ రాళ్ల పెన్
బరువుల క్రుంగుదాని సులభంబుగ పైకి తెరల్చి దివ్య సుం
దరరుచిమూర్తి చేసితివి తల్లిఁబుణంబును తీర్చినావుపో.”

అని పలికి విద్యారణ్యుని యశస్సునకు మరింత వన్నెగూర్చు చున్నాడు. పైన, గీటుంచినపద్యభాగమునం దెంతటికాకుపు గలదో పాఠకులు గ్రహించి యానందించెదరుగాక. ఇట్టివియే గొప్పపోకడల వరుసలోనికి వచ్చును. సామాన్యులనకవుల కిట్టివి యలవడుట కష్టము.

నేను మహాత్మునియందు గన్పట్టుచున్న మానవాతీతమును స్వభావ మొకటి విద్యారణ్యునియందును కలవని సర్వజ్ఞుడగు కవి కనుగొని నాడు. అందులకే,

“ఇహపరంబుల మతరాజకీయములను
ఒకటికొక్కటి పాసగని వికటవస్తు
జాలముల నైక్యపరచి నిస్సంగమందు
సంగిచై, సంగమందు నిస్సంగిచై తె?”

అని ప్రశంసించుచున్నాడు. మఱియు,

“అపుడు పురాణకాలమునయందు వసిష్ఠుడు, రాజ్యకీర్తలన్
నిపుణుడు సాధుపుంగవుడునేడు మహాత్ముడు గాంధీ, తెల్లధూ
మిపలిచిరిత్రవేశను సుమీ యుగమధ్యమునందు నీవు; మా
తృప్తదనితాంతపూజకు విధించినబ్రహ్మము మూడుమూర్తులా?”

యని పురాణకాలము, యుగమధ్యకాలము, వర్తమానకాలములందరి రాజనీతివేత్తల మువ్వరను పేర్కొనెను. వీరు మువ్వరును భారత దేశపూజకొరకు మూడుమూర్తులుగా నవతరించిరట. వీరికాకర్తలని నట్లు ‘ఒకమాటచెంట, ఒకపోలికచెంట, ఒకభావముచెంట’ చేయ బడెడు పాత్రపోషణ మహాకవియే చేయగల్గును. మహారసజ్జాడే దానిని తెలిసికొనగల్గును. ఇందు గాంధీవిద్యారణ్యుల రాజకీయవేత్తత్వము, తపోనిష్ఠ మన మెరిగినవే. వసిష్ఠుని తపోనిష్ఠనే మన మెరుగుదుము. ఆయన రాజనీతివేత్తత్వము మన కేమియు తెలియదు. ఇచ్చట కవి దానినిగూడ వన మనస్సునెదుట విచిత్రముగ సాక్షాత్కరింపజేసి నాడు. ఈరీతి ఒకమాటతో ఎంతోపూర్వకభావిషయము ధ్వనించుట కొద్దిమంది చేయగలరు.

“యమాతేరివ శర్మిష్ఠా భర్త ర్భూమతా భవ”

అన్నమాటలో శర్మిష్ఠయెడల యయాతికి గల బహుమానము ఎంతో ఊహకందరానిదిగా నున్నది. దానిని కణ్వుడు పోలికతెచ్చుకొనెను. అట్లున్నది యిచ్చటి యీదశివశబ్దప్రయోగము.

విద్యారణ్యుని శిలావిగ్రహమును గాంచి భావనాప్రపంచమునం దుద్భవించిన పిల్లగాలితరగలపై కవి యేరితీ తేలిపోవుచున్నాడో చూడుడు:

“ఆకన్న మూతలో సంతర్పిల్పపంచానిలస్తంభనాత్మార్చి మెరుగు
ఆబొమ్మమోడ్చులో నసమాత్యంబెగ కన్నుమంటు లేగిన సుల్లుమాటు
మణుగు

ఆకన్న విప్లులో నభిలరాజన్య శియైత్తుమైన వర్చస్సు మెరయు
ఆదిరునవ్వులో నాంధ్రసామ్రాజ్యసుక్రి నక్య శీవసశిల మిముడు.

ఈ శిలావిగ్రహమునందె యింతగొప్ప
కుదురుకొనియుండ ఊహలు గుములుకొనిన
ఎంతవాడవో నిను స్తుతియింప గలమె?
విజయనగరాంధ్రదేవుడవే నిజంబు.”

కనకాభిషేకము :

కవి కథలో తన్మయుడై కథలో నావేశముకలదోట, ఆ
యావేశముతో తా నొకడై కథను నమ్రపుపట్టుల నిర్వహించగల్గియుం
డుట అప్రతిహతమైన మహాకవిలక్షణము. సూరన్న మొదలగు మహా
కవు లిట్టిలక్షణములను తమగ్రంథములయందు వెలువరించియున్నారు.
ఈగ్రంథమునందు ‘కనకాభిషేక’ మనుకావ్య మట్టిదానికి ప్రబల
నిదర్శనము. ఈకనకాభిషేకమునుగూర్చి వీతికర్తలు, “శిల్పమును
మాట కున్న అర్థములో కొంతభాగము దీజనిర్వహణముల ఐక్యమని
చెప్పవచ్చును. ఇది చాలగొప్పకావ్యరచన. కావ్యమునకాదు నాట
కమునకే గుణము. విశాఖదత్తమహాకవి ఆరవయంకముతో సిద్ధార్థకు
నిచే ననిపించెను:

‘తాకిం కుకవికివిజాడఅస్స విఅ అల్లం
ముహా, అల్లం ణివ్వహాణే.’

(‘కుకవి వ్రాసిన నాటకమునందువలె ముఖమునం దొకటి,
నిర్వహణమునందొకటి’)

ముఖనిర్వహణముల యొక్కయు సాధించలేని కవి కుకవి
యన్నాడు. ఈవిక్యము మహాత్మ్యప్రముగా నిర్వహించెనా అతడే
మహాశిల్పి; అతడే మహాకవి. ఈకావ్యమునందు ప్రతిదీన్నికావ్యమును
ఇట్టి శిల్పమునకు ఉదాహరణముగా నున్నది. కనకాభిషేకము
చూడుడు. భావావాదవిషయమైన డిండిముని ధక్కాప్రశంసతో
కావ్య మారంభింపబడినది. తెల్లుభాషాసరస్వతి ‘వైడిబింకాలకట్టల
తోడినగులు’ విలుచుకొనుటతో నపసానమైనది. కథావస్తువునకు చెం
దని అనవసరమైన ఒక్కయక్షరము లేదు కావ్యముచెడిచూచినను.
ప్రత్యక్షరము, ప్రతిశబ్దము, ప్రతివాక్యము, ప్రతిఅలంకారము,
కావ్యరసానుష్ఠానముగానే పరుగెత్తును. ఇది మహాశిల్పము. మిక్కిలిగా
మాట్లాడినచో ఇంతకన్న శిల్పము లేదని నుడివియున్నారు.

ఉన్నయూరినా డన్న ప్రతివానికిని అభిమానమే. పారు
గూరినా డెంతప్రజ్ఞావంతుడైనను, వానియెడ ప్రజలు గౌరవమును

జూపరు. వానివేషమును గాంచి పెక్కురీతుల బల్కెదరు. లోక
ప్రవృత్తి నెరిగిన కవిశేఖరు డందులకే, శ్రీనాథునితలపై ‘జాట్టు
గోష్ఠాద్రిమంత’యు లేచెనియు, ‘వైవమతాచారసారాస్వాసండుట, కన
రాదు పోలింగకాయ మెడను’ అని ప్రజ లెన్నియోవిధముల పలికి
నట్లు వివరించియున్నాడు. ఈ పలుకులను విని, కవిరాజు తనవెంట
వచ్చు శిష్యులను గాంచి నవ్వెనట. ఇంతలో ‘తెలుగుకవిరాజు రాయల
కొలుపునందు చరణమును మోపె సభయు నిశ్శబ్దముపును.’ గీటుంచిన
వంతపడములపొందికతో శ్రీ సుబ్బారావుగారు పాశకునియెందు
జరుగుచున్న విషయమునంతయు కన్నులకు గన్పడునట్లు చేయు
చున్నారు. రాబోవుకావ్యములందును, ఇట్టివానివలన పాశకునిహృద
యమునం దాసక్తిని గల్పించుచున్నారు. మం దేమిజరుగనున్నదో
యని పాశకుడు తన్ను దామరచిపోయి కథయందు నిమగ్నుడగుట
కును, ఎంతపెద్దవిషయము నైనను వినుగులేక చనువుకును ఇట్టి
వంతపడముల పొందిక సాయపడును. ఇట్టిస్థలములనే ఆంగ్లమునందు
dramatic గా నున్న వనెదరు.

శ్రీనాథుడు దక్షిణకరము పైకెత్తి అవనిపతిని ‘ఆకుధారి
నాశిస్సు లాడినాడు.’ తనప్రతిభావిశేషములను రాజుగారికి విన్న
వించినాడు. తరువాత ‘కవివంకకు తెలుగులేను మాచె డిండిమధట్టును
చూచెతిరిగి, రణమువాక్కులలో విజృంభణము పెరిగె స్రుక్కతిప్పకొ
వీలు లేకుండె నధకు.’

శ్రీనాథకవిసార్వకౌముని ప్రతిభ సభ్యులందరకు విదిత
మయ్యెను. ప్రముఖునందు

“డిండిమధట్టుకీర్తిని గడించుటలో మునిగేరినాడు త
త్పండితి దక్షిణాపభవిభావరి నన్నెల లారహానె మా
ర్తాండునిలేజ ముట్టిపను తన్మృగుమండల నామహాత్మ్యపై
దండుకువచ్చినాడు ఫలితం బనుధూతముకాదె వీనికిన్.”

అని సభ్యులందరు సంశయించిరి. కాని శ్రీనాథుని పాండిత్య
ప్రకర్ష మన కచ్చెగురుపుపడి, తన్మయుడై, ఐకంశ్యమున “బాగోయీ
కవిరాజ, యింతటిప్రభావం బున్నదం చెంచలేదే గర్వం బనుకొన్న
నీపలుకులన్నీ సత్యమున్ జేసితా.”

“అనిరి పండితసభ్యు లందంద లేచి

జయజయార్థటులందు వర్చస్సు డింది

పాలిపోయిన డిండిమధట్టుబిరుద

కంకణములెల్ల తెగగొట్టగానపు”

ని యనుమతిని బడసి తదుపరి డిండిముని ధక్కను పగులగొట్టిరి. ఆ
ధక్కను పగిలించునపుడు ‘వలయంబులునై విరళీకృతంబులై
కదలేను శబ్దముల్.’ ఈపద్యపాదమునందలి రచన కాలిదాసునకు
సన్నికృష్టమైన శక్తికలది.

ఓడింపబడిన డిండిమధట్టుసహితము తనయోబుది చింతపడ
లేదు. తనకు గౌరవమే జరిగినదని తలచెను. అందులకే,

“నన్ను మించినవానిగా నెన్నుకొందు
బిరుదుములు తీసివేతును భేరి నిచలు
పసులొట్టింతు”

నని పల్కెను, తదుపరి

“నృపు డెవరి నెట్లుగా సత్కరించునో యని
స్రక్కిగులు మించుకొనుచును గూరుచుండి,
నవ్యకవిత్వాసనాధ శ్రీనాథసుకవి
యూహ లంఘోధినియై యూసు”

చుంకిన సమయమున

“.....సభలోన పైకిగ

దై నిలిసి హేమబంకముల బెచ్చిరి రాసులుపోసివారు రా
జును తనగద్దె డిగ్గి పిలుచున్ కవిరాజును కేలుపట్టి లే
చెను పరివ్రాజ్యహృద్ నివశిక్యమై కవిరాజునాజుడై.”

కొంతతడవునకు పూజ సమాప్తికాగా, తెలుగుప్రజలను దీవించుచు,
తెలుగురాజును దీవించుచు నింహాసనమునుండి కవిసార్వభౌమడు
‘సువర్ణశేఖరై లేచెను.’

పూజించినది పంకితప్రభువు. పూజింపబడినది కవిరాజు.
ఓంపింపబడినది కవి. ఈ దృశ్యమును వర్ణించునది కవి. రసముదిప్పిలు
నదియై పాశురనిహృదయ మీఠుబ్బము చూర గొనుననుటాగో సతిశ
యోక్తి లేదు. ఆంధ్రసామ్రాజ్యలక్ష్మి పసుపుకుంకుమలతో నలరారు
చున్న దినములలో నొకమహారాజు కవిమహాకవిని పంకితులమ్రాల
పేరొలగంబున కనకాభిషేక మొనరించె నని వినినంతనే అన్యాయా
సంఘమునం దోలలాచుచున్న మనమే యాకాలమునందు బ్రతికియు
న్నచో నెట్లుండెడివో యని పాశుర హాహాప్రపంచమున కొంతవరకు
విహరింపకపోడు.

“విజయనగరాంధ్రలోక మావేశకవిత
కన్నకాసుపు ముత్యాలకాంతులందు
తెలుగుభాషాసరస్వతి విలుచుకొనియె
వైశింకాల కట్టులతోడి నగలు.”

సుబ్బారావుగారు శ్రీనాథుని సీసపద్యాలి చక్కగా నమర్చు
కొనగల్గిరి. కవిసార్వభౌముని సీసపాదములు తెచ్చి తమవానియందు
కలిపి తెలిసినవారినే భ్రమింపజేయుచున్నారు. ఇది వీరి ఘనముగ
కవితారీతి కొకనిదర్శనము.

రాజ్యప్రదానము :

శ్రీకృష్ణదేవరాయలు దక్షిణదేశ దిగ్విజయసన్నాహములో
నుండెను. చోళరాజులు, పాండ్యులు, ఇదివరకే పెక్కుసార్లు
రాయలపైకి దండెత్తివచ్చిరి. చోళులది తంజావూరు. పాండ్యులైదు
గురు అన్నదమ్ములు, ఏకోదరులుకారు; తల్లులు మువ్వరు; ఒక కులము
నకు చెందనివారు. పాండ్యశ్రేష్ఠునిది మధుర. అది రాజధాని. కొంత

కాలమువర కన్నదమ్ము లొకటిగానే యుద్ధముచేసిరి. కాని చోళ
రాజువల్ల కులమున కెక్కువతక్కువ అనే ద్వేషము లేర్పడినది. ఇది
సంఘటనకొని చోళరాజు పాండ్యసోదరులను నల్లరిని కైదు పట్టుకొ
న్నాడు. మొవటిపాండ్యకుమార్తెయు కృష్ణరాయని కరణుజొచ్చెను.

దేశమునందెల్లడల నశాంతి ప్రబలియుండెను. “దక్షిణదేశముల్ల
కల్లలోలములూ స్పృశించుటకు రోసిన దిన్నము నీర్లు వేశకున్.” ఇట్టి
యల్ల కల్లలోలము నడచివేయుటకునూ, తనసాయము గోరినవానిని రక్షిం
చుటకును నేనానిని బిలచి,

“నాగమనాయణా! సమరనాట్యము సల్పుము.....మాకు న
భ్యాగముడైన యీతనివృషత్వము నిల్పుము, గొల్పు మాశలన్”
అని కృష్ణరాయ డానతిచ్చెను.

“కేళిశ్రీ దేవర కృతకృష్యుడైతి
కాచినువాడనే? కంపింపజేచు
చోళభూపతి మీకు జోహారునేయ
నెలవీయు డనిపోయె నేనాధపుండు”.

కొలదిదినములు గడచెను. చోళులు, పాండ్యులు, నాగమనీనిచే
నోపింపబడిరి. కాని నాగమనీడు స్వార్థపరుడు. తాను సంపాదించిన
రాజ్యమును తానే యనుభవించుటచెను. ఈ యుద్దేశ్యమును ఆంధ్ర
సమ్రాట్టునకు బాగుమాలమున తెలియజేసెను. ఈజాబు కృష్ణ
రాయనికొలుపునకు వచ్చినపుడు, అచ్చటిదృశ్యమును కవిచంద్రు
డతిరమ్యముగ నీక్రిందివిధమున వర్ణించెను. ఇచ్చట వృత్తము మార్చ
బడెను. ఆంధులకై యంతచక్కదిన హాఘట్టమునం దలరారుచున్నది.
ఆసమయమునం దున్నశోభ, గంభీరత (Grandeur and seri-
ousness) క్రొత్తవృత్తిమును ప్రవేశపెట్టుటచే కలిగినది. రసపుష్టికి
సమయానుమాలముగ తగినవృత్తము నుపయోగింపవలసినవిధ మెల్లరకు
తెలిసినవిషయము కాదు.

బాబుచేరినంతనే,

“కృష్ణరాయలమోము కంబాయ మెరిచి
అతిగోషవృత్తతామ్రాతన డైనాడు
కోప మెన్నడురాని గుర్రరత్న జలధి
నడిరోయినరె శబ్దపక్షమై కొలువు;
మనుజులే లేనట్లు మాటుమంగ
సభ్యులు జీవచ్ఛవంబుల ట్లాకట
కొయ్యబారినవారు, కొసకన్నులందు
ప్రాణాలతో నల్లబడిపోయినారు;
మంత్రితిమ్మరుసయ్యమాత్ర మారేని
ప్రక్కను కేల నొకపత్రికన్ పూని
నిఃశ్వాస మూడుచు నిర్భయున్నాడు
దీర్ఘచింతామగ్నధీ శక్తియుతుడు.”

పైన, గీటుంచినపలుకు లెంతటియానందమును సాతకునకు గల్గించునో యూహింపుడు. తన కన్నతండ్రి తేని నేరీతి వంచించెనో సర్వము గ్రహించినాడు, నాగమనీనిపుడును వీరమనీను.

తిమ్మరుసుమంత్రి నాగమనీనిజాబును 'నిలుపునీరైన వీరమనీని' కందించినాడు. అతడు

"నేత్రములు లేఖమీదనే నిలిపినాడు

కాని చూ పాత్రలోనే విలీనమయ్యె

తండ్రి—రాజు—నేపాధర్మతత్వరతయు

హృదయమును ముట్టి నుంటుల నెగయుచుండె."

'అంతలో రాజు సభకలయంగజూచి',

'ఆ నృపద్రోహిణిమైన, అతనినైన

బహుమతిగ మాకు నీగలవా డొకండు

కొలుపులో నున్న యీకత్తిగొనునతండు'

అని పలికెను.

ఏమి యా ఆశేకము! ఏవీరు డాకత్తిని గోరుకొనును? పాతకుని హృదయము తత్తరపడుచున్నది. తండ్రిచేసినద్రోహమువలన కుమారుడును వీరమనేనికి నిండుకొలుపునగలిగిన యవమానమునకు పాతకుడు చింతపడుచున్నాడు. కాని నల్లనిమేఘముల గములమాటునుండి వెలువడిన సూర్యామివలె, దుఃఖితిమిరముతో నిండియున్న పాతకుని హృదయమునం దెంతటిహర్ష జ్యోత్స్నను, చతురుడుకవి వెలయుచున్నాడో తిలకింపుడు : రాజారీతి కత్తిని చూపినంతనే,

"వీరమనీను జాబునటు వీచి మహాద్భుతకాంతలోచసారం
భోరుహముల్ జ్వలింప నృపమూర్తికి సంజలిబద్ధుడై అసిన్
కోరెను కృష్ణధూవిభునకున్ రిపుడై మనలెల్లునాటికిన్
దూరగుడైన నాదుపిత దూరగుడేసుమి నాకు నంచునున్."

ఈపలుకులను విని రాజు, 'దేవభక్తులలోటు తెల్లదేశంబున చూపట్టిన పంతసింఁచెను. 'నిజమైనభృత్యుడు నృపమాళి' కని తన్ జ్ఞాలు మెచ్చుకొనిరట. అప్పటి 'ఇత డీపనికి చాలు'నని తలయూపె నట. శత్రువులైన పాండ్యులుమాత్రము సంశయమును పల్లడించి రట. ఎంతయోచిత్యము! సభ్యులం దెవ్వరును వీరమనీని రాజభక్తిని అనుమానింపలేదు. అట్లనుమానించుట రాయలకుగాని, అప్పాజీకి గాని, పండితులకుగాని తగనివిషయము. రాజ్యతంత్రప్రవీణుడు తిమ్మరుసు (అప్పాజీ) అట్లు కలనైన తలంచడు. తనపాలనానైతి త్యమునందు నమ్మకముగల రాజు అట్లనుకొననేరడు. తన్ జ్ఞాలగు పండితులునైత మట్లు తలంపరు. ఎటువచ్చి శత్రువులును శరణు జొచ్చిన పాండ్యసోదరులే అట్లు తలంచుట కర్హులు. వారట్లనుకొనుటలో నెంతయో యోచిత్య మున్నది. శ్రీ సుబ్బారావుగారి యోచిత్యమున కిది పరమోత్కృష్టమైన యుదాహరణము. వీరమనీనిప్ర విమలముగ రాజభక్తి కిది ప్రబలనిదర్శనమై వెలయుగలదు. ఈతనిపాత్ర నిర్మాణ మత్యంతమనోహరముగ నున్నది.

రాజుకడ నిలిచియున్న వీరమనీని 'చేత కత్తి నిడ సభ్యులకును రక్తములు పొంగె.'

కుదకు వీరమనీను యుద్ధమున జనకు నోడించి రాజసభకు గొనివచ్చెను. రాజు నాగమనీని తుమించి 'నీకాదుకుతో గుభియింపుము పుత్రప్రభవాభోగములోననే మరచిపా మృక పూర్వపుడీదు వర్తనన్' అని నుడివెను.

ఇంతలో అప్పాజీ "గొంతెత్తి సభకు

'తంజాపురీ రాజ్య దానోత్సవంబు

జరుగు నాయత్తమై చనుడేరు' డనుచు

ఆహ్వాన మిచ్చినా డానందముకలె,

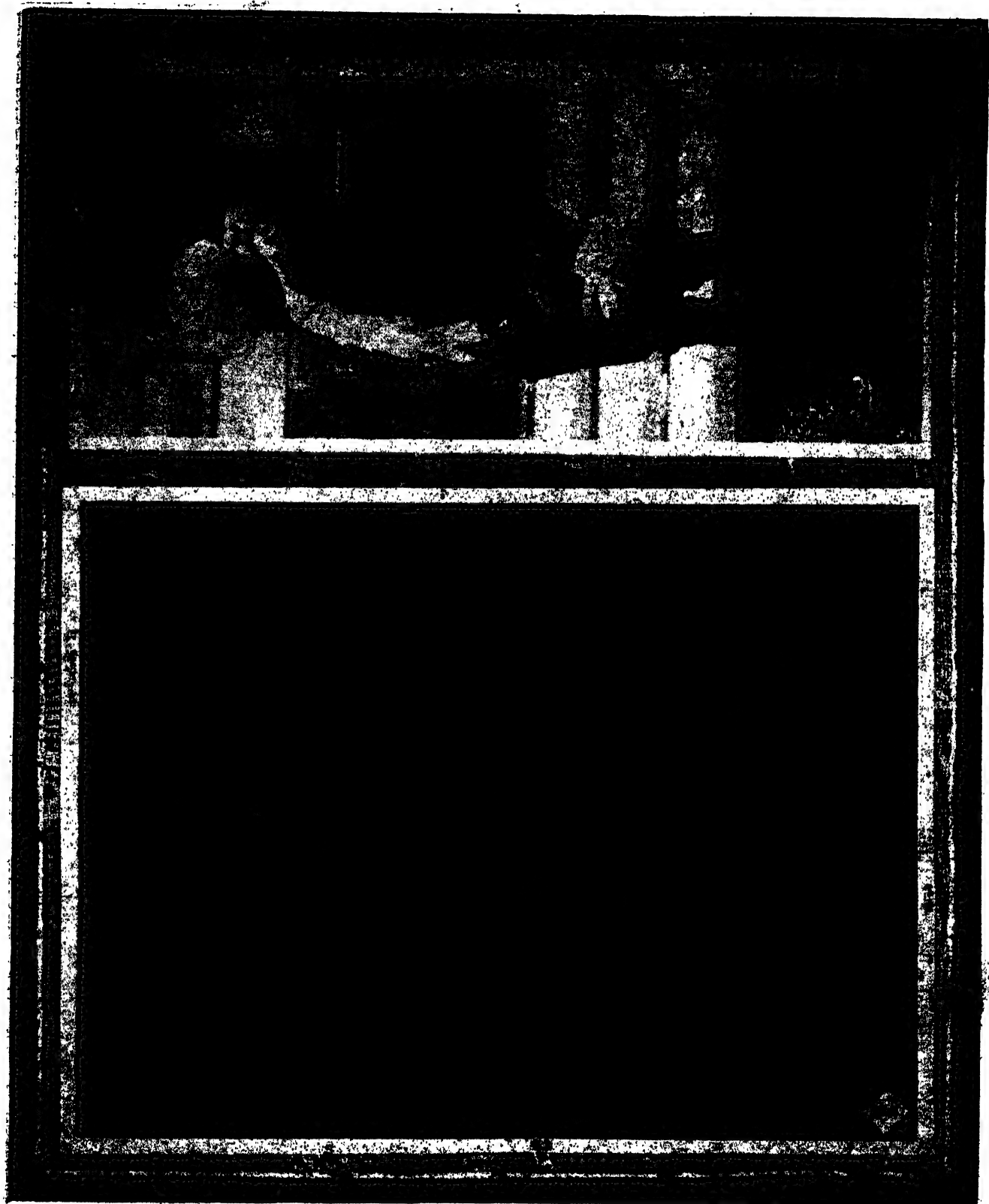
నాటి సభాస్థలి నాట్యంబొనర్చె."

తంజనగరపువీధులవెంట కృష్ణవిభుడు సకలపరివారసమేతుడై చనుచున్నకాలమున సాధగవాతంతరాంతరముల నిలిచి, ద్రావిడినిచయము పలికిన పలుకులు, కళ్యాణమంటవమునకు నలు డేగుసమయమున స్త్రీలు వానిని గాంచి పలికినవాక్యములను, ముచరిత్రలో నిట్టిదే మరియొకఘట్టమును జ్ఞప్తికిదెచ్చును.

వీరమనీనికి తంజనగరమహారాజ్య మొసగబడెను. "పెద్దన గళ మెత్తి ఆశుకవితామధువాగ్ధురీ నింది, నవ్యరాజ్యనియతుడైన వీరుని ప్రశంస యొనర్చెను, నాటిమాట నేడును కనవచ్చు తంజపురిలోని సరస్వతిమంటపప్రభన్."

తల్లి కోటయుద్ధము:

ఆంధ్రసామ్రాజ్యలక్ష్మి కవి తుదిదినములు. నిజాంషా కల్యాణదుర్గమును గోల్పోయినతరువాత దానిని తిరిగి సంపాదించవలచి, ఇబ్రహీంకుతుబ్ షాతో సంధిచేసికొని వానిసహాయమున ఆరీఆదిల్ షామీదికి దిండువడలి, కల్యాణదుర్గమును ముట్టించెను. ఆదిల్ షా రామరాజుయొక్కసాయమును గోరెను. ఏబదివేల యశ్వములతో 'నేగి శత్రురాజుల నోడించి కల్యాణదుర్గమును విడిపించెను. ఈకడ పటియద్ధమునందు హైందవసైనికులు పెక్కుదుండగము లొనరించిరి. మహమ్మదీయస్త్రీలను పరిభవించి, మసీదులను నేలమట్ట మొనరించి, అమాయకులగువారిని సంహరించిరి. రామరాజున కీవిషయము తెలిసియు మిన్నకుండెను. మహమ్మదీయరాయబారులు తనకడకు వచ్చి నపుడు వారిని తూలినాడెను. ఈకారణములవలననే మహమ్మదీయ రాజులయం దైకమత్యము కుదిరెను. ఆంధ్రభూనాయకుని వారు నాశన మొనరింపదలచిరి. తల్లికోటయుద్ధమునందు రామరాజు తా నొనరించిన యక్రమములకు తగుశ్రీ సమర్థించెను. కవిచంద్రు డందు లకే రామరాయలపట్ల నొకింత కటువుగ నున్నాడు. ఇట్లుండకను తప్పదు. రామరాయలు రాజనీతివేత్త, మహాసమర్థుడీ కావచ్చు. పరాత్పరు డొకింత తనకనుకూలముగా నున్నదిసమూలలో, నొరుల నీరీతి హింసించుటపాడియా? 'రామరాయల పాత్రప్రవేశమును



1. శ్రీరాజా మాజికారావు పెంకటగోపాలరావు బహద్దరువారు (రేపల్లె సంస్థానాధిపతులు)
(28) దివాన్ బహదురు యొక్క బాలసుందరం నాయకులగు, మదరాసు నూతన పరిశ్రమ.



1. కొమ్మరి సంకషేత్వర కవిగారు. 2. డా. జి. తిమ్మరెడ్డిగారు. 3. డా. పి. గోవిందరాజుగారు. 4. నెల్లూరు కృష్ణయ్యగారు.
5. డా. యస్. వి. రాఘవగారు. 6. వల్లూరి మూర్తినారాయణరావుగారు. 7. విన్నకోట దుర్గారావుశ్రీగారు.

చిరకాలమునుండి బాధించుచున్న మాత్ర వ్యాధులకును శగ
(గనేరియా) వ్యాధికిని క్రొత్తగా కనిపెట్టబడిన దివ్యాషధము



గనోకిల్లర్ (రిజిస్టర్డ్)

కృత్రిమములు చూచి మోసపోకుడు. "గోడి" మార్కు గమనింపుడు.

ఈ యాషధము ఇంగ్లీషుమందులను దేశీయ ఔషధములను పుచ్చుకొనినను గుణము కలుగని యెడలను, యింజక్షనులను వాక్సినులను గూడ లాభము లేక పోయిన యెడలను కడపటి ప్రయత్నముగా మా గనోకిల్లర్ను గూడ పుచ్చుకొని చూడుడు. పెక్కుయెండ్ల నుండి యున్నను లేక క్రొత్తగా కలిగినను వీరకము శగసంకటమైనను మరెట్టి మాత్రవ్యాధుల నైనను స్త్రీలైనను పురుషులైనను గనోకిల్లర్ తప్పక కుదుర్చును. మాత్రము ఝాకిగా నెడలును మాత్రము పోవుచున్నపుడు కలుగు మంట తగ్గిపోవును. మాత్రవాళమునందలి వాపు తీసిపోవును. శగవ్యాధి (గనోకోకసు) నలన మాత్రము బొట్టుగాబడుట, మేహ రోగమువలన మాత్రద్వారమునుండి పోవు తెలుపు, మాత్రద్వారము యొక్క వాపు, మాత్రద్వారము యొక్క చుట్టు వుండు పొకయొక్క వాపు, మాత్రాశయము యొక్క వాపు లేక మాత్రతిత్తియొక్క వాపు, నరముల జబ్బు మున్నగు వ్యాధులన్నియును స్త్రీలను పురుషులను గూడ గనోకిల్లరులన కుదురును. వీర్యము (సెము) పోవుట మాత్రవ్యాధులు మున్నగునవి గూడ దీనివలన కుదురును. 50 మాత్రుగల సీసా ఖరీదు రు. 3-0-0. పి. పి. చార్జీ ప్రశ్నోకము. కృత్రిమములు చూచి భ్రమ కెంద వలదు. మా "పుంజా" మార్కు గమనింపుడు.

అడ్రసు :- డాక్టరు. డి. యన్. జస్సాని, 85 గామ్ వెనుక రోడ్డు, బాంబాయి. 4.

Madras Agents:-Messrs. DADHA & CO., 52, Nainappa Naick St., P. T. MADRAS.



REGD. 1444. కారనేషన్ నియూ డైమండ్, బాలి ఫువర్ గాం, ఆర్టిసిపియల్, యిమిటేషన్ & క్రాఫ్టింగ్ ఫువర్ గాం, రంగూన్ డైమండ్, యిమిటేషన్ చక్క రసానలో తయారుజేయబడిన యెరుపుపట్ల కంపు, కుచ్చు, వైక్రాంతం, ఇంగ్లీషురాళ్లు మరియు అనేకవిధములైన రాళ్లు దొరకును. వెల సరసము. కేటలాగు ధరలపట్టి ఉచితము.

R. ముత్తుస్వామి శ్రేష్ఠి,

వరాహవ్యాపారం. పెద్దబజారుబీధి, తిరుచినాపల్లి.

హిందూస్తాన్ కో-ఆపరేటివ్
యిన్నూరెన్సు సొసైటీ లిమిటెడ్.

(స్థాపితము - 1907)

ఆములులో నున్న పాలిసీలు	రు.	7,07,69,000
జీవిత నిధి	,,	1,83,29,000
ముక్తము ఆస్తి	,,	1,57,82,000
గత అంచనాయందు ఎక్కువ మిగిలినది	,,	18,97,000
నూతన వ్యాపారము	,,	2,00,00,000

బో న సు

1932 సం॥ 30 ఏప్రిల్ తో అంత్యమైన అయిదు సం॥లకు ఎండో మెంటుభీమాపట్టాలకు యావజీవిత భీమాపట్టాలకు రు. 115/-లు. రు. 100/-లు.

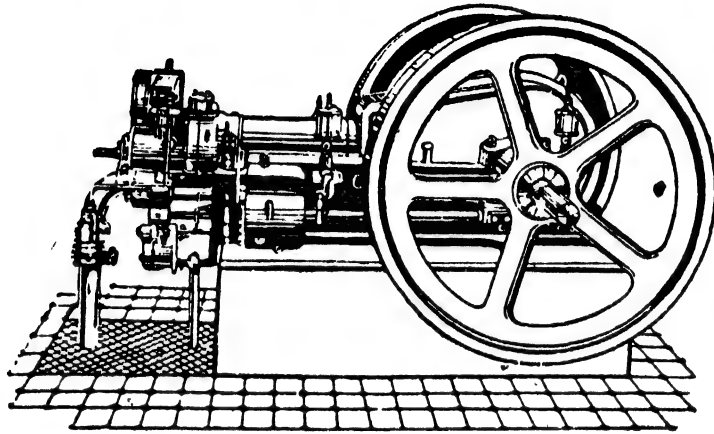
వివరములకు :-

యన్. యం. చౌదరి,
బ్రాంచిమేనేజరు, హిందూస్తాన్ కో-ఆపరేటివ్
యిన్నూరెన్సు సొసైటీ లిమిటెడ్.
"హిందూస్తాన్" బిల్డింగు,
ఆర్మీయర్ బీధి, కుత్బుజ్జు.

సరియైనఫరకు శ్రేష్ఠతరమైన యింజను...

క్రాస్ లీ

హోరిజంటల్ డీసెల్ యింజను.



Type HD. of 10, 12, 14, & 16 B. H. P.

క్రాస్ లీ కంపెనీ వారి గొప్ప ఆయిల్ యింజనులలో ముఖ్యమయిన యీ క్రొత్త చేరిక తయారు చేయబడెను. చాల తక్కువ ధరలలో, బాగుగా పనిచేయు తక్కువ హార్సు పవరు యింజనులను ఉపయోగించుకొనజాలువారికై ప్రత్యేకముగా యీ క్రొత్త క్రాస్ లీ హరిజంటల్ డీసెల్ యింజను తయారుచేయబడినది.

ఇంజనుకోట్టు స్టార్టింగ్ గలది. కొద్దిపవరుతో పనిచేయుకార్యముల కన్నిటికిని బాగుగా నక్కరకువచ్చును. ఎట్టిచౌకరకము నూనెలను వాడినను యీ యంత్రము బాగుగా పనిచేయును.

పూర్తి వివరములకు వ్రాయుడు :

CROSSLEY
High Grade
OIL ENGINES

బిన్నీ కంపెనీ (మద్రాసు) లిమిటెడ్.

ఫో. ల్ ఏ జంట్టు :—

ఉత్తరసర్కారులకు సబ్ యేజంట్టు :—

క్రాస్ లీ బ్రదర్స్ లిమిటెడ్,
ఆర్కిసేయ్ వీధి, మద్రాసు.

వైడా చిన్న సెంకట్రామన్న బ్రదర్స్,
మిల్ స్టోర్సు, కాకినాడ.

విన్నవారికి కొంతకష్టముతోచినది మాడను! అని పీఠికకర్తలు నుడివి యున్నారు. అట్లేవారికి తోచునో వారికి రామరాయలయొక్క చరిత్ర సమగ్రముగా తెలియదనుట సాహసము కానేరదేమో! అయినను, కవి రామరాయల కట్టియగారవమును చూపియుండలేదు.

తల్లికొటయధ్యధ్యప్రారంభముననే కవి పాఠకునియందు భయమును, అనుమానమును, దుఃఖమును రేపుచున్నాడు.

“అనాడే ద్విగుణీకృతంబులట, ఆంధ్రాంతఃపురస్త్రిజన
ధ్యానంబుతో, పరిపథి వీరవరధంకారావముతో, బహ్మనీ
భూనాథైక మతాగ్నిదీప్తులును శంభుస్వామివై రాజ్యదీ
క్షానాట్యంబులు తెల్లభూములును శ్రేష్ఠాదేవిసంచారముతో.”

మతియు నిష్పక్షపాతియును కవి యేమనుచున్నాడో వినుడు: విని—
తల్లికొటయధ్యధ్య మల్లు ముగియుటకు కారణము నూహింపుడు. ఊహించి—
—మన యాంధ్రరాజునే వెనుకవైచుకొని మాటలాడగలరా?

“అది వికమత్యసాధ్యంబైనదే గల్పు ఒప్పుకోరా నిజ మున్నమాట
అగి రామరాష్ట్రధూళిభరితమన్న అనిననో అభిమాన మన్నమాట,
అది మతావేశమం నంకురించిన వాంధ లేకున్న చరిత్రమే లేనిమాట
అది పురాతనముగా నవతరించిన యీర్ష్యకాదందురా చేతకానిమాట

ఇవి భ్రమరయైన, పాదుషా లేవు రొకట
కూడు టడియేల? తెల్లశక్తులకు జారి
తూలుతేల? కుట్ర లొనర్చుకొలి యేల?
పూత మదియేల తురకలు పొందుజయము.”

పైన, గీటుంచిన భాగమునందలి కవియొక్క నిర్మలమైన హృదయ ప్రకటన మెంతయూనందజనకమై యలరారుచున్నదో తిలకింపుడు.

యుద్ధము జరుగుచున్నకాలమున రామరాజు మధ్య బంగారు గద్దెపై ఆసీనుడై యుండెనట. ఇది యెంతటివిరుద్ధచర్య! అందు లకే యావేశమున హృదయమనందలి యాంధ్రాభిమానము నణచివైచు కొననేరక, సత్యసంఘ డగు కవి

“ఆపదాత్యశ్వపై నికాభ్యంతరమున
నిజకిరీటుద్యుతులు తీవి నెరప, రామ
రాజు బంగారుగద్దెపై రణమునందె
కొలుపు కుదిరి మాయాంధ్రుల కొంపకాల్పు”

అని మోహపెట్టుచున్నాడు. యుద్ధమునకు పూర్వమే పెక్కుశకునములు తోచెనట. ‘గజరాజు వెంటరాక వెనుకాడె’నట, ‘పంచ కల్యాణిగుట్టము సలింది మోరనెత్తె’నట, ‘కృష్ణవేణితరంగిణి స్తబ్ధమై పోయి కదలమానినదట’. కాని ‘నైజపరాక్రమంబు ముసలిమేధస్సు లోపల ముడుతలపడు’ టచే రామరాజు తెలిసికొనలేదు... పోరు ఘోరముగ సాగెను. హైందవనైకులు తురుష్కులభీరంగులవలన క్రమముగ నశించి పోయిరి. తననైకులకు తగినయత్నానామును పురి

కొల్పదలచి, రామరాయలు యుద్ధభూమియందు బంగారునాణెములను పంచిపెట్టెను. ఇది ప్రశంసార్హముగు విషయమా? అందులకే,

“...నిధుతో విరజిమ్ముట, తెల్లనైగో
తగ్గర మతిలబ్ధమై ధనరతంబయియుండుటగాంచి, శత్రువుతో
తురగబలంబు నొక్కపరి దూకగజేసిరి కాలమూర్తికిం
కరులటు చెక్కుచుండి తురకతో చలదాండ్రపదాతివర్గమున్.”

అని కవి వాపోవుచున్నాడు. తుదకు రామరాయలు,

“ఆరిపోవుదీపము గప్పుమనెడిరీతి
గద్దెపైనుండి దగ్గరగా నిలచిన
అశ్వమునకయి లంఘించునంతలోన
శిరముత్రెంచిరి తెగియించి తురకబంట్లు.”

కవినంద్రుడు తనకు చేతనైనంతవరకు తగినగౌరవమునే రామరాజునకు జూపించెను. అందులకే,

“ఎనుబదియేండ్లవృద్ధు, డసినేనియు చాల్పనిగర్వి, ఆహవం
బున కొలువున్న సాహసుడు, పూజ్యుడు పూర్వము, అంత్యవర్తనం
బున మతిలేనివాడయి, విమూఢుడనై, సతతంబు గల్పెన
మృతస్థిరచిత్తు డిప్పుడు సుమీ గ్రహియించె స్వకీయదోషమున్.”

అనినుడివి, పైన, గీటుంచినస్థలములం దాతనియొడ తనకుగల యభిమానమును విశదపరచెను. రామరాజుమృతితో “మహదాండ్రరాజ్యసమ్యానము మానముతో కథలుమాత్రము నిల్చిన వల్లిబిల్లిగన్.”

రామరాజు పల్లకీపై నధిరోపించి యుద్ధమధ్యమున నున్న కాలమున, బీజపూరునవాబగు ఆదిల్ షాకు చెందినగజ మొకటి తెదరి, పల్లకీపై వచ్చి పడుటచే రామరాజు క్రింద బడెననియు, అంతట శత్రురాజులు వానిశిరము నఱికి, యొకబల్లమునకు గ్రుచ్చి నైసికులందరకు జూపించిరినియు చరిత్రయందు గలదు. ఇట్లు వర్ణించుట యాభ్యర్థముగా నుండునని తలచి, కవి యెనరించినమార్పు మిగులచక్కగా నున్నది. డాక్టరు కృష్ణస్వామిఅయ్యంగారి రీతివిషయమునుగూర్చి కొన్నిపరిశోధనలు జరిపి, కొలదిమాసములక్రింద నొక వ్యాసమును హిందూపత్రికయందు బ్రకటించిరి. అందు రామరాయల శిరము నఱుకబడలేదనియు, అతడు ఖైదీగా పట్టుకొనిపోబడెననియు, మొదలగుమార్పులను నూచించియున్నారు. మొత్తముమీద తల్లికొటయధ్యధ్యమతో ‘ఆంధ్రసామ్రాజ్యనాటకాభ్యంతరమున చివర తెర జారిపోయిన’ దనియే చెప్పకతప్పదు.

ఆనెగొందెకాపు:

రామరాజు తల్లికొటయధ్యధ్యమున కేగకపూర్వము తిరుమల రాయని ఆనెగొందెసంరక్షణకు నిలిపిపోయెను. కాని కొటలో రాజామృతిని, తిరుమలరాయడు పారిపోయెను. ఇంకా నిలదినట్లయిన, ఆంధ్రసామ్రాజ్యమున కిట్టి దురదృష్ట కావల డెడిదట. ఈకావ్యమును వ్రాయునపుడు కవి స్థితునక

పూరితుడైయున్నాడు. ప్రతిపద్యమునందును నిరాళ నిండియున్నది. "తెల్లభువి రక్తంబందు వ్రాయితే మ్లేచ్చుని జొరవ న్యమ నీదు పంద తనమున్ శుద్ధాంధ్రచారిత్రమున్" అని రోషము వెల్లివిరియ ప్రశ్నించుచున్నాడు. మఱయు,

‘రాజ్యరక్షణ కాదు, సంగ్రామమందు
కలబడుట కాదు, గొండెను కాచుకొనుట
యింతమాత్రము చేయలేవేని మొదట
‘రేనితో నేల చెప్పగాలే వశక్తి.’

అని తిమ్మరాయని పందతనము పాశకునకు విదిత మగునట్లు ప్రశ్నించుచున్నాడు. కొలదిసేవ చేయనేరక, తిమ్మరాయడు బహుభాంధ్రావని కేరీతి తీరని యప్రతిష్ఠను దెచ్చిపెట్టెనో తనపాశకునియొద్దట తెట్టి కవి తనశిల్పనైపుణ్యము నేరీతి ప్రదర్శించెనో చూడుడు:

‘రెండుపందలగజముల కొండగొండె
విపులసామ్రాజ్యచక్రము విరిగిపడును
ఒకపిరికిపందచేతలో నొరగిపోవు
బహుళమహదాంధ్రజననైభవముల రథము.’

ఈపైపద్యమునందలి ప్రతియక్షరము, ప్రతిశబ్దము, ప్రతిపాదము భావోద్రేకమున నుచ్యులలగుచున్నవి. ఎన్నియోపుటలలో వ్రాయవలసినవిషయ మొకతేటగీతియం దిమిడ్చినకవియొక్క పైశారద్యము మిగుల కొనియాడదగినది. ఆశాభంగమువలన కవి యిరీతి, తిరుమల రాయని చిత్రించుటయందలి యాచిత్యము ప్రశంసింపదగినది.

పాణిగ్రహణము :

శుగ్రంధమునకు తుచిని వ్రాయబడిన ‘పాణిగ్రహణము’, ‘పశ్చాత్తాపము’ అనురెండుకావ్యములందును క్రీస్తుబౌద్ధపుగారి లేఖని భావోన్మాదమున తాండవించినది. వీనియం దూటలూరుచున్న భావములు, పాశకుని హృదయకమలమునందు ఆనందమకరందము నుద్భవింపజేయుచున్నవి.

ఈపాణిగ్రహణ మనుకావ్యమునందు నాడుకభావ శబ్దములు విరివిగ ప్రయోగింపబడి, వృత్త వచ్చుటచ్చుట మూగ్ధబడెను. తిమ్మరుసు నోట నిండిన నూచించుటకొరకును, రాయలనోట విషయము నూచించుటకును నాడుకభావ ప్రయోగింపబడెను.

కలింగరాజు కృష్ణరాయని వంచించవలయునని కంకణము ధరించినవారిలో నొకడు; కాని కృష్ణరాయలచే యుద్ధమున నోడింపబడెను. ఇందులకు ప్రతీకార మొనరింపజచ్చి, కూటము రాయల కొనగి, ఆమెచే నాతని జంకింప యత్నించెను. కృష్ణరాయల కీచివాహ విషయముమాత్రము జాబుమూలమున తెలియజేసెను, అలోచింపకయే ఆత

క్రీస్తునికడ కేగి,
ము మార్పునం టిహపరంబుల భేదము లేకయుండగా

సమదగజేంద్రకేసరియు చారుకురంగ విలోకనప్రభా
భ్రమితముగా నృపా విడియపడ్డది మందరిమాపు లేకయే.”

అని చమత్కారముగ మందలించుచున్నాడు. తెల్లబోయిన రాజునకు, ‘సన్నాహం బొకయింత లే కరిగి వస్తా మంతయున్ చూచియే’ అని సలహానిచ్చుచున్నాడు. తనపాశపాటును గ్రహించుకొని ‘తప్పా, ఒప్పు, తలంపలే దది ప్రమాదంబేమొ చింతింపలే దప్పాశీ కల డన్నియున్ సరిగనేయన్ తోడ నెల్లప్పుడున్’ అని కృష్ణరాయ డప్పాశీయొడ తనకుగల గాఢాభిమానమును వెలువరించెను. తగిన కట్టుదిట్టములతో రాయలు “గజపతిపురి, జొచ్చినాడు పెండ్లికి సర్వకోభవముగ.”

గజపతి తనమాకునకు ముందే బాగ్రత్తచేయవలెను. కాని తన భర్తను చంపుట కామె యంగీకరింపలేదు. ఆశాభంగమున గజపతి తన మాకు నొకప్రశాంతస్థలమునకు గొనిపోయి,

“గజపతియింటిలో పులిముఖంబున గోవుజనించె నేటిక
క్కజముగ, నిన్ననే మగడుకట్టినతాళికి తండ్రిమాట కే
గుజగుజవోవు నీరకపుహతురు పుట్టుటకంటె రాయు, ర
ప్పా జనము లేవయినపుట్టిన సంతస మందియుందుకే!”

అని తనమాధుత్వమును వెలువరించి నాడు. ఆతనిహృదయమునం దలలడి కలిగినది. ‘నేపడిన యుద్ధపరాభవ రోషహేతువచ్చుండతరాన్య బార్తునని సంబర మందితిగాని యింటిలో నుండినశత్రువుకా తెలియ నోపని యంధుడనైతి నేటికిన్’ అని యున్మాదిమున కలువరించెను. కృష్ణరాయ డనిన, ఆతనికి, ప్రక్కలో బలైమైనాడు. మీదుమిక్కిలి మాకురిపలుకు లాతనిహృదయమునం దంతులేని యాంధోళనము నుద్భవింపజేసెను. తనపుత్రిక తనకడ కీరీతి రావలయునట:

“నాయన తీగ్గుకొంటిని బుర్రం బిచ్చె క్రమని మప్తకం బివే
తీయనివెచ్చునెత్తురులుతె ప్పెలుగట్టినచేతివేల్లిదే
కాయపునందుసందున వికావికచేసినబాకు దీనితో
పోయినప్రాణముతో తమకమాల్యపుకానుక లంచు పల్కగన్.”

తనకడ కారీతి పుత్రిక వచ్చి తన కానందమును గూర్చునలయునట ఎంతటి ఘోరకృత్యమున కాయబలును బ్రోత్సహించెనో తిలకింపుడు! అట్టిబెట్టితపుపలుకులు తనచెవిని బడినంతనే, చేయునది లేక,

“మొగము త్రిప్పెను రాయలమోజుకత్తె
క్రాత్తపెండ్లిమాతురు, శాంతగుణము రూపు
వోలె నిల్చి, తండ్రికరము ముడిచి పట్టి
నట్టి చురకత్తి తనచేత నట్టెలాగి.”

“మగడనుప్రేమభావ మభిమానము నీకయి వీటిబుచ్చి నీ
పగ యడగింతు ఆపయినపట్టినమాడపు నేడె బంధముతో
తెగియెను నీకు నా కనుచు దీవ్యదఖండ తట్టిల్ల తాధగ
ధగల వెలింగిపోయె ప్రమదానుడి తండ్రియె అద్భుతంపడన్.”

పైన, గీటుంచిన పద్యపాదము లెంతరమణీయముగ పొందుపరచబడినవో పాఠకులే యూహింపవలయును. గజపతిపుత్రిక యప్రతిష్ఠకు సురికాకుండునట్లు కవి ప్రయత్నించెను. ఆమెయందలి సౌజన్యమును నిరూపించి, మరల కొంతవరకు పితృభక్తియుతులని నిరూపించుటకే తండ్రియాజ్ఞ సంతయో కష్టముమీద నెరవేర్చుట కొప్పుకొనినట్లు ప్రదర్శించెను. ఆకళికామందిరమున, ‘ప్రేమస్థానకాళింగసూతడయాపాంగవిలోకన ప్రసరమాత్రత్యక్తకాతిన్యూ’ డగు రాజు, పాన్పుపయి పరుండియుండినపుడు, జనకుని యభిమతమును నెరవేర్చు ఎట్టులో లేచి, తాటిబిగించి, ‘అంతరవ్యధన్ మొద్దయినట్టి లోప్రణయమోహములన్ దిగబార్చు’ కొనినది, గజపతిరాజపుత్రిక. ‘నిద్దురమంపులొన తయనించెను రా’జుమకొనినది; ‘తలకడమున్న నుప్తముగ దాచినకత్తిని తీసికొన్న’ది; ‘దోసిలియొగ్గి ప్రియాంశ్రు పద్మముతో తలపయి హస్త’ కొనినది; ఒకనియునము ధ్యానమున రించినది..... ‘మరునిముసంబులోన పడిమాత్రము నిల్చినకత్తి రాజు’పేరురమున నాటుకొవలసియుండెను—కాని

“కత్తిపోటులలో చంపగా నగేల
కుపితావకాలోకనకుంతములనె
గ్రుచ్చి హింసించే కయ్యకొరకు పడిన
శ్రమము వృథాయయ్య అప్పాశిశక్తి యిది”

అని పలుకుచు రాజు లేచి కూర్చుండెను.....అనుకొనినట్లే యైనది—చేసినది మహాపరాధము—భారతనారీలోకమునం దిట్టిపనికి ననుకట్టినవారు మందునకేని లేరు. ఆమె ప్రియుని వదనారవింద మెట్లు తిలకింపగలదు? అందులకే “పార్థివుకరద్వంద్వంబునన్ మార్పు వోయెను కాంతామణి పాపపంకిలకళంకిధూత సాహద్యితన్.”

ఈఘట్టమునందు, కవి, పాఠకుని ప్రతిక్షణము తస్మయ్యునిగా నొనరించెను. పైన, గీటుంచినవాక్యములు హృదయము నుట్టుత లూపుచున్నవి. శ్రీ సుబ్బారావుగారు తమమనస్సునెంటు తమపాప కునిగూడ పరుగెత్తింతురు. ఈరీతి వారుచేయగల్గుటకు వారివిచిత్రపద సామగ్రియే వారికి సాయపడుచున్నది.

కొన్ని దినములకు రాయలును, గజపతిపుత్రికయు సాయం వాహ్యోత్తి కైనపుడు తిమ్మరుసు నోటినుండి ‘గజపతియింటిలో పులి ముఖంబున గోవుజనించె నేటి కక్కబముగ అంగుకే తెలుగుకాంతుని నవ్వులలేతలెల్పుటంబుజములు మోముపై విరియవూచిన’ దంచు వినబడెను. ఆపలుకులు దంపతులచెవులబడెను. ఆత్మకథను మరువ దిక జనమంచు ఆంధ్రరాయలు, రాణియు మురిసికొనుచు పోయిరి. వారి యప్పటితస్మయత్వ మెట్టిదో, పాఠకుని తస్మయత్వ మెట్టిదో! పశ్చాత్తాపము:

కృష్ణరాయనికుమారుని తిమ్మరుసు చంపినందున, రాయలు తిమ్మరుసుకండ్లు తియ్యించి, తిండి నీ రీయక చంపినట్లు, తరువాత

రాజునకు నిజముతెలిసి, పశ్చాత్తాపపడి మనోవ్యాధిలో మరణించినట్లు అనుశ్రుతముగా వచ్చుకథయే దీని కాధారమని నుడివియున్నారు. ‘ఆంధ్రచారిత్రచతురానన’ బిరుదాంబితులగు శ్రీచిలుకూరిపీఠభద్ర రావుగారి ‘తిమ్మరుసు’ అనుగ్రంథమునందును ఈవిషయమునకు తగినయాధారము లున్నట్లు గన్పరచలేదు. ‘శిర్డ విజయనగరచరిత్ర’కారులగు కుంహారి ఈశ్వరచర్తు (బి. ఏ.) గారివిషయమును కేవలము పుక్కిటిపురాణ మనుచున్నారు. కొందరు చిన్నాదేవిసోదరుడే కృష్ణరాయనిసుతుని పరిమార్చి తిమ్మరుసుపై నేరము మోపెనని తలచుచున్నారు. ఈచర్చతో ప్రస్తుతము మనకుపని లేదు. కవితంద్రు డిచ్చట ప్రస్తరించినవిషయమే మనపరిశీలనమునకు వేచియున్నది. ఇంగు తిమ్మరుసుమంత్రియొక్క సుశీలము, కృష్ణరాయని యమాయకత్వము కరతలామలకమువలె గన్నట్లుచున్నవి. ఇరువుర కెట్టి యప్రతిష్ఠయు లేకుండ, కవి తనరచనాచాతుర్యమును విశేషపరచెను.

ఈకావ్యారంభము మిగుల రమ్యముగ నుండి, పాఠకుని చకితునిగా చేయుచున్నది. ఆంధ్రసామ్రాజ్యనియంతియగు తిమ్మరుసు రాయల పేరొంగమున, న్యాయమూర్తులమోల బందీగా తీసికొని రాబడి విచారించబడుచున్నాడు. అతడు సామాన్యమానవుడు గాడు.

“తనయోచనామగ్నతను మాపుమానము పరరాజుబృది నాటు
[బాకుపోటు,

తనపార్ష వివశేత్వమును చూపు చిరునవ్వు తెనుగురాజుకిరీటమునకు

[వన్నె,

తనసంశయమ్యురీతిని చూపు తలయూపు తత్కాలజయవిరుద్ధము

[ఫలము

తన నిరుత్తరభావమును జూపుమాంద్యము అవసరానవసరి మరయు

[చర్చ

తనమహామూర్తి తెల్లుమేధావిశేష

పరిణతిశ్రీని పండిన పంటగాగ

వలుగు సచివుకు”

నేడు తనకొలుపుముందు ‘రాజశిశుహత్యకై అపరాధిగా’ కొనిలేబడినాడు. ఇట్టిమహామహుని నేరీతి శిక్షించునో యని వేల కొలదీసరలు సభాభవనమున కరుదించిరి.

విచారణ ముగిసినది. న్యాయమూర్తులు,

‘తిమ్మరుసు హత్యచేసినదే నిజమ్మ

టంచు సాక్షులు మమ్ము నమ్మించినారు

రాజశిశుహత్య త్నమియించరాని నేర

మందు కగు శిక్ష బలవంతమైన చావు.’

అని తీర్పుచెప్పిరి. ‘తెలుగురా జెడ శిక్షవిధించినాడు.’ కారాగార మునకు గొనిపోబడుచున్న మంత్రిని గాంచినపుడు జనులు ‘కావలయు నన్న రాజ్యముకై నిసుంగప్రాణముల తీయగానేల? పార్థివునక

నీళ్లుతోడదా? అని పెక్కువిధముల తలపోసినట్లు లోకప్రవృత్తి నెరిగినకవి వర్ణించుచున్నాడు.

కారాగారమున తిమ్మరుసుపడిన పశ్చాత్తాప మపారము. ఇచ్చట పాపకుడు కంటతడిచెట్టుకపోడు. కవినర్యుడు తిమ్మరుసు ఆంధ్రసామ్రాజ్యమున కొనరించిన మహాపకారమును చిత్రమగురించి అతనిచేతనే పలికించుచున్నాడు. “పెంచితి, పెద్దజేసితి, అభిషిక్తసిద్ధికి జీవవాయు లలింబితి మున్య దాక ” అను తిమ్మరుసుపలుకులు చెవిని బడినంతనే, కృష్ణరాయనిపై పాపకున కంతయోకినుక కలుగకపోదు :

“హుటికి నీటికిన్ వదులుకొంటి ఋణంబు, కనుల్ కృపాఁడు స్వాటిరమల్, మనస్సు వివశం బొకచేయనినేరవున్ విధన్ మాటలు తొటిటలున్ తలపుమాత్రము నీపయి లగ్నమైన దీ పాటికినైన ప్రాణములు బావుము గోపకులాంగనా స్మరణ !” అనుపలుకులు హృదయమును క్రుంగదీయుచున్నవి. తనకు గలిగిన యప్రతిష్ఠ పగచి తుడువ మాడులేక, త్రాగ నీరులేక, చూప కనులులేక, కారాగారమున,

“.....తిమ్మరుసయ్యలైదు
కటకటాలకు చేతులు కలియ బట్టి
మొండివారిన దేహమునుండి వెలికి
ప్రాణములుపోనిదురవస్థ పరితపించి
నాల్గురోజులు చెరలో ననాథవోరె
చితికి కృశించి మూర్తి త్యజించె తనువు.”

కన్నుల నీరుగ్రమ్మ పాపకుడు తలయెత్తుచున్నాడు. ‘తనహర్ష విప కీర్త్యమును చూపు చిరునవ్వు తెనుగురాజుకిరీటుమునకు వన్నె’ యని ప్రశంసింపబడిన రాజనీతివేత్తయు, సర్వజ్ఞుడును అగు మంత్రిశేఖ రునకా యిట్టిదురవస్థ తుదినకలుగుట !

తిమ్మరుసుమరణానంతరము, ఏదియో వ్యక్తి రాయలకసుల ముందు తిరుగుచు “క్షేమము నీకు నీప్రజల్ తిన్నగ నుండురా? సరిగ దిద్దుదా నృపనీతిధర్మమల్?” అని ప్రశ్నింపవచ్చుడగును. కూలిపోవుచు, మనోవ్యాధిచే కృశించిపోవుచున్న రాజును,

“ఈరక్తపుంబొట్టు నెవరు పెంచి రటన్న ‘అప్పాజి’ యనురోజు లరసికొనుము,
చనిపోవు తండ్రి యెవ్వని కప్పగించె నాన్ ‘అప్పాజి’ కనుమాట లరసికొనుము,
ఆమహాసామ్రాజ్య మంతనీగెల్పనాన్ ‘అప్పాజి’ కక్తియం బరసి కొనుము,

ఆమహారాజిపెండ్లాడినదెట్లన ‘అప్పాజి’యైక్తియం బరసికొనుము” అని యాహూతి ప్రశ్నింప మొదలిడెను. రాజు మంచముపట్టెను. ఇంతలో నిజము బయటపడెను; తిమ్మరుసు నిరపరాధి యని తెలియ వచ్చెను. రాజీవృత్తాంతమును విసెను; పాన్పుపైనుండి లేచి, కనుల ముందు నటించుచున్న మూర్తివైపునకు తలద్రిప్పి, “తండ్రి మ్రొ

క్కుకొనెద, నన్మమింపు మిక కోపము మానుము, దోషమున్న వారికి తగుశిక్ష నీవ పానరించితి వాత్మను చీల్చినావు పో” అని విన యము వెల్లివిరియ వాపోయెను.

మనోవ్యాధిచే రాజు గతించెను. చనిపోవుటకు కొలదినిముస ములకు పూర్వము,

“బాక్సెల్లిన దీమహాకథను చెప్పంబాలువా రెవ్వరున్
నాకేతప్పును కట్టిపెట్టరు, సమానంబైనశిక్షగతిన్
నీకున్ నాకును చావు సంఘటిలె ”

నని ఆతడు తృప్తిపడినాడు.

ఎవరికిని అప్రతిష్ఠ లేదు. పరులపలుకులే ఇట్టిసంఘటనమును గూర్చెను. ఇట్టివిషయము నీరీతి ముగించిన కవినర్యుని సామర్థ్య మపారము.

“హంపీక్షేత్రము”లో సుబ్బారావుగారు :

ఒక గ్రంథమును వ్రాయునపు డందరికథావస్తువున కనుగుణముగ తనహృదయము నుద్దీపింపజేయుచు అందు కలిగిన యావేశములో తా నొకడై కథను నడపుపట్టుల నిర్వహించగల్గినవాడే మహాకవి. ఒకే కథావస్తువును, ఇరువురు కవులు వేరువేరుగ్రంథములుగా వ్రాసినదో, రెండు గ్రంథములును, కొంతవరకు కూర్పునేర్పునందును, పదసామ గ్రియందును తప్ప తక్కిన విషయములయం దొకేరీతిగ నుండిన నేమి లాభము? అట్లుండేనేని కవులు తమ వ్యక్తిత్వమును తమగ్రంథము లందు జొప్పించుటకు లోకమునకు చెరచిరని యనవలసివచ్చును. తమ వ్యక్తిత్వమును వెల్లడించుటకు కథావస్తు వెప్పుడును అడ్డు రానేరదు. తమ నిశ్శోధేశ్యములను వెలువరించుటకు, కవి కం దవకాళము లభింపక పోదు. మొత్తముమీద మన తెలుగునాటియందు, ఆధునికకాలము నందు వెలువడుచున్న గ్రంథములలో రచయితయొక్క వ్యక్తిత్వప్రద ర్శన మంతగా కనబడుటలేదు. అట్లు వ్యక్తిత్వమును తమకవనము నందు పాడుకొల్పినవారు ముగ్గురు నల్లరుకన్న నెక్కువగా లేరు.

ఆంగ్లవాఙ్మయముయొక్క ప్రోద్బలమువలన నెన్నియోక్రొత్త విషయములు మనభాషలోనికి వచ్చియున్నవి. ఏకాదశముననో, ఆంగ్లవాఙ్మయమున పీనుమిగిలిన పండితప్రకాండుల గ్రంథములందు తొలకియూడుచున్న Individualism, అనగా వ్యక్తిత్వమును (లేక మూర్తిమత్త్యము, లేక పృథక్త్వమును) మనవార రెండులతో యల వరచుకొనలేదు. ఈ Individualism ప్రథమమున ప్రెంచిదేశము నకు చెందిన టిల్లేయసువానిచే ప్రతిపాదింపబడెను. క్రీ. శ. ౧౬-వ శతాబ్దమునుండి వ్రాయబడిన గ్రంథములం దిది కానవచ్చుచున్నది. ఆంగ్లకవిపుంగవులగు మిల్టన్, స్పెన్సరు, షేక్స్పియరు మొదలగు వారి రచనములయందు కరతలామలకమువలె నిది గన్పట్టుచున్నది. ప్రెంచిదేశమునకు చెందిన మాన్టాజిన్ (Montaigne) వ్యక్తిత్వము యొక్క యుత్కృష్టతను పెక్కువిధముల ప్రశంసించియున్నాడు.

“నన్ను నేనే వర్ణించుకొనెదను. నావిజ్ఞానచతువును నాలోనికే తిప్పుకొని నన్ను నేనే పరిశీలించుకొనెదను. నాగ్రంథములు నాతో నేకీభూతమైయున్నవి. నేనును, నాగ్రంథములును ఒకేబాటవెంట నొకరిని నడయాడెదరు. లోకము నన్ను తెలిసికొనవలచిన నాగ్రంథములను తెలిసికొనిన చాలును. తన్ను దానే తెలిసికొని, తన్ను దాచిత్రించుకొనుట మానవుడు ప్రపంచమునందు చేయు ఘనమగు పనులలో నొకటి. నేను లోకమున జీవించియుండునది కొలదికాలము మాత్రమే. ఈకాలమునందు నాజీవితానుభవమును గ్రంథములందు వెలయించి, దానియమూల్యతను లోకమునకు వెల్లడింతును” అని యతడు సువిషయమన్నాడు. అందులకే Individualism న కంఠగౌరవము చేహరినది. మనపూర్వకపులగు తిక్కనమొదలగువారియందు దిది గన్పట్టుచున్నది. ఇప్పటికపులకున్నయవకాశములు వారి కప్పుడు లేవు. వారు, అనువాదములతోనలో పడిపోయినను సమయముదొరకినచో తమ నిజాభిప్రాయములను వెలువరింపకపోలేదు.

ఆధునికాంధ్రకవుల కెన్నియోవిధములగునవకాశములు గలవు. తమవ్యక్తిత్వము (Individualism) ను తమరచనములందు వెలువరించుటకు వెనుకంజ వేయకుండుటయే సమంజసము.

‘హంపీక్షేత్రము’ను చదువువారు, కర్త నెపుడెటుంగకున్నను’ అది యొకయువకునిచే వ్రాయబడినదని తప్పక గ్రహింతురు. గ్రంథము సంతయు పరిశీలించిన ప్రతిపద్యమునందును, ప్రతివాక్యమునందును ఏదియోయత్సహము వెలువరింపబడినట్లే తోచును. గ్రంథకర్త తన వ్యక్తిత్వము నీగ్రంథమున చక్కగా వెలువరించెను. అతడు లోక మే మనుకొనునో యని వెనుకాడలేదు. అతడు కవి; నిరంకుశుడు. అతని కలమున కేదియు నడ్డురానేరదు. సుబ్బారావుగారిని తెలిసికొనవలయునని ‘హంపీక్షేత్రము’ నొకంత విమర్శకదృష్టితో చదివిన చాలును.

సుబ్బారావుగారు ఆంధ్రోద్యమముపట్ల మిగుల నభిమానమును జూపెడివారు. ఆంధ్రదేశమునినను, ఆంధ్రభాషయనినను వారి కారవ ప్రాణము.

“పొంగిపోయినయెడలలో పుటముపెట్టి
రగులజొచ్చెను మాదుసామ్రాజ్యనాథ
సంపు తలపులు”

అనిప్రథమముననే వాపోవుచున్నారు. పూర్వకాలమునందలి యాంధ్ర శిల్పము నిర్మించిన ‘గుడిగోపురములు సభాస్థలమై నవి కొండుముచ్చగుంపుల’ కని వ్యాకులతను విశదపరచుచున్నారు. ఆంధ్రవైభవము పూర్తిగ నశించినట్లు వారికి నమ్మకము లేదు. ఏనాటికైనను మరల నాంధ్రాభ్యుదయమునకు తగినవసతులు గలవనియే వారినమ్మకము. ఈయుద్దేశ్యమును నూచించుటకే తెలుగునర్తనశాలలో నేదియు లేకపోక, ఔరంగజోరు నేటికిని నిలచియున్నవని వచించియున్నారు. విద్యార్థిగణస్వామివారిని వీరు ప్రశంసించుట కాదికారణము ‘తెల్లు భువనప్రళయంబున కడ్డుకట్టవేసిన మహనీయమూర్తి’ యనియేకదా! ఇట్టిది వీరి యాంధ్రాభిమానము.

వీరు, ఆంధ్రుల కపకీర్తి వచ్చిన సహింపజాలరు. రామ రాయులు తల్లికోటకడ ప్రవర్తించినవిధము వీరికి నచ్చలేదు. అందులకే హృదయమునందలి యావేశము నగచికొనజాలక, ఆంధ్రాభిమానమును చంపుకొన నేరక, తల్లికోటయుద్ధమువలన విపులాంధ్రావనికి గలిగిన యపారనష్టమును మరచిపోనేరక “రామరాజు బంగారుగద్దెపై రణమునందె, కొలువుకుదిరె మాయాంధ్రుల కొంపకాల్పు” అని భావోన్మాదమున పలికిరి.

శ్రీ సుబ్బారావుగారు యువకులు. వారిదేహమునందు వెచ్చని రక్తము ప్రవహించుచున్న దినములందే వారిగ్రంథమును వ్రాసిరి. తిరుమలరాయడు రెండువందలగజముల వెడల్పుగల కొండగొండను కాపాడనేరక పారిపోయి, ఆంధ్రరాజ్యరామ కంఠులేనివైధవ్యమునుగూర్చినాడని వినినంతనే, వారిహృదయము పొంగిపారినది. తామే యాదినములలో బ్రతికియున్నచో తామనెగొండను కాపాడి యుండుమని సుబ్బారావుగారు తలచిరి. నిజముగా నాత డట్టిశౌర్య వంతుడే! ఒకసారి బందరుహోస్టలులో, హోస్టలుగేటుమూసి, మహత మందపు ఇనుపచువ్వ చేసొని నాలుగువందలరొడీల నడ్డగించిన శూరుడు. ఒకనై పాంధ్రరాజ్యమునకు కలుగుచున్నస్థితి, వేరొకక్రేవ తెనుగువీరుడు పారిపోయినాడే యనెడి నిరుత్సాహము, వేరొకదిక్కు ఆనెగొండను రక్షించుటలో నున్నచులుకదనము సుబ్బారావుగారి హృదయము నొక్కసారి కలచివైచినవి. అందులకే,

“రెండువందల గజముల కొండగొండ

విపులసామ్రాజ్యచక్రము విరిగిపడును.”

అని యుద్రేకముతో పలుకుచున్నారు. ‘మొదట లేనితో నేల చెప్పగాలే వశక్తికి’ ‘చావకయే తుత్తమైనలేకయే’ పిల పారిపోవలసివచ్చెనని తిరుమలరాయని ప్రశ్నించుచున్నారు. ‘వేయికి చాలుపో తెలుగువీరు డొకం’ డని వారిదైర్యము.

ఒకింత ప్రాయముమిగిలినకవినోటివెంట నిట్టిపల్కులువచ్చునా? తరుణప్రాయమునందలి హృదయవేగమున కిది చక్కని నిదర్శనము.

సుబ్బారావుగారికి భారతీయకర్మలయందు నమ్మకము, అభిమానము కలవు. ‘వైదికకర్మశాస్త్రకేరణమయ్య మంత్రవిధులే గద నిత్యము వృద్ధిమూలముతో’ అని ‘రాజ్యప్రదానము’ ననుడివియున్నారు. శ్రీనాథుడు, ‘హిందూమతోద్ధరణేందూదయవికాస చారిత్రాధ్యాత్మప్రచారములకు’ మనసుపడియే ‘ప్రాధరాయలమందిరమున నడుగుపెట్టెనట. మరియు తిరుమలరాయడు ఆనెగొండకడ పారిపోయినందులకు, కవి, ‘కాపంబుచేత నాశనమైన దనరొయి అటువంటిశక్తి నేడరుదుగాన’, ‘గ్రహచారవశము సంగతి నమ్మజాలరు, కలికాలమందు రిక్తమది గాన’ అని పలికి వానియందు తమకుగల యభిమానమును, నేటికాలమున నవి పరిగణింపబడనందున దుఃఖమును వెలువరించిరి.

పురాణములకు, చరిత్రలకు విశేష భేదము లేదనియే వీరిభుతము. వీరికి-పురాణములు కల్పితములు గావు.

“రామయ్య మర్కటరాజుతో భాషించునట్టి రాక్షసవారి
కొటకొమ్ము”

“ఈశ్వరగ్రామ మేమిదామిందును తెనుగురాజు పంకిన
యాశస్సు”

అనుపద్యములు వీరు పురాణములకును చరిత్రకును వింతగా సను
స్వయమును గూర్చుపద్యతని విశదముచేయుచున్నవి.

“వ్రోణులు లేరు భీష్ములును తోచరు...”

“బభ్రువాహను డయ్యపై నెట్టిగెల్పుట

యాగాశ్వమునకు పోరాడుకొనుట

.....”

మొదలగుపద్యములు వారికి పురాణములందలి యభిమానమును వ్యక్త
పరచుచున్నవి.

శకునములనిన వీరికొకంత సమృద్ధియు లేకపోలేదు.

“కృష్ణ వేణీతరంగిణి సబ్బమై పోయి

కదల మానిన జాష గాంచలేదు”

అనుపద్య మిందులకు నిదర్శనము.

కొలదివయస్సునందే భూదేవికి భారమైపోయినను, సుబ్బారావు
గారు లోకప్రవృత్తిని అప్పుడే చక్కగా గ్రహించిరి. అందులకే ‘ఈ
మనుజులొట్టి స్వభావమూర్ఖులొందు; దుర్బరముగ దెప్పిపోయియు ప్రపం
చక వైఖరులెల్ల చిత్రముల్’ అని నుడివియున్నారు. వేరొకచోట,
తిమ్మరుసుచే పరాత్పరుని ధ్యానింపజేయునపుడు, “విధిన్తలక్రిందొన
రించలేవు నీవైనను, మంచిచెడ్డలు స్వయంకృతముల్ అనుభూతిముక్త
ముల్” అని పలికించి తనువిజ్ఞానమును వెలువరించియున్నారు.

ఇన్నివిధముల సుబ్బారావుగారు తమపాత్రలకు తమయుద్దే
శ్యములను వెలువరించిరి.

‘హంసీశ్వరము’ నందు పాత్రలచే మేలుమేలనిపించుకొన
గలవారిలో వీరమనీ డొకడు. తిమ్మరుసు, కృష్ణరాయలు మొదలగు
వారి శాస్త్రపోషణలు మిగులచిత్రముగ నున్నవి. గ్రంథవిస్తరభీతిచే
వానిని ప్రస్తుతము విడువవలసివచ్చినది.

ముగింపు :

‘సుబ్బారావుగారు మరొకన్ని వత్సరములు జీవించియున్నారో’
నెట్టి యుద్ధాంగములను వెలువరించియుండెడివానో యని పాత్రుడు
గ్రంథమంతయు చదివినతరువాత వేడినిట్టూర్చును విడువకపోడు.

సుబ్బారావుగారికవిత్వకు రీతియున్నది. అది వైదర్భియని పీఠిక
కర్తలు నిర్ణయించిరి. అందులకే వీరికావ్యము తక్కువరకములొనిది
కానెరదు.

ఈగ్రంథమునందు శబ్దాలంకారము లచ్చటచ్చట గలవు. అర్థా
లంకారములును గలవు. అవి శ్రమపడితెచ్చినవి కానందున కావ్య

మున కలంకారమును గూర్చుచున్నవి; అవి యాశేషమువెంట కవి
కరుక లేకయే వచ్చుటచేత మిగుల రమ్యముగ నున్నవి.

“వైరి కుంతములు వైరి, కాంతలకుంతలములు

కృత్తిములుగా గణించి పొంగిరట ప్రజలు.”

“ప్రపంచకవై ఖరులెల్ల చిత్రముల్.”

మొదలగువానిని ఉదాహరణములుగా తీసికొనవచ్చును. వీరికవనము
నందు క్రమాలంకారములు చాల గలవు. మరియు

“దుర్గపట్టణం బెంకినయేటిదిబ్బవలె

నెట్టిటు బీటలు విచ్చిపోయెనో!”

“నీలిమట్టుల నిగనిగలాడు సోయగము”

“తెలిమట్టుల గబగబనడుచుచాళువము”

“మబ్బుదిస్వలకు తళతళలాడెడి తర్కు”

“వర్షాభ్రములకు జిలుజిల్లు మనిపించు చలువ”

“పంపానరస్సులోపల లేతతరగలోవిరుపుకన్పింప చీనకగూడ”

మొదలగు పద్యపాదములు ధ్వనిసహితములై, కవివర్ణని ప్రకృతిపరి
శీలనానై పుణ్యమును తెలియజేయుచున్నవి.

ఈ కావ్యమునందు,

“తెలుగుకవిరాజు రాయలకొలుపుముందు

చరణమును మోపె సభయు నిశ్శబ్దమపుడు.”

* * * *

“తెల్లభువి రక్తంబందు న్రాయితె ప్లేచ్చుని దొర్లనయ్య?”

* * * *

“గౌతమిగర్భపంకం బెంజబెట్టినచాళుక్యశౌర్యవర్చస్సువెలుగు”

* * * *

“తెలుగురా జదె శిక్షవిధించినాడు

తిమ్మరుసు మోము రాజుకై త్రిప్పలేదు.”

* * * *

“మొగము త్రిప్పెను రాయలమోజుకత్తె”

* * * *

మొదలగు వాక్యములు హృదయము నుద్దీపింపజేయగల్గునవి చాలగలవు.

‘అనేకగుణము లీచిన్నిపాత్రములో నున్నవి. ఇందందు శబ్ద
గతదోషములును కలవు. అవి చాణ్యులములు: మహారాజా, కల
బడె, నా ద్దత్తుడు ముప్పల్లనవి. పరజాయనుశబ్ద మియనప్రయోగిం
చెను. ఇది అన్యదేశీయము. దీనినే శిష్టకృష్ణముత్తికవి పరజాయని
ప్రయోగించెను. ఇది పుర్వాశబ్దభవము. ఈదోషములు బహుగుణకమైన
ఈకావ్యములో పట్టింపుకు రావు. ‘వీక్షాహిదోషగుణసన్నిపాతే
నిమజ్జతి’. అనుపీఠికకర్తలవాక్యములు పేర్కొనవగియున్నవి.

ఏమునుకొనిననేమిలాభము? రిక్కిరాతిపోయినది. దానికై పరి
తపించుచు ఐహికనను మరల దొరకుననునాశలేడుకదా!



గురులఘు స్వరూపము

జాస్తి వేంకటాచార్యులు



గురులఘునిర్ణయము ఛందశ్శాస్త్రమునకెల్ల మూల మనువిషయ మందఱికిఁ దెలిసినదే. గణముల కూడి కచే బద్ధము లుత్పన్నమగుననియు, గణములుకూడ గురులఘుసంయోగముచేతనే యేర్పడుననియుఁ దెలిసియేయుండును. ఇట్లు ఛందశ్శాస్త్రంబునకు మూల భూతంబు లగు గురులఘువుల స్వరూపమును గూర్చి విమర్శించునపుడు శ్రీఘ్రముగా విషయములు గొన్ని బుద్ధిగోచరములు కామింజేసి చిక్కులు సంభవించుచుండుట సహజము. కొంచెము లోతుగా నాలోచించినచో యథార్థస్వరూపము తెలియకపోదు. గురులఘుస్వరూపంబును గూర్చి నాకుఁ దెలిసినవిషయములఁ గవిజనాశ్రయలక్షణప్రకారము గొన్నింటి వివరించెద.

“ఒక్కమాత్ర లఘువై ద్విమాత్రకము గురు వయ్యెన్” అని కవిజనాశ్రయంబున భీమకవిగారు గురు లఘువులకు లక్షణముఁ జెప్పిరి. అనఁగా నొక్కమాత్ర గల వర్ణము లఘువనియు, రెండుమాత్రలుగల వర్ణము గురువనియు నర్థము. కడవ, తలుపు, వనిత- ఇత్యాది షడంబులందలి వర్ణములెల్ల నేకమాత్రకంబులై పైలక్షణముచొప్పున లఘువు లగుచున్నవి. ఇట్లే బాలుఁడు, కాయ- ఇత్యాది షడంబులందలి దీర్ఘాక్షరంబులు ద్విమాత్రకంబులై గురువు లగుచున్నవి. కాని చెలఁగున్, వనితన్ ఇత్యాదులందలి గున్, తన్ అను నక్షరంబులు సంయుక్తాక్షరపూర్వవర్ణతుల్యంబులే కావున గురువులైనను ద్విమాత్రకములుమాత్రము కాకున్నవి; వ్యంజన మర్థమాత్ర యను న్యాయంబున సార్థమాత్రకంబు లగుచున్నవి. మఱియు ‘అనఁగాన్’ అనుచో ‘గాన్’ అను గురువు సార్థద్విమాత్రక మగుచున్నది. ఇట్లే పులముగూడ త్రిమాత్రక మైనను గురువే యగు

చున్నది. కావునఁ గవిజనాశ్రయలక్షణముప్రకార మేకమాత్రకము లఘువనుటలో దోషంబులు గనుపింపకున్నను ద్విమాత్రకము గురువనుటలో నవ్యాప్యతి వ్యాప్తులు పెక్కులు గనఁబడుటంజేసి పైలక్షణము సర్వత్ర వర్తింపనేరదనియు, ఒక్కమాత్ర గల యక్షరము లఘువనియు, సంతకంటె సధికముగల యక్షరము గురువనియుఁ జెప్పనొప్పునని జయంతి రామయ్య పంతులుగారు కవిజనాశ్రయవీతికలో వివరించియుండిరి.

కాని యీనిర్ణయముకూడ సరిపడుచున్నట్లు తోచదు. పంతులుగారి నిర్ణయముప్రకారము చెలఁగున్, వనితన్-ఇత్యాదులందలి గున్ - తన్ అనునవి సార్థమాత్రకంబు లెట్లగునో తెలియకున్నది. వ్యంజన మర్థమాత్ర యను న్యాయమున గున్ (గ్, ఙ, న్.) అనుదానిలోని వ్యంజనద్వయ మేకమాత్రకమయినను ఉకారముకూడ నేకమాత్రకమై, యయ్యది మొత్తము మీఁద ద్విమాత్రక మగుచున్నది. ఇట్లే తన్ (త్, ల, న్.) అనునప్పుడుకూడ ద్విమాత్రకమనియే గ్రహింపవలయు. మఱియు ‘అనఁగాన్’ అనుదానిలో ‘గాన్’ అను నదియు, దీర్ఘమునకు రెండుమాత్రలు, వ్యంజనద్వయమున కొకమాత్రయుఁ గలిసి త్రిమాత్రక మగుచున్నది. కాని పంతులుగారు చెప్పినట్లు సార్థద్విమాత్రక మగుట లేదు. ఇట్లే యేకమాత్రకములగుటచే లఘువులని నిర్ణయించిన వనిత, కడవ-ఇత్యాదులందలి వర్ణములుగూడ వ్యంజనమర్థమాత్ర యను న్యాయమున సార్థమాత్రకము లగునుగాని యేకమాత్రకములు గానేరవు.

వీనినిబట్టిచూడఁగా నజ్విశిష్టములుకాని వ్యంజనము (పొల్లుపొల్లులు) లర్థమాత్రకము లనియు, నజ్విశిష్టములయినచో నావ్యంజనములకు మాత్రాగణ

యుండదనియుఁ బంతులుగా రభిప్రాయపడినట్లు తోచుచున్నది. లేకున్న 'వనితన్' అనుదానిలో వకార మేకమాత్రకమనియు, 'తన్' అనునది సార్థమాత్రకమనియు గ్రహించుటకు వీలుండదుగదా?

“ఒక్కమాత్రలఘువై ద్విమాత్రకము గురువయ్యెన్” అనులక్షణముచొప్పునను, వ్యంజన మర్థమాత్రయను న్యాయమునను గురులఘుస్వరూపము నిర్ణయించఁదలచినచో సవ్యాప్త్యతివ్యాప్తిదోషములు రాకమానవు. ఏకమాత్రకము లఘువని చెప్పినచో వచ్చు సవ్యాప్త్యతివ్యాప్తు లేవన,

అతఁడు, ఇతఁడు-ఇత్యాదులం దేకమాత్రకంబులయిన అకార, ఇకారములు లఘువులే యగుచున్నవి. కాని 'అష్టడు' అనుపదమున నేకమాత్రకమైనను అకారము గురువగుచున్నది. ఒక్కమాత్ర లఘువను లక్షణమిచ్చటఁ (లక్ష్యమునందుఁగూడ) బ్రవర్తించుట లేదు. కావున సవ్యాప్తిదోషము గలదు.

ఆపదమునందే వ్యంజనద్వయమునకు నొకమాత్రయు, నచ్చున కొకమాత్రయుఁ గలిసి రెండుమాత్రలుగల 'ష్ట' అనునక్షరము లఘువగుచున్నది. ఒక్కమాత్ర లఘువనులక్షణము లక్ష్యేతరమునందుఁ గూడఁ (రెండుమాత్రలుగల 'ష్ట' అనుదానియందు) బ్రవర్తించుచుండుటచే సతివ్యాప్తిదోషము గలదని యెఱుంగవలయు. ఇట్లే 'కార్తస్యము' అనుపదములో నున్న 'ర్తస్య' అనునది సార్థత్రిమాత్రకమైనను లఘువే యగుచున్నది. ఈవిధముగా నెన్నిహల్లులున్నను మాత్రాసంఖ్య పెరుగునేకాని సంయుక్తాక్షరము గురువు మాత్ర మగుటలేదు. కావున నిట్టిపదములందెల్లయెడల సతివ్యాప్తిదోషము గలదని తెలిసికొనవలయును. ఇట్లేకమాత్రకమగు నక్షరమే కొన్నిచోట్ల లఘువనఁ బడుటయు, మఱికొన్నితావుల గురువనఁబడుటయు, నెన్నిమాత్రలుగలిగియున్నను సంయుక్తాక్షరము లఘువే యనఁబడుటయుఁ జూడ నేకమాత్రకము లఘువనుట

పాసఁగనేరదు. ఇంక ద్విమాత్రకము గురువనిచెప్పినచోఁ గలుగు సవ్యాప్త్యతివ్యాప్తుల విచారితము.

అతఁడు, ఈతఁడు - ఇత్యాదులందలి ద్విమాత్రకంబులయిన ఆకార, ఈకారంబులు గురువులే యగుచున్నవికాని, 'అష్టడు' అనుచో 'ష్ట' అనునది ద్విమాత్రకమైనను లఘు వగుచున్నది. ద్విమాత్రకము గురువను లక్షణమిటఁ (కృచ్చిల్లక్ష్యేఽపి) బ్రవర్తించుటలేదు గావున సవ్యాప్తిదోషము గలుగకమానదు.

అదేపదమునందు నేకమాత్రకమైనను అకారము గురువగుచున్నది. రాముఁడిత్యాదులలో సార్థద్విమాత్రకమగు 'రా' అనునదియు, 'అనఁగాన్' ఇత్యాదులలోఁ ద్రిమాత్రకమగు 'గాన్' అనునదియు గురువులే యగుచున్నవి. ఇట్లు లక్ష్యేతరములందుఁ గూడ నీలక్షణము ప్రవర్తించుచుండుటంజేసి యతివ్యాప్తిదోషమిట ననివారిత మగుచున్నది. మైరితిని రెండుమాత్రలకంఁబుఁ దక్కువగానున్నను, సభికముగానున్నను గూడ గురువే యగుచుండుటంజేసి ద్విమాత్రకము గురువనుట సరిగాదు.

ఇట్లేగడబిడయంతయు మాత్రలఁబట్టి గురులఘునిర్ణయము చేయఁబూనుటవలన సంభవించుచున్నది. హ్రస్వ, దీర్ఘ, ప్లుతత్వములనునవి యడోధర్మములేగదా! ఈవిషయమునే పాణిన్యాచార్యులవారజ్ఞేపదముల నిరూపించునవసరమున “ఊకాలోఽన్యోన్యదీర్ఘప్లుత” యని (అష్టాధ్యాయ... ౧ అ. ౨ పా. ౨౭ సూ.) హ్రస్వదీర్ఘప్లుతభేదములచే నచ్చుల త్రైవిధ్యమును జెప్పుచు సూచించిరి. కాని హల్లులకుమాత్ర మీహ్రస్వదీర్ఘప్లుతభేదముల నిరూపింపలేదు. హ్రస్వదీర్ఘప్లుతభేదముల సులభముగాఁ దెలిసికొనుటకుఁగాను సంస్కృతవైయాకరణులే మార్గాంతరములఁ జూపిరి. “ఏకమాత్రో భవేద్ధ్రస్వః ద్విమాత్రో దీర్ఘ ఉచ్యతే, త్రిమాత్రస్తు ప్లుతోఽక్షేయః” అనఁగా హ్రస్వ మొక్కమాత్రగలదనియు, దీర్ఘము రెండుమాత్రలుగలదనియు, సప్లే ప్లుతముగూడ మూడుమాత్రలుగలదనియు నర్థము. హ్రస్వ మొక్క-

కేరళ సబ్బులు

సబ్బు లన్నిటిలోను శ్రేష్ఠతరమైనవి



నాముఖమువలెనే మృదువైన ముఖము!

ప్రియసఖ! బేను. కారణమేమన, డౌరపునబ్బే డౌరమునకు ఉల్లాసము కలిగించి, చర్మమునకు మృదుత్వము నిచ్చును. స్క్రిక్ గాను లేక గిన్నె హాపమునందును దొరకును.

కోల్తారే సబ్బు

ఇది వ్యసనముతో నుండుబిడ్డలకు ఆనందమును చేకూర్చును. క్రిములను నాశన మొనర్చి సాగసును గలిగించును. గజ్జ, గడ్డలు, వాపు, గీరలు, చమటపొక్కులు మొదలగు చర్మవ్యాధులను హతమొనర్చును. చాల్ మగ్గనూనె యిందులో చేరియున్నది. మిక్కిలిసున్నితమగు శరీరమున కిది వాడతగినది.

కేరళ చందనసబ్బులు

చల్లదనము నిచ్చును. మంచి సువాసనను వెదజల్లును. ఉల్లాసమును గలిగించును.

శరీరముయొక్క ఆంశము వృద్ధియగుటకు కేరళ వేపసబ్బులను పయోగింపుడు

బొషధసంబంధమైన టాయిలెట్. వేపనూనె సత్తువ యిందులో పూర్తిగా చేరియున్నది. దీనితో స్నానము చేసిన మిక్కిలి ఆనందముగా నుండును.

ఇతర మేలైన టాయిలెట్ రకములు

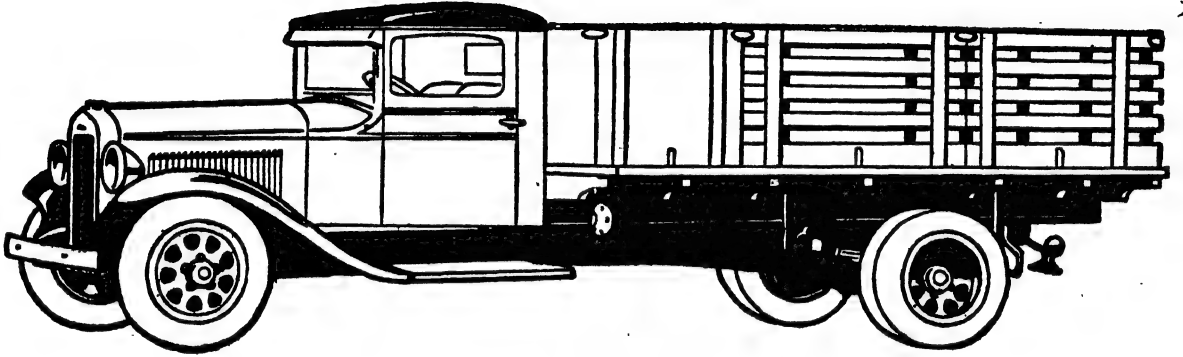
గోల్డ్ క్రీమ్, మల్లె, వట్టివేరు, రోజా, లవెండర్ వగైరా

కేరళ సోప్ ఇన్ స్టిట్యూట్,
కల్లికోట.

ఇండియా రాజప్రతినిధియు, గవర్నరుజనరలు నగు శ్రీశ్రీశ్రీ అరబ్ ఆఫ్ ఇండియా లిమిటెడ్ గారికిని, శ్రీశ్రీశ్రీ మద్రాసు గవర్నరుగారికిని సబ్బులను తయారుచేసి, సరఫరా చేయువారు.

రూపాయి స్పీడ్ వాగెన్సు అండ్ ట్రక్కులు

1, 1½ టన్నుల క్రొత్తమాడల్సుతో సరుకులు రవాణా చేయుము.
తక్కువ ధరలతో ఎక్కువ లాభము గూర్చుట క్కులు.



ఈ రెండు రకముల ట్రక్కులును రూపాయి కంపెనీవారి 30 సంవత్సరముల యింజనీరింగు పరిశ్రమ ఫలితము. మిక్కిలి నిర్దుష్టమయిన యంత్రనిర్మాణము. ప్రజామోదము బడసినవి. అధిక వేగముగలవి. కొలది ఖర్చుల తగులుబాటు మున్నగునవి యీ రూపాయి క్రొత్తమాడల్సుయొక్క ఆపూర్వ లక్షణములు.

డి. పి. బ్యూటల్స్ :-

రాణే (హైదరాబాద్) లిమిటెడ్,

హైదరాబాద్, మద్రాసు.



1. ఆంధ్రనాటకకళాపరిషత్తు శృతీయసమావేశము, చెన్నపురి-అధ్యక్షులు : టి.
2. కోయంబత్తూరు ఆంధ్రవిద్యార్థి నాటకసమాజమువారి 'రాజాప్రతాప్'



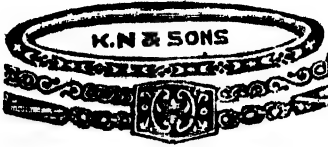
1. కవిసార్వభౌమ రవీంద్రునకు విశాఖపట్టణ కవిత్వాసమితి సమ్మానపత్ర సమర్పణము.

2. గుంటూరు సోహిత్యమండలి.

మా 18 క్యారటు రోడ్డుగోల్డు నగలను కొని వడ్డీదండుగ మిగుల్చుకొనుడు

ప్రదర్శనములలో అనేకములైన బంగారుపతకములను బహుమతిగాంచిన మాయొక్క

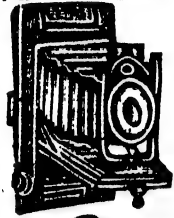
“ పనితనము గల రోడ్డుగోల్డు భూషణములు ”



గాజుల జత	రూ. 8-0-0	మీరు మా నగలను బంగారు దానివలె
మెడగొలుసు 1 పేజు	,, 6-0-0	నుపయోగించుకొన వచ్చును ఛాయకు రసా
పెద్దవంకీ వడ్డాణము	,, 21-0-0	యనకముగా పరీక్షింపబడినది 10 సంవత్స
చిన్నది	,, 15-0-0	రములకు మాత్రమే గ్యారంటీ యొసంగ
ఉంగరములు 1-కి	,, 4-0-0	బహును.

త్యరపకుడు: కే. నాదముని అండ్ సన్సు, 168, వై నాబబాగు రోడ్డు, మద్రాసు. ఫ్రాంచి ఆఫీసు: 115 బంకాల రోడ్డు.

ఫోటోక్యామర



ఈ ఫోటోక్యామరాలు సీమలో తయారు చేయబడినవి

ఈ క్యామరాలలో ఒకరి సహాయములేక ఎంతమందికైనా ఫోటోలు తీయవచ్చును. ఈ క్యామరాల ఒకటి ఉంటే కావలసిన వారికి ఫోటో తీసి ద్రవ్యం సంపాదించవచ్చును. ఫోటోక్యామరాలలో ఫోటోలను ఎత్త వచ్చును. ఫోటోలు ఎత్తేదానికి నేర్పుకోవలసిన అక్కరలేదు. క్యామరాలలోనే ఫోటో ఎత్తవలసిన క్రమము పంపబడును. ఈ క్యామరాలను తీయువారికి మాడు సం. గ్యారంటీగల ఒక టైంహీన్ ఇనాముగా ఇవ్వబడును.

క్రయము 1-కి రూ. 4-8-0

కే. యన్. బెన్సన్ అండ్ కంపెనీ, P. B. 1246, మద్రాసు.

ఆస్తి మొదలైనవి

అమ్మకమునకుగాని, అద్దెకుగాని. ఋణములు - తనఖాలు

సరసమైన పరతులు. ఉత్తరప్రత్యుత్తరములు రహస్యముగా నుంచబడును

డిన్ రోజ్ యెస్టేట్

గృహములు, భూములయొక్క, వేలముదారులు

1/17, మాంటూరోడు, మద్రాసు.

DINROZE ESTATE

House & Land Auctioneers

1/17, MOUNT ROAD, MADRAS

ప్రాశస్త్యము: యఫ్. బైరాంషా అండ్ డి. డి. యిటాలియా.

డి. జి. కె. యన్. వి. కన్నా బిరక్ పిల్లె.

వెటర్నెయిన్

చక్కెరచేయు యంత్రములు

సైజులు రోజుకు 50 మొదలు 1000 టన్నుల చేరకును
చేయును

జాన్ మెక్ నీల్ అండుకో లిమిటెడ్,
గ్లాస్ గో

వారివల్ల తయారు చేయబడినది.

అంచనాలకు, వివరములకు వ్రాయుడు:

మార్షల్ సన్ను అండుకో (యిండియా)
లిమిటెడ్

9 సెకండులైన్ బీచి, మద్రాసు.

ప్రాంచీలు:

బెజవాడ, తంజావూరు, కోయంబటూరు.

ఆంధ్రపత్రిక - భావ సంపత్సరాది సంచిక



1. చెన్నైలోని విద్యార్థుల సమితి

2. ఆంధ్రప్రదేశ్ లోని విద్యార్థుల సమితి



1. నరసారావుపేట మహిళాసారస్వతసమాజపు వార్షికసమావేశము, అధ్యక్షురాలు: రాయసమురత్నమ్మగారు.
2. రాజమండ్రి నీటితవ్వక కలకాలము నివాసిక.

మాత్రగలదియనఁగా నొక్కమాత్రకాలములో నుచ్చరింపఁబడుననియు, నట్లే దీర్ఘము రెండుమాత్రలకాలములో నుచ్చరింపఁబడుననియు, ప్లుతము మూడుమాత్రల కాలములో నుచ్చరింపఁబడుననియు, నిట్లు కాలనిర్ణయముఁ జేసి తద్వారా పాఠకు లాభేదముల సులభముగ గ్రహించునట్లు చెప్పఁబడినదని గ్రహింపవలయు. అచ్చు నుచ్చరించుటకుఁ గావలసినకాలమును నిర్ణయించి చెప్పటచేఁ బ్రసంగవశమున హల్లులకుఁగూడఁ జెప్పఁబడియున్నందున “వ్యంజనం త్వర్థమాత్రకమ్” అనఁగా వ్యంజన మర్థమాత్రకలదని (అర్థమాత్రకాలములో నుచ్చరింపఁబడునని) చెప్పఁబడెను. ఇట్లాయావర్ణములయొక్క షరస్పరభేదములఁ దెలిసికొనుటకుఁగాను మాత్రాభేదము కల్పింపఁబడినదే కాని వేఱుగా దానివలన సాధింపఁదగిన ప్రయోజనము లంతగాఁ గానరావు. కావున ప్రాస్వాదిసంజ్ఞ లచ్చుల కనియే తెలియనగును. ఈ ప్రాస్వాదిసంజ్ఞలఁబట్టియే గురులఘునిర్ణయము చేయఁబడినది.

“ప్రాస్వంఘు” (అష్టా. ౧ అ. ౪ పా. ౧౦ సూ.) అనఁగా ప్రాస్వమైనయచ్చు లఘునని యర్థము. దీనికిఁ గాలనిర్ణయము చేయవలసినచ్చినచో “ఏకమాత్రో భవేద్ధీర్ఘ” యనుటచే నొక్కమాత్రకాలములో ప్రాస్వ ముచ్చరింపఁబడునని నిర్ణయింపఁబడుట చేతను, ప్రాస్వమే లఘుసంజ్ఞగలదియని చెప్పఁబడుట చేతను, లఘు వొక్కమాత్ర కాలములో నుచ్చరింపఁబడునని తెలియుచున్నది. అనఁగా లఘువు నుచ్చరించుటకు నొక్కమాత్రకాలము పట్టనని యర్థము.

“సంయోగే గురు” (అష్టా. ౧ అ. ౪ పా. ౧౧ సూ.) సంయుక్తాక్షరమునకుఁ బూర్వమందుండు వర్ణము (అచ్చు) గురునని యర్థము. “దీర్ఘంచ” (అష్టా ౧ అ. ౪ పా. ౧౨ సూ) దీర్ఘవర్ణము (అచ్చు) గూడ గురునని యర్థము. ఈగురువునకుఁ గాలనిర్ణయము చేయవలసినచ్చినచో “ద్విమాత్రో దీర్ఘఉచ్చ్యతే” అనుటచే రెండుమాత్రలకాలములో దీర్ఘ ముచ్చరింపఁబడునని చెప్పట

చేతను, దీర్ఘమునకు గురుసంజ్ఞ గలదనుటచేతను గురువు రెండుమాత్రలకాలములో నుచ్చరింపఁబడునని తెలియుచున్నది. గురువు నుచ్చరించుటకు రెండుమాత్రలకాలము పట్టనని నిర్ణయింపఁబడినదికదా? సంయుక్తాక్షరశరక మగు పూర్వవర్ణము (ప్రాస్వాచ్చు) గురువేకాపున నదికూడ రెండుమాత్రలకాలములో నుచ్చరింపఁబడునని గ్రహింపవలయు. ఇంతకుఁ దేలినదేమనఁగా ఛందశ్శాస్త్రప్రకారముగా నచ్చులు గురులఘుభేదముచే ద్వివిధములుగా నుండుననియు, గురువు రెండుమాత్రల కాలములో నుచ్చరింపఁబడుననియు, లఘు వొక్కమాత్రకాలములో నుచ్చరింపఁబడుననియుఁ దెలియుచున్నది. ప్లుతమగునచ్చు మూడుమాత్రలకాలములో నుచ్చరింపఁబడునని యెఱుంగవలయును. గణములఁ గూర్చునప్పుడు ప్లుతమునకుఁగూడ గురుత్వవ్యవహారమే కనుక గురులఘుభేదముచే నచ్చులు ద్వివిధములని వైనిశ్చిత్తవడినది. (సంస్కృతవైయాకరణమతానుసారముగ నాంధ్రవైయాకరణులచే దూరాహ్వనాదుల యందుఁ ద్రిమాత్రకమగు ప్లుత మంగీకరింపఁబడినదేకాని దీర్ఘము నంగీకరించుటయే లఘుమార్గమని తోచుచున్నది) ఇట్లే వ్యంజన మర్థమాత్రకాలములో నుచ్చరింపఁబడునని తెలియుచున్నది. వ్యంజనములలో ప్రాస్వాదిభేదములు లేవు గావున వానికి విధించిన గురుత్వాదిభేదములుకూడ హల్లులకు లేవని యెఱుంగవలయు. కాఁగా వ్యంజనములఁబట్టి గణభేదములు గలుగుటలేదనియు, గురులఘుభేదములుగల యచ్చులను బట్టి గణభేదము లేర్పడుచుండుననియు విశదమగుచున్నది. గణభేదము లేర్పడుటలో వ్యంజనములతో బాత్తుగాఁ బనిలేదని తలఁపఁగూడదు. గురులఘుభేదములఁబట్టి గణభేదములు గలుగుటచేతను, గురుత్వ లఘుత్వము లక్షధర్మములగుటచేతను నట్లు చెప్పఁబడినదే కాని ప్రాస్వాచ్చులకు గురుత్వము నాపాదించుటలో వ్యంజనములేకదా హేతువు లగుచుండును. వైవిషయములవలనగురులఘుభేదమునుబట్టి మాత్రానిర్ణయము

చేయని లెఁగాని మాత్రాభేదమునుబట్టిమాత్రము గురు లఘునిర్ణయము చేయరాదని వ్యక్తమగుచున్నది గదా? ఈనిధమగు దృష్టితోఁ బరికించిన బూర్వోక్తలక్ష్యము లన్నియు సరిపడఁగలవు.

గురులఘువు లేవో నిశ్చయించుకొని పిమ్మట నుదాహరణములఁ బరికింతము. ఆంధ్రభాషయందు దచ్చు లతోఁ దీర్ఘాక్షరములు, జడ్డక్కరముల బొట్టుల పిఱుందకడ నూఁదినయక్కఱములును గురువులనియు, దక్కినవి లఘువు లనియుఁ దెలియవలయును. ఇట 'నూఁదిన' యను విశేషణసామర్థ్యముచే నుత్తరపదాదియందు సరియుక్తాక్షర ముండి పూర్వపదాంతమున హ్రస్వాక్షర ముండి నచో నా హ్రస్వాక్షరము లఘువేయని గ్రహింప వలయును. నెఱుసున్నకుఁ బూర్వమందున్న యక్షరము లన్నియు నూఁదినలుకఁబడునని తెలిసికొనవలయును. పీఠల్, అనినక - ఇత్యాదిపదములందుఁ బొల్లులతోఁ గూడిన హ్రస్వాక్షరములుగూడ సంయుక్తాక్షర పూర్వ నర్హతుల్యములుగానే గ్రహింపవలయు నని తెలిసికొన యుండును. ఇంక నుదాహరణములఁ బరికింతము.

అతఁడు, ఇతఁడు-ఇత్యాదులందలి అకార, ఇకార ములు లఘువులు కనుకను, లఘువు నుచ్చరించుటకు నొక్కమాత్రకాలము పట్టనని నిర్ణయింపఁబడుటచేతను నావర్ణము లేకమాత్రకములని గ్రహింపవలయును. అప్పుడు, ఇప్పుడు ఇత్యాదులందలి అకార, ఇకారములు సంయుక్తాక్షరపరకము లగుటచే గురువు లయినవి కావు నను, గురువు నుచ్చరించుటకు రెండుమాత్రలకాలము పట్టనని నిశ్చయింపఁబడుటచేతను నావర్ణములు ద్విమాత్రకము లని చెప్పవలయును. ఆపదములందే యున్న

'ప' అను నక్షరమునందలి ఉకారము దీర్ఘాక్షరముల లోను, జడ్డక్కరముల బొట్టుల పిఱుందకడ నూఁదిన యక్కరములలోను జేరకుండుటంజేసి గురువుకాదు గావున లఘువే యని గ్రహింపవలయు. దీనికిఁ గాలనిర్ణయము చేయవలయునన్న నొక్కమాత్రకాలములో నుచ్చరింపఁబడునని యెఱుంగునది. ఇట్లే మంచము, వనితన్ ఇత్యాదులందలి మకారతకారములయందున్న యచ్చులు పైలక్షణములకారము గురువులనియు, వాని నుచ్చరించుటకు రెండేసిమాత్రలకాలము పట్టననియుఁ దెలిసికొనవలయు. మఱియు నాపదములందలి 'చే, ము, వ, ని' అనునక్షరములందున్న యచ్చులు లఘువులే యగును గావున వాని నుచ్చరించుటకు నొక్కమాత్రకాలము పట్టనని యెఱుంగునది.

ఇదియంతయుఁ జూడ లఘు లేకమాత్రకమనియు, గురువు ద్విమాత్రకమనియుఁ జెప్పట సమంజసమని తోఁచెడిని. అట్లుకాక యేకమాత్రకము లఘువు, ద్విమాత్రకము గురువు అనిచెప్పినచో మాత్రలఁబట్టి గురులఘు నిర్ణయము చేయవలయునని యపార్థస్ఫూర్తి గలుగు చుండును. దీనికే (ఈభీమనగారి లక్షణమునకే) యన్వయక్రమమునఁ బదవిపర్యాసముచేసి చెప్పినచో సరి యైనయర్థము లభింపఁగలదు. అనఁగా నర్థముచెప్పు కొనునప్పుడు లఘువొక్కమాత్ర, గురువుద్విమాత్రకమని పదక్రమము మార్చుకొనవలెనని గ్రహించునది. భీమన గారు పద్యములోఁ జెప్పనప్పు డీపదములనే క్రమము మార్చి చెప్పిరి. పాణినీయసూత్రపరిచయ మేమాత్ర మున్నను బ్రతివారికి నయ్యది స్పష్టముగా నర్థము కాకపోదని తోఁచెడిని.

భీమా గురించి బాగుగా యోచింపుము.

1. ప్రపంచమునను దంతటను భీమావ్యాపారము గాంచిన గణనీయమగు అభివృద్ధి కేసులము యుద్ధానంతరము యిటీవలినాటికి నే యున్నది.
2. ముఖ్యముగా హిందూ దేశమున, గత 10 సంవత్సరములనుండియే యీ వ్యాపారము సక్రమవికాసము పొందుచున్నది.
3. ఈయభివృద్ధి రంగములో హైందవ సంస్థలు తమపాత్రలను బాగుగా నిర్వహించినవి.
4. జూపిటర్ జనరల్ యిన్నూరెన్ను కంపెనీ స్థాపించబడిననాటినుండియును, క్రమ క్రమముగా అభివృద్ధి గాంచుచు, అన్నిరకముల భీమాశాఖలను నెలకొల్పజాలినది.
5. అగ్ని భీమా కావలెనన్నయెడల, జూపిటర్ జనరల్ రక్షణ యునంగుటకు సంసిద్ధముగ నున్నది.
6. అగ్నిప్రమాద శలితముగ, అగ్ని దండుగ, లాభనష్టము రాబట్టుకొన దులినాచో, సంపూర్ణరక్షణమైన పాలినీ యునంగుటను.
7. విదేశ, స్వదేశ సంబంధములగు గో నాశికా వ్యవహారములందు గూడ జూపిటర్ జనరల్ సరికుల యోజన జాగ్రత్తపెట్టుకొనును.
8. చిన్నదిగాని, పెద్దదిగాని మోటారుకారు చెడిపోయినందువలన కలుగు నష్ట మును రాబట్టుకొనుటకు, జూపిటర్ జనరల్ పాలినీ యునంగును.
9. కూలీ సంరక్షణకై యజమానులకు పాలినీ గలదు.
10. శీవిత భీమా కావలెనన్నచో, తండ్రికి బిడ్డకు పాలినీ గలదు. తండ్రికి వృద్ధాప్యమున రక్షణ గల్గుటకును, బిడ్డకు విద్యాభ్యాసము ముగ్గుగు సౌకర్యములకును పాలినీ జారీ చేయబడును.
11. ప్రజాసేన మా సాంకేతికవదము. మర్యాద మా మతము. హైందవ భీమా ప్రజాసముదాయమునుండి ఆదరణ పొందుట మా జన్మహక్కు.

జూ పి ట ర్ జ న ర ల్
యిన్నూరెన్ను కంపెనీ, లిమిటెడ్.

లోకల్ మేనేజర్లు:—నారాయణదాస్, గిర్ధర్ దాస్,

10, మాక్లిక్విస్, మద్రాసు.

స్థాపితము
1913



కోరినవారికి
కృతలాగు ఉచితము

అనలు సవరం బాగారు, మేలైన మణుల నగలు, అప్పటమగు పెండింగల సామానులు వగైరాలకు
పూచీ యివ్వబడును. కరంచందు చబిల్ దాస్ అండు సక, నగలవర్తకులు,
175, చైనాబజారురోడ్డు, మద్రాసు.

ది యిండియా ప్రావిడెంటుకంపెనీ లిమిటెడ్

[స్థాపితము 1910]

ఆస్తి రు 10 లక్షలు

చెల్లించిన క్లెయిములు రు 3 లక్షలు

హిందూ దేశమున పురాతనమైన గొప్ప ప్రావిడెంటుకంపెనీ. వార్తాపత్రికలచేతను, ప్రజాసమూహము
చేతను మిక్కిలి ప్రశంసించబడినది. వైద్యశీక్షలేకుండా, మధ్య వీధరకములవారికి సమృద్ధమైన తక్కువ
వ్యయముగల జీవితభీమాసంస్థ. చక్కనిపద్ధతులు. ప్రీమియము రుసుము నెలకు రి అకాలు మొదలు ఒక
రూపాయవరకుమాత్రమే. ఏజన్సీలు ఇండియా, బర్మా, సిలోన్ ఫెడరేటెడు మలయాన్టీటులు, అగేబియా,
బి. యి. ఆఫ్రికా మున్నగుస్థలములం దంతటను గలవు. ఏజెంట్లకు విశేషలాభ సౌకర్యములు గలవు.

వివరములకు దయచేసి పెంటనే వ్రాయుడు.

శ్రేణులకి:—

The India Provident Co., Ltd,
10, Clive Row, Calcutta.

10. క్లయివు రో, కలకత్తా.

అమృతాంజనము అన్ని నొప్పులకు దివ్యమృతము

అమృతాం

మదరాసు,

బొంబాయి,

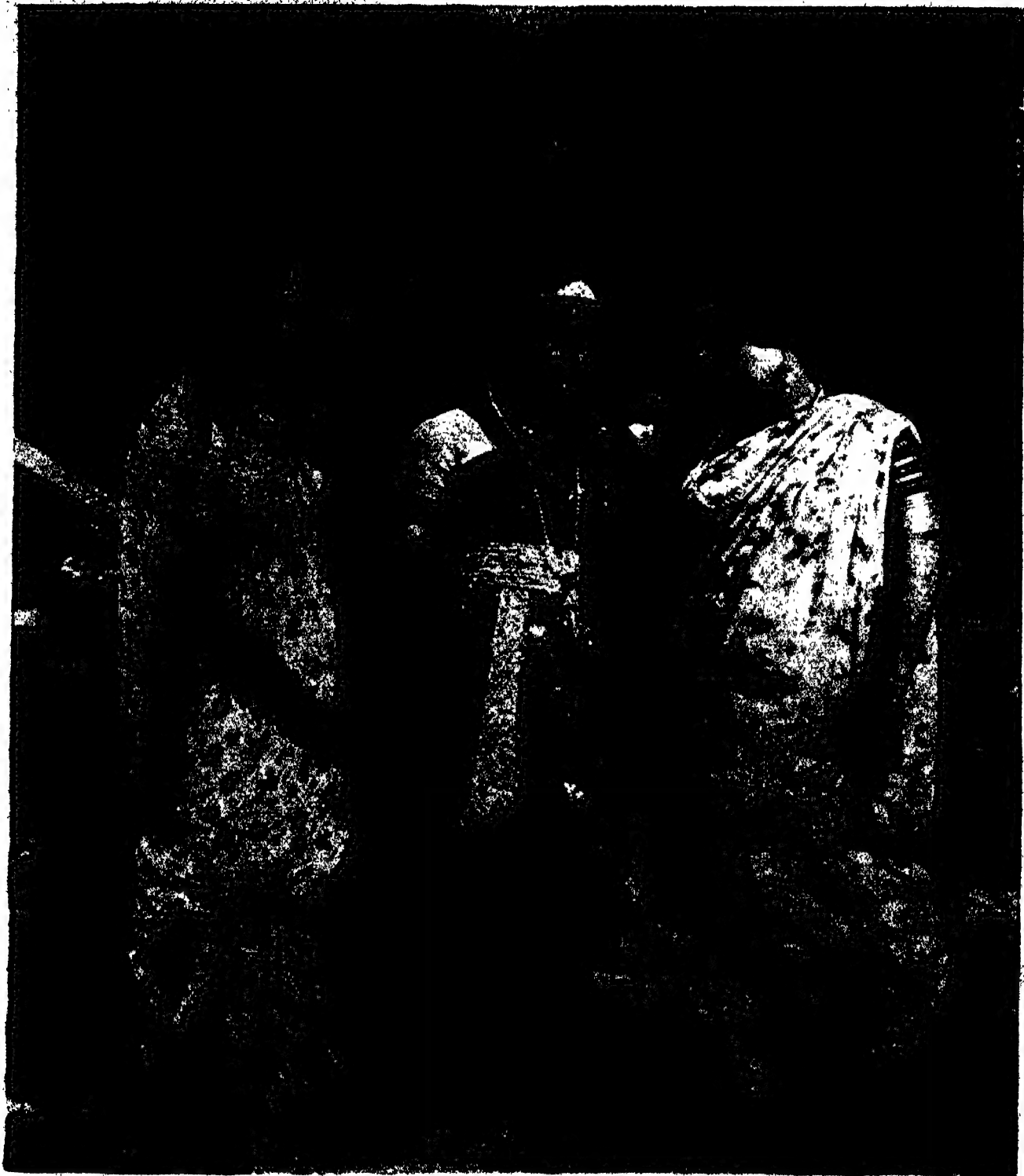


జనం డిపో,

కలకత్తా,

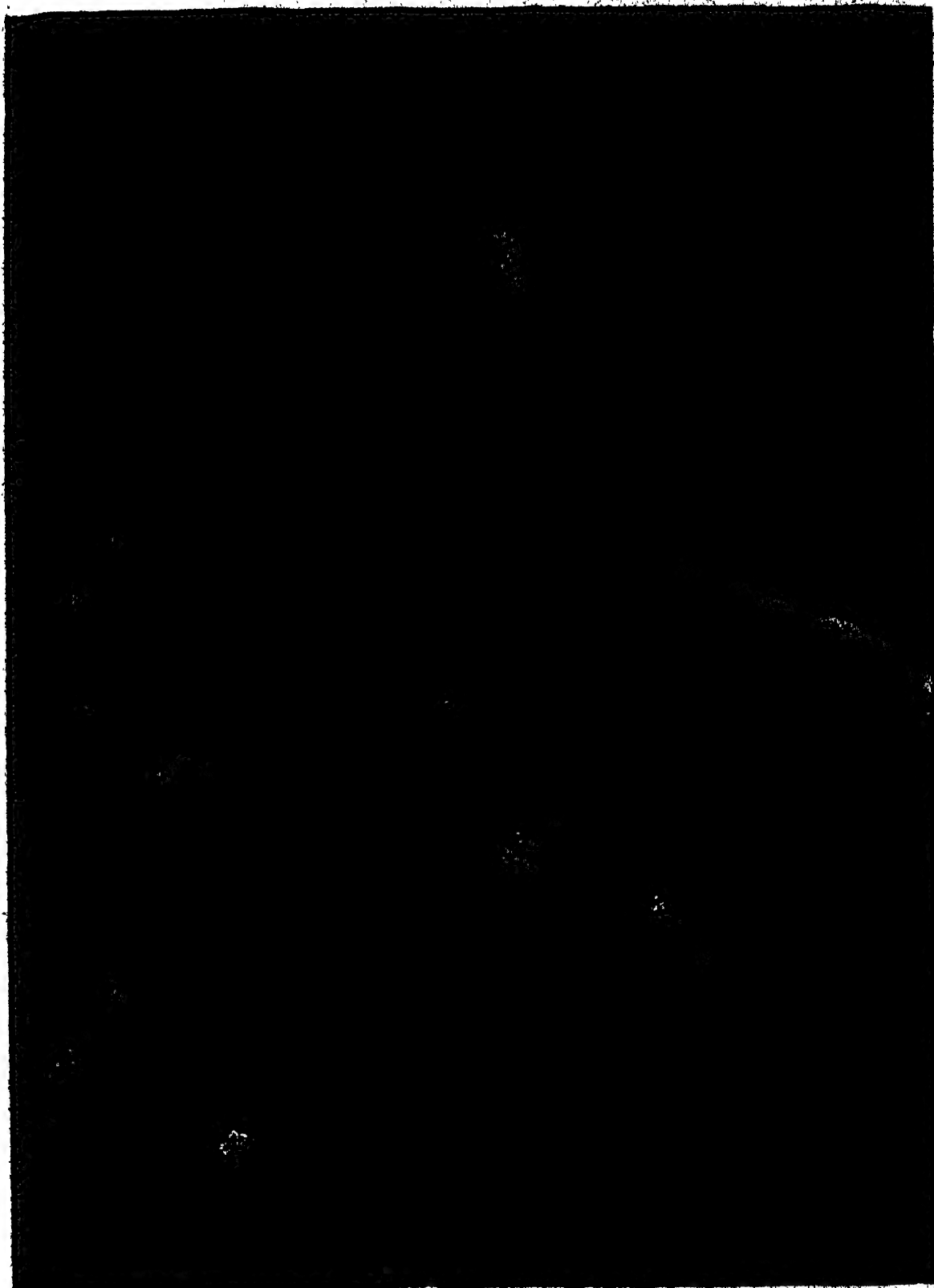
రంగూను.

८० (५) ब (प्र) ५ - ५५ ब ० ५ ५५ ५ ५ ० ५ ५



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

1. The first step in the process is to identify the problem or issue that needs to be addressed. This involves gathering information and understanding the context of the problem.



3-5-15

మృత జీవన్

మృత కీవణ్ రోగిని మూలము గాక రోగిని మూలము కాకయును నిర్మూలించును. రోగులపై యుపయోగించి ఆ రోగములు కుదరిన తరువాతనే, మృత జీవణ్ కుసుర్పగల రోగముల గట్టిగా వక్కాణించగలిగితిమి. సావాన్యజ్ఞము మేము పంపు సగ్యము పానగ్రంథమునందు పేర్కొన్న రోగవిహ్నులు ననుసరించి నైర్మూల అపసరములేకనే మృత కీవణ్ నేనించి ఆ రోగమును పోషించవచ్చును. మృత కీవణ్ యింటియందున్న డాక్టరు యింటియందున్నట్లే!

వెల రూ. 2-6-0.

పశ్యంతములను శైవములచే మృత జీవణ్ కుదుర్చువ్యాధులు: ఋశుశూల, రక్తగ్రహణి, ఉబ్బసము, శ్వాసాశ్మయవ్యాధులు, మలబద్ధము, నంజు, మధుమేహము, పరిణామశూల, చిర్మవ్యాధులు, జ్వరములు, అశీర్ణ వ్యాధులు, శోణితవృత్తి, వాతనోష్ఠలు, ఆర్శస్పలు, తలనోష్ఠలు, అపస్మారములు, నిద్రలేమి, కామిలా, మాత్రకృచ్ఛము (అశ్మరీ), కార్ష - స్వేహవ్యాధులు, ఋశుబద్ధము, నాడివ్యాధులు స్థాల్మము, పక్షవాతము, శుక్లనష్టము, బంశువాతము మూత్ర వ్యాధులు, వాంతులు, కుశుమవ్యాధులు వగైరా.

ఏజంట్లు అన్ని చోట్లను కాపలెను.

రవిక్షార్ డిపో.,

నెం. 100, గ్రాడ్ పేట,
గుంటూరు.

నేత పరిశ్రమ యందు

కాలిక్రా

మార్గదర్శమై
యున్నది

—అనేకములైన అనుకరణములు గలవు.

అయినను కాలిక్రా

అనగా, వివేచనాశక్తి గల కొనుగోలుదారులు
పరిశీలించి తేల్చిన నాణ్యమైన రకము.

డ్రెస్సులు, హృదయాకర్షణీయమగు అనేకములైన రంగులలో
డ్రెసింగు పరికరములు నిరంతరము మావద్ద
విక్రయమునకు సిద్ధముగానుండును.

కాలిక్రా దుకాణము:—

యన్. సి. పట్నా ఆండ్ కో.,

టోకుదుకాణము:

7, గిడ్డంగి పేట

(మదరాసు)

చిరుక ప్రవర్తనశ్రీగది:—

49-51, రత్నా బజారు.

ది ఇండో - యూనియన్ అస్యూరెన్సు కంపెనీ, లిమిటెడ్.

“క లీల్ మాన్షన్స్”

హౌంటురోడు; మద్రాసు.

THE
INDO-UNION ASSURANCE Co., Ltd.,

“Khaleel Mansions”

Mount Road, MADRAS

మే మొసంగునవి

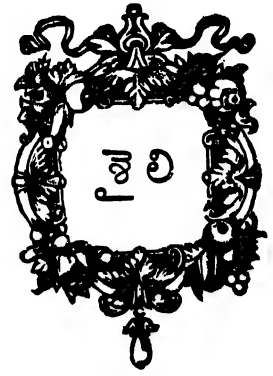
తక్కువ ప్రారంభవ్యయముతో ఆకర్షణీయము లగు భీమా పద్ధతులు.
మా పాలిసీ షరతులు సరళముగా నుండును.

“ఇండో - యూనియన్” యేజిస్ట్రీ ఆర్గనైజేషన్ యందు
చేరినచో, దానివలన విశేషముగా ధనము లభించును.

దా ని వ ల న

న్యాయము, సహానుభవము కలుగును.

షరతులు సరళము. మిక్కిలి లాభకరమైనవి.



తైలివాదమున అధునాతనయుగమున పృథ్వీజాతులందు ఆంగ్లం లగ్గణ్యులని నొక్కిచెప్పవచ్చును. తైలికలహ మొక్క ఆంగ్రావనిలోతక్క నింకెక్కడను లేకుండుటే యిందులకు హేతువు. తైలిరణముగాక, తైలి ఆంగ్రులదృష్టి నాకర్షించియుండినయెడల, ఆంగ్రభాష యీవఱలోనే ముకుటముదాలిచి, అవనియందలి సారస్వతాచార్యుల ముతైపునేసల నందియేయుండెడిది.

దృష్టి ఆంతరంగికమైనది, మనసునందు ధగధగజ్వలించు జిజ్ఞాసానలమునుండి వెడలు నెరసులే దృక్కులై వెడలును. లోగల కత్తి పురికొలిపినపుడే మనుజుఁ డేవస్తువునైనను పరీక్షించును. లోగల కత్తి జిజ్ఞాస. జిజ్ఞాసలేని మాడ్కి వెట్టిమాపు—మాపుగాని మాపు. అసంతృప్తినుండి జెడలి, మనసునందు సలసలగ్రాగి, మనుజునిఁ గూర్చుండనీక, మానవగులభీనై రాశ్యమును, అలసదనమును తన యావిరిచే బాహ్యవాతావరణమున చెడఁగొట్టి, కర్మపథమున జిజ్ఞాస నరుని వడివడిగ నడపుచుండును. సంతృప్తిజీవనము కాంతించు ఆంగ్రులం దిట్టి జిజ్ఞాస, ఇంద్రునిములేక చల్లవడియుండుటచే భాషా హృదయమును వీరంతగా నెఱుంగలేకున్నారు.

ఆత్మజిజ్ఞాస లేకున్నను, అంగవ్యాయామము ఆంగ్రులలో నెక్కుడుగ నున్నది. తైలివాదమున తెలుగులను ముందు కేర్పొన వలెనని తెలుపుటకు కారణము భాషావ్యాయామమున వా రాజీలేతిన మల్లులగుటయే. ఆరోగ్యమునకు ముఖ్యమైన వ్యాయామ మందఱికిని ఆవశ్యకమే. ఆత్మనుగాని, అంతరంగమునుగాని తలపనేతలపక, కండలను పెంచి, జెబ్బగొట్టువాడు జెట్టికావచ్చునుకాని ఆత్మోన్నతి నందిన ఆదర్శపూరుషుడు కానేరడు. దండెములందును, బస్కీలందును, మాటలను క్రిందుమీదులుచేసి, ముచ్చెమటలందు ముంచివేసితి మేని, వానియందు స్థూలమైన మాటుపు కానంబడవచ్చును. కాని పెటి గిణకండ, లోనిదివ్వకు గాజుకుపెప్పగాక దానివెలుగు నణచు కావరపు ఆవరణము కావచ్చును. నేవాదర్శముగాని, కళామరీచిగాని ఆత్మజ్యోతినిండి ప్రసరించునుగాని మాటలప్రాపునుండికాదు. మాటలందు నైల్మగుంతులు ప్రదర్శించుటగాక, మాటలందలి భావ మందు మనసునిలిపి, దృష్టినిలిపి, బుద్ధిని ముంచి, ఆత్మనిడి, సాకస్యతాకాయములు పూర్ణమగుటకును, ప్రజాభ్యుదయము చేకుటుటకును భావభూమి నేయు పరిశ్రమయే భాషానేత యనిపించుకొనును.

గ్రామ్యవాదులును, గ్రాంథికవాదులును చాలకాలమునుండి ఆంగ్రసీమయందు కురుత్రేత్రకదనమును సాగించుచున్నారు. గ్రామ్య వాదులు వాడుమాటలు గ్రాంథికవాదులకు కానిమాట లగుచుండెను. గ్రాంథికవాదుల భాషాప్రయోగములు గ్రామ్యవాదులకు క్రూరాస్త్ర ప్రయోగము లగుచుండెను. తెలుగున నిపుడు లోచు వ్యాకరణ నిబంధనములును, లక్షణనూత్రములును ఇటీవలఁ బుట్టినవేయనియు, జాలిమతనిరంకుశత్వములవలె భాషానిరంకుశత్వము విజృంభించె ననియు, రాజులను మెప్పించి పొట్టలను పూరించుకొనుటకు ప్రబంధ కవులేమేమో వ్రాసిరికాని ప్రజల కుపయోగించు వ్రాతలకై తమ కలములను పురికొలుపలేదనియు నేటి గ్రామ్యవాదు లందురు. “సభ్యతకును, సౌందర్యమునకును, నాగరికతకును, నాజాకునకును విరుద్ధములైన ‘అడు’, ‘ఈడు’ మొదలగు పదములను ప్రయోగించి, నియమబాహ్యక్రియకుఁ గడంగి భాషకు వికృతరూపుఁడెచ్చువారు మీ” రని గ్రాంథికవాదు లెదుటివారిని జూచి హుమ్మసుచున్నారు. వీరు వజ్రాయాధమును చేబూనిరి; వారు బ్రహ్మోస్త్రమును ప్రయోగించిరి! వీరు కాటుమాటలు విడిచిరి; వారు బండమాటలు వదలిరి. వీరు మాటలను వెలివెట్టినకొలది వారు వానిని మెలివెట్టి మలిద్రవ్య ముండిరి. “‘అడు’, ‘ఈడు’ అనుపదములు ‘చేయగలాడు’, ‘మొక్కలీడు’ అనుపదములం దుండ వానిని గ్రాంథికవాదులు ప్రయోగించుచునేయున్నారు. ఉన్న వానినిగుట్టించి కానిపెనగులాటకు మన ప్రముఖులు డీక్షించుచున్నారని ప్రసంగవశమున గతవత్సరము విశాఖ పట్టనమున శ్రీసాంఖ్యాయనకర్మగారు పలికి, యీవాక్కులహము వ్యర్థమైనదని లేల్పిరి. ఇది వ్యర్థమైనదని నేటి భాషాకూరు లింకను గుర్తింపలేదు. కన్నెఱ్ఱలును, కానిమాటలును పెఱుగుచునేయున్నవి. నన్నయకుముందునుండియు లోచిన తెలుగును తఱచితఱచి “వాడుక మాటలు పుస్తకముల కెక్కలేదనువా రెక” రని పల్లాకిమిడిపంతులు గారు సవాలుచేయుచున్నారు; త్యాగయ్యకీర్తనలందు గ్రామ్యభాష లేదాయని గొంతెత్తి వలుకుచున్నాడు. డేవమందిరమైన ఆంగ్రభాష యందు అస్పృశ్యమైన కట్టములకు ప్రవేశము లేదని స్వంతస్మృతుల నుదాహరించుచు, సనాతనవాదులు మఱింత బిరుసెక్కుచున్నారు. ఈవిగ్రహమున సంధిగోచరించు చిన్నెలు కానవచ్చుటలేదు.

భాష సంఘమువంటిది. సంఘస్థజాతులపై నేడు ధూర్జకముకొన్నది, ప్రకృతులును, ప్రవృత్తులును, అక్కటలును, వాంఛ

లును వేటైయున్నంతకాలము వేటువేటువృత్తు లవసరము. అన్నిటి కిని దానే తగుదునని సర్వవృత్తుల నొకడే తలపఁ గట్టుకొనుచో, అభివృద్ధి అందరానిపం డగును. సంఘచలనమునకు వృత్తిపరిచాలన మెట్లవసరమో, భాషాచలనమునకు విభిన్న భావసంచలన మవసరము. ప్రకృతినిబట్టి వృత్తి గోచరించులాగున భావము ననుసరించి భాష పుట్టును.

సృష్టినుండియు, జీవనమునుండియు భావ ముద్భవించును. సృష్టిచిత్రములందును, మానవజీవనమందును భేదమున్నంతకాలము భావమందుఁగూడ భేదము తోచుచునే యుండును. అవ్వలచిగ్గించు జీవనము తన లేనపుడు, తన చక్కందనమును అంతరంగమునుండియే అందును. కనులపండువొనరించు పూలతలు తమ లావణ్యమును లోగల భావపూరమునుండియే తోడుకొని, బాహ్యవనియందు విరజిమ్మునూ మృదులమైన తీవలు మధురములైన పద్యపంక్తులు. చక్కని పూగు త్తులు రూపుదాల్చిన లలితభావపుంజములు. గురుగంభీరభావము మహాన్నతమైన వటవృక్షమై పెక్కుజీవుల చేమోడుపుల నందును. ఉన్నతోర్వీరుహమందలి భావము బర్కుమహాశయనివంటిది. లలిత లలికలందలి భావము తెన్ని ససుచామహారకపుల మనసువంటిది. ద్విజేంద్రుని మనసునంటిన తాళవృక్షము అలంకారరహితమై, సహజ రూపున గోచరించు తొయ్యలివంటిది. ఆహంబరములేని తిన్ననిజీవన మున సహజసౌందర్యము సుధాభాండమగునని తాటిమ్రోగు తెలుపు చున్నది. ఏదృశ్యమైనను తేటయైన కనులందు ప్రతిఫలించునుకాని బండబారిన నోలునందుఁగాదు. ప్రభాతనభమును, గానబంధురవాతూ లమును కమలకాసారమునఁ దేలునుగాని నల్లతాళ్ల సుట్టియందుఁగాదు. చల్లనై చక్కనైన చంద్రికలు చకోరములందును, కైరవములందును ప్రస్ఫుటించునుగాని బోడిమాటలందును, బొమ్మరాళ్లయందును గాదు. మధ్యందినమార్తాండుని ప్రతాపము, నైనికులను సమరమునకు పురి కొలుపు శూరుని వాక్కులందు మంటలుజిమ్మునుగాని, కాముదీ స్నాతకర్వరీపగిది నీమంతిని సుధామధురోత్తలందుఁగాను. టక్కు టక్కున నులుకులెత్తు వాక్కులు, రణోర్వీనుండి వెడలు ఘోటకపద శబ్దములను తెలుపుటకు పనికివచ్చును గాని పలివియోగమున పొగులు పడితియీరెలుంగును వినిపించుటకుఁగాదు. కలస్సనతైలి మధురకంఠ రయగు వరూధినికే చెల్లినదిగాని వట్టిగొడ్డువలె నార్చు మోటుగయ్య లిక కాదు. తాళ్లును, ఆప్పులును, అంకెలును, ఆర్పులును సౌందర్య సౌందర్యపరిపన్నయైన సారస్వతమునకుఁగాక మందరవంటి కాంత్యమున కును, పూతనవంటి దౌష్ట్యమునకును నని ఎవ్వరెఱుఁగరు? తాడకి క్రూర్య మును వర్ణించు కవి లలితలలికాసంకాశములైన పదములను ప్రయోగిం చినయెడల, అగ్గికోటనుండి సుగంధమును వెడలింపఁదలంచినవాఁ డగును. తాటకికథఁ దెలుపు కలమున తాటకి లేకున్న, అది కలమని పించుకొనుటకు తగదు. రాముబాణముఁ జూపు కలము రాముబాణము గాకున్న, తాటకిగొంతుకయందే యది అదృశ్యమైపోయెడిది. తాడకి

తైలి తాడకియంతరంగము. రక్తమును త్రావునది రక్తధారలవంటి భయదపదములనే ప్రయోగించునుగాని, ఉడురాళివంటిగాని, నన ప్రావుపగిదిగాని జలిబిలిపలుకులను గాదు. గులాబియధరమునుండి స్వర్ణసామ్రాజ్యము స్రవించునుగాని విషవాయువుగాని, బొగ్గుపులుసు గాని కాదు. సుగంధమయమైన నూనభావము సుగోమలమైన దళము లందే వ్యక్తమగును. పుష్పభావమును తెలుపు చక్కని అక్కరములు పుష్పదళములు. గులాబిరేకులు దొలిచివైచి, కాకియీకలను గులాబి హృదయమున పాలిపెట్టగలవాఁడు మధురమైన భావమును వికృత మైనమాటలందు వ్యక్తీకరింపఁగలఁడు. కోకిలకంఠమున తోడేలును స్రువ్యగలవాఁడు గీతవంటి తియ్యనితలఁపును పెజబొబ్బవంటి తైలి యందుఁ దెలుపఁగలఁడు. మందానిలమున అల్లనల్లన స్రవించు గుస గుసలు మహానిలమును తురిపించు పిడుగులకు సహజమైననాఁడే మృదుల భావము నిర్దోషతైలియందు తోలుకాదును. శీతవృక్షధారలల్లు తురియు తైలిపంక్తులు ఆశీస్సునలెనుండుగాని శాపాయాధుని క్రోధ కంపితస్వరము ట్లుండునా? సెలయేరుపోలు తైలి చల్లనైన రాధా కృష్ణుని హృదయమునుండియే అవిరళానందమున పలుమాటు ప్రవ హించెనుగాని, న్యాయస్థానములందు వ్యాఘ్రముట్లుచివ రసనిహారి యెడఁదనుండి వెడలెనా?

ప్రకృతియందలి భేదము, భావమందలి భేదము తైలియందలి భేద మగును. ఒకేగమ్యస్థానముగల ప్రకృతియందుఁగూడ ప్రకృతి వ్యక్తిత్వమును వ్యక్తీకరించు తైలియే గోచరించును. కోయిలకంఠ మును తుమ్మెదొంతుకందును, పుష్పంధయకంఠరమును కోకిలగళ మందును చొప్పించుట ఈవిధమును, ఆకీటకమును పుట్టించిన సృష్టి కర్తకే సాధ్యముకాదు. ఉన్నతకుజములందు తీవలను పుట్టింపఁ గలి గిననాఁడును, కుంజవాటియందు దీర్ఘ శాఖలను వెడలించిననాఁడును మానవుఁడు ప్రసూనతైలిని కోకిలకును, కోకిలహృదయమును భృంగి కిని, కుజతైలిని వట్టదమునకును, వట్టదతైలిని కుజమునకును, పుష్పహృదయమును కోయిలకును, కోయిలయెడ నిందిందిరమునకును నొసఁగఁజాలును.

తైలిభేదము ప్రకృతిభేదముల ననుసరించియు, ఒకేయొద్దేశ నిదికై వేటువృత్తులనుండి వేటుతెరువుల నడచు నొకేప్రకృతి నను సరించియుమాత్రమే కాక విషయప్రకృతి ననుసరించియు, స్థలకాల పరిస్థితుల ననుసరించియు మాటుచుండును. విషయప్రకృతి అనుకూల మైన మనుష్యప్రకృతియందే యిముడును. సహజగుణమునకు వేటైన బాహ్యగుణము నలవజీచికొనుట సుసాధ్యముకాదు. అట్లలవజీచి కొన నొరులయుద్బోధనమువలన నొకఁడు ముందంజవేసినయెడల, తప్పక బోరలపడును. రాధాకృష్ణుఁడు భౌతికశాస్త్రమును, రాముడు తత్త్వశాస్త్రమును పరిశీలించుటకుఁ గడంగియుండిరేని నేఁ డిరువురును మహామేరువులుగాక అణువులై ఎందో యగఁగియుండువారు. ఇరు వుర వృత్తులును, ఇరువుర మానసిక ప్రవృత్తులును వీరితైలియందు తొలి

నుండియు గోచరించుచునేయున్నది. ఎట్లో శ్రమించి బారిష్టరు పరీక్షయం దుత్తీర్ణుడైన స్కాట్ మహాశయుడు న్యాయసాన మెఱుంగక నవలారచనయందే తనతనపును గడపెను ; వర్తకమునకుఁ గడగి, వెలికిలపడి దురంతకష్టములందుఁ గూలెను. గ్రంథరచన యందైన నాతని ప్రకృతి ప్రశ్లేకమైనది. కవిత్వసంపదయందు బైరనుతో నెగ్గలేక Lady of the Lake, Lay of the last Mins-trel మున్నగు కొలదిమాత్రపు రచనలతో పద్యములకు తిలోదకములు వదిలి గద్యరచనకుఁ గడంగి అందే యాతఁ డనర్థమును ప్రతిభనందెను. నవలారచనయందైన నీతని ప్రకృతికిని జేక్ ఆస్టిక్ ప్రకృతికిని, యీమె తైలికిని స్కాట్ తైలికిని భేద మున్నది. కొండొకవిషయవర్ణన యందుఁ దన కామేశక్తి లేదని వాల్కర్ స్కాట్, ఆస్టినునకు సుప్త ముగ వ్రాసెను. ఒకేమార్గము ననుసరించి చనినను, వీరిరుచులు వేఱని వీరివారెలే తెలుపుచున్నది.

ఆంగ్ల సారస్వతచరిత్రయం (Romantic Period) చోకే సమయమున వర్ధిల్లిన వర్ణనవర్తు, షెల్లీ, కీట్సు, బైరన్, కోలెరిడ్జి, సాడేల తైలులం దందేని భేద మున్నది. ద్రోహముపాపుల కాల ముందలి ఎండువరుసవంటి తైలి కడచినపిదప, వీరితైలి తుసుమించి నది. ప్రాతయాకులు రాలినంతన, వీరితైలి ఆంగ్ల సారస్వతమున వసంతోదయప్రభలు చిమ్మినది. ఉత్సాహపూరితమును, రాగరంజిత మును, సౌందర్యవంతమును, ఆనందపూరితమును నైన రచనయందే యీకవులు వర్ధిల్లిరి. అయినను వీరితైలియం దందేని వ్యత్యాస మున్నది. వర్ణనవర్తులోఁగల తత్త్వసంపద బైరనులో సున్న. చిత్ర రచనమందును, అలంకారకోభయందును బైరనునకు బైరనే నాటి. గ్రీకుకవులను దిగ్మింగి, సౌందర్యకామియై, 'శబ్దములయెడల నెంచేని మక్కువ జూపి', 'షేక్స్పియరు ప్రజ్ఞ కొంత నూపఁగలిగి (Vide: Matthew Arnold's Criticism on the genius of Keats) న కీట్సు, తెవులుగొంటైన కీట్సు, యిరువదాఁతేండ్లకుపూర్వమే తన యదృష్టతక్షిని జూపఁగలిగిన కీట్సు, కీట్సునకే యెనయై యుండెను. ఇతఁ షెల్లీ చూడుడు. మిత్రుఁడు కీట్సుకంటె నాఁతేం డ్లభికము గను, బైరనుకంటె నాలుగేండ్లు తక్కువగను మనఁగలిగిన యీతఁడు, నుప్పదిరెండవయేట దివంగతుఁడు కాకమున్నే, పెక్కుమాటులు దివిదెస పరుగులేతెను. షెల్లియందలి భావోద్రేకము, ఉత్సాహము, చక్కనైన గమనిక మఱొకనికి లేదు. పాండిత్యమందు కోలెరిడ్జి సమకాలికులను మించెను. ఈతఁడు వేదము వేంకటరాయశాస్త్రి వంటివాడు. పండితప్రకాండఁడైన కోలెరిడ్జియందు కవిత్వాసంపద అంతగా గోచరింపదు. షేక్స్పియరునునుజించిన యీతని విమర్శనలు భావబంధురమైనవి. మహనీయుల సఖ్యమందు (Lake Poets) మనలి సాదే సాంగత్యవాతూలమును కొంత తనరచనయందుఁ జూపఁ గలిగెను. నెల్సన్ గుఱించి యీతఁడు వ్రాసిన గద్యగ్రంథముమాత్రము గణనీయమైనది. విభిన్నప్రకృతులుగల వీరితైలి, విభిన్నమై యున్నది.

వర్ణనవర్తు, షెల్లీ, కీట్సులు మువ్వరునుగూడ శకుంతలులపై పద్య ములు వ్రాసిరి. (Vide: "The Sky Lark", "A Sky Lark", "The Nightingale") వర్ణనవర్తుకవి వృద్ధుఁడు, యోచనాపరుఁడు. ప్రకృతిసౌందర్యమున మునిగియుండువాఁ డయ్యు, కట్టెమోపునందును, తాల్గ నుట్టయందునుగూడ నీతఁడు లోతుతలఁపులను గనుగొనును. ఈతని మానసమే శకుంతమై, అవనిపై గభీరయోచనాగర్భితదృష్టిని పఱపుచు, దివియం దొప్పెను. ఈపక్కిచూడుకు విహిక, అముష్మిక, భౌతిక, ఆధ్యాత్మిక ప్రపంచ ములను గలుపు అద్భుతమైనతీత ("True to the kindred points of Heaven and Earth"). టెన్నిసనువలెనే మిల్టనుపై నీతని కెంచేని మక్కువ కలదు. మిల్టనుతత్త్వమును గొంత నీతఁడు తనది గావించుకొనెను—ఈతనిపక్షి భావమయ మైనది. ఇతఁ షెల్లీపక్షిని చూడుడు. గానకళయట్లు చరచర నిది వాతూలపథమున వినుపిధి కెగసెను. షెల్లీహృదియందలి ఉద్వేగమును, ఉత్సాహమును, ఉద్వేలమును శకుంతమై ముక్తిసంపిన పరమహంసవలె, గగనసీమ యందు సృత్యమొనరించెను. సత్యము సౌందర్యమనియు, సౌంద ర్యము సత్యమనియు ("Truth is Beauty, Beauty is Truth") వచించు కీట్సుకవివిహంగము, పక్కియై యెగసిన ఆతని మానసమే కాని ("The Viewless wings of Poesy") వేటుగాదు. ఈ కవిపుంగవులతైలి, వీరి ప్రకృతులుదాల్చిన దువ్వలువ.

షెల్లీ వాతూలకాంక్ష—ఈతని మనసు చిటుతప్రాయము నుండియు వాతూలమై వీచుచుండెడిది. తుద కది వాతూల సంతుభిత వార్ధియందే యీతని ముంచివేసినది. హిల్లోలమున నెగసిన ఈతని పక్షికిని, ఆకుమాఱకును, (Vide: "Shelly's Ode to the Wes- tern wind") మేఘమునకును (Vide: Shelley's "Cloud") ఒకే ప్రకృతి కలదు. భారతషేక్స్పియరు మేఘమునకును, షెల్లీ మేఘ మునకును నెంచేనిభేదము కలదు.

భిన్నదేశములవారలయ్యు కాలిదాసు షెల్లీలు ఒకేవిధమైన సార స్వతమునఁ గ్రుంకులిడిరి. మరుభూమిమూడ్కి భావమునుగాని, వట్టి గడ్డిపరకలఁబోలు మాటలనుగాని కాలిదాసు అభిలషింపలేదు. రాగ రంజితములైన చూపులను, మధురమైన మాధవీలలను, రియ్యనితీవల కెనయగు గీతకళలను, పట్టుదారములను, పొందామరలను, కుసుమకేస రములను, జాబిలిరేకలను, కన్నీటిదొంతరలను, చిన్నగములను, రవికిరణ ములను, మధురోక్తులను, ముతైపుఁజేరులను, ప్రైడితమ్మలను, వినిల కేశములను కైతనెలంతకు జడగా నల్లి, అమోహయగమునకు మురి యుచు, తనహృదయసీమ నామెను జేరిచి, కాలిదాసు స్వర్గసామ్రా జ్యము నేరెను. షెల్లీగూడ శృంగారము నభిలషించిన కవిశేఖరుఁడు. వర్ణనమైన మెకారే (Lays of Ancient Rome తక్కు తక్కిన యీతనిపద్యములు రసరహితము లైనవి) కవిత్వమువలెఁగాని, పాడి మాటలందు పొరలు తన పూర్వకతాబ్ధి తు సారస్వతమువలెఁగాని

కాలిదాసు నటుంచి అధునాతనభారతమహాకవియగు రవీంద్రుని పెల్లీతో పోల్చిచూడుడు. తన కవిత్వాదీవనమున తొలుత రవి కవి, పెల్లీని ఆచర్యపురుషునిగాఁ జేకొనెను. చెప్పవలె, రవీంద్రుని వంగ పద్యములను కొన్ని యేటి వెలుపలఁబెట్టిఁ మేని, వీని నీతఁడు పెల్లీ నుండి దొంగిరింపలేదా యని తోచును. నకలుపని కవిపనికాక మకిరిపని యనిపించుకొనును. కాని యీనకలు రవీంద్రుని నకలుకాక; రవీంద్రుని ప్రకృతియందలి పెల్లీనకలని విమర్శములు గుర్తింపవలెను. పెల్లీ హృదయము విజాయంత్రము—రవీంద్రుని హృదయమును విజాయంత్రమే. సంగమేశ్వరుఁ డీవిజాను మీఠినపుడు రవికవిమనసు పెల్లీమనసువలె అద్భుతముగ సృత్యముసలిపెడిది. ఒకేప్రకృతిగల వ్యక్తుల భావములును, శైలివిధములును ఒకేరీతి నుండును. దొంగ

కాలపరిస్థితులను, శైలికి సంబంధముండు సరిమికుదా. దేశచరిత్ర సారస్వతమున మార్పులుపుట్టించుట ప్రసిద్ధవిషయము. జిజ్ఞాసయు, విమర్శయు విశేషముగా పెంపొందుకొలది, ప్రాత తలపులు సేలరాలి, నూతనభావములు తలయెత్తును. తలపులుబట్టియే సారస్వతమును, శైలియు మాటుచుండును. ప్రపంచచరిత్రలను పరికించితిమేని, ఎన్నేని దృష్టాంతములు కనులబడును. గ్రీకురాజకీయములందు ప్రజల నుత్సహించుటకు చల్లని ఫోనియన్ స్వరము గాక డెమస్తోస్-జలదగంభీరస్వర మవసరమాయెను. రోముపరిస్థితులు సిసేరోసు పుట్టించెను. డెమస్తోసు, సిసేరోల యుద్దేశములును, ప్రకృతులును వేరుకావున వారిశైలియందు భేదముండెను. గ్రీకుప్రకృతికి సహజమైన కళాసౌందర్యము డెమస్తోస్ శైలియందు కుసుమించెను. సిసేరోశైలియందు రోమునుప్రకృతికి సహజమై, నిబంధనకాస్త్రమున కనుకూలమైన స్పష్టోచ్ఛారణ మున్నది. బాషా

నిరంకుశత్వమును చీల్చు కత్తిపాటువలె వాల్తేరురూపాల కై లి వాడియై, ప్రాన్సునీమయందు విప్లవమును రేకెత్తించెను. అమెరికనులపై వ్రాలిన సుంకముల (Tax on Tea, Glass and Paper) నెదిరించుపట్ల బర్క్ మహాశయుఁడు తన కేసును స్పష్టముగ బోధింపఁ దలచిన న్యాయవాదివలె సాధారణకై లినే ప్రయోగించెను (Vide: Burke's speech on American Taxation). అమెరికనులయెడ నిర్బంధవిధానముఁ జూపినయెడల, దలపడు ముప్పును బెలుపుచు తడు పరి యీతఁడు కావించిన మహోపన్యాసమును, వారకొహేష్టింగ్సు నిరంకుశత్వమును బయటపెట్టుచు నీతఁ డొనరించిన ఉపన్యాసమును (Vide: Burke's speeches on Conciliation with America and Impeachment of Warren Hastings) ఉద్వేగసంభరితమై, గంభీర భావబంధురమై యున్నవి. ప్రాన్సువాసుల చిక్కుల నంతగా గుర్తింపక, వారి నాతఁడు దూషించుచు చెల్వరించిన గ్రంథము ఆంగ్ల సారస్వతముయొక్క పలుత్వమును ప్రదర్శించు మహద్భూతగ్రంథ మయ్యి క్రోధోజ్జ్వలమై, అనుచితవాక్కులతో నిండియున్నది. (Vide: Burke's "Reflections on the French Revolution") అన్నిటియందును నోకే వ్యక్తికై గోచరించినను, విషయభేదమును బట్టియు, విషయము ననుసరించిన వ్యక్తియభిప్రాయము నను సరించియు కై లి మాటినది. ఆటెలేరిన పిల్లరుకై లి గతేతై లికి పోలక పోవుటకు కారణము, గతేయందలి తత్త్వచింతగాని, గభీరతగాని పిల్లరులో లేకపోవుటే. గతేహృదయము అలంకారముల డబ్బు! లోఁతునకును అందమునకును గతే గతేకే సాటి. ఈతనికై లి జర్మనీ దేశమునకు నూతనజన్మమును, నూతనరూపును ఒసఁగెను.

ఎలజబెర్ రాష్ట్రకాలమున ఆంగ్ల సారస్వతము అద్భుతలేజ మును దశదిశలఁ జిమ్మినది. ప్రాతనిలుగులు కడలేఱి యుద్ధాంగణము లందును, వాణిజ్యస్థిమలందును, నేలయందును, నీటివీఁడను ఆంగ్లేయులు అద్భుతక్రియలను నెఱపుటచే—ఆంగ్ల చరిత్రమున అపూర్వ సంఘటనలు లోఁచుటచే ఆంగ్ల సారస్వత మపూర్వరూప ముండినది. లొంటిపద్ధతులు ఈగిపోఁ దొడఁగినవి. గ్రీకుకవులును, రోమనుకవులును ఆంగ్లేయుల కాచార్యులై యుండువారు. తనకాలమందు ప్రవించు భావధునియందు మునిగి షేక్స్పియ రీయాచార్యుల కంజరెత్తఁ దలచుకొనలేదు. ఒరులచాతల (Holinshed's Chronicle and Menæchmi of Plautus) నాధారముగాఁగొనినను, ఈతఁడు తన పుంతను తాను త్రొక్కెను. ఎరువుయీకలను గొని మురియువాడని యీతని గలిచేసిన గ్రీకున కీతని పద్ధతి నచ్చలేదు. బెకాజాకోనా, బ్యూమంట్, ఫ్లెచర్ మున్నగువారి కై లికిని షేక్స్పియరుకై లికిని భేద ముండుటకు కారణము స్థలకాలనిబంధనలను, (Unities of Time and Place) ఇతర ప్రాచీననియమములను (Classical Rules) ఈతఁడు పాటించకపోవుటని ఆంగ్ల సారస్వతవిద్యార్థు లెఱుఁగుదురు. ఆంగ్ల చరిత్రయందు నానాఁలు దోచు మాటుపులు ఆంగ్లకై లియందు

తోడ్పడనే లోచుచున్నవి. వివిధసమయములందలి (The Early period, the Chaucorian age, The Spenserian and Shakesperian period, The Miltonic age, The Restoration period The Augustine age, The Romantic Period, The Nineteenth century and Twentieth century literary periods) కాలపరిస్థితుల ననుసరించి ఆంగ్ల సారస్వతమున గోచరించిన మార్పులను, కై లి భేదములను చర్చించుట కీవ్యాసమున చోటుచాలదు. అధునాతనయుగమున రాజైనది భౌతికశాస్త్రమునుటచే నేఁటిసారస్వతము భౌతికనియమముల ననుసరించి యుండవలెనని మానవప్రపంచమంతయు ఘోషించుచున్నది. భౌతికశాస్త్ర వృద్ధివలన, మానవదృష్టి—బాహ్య దృష్టియే యుండు—అధికమాయెను. భేదరాహిత్యభావమును, న్వాతంత్ర్యకాంక్షయు, ప్రజాపాలనమును, ప్రత్యేకవ్యక్తిస్వత్వమును దలయొత్తి ఏమినుషింపనను అది స్పష్టమై, ప్రజలకు గ్రాహ్యముకావలె ననియు, ఏకొలఁదిమంది ప్రత్యేకవిధూతియో కాకుండవలెననియు వాకొనుచున్నవి. కై లి సులభమై యుండవలెనని నేఁటి ప్రజాసేవకులును, ప్రజాసేవకుల అడుగుబాడలందు తమకలములను నడపు సాహిత్యసేవకులును పలుకుచున్నారు.

ఎడ్లరువాలెస్, హెచ్. జి. హువెల్పు, గాల్ఫువర్దీ, బెర్నార్డ్ హెలు అధునాతనయుగ ఆంగ్ల సారస్వతాచార్యులలో ముఖ్యులు. బ్రానింగుయుగమునుండి వీరు వేతైరి. ఇబ్ సెకోమార్గమునుబట్టి చనిన గాల్ఫువర్దీ మున్నగువారు సాంఘికసేవకై కలములెత్తి, సంఘమరాచారములను కనులెదుటఁ బెట్టి సంఘజీవనమందే మనసు నిలిపిరి. (Vide: Galsworthy's Social Drama "Justice") ఎడిసన్ మున్నగువారి క్లబ్ యుగమందలి సారస్వతమునకును, రమారమి రెండు తతాబ్దముల సైన్సుసామ్రాజ్యమును, సైన్సుచెడుగులను జూచిన నేఁటి సారస్వతమునకును ఎంతేని భేద మున్నది. తనముందరివారి గోడుగాని, గొప్పగాని కన్నెత్తిచూడని బెర్నార్డ్ హె తన తెన్ను తాను త్రొక్కెను. స్పష్టమై, తీవ్రమైన ఉచ్చారణమును కాంక్షించు ప్రజలీతని Apple Cart ను నమలిమ్రుంగిరి. నేఁటి Adven- tures of a Black Girl ను దోసెయట్లు దవుడలందు మెలిచెట్టు చుండిరి.

నేఁటి భావవాతావరణము పృథ్వియందన్ని స్థిమలందును నొకేతీటున వీచుచున్నది. నేఁడు భారతస్థిమయందు గణనీయమై యున్న వంగసాహిత్యము నించుక పరికిలింపుడు. స్వదేశ మున్నను, స్వరాష్ట్రముననను చెవిగోసుకొను వంగీయులు ఆంగ్ల సాహిత్యము ననుసరించియే తమ సారస్వతమును నడపిరి. ఇది వంగీతరులకు విరుద్ధముగ చూపట్టవచ్చును. అభివృద్ధిగోరు వారు అవసరమగుపట్ల అనుకరించుటకు వెనుదీయరు. వీరి యనుకరణము అంధానుకరణము కాదు. ఒరుల యాదర్శము ననుసరించి కొంతదూర మిరిగి, వీరు తమవ్యక్తిత్వమును తాము లేటపఱుచు

కొందురు. ఆంగ్ల సారస్వతమును వెలిచెట్టని వంగసాహిత్యము, నేడున్న తినందినది. బంకించంద్రుని యుగము అద్భుతములను, విద్వారములను, ఉన్నతాశయములను, గంభీరభావములను, సౌందర్యమును, సౌఖ్యమును, ఆనందమును, ఆత్మిని, ఆశాభంగమును వ్యక్తీకరించెను. కావున నాటి వంగసారస్వతము గంభీరమై, సౌప్తవసంపన్నమై యుండెను. శేషదారిద్ర్యమును, ప్రజాదుఃఖమును విజృంభించుచుండ కళాకళల్యమునకును, కవితానైపుణ్యమునకును, ప్రకృతిసౌందర్యమునకును తా వేలయని నేటి వంగీయు లనిరి. అందుచే నాటి యుత్సాహమును, చిత్రవిచిత్రచనమును నేటి వంగీయునకు రుచింపవు. ఇప్పుడు వంగసీమయందు బంకించంద్రునిగాని, పాంచకడీదేవునిగాని ఆదిరించువారు లేరు. “కపాలకుండలి”ని గాని, “నీలవసనసుందరి”ని గాని, “చంద్రశేఖరు”ని గాని, “ప్రతిజ్ఞాపాలనము”నుగాని నేడు తెలుసు వంగీయులు లేరు. వంగసంఘస్థితిని ఉన్నదున్నట్లు తేలు మాటలందు తెలుపుగ్రంథములే నేటి వంగసాహిత్యప్రపంచమున ప్రసిద్ధి నందుచున్నవి. శరశ్చంద్రచట్టోపాధ్యాయుడు వంగసభమున శరశ్చంద్రుడై నేడు వెలుగొందుటకు కారణ మిది. శరశ్చంద్రు నందలి కవిత శరశ్చంద్రచట్టీయందు లేదు. చట్టీ శరశ్చంద్రుడు సంఘసేవను ఆదర్శముగా గొనియే తనకలమును సాగించుచున్నాడు. పల్లెవాసులపై నీతనికి గల ప్రేమ ఈతని “పల్లీపమాణ్” వల్లను, నిరంకుశత్వమునెడల నీతనికి గల శ్రోధము “పథోర్దాబీ” వల్లను గుర్తింపబడును. ఇపు డీరండవగ్రంథముయొక్క పీకి నొక్క బడెను. ఇది జీవించరాదని ప్రభువులు శాసించిరి. ఈతని “బిందూర్ ఛలే”, “రామోన్ సమితి”, “దత్త”, “బడొదిది” “మేజదిది” “విరాజ్ బా”, “పరిణితా”, “చంద్రనాథ”, “పండితముపాయి”లు ఆమాలము సంభాషణలతో నిండియుండును. ఈతని “చరిత్రపీఠ్” “శ్రీకాంత”లు ఉద్ధృంభములుగా నెన్నుబడుచున్నవి. ఈతని “గృహదహనము” నిఘంటువువలె నుండును. ఈగ్రంథములందు కథాచమత్కారము గున్న. అధునాతనవంగసంఘమును ప్రతిబింబించు దర్పణము లీపుస్తకములు. శరశ్చంద్రుడు వాడుకమాటలనే ఉపయోగించును. నూతియందు బడిన తాలవలె నీమాటలు చివాలున చదువరిహృదయమున బడిపోవును. వంగదేశమందలి పండిత పంచాంగులు, శరశ్చంద్రుని మాటలకు ఆంక్షపెట్టక “దిగ్విజయ ముందితి”వని యీతని నాశీర్వదించిరి. “నాపని ముగిసినద—నీ వింకను చేయవలయు సేవ యెంతేని యున్నది. అభివృద్ధి నందుము” అని రవీంద్రుడు, గతవత్సరము, వంగసీమ, శరశ్చంద్రోత్సవము సలుపునవసరమున చన యాశీస్సు నంపెను. ఏకగ్రీవముగ వెడలిన ఈయాశీస్సులు, వంగసీమయందు నేడు పట్టాభిషేకమందిన వాడుక మాటలే యని ఆంగ్లసోదరులు గుర్తింతురుగాక.

వంగసోదరిదన ఆంగ్లసోదరి దృక్పథములను సేయున్నది. సంస్కృతమును పఠించినట్లు, మన పండితపంచాంగులు వంగవనమునకు గడంగిరి. కొంద అనువాదములకు పూనుకొనిరి. వంగసీమ

యందలి వాడుకమాటకుగాని, వాడుకమాటయందలి జాతీయమునకుగాని అవగతులుగాని తెలుసుసోదరులు కొందలు అనువాదములకు సాహసించి ‘తప్సలతడకలు’ ఆంగ్లసీమయందు వదలుచున్నారు. వంగసారస్వతహృదయమును గుర్తింపని వీరి వ్రాతలవలన ఆంగ్ల సోదరులు మోసపోతుందురుగాక. వంగసాహిత్యమును రుచిచూచిన శ్రీ శివశంకరశాస్త్రిగారు వంగీయుల ననుకరించుచుండిరి. వెనుకటి పద్ధతులను, పురాతననిబంధనలను వెలికిలద్రోయవలె ననుచుండిరి. ప్రజాసేవ చేయవలెనన్న, వాడుకమాటలనే ప్రయోగింపవలెనని వర్తమానాంగ్లసారస్వతోద్యమాచార్యులు, మహోపాధ్యాయులు శ్రీ గిడుగు వేంకటరామమూర్తిగారు రనుచున్నారు. సారస్వతము సంపూర్ణముగ ప్రజాసేవయే అగుచో, వీరి యుద్దేశము మహత్తరమైనదని చెప్పకతప్పదు.

ప్రజాసేవ విపులభావసమన్విత మైనది. ప్రజలదుస్థితిని పాపులే ప్రజాసేవ చేయుటని పలువురు నే డభిప్రాయపడుచున్నారు. సారస్వత మొక్క సేవమాత్రమేకాక కళహృదయని వీరు గ్రహింపవలెను. టాల్ స్టాయికివనమున సారస్వతోద్దేశములు ప్రస్ఫుటించెను. లై వాసులును, నిరుపేదలును, హలివాండ్రును, అభాగులును టాల్ స్టాయ్, అస్సెసీసన్యాసి, రస్కిన్, గాంధులబోలు యోగుల గుండె పేగులైరి. సన్యాసికాకమున్న టాల్ స్టాయ్ హృదినుండి వెడలిన శైలి కిని, యోగియైనపిదప ఆతనికలమునుండి స్రవించిన శైలికిని ఎంతేని భేదమున్నది. తొలిశైలియందలి సౌందర్యలహరి మలిశైలిలో లేదు. నీతి ప్రబోధమును, సాంఘికాభ్యుదయమును స్పష్టోచ్ఛారణమునగాని ప్రజలను జేరవు. నిరుపేదలైన రష్యన్ వాసుల కష్టనిష్ఠురములను చూచి, రష్యాయోగి, ఔదరికమును కవుంగలించుకొనెను. న్యాయ సానములందును, ఉన్నతసౌధములందును దోచిన అసుచితవిధానములను వెల్లడించెను. విశ్వర్యమందు పారలాడు దురాచారములను బయటచెట్టెను. ఈతనియుద్దేశమును గ్రహింపజాలక సుప్రసిద్ధమైన యీతని “Resurrection” నీతిబాహ్యమైయున్నదని John Bellows టాల్ స్టాయిని వెక్కిరించెను. వినీతభావమున ప్రత్యుత్తరమొసగుచు (3-౧౨-౧౯౦౧) రష్యాయోగి తనయుద్దేశమేమో ఆతనికి చెలిపెను. యుద్ధమువలని అరిష్టముఁజూపిన పాశ్చాత్య మహనీయులలో రస్కిన్ మొదటివాడు. ఈతని వ్రాతలే ఆంగ్లేయసంఘసంస్కరణమునకు పునాదు లాయెను. గాంధీశైలి గాంధీవలెనే యుండును. ఈశైలి యందు పట్టుపుట్టుముకాక అంగవస్త్రము తోచును. భూగోళము నంతను గప్పగలిగిన యీవిన్ని గుడ్డవలె, చులకనైన ఈతనిశైలి అధునాతనపృథ్విని సత్యాగ్రహభావములచే నింపివైచెను. గాంధీ చేతియం దనారతము సాగుకండెను, కదురునకును, కలమునకును భేదము లేదు. గాంధీశైలి మృదులమైన ఖద్దరువంటిది.

దరిద్రనారాయణులను కొలుచువారు దైవభక్తులు. భక్తి యోగుల శైలికిని వీరి శైలికిని భేద ముండదు. కులసీతామాయామును



ప్రతి గృహలక్ష్మీయు

బంగారు పతకములు పొందిన
మార్కు నల్ల

జే

మిస్కి ఇంగువ

J

యుపయోగించుచున్నారు.

అన్ని చోట్లయందును సంతోషముతో అమ్మకముచేయబడుచున్నది.
సువాసనలోను, కారములోను, రంగులోను నూ యొక్క “జే”
మాన్యు మిస్కి యింగువకు సమానము లేదు.

ఒకతూరి యుపయోగించి చూడుడు.

విలాసము : గోపాల్ జీ అందు కంపెనీ,
203, గోవిందప్పనాయని వీధి, మద్రాసు.

(ఫోను. నెం. 3425.)

ప్రబంధి : కుంబకోణం. మధుర.

గరలు	
1 రతి	రూ. 1-10-0.
$\frac{1}{2}$ -రతి	0-13-6.
$\frac{1}{4}$ -రతి	0-7-0.
1-రేసు	1-0-0.
తొలబుర్బులు ప్రశ్నోత్తరము.	

మీరుకూడ నెందులకు చేయగూడదు ?

సిగరెట్టులు	సుద్దపుల్లలు	నబ్బలు	మొనపువత్తులు	ఉక్కుకలములు
పెన్సిల్లు	కొలతబద్దలు	రాజర్ బ్లెడ్లు	దావెనలు	ఉత్తరములక్లిష్టలు
కలముపుల్లలు	నివ్వపుల్లలు	కవరులు	గండిలు	మరియు

మంచగడ్డ

వానియందు ధనము గలదు. మీరు చెల్లింపగల ఖరీదునకే మేము వాని పూర్తి యంత్రసామగ్రి సంకయను సరఫరాచేయుదుము.

మరియును

నలువిధరంగులలో ముద్రింపబడిన అంటుగొట్టములు, వానిని నింపుటకు, మడచుటకు, మూయుటకు బిగించుటకు యంత్రములున్నూ, ప్యాకింగుమిషనులు, నరములుసరితీయు మిషనులు, బిలియర్డుస్టేజులు 6' వరకు కలిసియున్న డైనింగ్ అండ్ బిలియర్డుబల్లులు, సామాన్యబల్లులమీదబిగింపబడు బిలియర్డుస్టేజులరామికుర్చీలు, మడతబల్లులు మున్నగునవి. వినరములకు:—

A. HICKEY & SONS,
Post Box 60
Cawnpore.

ఏ. హిక్సీ అండ్ సన్సు,

పోస్టుబాక్సు 60, కాన్పూరు.

ది మ్యూచుయల్ అసూరన్సు కంపెనీ

లి మి టె డ్

ప రి పా ల క వ ర్గ ము

సాకార్ సి. అబ్దుల్ హక్కిం సాహెబుగారు, యెక్కు మెరీఫ్ ఆఫ్ మద్రాసు, మర్చంటు, డైరెక్టరు,
 ఇండియన్ బ్యాంకు లిమిటెడ్ మద్రాసు. (అధ్యక్షులు)
 టి. ఆర్. వెంకటరామశాస్త్రిగారు, బి. ఏ. బి. యల్., సి. ఐ. ఇ., యెక్కు అడ్వకేటుజనరల్,
 మద్రాసు (డిప్యూటీ చైర్మన్).
 శ్రీమతి రాధాబాయి సుబ్బారాయ్ గారు, టి. ఏ. కుమారమంగలం జమీందారిని, మద్రాసు.
 రాఘవహదూర్ వి. తిరువెంగళాచార్య చైర్మన్, నీనియర్ పార్టనర్, హో అండుకో, మద్రాసు;
 డైరెక్టరు, యు. పీరియల్ బ్యాంక్ ఆఫ్ ఇండియా.
 దివాబహదూర్ యం. బి. సుందరం నాయుడుగారు, మెరీఫ్ ఆఫ్ మద్రాసు.
 సం. రం. సోలియస్ చైర్మన్ గారు బ్యాంకు, మద్రాసు.
 కే. వి. కృష్ణస్వామిఅయ్యర్ గారు, బి. ఏ. బి. యల్. అడ్వకేటు, మద్రాసు.
 యం. కుంజితలవంగారు, బి. ఏ. బి. యల్. (యెక్కు-అఫిషియేట్ డైరెక్టరు అండ్ శ్రేక్షరీ.)

మీ యితర కొనుగోలులందువలెనే

మీ భీమాయందుగూడ స్వదేశీభావము కలిగియుండుట ముఖ్యమైన

విషయము

భారతీయసంస్థయందు భీమాచేసినచో, తమను మాత్రమే గాక, స్వదేశీశ్రమభివృద్ధిని సహితము
 కాపాడినవారగుదురు.

కావున దీనియందు బీమాచేయుడు.

ది మ్యూచుయల్ అసూరన్సు కంపెనీ

లి మి టె డ్

లింగ చెట్టి వీధి,

మద్రాసు.

The Mutual Assurance Co., Ltd.,

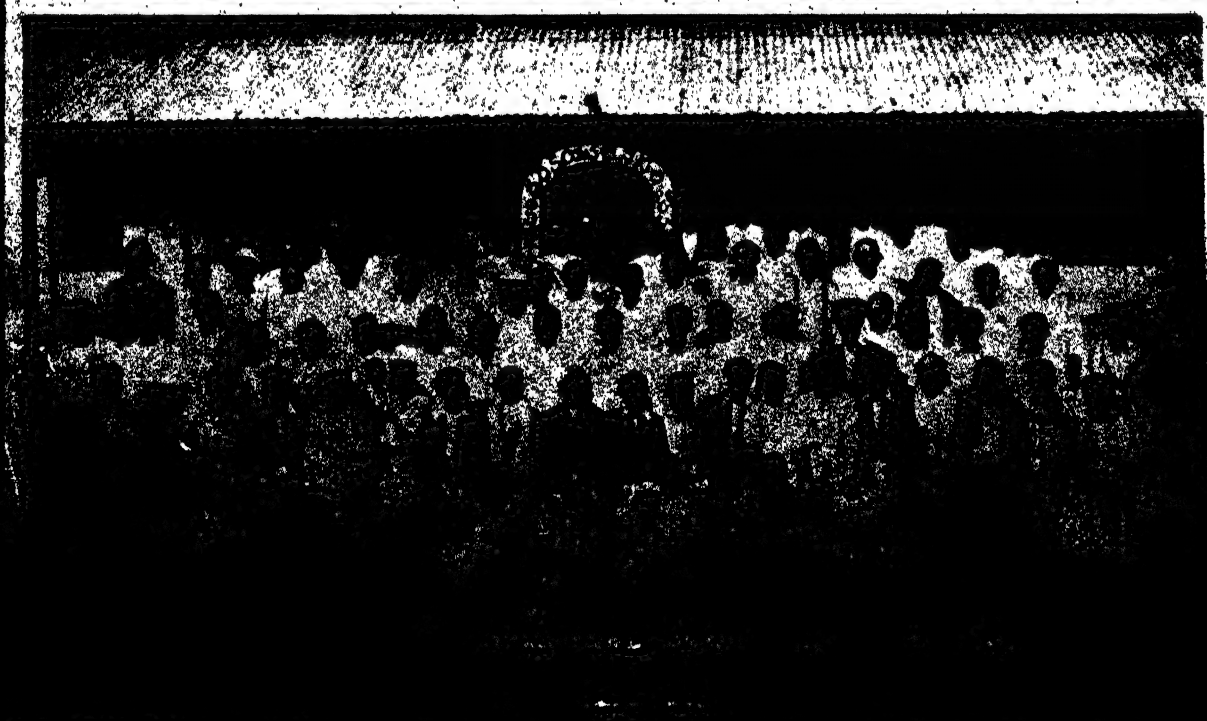
LINGA CHETTY STREET,

MADRAS.

ఆంధ్రపత్రిక - భావ సంవత్సరాది సంచిక



1. ఆంధ్రజనసంఘము, పంచమవారి కోత్తవను-కల్నాటి, అధ్యక్షులు: ప్రతాపగిరి రామమూర్తిగారు; 2. ఆంధ్రజనసంఘము సభ్యురాలు.



1. మైసూరు శ్రీ వేంకటేశ్వరస్వామి ఆశ్రమమున కళాకాల విద్యార్థులు, పండితులు. 2. ఆంధ్రభక్త యువజనసంఘము, వీరియాం.

తెలిచూచుడు. అక్కజములు చదువగలిగిన ప్రతివానిని, అద్ద మందలి నీడవలె, అందలి భక్తిభావము స్పష్టమైయుండును. భక్తుని వలెను, భగవంతునివలెను, రెండేసిపంక్తులు తియ్యనైన యమకమున నడచుచు, తిన్నగఁ బోయి హృదయపీఠమునఁ జేరుకొనును. ఏను కథలు చులకనైయుండునని జైబిలువివ్యార్థు లెఱుఁగుదురు. మహా మృదు వాడుకమాటలందే మతప్రబోధముఁ గావించి, జనసామాన్యముయొక్క దృష్టి నాకర్షించెను. భక్తిపూరితములైన పోతనపద్యములు సులభశైలియందుఁ జేరియాడును. నిర్మలనీతిగర్భితములైన వాక్కుల నుచ్చరించుట దాతేతేతిన మార్కిన్ యురేలియన్ శైలి యును, ఇటీవల గతించిన హార్డెన్ శైలియునుగూడ సులభమైయుండును. తత్త్వశాస్త్రవేత్తలును, జ్ఞానయోగులును క్లిష్టమైన భావములతోను, జటిలసమస్యలతోడను పెనసలాడుదురు. కావున వీరిశైలి కూడ సాధారణముగ జటిలమయ్యె యుండును. శంకరాచార్యుని శైలి సామాన్యులకు బోధపడదు. శంకరునిబోలు మేధాసంపన్నుఁడు పృథ్వియం దేకడనైనను, ఏకాలమందైనను పుట్టియుండలేదు. ఈతని వైదికధర్మప్రతిభ పామరులకు దురూహ్యమైయుండెను. పోతనశైలియందు భేదములు చూపట్టుటకు కారణము భాగవతము వ్రాయుతేటి సందర్భముసారమైన భిన్న భావములు ఆతనిమనసునఁ దోచుటయే. సాధారణముగా స్త్రీలకు బోధపడునది భక్తియోగము గాని జ్ఞానయోగముకాదు. ప్రాధికావ్యములు వీరికి బోధపడవని యెఱింగి భక్తిబంధురములైన ఉత్తమాశ్రమములను కొందఱు కవులు ద్వీపదలందే వెదఁజల్లిరి. రంగనాథ రామాయణము, సిద్ధేశ్వరచరిత్రము, నలచరిత్రము, రాజయోగసారము, హరిశ్చంద్రోపాఖ్యానము, పరమయోగి విలాసము మున్నగు గ్రంథము లిట్టివి. ప్రాకృతభక్తుల మహితచరిత్రలను విశదమనరించు బసవ పురాణమును తెలిచూచుడు. జాతిభేదములను పాటింపక, జనసామాన్యమునకు మతప్రతిభను దెలుపదొరఁకొనిన వీరశైవమును దొలుకాడించు ఈపురాణశైలి మిగుల సులభమై యున్నది. ఆశ్వా రుల నుడువును, శైవుల లింగమును పోలియే పాల్కురికిసోమనాధకవి కల ముండెను. రామదాసుకీర్తనలును, యక్షగానములును, భక్తిరసముతో నిండిన పాటలును ప్రతినిరుపేదకును బోధపడును. భక్తునకు ఏడుగడ దృఢవిశ్వాసముగాని గభీరయోచన గాదు. అంతయు రామ మయమని రామస్మరణ మొనరించు భక్తున కేవిమర్శనలును, ఏ మిమాంసలును గిట్టవు. తత్త్వశాస్త్రమును, తత్త్వశాస్త్రమును ఈతనికి బోధపడవు. తరంగములును, పదములును ఈతని తారకమంత్రములు. సులభ భావమును కాంక్షించువానికి సులభశైలిగాక కఠినశైలి యెట్లు బోధపడును? కఠినభావబంధురములైన వేదాదిగ్రంథములు పామరుల కెట్లు బోధపడును? పఠంజలి, శైమిని, యజ్ఞవల్క్య, పాతీస్థులు సాధారణులను వెదంతుడగాని ఆదరింపరు. ఇక పాఠిగ్రంథములను తెలిచూచుడు.

పాఠిభావ బాధమతప్రబోధమునకు సాధనమైనది. బాధ మతము జాతిభేదములను పాటింపదు. సర్వజనులకు నుద్దేశింపఁబడిన బోధనము సులభమైయుండును. పాఠిభావ పల్లెవాసుల మాటవలె నుండును. సంస్కృతమందలి కఠినవర్ణకమ మిందు కత్తిరింపఁబడెను. దృష్టాంతము చూచుడు:

“అతీతే బరాణానియామ్ బ్రహ్మనతే రజ్యంకారెంతే, బోధితో కపియోనియామ్, నిబ్బలిత్యా,—నాగబలో, థానుసం పన్నో, హిమవంతపదేనే వాసంకప్పేసి (“సుంసుమారజాతకము” ను చూచుడు). “నమోతస్సోరనాతో భగవతో సమాసమ్బుధస్స”.

(Prayer)

కఠినసంస్కృతపదములు పామరులకు వాడుకమాటలగుటకై మార్పులందెను. “భద్రే” “భధ్దే” యాయెను. “స్తోకమ్” “తోకమ్” ఆయెను. (“తోకమ్గస్త్యా” సుంసుమారజాతకము) “మృగ” “మిగ” యాయెను (“నిరృధమిగ” జాతకమును చూచుడు.) “వస్తు” “వస్థు” ఆయెను. “స్థవర” “థేర” ఆయెను. “స్నాయువు” “నాహారు” ఆయెను. “అన్నతము” “అబ్బుత” మాయెను. “దృష్టి” “దిట్టి” ఆయెను. (Buddha's Eight fold Path).

“నూత్రం గెయ్యం గాతు ఇదాని ఇతివుత్తకం
జాతికబ్బుతవేదల్లం నవాంగం సత్తుకాసనం.”

“విద్యులతవిద్యోతమానములు” “విజ్ఞులత విజ్ఞోతమానము” లాయెను. (“వానరీంద” జాతకము చూచుడు). సంస్కృతధాతువు “కర్” నుండి పోలియందలి “కారేసి”, “కప్పేసి”, “కప్పతి” పుట్టెను. “ప్రతివృతి” నుండి “పతివృతి” పుట్టెను—“సుమేరు వాసుప్పతివృతి” (“దీపవంశ” చూచుడు). సంస్కృతసమాసములు మార్పుచెందియే పోలియందు ప్రవేశించెను. “ధనవస్సాపనకన్భత్తయోగే లడ్డే” (“వేదబ్బ” జాతకము చూచుడు) “నిమ్మిక్కి కమధు పటలసదశిమ్”, “మజ్జపానపమత్తో” మొదలగునవి గమనింపదగును. “అభ్యంతరమ్ తే అట్టిగహనమ్” (“ధమ్యపదము”), “కప్పటిసింగి లోనకప్పా, కపతిద్వంగులకప్పా”, “పానాతిపాతవేరముని”, “పరి నిబ్బుతంహి బుద్ధస్స”, “వరమ్మయమ్ ఉందంబరమ్”, “అనాధపిండి కస్స ఆరామే” (“మంగళనూత్తమ్”), “మతకభత్తమ్” మొదలగు నవి పాఠిభావయందు మార్పుతోఁ బ్రవేశించిన సంస్కృతపదసముదాయము. వాడుకమాటలను నిర్మించుపట్ల మనపూర్వుల కన్న సాహసము నేడు మనకు లేదని నిరూపించుటకై కొలదిమాత్రపు పాఠిమాటల నిం దుదాహరించితిని. చోద్యమేమన, పాఠిలోని వాడుకమాటలకును మన తెలుఁగునందలి వాడుకమాటలకును అచ్చటచట పోలికలు కలవు. బాధయుగమున నాంధ్రులు భరతభూమి నేరి నందున, బాధప్రచారమునకు ఆంధ్రమహిపతులు పూనుకొనిరి. కావున, నాకాలమున తెలుఁగుపాఠిజ్ఞుడై ధులట్లు మనలియఁగడును.

తెలుగుశాసనములందలి ప్రాచీనాంధ్రమును గుర్తించుటకు లక్ష్యముగా రావుగారును, మిత్రులు సోమశేఖరశర్మగారును పాఠీపండితుల సాహాయ్య మపేక్షించియుండిరి. తెలుగుపదములందలి తీటునందును, పాఠీశబ్దములందలి పొందికయందును పాఠికచూపినపుడు నాకు మిగులగూర్పు నాచాగ్యులు పున్నానందసిద్ధాధ్యులను భిక్షుకసన్యాసులు అచ్చెరువొందువారు జనసామాన్యమున కనుకూలించు సారస్వతములందు పాఠికయందుటకు హేతు వని వాడుకమాటలతో నిండియుండుట. జాగ్రయుగమున తెలుగుపాఠీల సమ్మేలన మున్నట్లు నిదర్శనములు తోచుచున్నను, ఆకాలమున ప్రత్యేకాంధ్ర మెట్లుండెనో స్పష్టముగ తెలుగుటకు తగు నిదర్శనములు కానవచ్చుటలేదు. ఆంధ్రము ఋగ్వేదమునాటిదయ్యు, ("ఆంధ్రసాహిత్య పరివర్తిక" ఆశ్వయుజశాస్త్రీకమాసముల సంచికయందు ప్రచురింపఁబడిన మహాకవి కాశీభట్ట కృష్ణరాయశాస్త్రిగారి 'ఆంధ్ర-తద్విశిష్టత' అనువాదమును చూడుడు) అత్యంతప్రాచీనవాఙ్మయములగు పాఠీ ప్రాకృతములతోడను, వేదభాషలతోడను సంబంధముగలదయ్యు, శ్రుతి స్మృతిపురాణాదిసాధు లన్నింటియందును, ఖండారతరణీమలందును ప్రశంసనందినను, క్రమముగ నాంధ్రభాషాచారిత్రము కానరాకుండుట దుఃఖకరము.

ఆంగ్ల వంగసారస్వతచరిత్రలనుబోలు చరిత్రలు మనతెలుగున లేవు. చిలుకూరివారును, భావరాజువారును, మల్లంపల్లి వారును ప్రశంస నీయమైన పరిశోధనము చేయుచునే యున్నారు. కాలక్రమమున నాంధ్రసీమయందు ఒక రికెట్గాని, సునీతిమూర ఛటర్జీగాని తలయెత్తి ఆంధ్రభాషయందలి ఈలోపమును దీర్చివేయుదురు గాక.

బహువర్ణములనుండి తెలుగును సంస్కృతము పూర్తిగ జాక్రమించివైచినది. తెలుగువ్రాయుటటి సంస్కృతైశ్వర్యమును చూపు పండితుడు గొప్పగ్రంథకర్తయని గణింపఁబడుచుండెను. ఏభాషయందును లేని వ్యాకరణనిబంధనములును, ఛందోనియమములును మన తెలుగునఁ బ్రవేశించినవి. తన నిరంకుశత్వము తన్నే చెఱచినట్లు, నిరంకుశభాషాశాసనమునకు దలపడిన ప్రముఖులనే ముప్పు తిప్పులు పట్టివైచినవి. వ్యాకరణనూత్రములనుబట్టి చూచినయెడల, సాధారణుల మాటలుండ పండితుల వ్రాతలే 'తప్పులరడిక'లై యున్నవని ఋజువాయెను. తాము గుర్తింపని తప్పులున్న వ్రాతలను సాహిత్యమనియు, కొంతవఱకు ఛందోనియమములను పాటించి, ఒకఁడు వఱవఱ వాలుగుమాటల మచ్చరించినంతన నతఁడు కవికంఠీ రవుడనియు, చూరిగినను, నీలిగినను ఆతఁ డాకుకవనమునే ప్రయోగించుననియు, ఛందోనియమముల నెఱుంగనిదికావున గద్యము ఎన్నఁదగినది కాదనియు, గద్యమువ్రాయువాడు పద్యమువ్రాయువానివలె పూజనీయుఁడు కాఁడనియు దలచు మహనీయులు నేఁడును మన ఆంధ్రసీమయందున్నారు. శాసనంశేషియే తెలుగుసారస్వతమున గద్యగ్రంథములు మిక్కిలితక్కువగా నున్నవి. ఆంగ్లవంగసీమలందు

గద్యగ్రంథకారులు మూర్ధాభిషిక్తులైయున్నారు. గద్యమందు కవనముండునా యనియు, గద్యలేఖనమున గొప్పందన మేమున్న దనియు తెలుగులు పెదవివిఱచుచు, భావశూన్యమయ్య నాలుగుపంక్తులను పద్యమువలె పేర్చి, దీర్ఘముదీసి, చవుకబిరుదములు మెడదాల్చి యొకఁడు ప్రత్యక్షమైనంతన నాతనికి 'జయమంగళ' మనుచున్నారు! సారస్వతమేమో, సారస్వతహృదయమేమో యెఱిగినవా రాంధ్ర సీమయందు మిక్కిలితక్కువగా నున్నారని దిగ్గజ పలుకుటకు నేను జంకను. సారిస్వతముగాని సారస్వతమును విడఁగొట్టుట, భాషా నేతరులను తప్పుగొప్పులనుండి తప్పించుట యగును.

నిరంకుశత్వము రాజ్యములను, రాజన్యముల నేలఁగూల్చునట్లే భాషాచక్రవర్తులనుగూడ కూల్చును. పాలనము ప్రజాక్షేమమును చేహార్చునట్లు సాహిత్యపురోభివృద్ధిని పెంపొందించును. మిలిమిటిన నిబంధనములు పెద్దిల్లినపుడు నిరంకుశత్వము తలయెత్తును. అక్కఱిగల నియమములు లేకున్నయెడల, సరాజకము విజృంభించును. ఎవరికివారే రాజులైన, విప్లవము పుట్టునట్లే, ఎవరికివారే భాషా శాసనమునకుఁ గడంగిన, భాషావిప్లవ ముద్భవించును. ఎదుటివాని స్వాతంత్ర్యమును పాటించి, నడచు స్వాతంత్ర్యమే స్వాతంత్ర్య మగునుకాని విచ్చలవిడిగా త్రాగుబోతువలె గంతులిడ, దలచు ప్రవృత్తి స్వాతంత్ర్య మనిపించుకొనదు. నిరంకుశత్వ మెట్లనర్థదాయకమో, నియమరహితాచరణమును నట్లే యనర్థదాయకము. శైలిపెనగులాటయందు అరిష్టగర్భితములైన ఈ రెండు క్తులును మనసీమయందు దొకదానితో నొకటి డీకొని ఘోరరణము సలుపుచున్నవి. కట్టుత్రాళ్లను దెచ్చి, భాషాసతికి కట్టఁబెట్టు పండితులును, భాషామోషకరీరగతనమునకు వలయు ధమనిస్సాయువులను తెగువమెయి తెంపుటకు సంకల్పింపని ఇష్టవిహారులునుగూడ దోషులనియే నాయభిప్రాయము. తెలుగుభాషపై పూర్తిగ సంస్కృతమును దాడివెడలనిచ్చు లెంత దోషమో, సంస్కృతమునుండి తెలుగునకు రాగల సాంపును తుడిచివేయుటయు నంతదోషమే. ప్రబంధములనాటినుండియు నెట్టిప్రతిఘటనము నెఱుంగని నిరంకుశత్వమునకు గొప్పదెబ్బ నేఁడు తగులుట శుభదాయకమే; కాని, యీదెబ్బ సమయించునదిగాక, ఉద్ధరించునది యైయుండవలెనని నాయదేశము.

అన్యభాషాచరిత్రలందలి మార్పులను సంక్షేపముగ విమర్శించు పట్ల, తోచిన శైలిభేదములు మనభాషయందు అంతగా లేవు. దైర్ఘ్యము, భైరసుయుగములుగాని, బంకించంద్రకర్ణంద్రయుగములుగాని మన భాషాచరిత్రయందు లేవు. సాహితీహృది నెఱిగిన కంకర కవి, వేంకటకవి, తిక్కన మున్నగువారు కొండలు గోచరించినను, బండ్లకొలది సంస్కృతపదములను దెచ్చి విసరివైచినవారే బహువర్ణములనుండి పూజనీయు లగుచుండుటచే ఒక బంకించంద్రుడుగాని, ఆతని కెదుర్చు నిలుచు నొకకరణ్ధ్రుడుగాని మహానీలయగుదురు.

దోచలేదు. ఏభావముందును దోచని అపూర్వగ్రంథకర్తలు, కాలముపై తమ స్వందనమును నడపుచు, అపూర్వయుగమును మన భావముందు బుట్టించిరి.

ఇపుడు మనకన్నులెదురు దోచిన శైలిభేదములు నాలుగు అల్పాంశురూపములైరి, కీట్స్ శైలి, భట్టుమూర్తి శైలి, నేటి స్వచ్ఛంద శైలి. పోప్, స్విఫ్ట్ల ప్రకృతులును, వారి కాలపరిస్థితులు వారి శైలిని నిర్దిష్టమొనరించినవి. కీట్సు షెల్లీల ప్రకృతులును, వారి కాలపరిస్థితులును వారి శైలిని వారియట్లు కావించెను. "ఆమాటలు వల దీమాటలు వ్రాయు" మని వీరిలో నెవ్వరినైన నిర్బంధించినను, వారు వేటు తీయన వ్రాయజాలరు. ద్రైడను వర్ణనవర్తు కాగలుగునో, ఆతని శైలియందు వర్ణనవర్తు Pantheism ప్రవేశింపజాలును. త్రివిధపాతర వేయుదునని జోనాథన్ స్విఫ్టును నిలువంబెట్టినను అతడు షెల్లీవలె వ్రాయజాలడు. నిలువునఁ జీర్చివేయుదునని కీట్సును అడలించినను, అతడు లేంగలండ్ వలెగాని, లాంగు ఫెలో వలెగాని వ్రాయలేడు. "నీ మచ్చ మాపుదును; నీవు షేప్టుబరీవంటిపాత్రను తయారుచేయు" మని మారిస్ మెటర్లింగును జడుపెట్టినను, అతడు ద్రైడనుదాసఁ దొంగి యైన జూడడు. "దొక్క వారికలుచేయుదును; నీవు రాఫెలీస్ ను మార్చి Junius Letters శైలిలోనికి దిగు" మని స్థూలకాయుడగు జాన్ సము భయపెట్టి గుంటిబిడియించినను అతడు తన శైలిని మార్చుకొనలేడు. కెస్పీసును నిలువంబెట్టి, "నీబ్రదు కీడ్ప్—ఆసీ యజ్జలెరుగును ఎందుల కనుకరింపలే"దని ఆతని గూబను గుటిజూచిన "సమ్మా!" యని అతడు పాటిపోవునుగాని చెప్పినట్లు వినడు. "డిప్లెక్టమిడిమా" గ్రంథకర్త "త్రిమస్క్విటీడు" గ్రంథకర్త కాలేడు. "ఫెల్టా", "వెండెబ్బ"లను వ్రాసిన కలము, "లామి సర్ బుత్స్", "కెనెత్ వర్డు"లను బుట్టించిన కలముల కెనరాదు. న్యూమేక్ జెర్రమేటేలరు కాజాలడు. స్విజ్ బర్న్ నీమియేక్ కాజాలడు. జార్జి యిలియట్, జేక్ ఆస్టిక్ కాజాలరు. మిసెస్ బ్రౌనింగు, మిసెస్ కార్లెలు కాజాలరు. Miracles, Mysteries, Interludes నాటి పుంతను ప్రవేశింపుమని మాగ్లో నెవ్వరైనను నిర్బంధింపఁగలిగెరా? టెన్నిసను తన ప్రిస్సెస్ ను చెఱివేసి, ఇలి యడ్ ను వ్రాయఁగలఁడా? ఒకరి శైలి యింకొకరి కలవడకపోవుటకు కారణము, ఒకరు వేటొకరు కాజాలకపోవుటే. ఒకరి శైలి అధికమైనదనియు, వేటొకరి శైలి అల్పమైనదనియుఁ దలపఁ జెల్లదు. పోప్ యొక్క "Dunciad," "Rape of the Lock" లును కీట్సుయొక్క "Hyperion," "Endymion" లును, వైరనుస్విఫ్ట్ల "Childe Harold", "Gulliver's Travels" ను, టెన్నిసను షెల్లీల "In Memorium," "Prometheus unbound" లును, తెన్ జాన్ సన్ గోల్డుస్మితుల "Valpone", "The good natured man" లును విభిన్న శైలియందున్నను, అంగ్ల సారస్వతమునకు సరి

సముగ వన్మించెచ్చిన లేఖనములు. స్విఫ్టు శైలిలో నొక్క అలంకారమైన నుండదు. ఈతని గద్యశైలి అద్భుతమైనదని పల్వరు సాహిత్యచార్యులు వాణినిరి. ("Swift is one of the greatest masters of English prose" Vide: History of English Literature by Saintsbury.) షెల్లీ "Defence of Poetry" యును, మిల్టన్ "Areopagitica" యును, ఎడ్మండు బర్క్ ఉపన్యాసములును, వ్యాసములును, లేఖలును అలంకారభూయిష్ఠములైన గద్యరచనలు. మరల వీరల రచనలకును కార్లెలుడీ క్యస్సీల (Vide: Carlyle's "Sartar Resartus", "Heroes and Hero worship" "Frederick the Great of Prussia", "Cromwell", "Life of Schiller", Etc. and Dequincey's Famous Essays on "The Mail Coach", "Confessions of an English Opium-Eater" Etc) అద్భుతగద్యరచనలకును ఎంతే భేద మున్నది. కార్లెలు ఎమర్సనువలె తత్త్వమయుడు. కార్లెలు తన రచనలందెన్నే నిజరమణులను గలుపుటకు సంకల్పింపలేదు. నేటి సరోజినిగద్యరచనలును, రవీంద్రుని గద్యరచనలును అలంకారములతో నిండియుండును. రాధాకృష్ణ శ్రీనివాసులు సులభశైలి నే కాంక్షింతురు. వీరిశైలి కవితాగర్భితమై యుండును. అరవిందుని శైలి సులభముగాక వీర్యవంతమై, లేజోవం తమై యుండును. వ్యక్తి ప్రకృతి ననుసరించి వ్యక్తిత్వానినుండి అల్లుకొని వచ్చు శైలిని మార్పుటకు భాషాశాసన మొనరించు మనుష్యమాత్రు నకకాదు, సర్వశక్తిమంతుడైన జగదీశునకైనను తరముకాదు.

తక్కిన రెండు తెఱంగుల శైలి విష్ణురమైనది. రామరాజ భూషణుని శైలి సహజమై, ప్రకృతి ననుసరించిన శైలికాదు. ఈతని వసుచరిత్రముతోఁ బోల్చుదుగు శ్లేషకావ్యము ఆంధ్రమున మఱి యొకటి లేదనుట నిక్కము. ఆదికవులు ప్రయోగింపని పదముల నెన్నేని యీతడు తన వసుచరిత్రయందు ప్రయోగించి, ప్రశంస నీయమైన స్వాతంత్ర్యము గొంతజూపెను. హరిశ్చంద్రనలోపాఖ్యానములు వ్రాసి యీతడు ప్రసిద్ధిపొందెను. ప్రజ్ఞాధురీణుఁడయ్యి నీతడు తన శైలిని కటికిరాళ్లతో నింపివైచెను. రామకృష్ణ పెద్దన్నల మీది పంతమును, రాజసమ్మానమునెడల ఆతయు, భావమగుటించిన వెఱుపాహాయు నొందొంటితోఁ గలిసి, మోటుజడవంటి శైలిగా నల్లుకొనియెను. తన్ను బోపించు లేడు తనను తరుమగొట్టియుండిన యెడల, గిడుగు మెతుకులను నమలుటకై, యీతఁ జేపల్లెఁగిమిడినో చేరి, వాడుకమాటలలోనికి దిగియుండును. తానుగానివాఁ డెట్లయినను మాటఁగలఁడు. తన శైలిగాని శైలి నెన్ని తీటులనైనను మనుజుఁడు మార్చఁగలడు.

నాలవశైలి నేటి స్వచ్ఛందశైలికాదా? ఇది యొక్క ఆంధ్రసీమయందే నేడు ప్రబలఁబడఁగినది. దీని గాఢ మిగులఁ బెద్దది. వాడుకమాటలు వెలిహడవనవారికి వందనములు. వాడుక మాటలను తెలుఁగునుండి బహిష్కరించుట దోషమని నేను విగ్ధులగ

నీతును. ఇరువదియవ శతాబ్దమున మనలను, నెనిమిదవ శతాబ్దసాం ప్రదాయమును పునశ్శ్రవణ మొనరించుట అవివేకమని తెలుపుటకు సంశయింపను. వాడుకమాటను త్రోసిరాజనఁజెల్లదనినంతన నే సాధ నైనను, ఏరొప్పైనను భాషలో గుప్పటకు నే నొల్లను. వాడుక మాటలకై వానించు గిడుగురాముమూర్తిగారు రవీంద్రుని దృష్టాంత మును తఱచుగ పేర్కొందురు. రవీంద్రుని మూలమున వంగభాష నొరవడిగ నుదాహరింతురు.

వంగీయుల వాడుకమాటకును, ఆంధ్రుల వాడుక మాటకును ఎంతేని భేద మున్నది. ఆంధ్రులందువలెనే, తోడిహిందువులగు వంగీయులందు బాతిభేదము లున్నను, ఆంధ్రులందలి ఆచారభేదము లును, వారివాడుకమాటలందలి వ్యత్యాసములును వంగీయులందు లేవు.

వంగబ్రాహ్మణులు మత్స్యహంసములను తినువారైనను, సనాతసాచారములను పాటింతురు. వంగశూద్రులంట బ్రాహ్మణుల యిండ్లయందువలెనే దేవతార్చనాదినిత్యక్రియలు జరుగుచుండును. వివాహోద్దియలందుఁగూడ వంగశూద్రులు బ్రాహ్మణులట్లు వర్తిం తురు. రజస్వలానంతరవివాహములపట్ల సాధారణవంగబ్రాహ్మణుల కెట్టి నిరాదరణమో, బ్రాహ్మణేతరులకును నట్టినిరాదరణమే. ఆచారములందగ్రజాకులతో నైకకృముఁ జూపు వంగశూద్రులు, బ్రాహ్మ ణులయెడల విశేషభక్తిశ్రద్ధలు చూపుదురు. బ్రాహ్మణబ్రాహ్మణే తరులయిండ్లు పల్లెలందుఁగూడ నొకేతీటున నుండును. ఆచారము లంగు భేదములేని వంగసంఘమందు భాషాభేదము లేదు. మాటను బట్టి యితఁడు బ్రాహ్మణుఁడో, బ్రాహ్మణేతరుఁడో ఆంధ్రసీమ యందు గుర్తింపఁజాలుదుముగాని, వంగసీమయందు గుర్తింపలేము. వంగనిమ్మజాతులమాటయం దిండుక భేదమున్నను, వీరిమాట నిర్దు ష్టమైన వాడుకమాటగా వంగసంఘీయులు తలఁపరు. వంగవాతావరణ మున మసలి, బంగాళీవాడుకమాటయం దేకత యున్నదనినొక్కచెప్పఁ గలము. తెలుఁగువాడుకమాటతెన్నే వేఱని తెలుఁగు తెలుఁగుదురు.

వేఱువేఱు జాతులందేకాక జాతులందలి వేర్వేఱుతెగలందు, వేర్వేఱుచోటులందు తెలుఁగున తేడాలన్నవి. వైదికబ్రాహ్మణులు 'ఏమంటావు?' అనక 'ఏమంతావు?' అందురు; 'అన్నాడట' అను టకుమాటు 'అన్నాడవ' అందురు. జాతులందలి భాషాభేదము లందరికిని చెరిసినవే. "హాలో, రెగు, రేత్తిరి, బిరికి, గిని, లేదుగదా, కిందమడేసి" అను పదములను వాడువా రనేకులు మనసీమయం దున్నారు. సాలిపేటలను, చాకలిపేటలను, గమల్లగూడెములను, ఈడిగగుడిసెలను, మాల్పల్లెలను తిరిగి చూచితిమేని ఎన్నేనిరితుల నుడువులు చెవిబడును.

స్థానస్థానములందలి భాషాభేదములు ఆంధ్రసీమయందు మొండుగా నున్నవి. గంజామవిశాఖపట్టణజిల్లాలందు "అన్నదమ్మడు" "అక్కచెల్లెలు" "చెల్లిపొయివచ్చేకాడు" "పుల్లలావు" "పాత్తు పంది" అనుమాటలు వాడుకయందున్నవి. భూతకాలమునకుమాటు

వర్తమానకాల మొక్కకపుడు తలయెత్తును. 'రాలేదు' అనుటకు మాటు 'రావడంలేదు' అని యచటివా రందురు. బాగుగ నుత్తరపల్లె లందు ఒరియాగాలి సోకుచుండును. గోదావరిజిల్లావాసుల ఆంధ్రము పరిశుభ్రమైనది. అయినను వీరు దీర్ఘములుదీసి మాట్లాడుదురని ఇతర మండలములందలి తెలుఁగు లందురు. వీరిమాటకును, బందరుగుంటూరు ప్రాంతములందలివారి మాటకును కొంతతేడా యున్నది. 'ఆలా అనిరి' అని గోదావరితీరవాసు లందురు. 'అట్లా అన్నారు' అని పల్నాడు మున్నగుచోటులందలివా రందురు. "నాకు సరిపడదు" అనుటకుమాటు "నాకు పట్టదు" అనువా రున్నారు. ఇక నెల్లూరు చిత్తూరు మండలములనుసరించి తెలుసనక్కఱలేదు. వీరు తెలుఁగు కూడునంగు అరవసాంబారు కలుపుదురు! వీరి తెలుఁగున 'ఆంధ్ర రసముగాక అరవరసము పొంగుచుండును! దత్తమండలములందలి తెలుఁగు వేఱుతీటున నడచుచున్నది. బొంబాయిరాజధానియందును, ధార్వారుమున్నగు చోటులందును, కేరళమందును దెలుఁగు లున్నారు. వీరి వాడుకమాట వేఱొకరీతియం దున్నది. రంగముతెలుఁగు రంగు దేఱియుండును. అన్యదేశములకువలసపోయిన తెలుఁగులమాట చిత్రరీతి నుండును. ఆంధ్రసాహిత్యమున వాడుకమాటలు చేరవలెనన్న, నెన్నితీటుల మాటలొ ప్రళమసంభావనకై ముందులకు పర్యెత్తుకొని వచ్చును. వంగసీమయందు వాడుకమాటల ప్రయోగమున కప్తమే లేదు. ఆంధ్రభాషయందు ఇచ్చవచ్చినరీతిని వాడుకమాటలను ప్రయోగింపవలెననిన, తలకు బొప్పితగులులు తగ్గవు.

పాకీవానినిగుఱించిన వంగపద్యమును రవీంద్రుఁ డింగ్లీషులోని కనువాదమొనరించెనని ఇటీవలజరిగిన కవిత్వసమితిసభలో శ్రీ గిడుగురాముమూర్తిగారు రనిరి. పాకీపని పాకీవానికి దైనికక్రియయే యయ్యు, మహాభక్తుల కాదర్శమైన మహత్క్రియయని నేటి మహా పురుషులు గుర్తించుచుండిరి. తలఁచెందుకలు పాకీచీపురుకావలెనని రామకృష్ణపరమహంస పలికెను. ఒకప్పుడు చాకలిపనియందు గోఖలే మెప్పుఁబడసిన గాంధీమహాత్ముఁడు పాకీపనియందు పాకీవాండ్లు తనకు సాటిరారని నిన్నుగాక మొన్నఁ బలికెను. గాంధీగారి జర్మనీ శిష్యురాలు (స్విజిత్) పాకీపీథులు తుడిచి, మద్రాసుపౌరులకు అబ్బురముఁగొలిపెను. పాకీచీపురునకు నేడు గల గౌరవము వింజా మరకు లేదు. వింజామరనంటిన వెండికంటె, చీపురుగుగూర్చిన కూరిమినూత్రముగు తడవయే నేఁ డెక్కు డాదరము నందుచున్నది. కావుననే, తల్కులనీను కైలికంటె తడవవంటి కైలికే నేఁ డెక్కిద రము చేకులుచున్నది.

తడవపై రవీంద్రున కాదరమున్నను, రవీంద్రుఁడు తడవకు తలఁదాలపలేదు. ఈతని శిరోజములు వింజామరకేశములట్లును, వెండి తీవలట్లును నుండును. గాంధీజీవలె నీతఁడు పురీష భాండమును తలపైఁ ధార్చి, కాంతినికేతనమున కవ్వల బారిపెట్టిలేదు. ఈమహాత్కార్య మునఁ దాను గాంధీమౌల సేమయుఁగానని పృథుకపీంద్రుఁ డొప్పు

కొనెను. తనపాదరేణువుల నొరుల కిచ్చు రవికవి, కాంతివంతమగు శ్రీ లి. సులభశ్రీ లి కరలినట్లు గాంధీమ్రాల పలుమాటు. సాగిల పడెను. గాంధీ క్రియాకామి, రవి భావకామి. భావము క్రియకు తోలివుట్టువు. మలిజన్మమునగాని రవికవి గాంధీ కాజాలడు. రవీంద్రుని శ్రీ లియందు గాంధీ మూవర్ణములు ప్రతిబింబించినవాడే, యిది శుద్ధఖద్గదవలె నుండును. రవీంద్రుడు ఖద్గరుధారి కాడని ఆచార్య రాయ మొనపెట్టెనుకదా! భావపోషణ కనువగు శ్రీ లిని రవీంద్రుడు పంపిరిగించును. పసిబాలర కడేండ్లు పాఠములు చెప్పితే మిల్టన్ కవి Paradise Lost శ్రీ లిని ప్రయోగించెనా? సందర్భమునుబట్టి రవీంద్రుని హృదయ మవసరమగు శ్రీ లి నల్లుకొనును. రవీంద్రుడొక్కవాడుకమాటలకే అంజలి ఘటించెనని తెలుపుట పొరపాటు. తనకు మిగుల బ్రతుమైనకథ “ఏమకథ”లవలె హైమంతినికథయని ఈతడొకప్పుడు వచించెను. ఇందలి గభీరభావ మందటికిని ఒలిచిన, అనటిపండ్లని తెలుపరాదు. చోక్లర్ బాల్, నాకామి, గోరామున్నగు ఈతని నవలలను నవలారచనమున రవీంద్రుడు విజయముకా లేదు— తెలుచిచూచుడు. వాడుకమాటలను, వాడుకమాటలకానిమాటలను వీనియందున్నవని చదువరు తెలుగకపోరు. రవీంద్రుని “Creative unity”, “Personality”, “The Fugitive”, “King of the Dark Chamber”, “Crescent Moon”, “Stray Birds”, “Lover's Gift”, “Broken Ties”, “Sadhana”, “Garden”, “Cycle of spring”, “Fruit Gathering”, “Chitra”, “Mashi”, “The Home and the World”, “Red Oleanders”, “Hungry Stones”, “Post Office.” “Sacrifice”, “Re ninscences”, “Gitanjali”, “Letters addressed to C.F. Andrews”, “Essay on Nationalism”, “Religion” Etc. ప్రతివానికిని అరమగునని పలుకుట కల్ల. ఈతనిగీతాంజలిలో నేమియులేదని, వానిగాంచిన ఆంధ్రకవులు—కవులని పేర్కొనఁబడు కవులుపలికిరి. పృథ్వీతలమండలి అధునాతన మహాత్మాత్వ గ్రంథములలో నొక్కటియని ప్రసిద్ధినందిన గీతాంజలియందేమున్నదో ఈమాకుకవు లెరింగిరా? రవి వాడుకలో నేయున్నాడు. రవితండలినీ చేరుచునేయుండును రవినీచేరఁగలిగినవాఁడెఱున్నాడు? ముక్తికి రవి ద్వారమని మన తత్వశాస్త్రము తెలుపుచున్నది. రవి యందుఁ బ్రవేశించి, రవి-తత్వమునుగ్రహించి, సారస్వతమందలి ముక్తియానందము నెందఱు క్రోలిరి? వట్టిమాటల పెనగులాటతోఁ గాలములుచ్చు నేటి శ్రీ లివాదులు, భావగభీరతలోనికి తొంగి చూచని నేటిశ్రీ లివాదులు, వాడుకయగుట, వాడుక కాకపోవుటే భాషాతత్వమని యపోహపడు నేటి శ్రీ లివాదులు, భాషాపునరుద్ధరణమున భావపునరుద్ధరణ మవసరమని గుర్తింపని నేటి శ్రీ లివాదులు హృదయ రవిధన నెగిరి మాకులు కాల్యకొనసేల?

వాడుకమాటయెరుదు వంగనీమల రెండువిధము లున్నవని చదువరుచేవిలో చెప్పవచ్చును. ఈ వాడుకమాటలు రెండుభావల

వాడుకమాటల ట్టుండునుగాని, తెలుగువాడుకమాటలవలె నొకభావ యందలి నేటుతీటునుకువులవలె నుండవు. పడమరబంగాళమందలి భాషకును, తూర్పుబంగాళమందలి భాషకును ఏపోలికయు లేదు. తూర్పువంగవాసి మాటలాడుచుండ పడమటి వంగీయుడు, బంగాళ మెఱుంగనివానివలెనే నోరుతెఱచుకొని నిలువంబడును! తూర్పు వంగీయులు తాము వ్రాయు పాత్రములందు పడమరవంగీయులు వాడుమాటనే ఉపయోగించురు. అందుచేతనే వాడుకమాటపెనగు లాట వంగసాహిత్యమున నుండనేరదని వాఱనియుంటిని. శిల్ప రంజనదాసు తూర్పువంగీయుడని వింటిని. చాసు, కవనముల్లువాడు. పశ్చిమవంగమునే యీతఁడు వాడెను. తద్భవములందును, తత్వములు లందును, దేశ్యములందును, గ్రామ్యములందును, వికృతులందును, పెక్కురీతుల వాడుకమాటలందును ఎగుడుదిగుడునడకలు నడచు తెలుగులు, ఒరులకు లేక తమకే సుక్రమిందియున్న యిబ్బందులను గుర్తించి, ఒరుల యొరవడి ననుకరించుతట్టి, వీనిని తొలఁ గించుకొనుటకు పూనుకొనలేని ప్రాతపుంతలును, ముండ్ల పొదలును, కటికి గొప్పలును, బురదగోతులును తెలుగురచనకు తప్పవు.

భావప్రకాశమునకు సముచితమైన భాష సాధనము. భాషా గమనికకు వ్యాకరణసూత్రము లవసరములు. ఇవి కట్టుత్రాళ్లుకాక, పట్టుదారములట్లు మృదులములై, అమరాగసూత్రములట్లు అదృశ్య ములై యుండవలెను. తెలుగొక్కఱములు ముత్తెములవంటివి. ముత్తెపు సరములొనిదారము వెలుపలికి తోచనట్లు, తెలుగులోని లక్షణ సూత్రములు బట్టబయలుకానపుడే తెలుగుశ్రీ లి చక్కనిదై యుండును. పగ్గములను, ఉర్రిత్రాళ్లను తెలుగెమ్మకొంఁమునుండి పంపితులు తొలఁ గించుటపోడి. ఆంధ్రభాషాప్రపంచమున ద్వంద్వయధమునకు తొడరి యున్న ఇరుపక్షములవారను తమనోసములు గుర్తించి, ఉత్తమసార స్వతోద్దేశములకు తోడుపడు సూత్రములను శాసించుపట్ల నిరువురు చేతులుగలుపుకొని, విశ్వవిద్యాలయముల సాహిత్యముందవలెను. ఇట్లా నరించిలేని, ఎన్నెని బాధలు తొలఁగిపోవును. వాడుకమాట నంగీకరింపని విశ్వవిద్యాలయములును, వాడుకమాటలనే అంగీకరించు గ్రంథాలయ ములును, విలుగుకుమాటలను శ్రుంపుకుమాటలను కాంక్షించు భాషా సమితులును, వాడుకమాటలని చెప్పి వంకరమాటలను దెచ్చి సింహాసన ముపైఁగూర్చుండఁబెట్టి చుట్టును రామభజనముచేయు అపూర్వభాషా భక్తులును పెహమొగములను బెట్టుకొనక, ఒకరిమొగముల నొకరు పరి కించుకొని, వెక్కిరింతలుకును, పండ్లపటపటలకును, కాటుమాటల కును, కన్నెఱుకును స్వస్తి చెప్పి, సామ్యిరియున్న భాషాపనికి కాంతియు, వానందమును ప్రసాదించిలేని, చాలి తెన్ను లేక అల్లాడు పాతకులును, వివ్యాధియును, ధమ్య లగువరు.

ప్రముఖు లందఱునుగూడి, తెలుగురూపును మాపుచేయు సందర్భపదజాలమునకు త్రోసిరా జనుట చెల్లును. తెలుగువ్రాయు తటి విధికి ప్రత్యయములనుమాత్రము తెలుగునుండి తెచ్చి, తక్కిన

భావనంతయు గీర్వాణమునుండి దిగుమతిచేయు నలవాటును రూపలఁ జేయు పెక్కు మను ఇండియన్ ఫీనల్ కోడ్ లో వీరు ప్రవేశ పెట్టించినను పెట్టింపవచ్చును. ఇట్లనిన, నొంట్లెత్తు బ్రదుకు బ్రనుకుండనియు, తెలుఁగును చీకటికైదునం దుంపుడనియు నేను పలుకను. భారవహము లైన నగలుదాల్చి, సేలఁగూలిన టార్పియనుకన్యగాక తెలుఁగు తనకుఁ గాని, తాను తాల్పఁజాలని సంస్కృతభారమును తలపైఁజేర్చుకొనక, అవసరమగుపట్ల సాంపుఁగూర్చు భూషలను ధరింపవలెననియే నా తలంపు. ఒక్కసంస్కృతమేగాక, అన్యభాషలుకూడ తెలుఁగునకు తోడ్పడినవో, మనతల్లిమాట గమనికకలదై యుండును. బంగాళ మును పరికింపుఁడు. Chain, Table, Bracket మున్నగు మాటలకు వంగానువాదములు లేవు. ఆంగ్లపదములే వంగముందుఁ గలిసిపోయి నవి. ఒకప్పుడు కొంతస్వేచ్ఛయొజ్జిన తెలుఁగున నుద్దామాటలు చేరినను, ఇటీవల నన్యభాషాపదములను మనపండితులు వెలివెట్టుచున్నారు. వికాలదృష్టిగల వీరేశలింగముగారుకూడ కలెక్టరుపద మునువాడుట కిష్టపడక “మండలకరగ్రాహి” యని కటికితాతివంటి ముక్కను విసరి, సామాన్యలకు బొప్పగట్టించిరి. ఈకలెక్టరుపదము నకుముందు టికట్ అనిగాని, మటికొన్ని విశేషణములుగాని ఉన్న యెవల, ఇనుపదారివలె తెలుఁగుకబ్బము పొడవెక్కును. భాషాశాసన మునకుఁ గడంగుమహనీయులు శాందసపువ్రాతలందలి కష్టనిఘ్నము లను గుర్తించురుగాక.

పదప్రయోగములనుగుఱించిన శాసనము సాధ్యముగాని, శైలిని గుఱించినశాసనముకాదు. పదప్రయోగమే శైలియని ఊహించువారు పెక్కిండగుటవలనను, శైలియనఁ బదప్రయోగముగావన్నను, పద ప్రయోగము శైలిలోనిది కావునను, క్రుప్తపట్టిన కొన్ని ప్రాతకట్టు బాట్లు నేఁడు ఆంధ్రవాఙ్మయప్రపంచమున నెంతేని అనర్థమును జెచ్చుచుండుటచేతను, అధునాతనపరిస్థితుల ననుసరించిన భాషాశాసన మునవలెనని తెలిపితిని. ప్రజాసేవకు ఒక్కవాడుకమాటయే అక్కఱ కలదనువారి యుద్దేశము మహత్తరమైనదని వాకొనియేయుంటిని. ప్రజా సేవకై కావింపఁబడు నుపన్యాసములును, వ్రాయఁబడువ్రాతలును మనమపేక్షింపకయే వాడుకమాటలందు వ్యక్తమగును. ఆర్థికపునరుద్ధరణమని ఎంచఁబడు ప్రజాసేవకుమాత్రమే సాహిత్యము ఉపయోగ బుడదు.

ప్రజాసేవ సారస్వతమందలి ఉద్దేశములలో నొక్కటైనను, సారస్వతము ప్రజాసేవమాత్రమే కాదు. సారస్వతము అధ్యాత్మిక మైన కళ. సారస్వతము నిష్కాముకర్మకంటిది. ఫలితమును ముందిశి కొనియే అది తన సాందత్యమును గుమ్మరింపదు. కళయొక్క సహజ ప్రకృతి ఆత్మవికాసము. ఇది యాత్మవికాసమునఁ బెంపారుతటి ఒరులు అనంతానంద ముందురు. కళయన కాంతికాదా! దీని వారగించుతటి ప్రకృతి తనయనృత్య మొనరింపదా! కళయు శానందమును హేతుఫలితములట్లు తోచుచున్నను, ఫలితము నభిల

షించి హేతువు, తనహృదయమును విష్ణుకొనదు. తన యైశ్వర్య మును తనయెడఁదయందు విగించుకొనియుండుట కళాప్రకృతికి ప్రతి మాటము. సహజగుణప్రకాశమున కళ తోభిలునుగాని, తనగుణఫలము లను తానూహించి, ఒరులప్రకంసను గాంక్షించికాదు. అడవిని వెన్నలకాయదా! ఆత్మహృదిని వెడలించుట కాముదిసహజగుణము. మానవుడు కనివిని యెఱుఁగని తావులందు చక్కని పూవులు కుసు మించుటలేదా? ('Full many a flower is born to blush unseen. Vide: Gray's Elegy) సుందరివదనము కవితావిధూతి నొప్పదా? తనదెస నొకరు చూచినను, చూడకున్నను ఇంద్రధనువు నభోసీమం తినికటిసీమయందు వివిధరాగరంజిత విచిత్రమేఖలయట్లు కాంతిలదా? తమ్మొకరుచూచినను, చూడకున్నను తమ కొరులు చేటు లేదైనను తేకున్నను, శిశిరబిందుసంవోహములు ప్రభాతసమయములందు ప్రభాకరమరీచులనుగూడి, పచ్చికపానుపులపై పరితోషక్రిజలఁ దేలవా? ప్రాణులన్నియు నిదురించువేళ మిణుగురుపురుగులు కాటు చీకటులపై వింతకాంతులను విరజిమ్మవా? కవితాసంపదఁ గల హృదయము తన సహజసాందత్యమును నలుకెలంపలందును కలువ డింపదా? సారస్వతహృదయమగు కవిత్వము పుస్తకములు చదివినందు వలనఁగాని, ఆచార్యప్రబోధమువలనఁగాని అలవడదు. బోధవలనఁగాని, కృషివలనఁగాని, పూవులను, జాబితరేకలను, మంచుతుంపురులను, ముత్తయపునొంతరలను పుట్టింపఁగలవా రుండునో, పాతమువలనను, శిక్షణమువలనను వా రొరులకు కవిత్వము నలవడఁజేతురు. ఈమడువు కవిత్వమునకును, సారస్వతమునకుమాత్రమే కాక, సాదరకళలగు సంగీతచిత్రలేఖనములకుఁగూడఁ జెల్లును.

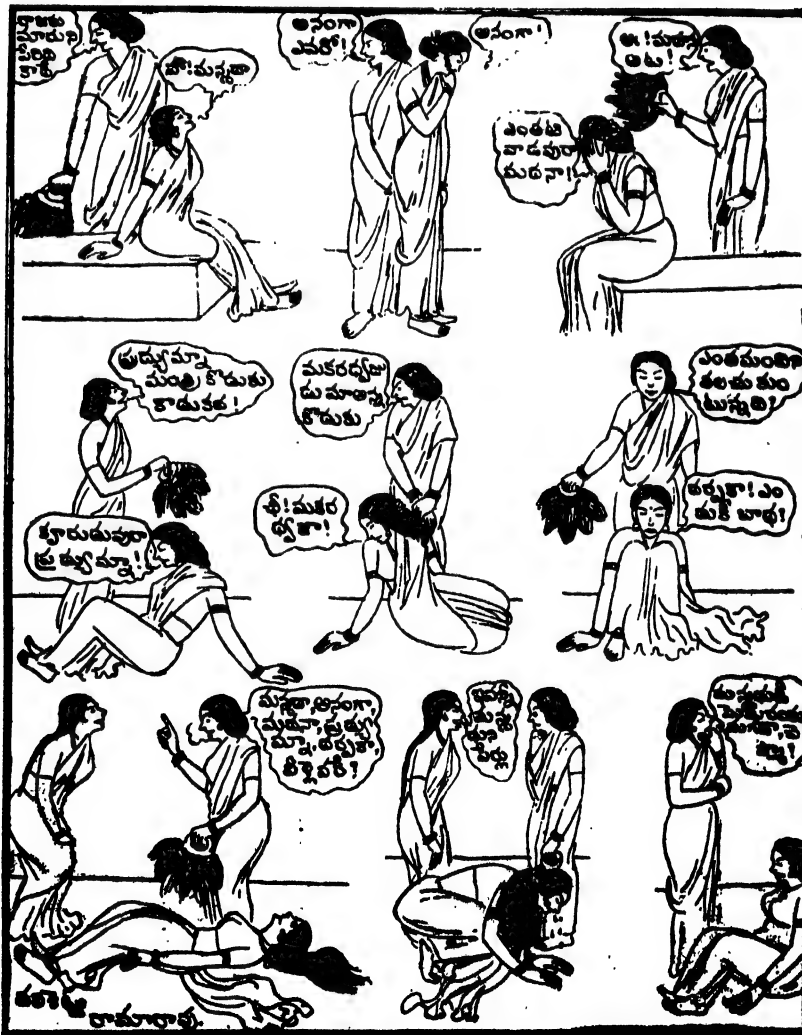
భాష భావముయొక్క బాహ్యరూపమై యుండు, సుందర మైన భావమును వెలవరించుభాష సుందరమైయుండక వేటుతీలిన నుండునా? కవి, తనమాటలను తా నెన్నుకొనఁడు. వాడుకమాటేమో, వాడుకమాటకానిదేమో ఆతఁడు లక్షింపఁడు. కవివాక్కు, కవిది కాక, కవియెడందదని కవిత్వ మెఱిగినవా రెఱుఁగుదురు. ఒకవిధమైన శైలివ్రాయవలెనని గట్టిగఁ గూర్చున్నవాఁడు కవియేకాఁడు. గణముల నుపేర్చి, అక్కఱములను లెక్కించి, యతిస్థానమును కన్గొని, ప్రాస యతి నూహించి, వచ్చిన పదములను పంక్తులం దిరికించి, పద్యములు వ్రాయు మహనీయునికైత సహజమై, ఆత్మవికాస మొందు నెనుట పింఛముకాక, కాకియొకలకట్ట యగును.

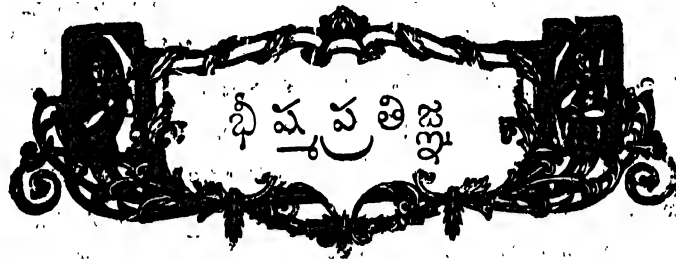
కవిశైలిని నిర్దిష్ట మొనరించునది కవియంతరంగముకాని, కవి యెన్నఁడో వర్ణించిన అమరకోళముకాదు. వ్యాకరణమునుండి కొల బద్దనుదీసి కొలిచితిమేని, ఈతనిశైలియందు భాషాస్థానీయములు తోఁపవచ్చును. ఇవి దోషములని వైయాకరణులు కనుకెఱ్ఱిఁజేసినను, నిరంకుశత్యము నల్లెరువొడిబుండియై కవిపైపడినను, కవి, కన్నులీ చూడక తనభావమున తాను మునిగియుండును. సింధువువొడిఅలలను, చారలను, భీషణవాతూలమునులోఁగల గభీరకాంతినిన్నఁదైన కన్నులీ

చూచునా? కాలుచున్న కరుణలను మీదికెత్తినను, కవి తనప్రకృతిని తానుచూర్చుకొనఁజాలఁడు. తనప్రకృతిని చూర్చుకొననికవి, తనమాటల నొరులు చేఱునిన తక్కింఁడలందుంచి, మొగ్గుఁజూచుకొని, వాని నేఱుకొనుట కిచ్చుగింపఁడు. కవియనఁ బద్యకవియేకాక గద్యకవియని చూడ తెలిసికొనుట కలవాటుపడని ఆంధ్రభాషాశాసకులు సహజభావ విభూతి నొప్పు లేఖకునకు కైరిని చెప్పసాహించుట దుడుకుదనము నకుఁ దలపడుటనియు, వ్యర్థపాండిత్యమును చలాయించుటనియు, తలదిరుగుడు నిరంకుశత్వమును విజృంభించుటనియు, సాహితీపూరి నెఱుఁగక మాటలగుట్టపైఁ బొరలాడి, ఒరులను పొరలాడించుటనియు, తమమాధ్యమును తామెఱుఁగక ఒరులతలకు తప్పులుకట్టుటనియు, తమసంఖ్య అధికమై, తమకీక్తి మిన్నయై, తమపలుకుబడి గొప్పదై, తమనోరు పెద్దదై, తమయచ్చయంత్రములును, తమప్రయోగాస్త్రము

ములును ఒరులకు బహిష్కరణాస్త్రములై తమ్ము గట్టెక్కించి ఒరులను లోఁతుగోఁతిలో త్రోయునని విజ్ఞప్తిగి తెయ్యిమునుట తమ కరుణావంధ్యత్వమును, తమ యసురనిష్ఠురతను వెల్లడించుటనియు గుర్తించి, యొకమందు తప్పుపట్టదుకునుండియు, తాఱుమాఱు తెరువులనుండియు.. తొలగి, వికాలవృద్ధిగలిగి, యుక్తాయుక్తవిన త్నవత్తులై మెలగుదురుగాక! కైరినిగుజించిన నేటికయ్యము ఆంధ్రసేమనుండి అదిరములో నంతర్నితమై, సాహిత్యమోషకు స్వాతంత్ర్యమును, సౌందర్యమును, సౌష్ఠవమును చేకూర్చుటకు భాషా సేవకులను, ప్రజాసేవకులను, కళాసేవకులను పురికొలుపు సత్సహము నకు తావొసఁగునుగాక!! ఆంగ్లవంగసారస్వతములట్లు ఆంధ్రసారస్వ తము అధునాతనయుగమున అపూర్వతేజమును విరజిమ్ముగాక!!! తెలుగుకైరి, జ్ఞానకైరివలనియై ప్రవహించి, శిశ్నాకులనుకనుపుఁగాక!!!

ప్రబంధములలోని విరహము





దేవరవల్లి వెంకటకృష్ణారెడ్డి

“అనవుడు బాంతురాజునయాగ్రహి సంజయుమోముఁ జూచి యిట్లను నదియేల నీపలికినట్టిద ధర్మపుట్టయండి బోధను లరయంగ వచ్చిన నిధర్మములై చెడుఁగొన్ని ధర్మవర్తనములు గాక తోచి తుదిధర్మములై చనుఁ గొన్నికర్మముల”

—ఉద్యో. ౧ ఆ. ౩౩౫

ఈ భీష్మప్రతిజ్ఞ శిఖండి విషయమైనది. ఈ సందర్భమున వైపర్యాయము సాధికమైనది.

ఈ వ్యాసమున నూపు అసందర్భములు ఆంధ్రభారతము లోనివగుటచే పూజ్యులగు కవిశ్రయమువారి హితవేషిండుటకుగా తలంపకుండుగుగాత. ఇచ్చి సంస్కృత జయ భారత మహాభారతముల సంపుటికరణములలోని వ్యత్యాసములుగా తోచుచున్నవి. ఆంధ్రభారతమున చూపిన పరస్పరభేదములు సంస్కృత భారతమున కలవా, లేవా? అని సంస్కృతభాషావిదులు, పరిశీలించురుగాక యని ప్రార్థన. తిక్కనాదులు వారి యుశాచారముల ననుసరించి, భావము చెడకుండ మూలకథానవాదమును చేసిరి.

“శిఖండిని నొక్కరుని జంపగాని కుమారా!”

—ఉద్యో. ఆ. ౪-౨౭౫

శిఖండిపూర్వస్మృత్యుత్తమగు అంబోపాఖ్యానము భీష్ముడు దుర్యోధనునకు, సభాసదులకు జెప్పనపుడు చేసిన ప్రతిజ్ఞలలో ఇతరములు విడచి శిఖండివిషయమైనదిమాత్రమే కైకొనెదము.

“అంగనాపూర్వందగు శిఖండి నాకు భండనంబునం గోదండ పాంక్షిత్యంబు మెరసి నన్ను జంపను నొంపను గడంగినను నేను బ్రతిగా గడంగితి నేని నింతకంటెను దుర్మతంబు గలదె యే నెట్టులైన నగుదుం గాని భగ్నులైతుండ నగుట కోర్వను”

—ఉద్యో. ౪. ఆ. ౪౦౬

ఇదియే నిజమైన భీష్మప్రతిజ్ఞ. దీనినే ముందు యుద్ధాలాపములుగా వివరించి, ఆచరించియుండెను. కాని రహస్యప్రకారమున ధర్మబాదులకు భీష్ముడు తన కథోపాయము చెప్పుటలో వ్యత్యాసమును చూపుచు,

“అంగనాపూర్వని.....గని యెటుఁ బోటుఁదక్క సమరంబు చేయమానుదు.....విశేషించి ముంపటిపుట్టువున నంగనయగుట వాని (శిఖండి) కెదురీయకుండుదు. నర్జునుండు వానిం బురస్కరించుకొని నచ్చి యే నేయుట మానినయెడ నొప్పించి పడవైచునది.”

భీష్మ. ౩. ఆ. ౩౦౨

ఇది మధ్యకల్పితము గనుకనే పూర్వప్రతిజ్ఞామూలముగ యుద్ధము చేసెను.

ఇక ప్రతిమూలములు గమనింపుడు:

రాయబారిగా వెల్లిన సంజయుని గృతరాష్ట్రుడు ‘అర్జునుడే నునియె’నని అడుగగా నతడు అర్జునునిమాటలుగా నిట్లనియె:

(భీష్ముడు శిఖండివిషయమైన తనప్రతిజ్ఞను దుర్యోధను సభలో వెల్లడించుటకు పూర్వము)

తజీమి శిఖండి దన్నరులు దాకంగ నెవ్వరిదిక్కుకొండ కే దొడచినపూనిక్కి మై మనము భీరత నిర్మి రథంబు బల్లడిం బఱసి కురుక్షేత్రుండను బ్రహ్మకు వేయును నిండ భీష్ముపై కుటికినగాక మాకు సగ మూరక యిత్తురె మీరు మేదినికా.”

—ఉద్యో. ౨ ఆ. ౧౪౯

మరియు,

సుయోధనుడు సంధివిషయమై చెప్పు సంజయు నిట్లు ప్రశ్నించెను:

“నావుడు నదియో సంజయ, కైవారము నేనె దీవు కాంశేయుల వా రేని రహస్యాధనములుగా వెరకక నడచువారు కారవులపయికా.”

—ఉద్యో. ౨ ఆ. ౨౨౭

సంజయుడు అతనితో వారు యిట్లు నిశ్చయించి రని పలికెను:

“గంగాకుతుండు శిఖండిపాలితనికై బ్రాహ్మణులై స్వీకృతులబలుగుంధ భవునభ్యుత్పన్ను పాలకునికై ద్రావణులై ద్రావణులై పంచకంబు.”

—ఉద్యో. ౨ ఆ. ౨౨౯

జాతీయ నాయకుల

అభిప్రాయములు

—❖—

మహాత్మాగాంధీగారు వ్రాసినది:

“నమూనా పెన్సిల్స్ ఇంపిసందుకు మీకు వందనములు. పెన్సిల్స్ విషయమై నా కంఠగా తెలియకపోయినను, అవి ఉపయుక్తమైన వని చెప్పగలను.”

జవహర్‌లాల్ నెహ్రూగారు

“గడచిన మూడు లేక నాలువత్సరములనుండి మద్రాసు పెన్సిల్ ఫ్యాక్టరీవారి పెన్సిల్ల నుపయోగించుచుంటిని. అవి నాకు చాల తృప్తికరముగా నున్నవి. ఈ యంత్రాలయమును చూచు భాగ్యము నాకు లభించినది. అందువలన నిర్వహించు పద్ధతులు నాకు వివరింపబడినవి.....ఈసంస్థకు దిగ్విజయము చేకూరుగాక యని కోరెదను.”



సి. వై. చింతామణిగారు

“నేను స్వయముగా కొంతకాలమునుండి ఈ ఫ్యాక్టరీలో తయారు గాబడిన పెన్సిల్లను వాడుచున్నాను. అవి తృప్తికరముగా నున్నవి.”

సర్ తేజ్ బహదూర్ సప్తా,

కే. టి., పి. సి.,

“ఈ ఫ్యాక్టరీలోని పెన్సిల్లను వాడిచూచితిని. అవి విదేశపు పెన్సిల్లవలె బాగుగా నున్నవి. ఈ వ్యాపారము ఇంకను అభివృద్ధియేల కాగూడదో కారణము గోచరింపదు.”

ది మద్రాసు పెన్సిల్ ఫ్యాక్టరీ,

మదరాసు.

“స్టాండర్డుయింకు” తో సమానమైన వ్రాతసీరా మరియొకటి లేదు.

ఒకసారి వాడిచూచి తృప్తిచెందుదు.

స్టాండర్డు

అనుకరణములు జాగ్రత్త.

స్టాండర్డు ప్రేక్షకులకు

రికవరీ చేయబడింది



పోస్టుబాక్సు నెం. 24, }
18, బ్రాడ్వే.

నరసింహం అండ్ కో లిమిటెడ్,
మద్రాసు.

గొప్పనమ్మకము, విజయము, ప్రజా
మోదము గలిగినదని ప్రపంచజాతు
లన్నిటి చేతను తలంప బడుచున్న
ప్రేక్షకు మార్కు. ఇండియా, బర్మా,
సిలోన్, విదేశములందు, ప్రాచీనీధ్యము
లేని స్థలములకు “స్టాండర్డు యింకు”
అమ్మకపు యేజంట్లు కావలెను. మరియు,
వివరములకు వ్రాయుడు.

The Great Eastern Life Assurance Co., Ltd.

(INCORPORATED IN S. S.)

Bonus Year 1934.

Assets exceed.
Rs. 2,00,00,000

Sums assured.
Rs. 5,50,00,000

Claims paid.
Rs. 1,25,00,000

OUR POLICY CONDITIONS ARE LIBERAL AND PREMIUMS MODERATE

Wanted Chief Agents' Representatives in Andhra Desa on liberal terms carrying pension.

For particulars please apply to:—

The Great Eastern Life Assurance Co., Ltd.

2-3/18, Mount Road, MADRAS.

V. K. MENON - Branch Manager.



(4)

1. పాకాలబోడ్ల మాధ్యమిక పాఠశాలా శివకార్యసంఘము. 2. తణుకుతాలూకా గ్రంథాలయసంఘము.



1. తణుకుతాలూకా పేటలో శ్రీరాజేశ్వరగ్రంథాలయ కార్యనిర్వాహకవర్గము.

2. తణుకు తాలూకాలోని గ్రామాలలోని వారసులతో కలిసి తీసుకున్న ఫోటో.

శిఖండివృత్తాంతము రాయబారములనాటికే అర్జునాదులకు తెలిసియుండ, భీష్మయుద్ధప్రారంభమునను, తొమ్మిదవనాడు రహస్యముగను భీష్ముని మరణోపాయ మడుగవలసిన ఆవశ్యకత లేదుకదా! 'కైవారము చేసెదీవు కాంతేయుల' అని సంజయుని దుర్యోధనుడు ఆశ్చర్యించినాడుగనుకను, ఉపప్లావ్యమున అర్జునాదులు సంజయునితో నీవృత్తాంతము చెప్పకపోయిరి గనుకను ప్రమాణములు గావని అంగీకరింపకపోవచ్చును. కాని,

ధర్మజుడు ఇట్లు సంజయుని మందలించెను:

".....అని వారలగలవ నరిదియని పాత్రుగఁ జెప్పినమాటకు నేనొడఁబడ విను సంజయ, సక్షిపాతవృత్తి విడువునీ!"

—ఉద్యో. ౧ ఆ. ౩౧౩

ఇట్లు రెండుపక్షములవారిచేతను మాటలుపడినవాడు సంజయుడు. విశ్వాసపాత్రుడు గానివానిని రాయబారిగా బంపరుగదా! కాన ఆతడు పరస్పరముగ పాండవుల మర్మములు తెలిసికొని చెప్పినాడనుటయే సమంజసము.

మరియొక సాధనమును ఆలోచింతము. భీష్మప్రథమదివసయుద్ధాంతరమున ఆరాత్రి ధర్మతనయుండు విషణ్ణచిత్తుండై తమ్ములం దగు వారల గూర్చుకొని గోపాలదేవుపాలికిం జని యతనితో నిట్లనియె:

"నరపతులెల్ల భీష్మున కెరగా నొప్పింపఁజాల నే నడవులకుకామరలం బోయెద నచటం దిరిగెదఁ గూరాకుఁగోసితినియెద ననఘా!"

—భీష్మ. ౨ ఆ. ౮

దానికి పద్మనాభుండు పాండవాగ్రజున కిట్లనియె :

"నెవ్వగ ఇంతఁజేల విను నీ కెదురెవ్వరు నీమతమ్ములం దెవ్వరు నూచినక జగము లిన్నియు గెల్వఁగలారు లావునం శ్రావ్యున భీష్మ నోర్పు రణఁగోవినుడైన శిఖండి యేను నీ కొవ్వనివారివెల్లఁ గ్రమయుక్తి లయంబొనరింతు నెమ్మెయిక్."

—భీష్మ. ౨ ఆ. ౧౧.

శ్రీకృష్ణుడు భీష్మునికి శిఖండిని ప్రతిమోధునిగా నిర్ణయించినాడు. దీనినిబట్టి సంజయుడు వెనుక అర్జునునిమాటలుగా చెప్పిన విషయము పాండవవీరుల నిర్ణయముగా దోచుచున్నది. పునరుక్తిదోషము లేకుండుటకు ఉపప్లావ్యమున అర్జునాదులనే కవిబ్రహ్మ చెప్పింపలేదని కాని, పాండవరహస్యరక్షణార్థము చెప్పకపోయిరి కాని తలంచవచ్చును. వీరిమతమును సంజయుడు పరస్పరము కనుగొనినా డనుటకు బాధకము లేదు. లేక ముందు తెల్పబోవునటులు కృష్ణుడు చారులవలన తెలిసికొనియుండును.

వెనుక ఉద్యోగపర్యమన భీష్ముడు పాండవవీరులం దతిరథ మహారథుల నిరూపించి చెప్పబడగా

"శిఖండిని నొక్కరునిఁ జంపఁగాని కుమారా!"

—ఉద్యో. ౪ ఆ. ౨౭౫

అనుప్రతిజ్ఞను సభలో భీష్ముడు చెప్పెను. దానిని చారులవలన ధర్మజుడు తెలిసికొనియుండెను. చూడుడు :

"ఇవిగ్రంభున నీకొడుకుకడం బుట్టినవిశేషములు ధర్మతనయుండు చారులవలన విని తమ్ముల రాఁబనిచి వారలతో నిట్లనియె"

—ఉద్యో. ౪ ఆ. ౪౨౪

శిఖండివృత్తాంతమున నీవాక్యము గలదు :

"కొలుపునం గల యందలు సమరవిషయములైన సల్లాపములు చేయుచుండ"

—ఉద్యో. ౪ ఆ. ౪౦౩

ఒకసభలో జరిగిన మహారథుల నిర్ణయమును శిఖండిప్రస్తావమును ధర్మజుడు చారులవలన తెలిసికొనియుండెగాదా! కృష్ణునకు దీనిచేతనే తెలిసియుండియుండును. ధర్మజుడు కారణమైనాడు గాన శిఖండివృత్తాంతము మరచియుండును. దానినే కృష్ణుడు జ్ఞప్తిపరచినాడు. లేక శ్రీకృష్ణుడు సర్వజ్ఞుడగునా ప్రభావమువలన తెలిసికొని చెప్పినా డందమునుకొనిన బాధకము గలదు.

"అయ్యతాతకేత్రుఁ డనుజాలు నతఁడును

దాను (కృష్ణుండు) సామ్యవేషధరణమొప్పు

నతినిగూఢవృత్తి నాపగాసుతు మంది

రమున కరిగి సముచితముగఁ జొచ్చి"

—భీష్మ. ౩ ఆ. ౨౯౨

భీష్మవధోపాయము నడుగుటకు తానుకూడ వెళ్లుటెందులకు? మరియు ఏతత్కార్యమే శ్రావ్యున భీష్మ నోర్పురణఁగోవిడుడైన శిఖండి యని తెలిసినవాడుగాననా?

".....చనుడేక తక్కిన కాపనిత్తు

వచ్చితి మేలయ్యె నైరులనిర్జింపు విదిగాకయును వర మెద్దియైన

నడుగుమునీకుఁగానని నేయుటాక్కటి దక్కంగ"

—భీష్మ. ౧ ఆ. ౧౫౮

భీష్మకాపమునకు వెరచికాబోలు!

ఇంతకంటెను మరియొకయుక్తి గలదు. ద్రుపదమహారాజు క్రౌపదీధృష్టద్యుమ్ను ఖిండుల తండ్రి, పాండవులమాను. పాండవపక్షమున ప్రబలుడు. భీష్మద్రోణులపై విరోధము తీర్చుకొనుటకు శిఖండి ధృష్టద్యుమ్నుల వరపుత్రులుగా బడిసియుండెనుగదా! ధర్మజుడు తనమామకు తెలిసిన రహస్యమునకుగా భీష్మద్రోణాదుల జేబరించుట ఎందులకు? భీష్మద్రోణులకు మహిమలు తగిలించి పూజ్యులగువారిని భ్రష్టులుగా జేయుటకు కాబోలు!

ఇక తొమ్మిదవనాటిరాత్రి ధర్మరాజాదులతో చెప్పిన రహస్య ప్రతిజ్ఞపాలనము నేమాత్రము భీష్ముడు నెరవేర్చినాడో చూడుడు:

“శిఖండిని నొక్కరునిఁ జంపఁగానీకుమారా!” అని భీష్ముడు తన్నువధించి పాండవులు జయముగొందురుగాక అని దురుద్దేశ్యముతో చెప్పినాడనుకొనినను,

“పాండవులకుఁ గలుగుబలము లన్నియు సమయింప నీకు దినములెన్నిపట్టు—” —ఉద్యో. ౪ ఆ. ౪౦౮

అని ప్రశ్నింప కుతూహలీయగు సుయోధనుడు, భీష్ముని వధోపాయముగు అంబోపాఖ్యానము ఏకాంశముగ వైశుగాక, సభలో నడిగినాడనుకొంటే అసందర్భ మేమికావలయును? శత్రువులు చారులవలన తెలిసికొనెద రను భయములేకనా? ఈసభావృత్తాంతమునే ధర్మజుడు చారులవలన తెలిసికొనెను. భీష్ముడు చెప్పదలచినను వారించవలసిన సుయోధనుడు ఈప్రశ్నవేయజాలడు. శిఖండి జన్మవృత్తాంతముగు అంబోపాఖ్యానము శివరములపై నాధారపడినదిగదా! శిఖండిచే భీష్ముడు చావవలసియండ అర్థమనిచే బడెను. అంబోపాఖ్యానము శివుని వర్ణవరప్రదాతముగా చూపి కళంకము నాపాదించజేయుచున్నది. ఇది అపచారము.

ఇక శిఖండిపూర్వవృత్తమగు అంబోపాఖ్యానములో అంబను సాల్వుడు తిరస్కరించినపిమ్మట పరశురాముడు మరల విచిత్రవీర్యునకే అంబ నిచ్చి వినాహము చేయించుటకు భీష్మునిరద్దకు తీసికొనివచ్చి విఘ్నదై పట్టుదలతో యుద్ధముచేసి ఓడిపోవుటవరకు నిజమైన కథగా నుండవచ్చును. మిగతభాగము క్రిందిగాఁపై కల్పితము.

పాండవులచే తనకు ప్రతియోధుడుగా నిర్ణయింపబడిన శిఖండి యుద్ధమునకు తలపడి ప్రోత్సహించినపుడు మగతనము, పూన్నిగల భీష్మునకు తనశివభవృత్తాంతము చెప్పక తప్పినది కాదు. ఇదియథార్థ శపథమేగాని, ఆచెప్పుదానినైనను పరిహాసముతో గూడిన యుద్ధాలాపములుగా జెప్పినాడు. చూడుడు:

“కనుగొని శిఖండి వెసమా, నొక్కని భీష్మునినేసె మూఁడు పూరాస్త్రములన్ గని యతఁడు మరలిమాడ కతని నుద్దేశించిపలికె దరచాసముతోక.”

ఎవ్వతనేని ధాత సృజియించె దగ్గ మగవానిఁగాఁగ నా కొన్వయిజేయ నట్టినిను నుగ్మలి నేయఁగనొల్ల నాపయిం గ్రొవ్వెసలార నీవు శరకొటి వెసం బరఁగించితేని నే నవ్వుదుఁగాని కోపము మనంబున బుట్టదు నూ శిఖండినీ!

అనినం గోపించి శిఖండియు నతని కిట్లనియె:

“గలిచితి రాజులెల్లను, బలియొడగు పరశురాము ప్రతివీరుడవై యలవుకలిమి నెఱిపితి నీ, చలముబలము నాకుఁజూపఁ జాలవుకంటే.

ఏయు మొక నేర్పుమై ని, త్లేయక శ్రేణించియరుగు మెట్లయినను ముత్యయకములనుఁగూర్చెదఁ, జూయెవ్వతనైతి నేమిచూచెడునమ్మక.”

నేఁడెమ్మియైన ననునీ, పొడిమిసెడఁదొన తవిలి పొదువుదునిన్నుకా వాడి మగఁడనుట యుదువును, వేడిమి సాంపెనఁగ నస్త్రవిద్య మొలుయుదుకా.”

—భీష్మ. ౩ ఆ. ౩౨౦-౩౨౧

ఈప్రతిజ్ఞను శిఖండి నెరవేర్చలేదు. (మరియొకచో చూపెదను.) భీష్ముడు ఈప్రతిజ్ఞను పాలించినాడు. ఇక ధర్మజునకు భీష్ముడు వధోపాయము చెప్పలేదా? ఈగాథ అంతయు కల్పితమా? అని విచారించిన యీక్రిందికథాభీజము కలదు. కాని అదియు ఒకఉపాయముగా నుద్దేశించియే భీష్ముడు చెప్పెను. తాను కురుపితామహుడుగాన తన్ను చంపమని చెప్పినను ధర్మజుడు చంపడనియు, పశ్చాత్తాపపడి యుద్ధమునే మానుననియు విశ్వాసముగలవాడగుటచేత చెప్పినాడనుకొనుటయే సమంజసము. ఏలయన సంజయుడు చెప్పినఅభిప్రాయముకలవాడగుటచేత నె చెప్పెను.

“తుదిఁబోయి క్రూరకగ్ధ్యా, స్పదముగుఁతెఱుగునఁదొడంగి బంధులగురులకా వెదకి వధియించు సౌఖ్యంబదియేటికి నార్యునింద్యమస్థిరమరయకా”

—ఉద్యో. ౧ ఆ. ౩-౩౩

కాన భీష్ముడు అదియొకసాధనముగా ప్రయోగించినాడు. ఆచెప్పుటలో అధర్మయుద్ధమును చెప్పినాడు. తనహితముకొరీ చేయమనెను. చంపమనిన చంపరుదా! పరికిలింపుడు:

భీష్ముడు:

“దొల్లెడు నూతులుఁ బెలుచం, దొల్లెడు కురగములుఁగా నతిక్రూరగతిం తెల్లయుచు సత్వరముగ, నెల్లడలం దానయగును నేడైఱబొదివెకా.”

“ఇట్లు పెద్దయుంబ్రొద్దు విహరించి యపరాధ్లాంబుటయు నతం దాత్యగతంబున,”

“ఉత్తముక్షుత్రియుల నెల్లనుగ్రవృత్తి, నేఁడుపది నాకులేనినానిశితశర సయములఁగూర్చి వేసరినట్టులయ్యె మేనితోడిపాత్రింకిటమానుటొప్పు”

“అని తలంచి తొలంగి బలంబులం దెరల్చికొనుచుం గయ్యంబునేయు చందంబునం గొంతేయగ్రజంగదిసి యల్ల నయతనితో నిల్లనియె”

“జనియించి నంతనుండియు, జనపతుల్లన్ గూరవృత్తిఁజంపుచునుండం జనియెం గాలము వినివితి, నసఘా, నేనింకఁజాల నాకురవిధికా”

“వీరు నాహితంబుఁ గోరుదులేని శిఖండిమన్ను గాఁగఁ గడఁగియంత వట్టువారునొక్క పెట్టకాఁదైబడియెయఁడింకఁదడవునేయలదు”

“అని పలికి సమరప్రకారంబునం దేరు మరలం దోలించి పొంచాఁ బలంబుల పయి నడకె నప్పు డయ్యజాతకక్రతుండు సమీపవర్తి యగు ధృష్టద్యుమ్ను నాలోకించి,”

“దేవప్రతు పలుకులువిం, లేవేగమపమపు మొక్కటిగఁ దఱుమఁగయో ధావలి నెల్ల నుభీముఁడు, నీవునునరుతోడఁగూడినిగుడుఁడుపెలుఁదకా.”

—భీష్మ. ౩ ఆ. ౩౬౧-౩౬౨

అని ధర్మజానితో చెప్పుటలో దొమ్మిగా తనపై బడవలయు నని చెప్పినాడేగాని శిఖండిని చూడగానే తాను శత్రుసన్నాధిపము చేసెదనని మడువలేదు. ఈఘట్టము నీవిధముగ సమన్వయించుకొనక పోయిన భీష్ముడు నవమదివసనీధిమన తనవధోపాయము తాను రహస్యముగ చెప్పియు ప్రతిజ్ఞపాలనము గావించలేదు. చూడుడు:

“అట్టియొడ శిఖండి యాపగాసుగునిపైవారుటమ్ములేయ వానినేయ నొల్లకతఁడుగలనియోధవీరావలి నేయుచుండెకార్యమెనకమెనఁగ”
—భీష్మ. 3 ఆ. 3౭౮

దీనిచే ఉపాయాంతరముగ జెప్పి ధర్మజాని యుద్ధపుత్రానికనుగ్రహించి శత్రువులపైకి వెడలెనటయే యుక్తియుక్తము. మరియు దొమ్మిదవనాటిరాత్రి తన మరణరహస్యమును తెల్పి దానికి విరుద్ధముగ తానుబట్టిన ఆయుధము వీడలేదు. ఇప్పుడు యుద్ధములో ధర్మజానితో చెప్పిన మరణోపాయముగూడ నవమదివస రహస్యార్థము గలదేని ఇప్పుడును యుద్ధమును మానలేదు. ఉపాయాంతరముగ భీష్ముడు రెండవసారియు మరణోపాయము పాండవపక్షపాతిగనుక చెప్పినాడేమో ననుకొందమనినను, ఒకటికి రెండుమారులు బాసతప్పినవా డగుటయే ప్రతిఫలము కాని, ఊపిరియన్నంతవరకు యుద్ధమున పోరిన వీరుడు స్వామిద్రోహి కాదుగదా! చూడుడు :

శకభము శిఖండియొక్కనిపై బాణము ప్రయోగించననియేకాని యుద్ధము మానుటకు గాదు కాన

“అరిబంబుపై నొక్కదివ్యాస్త్ర మేయఁదలఁచి యరిఁబోసి తిగిచి యుడగ్రవృత్తిఁ గవిసి ముందటనున్న శిఖండిచూడ్కి దొడరుటయఁ దాల్చిమై నేయుటుడిగ నధిప.”—భీష్మ. 3 ఆ. 3౮౬.

“ఇవిస్థంబున శతానీకుంజంపిన”

“మొనరెల్ల విఱుగమగ్ధుండినమున నినుమాడ్కి మెఱయులేజోనిధిశం తనుమానుఁడొప్పెనప్పుడుగనుఁగొనియిట్లనియెకొరిగాండ్చివోడఁక”

“మన మోహరములు నెడికను కనిఁబాఁతుడనిప్పుడాపగాసుకునకుగ్రక్కున నీవు మార్కొనక తక్కినఁ గార్యము దప్పఁ బొదివి గలుపుము కడఁకఁ.” —భీష్మ. 3 ఆ. 3౯౧-3౯3

అని శివవరమునకు ప్రతికూలముగా శ్రీకృష్ణుడు ప్రోత్సహించినాడు. అర్జునుడు కడపట భీష్ముని పడవైచెను.

“.....సురక్షితుండైన శిఖండిం బురికొల్పికొని మితండ్రినేయించుచు నతం డెన్నిచిం దైతిన నన్నింటిం దోడ్దొన తునుమాడుచుండెనా క్రిడితై నతం డుగ్రశక్తి ప్రయోగింప నదియునుం ద్రుంచి నూతునిం గేతనంబునుం గూర్చిన.” —భీష్మ. 3 ఆ. 3౯౪

ధర్మజానితో ఒకటికి రెండుమారులు రహస్యము చెప్పియు భక్తులగుట క్రుంచినను అంగనాపూర్వకము శిఖండి ప్రక్కనుండి నేయకొనుచుండనను, యేటుఘోటు దక్కి సమరంబు మానలేదు. యుద్ధ

వేశమువలన నిటుల చేసినాడేమో ననుకొందము. కాని తనశకభము జ్ఞాపికి రెచ్చుకొనియు దేవతలుచెప్పినను యుద్ధమును వీడలేదు.

“మనమున భీష్ముఁ డిట్లని వితర్కించుఁబాండవుల నాయొక్కవింట న కడంగి

గలువనే వీరికిఁ గృష్ణుండు ప్రాపుగాకున్నేని ననియట్టులుండనిమ్ము కృష్ణుఁ దోడుగఁగొని కీడ్పడి వీరలు వచ్చినఁ జెప్పితి వధవిధంబు సమర ముపేక్షించి కాంతిమై నుండెద నడిచిపాటేటికి ననఁగ నెఱిగి

చదల గురలిట్లు మేలిది సమృతంబు

మాకు నని ప్రితిమైఁ జెప్పుమాట లాతఁ

డొక్కరుండును వినియె నేనొకఁడ వింటి

మునిమహానుభావంబున మనుజునాన” —భీష్మ. 3. ఆ. 3౯౫

ముందుయుద్ధమున “అమృతహృత్తుం దూరకున్నం గలని కొక భంగియై తోఁచుననితలంచి” కపటయుద్ధము చేసినవాడగును. ఇవి మహిమలపుట్టలోనివి. బౌద్ధిత్వమేమో అడుగంటినది. ఇక కాంతనవుండు సముల్లాసంబున చేసినయుద్ధమును జూడుడు:

“ఒక్కవి లెక్కపెట్టంగ నుఱక వెన ?

ఖండి పటుచూర్దణంబులఁ గడఁగి యేయ

నతఁడు మిసిమింతుఁడును గామి కల్ల నవ్వి

పఱపెఁదనయమ్ము లతనిపై ఫల్గునుండు.”—భీష్మ. 3. ఆ. 3౯౭

“.....వెఱఁగుపడి చూచుచుం.....కెలంకులం గలయం గనుంగొని మితండ్రి రారాజుతో నిట్లనియె:

అని దేవాసురకోటికైనను నశక్యం విమృహావీరు మా ర్కొన వీఁడల్లిన మర్త్యులే యొరు రుదారుండైన యాక్రిడి దక్కిన నిష్పాండవసైన్య మింతయును మ్రగ్గింపంగ నేఁజాలుదుక విను సత్యం దిది వీనివింటి కెదురక వి లైత్రతఁ డెవ్వఁడుక.”
—భీష్మ. 3 ఆ. ౪౦౦-౪౦౧

ఇంతకుపూర్వము “పాండవుల నాయొక్క వింటనకడంగి గలువనే కృష్ణుండు ప్రాపుగాకున్నేని” అని కృష్ణమహిమగా వీరాలాపములాడినవా డివుడు “యాక్రిడిదక్కిన” అని దీనాలాపము లాడుట తిలకింపుడు. ఇంతకు పాత్రాచిత్వమైనను గమనింఱక మహిమలు తగిల్చిరి.

“అనునెడ శిఖండిచాపముచెనుకం దనవిల్లు నిర్పి వెన నాతం డే సివభంగిగ నరుఁ డేసెను జననాయక, దొడ్డవారసంబుల భీష్ముక”

“అప్పుడు దేవత్రతుండు దుక్కాసను నాలొకించి,”

“అశనికల్పములివి యర్జునుబాణముతో గాని శిఖండివిగావు నుఱ్ఱు”

—భీష్మ. 3 ఆ. ౪౦౨-౪౦౪

ఇపు డీవితర్క మెందులకో! దుక్కోధనుచే రెప్పించుటకు శివవరమునకు గతి కల్పించుటకు! ఇంతకుపూర్వము శిఖండి బాణములు నేయలేదనియో? నేసినాడు. చదివితిరకదా!

“అనుచుఁ బలుకఁజేసి నప్పార్థునివైచినదియతండుదునుమాడుకాం
తనవుడునాలుం బలకయుఁగొనియరదముడిగ్గఁజూచుకొలఁదింబెలుచక.”

ఏసి యాకంటిఁ దునియలు చేసి యెలుఁగు
నూపి యేనుండ వెఱచేల నాపకాత
నూజఁబొదువుఁడు మీరని యోజఁ జెప్పె
శక్రతనయుండు దనయోధజనులకెల్ల.

అప్పులుకు లాకర్ణించి,

౪౦౩

ఏయుం డడువుఁడు పాడువుఁడు
వ్రేయుఁడునుచు వారు జాహ్ను వీతనయుఁగడుక
దాయుడు మనసైనికులుం
గోయని తలపడ్డఁ జోరు ఘోరంబయ్యెక.

అప్పుడు,

ఏచి గాండివి కురుసేన నెగవ నతని
వారు వెఱవక భీష్ముఁడేరి యుడల
వ్రేలేఁ డెడలేనియట్లుగ వివిధభంగి
నిఘరాస్త్ర శస్త్రంబుల నినిచి రధిప.

అంత నంకుమంతుండు కాంతుండగుచు వచ్చెనట్టియెడం గదిసి కవ్వశి
గాంగేయులైఁ గ్రూరనారాచనికరంబులు నిగిడించి పడంద్రోచిన—

తూర్పుతలగాఁగ నీసుతు లేర్పడ గనుఁగొనుచునుండ నిల గంపింపక
దర్శింజ్జులుఁ గాభీష్ముఁడహర్వతి యస్తాద్రిచేరునట్లుగఁ బడియెక.”

—భీష్మ. ౩ ఆ. ౪౦౫-౪౦౭

పాండవులు భీష్ముని అగర్భయుద్ధములో పడవైచిరి. కావున
పద్మవ్రాహమలో కారవులు అభిమన్యునిగూడ దొమ్మిగా వధించి
నారు. భీష్ముడు వ్యంగ్యోపదేశకుడు, మార్గదర్శకులు పాండవులు,
దుర్యోధను తూలనాడుట పక్షపాతము.

గృప్తద్యుమ్నుడు మృతుండైన ద్రోణుని కంఠంబును దునిమి తన
జన్మను సార్థకము గావించుకొని తనతండ్రి ద్రుపదునిపగను సాధించె
నుగదా! భీష్మ వధించుటకై తపస్సుగావించి శివప్రసాదమున జన్మిం
చిన శిఖండి శివరమను సార్థకము గావించుటకైనను భీష్ముని వధిం
పక ఉత్తరాయణమువరకు బ్రతుకనిచ్చుటయా?

ఇట్లు బొందిలో ప్రాణములుండువరకు బోరి వీరస్వర్గమును
మారగొన్న భీష్ముని మహిమలచే స్వామిద్రోహిగా జేసివైచినారు.
ఇదుగో వేదాకటి చదువుడు:

కర్ణుడు భీష్మునిపై రోషముచే నస్త్రసన్యాసము చేసిన పిమ్మట
కాంతనవుండు దుర్యోధనుతో నిట్లనియె:

“అంతకుఁ బాలఁడె కర్ణం దింతకుమును బాసయిచ్చి యెన్నఁడుబొంకం,
దింతటిమానిసి యధిగిన గాంగేయుల కెట్లు బ్రతుకఁగావచ్చు ననిక.

అని వెండియు నిట్లు నాతనిమాటల కెట్లుఁ గడఁగిధర్మతనయాతో,
నని నేయక తక్కువు నీవనుమానము పాయఁజూచుకనిని నన్నుక.”

—ఉద్యో. ౨ ఆ. ౨౯౧-౨౯౨.

అని శపథము చేసినవాడు తన వధోపాయమును శక్రవులకు
చెప్పినాడనుటకంటె పాపము కలదా! కల్పితగాథలను విడచిన,
భీష్ముడు ఈబాసనాటినుండియు కారవపక్షమున పాటుపడెను.

“.....గాండివి మున్నుగాఁ గనిసినం గౌరవసేన డెరలి మరలినం
జూచి కురురాజు సురనదీనూనుతోడ నీవు గలుగ మనసైన్యంబు
దైన్యంబునొందనగునే యనవుడు రారాజుతో నతండు
మును పదివేపురఁజంపుడు నని యిచ్చినబాసవచ్చె నతనిశ్వర నీ
మనిచిన ఋణంబుఁ దీర్చితివిమ లా నిటమోదఁ దఱుపనిగమైతోఁచెక.”

—భీష్మ. ౩ ఆ. ౩౨౮-౩౨౯

ఇవి ధర్మరాజుతో తొమ్మిదవనాటిరాత్రి రహస్యము చెప్పిన
పిమ్మట చెప్పినమాటలు. ఇట్లు భీష్మ ననుమానించని రాజాజుతో
భీష్ముడు చెప్పట అసత్యబోధము కదా! కాని బలము క్షీణించుట
యథార్థము. భీష్ముడు తన వధోపాయము రహస్యముగ జెప్పినది తెలి
యని ద్రోణుడు అశ్వత్థామను భీష్మునకు సహాయముగా బంపుచు
చెప్పినసాక్ష్యము పరికింపుడు:

“తడఁబడె దివ్యబాణముల తంత్రము మంత్రముఁ దప్పెడుం గడు
న్యడఁకెడుఁజాపదండము మనంబును నాకు వశంబుగాదు నీ
డ్యడియెడు చెయ్యలంగము గడంక దొఱంగడు నేఁటిభంగి క
వ్వడి తనవ్రాన్కి దీర్చుట ధ్రువంబని బుద్ధి జనించె బుత్రకా!”

—భీష్మ. ౩ ఆ. ౩౫౦

భీష్ముడు విశేషించి బాస నుల్లేఖించి యుండెను. నమ్మకుండు
తెట్టు? లావు తరిగిన వృద్ధుడయినను కూరుడు, స్వామి భక్తి పరా
యణుడుగాన

“నేఁటిభంగిమాడన్యపవర పాండవులొండె నన్ను వారిసొండె నేను
సమయఁజేతగలుగునను సెదరేయొకమర్త్యచేతవారమర్త్యబలులు!”

—భీష్మ. ౩ ఆ. ౩౩౦

ఇచట తాను మానవుడననియే నిరూపించెను.

“ఐనను నాచేతిబలువు నూడుమీయని పరికి పెచ్చి పటుతరళ
రార్చులం...బొదివి పాండవులకుం దేరిమాడరాక వారిం బడలువడ
జేయ దొడంగిన!”

—భీష్మ. ౩ ఆ. ౩౩౧

బలహీనుడైనను బాసతప్పనికూరుడు, చూడుడు.

“ఏనునా చాలెడికొలంది నెప్పెడఁ దక్కటివారు తమతమ
చాలుటలు దారచెప్పెద రదియెల్లను బిదప విందుగాని మున్ను నీ
కొక్కబాస యిచ్చెద నాకర్ణింపుడు:

“మోటుగల రాజరథికుల నాఁటికి వేపుర వధింతు నరుళరములనో
నాఁటి వడచైచునంతకు నేటాడెదఁ బ్రతిబలుంబు వీరులెల్లక.”

“అట్లు నాకయ్యంబు నేయు దివసంబులలోన
“పదివేలఁ జంపఁగానోవుదు నే నని నెత్తికోలు వుట్టినయది నీ
పరుసొక యక్షహిణులను జనురుననడపింతు నెదిరి నైనయగులఁతుకొ

.....

నీవడిగనపని యేర్పడఁగా విను మేనొక్కనెలఁ చెగంజేయును నా
నావిధ దివ్యాస్త్రంబుల లావున నప్పొండవుల బలంబుల నెల్లఁ.”
—ఉద్యో. ౪ ఆ. ౪౧౧-౪౧౬.

ఈశపథములలో ఒక్కనెల తెగంజేయుదునని చెప్పినది
పూర్ణము కాలేదు. తాను తనశక్తిని ఉజ్జాయింపుగ చెప్పెను. మాన
వుడుగాన మధ్యనే మృశ్యువు సంభవించినది.

“ఏను ముదిసినవాడ మహేశ, యెట్టులయిన నోపినభంగి నీయనుఁగఁవాత
సాలినన్ని దినంబులఁ జాలవచ్చు నెబ్బలంబులనని సమయంగఁజేయ.”
—ఉద్యో. ౪. ఆ. ౪౧౮

ఇట్టివాడు స్వామిద్రోహిమా ?

ఇట్లుగాక ధర్మరాజాదులకు తన వహోపాయము చెప్పినది
వాస్తవమని తలంచునవల ఒక్కనెల తీరినపిమ్మటనే చెప్పి తన శపథ
మును నెరవేర్చుకొనియే యుండును.

భీష్ముడు కారవపక్షమున కెంతటివిశ్వాసియో అవధరింపుడు.

కర్ణుడు భీష్మునిపై రోషముచేత నస్త్రసన్యాసము చేసినపిదప

“.....దుర్యోధనుండు గర్జపక్షపాతియు ననినీశుండును నగుటం
జేసి సహింపక పితామహుతో నిట్లనియె:

“ఎఱిగియెఱింగియొండె మది నేడియెఱుంగకయొండె నెత్తు నం
దఱు వినఁ బాండునందనులు దర్పికులై యని గెల్తురండ్రు ముం
దఱు నినుబాష్టికుకొ గురునిఁకక్కటివారిని నమ్మి యొక్కయే
డైజ నని నేయఁబూనితిఁగఁసిందిమగంటిమతోడఁ జాలదే!

“కర్ణుడు దుస్సునేనుఁడును గల్గఁగ నాకొరులేల సదృటా
క్తిర్ణవిరోధి నైనయల గల్వఁగఁజాలదు మేము మాకు నీ
యర్ణవప్తితక్షితి యనగళవిక్రమమొప్పు దక్కుచు
నిర్ణయమెల్ల నిట్టి దవినీతియొ నీతియొ చూచుమీ తుదికొ.

“అనుపలకులకు విషాదము దనుకఁగధృతరాష్ట్రవిభుఁడు దననందను నే
మనియుంబలుకఁగఁజాలక వెనుఁబాటుననిట్టులనియొవిదురునితోడకొ.”
—ఉద్యో. ౨ ఆ. ౨౯౩-౬

తిట్టులు బడియు వారి నాశ్రయించియుండుటయే భీష్ముడు
స్వామిభక్తిని ప్రకటించెను. నిజముగా వీరు పాండవపక్షపాతులైన
ఇతరులు యాధ్యప్రయత్నము చేయుపాండవులలో చేరిన వారు పాపిం
చెదరుగాదా!

ధృతరాష్ట్రుడు భీమనేనాదుల పరాక్రమము దలంచి దుఃఖిం
చుచు సంజయునితో భీష్ముడులయందు చూపి చెప్పిన స్వారిభక్తి
మాడుదు :

“భీమార్జునుల కొలందులు భీష్మద్రోణు రెఱుంగునంతకంటె
నెక్కు రెఱుంగుమరు. ఎఱింగియు మానుమంబు పాటించి నేనఱుగం
బున నిలుతురు. కీర్తి వట్టిప్రాణంబులు విడుతురు. ఇంతియకాని
చేయునదిలే దదియునుంగాక పాత్రులగుటయు శిష్యులగుటయు
గాంగేయునకు గురునకు సామాన్యంబగుటంజేసి రెండుఁజెంతులవారికి వీ
రొక్కరూప మనకడనున్నతప్పనకు మనముండర నిలువవలయుననుచు
నుండుదురు. ఇంతమాత్రకుం గావీరల కింతవలసె నేను దైవాధీనతకతం
బున బిడ్డల నొత్తిచెప్పను నియమింపనుంజాల.”—ఉద్యో. ౨ ఆ. ౧౯౮

కాని యుద్ధమునకు పూర్వము రాయబారములలో భీష్ములు
పాండవపక్షమున మాటలాడి యుద్ధము లేకపోవునటుల చేయుటకు
ప్రయత్నించి విఫలమైరి. పిమ్మట కారవపక్షమున శక్తివంచన లేక
పాటుపడినయోధులు కావుననే,

శరతల్పుగతుడగు భీష్ముడు (శస్త్రసన్యాసముచేసిన) కర్ణునితో
“ఒక్కకరంబు మలంచి కౌగలించుకొని యచ్చటనున్న రత్నకాదిజనం
బుల నవలం బోరంబనిచి యతనితో నిట్లనియె:

“నీ దెసఁ గోపింతునె కుల భేదముగాఁ బలుకుటయును బిడ్డలఁ జెఱుపం
గాదని కినియుదు లేదన.....

“అది శిక్షగాని రోషంబుగాదట్లుంగాక”—భీష్మ. ౩ఆ. ౪౪౦-౨

“.....ఏను గురుపాండవుల వైరం బుడిపి పుచ్చితి నీవును
నొండు తలంపు దక్కి యక్కాం లేయులం గలసియుండు మనినం
గర్హం డతని కిట్లనియె.” భీష్మ. ౩ ఆ. ౪౪౪

“దైవాధీనము సర్వముకొ మనమతిం దప్పింపఁగా వచ్చునే
నీ వింకకొ నను నొండుపల్లక పరానీకంబునైఁ బంపు ము
జ్ఞేవాధర్మము నిర్వహించెద బలోత్సేకంబు లోకంబు సం
భావింపకొవిహరించెదమరరిపుంబాధుండలంకించెదకొ.”—౪౪౫

స్వామిభక్తి ఇట్లుండవలదా !

“అనుటయు భీష్ముఁ డిట్టులను నంతకుఁ జాలుఁజెఱుంగనే సుయో
ధనునకు నెత్తు నీదుభుజదర్పము కాదె సహాయ మెద్ది యా
తనికి హితంబు దానిన యుదాత్తమతిం దగ నాచరింపు నీ
మనమున సంతసింపు మనుమానము దక్కు మనుజ్ఞ ఇచ్చితికొ”—౪౪౦

భీష్ముడు తనచావునకు వెరచి కర్ణుడు పాండవుల కలియు
నేమో యని పరీక్షింపదలచి పాండవపక్షముగా బలికెను. కర్ణునిర్ణ
యము వినినపిమ్మట “అనుమానము దక్కు మనుజ్ఞ ఇచ్చితికొ” అని
చెప్పటలో తన చావునకు శస్త్రసన్యాసము చేసిన శత్రువగుకర్ణుని
యెటుల గౌరవించెనో తన జీవితపరమార్థము నేమనిచెప్పెనో చిత్తగిం

పుడు, దుర్మోధుని హితము కోరనివాడైన “గురుపాండవులవైరం బుడి పినవాడు” చావుతరువాతను పక్షపాతమహాపాతకమునకు పాల్పడువా? సామాన్యుని మరణవాఙ్మూలము విలువగలసాధన మగుచుండ పూజ్యుని యొడ భిన్నాభిప్రాయ మెందులకు? ధర్మరాజు పాదచారియై భీష్ముని యొద్దకు వచ్చినపుడు

“...అక్కట నీవిట్లు సనుడేక తక్కిన కాపమిత్తు,
వచ్చితి మేలయ్యెవైరుల నిర్జింపు, మిదిగాకయును వర మెద్దియైన
నడుగుము నీకుఁగానని చేయుటాక్కటి దక్కంగ” —భీ.౧౨.౧౫౮

కాపాధికారియగు భీష్ముడు తన చావుకోరిన కర్ణుని ఇప్పుడైనను శపించక “ఆతనికి హితంబు దానిన యుదాత్తమతిం దగ నాచరింపు” మనుటలో వారి స్వామిభక్తి విశదముటలేదా?

ధృతరాష్ట్రుడు ఆశ్రమవాసమున కరుగుటకు పౌరసమ్యుతికోర కంభువను విప్రుడు పౌరజనసమ్యుతి నిటుల నుపన్యసించెను. ప్రజా ప్రభుత్వసాత్మ్యము పరమప్రమాణముగదా!

“ధాత్రి శంతనుఁడు విచిత్రపీఠ్యుఁడు బాండు
రాజు నెట్టు లట్లు రాజరాజు
ప్రజకు సంతసముగఁ బాలించె నీయందు
నతనియందుఁగలదె యధిప యెఱ్ఱ?” —ఆశ్రమ ౧ ఆ. ౧౦౦

కావుననే వీరిని భీష్మాదులు విడువజాలక యుద్ధకారకులైరి. ఇంకను చూడుడు:

“భీష్మద్రోణకృపద్రాణి కర్ణకృతవర్మశల్యు లొక్కదిక్కునుభీమా
ర్జునకులసహచేద ద్రుపదసాత్యకు లొక్క దెసయునై విధిపేరణంబునఁ
బోరిరి వారివలన నఖిలక్షత్రియ సంత్యయంబావహిలై నది యొక్క
దుర్మోధున నిచేతనే యయ్యెనే.....” —ఆశ్రమ ౧ ఆ. ౧౦౧

భీష్మద్రోణాదులు యుద్ధమునకు పూనక బలరామునివలె తీర్థ యాత్రకు వెళ్లిన భాతతయ్యుద్ధమే జరిగియుండదని పౌరులసాత్మ్యము గాదా!

ఇక వరముల ప్రాతిహేయమును సంగ్రహముగ చర్చించెదము.
“యువరాజగు గాంగేయునకు తండ్రి కాంతనవుడు అతిమాను
షులైన యాభీష్మసత్యవ్రతంబునకు సంతసిల్లి యాతనికి స్వచ్ఛంద
మరణంబుగా వరమిచ్చెను.” —ఆచి ౪ ఆ. ౧౮౧

ఇది యోగసాధనోపదేశముగా నుండును. దీనికి విరుద్ధముగ దక్షిణాయనమున భీష్ముడు మృతుడగునని అనిమిషులు వగబొందు చుండ వారిలో తనతండ్రి ఇచ్చినవరమును చెప్పుచు భీష్ముడు “అవ ధ్యత్వమును” కలిపి చెప్పెను. చూడుడు:

“సత్యవతివివాహం బొనర్చుటకు మాతండ్రిమెచ్చి, అవధ్యత్వంబును,
స్వచ్ఛందమరణంబును నిచ్చినవాఁడు గావున తద్వరప్రభావంబున

నావధంబున కేనోడంబడక కానేరదయ్యె ప్రాణంబులు నావ శంబ.....” —భీష్మ. ౩ ఆ. ౪౧౫

ఈ వరములకు ప్రతిహేయము కలదు. యోచింపుడు:
అంబ శివునికోరినది:—

“భీష్ముని నాకుఁ జంపఁగా దొరకొనునట్లుగ నొసఁగము.” —ఉద్యో. ౪ ఆ. ౩౭౧

శివుని ద్రుపదుడు ప్రార్థించినది:
“భీష్ముని వధించునట్టివాని నొక్కపుత్రుని నొసంగవలయు.” —ఉద్యో. ౪ ఆ. ౩౭౪

ప్రత్యక్షమై “మాకురై పుట్టి పదపడి కొడుకుదనము గాంచి భీష్ముని నాజిరంగమునఁ జంపు” నని రుద్రుండు చెప్పించనియె. అవ ధ్యత్వమునకు ప్రతిహేయముగా చంపుధాతువు ప్రయోగింపబడినది. ఇది ఇటులుండ నవమదివసమున ధర్మరాజుకృష్ణాదులు రహస్యప్రకారంబున భీష్మునియొద్దకు బోయి వధోపాయము శిఖండియని వారిచే చెప్పించు కొనినపిమ్మటగూడ కృష్ణుడు అర్జునునితో నిట్లు పలికెను:

“నినువిధిపంచె కాంతనవునిం దెగటార్చుఁగ వేయు నేటికికా.” —భీష్మ. ౩ ఆ. ౩౦౯.

అర్జునుడు శివవరము నిట్లు జ్ఞప్తి చేసెను.

“.....ఆద్రుపదాత్మజాజన్మ మాపగా
తనయ వహార్థమం ద్రదియుఁ దప్పదు.....

“అనవుడు నవ్వి కవ్యడికిం గమలనాభుం డిట్లనియె.

“నీ వొకరుండు దక్కగ ననింద్య పరాక్రమశాలి భీష్మునిం జావఁగనేయ నెవ్వఁడును జాలఁడు నీతలఁ పెన్నిభంగులకా దై వము చూపునోలెఁ దుది దాఁకునె యవిధ మిట్టులుండఁగాఁ ద్రోవఁగవచ్చు నే యెటులుఁ ద్రోచినఁబోవదు చూచుచుండుమీ!” —భీష్మ. ౩ ఆ. ౩౧౦-౩౧౨

శివుడు శిఖండిజన్మోత్పత్తికిగా నిచ్చిన వరమును కృష్ణుడు త్రోచివైచెను. శైవవైష్ణవ మతవిరోధమున కాబోలు!

మరియు దీనినే సమర్థించుట పరికింపుడు.

తొడలు విరిగిపడిన దుర్మోధునుడు కృష్ణు నాత్మేపించునప్పుడు కాంతేయులు వగ బొందుచుండగా వెన్నుండు వారిలో నిట్లనియె:

“గాంగేయగురుకర్ణకారవపతులజక్కటియని బరిమార్చఁగాన నైతి మని మీరునగవకుఁ డద్దొర లుగ్రాస్త్రుచేదులుప్రస్ఫుటవిక్రమమున నడరి వారలఁగెల్పు టరిదిగావుననేను బహువిధోపాయముతో వన్ని యిటులఁ దీర్చితిఁగాక య త్రిత్రపరాక్రములఁకులఁ బోదుకేయట్లు కాక, వారివిధి యవిధమునఁజావంగఁజేసె. దై వభుటనలు దప్పింప

మీవశంఠే, సురలు దనుజుల గల్పివచ్చొప్పు లిట్లు - సంతసమునకు
బున వంతలే? " —కల్య. ౨ ఆ. ౩౩౧

ఈ యూరడించుటయే యథార్థకథనము. దీనినే కర్ణుడుగూడ
సంగీకరించెను.

"వారు మహాబలతో హరియు వారికిఁ బ్రాపు గలందు వారలం
బోర జయింప రామియును బుద్ధి నెఱుంగును నై నఁ గౌరవ
క్షౌరములుండు సేయు తగు మన్ననలెల్లఁ దలంచి చూచినఁ
ఘోరివివేక యే విడిదిపావులు ధర్మమే పీఠకర్మమే" —భీ. ౩ ఆ. ౪౪౬

భీష్మద్రోణులు గూడ నిదే అభిప్రాయముతో బొందిలో
ప్రాణము లుండవరకు పోరిగతిందిరి. ద్రోణుడు తన వధోపాయ
మును పాండవులకు చెప్పినటుల భావించుట తప్పు. ఒకవేళ వధోపా
యము చెప్పుట యథార్థమని తలంచినవారును ప్రతిజ్ఞపాలనమును
గావింపలేదని మరియొకమారు విన్నవించెనను.

కరతల్పగుడున భీష్ముడు ఉత్తరాయణమువరకు బ్రతికెనా,
లేదా యని విచారించి ముగింతము.

"అత్రేణంగాచరింప(దృఢరత్న)తాత్పర్యంబున రక్షింపను దను
తమ(కురుపాండవుల)యందుందగినవారల నియోగించి రంతఃజికిత్సకులు
వచ్చి కల్పదికిత్స చేసెదమని తోడంగిన గాంగేయుండు వారింది వారి
కభిమతార్థము లొసంగి వీడ్కోలిపె గీతవాద్యనృతప్రవీణంబులగు
పాత్రంబు లామహాత్ములకు వినోదంబు సల్పుచుండె." —భీ. ౩ ఆ. ౪౨౫

దీనిచే జీవితాశలేక భీష్ముడు కల్పదికిత్సను నివారించెనని
ఊహించవలెను. ఇది ప్రపంచధర్మము. "మర్త్యుచేత" అని తానేచెప్పు
కొనెను. ఇంకను "కారవేశ్యరుండు కోపాయ త్రచిత్తుండై పిటుండు
మోవ లేచి చేతుల భూతలం బూడికొని (తోడలువిరిగి) బొమముడి
తోడి చూడ్కి అతనిపయిం బూపి... అగ్గోపాలదేవుతో నిట్లనియె:

"...శిఖిడి గడంగి యేసె ననఁగ, నర్జునుండు కాంతనవుఁ గూల్చు
నట్లుచేసె." —కల్య. ౨ ఆ. ౩౨౫

అనుటచేతగూడ శిఖిడి భీష్ముని వధించలేదనియు శివవరము
వర్ణనమైనదనియు దృఢమైనది.

"అక్ష్మాంలేయులు దారు ధర్మంబు దోహంఁగి ద్రోణ కర్ణ కల్ప
దుర్యోధనాదుల వధించుటకు... జిత్రంబుల వ్యయంబు లజ్ఞయ
మిగులఁ బోడమి మొగంబులదోప విన్న"నైరి. దీనిచే భీష్మాదులు మృతి
చెందినటుల వాచ్యముగా కాన్పించుచున్నది. కాని తోడలు విరిగిన
దుర్యోధనునివలె భీష్ముడు బ్రతికియుండునా అని సంశయ మొదవు
చున్నది.

దుర్యోధనుడు కృష్ణునితో,

"చదివిరి కల్పవేదములుజన్మము లొప్పుగఁ జేసితికొరమా
స్వదనుగువృత్తిబోల్పి నరపాలకులెల్లను గొల్వగంటి దు

ర్మదరిపుగాఢ గర్వపరిమర్దనకేళి యొనర్పితిం దగన్
దుది నని మిత్రబాంధవులతోఁ దిలంబున కేగు టొప్పుడే." —

"నీకుం బాడనెట్టివాడనైనను నాకేమి మిరింకఁ బశ్చాత్తాప
దుఃఖితు లగుచునుండుదురు గాక యనియె నప్పు డతనిపైఁ బుష్పవర్షం
బులుగురిసె దేవ దుందుభులు మొరనె." —కల్య. ౨ ఆ. ౩౨౯-౩౩౦

ఇవి ఆసన్నమరణవాక్యములు. భీష్ముడు దుర్యోధనునకు
పూర్వమే మరణించియుండును. భీష్ముడు యోగవిధానముచే
బాధకు తాళబాలక నసువులు బాసెనుగాన స్వచ్ఛందమరణమే
యనవలయును. ఇది ఇంకము పరిశోధింపదగినవిషయము. నృత్యగీత
వాద్యములచే బాధోపశమనము చేసికొనుభీష్ముడు ధర్మోపదేశముల
నెటులచేసెను? కల్పదికిత్సకు సంగీకరింపకుండుట జీవితాశ లేకయే.
కాకపోయిన చికిత్సకుల నివారించినటుల నృత్యగీతాదుల పరిహా
రించి, చికిత్సకులకు, నటకులకు, విదురాదులకు ధర్మోపదేశములు
జేయవలసినది. యుద్ధములో మునిగి లేలుచున్న కృష్ణుడులకు ఉపదేశిం
చినగాని ఫలము లేదని అట్లు చేయలేదుకాబోలు. ద్రుపదునిపగ
దీర్చుటకైనను శిఖిడి భీష్మునితల నరుకకపోవుట ఆజ్ఞాభంగము.
తమ్ముడగు ధృష్టద్యుమ్నుడు వచ్చినద్రోణుని శిరమును ఖండించి
సార్థక నామధేయు డయ్యెను. అన్న చెనుకబడెను.

వారితండ్రి స్వచ్ఛందమరణమునేకాని అవధ్యత్వము ప్రసా
దించలేదు. కాంతిపర్వధర్మములు భీష్మజీవితములోనివని మనము
వాని నాదరించుట భీష్ముని పూజించుట. దివ్యుడగు భీష్ముడు స్వామి
ద్రోహి. మానుషభీష్ముడు సర్వోత్తముడు.

ధర్మజాదులు సముద్యోత నానాయాధుహుళంబైన కురువృత్తి
వాము దరిసి భీష్మాదుల మరణోపాయము లడుగుట ఎట్లు? భీష్మ
ద్రోణుల వధోపాయమును సిగ్గులేక అడిగిన ధర్మజానకు, కృపాచార్యు
నడుగుటకు మరల సిగ్గుండులకు?

"...కృపాచార్యునిఁ బరిమార్చుతెఱుంగ నడుగందలంచి యేర్పడం
బులుకేరకున్న నతం డెఱింగి తానువధ్యుండుగామి యెఱిగించి గలు
వుమని దీవించె." —భీష్మ. ౧ ఆ. ౧౬౨

"ఇట్టిట్లన కేగు మిప్పురుస యంతకుఁ గాలముగాదు దానికె." —
—భీష్మ. ౧ ఆ. ౧౬౦

అని భీష్ముడు మందలించెను. కాని ద్రోణుడు,

"...నాచేత నాయాధం బున్నంతనేపు నన్నుం జంప నెట్టివారికి
నశక్యంబేమ బ్రాయోపవేశంబున సస్యక్షత్రుండ నైనం జంతుటకు
నోపునట్టివారికి నదిదొరకొనుఁబెద్దయు నమ్మంగలవాఁడు సెప్పనత్యంత
దుస్సహంబైన కీడుమాట వింటినేని నట్టివాడ నగుదు నప్పు డట్టిపగ
అకు నప్పనిఁ దీర్చననునై యుండు." —భీష్మ. ౧ ఆ. ౧౬౩

ఇంత దండకమును చదివివైచెను. కాని ప్రతిజ్ఞపాలనము
గావింపలేదు. ఇంతమాత్రము చైత్రము లేకకాబోలు! "క్రమ్యుర

నేతెంచెడుగాక" యని అజ్ఞాపించి భీష్ముడు ధర్మజాదులను పంపి వైచెను. భీష్ముడు పదియవనాటియుద్ధమున ధర్మరాజును సమీపించు నపుడు "కయ్యముచేయుచందమున", "కదియుట", "అల్లన" మొదలగు విశేషణములతో కూడి స్వాభావికముగా నున్నది. ఇచ్చటసందర్భ కూన్యముగా నున్నది. పదియవనాడు ధర్మరాజునితో భీష్ముడు వ్యంగ్యముగా జెప్పిన వధోపాయముపై నీకల్పితగాథ లేర్పడినవని దృఢముగా జెప్పవచ్చును. ఆచార్యుల కందరకు వర్తింపజేసిరి.

ధర్మరాజు పాదచారియై ఒంటిబోవునపుడు బహునాభుండు మరుత్తనయాదులతో నిట్లనియె:

"ఇతని (ధర్మరాజుని) తలం పే నెఱింగితి నితండు భీష్మద్రోణ కృపకల్యణులకు నమస్కరించి వారలచేత ననుజ్ఞాతుండై భండనంబు నేయువాడుగాడలంచి చనియెడు జెద్దలయనుజ్ఞ గొని కయ్యంబుచేసిన జయంబగుట నిశ్చయంబని యార్యులు చెప్పుదురు గావున నాసుకర్మంబాచరించుట మేలుకాక"

—భీష్మ. ౧ ఆ. ౧౫౬

ఆచార్యులవధోపాయ మడుగుటకు ధర్మరాజు పాదచారియై బోవుటయే సత్యమగునెడ సర్వజ్ఞుడగు కృష్ణుడుకూడ పారబహిరవాడగును. నమస్కరించుటకె అయిన సర్వజ్ఞుడగును. సత్య మింతియె. యుద్ధికథాబీజమును వృక్షము చేసిరి. కాని ఫలించక గొడ్డుపారినది.

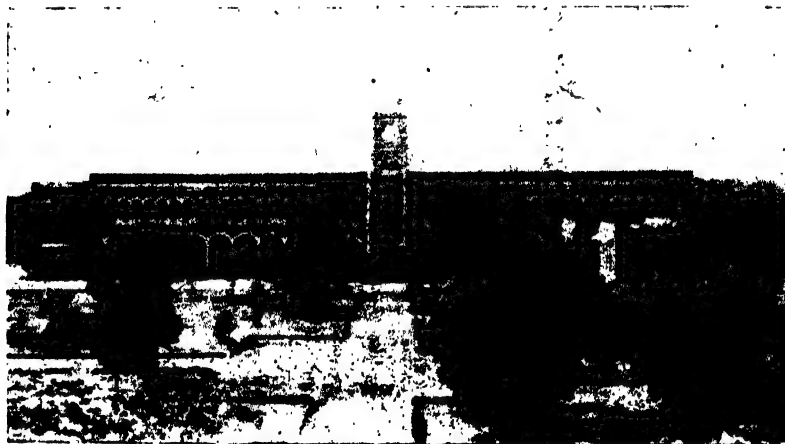
కాన భీష్ముడు స్వామిద్రోహము చేయక శరీరమునుదాచక 'త్రేతా దెడలేని' యట్లు గాయపడెను. కర్ణునకు "ఆతనికి (స్వామి యగురాజునకు) హితంబు దానిన యుద్ధాత్మమతిం దగనాచరింపు" మని ప్రోత్సాహము గలిగించిన స్వామిహితైషి. ఒకవేళ ధర్మరాజునకు వధోపాయము యుద్ధములో చెప్పినాడనుకొనినను స్వామిభక్తిపరుడు గాన "నేబట్టినఅయుధంబు నెడబాసినగాని వధింపబోలడు." అను ప్రతిజ్ఞను తిరస్కరించివైచి బొందిలో ప్రాణము లుండువరకు యుద్ధము చేసినవీరుడు. దుశ్శోధనుడు, ధృతరాష్ట్రుడు వీరిని నమ్మిరి. కాన కీర్తిబట్టి ప్రాణంబులు విడచిరి. ధర్మరాజు యుద్ధములో భీష్ముడు వ్యంగార్థముగ చెప్పిన అధర్మయుద్ధమునకు అర్జునాదుల ప్రోత్సహించి భీష్మ బడిచైచునటుల జేసి, "ధర్మనూతి మెత్తనిపులి" యని కవిబ్రహ్మచే సత్కరింపబడినాడేకాని, అడుగులో హంసపాది యనునట్లు ఆచార్యులవధోపాయము నడిగినపాపమున బోయి 'గండు పులి' కాలేదు. మరియు,

"...సాదు కేగనేని నివ్విమ తలపాలమునన కాని నిలువదు సుమ్మి"

—ఉద్యో. ౨ ఆ. ౧౩

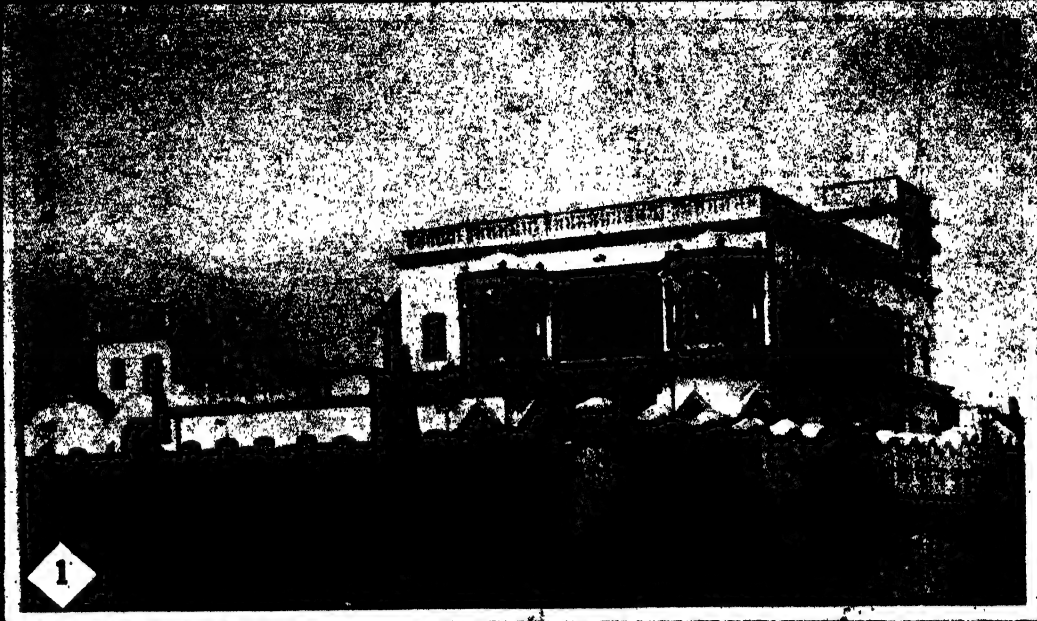
సామెతకు పాత్రీధూతు డైనాడు

"దేవత్యము రాగ ద్వేషావేశము లేమిగాదె!"



అటవీ (ఫారెస్టు) కళాశాల, కోయంబుత్తూరు

—యస్. వి. నాగ్గి కుందరము.



1. హాగేర్లరావుగారి దుర్గావలసము, బెజవాడ-మహాకృష్ణ నివాసమందిరము. తిమ్మదేవరాయలసారమునకు దండట
మహాకృష్ణ పంచులగారి అతిథిగమందిరి. 2. చెన్నపురిలో శ్రీ హాగేర్లరావుగారి శ్రీ భావనం వత్సరాది నందిక



1. బందరు జాతీయకళాకాలరాి కృష్ణజిల్లాబోర్డు అధ్యక్షులు చల్లపల్లిరాజాగారు మహాత్మానకు సమ్మానపత్రమును సమర్పించుట.

అం. శ్రీ వ శ్రీ క - భావ సంపత్న రా దీ సం చి క - ప్ర క ట న లు

దీ నార్తరక ఇండియా ఇన్ షూరెన్సు కంపెనీ లిమిటెడ్, లాహోరు.

Our "All in one Policy"

మా "సర్వసంయుక్త"
భీమావలన

అదనపువారి యేమియు శత్రుం
డగనే మీకు ఇతర కంపెనీల
ప్రాండ్ల కంట్రాక్టుకంటే ద్వీస
తీత తీసుకొని ఫలములు పొందు
మార్పును.



సహజమైన మరణము రు. 5,000
ఆకస్మిక మరణములు రు. 10,000
కొన్ని ఆకస్మిక మరణములు రు. 15,000

కాశ్వతముగా ఆకస్మికమున ప్రీమియము చెల్లింప నక్కరలేదు. స్త్రీలును భీమాచేయవచ్చును.

పోషకులు:—హిస్ హైనస్ ది రాజాబహదూర్ ఆఫ్ మాండి

కర్నాట్ సి. ఆర్. బక్ష్, బి. యం. యస్. (రిటైర్డ్) అధ్యక్షులు.

ఇన్ షూరు చేయించుకొనువారి కిది గొప్ప యవకాశము

ఏ జెంటుకు పంచకవిషాక్ యివ్వబడును. వివరములకు క్రింది విలాసమునకు వ్రాయుడు.

గురు రాజా అండు కో.

తిరువల్లి క్లెయిం.

మదరాసు రాజధానికి, భారతసంస్థానములకు చీఫ్ ఏజెంటు

మదరాసు.

G. S.

ధనము తక్కువ వ్యయముచేయుము. అదియును వివేకముగా. మీరు మీ
దుస్తులకు ధనవ్యయముచేయునపుడు, స్వదేశిలో శ్రేష్ఠమైన దుస్తులు వివేక
ములనుండి దిగుమతిచేయుబడుచున్న దుస్తులకంటే చాల తక్కువ ఖరీదగును.

స్వదేశి దుస్తులు దొరకు స్థలము:

THE GENERAL SWADESHIS Ltd.,
Opposite High Court, Madras.

G. S.

సూక్ష్మములో మోక్షము!

ఐహికముష్టిక సాధనము!!

ముఖ్యముగ గమనింపవలసిన విషయము.

బ్రతికియున్నంతకాలము కాయకష్టము జెంది, ఆలుబిడ్డలను ఎటులో పోషించుచు, మరణానంతరము వారిని దిక్కుమాలిన నారినిగా నొనర్చిన మంచిభాగ్యులెందరులేరు? కావున ముందుగానే జాగ్రత్తపడి, సూక్ష్మములో మోక్షమునునట్లు, అతిస్వల్ప వ్యయముతో శీఘ్రము భీమాచేసికొని, గడువువరకు జీవించియున్నచో నిశ్చయము మీరే సౌఖ్యమునుభవించిగాని, లేనిచో మీదారప్రతాదులకు శీఘ్రాధారము కల్పించిన చిత్రశాంతిలో నిర్విఘారమున స్కూలై ఆముష్మికముగ సౌఖ్యమొందిగాని, జన్మము సార్థకమొనర్చుకొనుట ముఖ్యవసరము. దీక్షులపాలిటి కల్పవృక్షమై, దినదినాభివృద్ధి గాంచుచున్న స్వదేశి భీమాసంస్థ

జయ్ భారత్ యిన్నూరెన్ను కంపెనీ లి మి టే డ్,

4/105 ఆర్ట్స్ నియన్ పీథి, మద్రాసు.

ఆంధ్ర దేశీయులు గర్వింపదగిన భీమాసంస్థ.

గవర్న మెంటు సెక్యూరిటీలు

చెల్లించిన క్లెయిములు

రు. 1,20,000 లు.

రు. 2,61,000 లు.

“జయ్ భారత్” పాలిసి ప్రతివారి యందుబాటులో నున్నది.

రేపనుమాట ఆలస్యమునకు కారణము. కావున నేడే ఒక పాలిసీ తీసికొనుము.

మా ప్రత్యేక లక్షణములలో కొన్ని.

1. రు. 250/-లకుకూడ వైద్యరీక్షతోను, లేకను, భీమా చేయబట్టెను.
2. ప్రీమియములు మిక్కిలి స్వల్పము.
3. ప్రమాదముల బాధ్యతైకొనబడును.
4. పాలిసీలు రద్దుకాని సౌకర్యములు.
5. శాశ్వత దౌర్బల్య సౌకర్యములు.
6. ధారాశ్రమైన “సరెండర్” విలువలు.
7. ప్రీమియ జీవితములు అంగీకరింపబడును.
8. పాలిసీలమీద ఋణములు మంజూరు చేయబడును.

కావలెను!

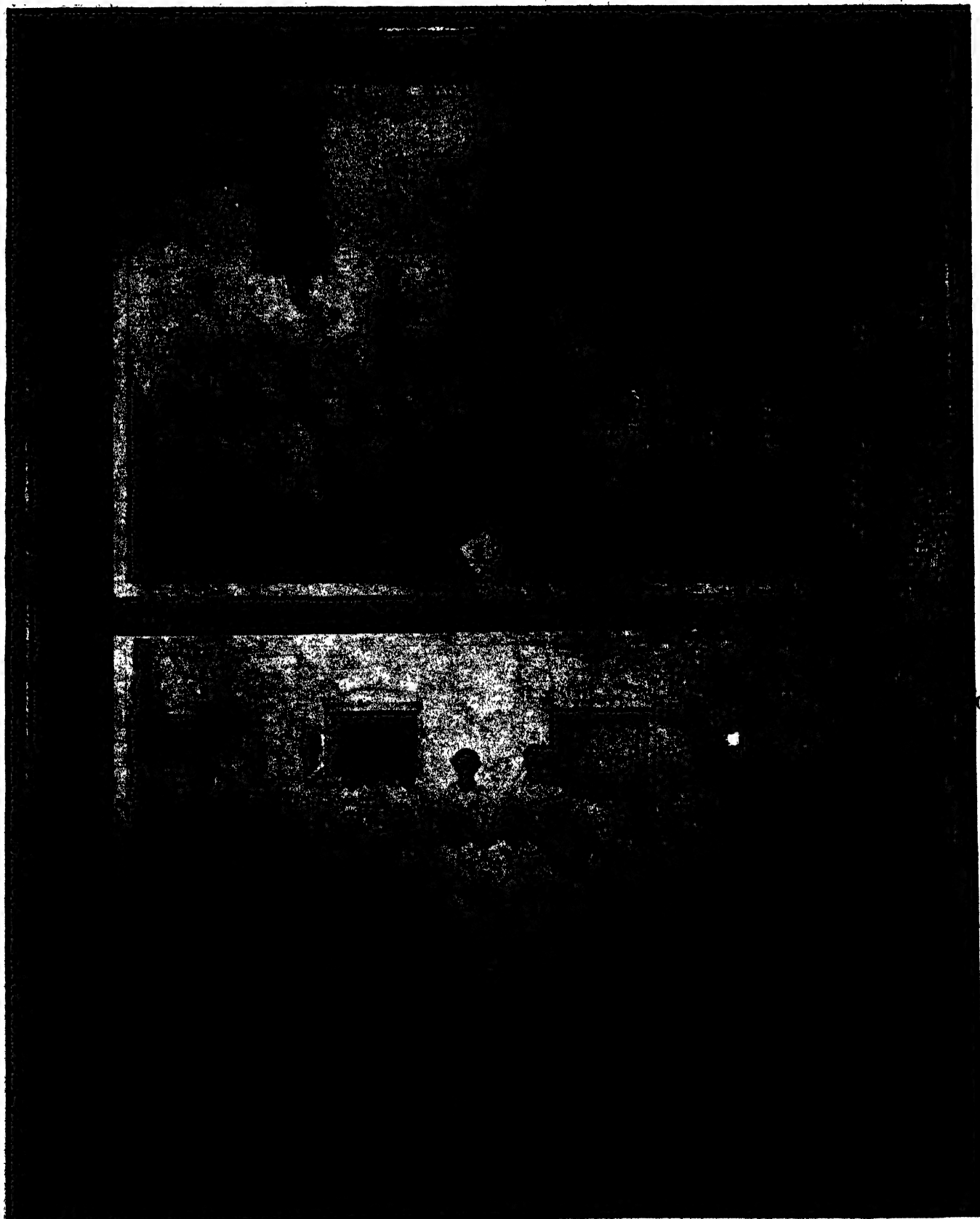
సభ్యులైన మరతులమీది, పలుకుబడి, గౌరవముకలిగిన ప్రతినిధులు కావలెను.

చివరములకై సడచేసి వ్రాయుడు.

జై భారత్ యిన్నూరెన్ను కంపెనీ లిమిటెడ్.

4/105 ఆర్ట్స్ నియన్ పీథి, మద్రాసు.

అంశ్రుపత్రిక - భావ సంపత్సరాది సంచిక







ప్రార్థన

పానుగంటి విజయరాఘవరావు

మహాత్ముని ఉపవాసాంతమున

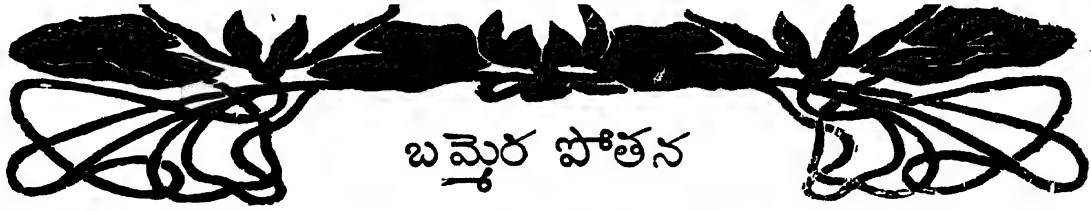
అతఁడు ప్రకృతిలో నొకతున్నయాతఁ

డాడు

పలుకు మాలలనిట్టూర్పు పడెడుపాటు
లగ్రజాతుల కుద్బోధ లతనిచేష్ట
లధికవిజ్ఞానపథమున కమరుమెట్టు
లతని స్వేదాంబువులు మాల లకట! కనుల
నింపు నిర్మలహృదయరక్తంపు బొట్లు.
ఒకని దోషము తనదని యొప్పుకొన్న
వాఁడు, మాలలే లేరన్నవాఁడు, దేహ
మాతృబానిసయని చూపినట్టివాఁడు,
పరమపూజ్యాతిపూజ్యాఁడు భరతమాత
కడుపుచలువచే మన భాగ్యగరిమచేత
సత్యపాలకుఁ డా రామచంద్రు కరుణ
దారుణోపవాసపితాచి నోరినుండి
కీడుఁబూరయక వెలిఁబడినాఁడు నేఁడు.
కామధేనువ, పాలిచ్చి కాపుమమ్మ!
కల్పవృక్షమ ఫలమిచ్చి కాపుమమ్మ
హిందువుల పుణ్యధనమగు నితని సతము.

పుట్టినరోజున

గడ్డిపూవుల కనువిష్వ కళుకుమొదలు
తారకల కన్నుగీటుల తళుకువలకు
మొదలు తుద లేక నివసించు ముసలియువతి,
అఖిలలోకేశు ప్రతిబింబమైన యువతి
ప్రకృతికన్య మహాత్ముడైఁ బరమకరుణ
పులకరించెడి చూపులఁ జిలుకుఁగాక
ఒక్కనూతేండవలకైన నొక్కబిగిని.
అరుల ఈర్ష్యవాక్యాళికి సురిగిపోక
యెంతకాలమునుండియో యింకియున్న
సర్వమతసమత్వమునకు సారమిచ్చి
ఆత్మవృద్ధియే జీవుని కధికతరమ
టంచు బోధించి, చేసిచూపించి, దశది
శాంతములఁ గీర్తినించిన శాంతమూర్తి
దేశదాస్యాంధకారపు దీపకళిక
పంచముల గోడు పాడు విపంచి, గాంధి
నొక్కనూతేండపాటైన నోము మీశ!
ఇంక నుపవాసములను జేయుండుకుండ.



బమ్మెర పోతన

బందా ఆదినారాయణ

శ్రీ

నాశ్రయింపకే మన
నేనేరన? " యంచ వాణి యెంత
మ్యూని ధర నవతరించెనొ [యంచ బంత
నా ననఘుడుపుట్టె బోతనమహాత్ముఁ డిలక.

భక్తిజ్ఞానవిరక్తులం గఱపి త
త్వమ్ముం బ్రబోధించుచుక
ముక్తిం గూర్చు మహాంధభాగవతముక
మోక్షార్థమై రాము న
దృక్తిం బల్కి సరస్వతీ వదన చిం
తాబాష్పముల్ వాపు శ్రీ
సూక్తుం గొల్తుఁ గవితృధీవిభవవి
ష్టుం బోతనామాత్యునిక.

అక్షరుఁ డైన రామునకు
నంకితముం బొనరించి భక్తి, దు
ష్టక్షితిపాలురక గణన
సల్పక భాగవతమ్ముఁ బల్కి, ప్ర
త్యక్షమునం బరోక్షమున
నాదృతి వాణివగం దొలంచు నా
దక్షత యబ్బు నెట్లు కవి
ధాతపు నిక్కము నీవు గానివో?

గోపికలు మెచ్చ మురళిని గోపబాలుఁ
డాగమమ్ములఁ బాడినయట్లు నీవు
పండితులు మెచ్చఁ దెనుఁగునఁ బాడినావె
యాగమమ్ముల సారమ్ము భాగవతము!

గ్రంథములకెల్ల రాజు భాగవత మవనిఁ
గవులకెల్లను రాజ వీ వగుదు కాన
గ్రంథమును గవి యొండొంట ఘనతఁ గనియె
గ్రంథరాజము కవిరాజరచితమాట.

మూలమునలేని మధురకథాళి నన్య
కృతుల గ్రహించి తెనిగించుకతన నెట్టి
కథను, నేకృతిఁ జదివిన యుధ తనియదు
నీదుభాగవతంబునక వినినఁగాని.

ధర రామాయణ భారతమ్ములను నాం
ద్రమ్మందుఁ బెక్కండ్రు ప
ల్కిరి, నీవొక్కఁడె తక్క భాగవతముక
లీలం చెనింగింప నొ

క్కరుఁడుంబూనమి చాటఁజాలదె యమో
ఘంబైన నీశక్తి, ను
ర్వర నీ కెందును నీవె సాటి, కవితా
ఫాలేక్షణ, పోతనా !

వాగనుశాసనుండుఁ గవి
పద్మజకేతనరంగనాథు లెం
తేగరిమం బ్రబంధఁర
మేశ్వర భాస్కర సోమ భీమనల్
భాగవతామృతమ్ము శ్రుతి
ఁరవముగాఁ దనివారఁ గ్రోలి తా
రేగతి మెచ్చియుందురొక
దే భువి వారలు నేటి కున్నవో !

నవరసమ్ములెకాని యీయవని భక్తి
గర్భితమ్ముగు నవరసకలితకవితఁ
జవులుపుట్టించి చెవులఁడువుగఁ బల్కు
సహజపండితుఁ డిల నీకు సాటిలేడు.

నన్నయఋణమ్ము ననఘు తిక్కన్నఋణము
నెఱ్ఱనఋణమ్ము నింతయు నీగలేని
ప్రజకు భాగవతమ్ము నాంధ్రమునఁ బల్కి
యింకను భరమ్మునేసితే ఋణము నీవు !

స్వాతంత్ర్యలక్ష్మి

ఓలేటి సీతారామమూర్తి

౧

మృదువులుదలించు వేకువఁ బొడుపుమ
బాలభానుని దరహాసలీలవోలె [లను
జ్ఞాందవస్వాంతసీమఁ బ్రేమార్ద్రవగుచుఁ
దల్లి, సాక్షాత్కరింపు స్వాతంత్ర్యలక్ష్మి!

౨

గళితభవ్యపురాణవికాసయగుచు
అవనతాననమున నిస్పృహప్రవృత్తి
మల్లడింపఁగ భరతక్షమామతల్లి
దైన్యమున నిల్చెఁ గనుము స్వాతంత్ర్యలక్ష్మి!

౩

అమితదాస్యదారిద్ర్యక్షుధార్తితోడఁ
బ్రబలు యుష్మద్వియోగభరమ్ముతోడ
సత్త్వమును బాసి భారతజాతి క్రుంగె;
తల్లి, చేయూత నిమ్ము స్వాతంత్ర్యలక్ష్మి!

౪

సతతజాతీయమానితోత్సాహపటిమ
దైన్యరహిత సాంఘికజీవితప్రశాంతి
సీమృదుపదమ్ము హత్తిన సీమయందె
తాండవించునుసుమ్ము స్వాతంత్ర్యలక్ష్మి!

౫

కలుషహేయదాస్యధ్వంతగహ్వరమున
సమసిపోయిన జీవితచ్ఛవలతోడ

ఎంతకాలమొ ఈదేవురింపు మాకు?
తల్లి, దర్శన మీపె స్వాతంత్ర్యలక్ష్మి!

౬

కాయమునుగ్రుచ్చు దారిద్ర్యకంటకమ్ము
తావకీనహసజ్యోతి తక్కుమనఁగఁ
ద్రెళ్లు నీటయి; పూవుపొత్తిల్లలోన
తల్లి, కనుమోడ్చు మవల స్వాతంత్ర్యలక్ష్మి!

౭

నీదు లేనవ్వు తొలకరినీటిజల్లు
గురియ జాతీయభావవిస్ఫురత సూన
రాజి విచ్చును; భారతప్రకృతి సాగయు;
తావకవిలాస మిద్ది స్వాతంత్ర్యలక్ష్మి!

౮

నీవలపుమేని పన్నీటితావికలిమి
ప్రిదులుకొనుచును జీరువాఱినతలమ్ము
పూతవీరరక్తస్వాంత; భోగభూమి;
ధన్యసుగుణవిఖ్యాత; స్వాతంత్ర్యలక్ష్మి!

౯

మాసుధాస్వాంతకవితాకుమారి కీవు
జలుఁగులొడఁగూర్చునెయ్యంపుచెలివిసుమ్ము!
తద్వియోగప్రవృత్తిని దలఁచితలఁచి
నాకలమ్ము చలించు స్వేచ్ఛాకుమారి!



పుష్ప బాణ విలాసము

(అనువాదము)

దివాకర్ణ వేంకటాచార్యుని

అనిక ప్రజాంగనావిహారణార్పితచేతనుడైన నందనం
దనుని విచిత్రగాథ భవనత్రితయప్రచిత ప్రశస్తమున్
ప్రణయసుధామయమ్మును; అది వస్తువుగా రసనత్ప్రబంధముక్
పనివడి గూర్చు నారసనపైని సరస్వతి తాండవించుతన్.

కాంతుడు దృష్టిగోచరుడు కాన్ వికసించెను కన్నుదోయి; యే
కాంతగృహమ్మునన్ గలసినంతనె దేహము పుల్కలెత్తె; న
త్యంతముదంబునన్ కుచములందిన కంఠము పుట్టె; కంఠరా
ప్రాంతము కౌగిలింప దృఢమయ్యును నీవి విడెన్ లతాంగికిన్.

అతిశ్రీఘ్రమన పర్యాకులత్వమునందు కచభారమంతయు కలగిపోవ
ఆయాసజనిత ఘర్మాంబునంతతీయందు కమ్మకస్తురిబొట్టు కరగిపోవ
కంటకావిలవల్లి కానికుంజములందు కాయంబు ప్రణీతమై కందిపోవ
పతనస్థలన వికంపిత బాహుముఖిహైమ కంకణమ్ములు కటుక్వణన మీన
ఏల పరిశక్వబింబమనీష నీదు - కెంపువాతెర కొరకి యేగిన శుకమ్ము
నరసి శిక్షింప భ్రమియించె దబల, నీదు - ఆడుబిడ్డయ కొనిపోయె నన్ని పూల.

తెలతెలబారె హేమలత; తెల్లని ముత్యము లుద్భవిల్లె ను
త్పలయుగళంబునం; దుహినభానుడు పద్మమునన్ శయించెడిన్
జలరుహకోశసంగమమునన్ పువ్వుదండలు వాడుదెంచె; ని
ట్లలమిన దుర్నిమిత్తముల యానముదంబు తొలించె నెచ్చలీ!

ఒకచిగురాకుకేల విడనున్న శిరోజభరమ్ము దాల్చి వే
తొకట పయోధరద్వయమునుండి తొలంగు దుకూల మూని, కా
ముకుని గృహంబు వెల్వడెడి మోహనమూర్తి యొకర్లు, పుష్పసా
యక జయలక్ష్మీయో యనగ నారయు చందనచర్చితాంగియై.

సఖుడు విచేశ మేగునని స్వాంతము కొందలమందు, చందిరుం
డఖిలజనప్రమోదకరుడయ్యును వైరముసేయు నాయెడన్

సఖి, కలకంఠకంఠకలనాదము దుఃఖముగూర్చు; హవ్యభు
కృణుడు, వచింపనేల, అనుసంతతినే పెకలించివై చెడిన్.

సరసిజసుందరస్మితలసన్ముఖ యాహరిణాక్షి, చారుపీ
వరఃస్పృగులస్తనాంతరినిపాతగళస్మృదులోత్థరీయయుం
బరిసరఃఘోరస్థజనవంచనకామయు నై విలోచనో
ఁరి, నునుకేలు సాపినను వారక దూరమునుండి చూచెడిన్.

వనితా, చూచితె మాధవీలతలలో భ్రష్టప్రసూనావృతం
బును నీరంధ్రము నైన కుంజసదనంబున్, దాన ప్రౌఢాంగనల్
మణితంబుల్ కలిపింతురేని విను, తన్మధ్యస్థపుంస్కోకిల
క్వణవిస్తారమునందు వానిని వినంగాజాల రెవ్వారలున్.

ఁరితాపాపనయమ్ము పొంటె రచియింపబడ్డ యీపల్లవా
స్తరణమ్ము న్నిజపాణిఁకరుహసంసర్గమ్మున న్వాడ్చు నీ
సరసీజానన; చిత్తజన్మశిఖిదత్తాంగారభావంబునన్
ఁరమేశా, తదసహ్యావేదన వచింప నృక్యమే యేరికిన్ ?

మలయజవాయునిర్దయయు మంజులకోకిలకంఠనిస్వనం
బుల యతినిష్ఠురత్వమును పూర్ణశశాంకుని తిగ్మభావమున్
కలసి లతాంగి మృత్యుగత కాపుటకై యొనరించు యత్నమున్
ఫలితముకప్ప కత్తెణలవప్రచలభ్రమితత్వదాగతిన్.

ఆరమణీలలామ హరిణాయతలోచన చక్రవాక శృం
గారవతీసమాన తుదికంటకమయ్యెడు సీవసంతమం
దోరువలేక దారుణవియోగరుజ స్మరణింప పుంజితాం
గారనిభమ్ము నీకిసలకల్పితతల్పము నాశ్రయించెడిన్.

కన్నుల నీరుపెట్టకుము కాటుక యంత కరంగిపోవు, కం
దున్నవకంఠమాలికలు తూలగనీయకు వేడియూర్పులన్
క్రొన్ననపాన్పు జేరకుము కొంచెపడున్ తనురాగ మెల్ల నో
లన్నువమిన్న, నీమగని యాగమకాలము దాట దింకనున్.

కలువలబోని నీకనులు క్లాంతము లైనవి; ఘర్మవారిది
దులు నవమాక్రికప్రభలతో తులతూగెడు నీలలాటికా
స్థలి; బహుళమ్ములయ్యెడిని శ్వాసలు; వెన్నెలలోన రాకపో
కలు పొనరించి యెంతగను గాసిలితోసి వృథామదర్శమై !

చాన యొకర్లు సర్వజనసమ్మత విభ్రమమూర్తి నెయ్యపుం
జానలమధ్య భూచలనసంజ్ఞల దూతికతోడ పల్కుచున్
మానుగ సంజనంబు నయనంబుల దిద్ది పటాంచలంబునన్
పీఠతరీభవత్కుచమణి నవహారము కప్పె, వేగమై.

నీహారికిరణాస్య, నీయూననము చూపు చక్షుర్బడత్వవిశ్రాంతి రస్తు!
శుకవాణి, మధురవా క్కొకటైన వినిపించు శ్రవణామృతస్రతిసౌఖ్య మస్తు!
ఃద్యాశీ, శిశిరదృక్పాతమ్ము గావించు మమితాంగపరితాపశమన మస్తు!
అమృతాంగి, నాపార్శ్వమందు నిల్చు మొకింత సారలోకావాస సంపదస్తు!
పలుగుచెలికత్తియల మృషావాదములనె-కాని, నాయందు ఇంత ఉత్కటము దీర్ఘ
తరము నౌ రోషమునకు కతమ్ములేదు,- కుటిలకుంతల, నాపైని కోపమేల?

వనరుహకోశచారురుచి భామకుచంబుల తాకనెంచు, చుం
బనమొనరించు బింబఫలభాసము మోవి; ముఖమ్ము జ్యోత్స్న మూ
ర్కొను; నరుణాబ్జశోభ సుమకోమలిహస్తము లూనియాడు; నే
వనమొనరించు నబ్జముఖపాదయుగంబుకు పల్లవద్యుతుల్.

అనుగుసఖి, చేసితేను చెప్పినది యెల్ల-ధరణి నీవంటి పరహితార్థప్రవణలు
కలరె! నాకయి యరిగి యింతలసిపోయి-తొనుశ్రమలేక సఫలమ్ము లగునె పనులు?

బెడగగురీతి ఫాలమున బెట్టదు కస్తురిబొట్టు; పూసరు
ల్కుడువదు కేశపాశమున ముందటివోలె లతాంగి; నెయ్యపుం
బడతులతోడ నాయెదుట మాటికిమాటికి సంచరింప; దే
నడిగినయష్టజైన తెగనాడదు నాయపరాధలేశమున్.

శ్రుతికటువెను కిన్నెరల మ్రోత పొలంతుక పాటపాడినన్
స్మితమువెలార్చినన్ మలినమేయని వెన్నెల తోచు; క్లాంతమా
సతికనుదోయిముందు వికసస్మృదులోత్పలమయ్యునున్ తటి
ల్లతిక లతాంగిమైసొబగు లక్ష్మితమైన వివర్ణమై చనున్.

కనుదోయి రాత్రిజాగరణజన్యంబైన రాగరేఖాపాళి ప్రచురమగుట
పక్షస్థలమునందు వరకుంకుమోదిత రాగచిహ్నములు తోరంబులగుట
అలికభాగంబునం దాలక్తికములైన రాగలింగము లవిరళములగుట
వేగకమున్న న స్వీకించు నభిలాష మించ నాయెంటి కేతెంచియుంట
'ప్రాణనాయకి, నాయనురాగరసము-గాఢతరమాను నీయాత్మకలుగుదాని
కంటె' నని నీవు పల్కిన యనుగుపలుకు-పొచ్చెమేలేని దని కానవచ్చె నేడు.

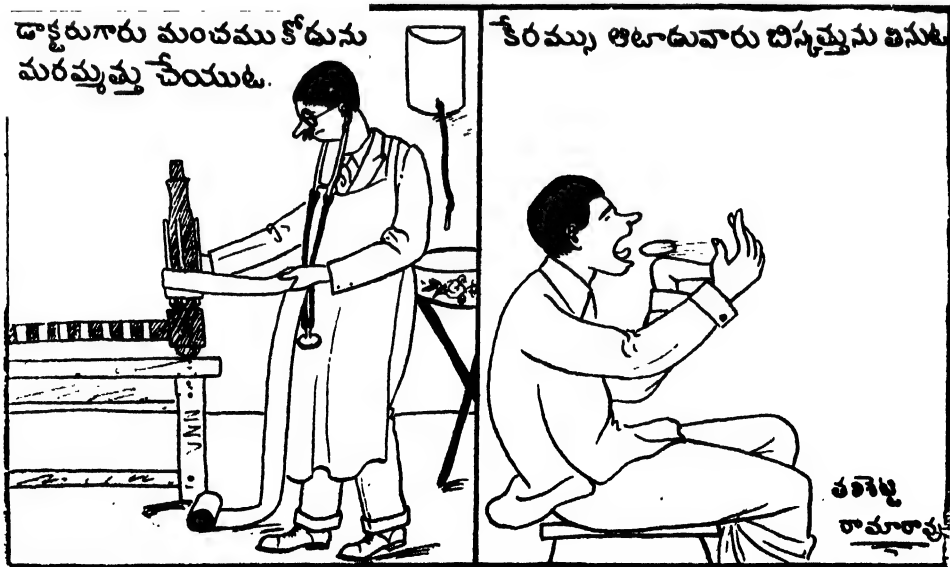
వారిజగంధబంధురము వాయుపునూర్పున, వాక్కుచే మనో
హరిశుకారవమ్మును, శశాంకుని చారుహసన్ముఖమ్ముచే
నే రమణీలలామ హాసియించునో, యామెయ త్వద్వియ క్తయై
దారుణరుక్ శరవ్యముగ దా జలుపంబడె వానిచేతనే.

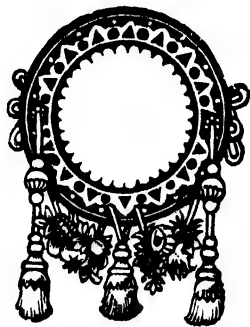
దెసలన్ కైరవగంధబంధురసర స్తీరానిలం బొప్పగా
నిశలన్ చాంద్రమసాచ్చసాధకిరణానీకమ్ము జృంభించుటన్
కుసుమోచ్చాయలసద్వసంతమున నాకున్ తాపసంభావిసా
ధ్వనమే యుండదు దూర దేశమునకున్ ప్రాణేశ, నీ వేగగఁ.

నతుడౌ వల్లభ చూడ దించుకయు మానష్టానచేతస్కయై
పతి నిర్యాతుడుకా నపారపరితాపం బందు నీబాల; తా
నతిమానంబు వహించు చెల్వుడు బలాదానీతుడైనట్లు; జీ
వితశంకాస్థితి నందు నాతడు పునఃప్రీతప్రయాణుండు కాఁ.

కోమలివాక్కు విన్నయెడ కోకిలకంఠము లౌ కళోరముల్
సోమునియందు లోకరుచి చూడకపూర్వమె తన్ముఖాభమున్
భామను గాంచుదన్కనె సువర్ణలత ల్లలితమ్ము లౌట; యా
సేమము నేత్రమాలనమె చేడియకన్నులముందు లేళ్లకుఁ.

అలవాటు ౨





గృహకల్లోలాలు*

(ఏకాంకనాటకం)

తేకుమల్ల కామేశ్వరరావు

[దీంట్లో వచ్చే పాత్రలు

నారాయణరావు మూర్ఖ డిప్టీయినస్పెక్టరు
చెంకమ్మ నారాయణరావు తల్లి
లక్ష్మమ్మ " భార్య
సుబ్బమ్మ " చెల్లెలు
నీతమ్మ లక్ష్మమ్మ తల్లి
రత్నమ్మ } ఇరుగుపొరుగువాళ్లు
రాజమ్మ }
చెంకటేశ్వరులు నారాయణరావు స్నేహితుడు
సోమలు బంగ్లాకు
చామలు సోమలుతల్లి
నాటకమంతటా రంగం తణుకు.]

౧-వ రంగం

[మూర్ఖ డిప్టీయినస్పెక్టరున నారాయణరావుగారి యిల్లు.
నారాయణరావుగారి భార్య లక్ష్మమ్మ వంటింటిమందరవున్న
సావిట్లో కూచుని పిల్లాడినొక్కా కట్టుకుంటూవుంటుంది. ఇరుగు
పొరుగువాళ్లయిన రత్నమ్మ, రాజమ్మ వస్తారు.

లక్ష్మమ్మ యిరవైయేళ్లమనిషి. పల్కుగా, చామంచాయగా
వుండును. మొహంలో కొంచెం విచారం కనబడుతుంది.

రత్నమ్మ నలభైయేళ్లమనిషి. లావుగా వుండును. వితంతువు.
జుత్తువుంది. సగం నెరిసిపోయినతల. చెంగావిపంచ కట్టుకు వచ్చును.

రాజమ్మ పాతికేళ్లమనిషి. పునిస్త్రీ. ఊలుటోపీ కుడుతూవుం
డును. మనిషిలో రోమీ విశేషం లేదు.]

లక్ష్మ:—(లేచి) రండి రత్నమ్మపిన్నిగారూ, రాజమ్మవదిన
గారూ! మిట్టమధ్యాహ్నం కేళ వచ్చేరు, యితయెండలో. ఓటలుతెస్తా
వుండండి, కూచుందురుగాని.

రాజ:—ఓట రెండుకమ్మాయి, బాగానేవుంది!

రత్న:—ఓట లక్కలేదమ్మా. ఇక్కడే కూచుంటారే. సుబ్బర
మైనగచ్చు. మనలో మన కేంమర్యాదలమ్మా! ఇక్కడ కూచుంటాం.

రాజ:—ఓటలు తేకుసుమండీ వదినగారూ!

లక్ష్మ:—మంచిమాటే అన్నార! పోనీ చాపవేస్తాను, కూచుం
దురుగాని, వుండండి. (వెళ్లి చాపతెచ్చి వేయును) ఇలా చాపమీద
కూచొండమ్మా.

రత్న:—ఇదేంచాదస్తమమ్మా!

రాజ:—మొత్తంచాద వూరుకోరు వదినగారు.

(రత్నమ్మ, రాజమ్మ చాపమీద కూచుంటారు.)

రత్న:—మీపిల్ల లేరమ్మా, కనపడలేం? ఎక్కడా సందడి
లేదు.

లక్ష్మ:—నిద్దరపోతున్నారు. మంచంచాద వొకణ్ణి, వుమ్మ
లలో వొకణ్ణి పడుకో పెట్టేను. ఇద్దరూ వుయ్యాలలోనే పడు
కుంటామని చెబ్బలాట. ఒకళ్లకొకళ్లు తీసిపోరు. వాళ్లతగవులు తీర్చే
టప్పటికి నాతాతలు దొచ్చేరు.

రత్న:—(రహస్యంగా) మీ ఆయన ఆగడిలో లేరుకదా.

లక్ష్మ:—ఉండులేరు. ఎక్కడో వీధిగడిలో ఆఫీసుపని చేసు
గుంటున్నారు.

రత్న:—నీమో, పెద్దమనిషి అక్కడవుంటావుంటే మే
మిక్కడ నొడవచేస్తున్నామేమో అని.

రాజ:—నీమోమో వేగిరం చెప్పండి, యింటికిపోతాం, ఆ
యన్ని యిబ్బందిపెట్టక.

లక్ష్మ:—లేరమ్మా, ఇక్కడ లేరు. ఆయన వీధిగడిలో
యొక్కడో ఆఫీసుపని చేసుగుంటున్నారు. మన మిక్కడ మాటాడు
కున్నా ఫర్వాలేదు.

రత్న:—బోనుగాని మీ అత్తగారు యింట్లో లేదా యేమిటి?

* ఈ యేకాంకనాటకం రాజమహేంద్రవరంలో ౧౯౩౩-వ సం. జూన్ నెలలో రచించబడింది—టి. కా.

వైద్యరత్న పండిత డి. గోపాలాచార్యులవారి

అన్ని చోట్లను
దొరుకును

కండవుష్టికి, వీర్యవృద్ధికి,
— జవనత్వములకు. —

ఆయుర్వేదాశ్రమము మదరాసు.

ట్రాపికల్

మీరు నిశ్చయించుకొను జీవిత భీమాకంపెనీలలో శ్రేష్ఠమైనది.

1. ఆమూల్యము యిది శుద్ధ దేశీయసంస్థ.
2. అది ప్రత్యేక ప్రయోజనములను సమకూర్చును.
3. పద్ధతులు చాల ఆకర్షణీయములు.
4. అది అఖండమైన విజయమును గాంచినది.
5. ఏజన్సీపరతులు మిక్కిలి సరళమైనవి.

అధ్యక్షులు: — డాక్టరు యం. ఏ. అన్నారి.

శ్రీయుత కే. లక్ష్మీనారాయణరావుగారు, గుత్తి, మాఆంధ్రసభ బ్రాంచికి నియమింపబడిరి.

క్రమక్రమముగా ఆభివృద్ధిగావింపబడు వేతనములపద్ధతిమీద, ఆర్గనైజర్లయొక్క స్కీమువివరములకై వ్రాయుడు:— ది బ్రాంచి శైక్రటరి:

ది ట్రాపికల్ యిన్సూరెన్సుకంపెనీ లిమిటెడ్.,

289, యెస్ట్ల నేడు—మద్రాసు.

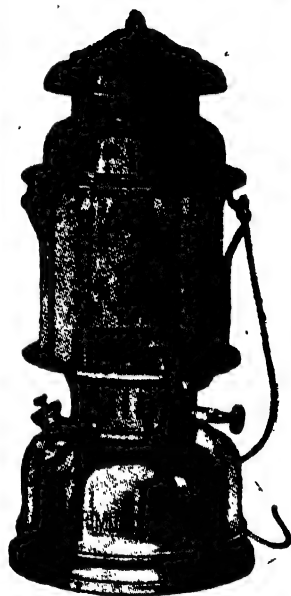
The

Primum

—మిక్కిలి

ప్రకాశమానముగ వెలుంగు

లాంతరులు



ఇప్పుడు వ్యాపకమునందన్న అన్నిరకముల యభివృద్ధులు గావించబడి యీ లాంతరులు, దీపములయందు ఒకవిధమైన నూతనశోభ సమకూర్చినవి.

దీపవలన గలుగు ప్రయోజనములవలన, యివి స్వీతా ఆదరింపబడుచున్నవి బజారులో విక్రయింపబడు యితర లాంతరును, దీనితో పోల్చిచూచిన యెడల రెంటికిగల తారతమ్యము మీకే ప్రత్యక్షముగా గోచరింపగలదు.

200, 300 సి. పి. లలో దొరకును. పూర్తి విడిభాగములు లాంతరు వర్తకు లందరివద్దను దొరకును.

ఇండియా, సిలోనులకు సోల్ ఏజంట్లు :—

కే. యస్. శివజీ ఆండ్ కో.,

K. S. SHIVJI & Co.,

178/179 బ్రాడ్వే, మద్రాసు. 144 చక్లాపీఠి, బొంబాయి.

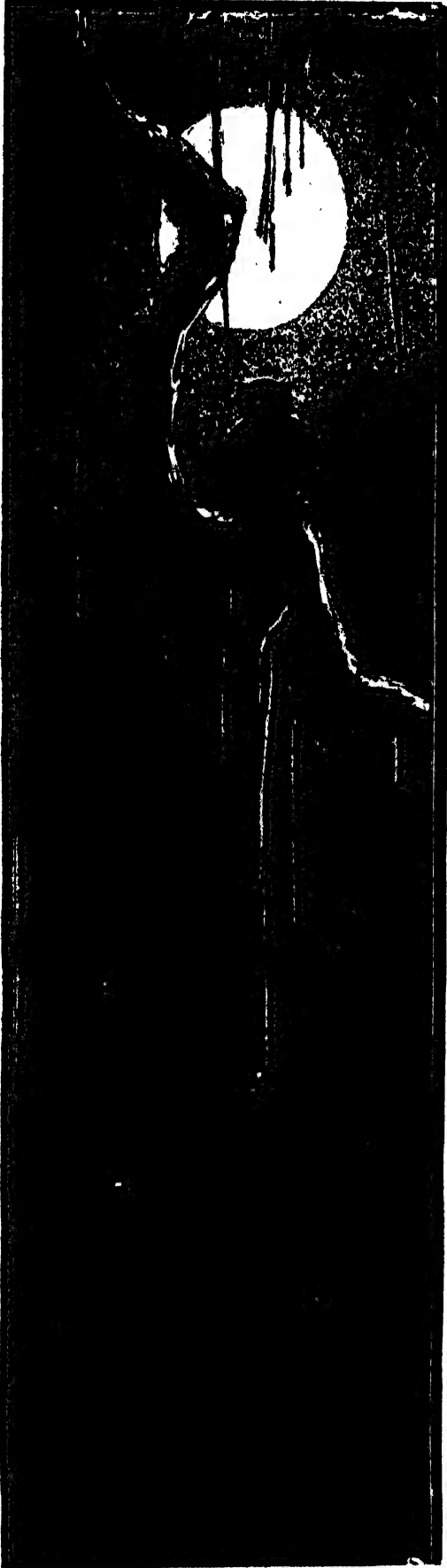
ఏజెన్సీలు :—

కలకత్తా, కరాచీ, సిలోన్.



హైహయతీమనోహరుడు

— పెండ్యాల వెంకటరామయ్య.



వెన్నెలరాత్రి

—జి. హనుమంతరావు.



లక్ష్మ్య:—అవిడ మరేమా మాఅడబాడుచుగారివూరు వెళ్లేరు.

రత్న:—ఏమీ, యెందుమా?

లక్ష్మ్య:—అవిణ్ణి యిక్కడికి తీసుకొద్దామని.

రత్న:—(బుగ్గయిమీద వేళ్లువేసుకుని) అదేమిటమ్మా! మొన్న మొన్న నేకదూ క్రావణమాసంలో వెళ్లింది. యిక్కడికొచ్చి చాలానా శ్లయిపోయిందని, అప్పిడే యేంతీసుకురావడమమ్మా! రెణ్ణిలేనా అయిందోలేదో.

రాజ:—పున్నంవెళ్లేక పున్న మింకావళ్లందే!

లక్ష్మ్య:—అవిడ మరి మాతుర్ని విడిచిపెట్టివుండలేరు. పచ్చగా పున్నది యీవొక్కమాతురేగా.

రత్న:—అయితే మాతురిదిగ్గిరే వుండిపోమ్మను. చీటికిమాటికి యీతీసుకురావడా లేమిటి, తీసుకువెళ్లేదా లేమిటి?

రాజ:—మాతురింట్లోనే వుంటే సరి తీరిపోతుంది.

లక్ష్మ్య:—అల్లుడికి యింట్లో యెవరూ పెద్దవాళ్లు లేరు. తల్లి చచ్చిపోయి రెండే శ్లయిందిపోపం!

రత్న:—అయితే యిల్లరికం చేసుకుంటుందా యేమిటి?

లక్ష్మ్య:—ఇల్లరికం చేసుకుంటుందని నే నేడవడం లేదు, పిన్ని గారూ! మాతురు వచ్చేక తనూ, మాతురూ కలిసి నన్ను బతకనిస్తారా అని పగలురాత్రి యేకయిదైపోతున్నా. వాళ్లు యింట్లోవుంటే తింటారు, నేను తింటం లేదూ. అదేంభర్యమాగాని వాల్లిద్దరూ నాతో డబ్బు లాడనిరోజంటూ వుండవచ్చు. అందుకని నే నేడుస్తున్నా. ఒహరుంటే నే చస్తున్నాకదా, యిద్దరూవుంటే యింక యేలాబతకడమని.

రత్న:—నిజమేనమ్మా, రాక్షసుల్లాంటివా ల్లిద్దరూను.

రాజ:—ఇద్దరూ లంఖిణీ తాటకీన్నూ.

లక్ష్మ్య:—ఇంట్లోవుంటే డబ్బులాట. అవట్టుకు మూడుమూడు నాళ్లకి యింట్లోంచి వెలిపోవడం. వెల్లినవాళ్లు పోనీ అట్టేవుంటారా అంటే మళ్లా అదిలేదు. ఇట్టే వెళ్లడం, యిట్టే రావడం. అనెళ్లడం రావడంభర్తులు మళ్లా మానే. ఇలా చస్తున్నామమ్మా!

రత్న:—సరేగాని, వాళ్లే సంసారంమాడా మీనెత్తని వెయ్యడం మేమిటో! వాళ్లని వేరేకుటుంబంకాదా, వేరేసంసారంకాదా. అలాంటప్పుడు మీయింటిమీది కందుమా తీసికొచ్చిపెట్టడం?

రాజ:—అదేమో, నామా వింతగానే వుంది.

(లక్ష్మ్యమ్మ వూరుకుండును.)

రత్న:—మీరిద్దరూ చిన్నవాళ్లకదా. ఇద్దరూ చిలకాగోరింక ల్లాగ వుంటావుంటే తను చూసి సంతోషించ వలసిందికదా. అటు బంటప్పుడు వాళ్లే సంసారంమాడా మీనెత్తని పెట్టడం మేమిటమ్మా. ఇప్పుడు కాకపోలే మరిప్పుడూ గుఖపడడకో!

రాజ:—ఇంత కాల్పుకుతినే అత్తగారిని నే నెక్కడా చూడ లేదమ్మాయి! మాచెల్లెలిఅత్తగా రొకరై వుండిగాని అవిడేనా యింత కాల్పుకుతినడం నేచూడలేదు, విన లేదు.

లక్ష్మ్య:—నా వొక్కరైతో డబ్బులాడిరే పోనీ అదేపోయిందని వూరుకుండును. ఆయనతోమాడా డబ్బులాటే. ఆయన నన్ను కొట్టడం, తనబుర్ర గోడనేసి కొట్టుకోడం, యేడవడం, చచ్చిపోతా ననడం, యీబాధలు నేభరించలేననడం, ఇహ యేమిచెప్పవల్లే! ఇల్లు యాధరంగ మయిపోతుంది. ఇవన్నీ తలచుకుని యేమిరాదైవమా నా కేమిదారని యేడుస్తున్నా.

రత్న:—కడుపుతోపున్నమనిషిని నువ్వు. రేపా నేడో నీళ్లా డతావు. నీచేత పనులు చేయించుకుంటుండేమిటమ్మా!

రాజ:—నిండుపొద్దులమనిషిచేత చాకిరీ చేయించుకోడం మేమిటి నామొహం.

లక్ష్మ్య:—అటుమొన్నసాయంత్రం తలకాయినో ప్పొచ్చి తేవలేక అవిడికి రాత్రికి వియ్యపుపిండి విసరలే నన్నాను. దానికోసం తెగతిట్టిపోసింది.

(రత్నమ్మ నోరు నొక్కుకుంటుంది.)

రాజ:—ఏమి ఆక్రియం. చూడగాచూడగా యమురాణిలా నుంది.

(బంట్రోతు సోములు వస్తాడు.)

సోము:—అమ్మగారండీ!

లక్ష్మ్య:—ఏమిటి?

సోము:—అయ్యగారు మరేమా నన్ను పడవలరేవుకాడి కెల్లి రమన్నారండి. అమ్మగా రొత్తారంటండి. అమ్మగారు, పెల్లాయి గారూమాడా వొత్తారంటండి. పడవలరేవుకాడి కెల్లి తీసుకురమ్మన్నా రండి ఆరిని. బజారంటే యెల్లాగాదండి. ఏమేనా మారగాయ లట్టుకు రావలసాస్తే నెప్పండి. ఒచ్చేటప్పు డట్టుగొత్తానండి. సిక్కిం తీసు కెళ్తా, డబ్బులిప్పించండి.

లక్ష్మ్య:—ఇప్పుడేమీ మారగాయ లక్కరేదు. ఇంట్లో చాలా మార లున్నాయి. పడవలరేవుకు వెళ్లి వాల్లిద్దరినీ తీసుకురా.

సోము:—రీత్రమండమ్మా. పడవలరేవుకాడి కెల్లానండి. అమ్మ గారిని, పెల్లాయిగారిని తోడుకొత్తానండి.

లక్ష్మ్య:—సరే, వెళ్లు. (సోములువెళ్తాడు.)

రత్న:—మళ్లా ప్రళయం వచ్చి పడుతుండమ్మాయి!

రాజ:—తల్లి మాతురూ కలిస్తే రెండుప్రళయా లయిపోతాయి.

లక్ష్మ్య:—వాళ్లరూని! నే నేంకెయ్యగలనమ్మా! ఇంట్లో యింతమంది నాళ్లంటూవున్నా మళ్లా పనిపాట్లన్నీ నేనేకెయ్యతీ

గుడ్డలుతకాలి, లాంతరుతుడవారి, పిండ్లువిసరారి, బహుశేషిటి? నమస్తం నేనే చెయ్యాలి. (విచారమాని) ఒహలాగయితే ఆవిడ వూరుకుంటుందమ్మా. వారికొచ్చే తీతంకనక నెలనెలకీ ఆవిడచేతిలో పోనేస్తేమా వూరుకుంటుంది. 'అంతా మీ అల్లుడికి మీహతురికి యిచ్చేసుకోండి. హుక్కేమక్కలే' దంటిమా పరమానందం. ఇహ మమ్మల్ని యేమీ అనదు. కాని మాకు తిండిలేలాగ? మేమెలాగబతకడం? అడలా చెయ్యమండీ పిన్నిగారూ!

రత్న:—నిజమేతల్లీ! నువ్వెంతేనా ఊభపడిపోతున్నావు. నువ్వెంతిఊభపడిపోతున్నావో ఆపరమాత్ముడికే తెలుసు.

రాజ:—హతుల్లని కనుక్కున్నవాళ్లే యిలాగ చేస్తావుంటే మాకుల్లు లేనివాళ్లమాట చెప్పేదేమిటి!

రత్న:—కొడుకు బతికుండా, కోడలు ముండమొయ్యాలనేరకంమనిషి. దేవుడేనా తగినశిక్ష చెయ్యకుండావున్నాడమ్మా!

రాజ:—పాపం పండితేగాని ఒద్దలవదంటారు పెద్దలు. అలా పెరగగా పెరగగా ఆఖరికి వాళ్ల పాపం వాళ్లనే కొట్టేస్తుంది. చూడండి నామాట అబద్ధమయినే.

లక్ష్మ:—తనహతురుచేత ఆవగించంతపనిచేయించదు, ఆవిడ వొట్టు యొక్కడ అలిసిపోతుందో అని. చాకిరీచెయ్యడానికి మళ్లా నేను. ఊరికే చేతున్నా, మీరు వింటున్నారకదా అని, వాళ్ల కావిడపెట్టడాన్ని గురించి. వేపుగురి తనకు కట్టుకోడానికి పండులున్నామాడా లేవనిచెప్పి ఆయనచేత ఒకపైనుపంచ కొనితెప్పించిందమ్మా. తెప్పించుకున్నమనిషి తను కట్టుకోవాలా? మళ్లా అదిలేదు. తిన్నగా తీసుకెళ్లి కిందటిసారి బెల్లినప్పుడు అల్లుడి చేతికిచ్చేసాచ్చిందమ్మా! ఏమిటి చెప్పను పిన్నిగారూ ఆవిడచేసే పనులుగురించి. ఏమయినా, వొకళ్లకిచ్చిందని నేనేడవడంలేదు. నన్ను చంపకండ్రో యని యేడుస్తున్నా. నేనన్నా మాపుట్టింటారెవరన్నా మాడా ఆవిడికి కిట్టడమ్మా, ఆవిడికి మాకురికి మాడా. ఆమధ్య మా తమ్ముడొచ్చేడు. కుర్రాడుకదా. ఆరేళ్లవాడు-వాడిని పెట్టినభాదలు యేమనిచెప్పమన్నారు. ఇన్నీ అన్నీకావు. చూడలేక చివరికి వాడిని వాల్లింటికి పంపేసేను.

రత్న:—ఆవిడి 'ధావత్తు' అలాగుంది!

రాజ:—చక్రం తిరుగుతుంది లేండి. కిందు మీదికీ, మీదు కిందకీ వస్తుంది.

లక్ష్మ:—ఒకరోజునుంచీ, రెణ్ణాళ్లనుంచీ పడుతూన్న భాదలాయిని. ఆరేళ్లనుంచి పడుతున్నా. పెదమ మెదపకుండా భరిస్తున్నా.

రత్న:—నిజమేతల్లీ! వింటూవుంటే నావాళ్లే ఝల్లు మంటుంది. పగవాళ్లకేనవద్దు నువ్వు పడేబాములు. నేను విశే భరించలేకుండావున్నాకదా! నువ్వు పడుతున్నావు. పాపం! చిన్న

పిల్లవి. దేవుడే రక్షిస్తాడు నిన్ను. దిక్కులేనివాళ్లకి దేవుడే దిక్కుంటారు. ఓపికపట్టివుండు తల్లీ. (స్ఫురించి) అమ్మయీ! ఇంక మీవాళ్లు వచ్చేవేళయింది. మళ్లా లేపా యెప్పుడో వస్తారే, వెళతాం. దేవుణ్ణే నమ్ముకో. నీ కింకమీ ఫర్వాలేదు. ఇలాంటి వెల్లకాలం వుండి పోవు. లే, రాజమ్మా, లే పోదాం, మరి. వెళ్లిస్తామమ్మా.

రాజ:—వెళ్లిస్తానండీ వదినా.

లక్ష్మ:—మంచిదమ్మా. (రత్నమ్మ, రాజమ్మ వెళతారు.)

(లక్ష్మమ్మ హొక్కాకుడుతూవుండును. సోమలు వస్తాడు.)

సోమ:—అమ్మగారు, నెలలయిగారు వొచ్చేరండి. రెండు మాటలూ లోనడేసేనండి.

(వెంకమ్మ, సుబ్బమ్మ వస్తారు.)

(వెంకమ్మ నారాయణగూర్తిగారితల్లి. నల్లబైయెదేళ్లుంటాయి. వితంతువు. ఒక్కపల్నగా వుండును. చూడడానికి మనిషి కొరకొరలాడుతూవుండును.

సుబ్బమ్మ వెంకమ్మహతురు. తల్లిలాగే పల్నగా వుండును. తల్లికి ప్రతి. వయస్సు యిరవైయేళ్లు.)

లక్ష్మ:—(నిలుచుని) ఏంవదినా! క్షేమంగా వున్నావా? ఏమైత! వచ్చేరా?

వెంక:—అబ్బాయి యొక్కడ?

లక్ష్మ:—చావిట్లోనే వున్నారు. అట్టిసుపని చేసుకుంటున్నారు. (సుబ్బమ్మతో) ఏమివదినా! అన్నయ్య కులాసాగా వున్నారా?

సుబ్బ:—ఉం. దేవుడివయవల్ల.

లక్ష్మ:—అంతా దేవుడియే. లేకపోతే మరి మనయివ్వుమా యేమిటి?

సుబ్బ:—ఉం. ఔను.

వెంక:—అబ్బాయిని చూసాద్దాం రా పిల్లా.

సుబ్బ:—ఉం. పద. (ఇద్దరూ వెళతారు.)

౨ - వ రంగం

[నారాయణరావు కుప్పీవీధి కూచుండును. లక్ష్మమ్మ వచ్చును.

నారాయణరావు స్కూల్ డిప్టీ యిన స్పెక్టరు. సామాన్యయెత్తు మనిషి. క్రాపింగుతల. నవ్వుమొహం. సర్కిటువెళ్లడానికి దుస్తులు వేసుకువుండును. చేతిలో దండకడియం పట్టుకొనును.]

లక్ష్మ:—సర్కిటువెళ్లడానికి బట్టలు వేసుకున్నారా?

(నారాయణరావు అడావిడిగా దండకడియం కేబులో పెట్టుకొనును. లక్ష్మమ్మ పరికించుదు.)

నారా:—వచ్చేవా? ఇంకా రాలేదేమని చూస్తున్నా.

లక్ష్మ:—నీవో యింట్లో పనిచేస్తున్నాను.

నారా:—ఇంకా పనులేమిటి, నీమొహం. ఇప్పుడాట్టే కష్ట పడి పనిచేయ్యకూడదు. చూసేవా? నీళ్లాడేరోజులాచేయి. చాలా ప్రమాదం.

లక్ష్మ:—అలాగేలేండి. (కొంచెం నేపయేక)

నారా:—వచ్చింది.

లక్ష్మ:—నీమిటి?

నారా:—అయినా చెప్పగో.

లక్ష్మ:—నాకేం కేరళ మొచ్చుననుకున్నారేమిటి?

నారా:—నే నిన్నాళ్లా అలాగే అనుకుంటున్నా.

లక్ష్మ:—మంచిమాటే!

(నారాయణరావు జేబులోనుండి దండకడియం తీయును.)

లక్ష్మ:—అదేమిటిది?

నారా:—మొదట చేతికి పెట్టుకో.

లక్ష్మ:—తర్వాత పెట్టుకుంటాను లేండి.

నారా:—పెట్టుకోమరి.

లక్ష్మ:—పెట్టుకుంటానులేండి.

నారా:—నువ్వు పెట్టుకుంటే మరి నేను మాసి సంతోషిస్తా. నా కానందిం అక్కర్లే దనుకున్నావేమిటి.

లక్ష్మ:—పెట్టుకుంటాలేండి. ఇది దిండుకు చేయించేరా?

నారా:—నువ్వు కొంచెం బలుస్తావేమోఅని. కడుపుతోపుండే మనుష్యులు సాధారణంగా నీరుపట్టి బరిసివుంటారు. కానినువ్వు బక్కగానేవున్నావు. ఈదండకడియం పెట్టుకుని, యిది దండను నిలవడానికేనా కాస్తతిని బలుస్తావుంటావని చేయించేను.

లక్ష్మ:—సరేలేండి. వేళాకోళాల కేమిటిగాని, మీఅమ్మకు తెలుస్తే యేమేనా అంటారు.

నారా:—అది అనేదేమిటి దానిమొహం. నాయివ్వు. నా డబ్బు. నాయివ్వు.

లక్ష్మ:—మీయివ్వుమని మీ రనగానే సరా యేమిటి. అదిడ పూరుకుంటారేమిటి?

నారా:—అయితే నన్ను వెళ్లి చెప్పమన్నావేమిటి? వెళ్లి చెప్తాను, నే నిలా చేయించేను, నా కివ్వమని. (నిటువొనును)

లక్ష్మ:—నీరూ చెప్పక్కర్లేదు, మాచోండి. (నారాయణరావు మాచొనును.)

నారా:—పెట్టుకో మరి.

లక్ష్మ:—పెట్టుకుంటానులేండి.

నారా:—నువ్వు పెట్టుకుంటేగాని నేనివార ఆసలు సర్కిలే వెళ్లను.

లక్ష్మ:—పోనీండి అయితే. (చేతికి దండకడియం తొడుగు కొనును.)

నారా:—చూసేవా, నగ కెంత అంద మొచ్చిందో!

లక్ష్మ:—అయితే, నగ కందంరావడానికేమిటి నగలుపెట్టు కుంటారు?

నారా:—కొంతమందికి నగలు పెట్టుకుంటే అందమొస్తుంది. కొంతమందికి నగలుపెట్టుకుంటే వికారమొస్తుంది. కొంతమంది నగలు పెట్టుకుంటే నగల కందమొస్తుంది. చివరజాతిమనుష్యులలో చేరిన దానివి నువ్వు.

లక్ష్మ:—మీరే అన్నిటికంటే పెద్దనగ నాకు.

నారా:—నిజమే. నిన్ను పెట్టాడినే నాకు అందమొచ్చింది; ఆజాతిమనిషివని అనసేఅన్నానుగా.

లక్ష్మ:—పోదురూ! అన్నీ యిలాగే అంటారు.

నారా:—నిజంచెప్పితే నిష్కారం. ఉన్నమాట ఆడకతప్పదు.

లక్ష్మ:—అన్నినిష్కారాలూ మీకే తెలుసు. నా కేం తెలివు.

నారా:—ఇంక వెళ్లరాను మరి. (దిండను ముద్దాడును.)

లక్ష్మ:—చాలులేండి. బొత్తిగాను.

(నారాయణరావు మళ్లాముద్దాడును.)

నారా:—మరి వెళ్లిస్తాను. ఇదిగో, అన్నట్టు చెప్పడం మరిచి పోయేను. మీఅమ్మకు ఉత్తరం రానేను, వచ్చి నిన్ను తీసుకువెళ్ల కలసింది పురిటికని.

లక్ష్మ:—చెప్పడం మరిచిపోవడమేమిటి, మీరు ఉత్తరం రాసి నాకు చూపించేయకదూ, పోస్టులో వెయ్యకమనువు.

నారా:—మందమరిని, బొత్తిగా జ్ఞాపక ముండడంలేదు అంతకంతకి. ఇప్పుడు జ్ఞాపకమొచ్చింది, నీకు చూపించేవేనేను పోస్టులో అని. ఎప్పుడువేనేను పోస్టులో?

లక్ష్మ:—అటుమొన్న బుధవారంనాడుకదూ.

నారా:—ఓను. మొన్నబుధవారంనాడే వేనేను. ఇంక రేపా నేడో వస్తుందన్నమాట మీఅమ్మ.

లక్ష్మ:—ఊ.

నారా:—నేను కాంతులోవుండగా వస్తేమట్టుకు నేనువచ్చే వరకూ వుండమని చెప్పు. చెప్పేం, తెలిసిందా?

లక్ష్మ:—ఉండ కేంచేస్తుంది? మీరు రాకుండా తీసుకొనుకుంటేమిటి నన్ను. తీసుకోతానంటేమట్టుకు నేను వెళతానా?

నారా:—అలాగేలే, నేను వచ్చేక వెళుమాగాని. బొసుగాని నాకు యీవూరునుంచి బదిలీఅవుతుం దనుకుంటున్నార అంతా. అంతా అడేమాట. విచిత్రం.

లక్ష్మ:—అయితే బదిలీవద్దని కోరుకోండి.

నారా:—కోరుకోవాలంటే చెన్నపట్నంవల్ల డైరెక్టరాఫీ కులూ గుమాస్తాలకాళ్లు పట్టుకోవాలి.

లక్ష్మ:—పోనీ కోరుకోండి. ఇక్కడే వుండిపోదాం. ఈవూరు అన్నివిధాలా అనుకూలంగా వుంది. మనవూరికి దగ్గర. ఇట్టే చెల్లివస్తూ వుండవచ్చు. ఇక్కడే కుటుంబావుందాం.

నారా:—ఇంకా యేమిచెప్పలేను దాన్నిగురించి. ఇంతకీ యిప్పుడు తొండలేముందిలే.....మరి చెల్లిస్తానోయ్.

లక్ష్మ:—ఉ. మంచిది.

నారా:—ఇదిగో! పిల్లలు జాగ్రత్తమనూ, వీధిలోకి వెళతారు. బట్టా గిట్టా, పశువులూ తిరుగుతూ వుంటాయి. బల్లకింద పడతారు. జాగ్రత్త, వీధిలోకి వెళ్లనియ్యకు. చెల్లిస్తానుమరి.

లక్ష్మ:—ఉ. మంచిది. జాగ్రత్త మనుండీ. మామనాలుగు కోణాలవరకూ ఆవెనవూళ్లంటే తిరగాలి, బాడిబందలోను. రోడ్డేనా వుండదు. చేలగట్టంబడి తిరగాలి.

నారా:—కొత్తాయేమిటి?

లక్ష్మ:—కొత్తనిగాదు. అయినా మీకోరికం మీరు జాగ్రత్తగా చూసుకోడం అలవాటు లేదు. అందుకని.

నారా:—ఉ. అలాగే. వెళతాను మరి.

లక్ష్మ:—మంచిది.

నారా:—జవాన్! (లోపల 'అయ్యా' అని వివస్తుంది) పెట్టె, పరుపు పట్టుకు నడుస్తూవుండు. (లోపల 'చిత్రమండయ్యా' అని వివస్తుంది) వెళతా నింక.

లక్ష్మ:—మంచిది. (నారాయణరావు వెళ్లును.)

లక్ష్మమ్మ:—(తనలో) ఈనగ మాఅత్తగారయినా, మావదిన యినా చూస్తే యేమేనా అంటారేమా. (సుబ్బమ్మ వచ్చును. లక్ష్మమ్మ కొంచెం కంగారుపడును.)

సుబ్బ:—ఏమమ్మా, మాఅమ్మ పిలుస్తూవుంటేనే నిన్ను. వివ బడలేదా? (దండకడియంమాసి) ఇక్కడిదో! చాలా బాగుంది.

లక్ష్మ:—మీ అన్నయ్య యిప్పుడే యిచ్చేరు.

సుబ్బ:—మాకవరికీ చెప్పండి!

లక్ష్మ:—అత్తగారికి చెప్పే చేయించేనన్నారు.

సుబ్బ:—అమ్మేనా చెప్పలేదు నాకు. చేరికీ చక్కగావుందో.

లక్ష్మ:—నువ్వుకూడా చేయించుకుందూగాని లే.

సుబ్బ:—ఈనగకోసమే యిప్పుడు దేవుల్లాడుతున్నాను. ఉన్న నగలు పెట్టుకుంటే చాలులే. నీచేతి కీనగ చాలాచక్కగావుందో. నగకే కళకాంతులాచ్చేయో.

లక్ష్మ:—వదినవుకాబట్టి హాస్యమాడుతున్నావు, తప్పులేదు.

సుబ్బ:—నువ్వే హాస్యమాడుతున్నావు. నేను నిజమే అడు తున్నాను. చక్కగా వుంది. రావో. అమ్మకుకూడా చూపిద్దాము.

(వెంకమ్మ వచ్చును, నడుముమీద చేతులు పెట్టుకుని.)

వెంక:—ఏమేపిల్లా! నువ్వుకూడా యిక్కడే వుండిపోయేవు. సరే, దానికంటే పనిలేదు. అది అన్నింటికీ తెలిసింది.

సుబ్బ:—మాడేఅమ్మా! అన్నయ్య వొదినికి దండగడియం చేయించేడు.

వెంక:—(బుగ్గలునొక్కుకొనుచు) అలాగు నాడు డబ్బు తగలేసుకుంటావుంటాడు. స్వయంరాజా, స్వయంమంత్రి. వా డెలాగుతగలేసుకుంటే యెవళ్లకీకావాలి. తగలేసుకోనీ. తల్లిమాట వివనికొడుకు బాగుపడేదేమిటి.....పిల్లా! నేను వెళ్లి జపంచేసుకో వాలి. ఇవారే యేకాదళి ఉపోషంకదా. అప్పిడే అస్తమానపేళ అవు తూంది. ఏవో కాస్త చలిమిడి గొంతుగులో వేసుకుంటా, జపం చేసు కుని. రెండుమంచినిళ్ల చుక్కలు వేగరం తాగలేగాని వొంట్లో ప్రాణాలు లేచిపోయేటట్లా వుంది. (లక్ష్మమ్మతో) ఏమే! నువ్వు అవియ్యం పూర్తిగా బాగుచెయ్యి.

లక్ష్మ:—అలాగే.

వెంక:—నేను వెళతా. ఇంక మరి జపంచేసుకోవాలి. (వెళ్లును)

సుబ్బ:—కూచో వదినా!

లక్ష్మ:—అత్తగా రిప్పుడే చెప్పివెళ్లారు చూసేనా వియ్యం బాగుచెయ్యమని. అంచేత కూచోనుబాటూ. వెలిపోవాలి. వెళ్లి వియ్యం బాగుచేసుకోవాలి. బాగుచెయ్యకపోతే మళ్లా యేమేనా అంటారు.

సుబ్బ:—కాస్తేవు కూచో. నేనూ సాయంచేసిపెడతాను.

లక్ష్మ:—నువ్వు సాయంచేయకర్లేదమ్మా. నాపని నేనే చేసుకుంటాను.

సుబ్బ:—ఫర్వాలేదు. కూచో కాస్తేవు.

లక్ష్మ:—(విసుగుతో) నువ్వు కూచోకుంటావు. అవిద వియ్యం బాగుచెయ్యకపోతే యేమేనా అంటారు. (కూచోనును.)

సుబ్బ:—అత్తగారిమాటమీదే నడుస్తూన్నట్టు మహాచెప్తా చేయి కబుర్లు.

లక్ష్మ:—అత్తగారిమాటమీద నడవ కేంచేస్తున్నాను?

సుబ్బ:—అవిహమాటమీదకాదు, నోటిమీద నడుస్తున్నావు. నువ్వంతగా అత్తగారిమాటమీదే నడిచేమనిషివయితే యిన్ని బెబ్బలాట రెండుకు వస్తావుంటాయి?

లక్ష్మ:—నాఖర్యం.

సుబ్బ:—నీఖర్యంకాదు, నాఖర్యం; మాఅమ్మఖర్యం. మా అమ్మ యెంతముచ్చటపడి చేసుకుందో అంత దూర మయిపోయింది, కొడుక్కి. సరా, తీరిపోయింది.

లక్ష్మ:—నువ్వు వున్నమాట, తేనిమాట అడకుమరి.

సుబ్బ:—నామీదా నువ్వు అధికారం చేసేదానివి పుట్టే విన్నాళ్లకి.

లక్ష్మ:—నా కందుకమ్మా. నా కేగొడవలూ తెలీవు. అలాంటప్పుడు వూరుకుంటేనే మంచిది.

సుబ్బ:—పోనీగాని నిన్నటికి నిన్నరాత్రి కాస్త వొంటిమీద నీళ్లొగుసు దిబ్బొకటి చేసిపెట్టలేకపోయేవా? మునిలిముండుకదా! ఆమాత్రం కనికరం లేకపోతే ఆ దెబ్బకుతుంది? నలభైయేళ్లు దాటేయకదా! అది బతకాలని మనస్సులోవున్న మనిషివేనా నువ్వు. ఉన్నమనిషివయితే అలా వూరుకుంటావా? ఒంట్లో ప్రేమ పుట్టారీకాని ఒకరు చెప్తే వస్తుందా?

లక్ష్మ:—రాత్రి స్నానంచేసి చెయ్యిలేదనేనా నువ్వనడం.

సుబ్బ:—చేస్తేమట్టుగు యేం మునిగిపోయిందని. ఉన్నపాటి నాళ్లయితే చెయ్యూ, కడుపుతోవుంటే మట్టుగు. నువ్వేగాని మరే యిల్లాలూ కడుపుతోవుండడం లేదు కమోసు. ఇంతోటివాణ్ణాకు దానినీ పుట్టేవు. (లక్ష్మమ్మ పూరుకొనును) పోనీ, యెన్నడైనా రెండు రాగిడబ్బులు నీచేత్తో దానిచేతిలో పెట్టి యెరుగుదువా? నాకు తెలియక అడుగుతున్నా, చెప్పు.

లక్ష్మ:—అయినే యిస్తావుంటేనే. ఇంతకీ నాదగ్గి రేముం వనీ, నేనియ్యడానికి మానడానికిన్నా.

సుబ్బ:—పెట్టితాళాలు మెల్లీనే కట్టుకొన్నావుకదా పుస్తెల్లాగా, పూసల్లాగా. మరెవరికీ కనపడనియ్యవుకదా.

లక్ష్మ:—నాకెందుకూ తాళాలూ, యితిల్లూ. ఆయనకే యిచ్చేస్తా, మీరే అడిగి తీసుకోండి.

సుబ్బ:—నీఅంత కుచ్చితంమనిషిని నేనూడలేదంటే నమ్ము. ముఖ్యటికీ నమ్ము. నైగాయనన్నీ అతగాడితో చెప్పి తాళాలు దానిమొహాన్ని కొట్టిస్తావా. అమండు నేడిసిస్తావా! ఇదా నువ్వుచేసి

పని. నువ్వే తాళాలు నాకువద్దు. మీ అమ్మగారి కిచ్చియ్యండి. మీఅమ్మగారికంటే నేనెక్కువా? కన్నతల్లికంటే యియింట్లో నాకెక్కువఅధికార ముందా? అని అతనితో చెప్పి ఆతాళా లిచ్చే యిద్దా. ఒకళ్లు చెప్పేకా బుద్ధిరావడం. చీనాట్లుపెట్టేక కుక్కకేనా బుద్ధిస్తుంది.

లక్ష్మ:—నువ్వన్నట్టుగానే చేస్తానమ్మా, నా కేగోలా అక్కరేదు.

సుబ్బ:—నువ్వు తాళాలు వదుల్తావా. నువ్వు తాళాలు వదిలే మనిషివే. నువ్వు తాళాలకంటే ప్రాణాలు తొందరగా వదులుతావు. ఆసంగతి నాకు తెలుసు.

లక్ష్మ:—(పుష్టిమంచి తాళాలు తీస్తూ) నాకెందుకమ్మాయీ వెగవతాళాలు. నన్ను బెబ్బలాటలు లేకుండా బతకనియ్యండి. అంతే చాలు. నాకు తాళాలావద్దు, గీతాలావద్దు. తీసుకోఅమ్మా తాళాలు. (తాళాలు సుబ్బమ్మకాళ్లదగ్గర పడనేయును.)

సుబ్బ:—అమ్మాయీ! నాయనోయీ! చచ్చేవర్రోయి, చచ్చే నర్రోయి, చచ్చేను. కొట్టేసిందర్రోయీ, కొట్టేసింది. తాళాలు మీద విసిరేసింది. (ఏమిటే ఏమిటే ఏమిటే అంటూ వెంకమ్మ వచ్చును.) నాకాళ్లు విరక్కొట్టేసిందర్రోయి, తాళాలు విసిరేసిందర్రోయి! నాకాళ్ల మీద. కాళ్లు విరిగిపోయేయర్రోయి.

వెంక:—(సుబ్బమ్మను కాగరించుకొని యేడుస్తూ) అమ్మో, అమ్మో, అమ్మో! నేనేంచేసునేతల్లీ. నువ్వెందుకొచ్చేవే అమ్మా. నువ్వు చచ్చిపోతే నేనుండలేనేఅమ్మా. నే నేగోతులోనో, నూతులోనో పడిపోతానే తల్లీ! (లక్ష్మమ్మతో) లంకా, నాపిల్లను చంపేస్తావుటే! నీపాట్లు నెట్టుకుంటావుటే. నా కొక్కమాతురేనే పచ్చగావుంది. నా కొడుకునీ, మాతురీనీ పూడా పాట్లుపెట్టుకుంటావుటే. అది చచ్చిపోతే నువ్వేంచేస్తావే. నీలాంటివాళ్లు లక్షమంది చచ్చినా నాపిల్లతో సమానంటే. నీయిల్లు వల్ల కాదుగాను. నీనాళ్లంతా నాకేనమైపోను. మీఅమ్మ చచ్చిపోను. మీనాయన బూడిదైపోను.

లక్ష్మ:—అసలు అవిహకాళ్లకు తాళాలు తగలందే.

సుబ్బ:—అమ్మాయి. ఎంతబెబ్బతగిరిందేవ్. దాని కంటెలుసు నేవ్. మోకాటిచిప్ప విరిగిపోయిందేవ్. మట్టుగోవేవ్. నేచచ్చిపోతా నేవ్. నన్ను విడిచిపెట్టేయ్యేవ్. నన్ను చంపేసిందేవ్ నీకోడలు.

వెంక:—నువ్వు నాకేనమైపోను. నీనాళ్లంతా గంగలో కలిసి పోను. మీవంకం నాకేనమవా. అలాగు కొడతావుటే పిల్లను.

లక్ష్మ:—మానాళ్ల నెండుకు తిడతారూ. కావరిస్తే నన్ను తిట్టండి.

వెంక:—నీమొగుడు సంపాదించినదంతా మీనాళ్లకు పెట్టే య్యలేదని యేడుస్తున్నావు నువ్వు. నీమొగతా చచ్చిపోతాలని నువ్వు

ప్రతిరోజూ దేవుణ్ణి ప్రార్థిస్తున్నావు. మేమంతా చచ్చిపోతే ఆనెడ వల్లి యింట్లో పెట్టుకుని కులుకుతూవుందామని చూస్తున్నావు. మేము తింటున్నామని ప్రతిక్షణం యేడుస్తున్నావు.

లక్ష్మి:—రామ! రామ! మీరు తిన్నారని నామనస్సులో నేనెప్పుడూ అనుకోండే! నమ్మండి నమ్మకపోండి.

వెంక:—ఓసి నీఅబద్ధాలు కాలిపోనూ! ఎంతదానివే నువ్వు! ఎంతకేనా తగుదువే నువ్వు! నీఅబద్ధాలు మండిపోనూ! నిజం చెప్పు! మేము తింటున్నామని యేడవడం లేదు, యేడవటం లేదుటే నువ్వు. నిజం చెప్పు. నామొహంవేపు చూసి చెప్పు.

లక్ష్మి:—నిజంగానే చెప్తున్నా. నేనెప్పుడూ మీరు తింటున్నారనీ, మీరు వున్నారనీ, యెన్నడూ యేడవలేదు.

వెంక:—మీవాళ్లందరిమీదా వొట్టేసుకుచెప్పు. మీవాళ్లంతా చచ్చేరని వొట్టేసుకు చెప్పు చూతాం.

లక్ష్మి:—మావాళ్లంతా యెందుకుచస్తారూ. మావాళ్లం చేసేరనీ చావడానికి. ఎన్నితెలు తిట్టినా నన్ను తిట్టండి కాని వాళ్ల నేమనకండి. వాళ్లంచేసేరూ మిమ్మల్ని. మిమ్మల్ని యెప్పుడేనా 'కాదు' అన్నమాటేనా ఆడియెరుగుదురా? వాళ్ల నెందుకు తివతారూ? నన్ను తిట్టండి. కావలసినన్ని తిట్టండి.

వెంక:—(సుబ్బమ్మవైపు తిరిగి) చూసేవా దానితమాష! అది అలాతెంచి జవాబుచెప్తావుంటే నే నేంమాటాడగలనమ్మా. నానో రెండుకు పనికొస్తుందమ్మా. మాటకు పదిమాటలు జవాబు చెప్తాంది. దాని రాక్షసికోటిముందర మననోళ్లు పనికివస్తాయా! ఇదిగో! యింట్లో చెప్తున్నా. నువ్వు పెండ్రాడే చస్తే నాకొడుక్కి తిరిగి పెళ్లిచేసుకుంటా. అందరం సుఖంగా వుంటాము. నీకార్థంనాడు పరవాణ్ణం వండుకుంటాను.

సుబ్బ:—అ దెప్పుడేనా నిన్ను అత్తగారూ అని పిల్చియెరుగునుటే. దానినోరు పుచ్చిపోనూ! దానినోరు మండిపోనూ! దాని వాళ్లు నాశనమవా! మళ్లా పెళ్లిచేస్తేనేగాని మాఅన్నయ్యకు సుఖం లేదమ్మా. నాడు బతకడమ్మా. వాడింక చచ్చిపోతాడమ్మా.

లక్ష్మి:—అలాంటిమాటలు యెందుకూ అనడం. నన్ను తిట్టండి యెన్నయినా.

వెంక:—నీవల్లే వాడు చచ్చిపోతాడు. నీవల్లే వాడు దేశాలంట పోతాడు. మవ్వే వాడిని మింగేస్తావు. మవ్వే వాడిపాలిటి యమరాలివి. నిన్ను నూకాలమ్మ యెత్తుకుపోనూ!

సుబ్బ:—అయినా యిది మనని తేకకాల్సుకుంటుండే. ఇది భుక్తుడనీ మింగేస్తుండే, యింక. ఎందుకూ, మాఅన్నయ్యవచ్చేక నాడితో చెప్పు. ఇదిగో, యిలాంటిలా జరిగిందని.

వెంక:—వా దొచ్చినవంటనే యెలాగా చెప్తాడు. చెప్పి దీన్ని యెలాగా చంపించేస్తాను. (లక్ష్మమ్మతో) నీకూ వాడికి యెడబాటులు చెయ్యకపోతే నాకేరు మారుపేరెట్టు. వాడిచేత నిన్ను కొట్టి చంపించెయ్యకపోతే నేను బ్రాహ్మణజన్మ యెత్తలేదు, చండాలుడికి పుట్టేననుకో. ఇదే నాపంతం.

సుబ్బ:—అమ్మా, యెందుకే యింక. నాఖర్కం, నీతలారా, వాడిఖర్కం. అది యింట్లో కాలుపెట్టినప్పటినుంచి యిప్పటిదాకా యిలాగే యేడుస్తున్నాం. మనం బతికున్నాళ్లా యిలాగే యేడుస్తాం. దానిజీవాని కేడుస్తూనే వుంటాం. ఎంతేడ్చి యేంప్రయోజనం? ఇంకెందుకుగాని, నువ్వు వెళ్లి జపం చేసుకో. ఉపవాసం, ఉపవాసంతో పున్నమనిషిని యిలాచేసినందుకు దేవుడు నాకు తగిన శిక్ష వేస్తాడు. ఎంతనొప్పిపెట్టినా యేడవకుండా నోరుమూసుకుని పూరుకోవలసింది. ఊరుకోలేకపోయేనే అమ్మా! సామ్రాజిలి పోతాననుకున్నానే అమ్మా! చచ్చిపోతా ననుకున్నానే తల్లీ! నిన్ను మళ్లా కళ్లతో చూస్తూ ననుకోలేదే అమ్మా! నుద్దు లేలేనేనే అమ్మా! చచ్చిపోయేననుకున్నానే తల్లీ! ఎందు కింక. అమ్మా, నువ్వు వెళ్లి జపం చేసుకో. నామాట విను. పద.

వెంక:—(లక్ష్మమ్మతో) నావంటి ఋషివంటిదాని జపం చెవ్వొట్టినందుకు నువ్వు, నీపుట్టింటివాళ్లా కూడా బుద్ధయిపోకపోతే నాకేరు వెంకమ్మకాదు. ఏమిటే! నే నెవరనుకుంటున్నావే. నావంటి పుత్రమురాలిని, నావంటితపోవాలిని ఊభపెట్టినందుకు నీవాళ్లు వృద్ధికొస్తారుటే. నాశనమైపోరుటే! ఋషుల్ని భాదపెట్టినవాళ్లు యెక్కడేనా బతికివున్నారుటే.

సుబ్బ:—(వెంకమ్మచేతులు పట్టుకొని) శాంతించు. శాంతించు. తల్లీ, శాంతించు. ఋషిని నువ్వు. సామాన్యురాలివి కాదు. నీమహిమ అల్పురికి తెలీదు. నావంటివాళ్లకి తెలుస్తుంది. మహాప్రభో! నువ్వు కోపించనూడదు. కోపించకు. కోపించకు. వాళ్లెలాగా నాశనమైపోతారు. దేవుడే వున్నాడు వాళ్లవంశం దుంపనాశనం చేసెయ్యడానికి. అందుకనే యిలాంటి పని చేయించేడు దానిచేత. (చేతులు విడిచిపెట్టి) నావంటి సత్తెమైన యిల్లాలిని, మహాపతివ్రతను, పరపురుషుణ్ణి యెరుగనిదాన్ని, నావంటి దాన్ని భాదపెట్టినవాళ్లు యెన్నడూ ముందుకురారు. రారంటే వమ్ము. ఎప్పుడేనా ముందుకొస్తారుటే. వాళ్లు నాశనమైపోరుటే, ధ్వంసమైపోరుటే.

వెంక:—చూడు యెలాగా యేడుస్తూందో, దానిమొహం కార్చియ్యా. అది మంగళవారంనాడు, శుక్రవారంనాడు తప్ప మరొకప్పుడు యేడవనేయేడవదు. దానివతిజ్జ అది. మన నది సర్వ నాశనం చేసెయ్యాలని చూస్తూంది. కాని దానివాళ్లే కాళ్ళోగిరికి పోతారని యెరుగకుండావుంది.

(లక్ష్మమ్మ యేడుస్తూ వెలిపోవును. చామలు వచ్చును.

చామలు సోములత్రి. నలభైయేళ్ల మనిషి. మురికిగుడ్డలు. కంపుకొడుతూవుంటుంది.)

వెంక:—(చామలుతో) ఇప్పు డెంతరణరావణయుద్ధ మయి పోవాలో అంతయుద్ధ మయిపోయింది. మమ్మల్ని చంపెస్తానని అది కత్తియైంది. హా! హా! వద్దన్నాము. అప్పటికీ యిద్దరం పిమ్మనల్లాంటివాళ్ల మున్నాముకాబట్టి యెలాగయితేయేం కిందపడి మీదపడి దానిచేసుల్లోంచి కత్తి లాక్కున్నాం. లాక్కుని ఆమట్టుగు పెట్టో దాచేసేం. ఇంక బతికేంకదా అని అప్పు డనుకున్నాం. అప్పటికీ మాపిల్లకి మోకారికి తగిలింది వెనకండు. ముందుఅంచు తగిలితే కా లక్కడికి యెగిరిపోవలసిందే.

చామా:—(ఏచారంతో) అమ్మత్తల్లో! ఎంతపనిజరిగిందమ్మా!

వెంక:—ఎంతపని జరిగిందేమిటే, చచ్చి బతికింది పిల్ల. మళ్లా పునర్జన్మమైంది.

చామా:—మా సెడ్డదెబ్బ తగిలించమ్మా!

వెంక:—మాపిల్లను నేను కళ్ల చూస్తూ ననుకోలేదమ్మా. నాబిడ్డ కేవలం నాఅదృష్టంవల్లే బతికివుంది. పూర్వజన్మాన నే చేసుకున్న సుకృతంవల్లే బతికివుంది. అది మమ్మల్ని చంపివెయ్యాలని చూస్తూంది.

సుబ్బ:—ఎందుకమ్మా చెప్పుకోడం. ఇంటిగు టైప్పుమా చెప్పుకోకూడ దన్నారుపెద్దలు. అందుకే రెండుచేతులా నోరుమూసు గుని వూరుకోడం. అంచేత నే నేడవలేదు, ఇంతదెబ్బతగిలినా. సామ్య సిలిపోవలసిందే.

చామా:—అయ్యోబిడ్డా!

వెంక:—నీమేచామలూ! మీకోడలు నీతో యెప్పుడైనా దెబ్బలాడుతుందిటే.

చామా:—మాయమ్మా? నాతో దెబ్బలాడడమేనండి! దెబ్బ లాడితే బతికుంటుంది! కాపసుతరిగేసినట్టు తరిగెయ్యనండి. నేను మాకోడలిని కొడతానేవుంటానండమ్మా. కొడితే సీపురుగ ట్టిరిగి పోద్దండి. నిన్న పులుగులూకి దుమ్ములులేకుండా కొట్టేనేనండి. నన్నేదో ఆడిందని.

వెంక:—(ఆశ్చర్యంతో బుగ్గలునొక్కుకుని) ఎంతఅదృష్టం! ఎంతఅదృష్టం! ఆహా! (సుబ్బమ్మవైపు తిరిగి) చూసేవేపిల్లా. అలా గుండాలమ్మా. అలాకొట్టకపోతే లాంగుతారా? ఎన్నటికీ లాంగ రనుకో. ఒకమాటి కొకమాటు తగలనిస్తూవుండాలి. అయితే నీకొడు కేమీ ఆనడుటే చామలూ, నువ్వుకొడుతూవుంటే.

చామా:—అడే కొట్టమంటాడండమ్మా. తప్పాస్తే ఆడే సంపెయ్యమంటాడండమ్మా.

వెంక:—(బుగ్గలునొక్కుకుని) ఎంతపుణ్యం! ఎంత పుణ్యం! ఎంతఅదృష్టంచేసుగుపుట్టేవే, కోడల్ని కొట్టడానికి. నీకేనా అతికారముంది కాని నాకు లేదు. మాయింట్లో మాకోడల్ని కొడితే మావాడు చంపెస్తాడేమో అనిభయం. అంచేతే దాని కొక దండ మెట్టేసి వూరుకుంటున్నా. దానికి నాదగ్గర పీమలకాయంత భయం లేదంటే సమ్మ. మాటకిముందు యెదిరించడం, పెడసరం జవాబులు చెప్పడం, తిట్టడం. నేనూ నీలాగే కొడుతూవుంటే అది యిలాచేస్తుందా చెప్పు చూతాం? గజగజ వణికిపోయా నాకేరు చెప్పేటప్పటికి. నన్ను చూసేటప్పటికి శవంలాగు వారిపోయా. మరి యేదీ అలాజరుకుతూందా? దానికి భయం లేందే. ఏకోకాన్నీ నేనంటే బెదురులేందే. నువ్వు యెంతో పుణ్యం చేసుగు పుట్టేవు. మహాఅవృష్ట వంతురాలివి, శూద్రదానివైతే అయేవుగాని.

సుబ్బ:—దానిపుట్టుక మన కెక్కడొస్తుందమ్మా. చెప్పబ్రాహ్మణజాతి. దరిద్రపువెవజాతి. ఈ జాతిలోపుడితే సుఖమెక్కడ?

చామా:—నిజమేనండి. ఇప్పుడు బ్యామ్మర్లంతా యింతే నండి. మానూద్రోళ్లే నయమండి. (కొంతనేవయేక)

వెంక:—(సుబ్బమ్మతో) ఏలాగుంది పిల్లా నీకాలు?

సుబ్బ:—అప్పడే యేనింపాదమ్మా! అప్పడే యేనిం పాడే తల్లీ. ఇంతకీ నా దొక్క బుద్ధిపారపా టాచ్చిందంటే నమ్మ. ఇక్కడికిరాకముందు నువ్వు నాతో చెప్పనేచెప్పేవు 'దానితో మాట్లాడుతూవుండక' అని. నాడేబుద్ధిపారపా టాచ్చింది. నీమాట వినకపోవడమే యింతముప్పొచ్చింది.

వెంక:—దానిజోలి కెల్లాదే అని నీకు మొగటే చెప్పేనా చూసేవా యెంతమట్టు గొచ్చిందో. అందుకే దాన్ని బియ్యంబాగు చెయ్యిపో అన్నాను, నీతో కబుర్లుచెబుతూకూచుంటుండనే.

సుబ్బ:—అమ్మా, నేను చెబుతూనేవున్నామకదూ. నావల్ల బుద్ధి పారపా టాచ్చింది. నాబుద్ధి గడ్డితింది. ఇహనై నా బుద్ధితెచ్చుకుంటా. మ రింక మైకంలో పడిపోను. పడిపోను. ఎందుకమ్మా, వెళదాంరా. ఎందు కీకవణాగరం. పోదాంరా, జపం చేసుకుందూ గాని.

వెంక:—ఇంకంజపమే తల్లీ! నాజపాలన్నీ బుగ్గయిపోయే యిలాంటిబతు కొచ్చింది.

సుబ్బ:—చెంబుడునీ ల్లోసుగుని యింతచలిమిడి నోట్లో వేసు గుందూగాని రా. అమ్మా! లే.

చామా:—ఎదో మాంస తాగండమ్మా. ఇన్ని పల్లనినీళ్లు తాగి నా కడుపులో పల్లగుంటుండమ్మా.

వెంక:—నాకు పెండివడ్లు లిగ్గివడ్లు. (సుబ్బమ్మతో) నీవంటి దానిభాద చూసేక నాకు యేమివడ్లు, అభిరికి పచ్చిమంచినీళ్లనా

వద్దు. ఇలాగే పస్తుపడుక్కుంటూ, వునూరుమని. దేవుడా యింత చేస్తేవా అని కడుపులో కాళ్ళెట్టుగు పడుక్కుంటూ.

సుబ్బ:—అలాగు కావమ్మా! కాస్త నోట్లోవేసుకుంటూగానిలే.

చామ:—రెండవమ్మా. కాసిన్నిమంచీళ్లు తాగండి. ఆకలి తీరదీ.

చెంక:—నేను రాను.

సుబ్బ:—నువ్వుతినకపోతే నేనూ యివ్వకరాతి తినను.

చెంక:—అమ్మాయి! నువ్వుమా నెయ్యివడమే! నాతల్లి, యింత చిన్నతగలేక తిండితినికపోవడమే!

సుబ్బ:—అయితే రామరి.

చెంక:—(లేచి) ఎదో యింత మింగుతాను దానికార్థం మింగి నట్లు, పద. (ముగ్గురూవెళతారు.)

3-వ రంగం

[సాయింత్రంపూట లక్ష్మమ్మ లాంతర్లు తుడ నూపుండును. రత్నమ్మ వచ్చును.]

లక్ష్మ:—రండివదినగారూ! యేదేనా పనిమీద వచ్చేరా యేమిటి?

రత్న:—లేదమ్మా. ఊరికే వచ్చేను, ఒక్కక్షణం మాచుని పోదామని. ఇంటిదగ్గర వొక్కర్తినీ మాచుంటే యేమీ తోచడం లేదు. అంతే బయలుదేరి చక్కావచ్చేను.

లక్ష్మ:—ఇలా మావోండి యీబల్లమీద.

రత్న:—ఎందుకమ్మా! కిందే మాచుంటాను. (మావొనును.)

లక్ష్మ:—చూస్తూనేవున్నారకదూ, మా నాటకమంతా.

రత్న:—(రహస్యంగా) ఇంట్లోలేరా యేమిటి మీఅత్తగారూ, ఆపవడుచూ?

లక్ష్మ:—ఇప్పుడిప్పుడే బిందెలు పట్టుకు కాలవకల్లేరు.

రత్న:—ఒకరువెళితే సరిపోకాయేమిటి యిద్దరూవెళ్లడం.

లక్ష్మ:—ఒకరికొకరు తోడు. నామీద నేరాలు చెప్పు గుంటూ వెళ్లిచ్చు. ఎంతదూరంవెళ్లినా యింతేనా అనిపిస్తుంది. అందుకోసమని యిద్దరూ వెళ్లడం.

రత్న:—నాళ్ల మొహం యీడ్చిరిలే.

లక్ష్మ:—మొన్న జరిగినయ్యద్దం చూసేరా!

రత్న:—ఇదేమియ్యద్దమమ్మా! రెండుపక్షాలవాళ్లూ వుంటే య్యద్దంకాని లేకపోతే య్యద్దమేమిటి నామొహం! రెండుపక్షాలూ లేండే! ఒకపక్షమే య్యద్దంచేస్తూవుండడం; రెండోపక్షం వూరు కోడం. దీన్నే కాంతియ్యద్ద మంటారు పత్రికలవాళ్లు. గాంధీమహా తుడు చెయ్యమంటూన్న దీరకంయ్యద్దమే.

లక్ష్మ:—ఏదో కాంతియ్యద్ద మనండి, నావల్లకా దనండి. నన్నుమాత్రం కావ్యుకుతినడం తప్పదుకదా! మొన్నటియ్యద్దమంతా విన్నారా?

రత్న:—వినకేం. పూసగుచ్చినట్టు మీ అత్తగారే చెప్పింది. అవిడచెప్పినదంతా తారుమారు చేసుకుంటూ అర్థం చేసుకున్నా. ఇన్నిఅబద్ధాలు యేలావస్తాయమ్మా అవిడనోటంట! అవిడిది మనిషి జన్మ కాదేమో!

లక్ష్మ:—మా ఆయన యింటికి వచ్చిరావడంతోనే అవిడ వున్నవీ లేనివీ చెప్పి ఆయనచేత నన్ను కొట్టింది నామా ఆయనకి యేడబావులు చేస్తారు.

రత్న:—(బుగ్గలు నొక్కుకుని) అమ్మయ్యా! ఎంతమాట!

లక్ష్మ:—నన్ను చంపించెస్తారు.

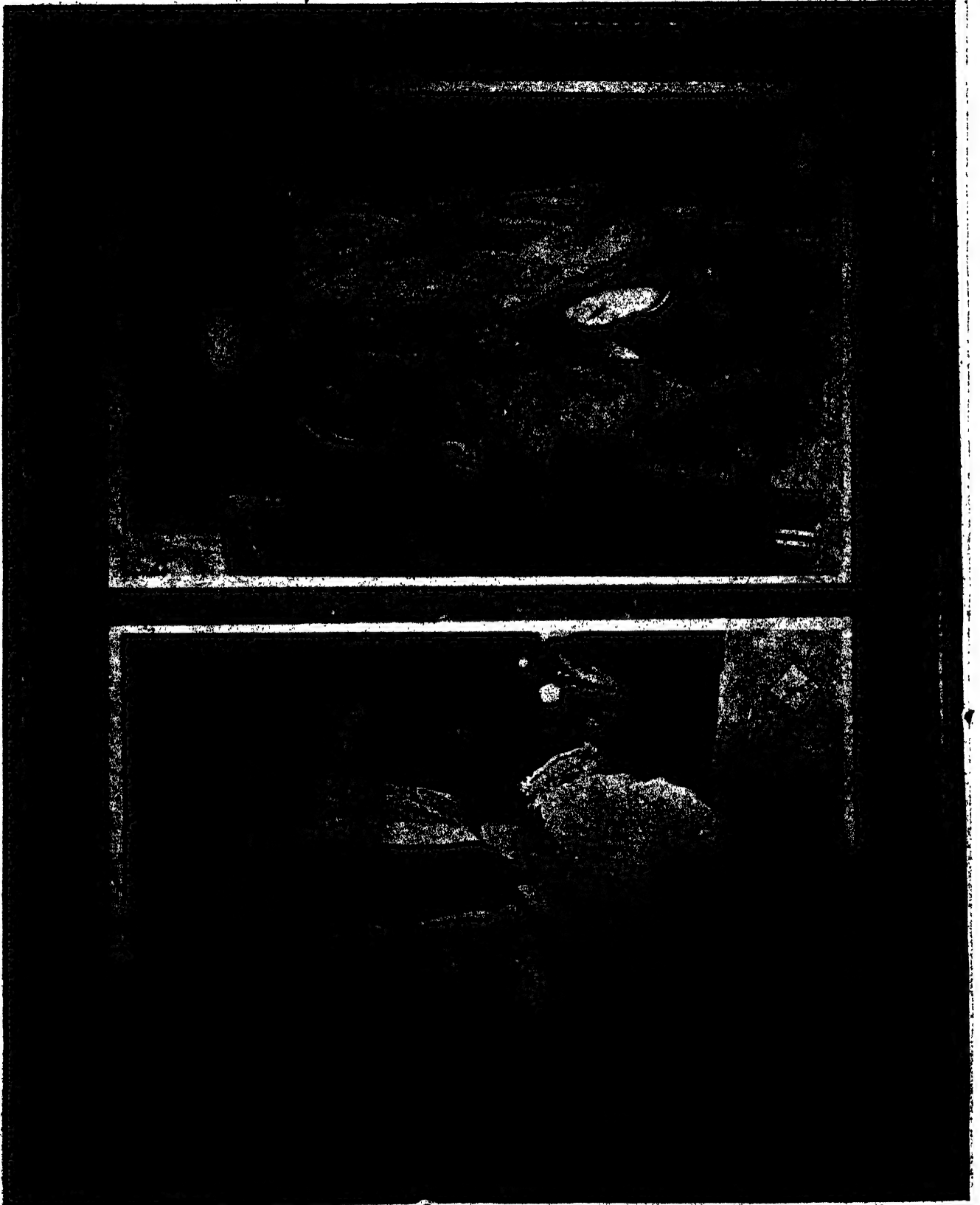
రత్న:—ఇంకేం, చాలాబాగుంది. దానికేంగాని, నేనోహటి చెప్తాను. ఏమిటంటే—

లక్ష్మ:—అమ్మా! నన్నెన్నిభాదలుపెట్టినా నేనోర్పుకుంటా కాని, పిల్లరినిపెడిలేమట్టుకు నే నోర్పుకోలేను. వాళ్ల నెందుమా పోగుడ్డల్ని భాదపెట్టడం. నాకు సరే, తిండి తిన్నగా పెట్టవడమేలేదు, వాళ్లు తింటూన్నంతసేపూ నేను నిశ్చింతం, నిలువుతీరమిస్తూన్నట్టు. వాళ్లిద్దరూ తిన్నాక యేదోరెండుమెతుకులు నాకు పారెస్తారు. ఉత్తన్నం బుక్కలేకుండా చచ్చిపోతున్నా. పోనీ నాకేం పర్వా లేదు. ఇంతట్లోకి చచ్చిపోను. మరి పిల్లరిసంగతో. వాళ్లకి అంతే. ఆపాడిమెతుకులు వాళ్లకి పెట్టలేక యేడుస్తున్నా. నిన్న మీయింటికి పచ్చడికోసం రావడం పిల్లలకోసమనే. నన్నెంతకాల్చుకు తిన్నా కిమన్నాస్తే, యేమనను. పిల్లలి నెలా మాడ్చి చంపనమ్మా, పసి గుడ్డల్ని.

రత్న:—అమ్మా! అంతా వింటూనేవున్నాను. నువ్వుపడే భాదలు చూస్తే రాళ్లనా కరిగి యేడుస్తాయి. మరి మనుష్యులమాట చెప్పే దేమిటి. ఇంతకీ నే వొకటిచెప్తా చెయ్యి. 'ఇలాయిలాగుంది. ఇలాగిలాగు భాదలు పెడుతున్నారూ, అత్తామాతూరూ కలిసి. నేను బతకలేను. కాబట్టి మీరు యీవుత్తరంచూసిన తక్షణం బయలుదేరి రావలసింది' అని మీఆయన కోవుత్తరంముక్క రాయి. రాసి మీ బంట్రోతుచేతి కిచ్చి పంపించు వెంటనే. విన్నావా?

లక్ష్మ:—ఆయన యేమేనా అంటారేమో?

రత్న:—నీకెందు కాభయం? నే నున్నా, సరే. అంతమట్టు కొస్తే తెగబడి వచ్చి నేనేచెప్తా. ఇహ అలాంటినాటిలో వూరుకునే మనిషిని కాను. అవసరమొస్తే నేనే చెప్తా యిలాయిలాగు జరిగిందని. విన్నావా? అంతేర ఇహా ఒకవుత్తరం తక్షణం రాసివేస్తే, మీఆయన కొకటి, మీఅమ్మగారికొకటి ఒకటి రాసివేస్తే వడెయ్యి. ఆలాచేస్తే



(1) 1. పి. శి. చింతూరు శాశ్వతావస్థ శ్రేణిగారు. 2. పి. శి. చింతూరు శాశ్వతావస్థ శ్రేణిగారు పంతులుగారు,



1. కీ. వీ. బాలసరస్వతి ఇంటూరి పద్మావతి దేవిగారు. 2. కీ. వీ. మల్లంపల్లి కారదాంబగారు.

మరిమందిది. ఇక్కడ సంగతు లిలాగున్నాయి, నాకు సెలలు నిండియి కాబట్టి నువ్వవచ్చి నన్ను తీసుకువెలిపోవలసింది' అనిరాయ.

లక్ష్మ:—మాఅమ్మకిమాడా రాయమంటారా?

రత్న:—మీఅమ్మకొకటి, మీఅయనకొకటి, రెండు రాసెయ్యి. తక్షణం రాసెయ్యి. మీఅమ్మకినింపాదిమీదేనా రాయెచ్చలే. ఆట్టే తొందరలేదు. మీఅయనకిమట్టుగు యిప్పుడు మాచున్న పాళంగా రాసేసి సోములికిచ్చేసి పంపించెయ్యి. విన్నానా మరి? మీఅత్తగా రొస్తుందింక, మరి నేను వెళుకున్నా. మొట్టమొదట మీ అయనకి వుత్తరంరాసి పంపించెయ్యి.

లక్ష్మ:—అలాగే.

రత్న:—మొట్టమొదట వాస్తోస్తారు. రాసెయ్యి మొదట.

లక్ష్మ:—ఉం. వెళుకున్నా. (రత్నమ్మ వెళ్లును.)

(లక్ష్మమ్మ కలం కాగితం తెచ్చుకుని వుత్తరం రాస్తూవుండును.

కొంచెంసేపయ్యే సోములు వస్తాను.)

లక్ష్మ:—సోములూ, నువ్వు కాస్తేపు అవతల మాచో, యిప్పుడే పిలుస్తాను, పనివుంది.

సోము:—చిత్తమండమ్మా? (వెళ్లును.)

లక్ష్మ:—(తనలో) మాఅమ్మకి రాసేవుత్తరం యింకా పూర్తవలేదు. మరోరెండుముక్కలు రాయాలి. ఈవుత్తరం పోస్టులో వెయ్యాలి కనక దీనికేం తొందరలేదు. మొదట మాఅయనకి రాసిన వుత్తరం సోములుచేతికిచ్చి పంపించెస్తాను. సోములూ!

(‘అమ్మగారూ’ అంటూ సోములువస్తాడు.)

సోములూ!

సోము:—అమ్మా!

లక్ష్మ:—మరేమో ఆర్జింటుపనివుంది.

సోము:—అమ్మా!

లక్ష్మ:—ఈవుత్తరం తీసికెళ్లి మీఅయ్యగారికి యొక్కడుంటే అక్కడ యిచ్చేసిరా. విన్నావా?

సోము:—అమ్మా! అయ్యగారు యేపూర్ణమకాంసేనేరో యేంటోనంది.

లక్ష్మ:—వెళ్లి కనుక్కో. ఆఫీసులో కనుక్కుంటే తెలుస్తుంది. గుమాస్తా మంగయ్యగారి వద్దను. అడిగి ఆవూరికివెళ్లి యీ వుత్తరం యిచ్చేసిరా. ఇప్పుడే వెయ్యాలిదేదు. వెళ్లు. విన్నావా? (ఈవుత్తరం సోములుచేతి కిచ్చును.)

సోము:—చిత్తమండమ్మా.

లక్ష్మ:—చిట్ట మిరి. బయలుదేరు.

సోము:—చిత్తం. చిలకండమ్మ యెల్లావైతనంది. (వళతడు.)

లక్ష్మ:—(తనలో) మాఅమ్మకి రాసినవుత్తరం రేపుపాడున్న పూర్తిచేసి పోస్టుకు పంపించెస్తా. ఇప్పటిమట్టుకు యెవరికి తెలికుండా యిది నాపక్కకింద దాస్తాను. (లక్ష్మమ్మ వెళ్లును.)

(వెంకమ్మ, సుబ్బమ్మ నీళ్లబిందెలతో వచ్చి వంటగదిలో బిందెలు దిండుగుంటారు.)

వెంక:—ఏదీ యొక్కడికివెల్లంది యిది?

సుబ్బ:—ఏమో! యొక్కడికిపోయిందో! అత్తభయమా, మొగుడిభయమా, మరెవరిభయమా! (లక్ష్మమ్మ వచ్చును.)

లక్ష్మ:—గదిలో లాంతరు తుడుస్తున్నాను.

వెంక:—ఇప్పు డేంతోందరొచ్చింది దొరసానిగారికి.

సుబ్బ:—అనిడికేం మహారాణి. నీలాగా నాలాగా అనుకున్నా వులే ముచ్చివకుక్కి. ఎప్పుడైనా పెట్టిపుట్టాలమ్మా. అదిలేందే అడుక్కులేనేబతుకే అయిపోతుంది.

(నీతమ్మవచ్చును. నీతమ్మ లక్ష్మమ్మతల్లి. నలభైయేళ్ల మనిషి. లావుగావుండును. పునిస్త్రీ. నవ్వుమొహం. చురుకైనకళ్లు.

అవిడవెనక బండివాడు పెట్టే, మూట పట్టుకువస్తాడు. వచ్చి కిందపెట్టి ‘అమ్మా, డబ్బులు చేసిప్పించండి. యిదిలో యెద్దరి పొద్దండి’ అంటాడు.)

నీత:—(లక్ష్మమ్మతో) పిల్లా! ఈపావలాతీసుకుని బండి వాడికి రెండవారియ్యి.

లక్ష్మ:—అక్కర్లేదులే. నాద్గిర చిల్లరుంసి. (చిల్లరలేవడానికి గదిలోకి వెళ్లును.)

వెంక:—ఏం వదినగారూ! ఇంతఅతాత్తుగా వచ్చేనేరు?

నీత:—మీఅబ్బాయి వుత్తరంరాస్తేనే, వచ్చి పిల్లని మీయింటికి తీసుకువెళ్లండని.

వెంక:—ఆమధ్య రాస్తావని నాతో అన్నాడు మరి, రాసే డనుకోలేదు.

(లక్ష్మమ్మవచ్చి బండివాడికి డబ్బులిచ్చును. బండివాడు వెళిపోతాడు. లక్ష్మమ్మ పిల్లాడిచొక్కాకుగుత్తా నిలుచుండును.)

నీత:—(సుబ్బమ్మతో) ఏంకోడలా! కుఖంగావున్నాతూ?

సుబ్బ:—మీఅయ్యవల్ల.

నీత:—మాదయేమిటమ్మా. అంతా దేవుడిదయ్య.

సుబ్బ:—ఏమో ఆనాడారం నాకుతెలిదు.

నీత:—కాలం మర్చిపోని ఆలంటిని తెలివు. మాలంటి వాళ్లకు తెలుస్తాయి. ఏంవదినా! నిజమేనా?

వెంక:—అప్పడే నన్ను ముసిరిదాన్ని చేసేనేవుంటావా; ఎంత మందిపిల్లల్నికన్నా! మీరంటే ముత్యంలాగ ఒక్కొక్కడుమని, ఒక్కొక్కరున్నా కన్నాదురు

నీత:—అందిపెట్టలేక. మీలాగే భాగ్యవంతులమయితే మరింతమంది కందుము.

వెంక:—అదంతాయేమిటి మమ్మల్ని ఆశ్చర్యపడతే. మాకే భాగ్యమంది మీవలేదని. అంతేనా?

సుబ్బ:—ఎవళ్ళకీ భాగ్యమంటే వాళ్ళరింటారు. అంతేగాని వాళ్ళకీ పెడతారాయేమిటి? సుర్రానికి తోకవుంటే తనువిసురుకుంటుంది. అంతేగాని సాలలోవున్న సుర్రాలన్నిటికీ విసురుకుందాయేమిటి?

నీత:—కోడలు అత్తగారివేపు మాటాడుతుందిటమ్మా యెంతమంచిదైనా?

సుబ్బ:—అయితే మీరన్నమాటలకర్థం అత్తగారు మంచిదనా, కోడలుమంచిదనా?

నీత:—మీపిల్లరి కాలధాలన్నీ తెలుస్తాయి, మాకు తెలివు మేమొక అర్థంతోటే మాట్లాడుతాము.

సుబ్బ:—అది యెదుటివాళ్ళ మొహంమీద యిరవై అర్థాలతో పోతుంది.

వెంక:—మాపిల్ల మీగుట్టంతా బైటపెట్టేస్తాంది.

నీత:—ఎన్ని అన్నా కోడలిదే మీదుతెయ్యయితే అత్తగారికి సంతోషమే, తనకంటే మంచికోడలిచేతిలో సంసారంపెట్టేనుకదా అని.

వెంక:—మీమాటల కేరలెండి.

సుబ్బ:—అదేమిటేఅమ్మా! వియ్యపురాల్లానే మంచినీళ్లు జాహానికిచ్చి కాళ్ళకడుక్కుంటారా అని అడగవు. మాచోబెట్టి పీటవెయ్యవు. ఇదేమికోద్యమే.

నీత:—చూసేరా కోడలిమాటలు!

వెంక:—రండివదినా! కాళ్ళకడుక్కుని మించినీళ్లు తాగుదురుగాని.

సుబ్బ:—పదండి అత్తా.

నీత:—ఉర. పదమ్మా కోడలా. (అంతా వెళతారు.)

ర - వ రంగం

[సాయంత్రం 4 - గంటలప్పుడు వెంకమ్మ, సుబ్బమ్మ, నీతమ్మ, లక్ష్మమ్మ సావిట్రి మామంటారు. నీతమ్మ వూరికి మామండును. సుబ్బమ్మ వూలుకుట్టుకుంటూ వుండును. వెంకమ్మ, లక్ష్మమ్మ వియ్యంలో వడ్లూ, బెడ్లూ యేరుకూవుంటారు.]

నీత:—ఏంవదినా! యీమళ్ళ రామేశ్వరంయాత్ర చేసావ్త నన్నాడు. చేసావ్తరా యేమిటి?

వెంక:—చేసావ్తను! నాబతుక్కి యాత్రలుసూడను! నాబతుకే వోకయాత్రలా వుంది. ఇల్లు సుష్టుగా వుంటే యాత్రలుగాని లేకపోతే యేమియాత్రలమ్మా! ఇల్లు సుష్టుగావుంటే యేన్నే నాయాత్రలు చేసినట్లును. లేంటే యాత్రలేమిటి నాపించాకుడు!

సుబ్బ:—సంసారం చక్కబెట్టుకునేటప్పటికే అంతా కూంది మాఅమ్మమని. తలప్రాణం తోకొస్తూంది.

వెంక:—అంటే అనకూడదుగాని మీమాటలు యింట్లో కోరికాపరం చేస్తూంది.

సుబ్బ:—నిజంబెప్పాలసానే మీమాటలు కోడలమయ్య కావరం చేస్తూంది. ఆమాట తెప్పకతప్పదు. మాఅమ్మకాబట్టి అలా భరించుకొన్నాంది తల్లీ. మరొకయిల్లాలైతే యీపాటికి తోకతెంపుకుని దేశాలంట పారిపోను.

వెంక:—అమ్మా! నేనెప్పుడూ అబద్ధమాడియేరగను. జిహ్వ కోనేసినాసరే అబద్ధమాడను. నేనూ పిల్లరిదాన్ని, చూసేరామరి. మీకేకనక యిలాంటికోడలుంటే పడేళ్ళిందటే యీలాకం విడిచిపెలోకానికి వెళ్లిపోదురు. నన్నెలామాయచేసి పెళ్లిచేసేరో, కన్నుకప్పి పెళ్లిచేసేరు. ఆమాయలవాడు చేసేడు. లేకపోతే కళ్ళారా చూసి చూసి చేసుకుంటానా యిలాంటిదాన్ని.

నీత:—నిజమేనమ్మా, మామా కళ్ళుకప్పినేడు. లేకపోతే యిలాంటివాళ్ళతో సంబంధం చేసుకుంటామా?

వెంక:—మాత ప్తేమొచ్చిందమ్మా అలాగంటున్నావు?

నీత:—మాపిల్లతప్తేమొచ్చిందో తెప్పండి ముందర.

వెంక:—మీపిల్లంత పరమభండాలురాలు లేదు.

సుబ్బ:—అది పరమకుంటరి. అత్తగారిని కాల్చుకుతినడానికి పుట్టింది. మలమల మాడ్చేస్తూంది అందరినీ.

నీత:—(సుబ్బమ్మతో) ఊరుకోవమ్మా పెర్రీ మొర్రీగా మాటాడక.

లక్ష్మ:—ఎందుకే అమ్మా చాదన.

సుబ్బ:—(కోపంతో) నేను పెర్రీమొర్రీగా మాటాడుతున్నానా, మీరు పెర్రీమొర్రీగా మాటాడుకున్నారా? ఇదేం అనకొచ్చి కాదు, అతికారంవెయ్యడానికి. ఇక్కడ రుదీసిపోయి మీకాళ్ళ పట్టుకునేవా న్నెవ్వరూ లేరు. కొంచెం కింమామీమా చూసి మాట్లాడండి.

నీత:—నువ్వు కాస్త అలాగే మాట్లాడుకూవుండు.

సుబ్బ:—నాకా విజ్ఞానం తెప్పడం. నాకుటమ్మా మత్తుమత్తుమత్తుమత్తు, తాతకు దగ్గుబాళివ్వడం. నీమిట్టి నమ్మ దిద్దుకావుటమ్మా.

వెంక:—అది కాపరానికొచ్చిందిమొదట యంతవరకూ (చేటలోనుంచి వియ్యపుగింతతిక్తూ) వియ్యపుగింతవరకు చేసిపెట్టే గదు. ఎప్పుడూ పిండి నేనీకదా రాత్రుళ్లు వండుకోడం.

సీత:—ఏమిట్లా నిజమేనా? (లక్ష్మమ్మ పూరుకుండును.)

సుబ్బ:—మాననా ఎంతముద్దరక్కరాలలాగ పూరుకుందో. తప్పు తనమీద వుండికాబట్టి పూరుకుంది. లేకపోతే పూరుకుంటుందా? పూరుకుంటుందిటమ్మా. మానం అంగీకారం అన్నాడు. అదే నిజంకాకపోతే యీపాటికి మాజాత్తు పట్టుకు మమ్మల్ని నేలను రాసేడు!

సీత:—ఇ చెక్కడి ఆడపడుచువమ్మా! ఇన్ని నో క్లెక్క దున్నాయమ్మా సీత! మాటకి పదహారుమాట లంటున్నావు!

లక్ష్మ:—ఊరుకోవేలమ్మా అంటే సీతకాదులే చెప్పడం?

సుబ్బ:—న న్నొక్కమాటంటే నేను పూరుకునేది లేదు. నే నొక్కమాటపడను. కావలిస్తే మీకూతురు ననుకోండి, మీఅల్లుడి నను కోండి, మీవియ్యపురారి ననుకోండి, ఊరందరినీ అనుకోండి. అంతే గాని నన్ను నాటం కాదు. ఇదే పదిసార్లు మీకు చెప్పడం.

వెంక:—నాకు రత్వంతవని చేసియెరగదమ్మా. సరే రాత్రీ పగలూ తెగకాల్పుకుతిశేస్తాంది. మలమలమాడ్చేస్తాంది, మంగలం మీదపెట్టి వేచేసిపట్టు.

సీత:—మీరు పెట్టేసినపెట్టుకేనా అది తెగకాల్పుకుతిశే స్తాందని అంటున్నారు. పోనీ, అది కాల్పుకుతిందనే అనుకోండి. మీరుపెట్టినపెట్టేముందని. ఇన్నేళ్ల యిందివొక్కవస్తువేనా చేయించి పెట్టేరా. పుస్తీ, నల్లపూసలు తప్ప మరొక టెరుగునా పిల్ల. ఆఖరికి కడియా లేనా వుంచలేదు. చెన్నుగాళ్లతో అలాగే తిరుగుతూందికాని.

వెంక:—మేముపెడితే యిట్టే మాయంచేసేదుటమ్మా.

సుబ్బ:—మీపిల్లేం సామాన్యరాలనుకున్నా రేమిటి?

సీత:—ఊరుకోవమ్మా బుద్ధిమాలినమాట లాడతావు. ఊరు కొంటూన్నకొద్దీ మిలిమిరిపోతున్నావు. పెద్దాచిన్నా తారతమ్యం లేకుండా మాటాడుతున్నావు మరిను.

సుబ్బ:—ఇదిగో నన్ననవాటంకాదని మీకు మొదటేచెప్పే నేను. నేను పూరుకునేమనిపించాను. నన్నన్నవాళ్లని పట్టుకుదులిపేసి రూపొందించెస్తా.

వెంక:—మీపెట్టుపోత లేం మహాపున్నాయని మమ్మల్ని చెప్పడానికి. మీపెట్టుపోతల అలాగవుండబట్టే మాపెట్టుపోత లిలా సున్నాయి. అది బాగానేవుంటే యిది బాగానేవుండును.

సీత:—పెళ్లిలో యిచ్చినకట్టుకుంతా యెవళ్లమొహాన్ని కొట్టేయ!

వెంక:—ఎవళ్ల మొహాన్ని కొట్టేయ? మీపిల్ల మొహాన్ని కొట్టే ము, మీమొహాన్ని కొట్టేము.

సీత:—కొడితే వస్తువు లేనీ?

వెంక:—అది అమ్మనారమ్మకాబట్టి తినేసింది. అదే బుద్ధిగా వుంటే మేము పెట్టకపోయేమా? మాపిల్లకి కట్టుకాసులపేరు చేయించు గున్నవాళ్లం దానికి వస్తువు చేయించి పెట్టలేకపోయేమా?

సీత:—మీఅందరిబుద్ధికి నాన్ని ఆక్షేపించవచ్చేరు. మీరు చేస్తూన్నపనులు యేం మహాబాగున్నాయనో. పిల్లనిచ్చుగున్నవాళ్లం కదా అని యెంతవొద్దుకూన్నా మరింత నల్లరైబండి అయి పోతుంది మాబతుకు.

సుబ్బ:—వీళ్లని మీరు అలాపాతాళంలోకి తొక్కిస్తున్నారు. ఆనంగతి మీరు గమనించేరా.

సీత:—(వెంకమ్మతో) మేమిచ్చినపంచ రెప్పుడేనా మాఅల్లుణ్ణి కట్టుకొనిచ్చేరా? ఎక్కడికి మాయమైపోతాయో యేమిటో? ఇట్టే యిలాయిస్తే అట్టే అలా మాయమైపోతాయు మరోపూరు. మీరు మాయంచేస్తున్నారో, యెవరు మాయంచేస్తున్నారో?

సుబ్బ:—మాఆయన కట్టుకున్నారనేనా మీయేడుపు. ఆపం చలు రెండున్నాయి. అవి ముక్కలుముక్కలుచేసి మీమొహాన్నే పారెస్తాను. అప్పటికి మీకడుపు నిండుతుంది.

సీత:—మీమొహాన్నే పారేసుకోండి.

వెంక:—అమ్మాయి! మాఅల్లుణ్ణి అంటేమట్టుకు పూరుకు నేది లేదు. భావమరిదికదా అని మానాడు యిచ్చుకున్నాడేమో! యిచ్చుకుంటే తప్పా?

సీత:—అన్నీ యిచ్చుగోడమేనా! పంచముక్కయినే అల్లు డికా, రొక్కమిస్తే కూతురికా. ఏదీనే అది యెవరికోవొకరికా. మే మిచ్చినకట్టుం మాపిల్లకు పెడతారా, లేక కట్టుకాసులపేరూ గాడి దగుద్దూ చేయించేసుకొంటారా?

సుబ్బ:—మాభూములు మండి బుగ్గయిపోయే యనుకున్నా రేమిటి?

సీత:—మాకు తెలియని ఆప్తిపాస్తు లేమున్నాయమ్మామీకు? భూములూ గీములూ అంటావు, పుట్టింట్లో పడివుంటున్నానని తెలి యక. ఉన్నమాటాడితే వుడుకుకూత్తనం నాచిచ్చం నాకు పెట్ట మన్నాడుట.

వెంక:—ఏమమ్మాయి! మీరు యెన్నడూ వొక్కచిల్లిగవ్వ పెట్టలేదు. మీరిచ్చినకట్టుంరాళ్లు మీఅల్లుడే తగలకెట్టుకున్నాడు కాపివోలేళ్లకి, నాటకాలకి. పైగా మాఅల్లుడిదగ్గర అప్పుచ్చుగుని తగలకెట్టేసేడు.

సీత:—మీ అల్లుడికున్న ఆప్తికి అప్పుచ్చుగోడంమాదాను!

వెంక:—పోనీగాని నేనొక్కరులు అడుగుతాను చెప్పండి.
దానికి మీరు ఆచారమేనా ఆఖరికి కాస్త నేర్పింపరా? అంట్ల
చేలో అన్నముట్టుగోడమే. పేడఅంటే అసహ్యం. చేతులు తిన్నగా
కడుక్కోదు, గిన్నెలుముట్టుకుని. ఏమేనా కాస్తనేర్పరా ఆచార
మేనా పోనీ?

సీత:—మీవంటివాళ్లుంటాగా మేము వేరే నేర్పడమేమి
టమ్మా! ఆచారానికి గురువులు. పేడతట్ట నెత్తి నెట్టుకుపుట్టేరు.

వెంక:—(గొంతుకచించుకుని) మేము పేడతట్ట నెత్తి నెట్టుకు
పుడితే మీరు అనుద్దతట్ట నెత్తి నెట్టుకు పుట్టేరు.

సీత:—అదే నేనుచెప్పడమున్ను.

వెంక:—నుమ్మల్ని అంతమాట అంటారా? మీయిల్లు బుగ్గయి
పోనూ, మీరు చచ్చిపోనూ, నువ్వు నాశనమనా, నువ్వు వల్ల కాడనా.
నన్నంతమాటంటానా?

సుబ్బ:—మీకొంప సుభ్రంగా బుగ్గయిపోవకపోతే నన్ను
నండి. తెల్లారేలోగా ఆకబురస్తుంది. ఆ, నేనన్నమాట కాపమే.

వెంక:—ఇక్కడికి తినడాని కొచ్చి నన్నడానికేమి ఆతికార
ముందమ్మా సీత?

సుబ్బ:—మల్లా మారుచిస్తరి వేస్తుందా యీ యింట్లో.

సీత:—తిండికి వాచి చచ్చి పొరుగురించి వచ్చేననుకుం
టున్నా చేమిటమ్మా. అలాంటివాళ్లం మేము కాము.

సుబ్బ:—ఎంతేసిమాట లాడుతూందో చూడు. చమత్కారం
ఘనిషి. నాకు రత్తం పుడికిపోతుంది.

వెంక:—తిండికి వాచి చచ్చి రాఅక్కరేకపోతే మాయింట్లో
ఒక్కఘడియ వుండక్కరేదు. ఇప్పుడే పోవచ్చు.

సీత:—ఎంతతెలివితక్కువదాన్నేనా యింకావుంటాను
టమ్మా. ఇదిగో యిప్పుడే వెలిపోతున్నా. (లేచి) ఇన్నిసార్లు మీరు
నాకు చెప్పాలా! (లక్ష్మమ్మతో) పిల్లా! మీ ఆయన వచ్చేక నా
కోసారి కబురుపంపించు. నేను వెళ్లి రత్తమ్మగారింట్లో వుంటాను,
అతనొచ్చేవరకూ. (వెంకమ్మతో) మీకోరిక సిద్ధించిందా? వెలిపో
తున్నా. మీయింట్లో విస్తరివెయ్యను.

వెంక:—వెళ్లు. ఎవళ్లుండమని నీకాళ్లు పట్టుకున్నారా? కాళ్లా
వేళ్లా పడి బతిమాలుకుంటున్నాము వుండిపోవమ్మా అనీ.

(సీతమ్మ వెళ్లును. లక్ష్మమ్మ తన గదిలోకి పోవును. వెంకమ్మ,
సుబ్బమ్మ రహస్యంగా మాటాడుతారు.)

సుబ్బ:—నుంచిపనిచేసేవు. ఇలాంటిముండను కొంపలో
పుంచడం తాచుపోము నుంచడంలాంటి దనుకో.

వెంక:—నుల్లీ యీకొంపలో కాలుపెట్టిస్తానా?

సుబ్బ:—చూఅన్నయ్య నేడోరేపో వస్తాడు. వచ్చేక యివన్నీ
చక్కగా బోధపడుదు. అత్తగారిముండ యెంతచెడ్డదో వాడికి
తెలియచెయ్యి.

వెంక:—అసలు వాణ్ణి దానితో మాటాడనిస్తాగా.

సుబ్బ:—మొట్టమొదట వాడిపెళ్లించేసినపనులు చెప్పు.

వెంక:—అవి చెప్పేకే ఈవిణ్ణిగురించి చెప్తా. అలాగే పోవారి
పడవకి. మరింక యీగుమ్మం లొక్కమాడదు.

సుబ్బ:—పెరట్లో దానీది పిలుస్తూన్నట్టుంది, పడ. అంట్ల
కోసంకమోను, పోదాం. (ఇద్దరూ వెళతారు)
(తెరపనును)

గీ-వ రంగం.

[సాయిం(త్రం ౫-గంటలప్పుడు లక్ష్మమ్మ యిల్లు తుడుస్తూవుంటుంది.]

లక్ష్మ:—(తనలో) ఇంకా సోములేనా రాలేదు. ఏంచెప్పా.
ఒంట్లో యేమీ పాలుపోకుండా వుంది. అసలు స్తోమలుకేనా కన
పడ్డారో లేదో? ఏవూలోవున్నారో యేమిటో? ఇవాళెట్లా ప్రతి
క్షణం ఆయనకోసమే చూస్తున్నా. తలుపు చప్పుడైతే ఆయనే అను
కుంటున్నా. కేకవినబడితే ఆయనే వచ్చేరనుకుంటున్నా. అప్పిడే
సాయిం(త్ర మయిపోయింది. ఇంకేం వస్తారు! (సోములు వస్తాడు.)

సోము:—అమ్మా!

లక్ష్మ:—సోములూ! వచ్చేవా? ఇప్పుడేనా వచ్చేవు?
ఇప్పుడేనా?

సోము:—అమ్మా! అయ్యగా రొచ్చేరండి. సామా నట్టించు
కుని రేపుకాడినుం చొత్తున్నారండి. నన్ను బేగల్లి తమరెలాగు
న్నారో మానీ కబురు బేగట్టుగురమ్మన్నారండి.

లక్ష్మ:—బాగానే వున్నానని చెప్పు. వేగిరంతిసుకురా. వెళ్లు
వేగిరం.

సోము:—సీతమండి. (తనక్కిచూసి) అరుగోనండి. అయ్య
గారే వచ్చేత్తున్నారండి. నే నెల్లక్కరేదండింక. (నారాయణరావు
భయ్యను.)

నారా:—ఏం యెలాగున్నావు, కులాసాగా వున్నావా?
మరేంవికేపాలులేవుకదా. పిల్ల రెలాగున్నారా? ఉత్తరం చూసు
కున్నతక్షణం బయటదేరి వచ్చేసేను.

లక్ష్మ:—ఉం.

నారా:—పిల్లలు కులాసాగావున్నారా?

లక్ష్మ:—ఉం. బాగానే వున్నారు.

నారా:—(సోములతో) ఒక సోములూ! ఆసామాను లోపల పడేయించి వాడికి యీ అణా యిచ్చెయ్యి. (అణా యిచ్చును. సోములు వెలిపోతాడు.)

లక్ష్మ:—ఇదిగో! ఈమాట వినండి. మీ అమ్మ మరేమో లేని పోనికేరాలు నామీద కల్పించి చెప్పి మీకూ నాకూ యెడబాటలు చేస్తానన్నాడు. అలా చెయ్యకపోతే భవది బ్రాహ్మణజన్మకాదని శపథం పట్టెడు.

నారా:—ఏమిటి, ఎడబాటలు చేస్తుందా? నీకూ నాకూ యెడ బాటలు చేస్తుందా? ఇంకేం చాలాబాగావుంది! నేనేమిటి పిచ్చి పుల్లయ్య ననుకున్నావేమిటే, అమండచెప్పినమాటలన్నీ విని నమ్మ దానికి. చెరివాణ్ణిమీటే నేను!

లక్ష్మ:—ఇదిగో, మొన్న సాయంత్రం మా అమ్మదబ్బింది. విన్న సాయంత్రం ఆవిడితో తల్లి కూతురూ చెబ్బలాడి యింట్లోంచి గంటేనేరు.

నారా:—(అశ్చర్యపడి) ఏమిటి! ఏమిటి! అంతపని చేసేరా! అయ్యో! పిల్లమ్మకడుపులుకాల! పిల్లని గంటెయ్యి! నామర్యాద నాశనం చేసేస్తున్నారు ఈ చెధవలు: పిల్లని చంపెయ్యి. పోవటా! (సిత్తమండయ్య అంటూ సోములు వచ్చును.)

నాగా:—(లక్ష్మమ్మతో) మీ అమ్మ యొక్కదన్నారా?

లక్ష్మ:—రత్తమ్మగారింట్లో వుండే భోంచేస్తాంది.

నారా:—సోములూ, వెళ్లి రత్తమ్మగారింట్లోవున్న మా అత్త గారిని నేనొచ్చేనని చెప్పి వేగిరం పిలుచుకురా. పో వెళ్లు. వేగిరం రమ్మన్నా రయ్యగారని చెప్పి జర్రి తీసుకురా. వెళ్లు. పో.

సోము:—సిత్తమండయ్యా! (వెళ్లును)

లక్ష్మ:—నిన్న యేమిటి చెప్పమన్నారూ, తెగయేడ్చించుకు తినేసే రావిణ్ణి! ఏడ్చించి చెబ్బలాడి రాత్రి ఫలహారానికేనా వుండ నియ్యకుండా పొమ్మన్నారూ. ఆవిడ అప్పుడువెళ్లి రత్తమ్మగారింట్లో ఫలహారం చేసింది.

నారా:—అబ్బా!.....వాళ్లపని చెప్తారే. ఇంక వాళ్లకి లోజాలు దగ్గిరపడ్డాయి. ఇంట్లోంచి గంటేస్తా చెధవల్ని.

(వెంకమ్మ, సుబ్బమ్మ వస్తారు.)

వెంక:—వచ్చేవుట్రానాయనా! ఎప్పుడొస్తావో అనుకుంటు— (చూసి) ఆడలుట్రాపు ఆలూనన్నావు (సుబ్బమ్మవైపుతిరిగి) అప్పిడే యేమిటో చెప్పేసిందే! అయ్యో నాకళ్లు కాలిపోనూ! ఇంక ఏడు నన్ను కాల్చుకుతిస్తాడే!

నారా:—నాకూ దానికి యెడబాటలు చేస్తావుట కాదూ. ఏదీ యెలాచేస్తావో చూస్తాను. చెయ్యి చూద్దాం. చుక్కనాతిముండని. నీతంకపోవవుమండ పుట్టుడు.

వెంక:—అదిగో! నేననుకున్నంతపని చేసేసిందమ్మా. నాకంటే అదే ముందు చెప్పేసింది. ఇంకేముంది. నాకూ వాడికి యెడబాటలు పోయింది. నాకూ వాడికి యెడబాటలు చెయ్యడానికే అది పుట్టింది.

నారా:—మీరిద్దరూ యింట్లోవున్నవాళ్లనీ, వచ్చినవాళ్లనీ కాల్చుకుతింటావుంటారుకదూ.

సుబ్బ:—నన్నేమీనా అన్నావంటే నేనొప్పుకునేది లేదు.

నారా:—దానిమాతురువేకాదుటే నువ్వు. దానికి పుట్టినదానివే కాదుటే. చింతచెట్టుకు పుట్టినచింతపండు పులుపు.

సుబ్బ:—నువ్వుమట్టుకు చింతచెట్టుకు పుట్టలేదేమిటి?

నారా:—నేనా? నేను బడనికను. చింతచెట్టుపులుపు విరి చెయ్యడానికి పుట్టేను. దానిసారం పీర్చి చంపెయ్యడానికి పుట్టేను.

సుబ్బ:—ఏడినేవ్. చెధవగొప్ప. అంతకంతకీ విర్రవీగి పడేపో తున్నావు.

నారా:—నువ్వు సామాన్యపు ఆడబొడ చువుటే. పిండిబొమ్మ నుచేసి ఆడబొడచుంటే తైలక్కలాడిందిట.

వెంక:—దాన్నెందుకురా అంటావు? నీపెళ్లా న్ననుకో. నీ అత్తగారి ననుకో. అంతేకాని దాన్ని అనవోకు. నీపెళ్లామీ కాల్చుకు తింటుంది యింట్లోవాళ్ల నందరినీ.

(నీతమ్మవచ్చును.)

నారా:—అత్తగారూ! వచ్చేరా అంత్తి. మీరు వచ్చేరన్న సంగతి యిప్పుడే తెలిసింది. పిల్లలెంతబెబ్బలాడినా మీరు యిల్లువిడిచి పోడం యేమీ న్యాయంగా లేదు. అలాగప్పుడూ వెలిపోకూడదు.

నీత:—తండ్రీ! నన్నేం చెయ్యమన్నావు? ఇంట్లో వుండ నిస్తేగా నన్ను. ఇద్దరూ కలిసి నన్నవతలికి సాయంపట్టేనేరు. నావ కంటా లేకపోయింది విడిపించుకుని వుండడానికి.

నారా:—ఇదిగో దానికి తగినమందు చేస్తున్నారెండి, వాళ్లకి.

నీత:—నాయనా! వాళ్ల నేనునకు. వాళ్లు నీతోవుండవలసిన వాళ్లు, తల్లి, చెల్లెలు. నేనా పరాయిదాన్ని. ఏదో అప్పుడప్పుడు, మీరు పిల్చినప్పుడు చుట్టరికంచూపుగా వచ్చి పోవలసినదాన్ని. అంతే కాని మరేంకాదు కదా. అలాంటప్పుడు వాళ్ల నేనునకు నాయనా!

నారా:—వాళ్లంతముఖ్యులూ మీరూ అంతముఖ్యులు నాకు. విన్నారా? వాళ్లంతముఖ్యులూ మీరూ నాకు అంతముఖ్యులు. ఇదిగో నామాట తీసెయ్యక మీరు మాయింట్లోనే వుండాలి.

నీత:—నాయనా నేనుండలేను. ఇంట్లోవాళ్లకి యిష్టంలేక పోడేమీ యింట్లో వుండకూడదు. అది చాలాతప్పు. ఎప్పుడూ అలా చెయ్యకూడదు.

నారా:—వాళ్ల యిష్టమేమందంటే నాయుట్లోను, నాయుట్టం కాని.

నీత:—ఈమాటికి పూరుకో నాయనా! రత్తమ్మగారింట్లో కూడా చాలాఅనుకూలంగానే వుంది. ఆవిడా అక్కగారికి చేసిపెట్టి నట్టు చేసిపెడుతుంది పాపం. ఉత్తమమైన యిల్లాలు. అంచేత నన్ను పిలవకు నాయనా! నువ్వు చెప్పిన పని చేసుకుపోదాని కొచ్చేను నేను.

నారా:—అలాగు కాదు. మీరు నామాటలీ సెయ్యక యిక్కడ వుండిపోవాలి. ఉన్నతరవాత, సంగతులు మాటాడదాం.

నీత:—నువ్వంతబలవంతం చేస్తూవుంటే నే నేంచెప్ప గలను? నిన్ను అయిష్టపరచడం నాకు యిష్టంలేదు. అంచేత నువ్వు చెప్పినట్టేకానీ. అలాగే వుంటాను.

నారా:—అదీ మంచిపని. అలాగు చెయ్యండి బాగుంది. ఒక రోజుని మనం రెక్కచెయ్యకూడదు. మనపని మనం చేసుకుపోతూ వుండాలి, యెవ రోజుమకున్నా సరే.

నీత:—నాయనా! మీబావమరిది తనచదువునుగురించి నిన్ను డగమన్నాడు, ఏదిచదువుకుంటే మంచిదో యేమిటో!

నారా:—అలాగా. మంచిదే, మాటాడదాం రండి. అక్కడ ఆరైటకూచుని మాటాడదాం, యిక్కడ వుక్కపోస్తూంది.

(నారాయణరావు, నీతమ్మ, లక్ష్మమ్మ వెళతారు.)

చెంక:—(గుండెబాదుకుని) అమ్మదీనమ్మకడుపుకాల, యింత రాక్షసిదాని నే చూపులేదే. యింతవరకూ విననేలేదు ఆఖరికి. అదె క్కిడరాక్షసిగాని. అ దెలాకనిపెట్టిందే నాడు రావడం.

సుబ్బ:—గోరికాడనక్కలాగ కనిపెట్టుకు మాచుంది. ఇంతకీ, అమ్మా! ఒక్కతప్పుపని చేసేవంటే నమ్ము. పైకి చెప్పేసేవు నువ్వు 'నీకూ నీమొగుడికీ యెడబాపులు చేస్తా' నని. పైకి చెప్పెయ్యకుండా వుండి చెయ్యవలసింది. మహబాగా వుండిపోను.

చెంక:—నిజమే, నావల్ల అదొక్కపారపాటొచ్చిందే. ఇంకేనా బుద్ధితెచ్చుకుంటా. ఇహముందు అలాగేచేస్తా. అ దెంతచిత్ర మోకాని తల్లితోకూడా దెబ్బలాడేమని చెప్పేసిందే, ఎలాచెప్పేసిందో కాని. అమ్మదీనిల్లునూసిపోను. ఇంతఘటుకురాలిని నేచూపులేదు. ఇంక పుట్టబోదంటేనమ్ము.

సుబ్బ:—ఎంతఘటుకురాలు కాకపోలే నిన్ను నమ్మ యిలా కాల్యకురికెస్తోంది!

చెంక:—ముందుంది ముసళ్ల పండుగ. దానిపాట్లంకా ముందు న్నాయితే. దీనిపని పట్టిస్తా.

సుబ్బ:—ఇదిగో వాళ్లు మననిగురించే చెప్పుకుంటున్నారట. రహస్యంగా విందాధార, ఏమేంచెప్పుకుంటున్నారో.

చెంక:—దొనానుపద. దానితో తేలిపోతుంది తున్నదంతా.

(వెళతారు.)

(తెరవాలును.)

౬-వ రంగం

[సాయింత్రం ౫-గంటలప్పుడు నారాయణరావు తిర్చిమీద కూచుండును. ఒకఉత్తరం చదువుతూ వుండును]

నారా:—ఇది యెవరికి రాసినఉత్తరం?...వాళ్లవాళ్లకిఅంటే వాళ్ల అమ్మకి రాసినఉత్తరమన్నమాట. అయినా యేమిటి రాసిందో చూద్దాం. నామీద యేమేంసేరాలు రాసిందో యేమిటో (ఉత్తరం చదువును) 'సా. నీతమ్మ అమ్మగారికి, అనేకసమస్కారములు. మీశ్రీ మం రాయవలెను. ఇక్కడ నాశ్రీమంసురించి చెబుతున్నాను. ఇక్కడ యింట్లోవుంటున్నానన్నమాటేగానినావొంట్లోమట్టుగు ప్రాణాలుండ లులేదు. మీఅల్లుడుగా రెంతమంచివారో అంతచెడ్డవాళ్లు మాఅత్త గారు, అడబాదుచున్నా. ఇద్దరూ చెరోరాజ్యం యేలగలరు.'...అ యితేనన్నుగురించి పితూరీ లేమీ రాయలేదన్నమాటే. బతికేను. పాపం! స్వతామంచిమనిషి. నాకే వొక్కొక్కప్పుడు పిచ్చికోపంచేసు కొస్తూవుంటుంది, కొడుకూవుంటాను. (మల్లీచదువును) 'మా అత్త గారు నన్ను పెడుకూన్న భాదలు యిన్నీ అన్నీకావు.'...నిజంగానే. నిజమే. ఇంతవరకూ నే నెప్పుడూ అనుకోలేదు. ఆసంగతి యెరగనే యెరగను. మాఅమ్మ మంచిదనే అనుకుని దాన్ని తీస్తున్నాను. (చదు వును) 'అవిడ లేనిపోనివన్నీ నామీద కల్పనచేసి ఆయనతో చెప్తూ వుంటుంది. మొగవారు. ఆయన కేం తెలుస్తుంది పాపం! ఆయన ఆ మాటలువిని నన్ను కొడతారు. ఆయన నేమీఅనడానికి పిలులేదు. చెప్పుకుమాట రెంటేనాపనిచేస్తాయి. ఆయనికి నిజంగా నేనంటే యెంతో ప్రేమ. పాపం! యీమధ్య సందగడియం చేయించియిచ్చేరు. కాని మాఅత్తగారు యెన్నివిధాలయినా ప్రయత్నంచేసి మమ్మరి నిద్దరినీ సుఖంగా వుండనియ్యరు. ఇదీ అవిడప్రతిజ్ఞ. తల్లివికాబట్టి నీకు దాచకుండా అన్నీ చెబుతున్నాను. నాభాద రెప్పుడు విరగడపు తాయో యేమిటో. అదేవుడికేనా నామీద దయరాకుండావుంది. వాడిదయకోసమని రోజూ వెయ్యిదండాలు పెడుతున్నాను.'..... అబ్బా! యెంతమాటాడింది! తేలికమాటాడింది! నాగుండెలో కూలం లాగ గుచ్చుగుంది. తనుదచ్చిపోవాలనా కోరుకొంటుందా? తను చచ్చిపోలే నేనుండగలనా? ఒకరుగమేనా బతకగలనా? ఒక్కరుగం అమ్మయ్యా.....అబ్బా! నిష్కరణంగా నేను దాన్ని యిన్ని బాధలు పెట్టేను, అమాంతకురాలిని, నిర్దోషిని, చిన్నదాన్ని. అబ్బబ్బ! దీనికంతాకారణం నాతల్లి. నాతల్లిమండ కల్పించి చెప్పిన అబద్ధాల్ని నేను పెరిచెడవనై నమ్ము దాన్నికొట్టేను, తిట్టేను. నాఅంతపాపి లేదు. నాఅంతదుర్మార్గుడు లేదు. నన్ను నరకహవంలో పడేసినా తప్పులేదు, నరకంలోవుండే భూరికమన్నీ

దేవుడు నాకు విధించినా నాకు తగినదండన కాదు. అయ్యో! అమ్మా! యింతదుష్కర్మపుదానివి మనస్సని నేను కలలోనేనా అనుకోలేదు. నాభార్యను కాల్యుకురితపడమంటే నీకు పరమాన్నంతినడం వంటిదని నే నెప్పుడూ అనుకోలేదు. ఎంత అజ్ఞానం! ఎంత మోసం! ఆమోసగుట్టుమాటలన్నీ నమ్మి దాన్ని కొట్టేను. కానీ యింకెంత కాల మంటుంది యిలాగ. మరెంతకాలమంటుంది యిలాగ. ఇంకా యేమేంఘోరభాషలు పడుతూందో పాపం విడ్డ. చదివిచూస్తాను. (చదువును) 'అమ్మా! మాఅత్తగారు నన్నొకపువ్వు తాంబూలమేనా పట్టనియ్యదు— ఇతరనోములమాం అసలు తలపెట్టేవాడడు. పువ్వులు తొని తలలోపెట్టుకుంటానంటే నువ్వేమి సానిదానివా పువ్వులమీద పడిచావదాని కని అడుగుతుంది. అవిడ ఆనే మాటలు వినలేక నేను చెవులు మూసుకుంటున్నా'... హరహరా! నేనూ చెవులు మూసుకుంటున్నా. నేనూ వినలేను, అదిఅన్నమాటలు. దానికార్యం నేను వినలేను, చూడలేను. ఇన్నాళ్లకి నాపాపాలన్నీ బైటపడ్డాయి, నా అదృష్టంవల్ల. నేను బాగుపడేరోజు లాచ్చేయి. ఇంక నే నీవు తరం చడలేను. గన్నీళ్లు దిప్పిని కప్పివేస్తున్నాయి. అక్షరాలు కనబడడం లేదు. అబ్బా! మహాపాప! మహాపాప! ఇంతదుర్మార్గుణ్ణి, యింత దుష్టుణ్ణి, యింతపాపిని నేనని యింతవరకూ గ్రహించలేకపోయేను. ఎంత అజ్ఞానంలో పడివుండిపోయేను. ఎంతఅజ్ఞానం. నామా మంచిరోజులు వచ్చేయి. రావడంబట్టే యీవు తరం నాకళ్లపడింది. ఇంతవరకూ నేచేసిన పాపాలకు నాభార్యను నేను తుమించమని కోరుకోవాలి. అప్పటికిగాని నాకు పాపపరిహారం లేదు; దేవుడిదయకు పాత్రుణ్ణి కాను. దాన్ని యిప్పుడే పిలిచి తుమించమని కోరుకుంటా. ఇప్పుడే పిలుస్తా. ఇదిగో, బేనా, ఓయి(ఎండుకూ, వస్తున్నా' అనిలోపల కేక. లక్ష్మమ్మ వచ్చును.) ఇలారా. కూనో.

లక్ష్మ:—ఏమిటో చెప్పండి. ఇంట్లో బోలెడుపను లున్నాయి. చేసుకోవాలిచెల్లి. అంటు తోమమన్నార అత్తగారు. చెల్లి చేసుకోవాలమ్మా. తీరిక లేదు.

నారా:—ఇంక ఆఅత్తగారిముండకూటలు వినకు. నువ్వు వినవద్దు. తెలిసిందా. ఆ దేం చెప్పినా చెజ్జివద్దు. ఇలారా కూనో.

లక్ష్మ:—(అశ్చర్యపడి) బాగానే ఉంది. మంచిహితోపడేకమే.

నారా:—నాకూట విన. ఇలారా, కూనో, కూనో, చెప్తా అన్నీ సంగతులు. (లక్ష్మమ్మకూర్చుండును.) అయితే యీవు తరం నాకు చెప్పేసింది యింట్లోనికి అంతా.

లక్ష్మ:—(భయోర్వారాలతో) ఈవు తరం మీచేతులలో యెందుకు పడింది.

నారా:—ఎందుకుపడిందా! కాళూర్యజన్మకుక్కతంవల్ల పడింది. నాకు బాగుపడేరోజు లాచ్చేయి కాబట్టి పడింది. నాపాప కార్యాల వల్లమమ్మకోలాచ్చేయి కాబట్టి కనపడింది.

లక్ష్మ:—సరే, బాగానేవుంది. మీ కక్కడ దొరికిందీ యీవు తరం.

నారా:—నీపరువుమీద పిల్లలు పడుకుంటున్నారు కదా! పోనీ చేపు యెండలో వేయిద్దాం. ఇది తీసెస్తే మరోపరువు వేసుకుంటావని చుడుతున్నాను. చుడుతూవుంటే యీ కాగితం కనబడింది. ఏమిటో అనిచూసేను. నీదస్తూరీ కనపడింది. పోనీకదా అని చదవడం మొదలెట్టేను. ఇంట్లోవున్నస్థితిఅంతా విశదమయింది. నేను చేస్తూన్న పాపాలన్నీ నాకు బోధపడ్డాయి. నే నెంతపాపిలో గ్రహించేను. నీకమాపణ కోరుకుంటేగాని నాకు పైలోకాలు లేవని అని పించింది. నిన్ను పిలిచేను. నేను నీకు చేసినఅపకారాలూ, పెట్టినబాధలకీ నన్ను తుమించు. నువ్వు తుమించకపోతే నాకు పుట్టగతులుండవు.

లక్ష్మ:—అదేమిటి. మీచెల్లి బాగానేవుంది. అంతకంతకు మరి పోతూందా యేమిటి?

నారా:—దేవతలాంటిభార్యను నేపెట్టినబాధలు నాకు జ్ఞాపకమొస్తున్నాయి. జ్ఞాపకమొచ్చినప్పుడల్లా నావొళ్లు జలదరిస్తూంది. నిన్నిన్నకష్టాలు పెట్టేను కదాఅని కళ్లంబడి నీళ్లు కాలవలు కట్టి కారుతున్నాయి.

లక్ష్మ:—మీరు పెట్టించేమిటి, అవిడ పెట్టించిందిగాని.

నారా:—బేనా! ఆపాడుముండ నావారిటి రాక్షసి అయిపోయింది. ఆముండచేసినపనే యిది. ఆముండను చంపేసి నా పాపం లేదు. ఇదిగో యిప్పుడే చెల్లి దానితల బద్దలకొట్టినంతవని చేస్తాస్తా.

లక్ష్మ:—ఎందుకండీ మళ్లా చెబుటాటలు. అవి శ్రేయనవద్దు. ఊరుకోండి. (వీధిలో 'అయ్యోగారూ' అని వివవస్తుంది.)

నారా:—పోస్తుబంట్రోతు వచ్చేను. చెల్లిస్తానుండు. (చెల్లి కవరుపట్టుకునవచ్చును. విప్పించువును.)

లక్ష్మ:—ఏమిటాఉత్తరం?

నారా:—నేను నీతో వనకాన్నమాటే. బదిలీఅయింది.

లక్ష్మ:—అయిందీ! ఏవ్రామా?

నారా:—చాలామారం. బళ్లారి అయింది.

లక్ష్మ:—అబ్బా! చాలామారమండి. 'నన్ను బదిలీ చెయ్యొద్దు. ఈఉట్లోనే వుండిపోతా' నని ఉత్తరంముక్క రానెయ్యండి వైవాళ్లకి.

నారా:—ఉత్తరంముక్క సరిపోయి. చెప్పవట్టుంచెల్లి అక్కడినుంచుస్తాలకాళ్లు పట్టుకోవాలి. బెయ్యెరుకాళ్లు పట్టుకో అక్కల్లేదు గాని యీగుమాస్తాగాళ్ల కొట్టుమట్టుకు పట్టుకోకపోతే మనకు మోక్షంలేదు సరికదా నష్టంకూడా వుంది. ఈప్రావారిగాళ్ల చేతుల్లో వుంది యెంతేనావని.

లక్ష్మ:—హానీ వెల్లి అపనే చెయ్యండి.

నారా:—ఇంకా ఆలోచిస్తాను. ఇప్పుడప్పిడే చెప్పలేను.
(ఊంచెం నేపయేక)

లక్ష్మ:—ఏదీ నావుత్తరం నా కిచ్చేయండి.

నారా:—అది యిప్పుడప్పిడే యిచ్చేయడమే! ఎంతమాట అన్నావు! ఇప్పుడప్పిడే యిచ్చేయడమే! నీలులేదు. అది పూర్తిగా చదవాలి. పదిహేను పారాయణ చెయ్యాలి. చేసి నా పాపాలు తుమించుమని దేవుణ్ణి ప్రార్థించాలి. అప్పుడేనా యిది నీకిస్తానో యియ్యనో, నాదగ్గిరే వుంచుమని మనస్సులో పూజించుకుంటూవుంటానో చెప్పలేను. (లేచి) ఇదిగో! వెళ్ళుకున్నా. ఆముండను కొట్టి నంతపని చేస్తాను. (లక్ష్మమ్మ పట్టుకుని 'వొద్దువొద్దు'ను. కాని నారా యగరావు విడిపించుమని వెళ్ళును. లక్ష్మమ్మకూడా వెంటవెళ్ళును.)
(తెరవాలును)

2-వ రంగం

[పొద్దున్న 7½ గంటలకి నారాయణరావు కుర్చీమీద కూచుని వుండును. లక్ష్మమ్మ కాఫీ పట్టుకొని వచ్చును.]

నారా:—కూనో అలాకుర్చీమీద.

లక్ష్మ:—కూచుంటాను లేండి.

నారా:—తాగుతాడే, ను వ్వలాకూనో.

లక్ష్మ:—ఏమీ అలాగున్నారేమీ! ఒంట్లో నీరసంగా మందంగా వుండారేమిటి?

నారా:—ఏమనిచెప్పుమన్నావు. ఇంట్లో సంగతుల్ని గురించి నాకోమీ తోచకుండా వుంది. తిన్నతిండి వొంటపట్టడం లేదు. కంటికి నిద్ర రావడం లేదు.

లక్ష్మ:—అయితే బెంగుట్టుకుంటే బాగుపడుతుండేమిటి?

నారా:—ఏంచెయ్యడానికి నాకుతోచడం లేదు. ఈగొడవలు యెలావొడులుతాయో దేవుడా అనిచూస్తున్నా. ఎలావొడుల్ని గొడవో యేమిటో. దారేమికనపడడం లేదు. (సోములు వస్తాడు.)

సోము:—అయ్యగారూ, మరేమో యెంకటేశ్వరుని గొచ్చే రండి.

నారా:—(తొందరతో) ఏదీ వచ్చేదా? ఇలారమ్మను.

లక్ష్మ:—మీప్రియన్నీహీకుడు వచ్చేడుకాబట్టి నేను యింక వెళిపోతాను.

నారా:—ఉం. తర్వాత మాట్లాడదాంలే. వెళ్ళి యిప్పటికి.

(లక్ష్మమ్మ వెళ్ళును. వెంకటేశ్వరులు వచ్చును)

(వెంకటేశ్వరులు మున్నెయ్యేళ్ళ మనిషి. సన్నగా పొడుగ్గా వుండును. సరదామనిషి.)

నారా:—ఏమాయ్, వెంకటేశ్వరులూ, యిలా దయచేసేవు? పనివుంటేగాని కనపడకుండావున్నావులే యీమధ్య.

వెంకటేశ:—నువ్వు వూళ్లోలేవని విన్నా. (కుర్చీమీద కూచుండును.)

నారా:—మర్నా వూళ్లోవున్నానని విని వచ్చేనేమిటి?

వెంకటేశ:—నిన్న మీసమస్తా మంగయ్య కనపడ్డాడు. కనపడితే 'ఎప్పుడొస్తాడయ్యా మాగాయీ, మీయిన స్వేచ్ఛరుగారు' అని అడిగేను. అతనూ నవ్వుతూ, 'అయ్యా, వూళ్లోనే వున్నారండీ' అన్నాడు. అలానా అనుకుని యిచాళ వచ్చేను.

నారా:—ఏమిటి విశేషాలు?

వెంకటేశ:—ఏముంది. మరేం లేదు. ఏమున్నాయి విశేషాలు. మరేం లేదు. కాని, నువ్వొక్కట పుకారం చేసిపెట్టాలోయ్. నీచేతిలో వున్న పనే అది. తలుచుకుంటే యిట్టే చేసేస్తావు. మావా దొక్కడు—మామేనల్లుడున్నాడులే. వాడి కత్తురంముక్క లంటలేదు. ఎలాగయితేయేం నాలుగో ఫారందాకా డేకించేడు. మరిక పైచదువు వీడికలాగా అబ్బదని ఆ తర్వాత హైయ్యరులవీ మెంటరీ ట్రయినింగులో పడేయించేను. ఏదో పాసయేడు. వాడికిప్పుడు వుద్యోగంకోసం తంటాలు పడుతున్నా. మునుపు తిరగనివూళ్ళు యిప్పుడు తిరుగుతున్నా, యెరగని మనుష్యుల్ని యిప్పుడు యెరుగుతున్నా. ఎంతచచ్చినా యెక్కడా పుట్టకుండావుండోయ్ వుద్యోగం.

నారా:—నిరుద్యోగ సమస్య యెక్కవెతున్నా యీరోజుల్లో వుద్యోగా లేక్కడొస్తాయి? అసలు భారీలంటూ లేండే యెక్కడా!

వెంకటేశ:—ఏదో కాస్త వాణ్ణి సాయంపట్టి పడేయిస్తినా నీకేడు చెప్పుకుంటుకుతాడు. ఇంతతిండిపెట్టినవాడివోతావు. కాస్త వాణ్ణి కనిపెడుదా.

నారా:—మాడిష్టియిన స్వేచ్ఛరులేతుల్లో యెదో పెద్ద అధికారం వుందనుకుంటున్నావు నువ్వు. అంతేనా? అది వుత్తమాట. వెనక సబసిట్రేటుయిన స్వేచ్ఛరుగా వుంటావుండినప్పుడు కొంత అధికారం వుండేది. అప్పుడు మేము రకమెందుచే నీగాని డైరెక్టరు వొప్పుకునే వాడు కాదు. ఇప్పుడు తాలూకా ప్రెసిడెంటుగారే అన్నిటికినీ. వారి చేతుల్లోనేగాని మరెవరిచేతుల్లో యేమీలేదు. అంతే యేమయినా అయినప్పటికీ ఆశ్రయించి ప్రని కనిచ్చుకోవాలి.

వెంకటేశ:—అయితే బొత్తిగా మీ చేతిలో యేమీలేదంటావు!

నారా:—ఉన్నా బహుస్వర్పం. ఇంచుమించుగా లేదనే చెప్పగోవచ్చు. అంతబొత్తిగా అత్యంతారానికెధనకనక బోదు ప్రెసిడెంటుగారు మేజరుగా వేయిస్తే అచ్చపని తీయించేయ్యచ్చు.



1. మాజీదు హైస్కూలు స్కూటుసుంఘము. 2. తెనాలి శ్రద్ధానంద వారిజన పాఠశాల బాలబాలికలు
వారిజనదిశోత్తవ సందర్భమున సంపత్తులయింద్ద ప్రజల్లి కానుకలు వసూలుచేయుట,



1. సంద్యాల శ్రీమహాకాళీహనుమద్బాలభారతీవ్యాయానుసంఘపు ద్వితీయ వార్షికోత్సవము; 2. జాగర్లయూడి కుష్టుస్వామిదేవారి గారికిని, పామలపాటి వెంకటకృష్ణయ్యగారికిని దక్షిణాంధ్ర రిజర్వ్ ఫెడరేషన్ చిరాలకాళిసంఘాల సమీక్షము.

ఆంధ్ర ప్రదేశ్ - భావ సంవత్సరాది సంచిక - ప్రకటనలు

BOMBAY MUTUAL Life Assurance Society, Ltd.

బాంబే మ్యూచుయల్

లైఫ్ అసూరన్సు సొసైటీ, లిమిటెడ్.

స్థాపితము: 1871. 64 సం॥ల నాటి సంస్థ. హెడ్ ఆఫీసు: బాంబయి.

భారతదేశపు పురాతనపు జీవిత భీమాకంపెనీ.
కేవలము ఒకరికొకరి సంబంధము గలది. అంతయు దేశీయము.
వాటాదారులు లేరు. చౌకరుసుములు. అధికమగు బోనసులు.
లాభమంతయు పాలిసీదారులకే జెందును.

63 సం॥లును బోనసు లొసంగబడినవి.

1933 సం॥ లో క్రొత్తగా చెల్లించిన వ్యాపారము:

దాదాపు 1 కోటి 30 లక్షల రూపాయలు

గత బోనసులు.

రూ. 26/-లు. యావజ్జీవిత భీమా పాలిసీలకు. } సంవత్సరమునకు రూ 1000/- లకు.
రూ. 21/-లు. యెండ్లో మెంటు పాలిసీలకు. }

ఏజెంట్లు కావలెను: కమిషను భారాళము. వంశ పారంపర్య మైనది.

వివరములకు:—

యస్. ఏ. రామస్వామి అండ్ బ్రదర్సు,

చీఫ్ యేజెంట్లు, 11, లింగచెట్టిపేడి, మద్రాసు.

డి. నారాయణరావు, బి. ఏ.,

(లేక)

వి. కృష్ణమూర్తి,

డివిజనల్ చీఫ్ యేజెంట్లు,

బి. ఏ., బి. యెస్.,

మంటూరు, కృష్ణా అండ్ నెల్లూరు.

విశాఖపట్టణమునకు డిస్ట్రిక్టు యేజెంట్లు,

878, ఆచారిపేడి, నెల్లూరు.

అడ్డపల్లివారిపేడి, కొత్తపేట, విజయనగరం.

ప్రేమ బంధములు



1



2



3



4



5



6



7



8



9



10



11



12



13



14



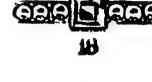
15



16



17



18

“.....రాయిలోను, పనితనములోను, ఎటులుండిన బాగుడునని తెలచితిన్, అటులనేయుండి, యుగరము నాకెంతో ముదముగూర్చెనని మీకు సమ్మతముగా తెలుపుచున్నాను దానిని చూచినవారు గూడ మిగుల సంతోషించి, మెచ్చుకొనిరి.....”

(సం) పి. శివశంకరం పిల్లై, బి. ఏ., బి. యల్.

హోకోర్టు జడ్జి.

సురాజముల్స్

రత్న వర్తకులు, నగల వర్తకులు.

313 యెస్ప్లానేడు

మదరాసు.

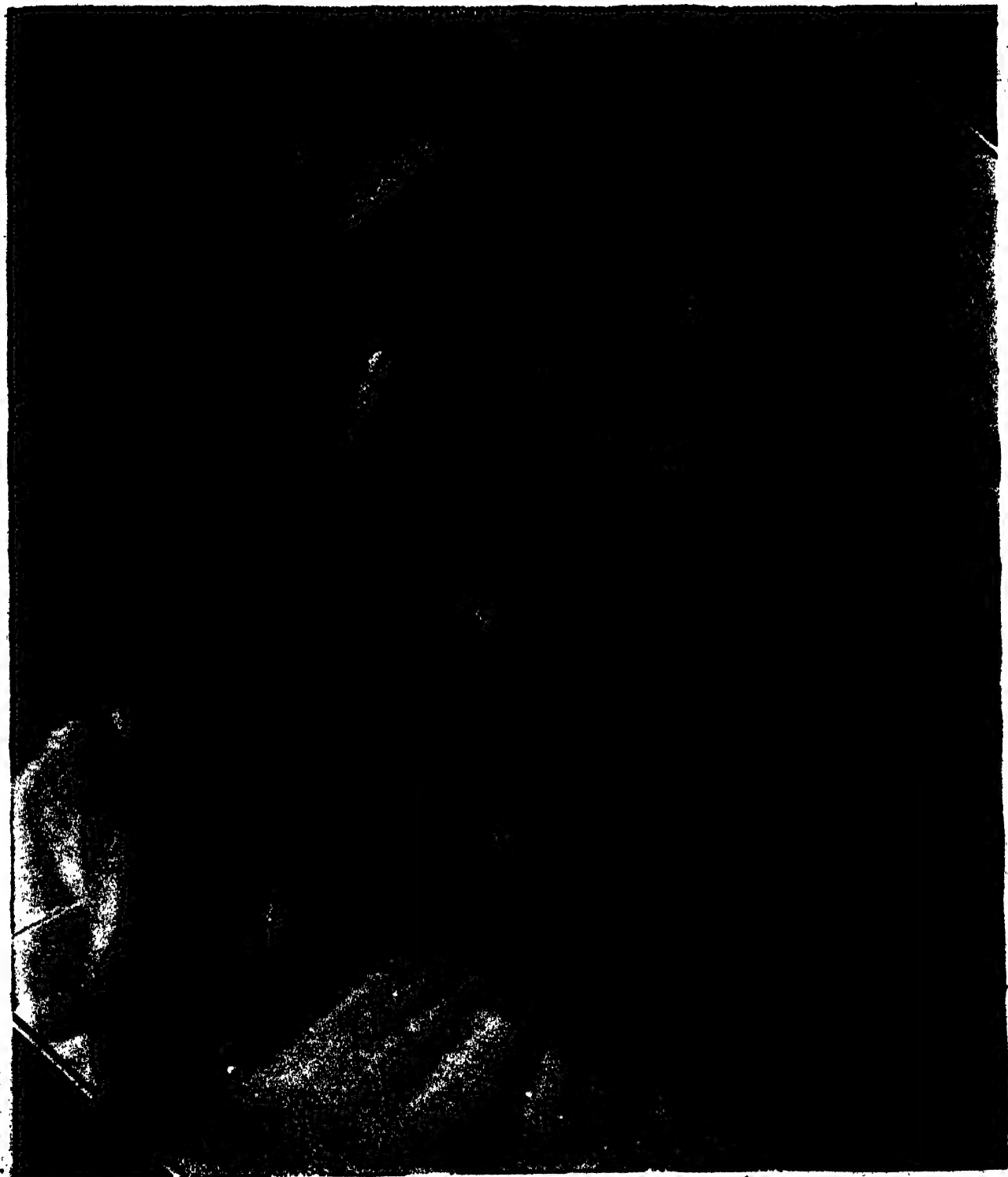
యితర ఆఫీసులు :

బొంబయి.

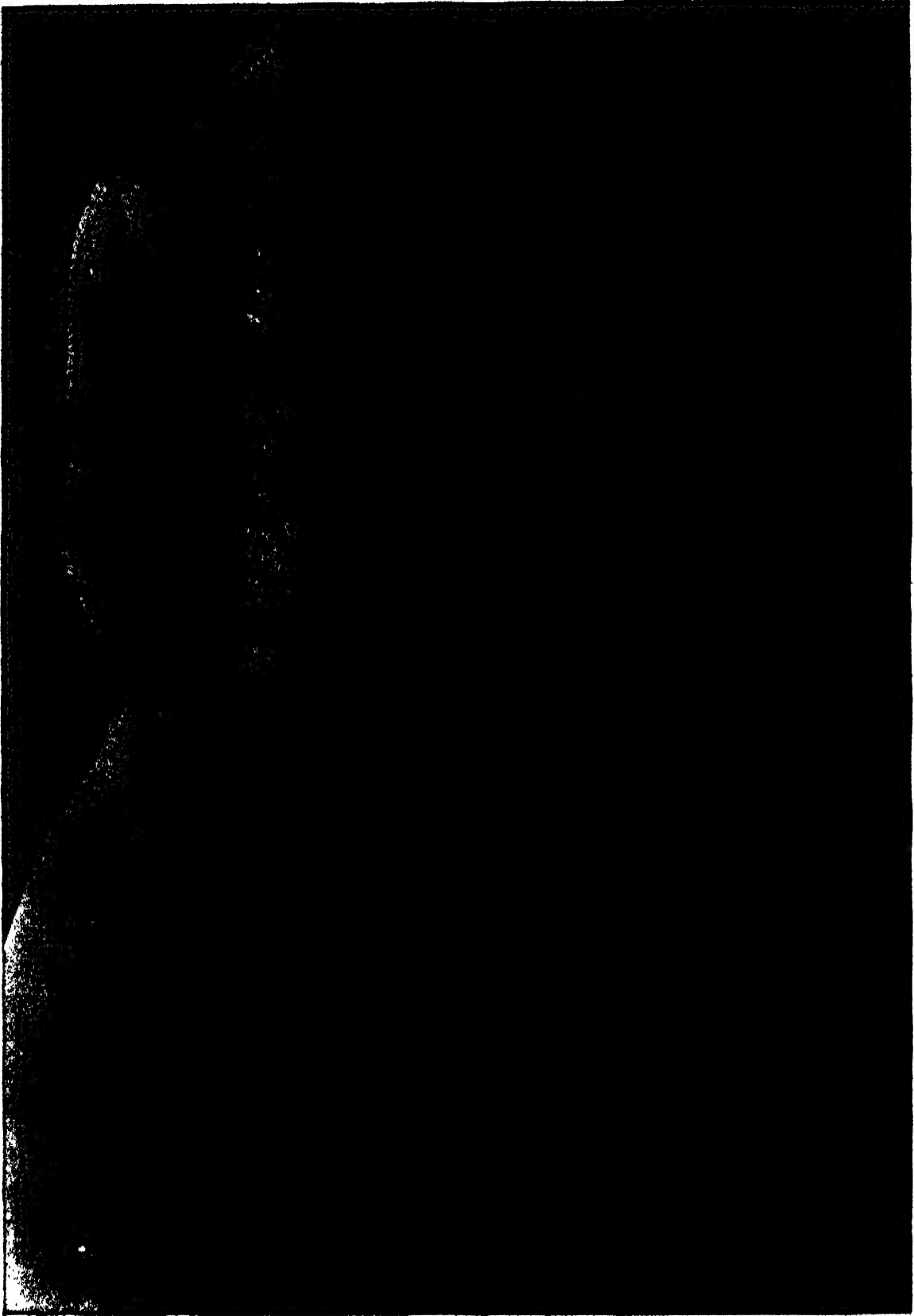
రంగూన్.

ఆన్టువర్పు.

ఆంధ్ర ప్రదేశ్ - భావ సంపత్తి రాధి సంఘము



గ్రేటా గార్బో



દેવકારાણી

(૧)

સર્વજ્ઞાન મંડળ, ગાંધીનગર, અમદાવાદ. પ્રથમ પ્રકાશન ૧૯૬૮. પૃષ્ઠ ૧૦૦.

అనుగృహ మబోధ్య ప్రెసిడెంటుగారు తన మంగలానికి మేష్టరిగిరి యిప్పించేడు—నాడు బాగా క్షవరంచేస్తాడని. ఆమంగలాడో మరి, కాగితంమీద అక్షరాలు రాసియెరగకు, చూసి యెరగకు. ఆసంగతి యెలాగో వాహుగా నాకు తెలిసింది. వెంటనే డైరెక్టరుకి రాసిపాఠే సేసు, యిలా గిలాంటిసంగతని. ఆతర్వాత ఆమేష్టరి ఆమంగలాడి కూడిపోయిందిలే.

వెంకటే:—అలాగుబోయ్!

నారా:—అలాగున్నాయి సంగతులు. దానిమాటకేంగాని నాలుగుకబుర్లు చెబుమా, కులాసాగా కాన్సేపు మాట్లాడుకుందాం. సరదాకబుర్లు మాట్లాడి చాలాకాలమయింది.

వెంకటే:—బ్రాహ్మణుని, నువ్వు మనిషిని నీరసంగా కనపడుతున్నావేం. దెనకున్న చూకే లేదు. ఒంట్లో మరేం లేదుకదా.

నారా:—ఒంట్లో మరేంలేదుగాని యింట్లో మామగూలుగానే వుంటా.

వెంకటే:—నీమిగి, చెబులాటలేనా?

నారా:—లేకపోతే మరేమిటింక. మాఅమ్మవొకరై కాల్పుకు దిగేస్తూందోయ్. దానికితోడు మాచెల్లె బొకరై. ఆడపడుచుఅధార్టీ పూరాగా చలాయిస్తూంది.

వెంకటే:—సరే చెల్లెలుమాటకేంలే మనమీద ఆధారపడిన మనిషికాదు. వాళ్ల అత్తారింటికి పొమ్మంటే తీరిపోతుంది.

నారా:—అమాట నిజమే. దాన్ని పొమ్మనొచ్చుకాని మాతల్లి సంగతే వొచ్చిందోయ్.

వెంకటే:—నే నేంచేసేనో చూసేవా మాతల్లిని సరించి. నమ్మా, నా పెళ్లాన్నీ కూడా కాల్పుకుతిగేసేది మాఅమ్మ. ఆతర్వాత నీయెదుపు నువ్వేడువని వేరేవుండమన్నాను. నానుమ్మం తొక్కొద్దన్నాను. మాస్యగ్రామంలోనే వుంటూంది యిప్పుడు. నేను నెలకి నాలుగోఅయిదో పంపిస్తూవుంటాను.

నారా:—అవునుగాని నే నొకసంగతి అడుగుతాను చెప్పు. మనిషిఅన్నవాడికి తల్లివై పొకధర్మం, పెళ్లాంవై పొకధర్మమంటూ వుందా లేదా? అలాంటిప్పుడు తల్లిని యింట్లోంచి తరిమిస్తే తల్లి వైపు నెరవేర్చవలసిన ధర్మాన్ని నెరవేర్చలేదన్నమాట, కాదా?

వెంకటే:—మంచిసందేహమే కలిగింది నీకు! ఇద్దరూ వొక చోటవుండి కుక్కలులాగ, పిల్లులులాగ కాట్లాడుకుంటూవుంటే మంచిదా! వేరేవుంటే చెడ్డదా! తల్లివైపు పెళ్లాంవైపు విధి, ధర్మం అనిపేరెట్టుకుని వాళ్లనిద్దరినీ వొకచోట వుండనిద్దీ పికిలిపిట్టులులాగ కొట్టుకోనిస్తూవుంటే అది విధి ధర్మం నెరవేర్చుకున్నట్టా!

నారా:—మరి?

వెంకటే:—మరి. అయితే పను చెప్తున్నా, నువ్వేదీలేవు కాబట్టి, వాళ్లనిద్దరినీ సుఖపడనియ్యడమే మనధర్మం. వాళ్లనిద్దరూకూడా వొకచోట వుంటే సుఖం లేకపోయినప్పుడు యిద్దరినీకూడా వొక చోట వుండనియ్యకూడదన్నమాట. పెళ్లాన్ని విడిచిపొమ్మనమనిషికిదా. అదికేవలం అన్నిటికీకూడా భర్తమీదే ఆధారపడివున్నమనిషి. భార్యాభర్తలిద్దరి యొక్కవసంబంధం భార్య అర్ధశరీరం అన్నామా అన్నిటికీ యిద్దరూ వొక్కచోటే వుండితీరాలి, మనస్సు మనస్సు కలిసినన్నాళ్లు. మరి తల్లివిషయమా. తల్లికి కొడుక్కి అలాగువిష టియ్యడానికి సాధ్యంకాని సందర్భం యేమీలేదు. తల్లిని వేరేవుండమని దానికి వీలుంది. అన్నిటికీ మనమీదే ఆధారపడినమనిషి కాదు, తన బతుకు తాను బతకవచ్చు. కాబట్టి అటువంటిస్థితిలో భార్యాభర్తల శ్రేయస్సుకోసం తనే ఆలోచించి తల్లి వేరేవుండవలసింది. ఆసంగతి ఆవిడికే తోచి వేరేవుంటుందా మహిమందిమాట. వేరేవుండదా, మనం వేరేవుండేటట్లు చెయ్యాలి. ఆవిణ్ణి యేదో పల్లెటూరులో వుండమని చెప్పు. ఏదో నాలుగైదురూపాయలు పంపిస్తూవుంటా నెలకి. ఆపల్లెటూర్లోనే పడివుంటూ, అంతగా మిమ్మల్ని వచ్చి చూడాలని ఆనిం కుంటే యెప్పుడైనా వొకమారు వచ్చి, యేమామనాసునుకోసం వాళ్ల వుండి చూసి పొమ్మను. స్థిరనివాసంమట్టును పల్లెటూరులోనే. ఈ మోస్తరుగా చేస్తేవా యెంతైనా సుఖపడతాను. ఈమోస్తరుగా చేసే సేమ యిప్పుడు యెంతో సుఖంగా వుంటున్నా.

నారా:—అదృష్టవంతుడివికాబట్టి సుఖపడుతున్నావు.

వెంకటే:—నేను చేసినవనే అదృష్టం. అలా వివేకీకు కున్నానుకాబట్టే సుఖపడుతున్నా. ఇంక మరొకటి. ఆస్తులు పాస్తులువున్నవాళ్లు వొకళ్లతో వొకళ్లకి పడకపోయేక వేరేవేరేవుండి సుఖపడుతున్నారు. వాళ్లంతోమంది వున్నాను. లక్కలకొద్దీ వున్నారంటే నమ్మ.

నారా:—ఎందుకూ, నేనే చూసేను అలాంటివాళ్లని. ఎంతో మంది వున్నారు, ఆమోస్తరుగా పరిష్కారంచేసుకు సుఖపడుతున్న వాళ్లు.

వెంకటే:—మరి మనలాంటివాళ్ల సంగతంటావా? నేను చెప్పనేచెప్పేను యెలాగచెయ్యాలి. నేనలా చేసుకున్నాను. కాబట్టే సుఖపడుతున్నా. నిమ్మకూడా అలాగు చేసుకుని సుఖపడమని చెప్తున్నా.

నారా:—నిజమే. నువ్వు చేసినపని చాలాబాగుందయ్యి. నువ్వుచేసినట్టు చేసి చూడవలసిందే. చేసి చూస్తా. దానివల్ల యిగొడవంతా వొదిలిపోతే సుఖపడతాను.

వెంకటే:—నాకు వొదిలిపోయేయి చూసేవా మరి, ఆలాగే నీకున్నా.

వెంకటేశ:—కాని దీంతో వాకసంగతి వుండినుమా. విధికి ధర్మానికి పిచ్చిపిచ్చిఅర్థాలు పెట్టుకుని పనిచేస్తే లాభంలేదు. నేను చెసిం దీవిధి, ధర్మప్రకారమే. వాల్మీకిని సుభుపెట్టెం మనకువిధి. మనం సుభుపడం మనవిధి. అంచేత వాల్మీకిని వేరేవేరే వుంచక తప్పదు. విధి, ధర్మానికి వ్యతిరేకంగా నేనూ నల్ల నేను. ఆమోక్ష రుగా చెయ్యి, మందిది.

నారా:—వాగానేవుంది నువ్వుచెప్పినమాట. నాకు నచ్చింది. అలాగే చేసిమాస్తా.

వెంకటేశ:—చేసేవో సుభుపడ్డావో. ఏరట్టూ లేక బతుకుతావు బతికున్నావ్వా.

నారా:—అలాగే.

వెంకటేశ:—మరి నేను వెళ్లిస్తా. వేగిరం వస్తా నని యింటి దగ్గర చెప్పి బయలుదేరను. వెళ్లిస్తామని.

నారా:—మందిచే. నుట్టి కలుసుకుంటాను.

వెంకటేశ:—ఉం. వెళ్లిస్తా. (వెళ్లును.)
(తనపనుసు.)

౫-న రంగం

[సాయింశ్రం వెంకటమ్మ, సుబ్బమ్మ వత్తులుచేసుకుంటూ సామిట్లో కూచుంటారు]

సుబ్బ:—అమ్మా! నన్నివాలే మావూరు తీసుకుపో. వాడన్నీ మాటలన్నాక నే నుండును, వుండలేను. ఆడబోడునుతనం యోనేనా చేస్తున్నాను. తనపెళ్లాన్ని కాలుకుతింటున్నాను.

వెంక:—జొసవమ్మా! నిజమేతల్లీ! నిన్నేమిమాటలేనా ఆడేమా అప్పటికి నేనుచెప్పనేచెప్పేను 'నన్నేమిమాటలన్నా నేనుపడతాను గాని దాన్ని వొక్కమాటేనా అనవచ్చింది. కాని వాడు వూరుకుంటాడా? బుద్ధి వుంటేకమా! దానివలలో పడిపోయేడు.

సుబ్బ:—నువ్వు పడతావంటే నీరర్థం, నీలబాలిభితం అంటేగాని నాకేంవచ్చిందే, నాభర్తంకాలా, వాడన్నమాటలన్నీ పడడానికి. పండులాంటి నాసంసార ముండగా యిక్కడ వుండడ మేమొచ్చింది నానుకుటిరాత కాకపోతే. వీడిచేత నానాబూతులూ తినడం నానెత్తని రాయలేదు దేవుడు ఎప్పుడైతే వాడికి నామా పడ లేదో అప్పుడే తెగతెంపులు చేసుకునిపోతాను. నేను నీలాగ యింటిని కుక్కలాగ కనిపెట్టుకు హుచుంటానునుకున్నావు కమాను!

వెంక:—నేనుమట్టుకు కుక్కలాగ కనిపెట్టుకు హుచున్నా నుటే. నారాజ్యం నాయుడ్యం కాబట్టే యిన్నావ్వా వున్నాను. ఈమాడులోజాలామే వాడు నామీద తిరగబడ్డాడు. సరే అయి పోయింది. ఇంతవరకు యెన్నడేనా నామాటకు యెదురాడి యెరు

గునా నాడు. నామాట విన్నన్నావ్వా అది భయభక్తులుతోలే వుండేది. ఇప్పుడో, తాడెక్కిపోయింది.

సుబ్బ:—వాడికి అది మందుపెట్టి లొంగతీసింది. ఆసంగతి నాకు తెలుసు. మరెవ్వరికి తెలిదు.

వెంక:—నిజమే అయివుండవచ్చు. అది యెంతేనా సాహసు రాలు. లేకపోతే వొక్కమాటున గిరుక్కున తిరిగిపోతాడా నేన్నటి దాకా నాఅనుపాజ్ఞలలో వున్నవాడు? దీని కేదో వైద్యం తగల పెట్టించాలి.

సుబ్బ:—ఇంక నిన్ను దగ్గరికి రానిస్తేగా.

వెంక:—ఆమాట నిజమే. అది బతికున్నన్నావ్వా నన్నింక వాడిగరికి రానియ్యదు. వాణ్ణి కళ్ల పడనియ్యదు. వాడు నెత్తికికిం చుకుంటున్నాడు. అ దెక్కుతూంది.

సుబ్బ:—ఇంకేమందిలే. ఎప్పుడైతే అది నెత్తికికింగో అప్పుడే అది దిగిపోతుంది. అది జప్తుచేవమ్మా! ఎవరికి తెలీ దాసంగతి. ఒకమాటు నాకు కలలో వచ్చి లక్ష్మీదేవి చెప్పింది. ఇలాంటి వంద రికి తెలీవమ్మా. ఎవరో మహాపుణ్యాత్ములుంటారు మానేపూ, వాళ్లతో దేవుడు కలలోవచ్చి చెప్తాడు. కలలో తననిజస్వరూపం చూసిస్తాడు. నా కొకమాటు కలలో కనపడి లక్ష్మీదేవి చెప్పింది 'మియింట్లో జప్తుచేవుంది సుమా, జాగర్ర జాగర్ర' అని. అప్పుడు నే ననుకున్నాను 'హా! దైవమా! నాలాంటిదాన్ని కాబట్టి నువ్వు నిజం చెప్పి గతీం చేవు. తక్కినవాళ్ల పని అంకేకదా పరమాత్య' అని. అప్పటినుంచీ రానినిసరింది మెలకువగానే వుంటున్నా.

వెంక:—నిజమే, అది జప్తుచేవి అవతారమే. లేకపోతే అత్త గానీ, ఆడబోడుచుని యింత కాలుకుతిసదు.

సుబ్బ:—అయిందిలే. వాడిసంసారం కూలబడేది నాలు దగ్గర కొచ్చేయి. ఎందుకనీ, నేను చెప్పడంలేదు, నిజం చెప్తే నిష్ఠారమని.

వెంక:—నిజమే పిల్లా, నువ్వు చెప్పేవన్నీ నిజమే.

సుబ్బ:—జొసగాని అమ్మా! వాడికి బ్రాన్స్ పర అయి పోయిందిలేమిటే?

వెంక:—ఏదో దూరదేశాని కయిపోయింది. దేవుడు వాడికి తగినశాస్త్రీ చేసేడు.

సుబ్బ:—నువ్వు వెళ్తావామేమిటి అక్కడికి?

వెంక:—నేను వెళ్లేదేమిటి, నామీహం. నాతక్కినయిద్దరి కొడుకులయిద్దరికి వెళ్లేదేమిటి. వాల్మీకి దూరదేశాల్లో ఒకడు బొంబాయిలోనూ, ఒకడు కలకత్తాలోనూ పడియేడుస్తూన్నారనేకదా వాళ్ల దగ్గరికి వెళ్లకపోడం. సరే మీకుమాదా దూరమయిపోయేడు. మిమ్మలిసందరినీ విడిచిపెట్టి, చుట్టాలిని విడిచిపెట్టి, దేశంవిడిచిపెట్టి

నల్లనేమిటి నామహం. వాహూ, అదీ పోతారు, ముప్పైయ్యేడేదానికి. అంతేగాని నేను వెళ్లను.

సుబ్బ:—మంచివని. అలాచేసేవంటే నిమిషాలమీద బుద్ధి వుంది. 'నా' అన్నవాళ్లు లేనిపోట వుంటేగాని వాటికి బుద్ధిరాదు.

నెంక:—నిజమే. అప్పుడువచ్చి నా కాళ్ల మీదపడి తుమించు, తుమింతు, మహాపాతకం చేసేను, తల్లి కింత ప్రాణం తెలియకచేసే నని వేసుకుంటాడు. వాటిగడ్డి వాసుతిన్నాక అప్పుడు పోనీగదా బిడ్డ ఉంది వూరుకుంటాను.

(నారాయణరావు వచ్చును.)

నారా:—(తల్లితో) ఇదిగో నేను మారచేశం పరిపాడు న్నాను. బల్లారి బదిలీఅయింది. నువ్వు నాతో రావడానికి వీలులేదు. అసలు నిన్నెప్పటికీ నాపక్కరికి రానియ్యను.

నెంక:—అదివున్నన్నట్లు యె - గా రాను.

నారా:—అదే నేను కోరదీ.

నెంక:—నాకు పిండాకుడు దొరక్కపోయిందేమిటి, నీపంచ నుంటేగాని?

నారా:—నా కిన్నిమాటలు పనికిరావు. నేను నీకు నెలకి ఆయిదురూపాయలుచొప్పున పంపిస్తావుంటాను, యెక్కడవుంటే అక్కడవుంటు. నాయంటికిమాత్రం రావద్దు. నువ్వు యెన్నడూ నాకొంప తొక్కవద్దు.

నెంక:—ను వ్యసలు కాళ్ల మీదపడి బలిహాలుకున్నా నేను రానునోయి, అలాంటిది నాఅంతట నేనే వస్తానుట్రా. అది చెప్పే వరమా యింకే ప్రతిజ్ఞ.

నారా:—ఆదీ నేనూ నిచ్చేవరమా నువ్వు చావనేచావవులే. నా కాసంగతి తెలుసు. మా చావులు మా నీకే ప్రాణాలు విడిచి పెడతావు.

నెంక:—దేవు డాయుర్దయిపోస్తే యెవరేం చెయ్యగలరు? అర్థాయుష్షుచెగవలు పోతే పోతారు.

నారా:—'పాపేదిరాయువు'అని వూరికేఅన్నాడులే. నీలాంటి వాళ్లని చూసే అన్నాడు.

నెంక:—నేనుట్రా పాపిని! ఓరిదుర్మార్గుడా! నేను సత్య ఋషినిరా. నేను బ్రహ్మఋషినిరా. ఈకాలంలో నాఅంతటివుత్తము రాలు, నాఅంతటిఋషి లేదురా. నీకేం తెలుస్తుంది కుక్కవి. నర కలోకంలో పడవలిననాడికి నీకు తెలుస్తుందిరా.

నారా:—నాకు తెలియక్కర్లేదు. నాకు తెలియకుండానే వుం టేనే సుఖంగా బతుకుతాను.

(నీతమ్మ, లక్ష్మమ్మ వస్తారు. లక్ష్మమ్మ, సుబ్బమ్మ వెళతారు.)

నారా:—అత్తగారూ!

నీత:—నాయనా!

నారా:—మిమ్మల్ని చొక్కనాటాటానాతో చెయ్యండి. చూసేరా నాకు బదిలీఅయింది మారచేశం.

నీత:—నాయనా, బదిలీచెయ్యవద్దని రాసుకోలేకపోయేనా?

నారా:—నేను కోరే యీబదిలీకి చొప్పునున్నాను. మాతల్లి పక్కరనుంచి కొన్నాళ్లుపాటు యెంతమాత్రం గావుంటే అంతమంచిది. అంతసుఖపడతానని కోరుకున్నా. మారచేశంలో వుంటే అది నావూసేనా తలపెట్టును. నానుమ్మమేనా తొక్కదు. ఆసంగతి తెలియడంచేతే మారచేశంబదిలీ నేనే చొప్పునున్నా.

నీత:—మంచిది నాయనా! నీకు మంచిమని యెలాతోస్తే అలాచెయ్యి.

నారా:—లిన్నారా. ఇప్పుడు మీరు చెయ్యవలసిందేమిటంటే, మీపిల్లను యిక్కడినుంచే మీరుతీసుకువెళ్లడం నాకు యిష్టంలేదు. మాఅమ్మ, చెల్లెలూమాడా తనభార్యనంకన్నాల్లంటే యిష్టమో, వాళ్లు చెప్పినట్టు చేస్తాడో అని యెదుస్తారు. కనుక నాళ్లు యిప్పుడు యెడవ కుండావుంటానికి మీరు నేను బల్లారి వల్లకే తర్వాత అక్కడికి రండి. అక్కడినుంచి పిల్లని మీరు తీసుకువెళుకురుగాని. రైలు ఖర్చులు నేనే యిచ్చుంటాను.

నీత:—రైలుఖర్చుల కేంమునిగిపోయిందే బాబు, యింతోటి రైలుఖర్చులు.

నారా:—అబ్బానుకాదు చెబుతున్నా. అలాచేస్తేనే బాగుం టుంది. అంచేత యిక్కడినుంచి మీవూగు ప్రయాణమయి వల్లి తర్వాత అక్కడికి రండి. లిన్నారా మరి.

నీత:—మంచిది నాయనా! అలాగే చేస్తాను. నీయిష్టంవచ్చి నట్లే చేస్తాను.

(లోపలనుంచి 'అమ్మగారూ' అని కక్. 'ఎవగుణా' గని నీతమ్మ వస్తుంది.)

నారా:—నీమీదే సమాచారం. చూసేనా యీలా పరిష్కార మయిపోయిందో.

లక్ష్మ:—నీమంచి?

నారా:—భేషగా వదిలేస్తేనేనా మాతల్లిని.

లక్ష్మ:—మీకు సుఖపడేకోణాలు వచ్చేయి.

నారా:—నాకు కాదు నీకు. లేకుంటే యింకా బెనకటిలాగే వుండును అంతా.

లక్ష్మ:—ఉం.

నారా:—సింట్లో యిప్పుడెంత ఆనందంగా నేనావుంది.

లక్ష్మ:—ఉండలేం, అన్నీ పరిష్కారంచేసుకుంటే.

నారా:—నీదీ యిలా పగ్గరికిరా.

లక్ష్మ:—నెడవానట్లోనేనా!

నారా:—ముద్దుర తప్పేరులే.

లక్ష్మ:—అదేమో బాబో అలారండి (గదిచూపించును.)

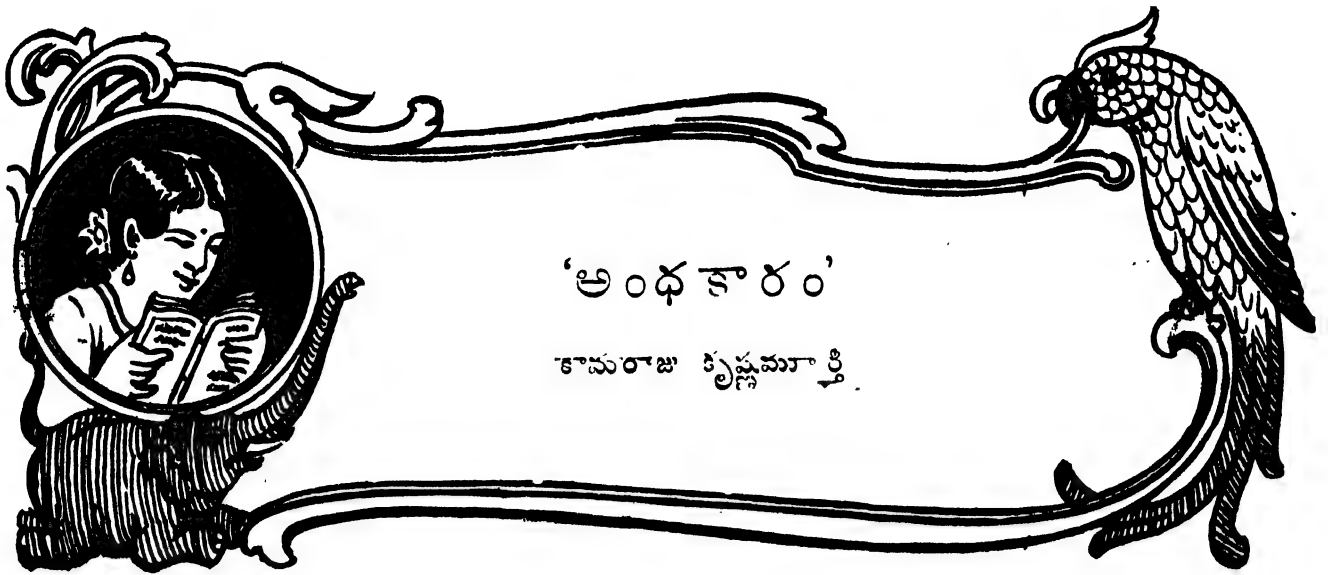
నారా:—రమ్మంటే. (లక్ష్మమ్మపారిపోవును) నువ్వన్నమాటే నెగ్గించుకున్నావులే. పది.

(నల్లము)

(తెగవాలను)

ఉద్యోగ ప్రయత్నము





(ఇందులో వచ్చునారు:—తండ్రి, తల్లి, కొడుకు, ప్రాబూరి, యిద్దరు పురుషులు.)

అంకం ఒకటి—మొదటిసీను

[ఒక గుడిశె. లోపల ఒక నులకమంచం. ఒక తలుపు. లోపల తూర్పువైపున ఒకతాడు కట్టివుంది. ఆత్రాటిమీద చినిగిపోయిన గుడ్డలు. పడమటివైపున ఒకపొయ్యి. ఆపొయ్యిమీద ఒకకుంభ. దానిప్రక్కన చిన్నిచిన్ని పిడతలు మూడు వున్నాయి. ఆగుడిశెలో ఒకదీపం మిగులుమిగులు అంటుంది. అది ప్రమిదలో వుంది. ఆనులకమంచంపై కొడుకు పడుకొని వుంటాడు. చామనచాయ. తల్లినియస్సు సలభముపట్ల. ఒకనరితా మీద నూలుతీస్తున్నది. ప్రక్కన ఏకరులు పడివున్నాయి. లోపలికిపోయిన బుగ్గలు, బరువయినకళ్లు. చిక్కుపడిన జాటు వెనక చుట్టచుట్టింది కొప్పుమోస్తరు. అప్పు డప్పుడు మంచంవంక చూస్తుంటుంది. ఒక దీర్ఘశ్వాస విడలుతుంది. కళ్లు మిలమిలలాడి నీటిచుక్కలు క్రింద పడుతాయి. అంతా నిశ్శబ్దం. ఆమెమొహంపూస్తే కప్పజీవి అని తోస్తుంది. అడుగులచప్పుడు వినిపిస్తుంది. తలుపు దభాలున తెరచుకొంటుంది.]

[ప్రవేశం తండ్రి—ఏభయి ఏళ్లు వుంటాయి. మంచి ఒడ్డాపాడవు. చేతిలో ఒకకట్ట. నెత్తిమీద ఒక

చినిగిన తలగుడ్డ. పెద్దమీసాలు. నోట్లో పొగాకు. తూలుతూ వుంటాడు.)

ఒనేవు... (వెకిలినవ్వు)... హి... హి... బువ్వ వండావు... (అని కుండదగ్గరకు వెళ్లి చూస్తాడు. ఏమీవుండదు)... దొంగముండా... బువ్వ వండకుండా ఏమి చేస్తున్నావు...

తల్లి

(లేచి) గంజకని గూట్లోపెట్టిన డబ్బు ఎత్తుకు పోతే—బువ్వ ఎక్కడనుంచి వస్తుంది అనుకున్నావు: పిల్లోడు యిందాక పడ్చిపడ్చి పడుకున్నాడు.

అండ్రి

(తల్లిదగ్గరకువచ్చి) నామీద దొంగతనాలు కడతావు... నే నేరుకున్నావు... హి... హి... నామీద... దొంగతనాలు కడతావు... ఊ... నామీద. ఎన్ని సార్లు చెప్పినా బుద్ధిలేదు—ఎన్నిసార్లు చెప్పినా (అని తల్లిజాటు పట్టుకొని జరాజరా లాగి కొడతాడు.) ఇప్పుడయినా బుద్ధివచ్చిందా? (మల్లీ తన్ను తాడు. 'అమ్మా'... 'అయ్యా' అని తల్లి కేకలు వేస్తుంది).

కొడుకు

(ఏడుస్తూ లేస్తాడు.) అయ్యా, అమ్మ నందుకు తెగతొగివచ్చి కొడతావు. (అమ్మదగ్గరకువెళ్లి) అమ్మా... లేవే (అయ్యా... అయ్యా అనే కేకలు)

తండ్రి

వెధనగాడిదా... ఏడ్చి — ఏడ్చి పడుకొన్నావుటగా... దొంగయేడ్చులు ఎక్కడనేర్చావు... గూట్లో రెడణాలు తీశావుకదా... దొంగవెధవా... ఎక్కడ పెట్టావో చెప్పు... (కట్టతో కొడతాడు. కొడుకు పెద్ద పెట్టున రాగాలు)

కొడుకు

అమ్మాయి... నన్ను అయ్య చంపుతున్నాడు... అమ్మా... అమ్మా... అబ్బా (అని గుడిశెలోనుంచి బయటికి పరుగెత్తుతాడు. తలుపు బాల్గా తీసివ్రుంది.)

తండ్రి

నేర్చాడు బయటికి పరుగెత్తటం... ఈ ముండే నేర్పింది... వాణ్ని గారాబాలు పెడుతుంది... ఎందుకన్నా పనికొస్తాడా... యివన్ని చెడిపోవటానికి... హి... హి... యిదే నేర్పింది (అని రెండుతన్నులు తంతాడు ఆమూలుగుతున్న తల్లిని.)

తల్లి

రామా... రామా... ఎన్నికష్టాలు తెచ్చిపెట్టావురా (ఎక్కి ఎక్కి ఏడుస్తుంది, బాధకు ఓర్వలేక.)

తండ్రి

బువ్వ లేనే లేదు... ఒక అణా యియ్యి... బయటికి వెళ్లివస్తా... యియ్యి... యిస్తావా లేదా?

తల్లి

వాదగ్గరవుంటే బువ్వే వండిపెట్టేదాన్ని... ఏమి... అబ్బా... లేదు... రామా!

తండ్రి

లేదు... లేదు... ఆమెల్లో పుస్తె తెంచి యియ్యి... నీకెందుకు... నేను యిచ్చినదేగా... ఏం ఆలిశ్యం (అని మీదపడి... అయ్యో—అయ్యో అని ఏడుస్తుంటే తెంచుకొని బయటికి పోతాడు)

తల్లి

(వట్లు పట్టుకొంటూ—యిటు అటూ సర్దుకొని)

ఒరేయి... నాయ... నా... రారా! వేళయింది... పడుకొందువుకాని... నాయనా!

కొడుకు

(తలుపుదగ్గరనుంచి తొంగిచూస్తూ) అమ్మా... అయ్య బయటికిపోయాడా? నన్ను తెగకొట్టాడే— అమ్మా నేను పరుగెత్తకపోతే... నన్ను చంపేశేవాడే అమ్మా... తెగత్రాగివచ్చాడు. (లోలికి వస్తాడు.)

తల్లి

అవునురా! నన్ను నడుములువిరుగకొట్టాడు— రెండు అణాలు తీసుకొన్నావని అంటే. రోజురోజు ఎక్కువయిపోతున్నది త్రాగుడు.

కొడుకు

నాకు నిద్ర వస్తున్నదే అమ్మా (అమ్మకాళ్ళమీద పడుకుని నిద్రపోతాడు. తల్లి కొడుకుపట్ల తడుముతూ వుంటుంది.)

తల్లి

(ఆశ్చర్యముతో) అయ్యో, నీబొడ్డులో ఎక్కడివిరా రెడణాలు (కొడుకు నిద్రపోతూవుండటం చూస్తుంది.) కర్మం! తండ్రి అంశవాడు అవుతాడు కాబోలు. తండ్రికి దొంగతనాలు లేవు. నానారాధకర్మం కాలింది. నాజీవితం అశ్రుధారలతో గడవాలనిదే. రామా! నీకయినా దయరాదా! నే నేమిపాపం చేశాను? రోజూ నీ ఆలయంలో నిత్యసేవ చేస్తా. నాకొడుకుని, నాకు అలివిఅయినన్నాళ్లు నీపాదాలదగ్గరకు తీసుకొస్తాను. తండ్రి! నాకొడుకుని కాపాడు. వానిని రక్షించు. (అంటూ ఆవులించి ఒరిగి పడుకుంటుంది.)

గుడిశెముందర వీధి

(ప్రవేశం యిద్దరు పురుషులు)

మొదటిపురుషుడు

రోజూ యిదే ఏడ్చుకదా! ఆమహాతల్లి ఏలా ఓర్చుకుంటుందో కదా!

రెండవపురుషుడు

ఏంచేస్తుంది, తెగత్రాగి వచ్చి యింకా డబ్బివ్వ మని చావబాదుతుంటే! ఆకొడుకు తండ్రిలాగే తయారయ్యేట్టున్నాడు. ఎంత ఓర్పు. ఎంతనిదానం. రోజూ తన్ను లేకదా! మనకీ విసుగు పుడుతున్నది.

(వెళ్లిపోతారు)

౨

[రామాలయం. పూరిబయటవున్న అడవిలో వుంది. ఒక పూజారి వుంటాడు. ఆలయంలో దీపం వెలుగుతూ వుంటుంది. జిమ్మని శబ్దం. అడుగులచప్పుడు. దీనాలాపం. నెమ్మదిగా తల్లిప్రవేశిస్తుంది.]

తల్లి

రా...మా! నన్ను ఎంత కష్టపెట్టాలో అంత కష్టపెడుతున్నావు. నాజీవితం నిరర్థకమయింది. ఎంత శరీరకష్టం చేసి సంపాదించినా రెండణాలు రావు. భర్తకు త్రాగుడుకు కావాలి ఆడబ్బు. ఇంటిదగ్గర బువ్వకు లేదు డబ్బు. ఇహ పిల్లవాని సంగతి చెప్పక్కరలేదు. వాడిదోవన వాడు తిరుగుతున్నాడు.

పూజారి

(అరవయి యేళ్లు వుంటాయి. పంగనామం పెట్టాడు. వెనకాల జుట్టు. దానిలో పువ్వులు. వంటి మీద గంధంపూత.)

అమ్మా, నీఅబ్బాయి ఏడి? ప్రతిరోజు వెంబడి పెట్టుకు వస్తుండేదానివి. నాలుగురోజులనుంచి రావటం లేదు. అయినా పెద్దవాడు అవుతున్నాడేలే. చెడ్డ సహవాసాలు ముదిరాయని విన్నా. నీ వేంచేస్తావు పాపం, ముసలిదానివి!

తల్లి

(కళ్లనీళ్లు కారిపోతూ, యిదివరకు కొడుకు నుంచునే స్థలం చూచి) నాయనా, వీడు పెద్దవాడయినా నన్ను వుద్ధరిస్తాడని—వాడు ఏళ్లలో పెద్దవాడవుతున్నాడీ—నాఆశలు పెద్దవయి—నాకష్టాలు గట్టే

క్కకపోతాయా అని అనుకొన్నా. ఎన్నిసార్లు వాణ్ని చూసి నాహృదయం పొంగి—ఆరిపోతూన్న నా జీవితాన్ని నిలుపుకున్నా. నా ఆశలన్నీ వాడిమీద నిలిపాను. కాని...రామా! నాకు గతి ఈరామాలయం, వేరేగతిలేదు. నాకు యిదే శరణాలయం.

పూజారి

అమ్మా, ఎందుకు అంతగా విచారిస్తావు? అయ్యేది కాకమానదు కదా. కొందరిజీవితాలు నిరంతరకష్టాలతో నిండిపోతాయి. అందులో నీజీవితం ఒకటి. నీ కేమయినా సహాయం కావాలంటే నాదగ్గరకు రా. నాకు చేతనయినంతమటుకు సహాయం చేస్తా.

తల్లి

అమ్మా, ఈ ప్రపంచంలో దయ, కరుణ, జాలి, మృదుత్వమయినపలుకులు అనేవి నేను జన్మించినది మొదలుకొని అనుభవించలేదు; అనుభవించపోను. నా కొడుకు, యింకాకొందరు కలసి దారిద్ర్యపిడి చేసి వాళ్లను కొట్టి పొడిచి — ఒకడు చచ్చిపోయాడుట. ఇప్పుడే దోవలో ఎవరోచెప్పకొంటున్నారు—ఆడబ్బు తీసుకొని పారిపోయాడుట. దీన్నించి ఏకష్టాలు ప్రాప్తిస్తాయో తెలియదు.

పూజారి

నీకు తెలియదేమో ననుకొన్నా! తెలిసిందీ. ఎవరుచేశారో ఎవరుచెప్తారు. నీకొడుకు వున్నాడని మటుకు విన్నా. న్యాయాన్యాయములు ఎవరికి తెలుస్తాయి. ఆరాముడే రక్షించాలి.

తల్లి

నిజమేనా నాయనా! సరిపడనివాళ్లు అన్నా రనుకొన్నా. నాలుగు రోజులనుంచి యింటిచాయల రాలేదు. వాళ్లతండ్రి అసలే రావటంలేదు. రామా! రామా! నాకు పుత్రభీషం పెట్టరా (అని పెద్దపెట్టున పడుస్తుంది.)

పూజారి

కేసు విచారణకు వెళ్దాము. నిన్ను తీసుకొని వెళ్తాను.

తల్లి

ఇంకెక్కడికొడుకు—యింకెక్కడి విచారణ. నాకొడుకుని చూసేస్తావ్వి లేదు... నాకు చావే శ్రేయస్కరం... నేను ఈకష్టాలు చూడలేను. ఈపుత్రశోకం అనుభవించలేను. నేను చచ్చిపోతే ఈ రామాలయం సమీపంలో ఒక చెట్టుక్రింద పూడ్చివేయించండి. అంతకంటే ఈజీవితంలో నాకు ఆశ లేదు. (వెళ్లిపోతుంది)

౩

ఏధి

[ప్రవేశం యిద్దరు పురుషులు]

మొదటి పురుషుడు

విన్నావా ఎంత ఆశ్చర్యం అయినవనో—ఆ ముసలిది, తెలియదటమాయ—పాపం! ఎప్పుడూ మొగుడు కొడుతూవుంటాడు—ఆమెకొడుకు దారిద్ర్యంలో ఒకర్ని చంపేశాట్ట. ఈరోజున కేసు విచారణ అయి ముద్దాయి నేరస్థుడని ఋజువయినట్ట. ఆముసలిదానికి దిక్కెవ్వరు? ఆమె మొగుడా! ఎప్పుడూ 'వెళ్లిపోతా'ని పూల్లాట్టకొని తిరుగుతూవుంటాడు.

రెండవ పురుషుడు

నేరము ఋజువయితే ఉరిశిక్ష, అన్నమాటే.

మొదటి పురుషుడు

అన్నమాటే. ఉరిశిక్ష వేశారుట. మొద్దులాగు నిలబడ్డాడుట. ఒకపడుపు—ఒకవిచారం—ఏమీ లేదుట. ఎంతరాయిగుండె అయితేనేమి—తల్లి కోర్టుకు వచ్చిందిట. వచ్చి శిక్ష వినంగానే 'నాయనా' అని క్రింద పడిపోయిందిట. కోర్టు అంతా గందరగోళం. ఈతల్లి కేక విసేటప్పటికి—ఒకతుపాను వచ్చినట్లు వచ్చింది—ఆ దుఃఖం పొంగిపోయి బాపురన్న ఏడ్వటం మొదలు పెట్టాడు. తల్లి కొడుకు ఒకర్ని ఓకరు కొగలించుకొని

అదే ఏప్పు, పోలీసులు విడతీసేవరికు. వెళ్లేటప్పుడు 'నీకడుపు చెడపుట్టాను. తమిచాలి' అన్నాట్ట కొడుకు. నాకుమటుకు ఆముసలిదాన్ని చూస్తే గుండె తరుక్కుపోతుంది.

రెండవ పురుషుడు

ఇంకేముదిరా! ముసలిది చచ్చిపోతుంది. ఎన్ని కష్టాలు అని ఓర్చుకుంటుంది. మంచియిల్లాలు.

మొదటి పురుషుడు

కాని జడ్జిగారు ఒకటిమటుకు చెప్పారుట. 'నావిధి నేను చేశాను. కాని ముద్దాయి నయస్సులో చిన్నవాడవుటచేతను, దుర్జననహవానంచేత' చెడిపోయినాడు కాబట్టిన్నీ, ఉరిశిక్షను గూనజ్జీవశిక్షకు మార్చేందుకు సిఫార్సు చేస్తాను' అని చెప్పాడు!

రెండవ పురుషుడు

అది ఎంతవరికు నిజ మవుతుందో.

మొదటివాడు

తల్లికినుట్టకు రోజూ కొడుకునగ్గరకు వెళ్లేందుకు అనుమతి యిచ్చారుట.

రెండవవాడు

ఏముంది—అంతా విచార మేగా. ఉరిశిక్ష ఖాయ పడుతే ఎన్నాళ్లు వెళ్లుతుంది. పగవార్ల కయినా ఆతల్లి కష్టాలు నద్దురా. (వెళ్లిపోతారు)

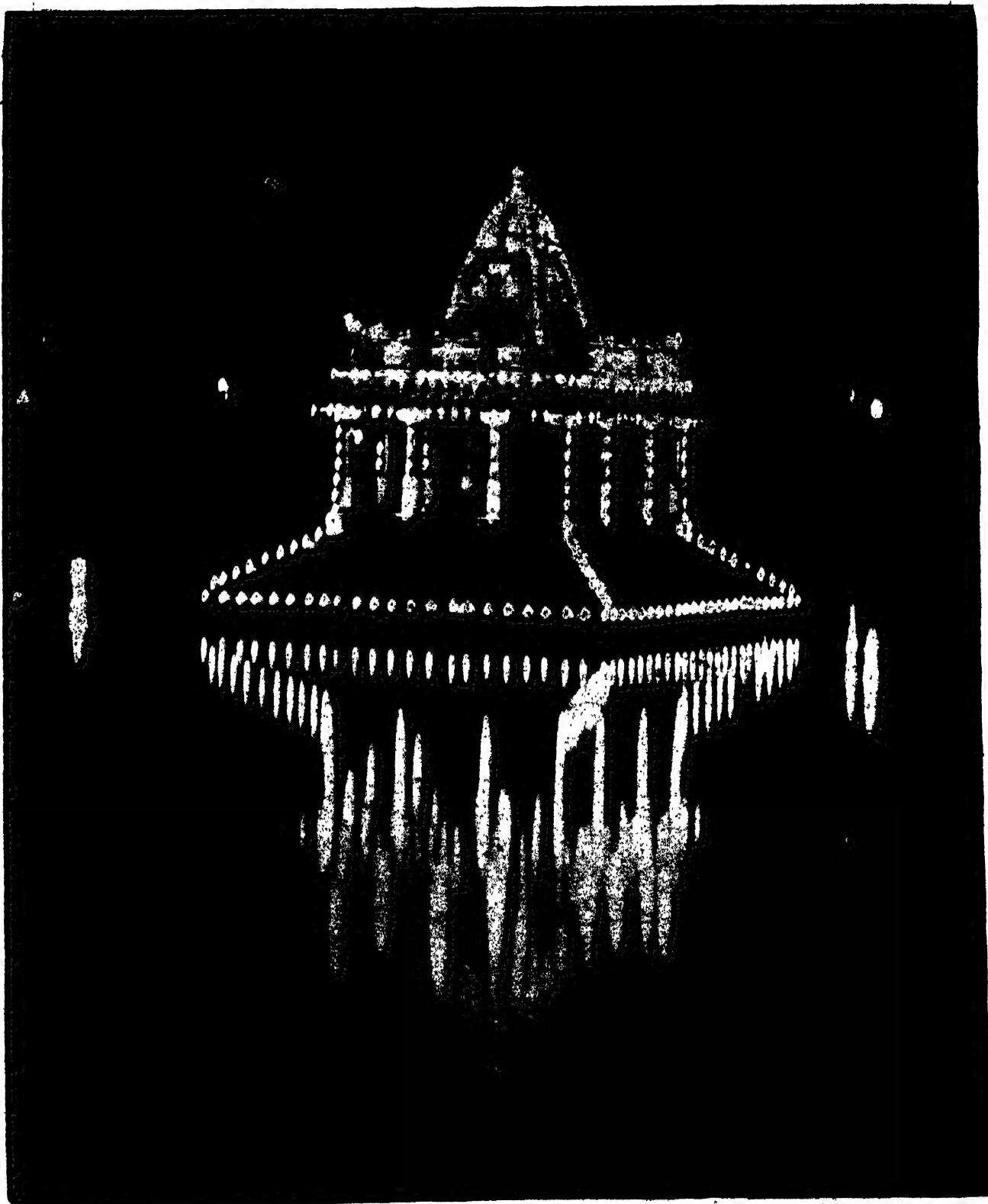
౪

[రామాలయం. గుల్లో దీపం. ఆలయముకు యిరవయిగజాలదూరాన వున్న ఒకచెట్టుక్రింద తల్లి పడుకొని వుంటుంది. మూలుగుతూ ఆవేదన పడుతూఉంటుంది. కళ్లనీళ్లు కారిపోతూ ఉంటాయి.]

తల్లి

నాయనా! నేను నిన్ను చూడలేనురా. నా వల్లు నాస్వాధీనం కావటం లేదు తండ్రీ! రోజూవచ్చే అమ్మ రాలేదని ఎంత దుఃఖిస్తున్నావో—పాపం. ఆ పూజారిని పంపాను, నేను రాలేనని చెప్పమని. మంచి

ఆంధ్రపత్రిక - భావనంపత్తురాడినంచిక



జూలూమంటపము

S. S. S.



2.2.2

రత్న, చిడ్డ
(కాకిరకు)

V. R. C.

ఉదారస్వభావుడు. దిక్కులేనివారికి దేవుడే దిక్కు. ఎన్నాళ్లని భరించేది ఈకష్టాలు. ఈ పాడు కృశించి పోయినశరీరాన్ని ఎప్పుడు విడిచిపోతాడు ఈజీవుడు. రామా! నాప్రాణం తీసుకొని నాకొడుకుని రక్షించు తండ్రి. వాడిప్రాణాలు కాపాడు రామయ్యతండ్రి! చిన్నప్పటినుంచీ పెంచి పెద్దచేసిన వాత్సల్యం చంపుకో లేకుండావున్నాను రామా! నాప్రాణాలు నీ కర్పిస్తాను. (అడుగులచప్పుడు. పూజారిప్రవేశం. చేతులు చాచి లేపుబోతుంది తల్లి. కాని క్రింద తూలిపడిపోతుంది.) అయ్యా!...నా తండ్రి—నాపిచ్చితండ్రి—నాయనా— ఏం చెప్పాడు. దేవుడిలాగా నీవు కనుపించావు. నాదుఃఖ యాత్రలో నీవు నిలబడ్డావు సహాయంగా—చెప్ప— త్వరగా నాయనా!

పూజారి

ఏముంది. నీవు రాలేదని జైలుకొట్టి అంతా తిరుగుతున్నాడు. మాటలు తడబడుతున్నాయి. రేపు వస్తే వస్తాయిట ఆర్డర్లు యావజ్జీవశిక్షవేశామని...రాక పోతే...ఎట్లుండి.

తల్లి

(ఆదుర్దాతో) అంతవరకు వచ్చింది—రామా! నేను ఈకష్టాలు చూడలేను. నేను యింక బ్రతకను. నాకు దడగావుంది. ఆయాసం ఎక్కువగా వుంది. (రోప్పతూ) మానాయన—ఏలావున్నాడు.

పూజారి

ఏలావుంటాడు. మొహం అంతా పీక్కునిపోయి ఎంతముసలివాడులాగున్నాడమ్మా! తల అంతా నెరసి పోయింది—ఒకపదిరోజులలో. మనస్సులో ఆందోళన ఎంతపని చేస్తుంది. ఆ...ఆ...యిది ఏమిటి (పడిపో తున్న తల్లిని పట్టుకుని తల ఒళ్లో పెట్టుకొని కూర్చుంటాడు.)

తల్లి

ఉ....ఉ....నాకు శ్వాస...తిరగటం లేదు. దా...హం...నాకొడుకు...ఉరి...శిక్ష...ఏలా భరి

...స్తావు....తండ్రి....రామా....నీకు ఒప్పచెప్పా.... పోతున్నా...రా...మా. (కళ్లు తేలవేస్తుంది...గురక. పూజారి గబగబ ఆలయంలోకి పోయి అర్చనజలం ఒకతులసినదళం తీసుకొనివచ్చి తల్లినోటిలో పోసి, తులసి దళం నోటిలో పెడతాడు. తల్లి కళ్లు మూస్తుంది.)

పూజారి

(లేచి) ఎంతభక్తురాలు. మహా పతివ్రత. భర్త మాటకు కొట్టినా తిట్టినా ఎదురాడలేదు. మహాసాధ్వి. పుత్రశోకంతో మరణించింది. రామునిసేవ చేయనిరోజు లేదు. ఇటువంటి భక్తాగ్రేసరులు—ఏకులం అయితే మటుకు ఏమి—వున్నారుకాబట్టే భూదేవి మ్రోయ కలుగుచున్నది. లేకపోతే పాపాలతో భూమి క్రుంగి పొయ్యేది. రామా! ఈమె నీపాదసన్నిధికి చేరుకొన్నది. ఈమెఆత్మకు శాంతి చేకూర్చుము.

(ప్రవేశం యిరువురు పురుషులు. శవంవంక చూచి)

మొదటివాడు

తల్లి చనిపోయిందా! ఎంతవార్త. ఈమెను తెలియనివాళ్లు ఈ గ్రామంలో లేరు. ఎన్నికష్టాలు భరించింది. ఈమె కొడుకునకు ఉరిశిక్ష తప్పించారుటగా! తల్లి ఆకబురుకూడా వినలేదా. ఎంతకష్టం...

రెండవపురుషుడు

ఈమెకు యిచ్చటనే సమాధిచేయించాలి. నేను డబ్బువుస్తాను. ఒక చలువరాతిపయిన “తల్లి...సాధ్వి...భక్తురాలు....పతివ్రత.... పుత్రశోకమున చని పోయెను” అని చెక్కిస్తాను.

పూజారి

అంతకంటేనా...మీరు ఉదారస్వభావులు.

మొదటిపురుషుడు

మంచిఉద్దేశ్యం. (అందరూ వెళ్లి పోతారు.)

✽

[ఒక ముసలివ్యక్తి ప్రవేశం. తలఅంతా నెరసి పోయింది. పెరిగినగడ్డం. చిరిగిపోయినవస్త్రాలు. చేతిలో

ఒకకట్ట. జడలుకట్టి జాట్లు మొహంమీద పడుతోంది. వెట్టిచూపులు చూస్తున్నాడు. ఇటూఅటూ చూస్తున్నాడు. ఆవీధివెంబడి నడుస్తున్నాడు. వీధులన్నీ తిరుగుతాడు. ఆ గుడిశెవంక చూశాడు. తాను చిన్నప్పుడు గంతులు వేసినగుడిశె. కంటివెంబడి అశ్రుధారలు కారుతున్నాయి. కాశేపు అక్కడ నిలబడి తిరిగి ప్రయాణం సాగించాడు— చిన్నప్పుడు తనబాల్యస్నేహితుల గృహాలవంక చూస్తూ. జనం పోతూవుంటారు వీధివెంబడి. కాని ఎవరూ మాట్లాడించరు. మొహం చూచి తెలియనట్లు వెళ్లిపోతారు. కాల్యలుకట్టి కంటివెంబడి నీరుకారుతున్నాయి. ఒకనిట్టార్పువిడిచి పూరిబయటవున్న రామాలయందగ్గరకు వస్తాడు. రెండుచేతులు జోడించి నమస్కరిస్తాడు. పూజారి ఆశ్చర్యంతో చూస్తూవుంటాడు— ఎవరూ యిది అని. ఈవ్యక్తి రామాలయంసమీపంలోవున్న సమాధి, ఆవృతం చూస్తాడు. ఆ చలువరాయి మీద లిఖించినవి చదివి “అబ్బ! పాపిని—పాపిని” అంటూ తల బాదుకొని హృదయం పగిలేటట్టు విలపిస్తాడు. ప్రతిమవలె నిలబడిపోయినాడు రెండునిముషాలు. తిరిగి పయనం సాగించి ఆపూరిప్రక్కన వున్న నదీతీరం దగ్గరకు వెళ్తాడు. జలం ప్రవహిస్తూవుంటుంది. చీకటులు పడుతున్నాయి. పక్షులకోలాహలములు తప్పవేరే శబ్దములు లేవు. ఆగట్టుమీద కూర్చుంటాడు.

కాశేపు కూర్చుని క్రిందకు ఒదిగి పడుకొని చేతులు వెనక్కి జాచుతాడు. ఒకశరీరం తగులుతుంది. లేచి కూర్చుంటాడు.]

కొడుకు

ఎవరది (అని ఆశరీరంవంక చూస్తాడు. శరీరం కదలి, తలయెత్తి కొడుకువంక చూస్తాడు. అది త్రాగి పడియున్న తండ్రి. ఒకర్ని ఒకరు గుర్తిస్తారు. యిద్దరు లేచి నుంచుంటారు.)

తండ్రి

నీవా....దూరంగా....వుండు... పాపివి...దొంగవి...యికా బ్రతికివున్నావా... (అంటూ చేతిలో ఉన్న కట్టతో కొడుకుతలమీద కొడుతాడు. కొడుకు ముందరికి వస్తున్నాడు. ఇంకోదెబ్బ వేస్తాడు. కొడుకు తండ్రిమీదపురికి క్రిందపడవేసి గొంతుపట్టుకొని పిసుకుతాడు. తండ్రి చేతులు వ్రేలవేసి నెత్తురు కక్కి ప్రాణం విడుస్తాడు.)

కొడుకు

అబ్బ...నాతల పగిలింది...నాపళ్లు తూలిపోతున్నది. మంచినీళ్లు తాగాలి... (అని నదిలో దిగి నీళ్లు త్రాగటానికి ముందరికి వంగి తూలిపోతాడు నదిలోనికి. నదినుంచి గుటకలువేసినశబ్దం. అంతా అంధకారం.)



భావయుగము

కుందుర్తి నరసింహారావు

వింటివా? సుఖస్వప్నపుష్పితము లైన
అడవితీగెలు మనత్రోవ కడ్డవచ్చె;

అర్ధరాత్రసంగీతమోహనవంతి
అడ్డుపరచెను తీవయిల్లాండ్ర సాగసు.

కేకిసలుగొట్టు, పడమటి కెంపుగుల
పరచియుంచిన లేయెండపరుపుమీద
నిదురకన్నుల నిసుగైన నిడునెలను
లేచిరమ్మని తల్లి లాలింపలేదు.

చెలి, ముఖస్నిగ్ధ పర్యంకసీమలందు
ప్రాతతెన్నుల కలవాటుపడిన మనము
కోమలీలోచనవిషాదకుంచితములు
నవ్యహృదయపథాలలో నడచుటెట్లు?

ఆరిపోయెను గగనవింధ్యాద్రిగుహల
మిగుగురుల ప్రోవు వెలిగించు మేలుకొలుపు;
పూరిపోయెను మోహసంబంధమధుర
ప్రాక్తనవిషాదసంశయప్రణయపథము.

భావపురుషప్రపంచక ప్రాంగణమున
అగరువత్తులు వెలిగించినట్టి నీవు
చెలి, చిరంతనవిషదృశ్యమలిన మైన
తులువకనుగవ నీచేత తుడిచిపొమ్ము.

కట్టుకొన్న పాపాల శంఖారవంబు
హోరుమని కర్ణపుటములలో రుతించు :
తెచ్చుకొన్న శత్రువుల సాధించలేక
బుధిరత నటించుచున్నాను పరులముందు.

తూరుపుమొగాన పొడిచిన తోకచుక్క
అందుకొనియె ప్రతీచీలతాంగి కేలు :
ఇతరతారకలటు పరుగెత్తబోయి
మాయమయ్యెను రోదసీమధ్యమందె.

జర్జరితలతికా భుజస్కంధమందు
వచ్చిపడె స్వీయసంతానభార మొకటి,
పారలౌకిక చింతానిబద్ధగగన
వాయునిర్మితశిర మట్టె వాల్చువలసె.

తొలుత నాయుంట పగడాల తోరణాలు,
ముంగిటను మల్లెమొగ్గలే మ్రుగ్గులయ్యె :
ఇపుడు నే నిల్లువాకిలి యెల్ల వీడి
అడవితీగెల నీడలో ఆడుకొందు.

‘నవ్యయుగస్వప్ని యింక నెన్నాళ్లుపట్టు,
మానవులకు రెక్కలువచ్చు మార్గ మేది ?
అనుచు నన్నేల ప్రశ్నింతువయ్య నీవు?
యువకుడా, అది నీచేత నున్నదేమొ—

మబ్బునడిలేని యీమధుమాససమయ
విపిననిశ్శబ్ద సౌందర్యవీధులందు
కోకిలాంగన తన గొంతుకోసికొనును
పట్టపగ లింటియుడురాజు పగలబడగ.

చెలి చెలి, ముగ్ధగౌతమీసికతభూమి
త్రోవతప్పితి, నను వీడి తొలగిపోకు :
వెనుక నదులెల్ల ప్రాథలై వెంటవచ్చి
త్రోవ చూపించెడివి మాకు లేవు నేడు.

శిథిలశృంగారసాధవాసిని యొకర్లు
ప్రియవియోగచింతాభరవివశ యగుచు
నేటి చంద్రుని గని, కట్టుబాటు విడిచి,
ప్రియుని మారుగ వానిపై ప్రేమగురిసె.
పుప్పొడివిడిర్చిన గులాబిమొగ్గ విరిసి
తన యశస్సు జగాల నింపినది సగుచు;
మూసికొనియున్న గన్నేరుమొగ్గసాము
దాచుకొనెనంచు పొగడను తాత నచ్చి.

రక్తరాగాటహాసముద్రావికాసి
పశ్చిమాశాకుమారుని పైడిచాలు
నిముసమున ఋక్షగణరంధ్రనిలయమగుట
చెప్పకేచెప్ప నీనాటి చిత్తశుద్ధి.

లెమ్ము, పూదండ నవరించుకొమ్ము, చెలియ
వాడిపోయె నీయుద్యానవనములెల్ల
మన ప్రబంధములో! పేదవాడనైన
నేను తేలేను నందనోద్యాననిధులు.

సీపు రమ్మింక, విరహపాండిత్యబధిర
గహనరోదన విషకర్మకాండ విడిచి:
ప్రణయ మొదవక యెట్టులో బ్రదుకవచ్చు,
పట్టెడన్నము నేడు కావలయుగాదె?

జనరుపించెల గొరికిన పక్కిరేడు
నటకుజచ్చాయలో మేను వాల్చియున్న
తీర్థనేవకు డితని కాతిభ్యమిచ్చె,
దినకరాతపమున బోవు మనల విడిచి.

చెలి, యిదే, లేతయుసిరిక చెట్టుకొనల
వగరుపించెలపై ఈగ వ్రాలలేదు,
నిసుగు లాచాయలకు బోవనేర్వలేదు:
ఈయనుభవజ్ఞ లేల లెక్కింతు రిట్లు?
విమతనహిత చింతాభగ్న విప్రలంభ
జనితతాపానలజ్వాల చల్లబడగ
మలయపవనుడు దిగిచిన మంచుతెరల
మన తొలిఁదళాల పెన్నెల మరుగుపడియె.

నికటదేశచరన్యేసుశకటములకు
వెండిజండాలు గట్టిన వింధ్యశిఖరి
తనకు దూరమైపోనున్న తరిని వాని
రజతగతి లాగికొని వట్టిరాళ్లు చూపె.

లేచిర మ్మింక, పెంపుడులేడినోనట
బొట్టు పెట్టుకాలము దాటిపోయె నిపుడు;
నరసికెరటాల దిరుగు చందురుని జూచి
తామరాకంత కన్నులు తడుపు నిదియె.

మంచికో చెడ్డకో త్రోవ మారిపోయె:
వెలిసినది నూత్న దేవతా విగ్రహమని
త్రోవ కడ్డమువచ్చిన తొలగిపోతి,
కానిచో, కాదె ఘోరసంగ్రామ మపుడె?

వీడిపోలేక యేడ్చుచున్నాడు తరణి
ప్రాగమృతభౌండమునకు కరంబు సాచి,
పొడుచు రిక్కల తూరుపు ముసిముసినగు
పగులువారిన దానిమృపండువోలె.

మోహితుడనైతి, చెలి, భవన్మృఖతలస్థ
తరళమధుపాత్ర గని! దయాద్విపు, నిజమ్ము,
నీవె క్రోలుము మధువెల్లి, నేటినుండి
పాత్ర నానోటి కందించి బ్రదుకనిమ్ము.

మోసగించుచున్నది కనుల్ మూసి తిగిచి
మానవుల వింతరూపాలు మరుగుపడగ,
భిదురమో, మెరపో అనిపించుచున్న
మొగిలు ముత్తైదువులచేతి ముద్దుబిడ్డ.

కళవళించెడు మనగుండకమ్మదరుల
పొదలమాటున బెబ్బలి పొంచియుండె,
నిన్ను గని వెరగందిన వన్నమాట!
ఏల, లేకున్న, దాగుట యేడ్చుటయును?

రజనిశిరమున నవరత్నరాశి గురిసి
బేలతనము నటించిన పిన్నవాడు
ఆమె తలవాల్చువేళ మోహంధు డగుచు
సోయగము వాయుచున్నాడు, చూచిపోమ్ము.

పగలు గడచినగాని సంతెగలు పూచి
మగలుగావు శిరోజంపు నిగనిగలకు;
చెలి, ముడిచికొమ్ము, నిగళవిచ్చిన్నమైన
దానిపై వచ్చిపడునో యేకానిపూలు!

వినుము, రిపుదుర్గగోపురధ్వనితగగన
హాసవిన్యాసచరమఘంటారవంబు
జననిపగడాల మొగసాలచాయ నిలిచి
విని తెలిసికొమ్ము నిదురకు వేళ యెపుడో!

అ భి సా రి క

శిరోమణి, సన్నిధానము సూర్యనారాయణశాస్త్రి

మొమఱచి నిద్రగొన్న సమస్తజంతు
వితతిహృదయబింబుల వెలికివచ్చి
మనలెడు తమశ్చయంబన దెసలనెల్లఁ
గటికచీకట్లు కార్కొని క్రమ్ముకొనియె.

పడకగది వీడి మెలమెల్ల గడియఁదీసి
తలుపుఁ జీమకు దోమకుం దెలియరాక
తనదు వలపులరాయని, ధనపుమూటఁ
గొల్లగొన నేగుచున్నది కొమ్మ యోర్తు.

తన్నుఁ జూచియుఁ జూడకయున్న పగిది
బ్రకృతియెల్లఁ దటస్థభావము వహింప
బయలుపడనీక తన నడవడి నొకింత
మింటఁ జక్కలగమి యొక్కకంటఁ గావ.

తనదు ముఖచంద్రు వెలుగుమొత్తంబు లంధ
తమనముల నొత్తగించుచు దారిఁదెలుప
మలయమాగుతములు దన కొలువుకత్తె
లట్లు నలువంకలం జుట్టి యనుసరింప.

హృదయ మాశంసితంబైన మదన కేళి
కలన నానందసాంద్రంబుగా లయింపఁ
బాదములు తొటిలంబడఁ బైఁట జూట
నవశభావంబు నొంది యాయువతి నడచి.

మెలిక తిరుగుళ్ల సందుగొందులను దాటి
కాలిబాటను బాదలును జేలు గడచి
పంటచెఱువుకెలంకునఁ బాడువడ్డ
గుడిని నిద్రించు బుద్ధునిఁ దడవి తాఁకె.

తాఁకుటయు లేచి కూర్చుండి తత్పరమతిఁ
బుణ్యనామసంకీర్తనంబును జలుపుచు
ధర్మసూక్తముల్ చదువుచుఁ దరుణయోగి
శిష్య విభ్రాంతి నాపెపైఁ జేయివైచె.

అతని గాత్రసంస్పృష్టిమహత్త్వమేమొ?
మదన కేళిప్రసంగంబుమాట మఱచి
శిష్యగాఁ గొని దీక్ష నొసంగ వేఁడె
నప్రయత్నంబుగా వ్రాలి యడుగులందు.



తల్లి-బిడ్డ

ఉభయభాషాప్రవీణ, మిన్నికంటి గురనాథశర్మ



ప్రణయమనుచుఁ గూర్చియనుచు రాగమనుచు - వలసటంచుఁ గన్నీటి తర్పణమటంచు
హార్దమనుచుఁ బల్కునవెల్ల స్వార్థపరము - లొక్క తల్లిప్రేమంబె యత్యుత్తమంబు.

నాకనుంగవ గిట్టునం దొట్టు నీర మయ్యువిదశోకాబ్ధి కష్టోదయంబు
నాబోసినోటి చిర్నగవుసాం పామెమొగముచందురునకు రాకాగమంబు
నా వచ్చిరాని ప్రన్ననిపల్కుఁజా లామె జానుగుంగవకు రసాయనంబు
నామెయి నాచికొన్న యలంతిబాద యాయమధైర్యశాఖికి నశనిపాత
మస్మదీయపాదోల్లస దైమనూపు-రోదితర్షుళంఝుళన్ని నాదోల్బణంబు
ఆమెమేనికిఁ బులకవర్షాగమంబు - జననివాతస్సల్య మెంత ప్రశస్యతమము!

ఇది చేయందగు, నిద్రి చేయందగ ది ట్టీకార్యముం జేయఁగ
ల్లి, దిటుల్ చేసినఁ గల్గుఁ గీ డని యెఱుంగలేని పొగండు న
న్నదిరా... వేగనులం గనుంగొనుచు నెం దావంత యావంతయే
గదురకరాని తెఱంగున న్మనిచె వేడ్కం దల్లి దైవంబెకా.

ఏను దిన్నచో గట్టునఁ దాను ద్రేంచు - నే నలంకృతుండను గాఁగఁ దాను మురియు
నేను బాధితుండనుగాఁగఁ దాను గుండు - నేను సుఖపడ నానంద మెనయుఁ దాను
వితమైనదిగద తల్లి ప్రేమవృత్తి.

నాకుఁ బెట్టికాని యాకె భుజింపదు - తాను దినక నోటిలోనిదైనఁ
దీసి నాకుఁ బెట్టి తృప్తిసెందును దల్లి - కడుపుఁదీపికంటెఁ గడుపు దీపె?

నాయారోగ్యము నాసా-ఖ్యాతి నే నెఱుంగకున్నయప్పుడు నా కె
న్నో యుపచారములు మురిసి - చేయుచుఁ బెంచినది తల్లి చెల్లదె పొగడక!

తన కందమైన రవణము-లను బెట్టుం దనకు మెప్పులంగొల్పు దుకూ
లనికాయము గట్టుక సొగ-ను నెఱుంగని నాకుఁ దల్లి శుద్ధప్రేమకా.

పగవాఁడైనను బాలుం-డుగదాయని తాను దినియెడు పదార్థం బే
పగిదినో పెట్టును మాకు నొ-నఁగునట్టులఁ దల్లిగుణము శంసయొనర్తుకా.

ఘుమ్మున కమ్మతెమ్మెర బుగుల్కొన నప్పుడు కాగు నావునా
జ్యమ్మున దొప్పదోగి మృదువై చవులూరెడి రాజనాల య
న్నమ్మును బల్మి నాదు వదనంబున నించుచు బుజ్జగించుచు
సమ్మతి మ్రొంగజేసెడిని సాధ్య మదంబ యదెంతప్రేమయో!

చూచినవెల్ల బెట్టు మనుచు హఠమూని పదాల కడ్డమై
రాచుకపోవు గొంతు పెనుఱుంతులఁ జింతిలుచుండఁ జంకలో
వైచుక యశ్రులాలలను బాపుచు నేడ్వకుమంచు నాయభీ
ప్రాచరణంబునం బాదలు నమ్మకమాగుణ మే దలంచెదన్.

తీయనిపండొ ఖాద్యమొ యెదే భుజియింపుమటంచు నెవ్వరే
నీయఁగ మాకు నిర్దురకు నే ద్రుటి నాయది మ్రొగివైచి పై
నాయమఁ జూడ నామె దరహాసముమై నను జీరి నాయనా,
యాయది తిన్నటంచు దనదిచ్చెడి దల్లి యదెంతప్రేమయో?

అల్లరి చేయుచునుండఁగ - మెల్లఁగ నను జేరి నగుచు మేనునిమురుచీ
' పిల్లఁడు ' కృష్ణుఁడు సుమి యను - తల్లిసహనశక్తిప్రేమ తత్త్వము తలఁతా.

నను జూచి యొరులు రోతవడినఁ గాంచి సహింపలేదు డెందంబుననై
నను దా దలపోయద న-ల్లని నాయాకృతిని లాలలఁ జనని తమిఁ.

జడకుప్పెలతో వ్రేలా-డెడి జడ ముంగురులపై ముడిఁ గల్కితురా
మెడసామ్ములు కాల్గజ్జెలు - కడియము లుంగరము లొప్పెఁగా నాశిశుత్వ.

నిగనిగలాడు మొగమ్మున ఘుమ్మును నీలపుఁ గస్తురిబా ట్టిడి క
న్నుఁగవను గ్రవపుఁ గాటుకరేకలు నూల్కొనఁజేసి కరమ్మున నె
మ్మొగ మొకయించుక యెత్తి కనుంగొని బుద్ధి నెటుల్ దలపోయునొ న
ల్లగ నొకచుక్కను వామకపోలతలంబున నుంచెడు దల్లి భళి!

అడుగఁగ నోరులేక నడయాడఁ బదంబులులేక చిత్తమం
దడరిన వస్తు వియ్యది యటంచును జూపఁగఁ గేలులేక చే
డ్పడిన శిశువ్రజంబునకు బ్రహ్మ ఘటించెనో యెడ్డునత్తియం
చెడఁదఁ దలంచుఁగాని యెపుడుం గనరం జన దమ్మ యింతయు.

పోకిరిబాలురఁ గలిసి యె-వో కొంటెపనుల్ వొనర్చు బాడమెడి కినుక
' నీకడుపు పండ ' యనియెడి - గాక జనని నన్ను దిట్టగడఁగద యెపుడు.

తాకునది తప్పనది యే-వీకం దెలియంగలేక, విన్నదనంబు
శోకం బభీష్టసిద్ధికి - సాకుగ వైశవము జాతె సౌఖ్యంబుధిలో.

నెడుగొ? చెఱుట్టియొ కుం-దుడొ బంతియొ పుట్టచెందొ దొరయాటయొ దా
గుడుమూతయొ బిల్లాటయొ - యొడలుచెమటవోయ నాడుచుండుం, బిదహ.

ఇంటికి నక్కుచు రా నొక-కంటం గనిపెట్టి నానగా రెఱిగినచోఁ
దంటా లుభయులకును నీ - వింటనె చదువుకొన కిట్టు లేగుడువటరా !

వేళాపాళా లేదా ?- కూళలతోఁ గలిసి యాడుకొనుటయె యిక్కఁ బా
తాలను జదువుట యెప్పుడు ? - చాలవె యాటవిడుపుదివసంబులు రెండు ?

అని తెప్పవడనిచూపునఁ - గనుచు నవట్కర్ణరవముగాఁ బల్కుచు న
క్కున నొత్తి ముంగురులఁ దన - కొనగోళ్లం దువ్వుఁ దల్లి కొండిక నన్ను.

మీఁపంతు లేల రాలే - దాఁద్యం బనుచుఁ గినుక నఱచుచు బాద
వాపోవు నిన్నుఁ గని నిలు-పోవునె నాప్రాణ మనుఁ బ్రసూత్తంసంబు.

ఇచ్చినవాఁడు మఱచిన - నొచ్చెల యెండ్లింతలోన నొట్టవె ? ఏఁడుం
బచ్చంగ నున్న నెన్నఁడొ - ముచ్చటగాఁ గనుట యనుచు మురియు జననియు.

నాపున్నెమ్మల పంటయు - నీపగిదిం గృతుల వ్రాయు నిటునలుగురిలోఁ
జూపట్టు మిన్నయై యని - చూపు శుభోదర్శమునను బొనుపుఁ గనికవి.

పౌరాణికకథాప్రపంచంబు వినిపించెఁ బ్రతిదినంబును నుగ్గఁబాలతోడ
భక్తిప్రబోధ మాసక్తిఁ గావించెను బాటించుచును లాలిపాటతోడ
నీతులుగఱపె మేల్చేతలఁ జేయ నొప్పెడురీతి జోకొట్టునుడులతోడ
ఆశ్రమాచారధర్మాళి బోధించె సంప్రీతి బోర్కాడించు క్రియలతోడ
భళి ! యుదాత్తాదులం బల్కు పద్ధతులు గ-డుం గఱపె నాకు వెన్నఁబెట్టుటలతోడ
నస్మదీయ భావ్యభివృద్ధి కన్నియిన్ని-యనఁగరాని యిడుమ లందె నమ్మగారు.

తలిదండ్రులు పేదఱికము-వలనం బాదవడుచున్నఁ బాటంపక ని
చ్చులఁ జూచినవెల్లం గా-వలయు ననుచుఁ బోరువెట్టు బాల్య మ్మరిగె.

ప్రాద్దన నేడ్చుచు లేవ - న్నిద్దర, తత్క్షణమ చెంత నిలిచి పిలుచుచు
ముద్దిడి కేలంగొని య-క్కద్దకొనెడిఁ దల్లి నన్ను నాసుఖ మరిగె.

అన్నము దిని చని నాయీ - డున్న సఖులతోడఁ గూడి యుల్లాసమున
వెన్నెలకుప్పల నాడుచు - గన్నమ్మకు ముదముఁగూర్చు కాల మ్మరిగె.

అవి చిన్ననాటి సుఖములు - నపుడేతెడిమోముతో జనని త్రచ్చుచుఁబాల్
నవనీతము మీఁగడపెరు - గవశ్య మిడి కొసరికొసరి యన్నమువెట్టు.

అయ్యవి యెన్నటి మాటలొ - క్రయ్యం ద్రాడుగల బుజ మొరసి వ్రేలెడి యా
కొయ్యపలక దస్తరముం - జయ్యనఁ గొని శ్రీకి బడికిఁ జకచక చనుడు.

అవి చిన్ననాటి సుఖములు - రవిపుట్టనికాలమున శిరఃస్నానము మో
ము విభూతి బద్ధపరిధౌ-తవస్త్ర ముఖలేశు ధ్యానతత్పరత భళి !

ఇది కష్టం బదిసౌఖ్యం - బిది లే దది యున్న దను వికృతిపొందని నె
మ్మది హాయిగఁ దినితిరిగెడు - నద్వైత మది బాల్యమందె యరిగెను నాకు.

కవిశేఖర పండిత కాళ్లకూరి గోపాలరావు గారి ను ప్రసిద్ధాంధ్ర కావ్యములు

సౌందర్యమంజరి -

క్రొత్తగా వెలువడిన యభినవభావకావ్యము; భారతీయసనాతనతత్త్వమును అధునాతనప్రకృతి శాస్త్రవిజ్ఞానమును సమన్వయింప సమకట్టిన యపూర్వగ్రంథము. “శక్త్యుపాసన, భాషోపాసన, రసోపాసన, మన్మథోపాసన” — ఇవి యిందలి ప్రధానాంశములు. డాక్టర్ సర్ యస్. రాధా కృష్ణన్ గారి మున్నడియు దేశోద్ధారక విశ్వదాతృ మహాశయ కాశీనాథుని నాగేశ్వర రావుపంతులుగారి కావ్యపరిచయమును విశేషవిషయములు. ఘనమైన కాగితము, ముచ్చటైన యచ్చు, సర్వాంగ సుందరమైన సంపుటికరణము; హస్తభూషణమైన పుస్తకము.

“సౌందర్యమంజరి విశ్వసౌందర్యస్వవినిబద్ధమైన కావ్యము. పాపపాపమునందును భవవియోగమైన భావ భాషారసయోగానందము ప్రతిభవించుచున్నది ... గోపాల రావుగారు ప్రాచ్యపాశ్చాత్యసంస్కారములం దనుభవజ్ఞులు, పండితకవులు, రసజ్ఞులు; కావ్యముని ఉభయసంస్కారములను రసయోగానందమందు లగ్నము చేసిరి.” — కావ్యపరిచయము (1 రూపాయ)

వాల్మీకినాటకము -

తస్మిన్నాయత్తుడు తాపసకపీండ్రుఁ డగుట. మనః పరిణామనిరూపక మగు నభినవరూపకము. మద్రాసులోను బైటను పెక్కుసమాజములచే ప్రవర్ణింపఁబడినది. (1 రూపాయ)

వసంతసేన -

గోల్డుస్మిత్తు ‘హెరిక్లెట్టు’ ననుసరించిన స్వతంత్ర ఖండకావ్యము. చండిభారవుల కవితాశైలిలక్షణము లిందుఁ గలవని వేదిము వేంకటరాయశాస్త్రి గారు వ్రాసిరి. తంజనగరము దేవరాజసుధి గారి కావ్యప్రశంస యద్భుతము. (14 అణాలు)

ఆపూర్వసంఘసంస్కరణము -

అద్భుతమైన వివిధవిషయకాశీనకావ్యము. కట్టమంచి రామలింగారెడ్డి గారు పోషాతము వ్రాసిరి; కన్నడ భాషలోనికి కూడ పరివర్తించఁబడినది. (12 అణాలు)

నీతికథాసంగ్రహము -

చిన్నచిన్న కథలు; సులభమైన పద్యములు. సచిత్రము, సటిప్పణము, బాలికాబాలకు లందరును పఠింపఁదగినది (4 అణాలు)

చంద్రరేఖావిలాపము -

కూచిమంచి జగ్గకవి ప్రణీతము; హాస్యరసప్రబంధ రాజము. ‘ఈ కృతికి సమముగాఁ గృతి నేకవులును శిష్యులు రిది బిరుదుము.’ తంజనగరము దేవరాజసుధి గారి కృతిప్రశంస యద్భుతము. గోపాలరావు గారు సంస్కరించిన కూర్పు. (14 అణాలు)

స్నానఘట్టము -

అపూర్వమైన కావ్యచిత్రము. వేరును బట్టియే యిది శృంగారతరంగిణి యని యూహింపఁదగును. (అచ్చగుచున్నది)

ప్రకాశకులు — కేశవ్వాడి సోపారు, 4, ఆచారప్పవ సండు, జాడ్జిటవును, మదరాసు

గ్రంథములు వెలకు దొరకు ధరము — ఆంధ్రవత్రికా కార్యాలయము,

పోస్టు బాక్సు 212, మద్రాసు

ది యిండియన్ మ్యూచుయల్ లైఫ్ అసోసియేషన్ లిమిటెడ్

69, బిగ్ స్ట్రీటు, ట్రిప్లికే, మద్రాసు.

The Indian Mutual Life Association Ltd.,
Head Office:—69, Big Street, Triplicane, MADRAS.

అన్ని విషయములందును, మీజీవితభీమాకు ఆదర్శనీయమైన సంస్థ.

నిర్మాణమునందును, లాభములందును, సంస్థయొక్క హక్కు బాధ్యతలయందును, పాలనీదారులకు అన్యోన్య సంబంధము గలది. మొత్తమునచూచినచో ఎక్కువ గణనీయమైన బోనసు ప్రకటింపబడినది.

మిక్కిలి నమ్మకమైనది. ఘరానావారితో నడుపబడుచు, చురుకుదనముగల సమర్థనీయులచేత నిర్వహింపబడుచున్నది. అందువలన జీవితభీమావిషయమున ప్రజాసముదాయమునకు నెక్కుడు ప్రయోజన కరముగా నుండుననుట కెట్టిసందియమును లేదు.

“ఇండియన్ మ్యూచుయల్” యొక్క మేజిస్ట్రే అనగా, ప్రజాసేవయు, స్వకీయలాభదాయక మార్గమని తాత్పర్యము ఏజెన్సీకి సంబంధించిన వివరములకు వ్రాయుడు:—

జె. రత్ శైక్రటరీ,

69, బిగ్ స్ట్రీటు, ట్రిప్లికే, మద్రాసు.

వ ఫ్

కుట్టుయంత్రములు

సోల్ ఏజెంట్లు:—

బెల్ అండు కో,

లిమిటెడ్

చౌబయి, 2.

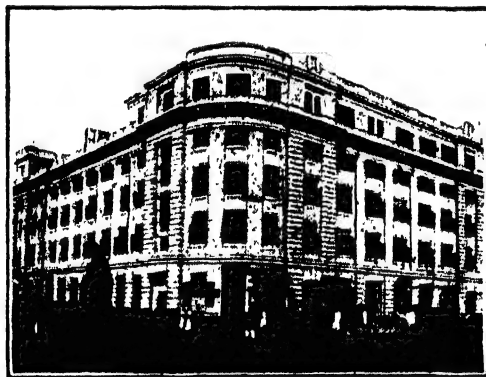
21 బ్రాజ్ఘే, మద్రాసు.

కుటుంబములకు, వర్కు-పాపులకు, చేతితోను, కాలితోను, ఎల్లెక్ట్రిక్ మోటారుతోను, పనిచేయు కుట్టుయంత్రములు గలవు.

అన్ని విషయములందును సర్వాంగ శోభిత ములై యున్నవి. కాయకష్టము, ధనము, కాలము, మిగులును.

చక్కని కుట్టు, నిశ్శబ్దమై మృదువైన యంత్ర చలనము.

ది మాడరన్ సింగూ హోటల్, ఆంధ్రప్రదేశ్.



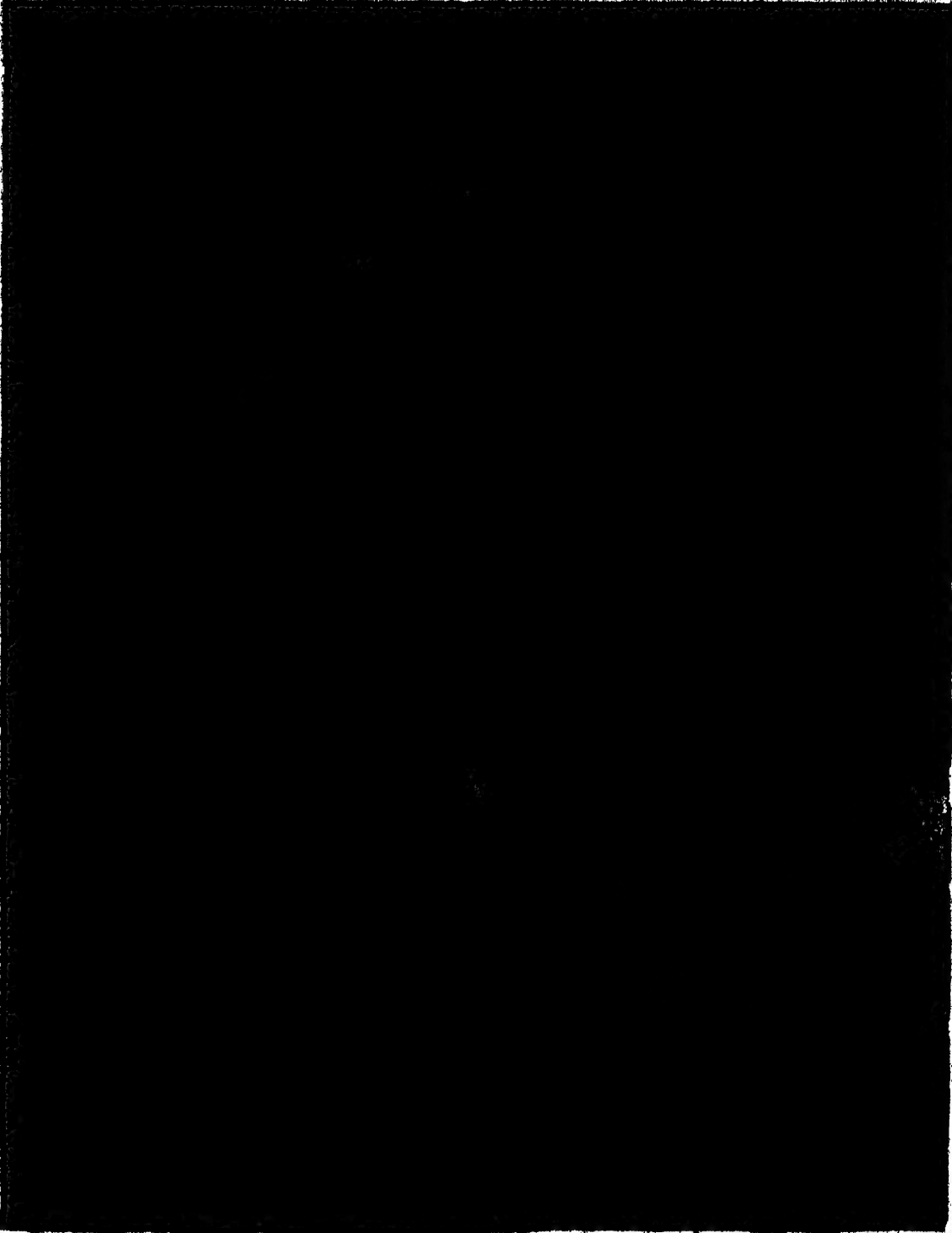
గాలి బాగుగా వచ్చు వసతి, ప్రశస్తిక యేర్పాటులు, బ్రాహ్మణులచే తయారగు భోజనములు. సరసమగు శ్రేణు, నుంచి వసతులు, ఆవరణ గలవు. వ్యాపారస్థలములకు, పబ్లిక్ ఆఫీసులకు అతిసమీపము. ప్రాప్రయిటర్:

యు. కే. జనార్దనరావు,

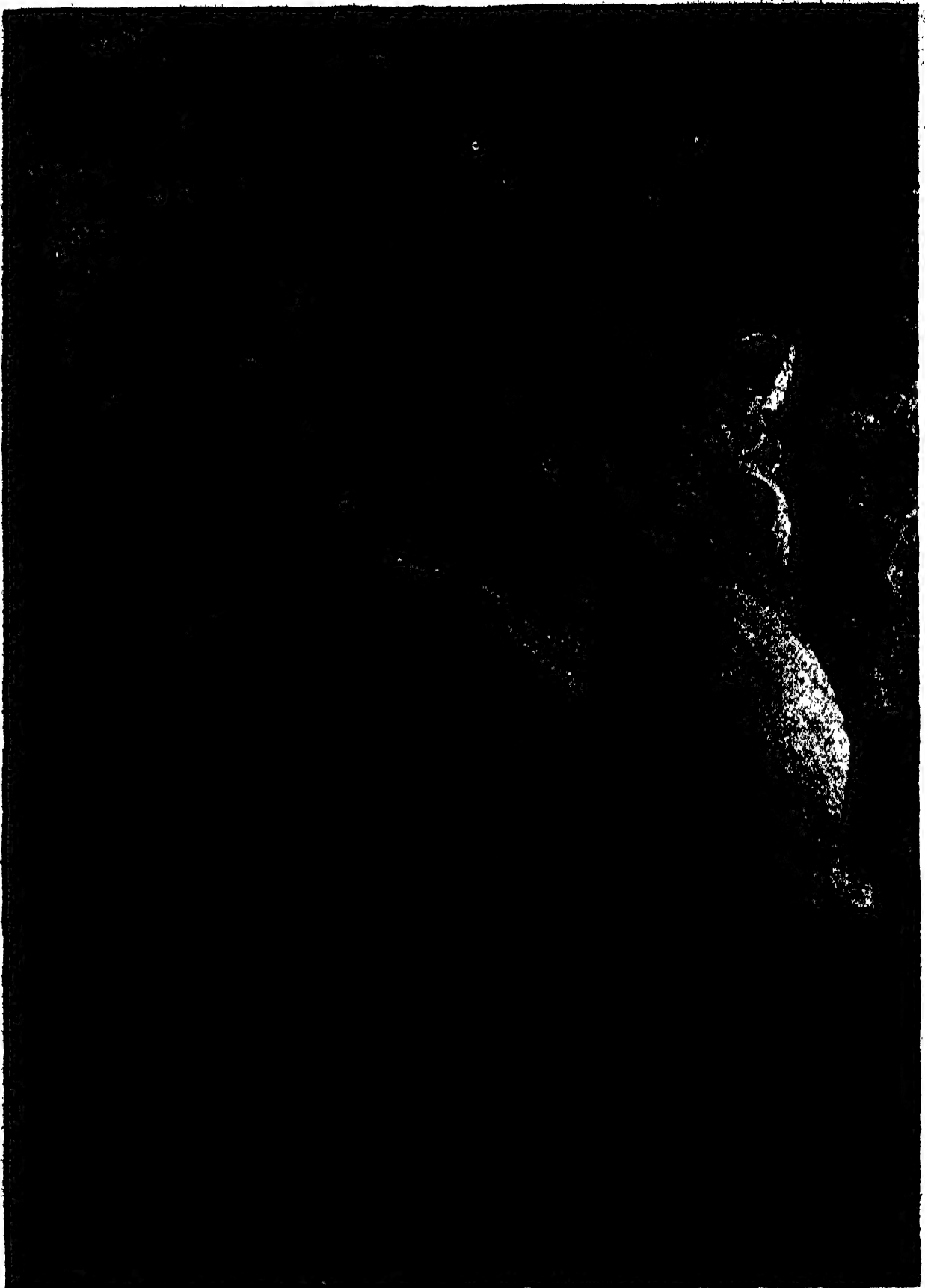
రి, చిత్తరన్ జన్ యజ్ఞనూర్, కలకత్తా.

తంఠివిలాసము: “కుకిల్” ఫోనునెం. 4050, బారాబజార్.

ఐంభ్రపత్రిక - భావ సంపత్తురాది సంచిక



సంపాదక శ్రీ



12
12
6



బ్రాహ్మణాగ్రహారం

పండిత శ్రీపాద నుబ్రహ్మణ్యశాస్త్రి

“ఎవరు వారు?”

“నేను కొండుకొరిని. చయసులుబాబయ్యలా వుంది.”

“అవునురా నాయనా! అంతా క్షేమంగా వున్నారా?”

“నీ ఆకీర్షచనం. నువ్వు కులాసాగా వచ్చావా?”

“బిట్టన చీదలేమరా యీమాటు.”

“చాలా రోజులికి వచ్చావు. ఫాల్గునంబోకామా—”

“అవునవును. పదిమాసాలయింది.”

“వెళ్లినపని తృప్తిగా—”

“తృప్తన్న తృప్తా? కురిసి పోయాయారా రూపాయలు. చేట్టు దురిపినట్లే. మనోమంచిసంపాదన జరిగిందిరా యీ ప్రయాణంబోను.”

“పునహాసతారాలు వెళ్లి నువ్వెప్పుడూ తక్కువ లేలేదు; కాని నిలవమాత్రం చేశావుకాదు.”

“దానినిగోసిన నిలవ. డబ్బా ప్రధానం దర్జాకానీ..... ఇంతకీ; మనిషిని ధనం నిలవచేస్తుందా, ధనాన్ని మనిషి నిలవ చేస్తాడా?”

“అదీ నిజమే.”

“ఇంకేం మరి? ఎప్పుడు కావాలంటే అప్పుడే అవుతుంది సంపాదించేవాడికి నిలవ. పిడికిలి గట్టిగా బిగిస్తే సరి.”

“తలుచుకుంటే నువ్వు నిమిషాలమీద వేలు నిలవచేస్తావు.”

“అవునుగదా?.....కాని చిత్తుకులగామిగాణ్ణి మట్టంచేసి దాకా నిలవచెయ్యడంమాట రీసెయ్యి నాదగ్గర.”

“నీపట్టుదల మనోచెడ్డది బాబయ్య!”

“కాకపోలే వాణ్ణిక బతకనిస్తానుట్రా నేనూ!”

“నీకు కోపంవస్తే అంతే.”

“నేను దేశంలోనే లేనుకదా అని కిలకిల్లాడుకున్నాడు. కామాసునేం వాడు?”

“ఇంకేనా శాంతించవూ పెద్దబాబయ్య?”

“శాంతించమంటావా? శాంతించేపనే చేశాడా వాడూ?”

“.....”

“నాఅంతర మేం, తనఅంతర మేం? నిండుసభలో తీసి పోలేస్తాడా నన్ను? రెండోతాంటూలం యిప్పించడూ నామా?”

“నిజానికి వాడు తొందరపడ్డాడు; కానీ—”

“ఇక కానీయెందుకూ మరి?.....తొటపంపుతనభా అయి పోయింది కదా? కొంపవేలంబెయ్యడమే తరవాయిగదా? ఇకరంగ సానిబాడవా? చూస్తూవుండు, ఈ దెబ్బతో అది క్రియమే.”

“నువ్వు తలుచుకున్నావంటే—”

“లిండికేనా సరిపడ్డ ధాన్యం రావుకదా నామీద కక్షకోడ తాడా?”

“..”

“నాతో విరోధపడ్డాకేనా వాడికి దిగతీర ప్రారంభం?”

“అవును.”

“అక్షానం వుండాలా అక్కరలేదా? దీపంమీద పడ్డ కంభం లాగ మాడిపోవాలి; గాని నాతోపోరి—”

“ఇప్పటికేనా వాడికి బుద్ధిరావలసింది.”

“ఇంకా యేమేనా వాగుకున్నాడా యేమిటి?”

“వాడి మాటకి జమేమిటి, పద్దేమిటి పోనిస్తు బాబయ్యా!”

“అయినా సంగలేమిటో కాస్త చెబుమా వారే!”

“చెప్పేదేమిటి పదిమంతు? ఎవరికి తెలవం దేవుందీ?”

“తిడుతున్నాడా యేమిటి?”

“.....”

“కవిత్యం అల్లుతున్నాడా?.....అమగ్య భందస్నేడి
కాదుకామా భట్టానందగి?”

“వాడిమొగుం. కవిత్యమే?”

“మరేమిటి?”

“ఇక మూడోతాంబూలంపూడా ఇప్పించుట నీకు”

“ఏమో?”

“రెండుతాంబూలాలు మొదట కర్మశ్రేష్ఠులకి వెనుతున్నాయి
కనక యిక మూడోతాంబూలం విద్యాధికుడికి వెళ్లడం ధర్మమట.”

“అలాగే?”

“చాలాచింకంగానే చెబుతున్నాడు కభుగ్గు.”

“ఆ?”

“ఇంతకీ: కొంపెల్ల వెంకప్ప వాడితో కలిశాడు నువ్వు
వల్లిన నెల్లొళ్లకి.”

“బాగుంది.....ఇది వాడి పురమాయంపే అను
కుంటాను.”

“ఇద్దరూ వొక్కమాటమీద—”

“జోగీ జోగీ రాసుకుంటే బూడిదరాలిందిట.”

“మహాబాగా చెప్పావు.”

“వెంకప్పగాడి బతుకు మనచేతిలో వుంది.”

“ఎలాగా?”

“వాడు బొడ్డుపెరుమాళ్లుకెట్టికి యెనిమిదివందలకి నోటు
రాశాడు, యెరుగుదువా?”

“రేండేళ్లు దాటింది.”

“కెట్టి యెన్నిమాట్లాడినా “యిదిగో”, “అదిగో” అంటూ
వచ్చాడుగాని దమ్మిడిఅయినా వసూలుపెట్టలేదు.”

“అయితే?”

“కెట్టి యిక ఆగడు.”

“దానా—

“సగంఘాయదా యిస్తే నోటు నాకు ట్రాన్సుఫరుచేస్తా
నన్నాడు కెట్టి.”

“అదెప్పుడు?”

“ఇక నెల్లొళ్లకి నేను వెడతా ననగానూ.”

“ఇక పొలమా, కొంపాపూడా జప్తన్నమాటే.”

“ఇక చూసుకో నాప్రతాపం.”

“ఇంతకీ జమ యేమాత్రం బాబయ్యా?”

“అంచనాకట్టు.”

“సహస్రం.”

“ఛా! ఎప్పుడూ లేమా.”

“రెండు—”

“దాన్ని రెంకింట గుణించు.”

“అబ్బా!”

“ఏమనుకున్నావు మరీ?”

“అయితే రామదీక్షితులూ, వెంకప్పా చచ్చారన్నమాటే.”

“వెళ్లవల్సి తిప్పితిప్పి కొంతానుదూస్తావుండు.....
నువ్వు నాలోవాడవేనా?”

“నాలోవాడవేనాఅంటే నాసంసారంసంగతి నువ్వెరగండి
కాదు. ఏరోజున అర్ధరూపాయి లేకపోతే ఆరోజున—”

“ఏమంటావు?”

“నాదారిని నన్ను పోనియ్యి.”

“నువ్వు దివాగిరీ బాగా చేస్తావు. నువ్వు నాపక్షంలో
వుంటే తక్కిన నాపనులు ఆసిపోవు.”

“నేను పూనుకోవడమే వస్తే ప్రాణం యిచ్చేయ్యవలసిందే.
వెళ్లవచ్చుత్రమం నాచేతకాదు బాబయ్యా!”

“అందుకోసమే—వొక్కకాగితం పారేస్తాను, పుచ్చుకో.”

“.....”

“ఏమంటావు?”

“.....”

“అలోచించుకో.”

“.....”

“ఎన్నిపెళ్లిళ్లు వొడుగులూ చేయిస్తే రానూ కంప
రూపానులు: ఇంతకీ! నీ కెన్ని ఆశ్రమాలుండినా యేడాది కెన్ని
శుభకార్యాలు తగులుతాయీ పెద్దదీ?”

“భయపడకు.”

“కొడతారనీ, తిడతారనీనా?”

“నే నేం తక్కువచెప్పలేదు. మాడుపుట్ట ధాన్యం అన్న మాట.”

“.....”

“గాది బాగుచేయించుకో.”

“అలా అన్నావా?”

“అంటే అనుకోకు. యాభైచావులు అనమానమైనవి దొరికాయి. నాలుగు—అరడజ నిచ్చేస్తాను, దర్జాగా కట్టుకో.”

“.....”

“నీకొడుక్కిమాడా బట్టలూ, పుస్తకాలూ యిచ్చేస్తా నీయేటికి. ఏం?”

“నువ్వు కేరుకేరువరసని యింటిల్లిపాదికీ—”

“ఇక కొడలికిమాత్రం బంతిలో బాలపక్షం చెయ్యడం యెందుకూ? వొకపునహాచీర దానిమాడూ పట్టుకుపో.”

“మాఅత్తారేనా యెప్పుడూ యిలాగ సంతోషపెట్టలేదు—”

“నాళ్ల మొఘం. ఏవంటావు మరి?”

“ఇక తప్పుతుందా?”

“ధీమాగా చెప్పావుకాదు.”

“పనిచెయ్యాలా, మాటచెప్పాలా ధీమాగా?”

“అయితే సరే...మధ్యాహ్నం కనపడతావుకామా?”

“రాయవరం వెళ్లాలి వొకక్షణం వుండి. అక్కడ నవగ్రహ శాంతి-ఆర్ధరూపాయేనా ముట్టుతుంది.”

“పోనియ్యకు.”

“పున్నానికి బియ్యం అయిపోతాయంటోంది నీకొడలు.”

“రేపే కొలిపించేస్తాను ధాన్యం, కొలగాడితో చెప్పి. వాయిదావేస్తా ననుకున్నావా యేమిటి?”

“అచ్చే. నువ్వు దాటేస్తావనా?”

“మరి చెల్ల. సాయంత్రం—”

“తప్పకుండానూ.”

“గవచివ్.”

“వేరే చెప్పాలా?”

“అయితే.....వూళ్లో వున్నట్టేనా?”

“ఎవరూ?...ఆ! ఆ! నిన్న పొద్దున్నే వచ్చింది మేళానికి చెల్లి. దంపికానే లాక్కొచ్చిందిట యిమాటు. కొనసీమ దోచేసిందని చెప్పుకుంటున్నారు.”

“అసాధ్యురాలురా అదీ.....నేనుకనక లొంగి నమ్మకంగా పడివుంది.”

“అవునవును. రామదీక్షితుల్ని నోరెత్తాటప్పటికీ విసిరికొట్టింది, మరిచిపోతానా?”

“ఆపరాధవం చాలదుట్రా వాడికి? నీలాచలా న్నలా నిలవగలిగేడా వాడూ? నన్ను చూసిందంటే కుక్కఅయిపోడూ అదీ?”

“నీచేతికి యెముక లేదుకనక.”

“చూసూ, పారేసీచోట పారెయ్యాలి. వొక్కమాసం తిరిగానంటే సానికి సంవత్సరంపోషణ. లేకపోతే మర్యాదా నిలుపుకోగలమా?”

“నీశక్తి అబ్బంటిదే. మరి తోటలోకి వెళ్లి చక్కా వస్తాను.”

“పద.....పోనియ్యరా కుర్రాడా బండి. పెద్దపీథికే పోనియ్యి, కరణంగారి యింటిదగ్గర మల్లించవచ్చు. చూడూ. వూళ్లోకి వెళ్లక గాలపురుగుమీద వెళ్లాలి గుర్రం. తెలిసిందా?”

౨

“ఏమట్టుకి వచ్చిందిరా కథా?”

“ఏమట్టుకయితే యేం? నేనేమా తప్పకుండా నేగ్గేస్తాను; కాని మాడురోజులకిందట వూరికి వెళ్లింది.”

“ఏవూరూ?”

“రామేశ్వరం.”

“ఏమిటి?”

“అదే వచ్చింది చిక్కు.”

“చక్రం అడ్డుపడేయ్య లేకపోయావా?”

“కుదిరిందికాదు.”

“ఇక ముందుమాట యేమిటి?”

“నేనూ అదే ఆలోచిస్తున్నాను.”

“పోనీ, యిదేఅన్నమాట యేమిటి? మరోటి చూడు.”

“తీరా, ఫలోన్ముఖం అయినాక యీస్వల్పకారణంకోసం విడిచిపెట్టనా? చేదాయేమిటి? మీరంతా వుండనేవున్నారకదా మార్గదర్శకులు?”

“మాలాగే వుండాలా నువ్వునూ? అయినా అంతఅశ్రద్ధగా యెందుకున్నావు?”

“అశ్రద్ధకాదు. వ్యవహారం అంతా వదిదుడుగ్గా వచ్చేసింది.”

“ఏమిటదీ?”

“అసలు రామేశ్వరంయారే హతాత్తుగా—అంటే—నేనా లేకుండా తటస్థించింది. సోమిదేవిమనల్ల తనమాకున్న తీసుకు వెనుకూ దీన్నికూడా పంపిస్తారేమో అని కనిగ్రహంలాగ వచ్చి

ఫడింది. దానితో సోమిదేవి యెంతమిత్రులన్నా భీమన్నకాస్తులు మామ పదపదమంటూ పడగంటేకాదు. "

"ఇంకా యిరవై సంవత్సరాలేనా నిందాయో లేదో, అప్పుడే యాపుట్టిమనక యేమిటా?"

"మనమతం వోళ్ళి చెధవమతంరా. జుట్టుతీసేస్తేమాత్రం గుణం మారుతుందా యేమిటి?"

"మరి మీచెల్లెలికి—"

"మంనో చెడ్డో అది పదోనాడే అయిపోయిందికదా?"

"అదో కప్పదాటు.....సరే, తరవాత?"

"ఎలాగేనా తప్పించేద్దామని రెండురోజులు మహాతిరిగాను; కాని మాట్లాడానికే వీలయిందికాదు. "

"ఏం?"

"ఎప్పుడు వెళ్లి నా సుందరంగాడు వాకట్లో కూచునివుండే వాడు యములాడిలాగ. "

"అదేమిటి?"

"కాకుంథలం పాతం మొదలుపెట్టాడురా వాడు భీమన్న మామదగ్గిరా. "

"పుద్దేకం యేమిటో?"

"ముప్పయ్యేళ్లు దాటాయిగదా నీకింకా చదువేమిటా అని నేనడగ్గా, "సర్వేశ్వరుడి దయవల్ల భుక్తికి లోటు లేకుండా పోయిందిగదా, చదువుకోక యింకేం చెయ్యనూ" అన్నాడు. "

"అంతేనా?"

"అంతే?"

"నీకు పోటీ—"

"ఛా! నల్లమద్దితుండులాగ కారునలుపూ వామా—లాట రీలో పదివేలు రావడంతోపే అందగా డయిపోయాడా యేమిటా వాడూ?"

"నలుపైనా వాడి కళ్లల్లో మాంచి లేజన్నూ, ఆకర్షణకత్తి వున్నాయీరా. పైగా నోరువిప్పాడంటే చకచకచక—కిన్నెరలు మోగుతూ ఆకంఠమూ, ఆరాగవరసా—ప్రస్తావన మొదలుపెట్టాడంటే వొకటేభోరణికదా గంటలకొద్దీని? మధ్యమధ్య క్లోకాలు విడిచిపెట్టతూ, చేతులు తిప్పుకుంటూ—అసలు వాడు మాట్లాడి లేనే నవరసాలూ వొలికిపోతాయి. అంచేతే యెక్కడికి వెళ్లి నా పెద్దపెద్ద పండితులతో సరిగ్గా వాడికి సత్కారాలు జరుగు తున్నాయి. "

"ఆసత్కారాలకీ, దీనికి సమ్మంధం యేమిటోయో?"

"అలా అనకు. అమ్మగ్గి చూశానా యెలా యెదిరిస్తోందో వాడికి?"

"అదో పిచ్చిముండ. "

"వాణ్ణిచూస్తే చాలామంది ఆదాళ్లు పిచ్చిముండ లైపోతారు. "

"అయినా సోమిదేవిదగ్గిరమాత్రం ఆమాట తీసెయ్యి. దాని మనస్సు నామీదే పూర్తిగా లగ్నం అయిపోయింది. ఇక ఆరు మూడైనా అది తిరిగిపోదు. అసలు దాని మనస్సు కదిపినవాణ్ణి నేనే కనక చలించినవెంటనే నామీదే పడిపోయింది దానిచూపు. "

"ఎప్పుడేనా—వొక ముద్దేనా?"

"ఇంకా లేదు—కాని అది నాసాత్తే. "

"బాగా నమ్మకమే?"

"ఇటు సూర్యు డటు పొడిచినా తిరిగిపో దిక. "

"సరేమరీ. నీ కంఠద్వైర్యం వుంటే నేను కాదంటానా? కాని సుందరానికి పెళ్లయింది సుమా!"

"ఏమిటి?"

"ఇప్పుడే తెలిసింది నాకు. "

"ఎప్పుడు, ఎక్కడ?"

"నిన్నకాక మొన్న సాయంత్రం, చెన్నపట్నంలో. "

"తణుకోయి మాచారం అన్నట్లదేమిటా?"

"అదో గమ్మత్తు. "

"పిల్ల నిచ్చిన అభాస్య డెవరా?"

"ఇవ్వడమూ, పుచ్చుకోడమూ కాదు, కోరడమూ అంగీకరించడమూనూ, "

"అంతే?"

"స్వయంవరం అన్నమాట. "

"అంత యేబ్రాసిపిల్ల—"

"పిల్లంటే పిల్ల కాదు. మాంచి ముమ్మరంలో వుంది. "

"చెధవమండా యేమిటా?"

"సరిగ్గా కనిపెట్టావ్. "

"చెన్నపట్నంలో అయితే రాయవరం కృష్ణయ్యాజులు గారి అల్లుడు చేసివుంటాడు. "

"అదీ అంతే. లేదా లేదు. కానీ—"

"ఇంకేమిటి?"

"పెళ్లిమట్టుకే ఆయన చేశారు. "

"బోధపడలేదు. "

"మాకు పెళ్లి చెయ్యించంటూ పెళ్లికొడుకూ, పెళ్లిమామగూ పెళ్లి కోరిదాకా ఆయన యిదేమీ యెరగగ్గ, "

“పురికిపడ్డావే?”

“ఏమీ లేదు...అయితే—”

“ఆంధ్రపత్రికలో దంపతుల ఫోటోకూడా పడింది.....
మాడు.”

“జేర్లు మానేస్తావే?”

“పెళ్లికూతు రెవరో కనిపెట్టూ, చూస్తాను.”

“...ఎక్కడో చూసినట్టుంది. మన ప్రాంతమే అనుకుంటాను.”

“బాగా పరకాయించు.”

“రామచంద్రపురంలో చూశా నిలాంటి మనిషిని. అయితే
ఆమనిషి రాచది; కాని వెళ్లవముండుల్ని పెళ్లాడేవారే జాతిభేదం
అక్కర్లేదేమో.”

“అదంతా నీకెందుకోయ్?”

“అయితే యిది చూసిన మనిషిమాత్రం—”

“మాట్లాడిన మనిషికూడా—”

“అ! అ! ఆసి రంకుముండా! సోమిరా.”

“ఈమాటు చదువుకో కిందవున్న విషయం.”

“.....ఎంతవని చేసిందిరా దండుముండా?”

“తిట్టకు.”

“తిట్టాలా, పాతిపెట్టాలా? నన్ను దగాచేస్తుందా?”

“అదేమీ చెయ్యలేదు నిన్ను.”

“నన్నే కాదు, యింకా యెందరినీ మోసంచేసిందో యిలాగ.
లేకపోలే మల్లి పెళ్లాడానికి సిద్ధపడగలదా?”

“ఇప్పుడేకాదుట్రా మహాపతివ్రత అన్నావా?”

“ఎవడిమట్టుకి వాడికే పతివ్రత; కాని సుందరంగాడి పని
పట్టాలి. ఎంతవని చేశాడూ పాడువెళవా?”

“ఏంచేస్తా నేమిటి?”

“బోలెడుసామ్యుతోటి, వొంటెడు నగలతోటి లేచితిసుకు
పోయాడని భీమన్నమామచేత ఛార్జీ తగిలిపిస్తాను. ముందు వాల్లిద్దరికీ
ఆరదండాలు వేయిస్తాను మామనిమిషాలలో.”

“లాభంలేదు, వూరుకో.”

“ను వూరుకో. నా కడ్డుపస్తాడా ఫాశి?”

“లేవకు. నామాట విను. వాడేమీ చెయ్యలేదు నిన్ను.”

“అదికోరిలేమాత్రం? గ్రాండంథా నేను బ్రహ్మచర్యంగా
మధ్యకచ్చి వాడు తన్నుకుపోతాడా?”

“బాగుంది వాదం!”

“ముందు పత్రిక యిలాకే.”

“వుండు. పురాణోక్తు. పత్రిక యెందుకూ?”

“భీమన్నమామకి చూపించాలి.”

“గుమ్మంలోకి వెళ్లావంటే మొగమీద—తెలిసిందా?”

“ఏ?”

“సోమిదేవి అతనికి వుత్తరం రాసింది.”

“ఆ?”

“నువ్వు చేసిన కుట్రఅంతా రానేసింది. నువ్వు తెరపడానికి
సిద్ధపడ్డావుట. సుందరాన్ని తానే కోరగా పెళ్లిచేసుకుంటే
వోపుకుంటానన్నట్టు వాడు. వా డామాట అన్నాక నీబుద్ధి అంతా
బోధపడిందిట దానికి. మద్రాసుప్రేక్షణలో తాను జట్టులోనుంచి
తప్పించుకుపోవడమూ, సుందరం ఆబండ్లలోనే జట్టువారే తెలవ
కుండా రావడమూ, తనజట్టువారే బట్ట కుదుర్చుకొంటావుండగా
తాను, సుందరమూ మోటారెక్కి యెగరిపోవడమూ, సుందరం
అదివరకే రాసివుండడంవల్ల కృష్ణయజులుగారి అల్లుడు ఆసాయం
త్రమే తమకి పెళ్లిచేసెయ్యవలసినదా—అంతా పూసగుచ్చినట్టు రానే
సింది.”

“దానిల్లు వల్ల కాదు—”

“అదేం కర్మం? ఇక దానిల్లు వోసతోట అయి కలకల్లా
దుతూవుంటుంది.”

“అదీ వొకబతుకే!”

“బుద్ధి చలించాక అదే నయం.”

“అయితే నువ్వుకూడా కానియ్యవోయ్!”

“అది తరవాత ఆలోచించుకుందాం.”

“అయినా నే నూరుకోను. వాళ్లని సుఖపడనివ్వను నేను.”

“వాళ్లకి పెద్దపెద్దల ఆసరా వుంది. ఎగిసెగిపడకు.”

“ఏంచెయ్యమంటావురా మరి?”

“కిక్కురుమనకు. ఏమీ యెరగనట్లు—”

“సిద్ధాన్నం తన్నేకాదురా ఛండాలుడు.”

“పెట్టివుట్టాడు వాడు. ఇప్పటిదాకా పెళ్లికాకపోయినా
చివరికి నిశ్చేపమూ, నిశ్చేపంలాంటి పెళ్లామూ—”

“పోకూపోకూ నాక్కూడా విగించిందిరా దండుముండా
పురి!”

“కనక చప్పచప్పగా వూరుకో. కాస్తుల్లుమామ కదిపితే

“అదే నన్ను కోరింది” అని బుకాయించు.”

“నమ్మకూడా?”

“అయితే నెల్లాళ్లు వూళ్లో వుండవు.”

“ ఎక్కడికి పోనురా ? ”

“ మండపేట వుండనేవుందికదా ? ”

3

“ కొప్పవరంనుంచి కబురు వచ్చిందా ? ”

“ ఇప్పుడిప్పుడే. మురుక్కాలవ దాటతా డీపాటికి గుమాస్తా. ”

“ నీమాట పంతులుగారితో నిన్న చాలామారం చెప్పాను. నాతోపాటు నలుగురికీ ముట్టచెప్పించాలని చూస్తానుగాని నామట్టుకే చూసుకోను నేను. ”

“ నుంచునే మాట్లాడుతున్నావు. ”

“ స్నానాని కిప్పటికే అలస్యం అయిపోయింది. అల్లుడు కూడా వచ్చాడు రాకరాకా. ”

“ వొక్కక్షణం. ”

“చాపెందుకోయ్ ? ”

“ వుందికదా ? ”

“ ”

“ అయితే యెవరవరి కేర్పరిచావు ? ”

“ నాకు, నీకు, సీతాపతిశాస్త్రికి, సుబ్బావధానికి, రామభద్ర చయనునికి— ”

“ మొన్ననే నాలుగువేలు కొట్టుకువచ్చాడుగదా— ”

“ అలాకాదు. వాణ్ణికూడా కట్టుకోకపోలే చిక్కులున్నాయి. వాడు నోరుగలవాడు. డబ్బులత్యం లేదు. చేతిలో లేకపోలే నిమిషంలో సంపాదిస్తాడు. పైగా అధికారిప్రాపకం వున్నవాడు. ”

“ నువ్వు కొంచెం లాక్కం— ”

“ ఇంతకీ : పెద్దమాతుర్ని మక్కాప్రయాణం తప్పించి రామేశ్వరం తీసుకువెళ్లి నందుకు వాడిమీద పంతులుగారికి చాలావిశ్వాసం వుంది కూడాను. పదిమాట్లు చెప్పారు ఆయన వాడిమాట. ”

“ అప్పుడు చేదుమేళాడా యేమిటి వాడు ? ”

“ వచ్చేవోట నువ్వుమాత్రం వొదులుకుంటావా యేమిటి ? ”

“ నామాట కేంగాని, రామదీక్షితులు వొప్పుకో డనుకుంటాను. ”

“ కుర్రకుంక, వాడి కేంటెలుసుకోయ్, వ్యవహారాలూ ? ”

“ ఇంతకీ : నూరేసే యేర్పరిచా వేం ? ”

“ అక్కడికే యెక్కువ. నీమెల్లా డన్నమాటేగాని సుబ్బా రావు కేమేనా అంటిందనుకున్నావా యేమిటి ? బారిష్ట రనిపించుకున్నాడు. అంటే. నోరూ వాయి లేదు. వొక్కశ్రమ నడవగలడని తోచదు. ”

“ దానితో మనకి పనిలేదు కామా ? ”

“ నిజమే. తాలూకామొత్తంమీద సనాతన ధర్మసభకి ప్రెసి డెంటుగా వున్నాడు; కనకగాని లేకపోలే రామచంద్రుడు గారు మాత్రం సిద్ధపడతారా యేమిటి కొడుక్కి ప్రాయశ్చిత్తం చేయించడానికి ? సుబ్బారావయినా తిండి కదురుచెప్పలేక తల వూపాడు; గాని యిది కాస్తా అయిపోయినతరవాత—అవేమిటి వైషణ్యం వుంటాయో ? వాల్లలో అయినవీ, కానివీ తినడం మానతాడా యేమిటి రుచివడ్డాక ? మన మామోతాదు గ్రహించవద్దా ? పైగా మనకే విడువంద లయినాయి. సంతర్పణకీ, సంభావనకీ మరో మూడువందలైనా కావాలి. ఆపై చిల్లర బుంటాయి. లాక్కలికి కాఫీలూ అవ్వకూడా పోస్తారు. సాయంత్రం హరికథా, రాత్రి గొల్లవేషమూ కూడామట. మొత్తానికి సంచీ పూర్తి అవుతుంది. ”

“ సరే మరి. వచ్చేదుంటే నువ్వుమాత్రం పోనిస్తావా యేమిటి ? దీనితో పిల్లవరికి స్త్రీ చెల్లి పోతుంది కదా ? ”

“ వెంకుసోడెమ్మ చెల్లిస్తుందిలే మార్చికి స్త్రీ. బెంగపెట్టుకోకు. ”

“ అదికూడా సిద్ధమన్నమాటే ? ”

“ సిద్ధంఅంటే ద్వంద్వనా డయిపోవాలి. ఏకాదశిపుషాసమూ ద్వంద్వపారాయణా—అన్నీ కలిపిరావద్దా ? కొడుక్కి శేషావధాని కూతుర్ని బేరమాడుతోంది. వాడుకూడా మొగ్గుతున్నాడు. అంకు చేలే తలోవందా యివ్వడానికి వొప్పుమంటో దది. ”

“ కేషిగాడు మొగ్గుతున్నావంటే ఆశ్చర్యమా ? యాదైవే లున్నాయి ముండదగ్గర. కానిపనిచేస్తేమాత్రం దానికేం పోయిందీ ? మేమమ్మా మహామహా చదివేశామని విర్రవీగుతున్నాము; గాని మనలో వొక్కడివగ్గరా పదివేలైనా లేవు. ”

“ మన దేవతార్చనలే వనకి ఆస్తి. అవి లేకపోలే మనల్ని చూసేవా రెవరోయ్ ? ”

“ అదీ నిజమే; కాని దేవతార్చనవంట తాను చేస్తానంటుం దేమా వెంకుసోడెమ్మ ? ”

“ అది తప్పుదు. లేకపోలే దాని కేంలాభం ? మనం స్వయం పాకాలు చేసుకోడానికా యేమిటి అయిదువందలూ, పైబిరుల్లా— ”

“ దిక్కుమాలినముండ రంగూనుకూడా తగులడిందని చెప్పుకుంటారుగదా, మాస్తూమాస్తూ మాలకూడు తినమా ? ”

“ ఇక అదంతా కట్టిపెట్టు. పంచగవ్యప్రాశన చేశాక—మం త్రానికి తక్కి వుండంటావా లేదంటావా ? ”

“ లేకపోలే అయిన నూరేసీ కరుకులు గుమ్మరించి మానల్ని బలిమాలుకోడం యెలా వస్తుందీ ? ”

“ ఇంకేం ? ఇంతకీ : కంకరాచార్యసీతం మూలపడిందికనక సరి పోయిందిగాని లేకపోతే మన కేంవుందీ ? నాలుగేసి రూపాయలతో తప్పి— ”

“ అవునవును. ”

“ లోకం యెలా వుందో మనం కొంచెంచూసుకుంటూ వుండాలి. బిగించనూకూడదు ; విడిచిపెట్టనూకూడదు. పదిరూపాయలు చేతిలో పడే వుపాయమే ముఖ్యంగా చూసుకోవాలి. ”

“ శాస్త్రంమాత్రం యేం చెబుతోందీ ? శాస్త్రంలో వున్న బండారం అంతా ప్రాయశ్చిత్తాలే కామా ? ”

“ అదిగదీ మాట. చాంద్రాయణం చేస్తే అన్నిపాపాలు చెల్లాలి. చాంద్రాయణం అంటే ? ”

“ మనకి తలోవందా— ”

“ అంతే. అంతే. “విత్తకాశ్యం నకారయే” త్తనికామా కారికా ? ఎంతచెట్టు కంతగాలి అన్నట్టు నడిపించాలి మనం. ”

“ అవును...అయితే సుబ్బలక్ష్మి రామభద్రచయనులు వెనక్కుల తిరుగుతోందిట యేమిటోయ్ ? ”

“ నిజమే. ప్రస్తుతం తోడికోడలు తెచ్చిన మనోవర్తిదావాలో పనిచేసిపెట్టుమనిమాత్రమే. కాకపోయినా, ముప్పయ్యేళ్ల సేనుకు ఏవోయేమిస్తుంది పోనిద్దా. ”

“ వూరంతా చుట్టబెట్టిలా వున్నాడు వాడు. ”

“ పోనీ తోడికోడలిపక్షం నువ్వు కాసుకో. ”

“ నా కక్కర్లేదునుమా, న న్నిలా పోనియ్యి. ”

“ రామసోదమే చాలు నీకు. ”

“ పామ్మంటే యెన్నివిధాల గంటినా విడవనంటుం దది. బలవంతాన పామ్మనడానికీ మనస్సొప్పడంలేదు నాకూ. పాపం మాట లనుకొనూడదు. అడుగుంటిపోయేసమయంలో నన్ను లేవ తీసిం దదే. విశ్వాసం అంటే దానిచేచెప్పాలి. ”

“ పెట్టిపుట్టావు.....రేపు సోమేశ్వరంలో సదస్యం నిశ్చయ మేనా ? ”

“ చల్లపడేబప్పటికి కబురు వస్తుంది. ”

“ తలోరూపాయా— ”

“ అయిదుగురికి పిల్ల కాసులు- అయిదుగురికి కోనసీమచావులు, పాతికమందికి రూపాయలు— ”

“ సెలగోసెలగ. అస లంతమంది పండితులేరోయ్ మన ప్రాంతంలోనూ ? అయితే కాసులు— ”

“ నీకూ నాకూ తప్పదు. ”

“ రామభద్రచయనుల్నికూడా కలుపు. ”

“ ఏం ? ”

“ చెబుతాకామా. ”

“ వాడి కూతుర్ని నీమనసుడికి— ”

“ అప్పుడే యొక్కతీశావా ?.....నిశ్చయం కావాలిగదా ? ”

“ ఏమాత్రం ? ”

“ వెయ్యిన్నుటపదహా ర్లి చ్చి వుభయభర్షులూ పెట్టుకోవం. ”

“ పోనియ్యకు. ”

“ బామాల్లు కట్టుకోవం తరవాయి. రేపు దళమినాడు స్థిర పరిచాం. ”

“ బాగుంది. ”

“ మరి చెడతా. పదికొండుకామా ? ”

“ అదిగో.....సరిగ్గా కొడుతోంది విన్నావా ? ”

“ మీరంతా సంపాదించారోయ్ తలోటినీ. నాకే శ్రద్ధ లేక పోయింది. ”

“ నువ్వు పాతికరూపాయలు మాలాగ గంగలో పోస్తావు టోయ్ ? ”

“ గంగలో పొయ్యడానికేంగాని—మరి పోతా. ”

“ పవ. ”

౪

“ నువ్వు లక్షచెప్ప, కోటిచెప్ప, నేను మానను. ”

“ నే నెందుకు చెబుతున్నానో కొంచెం ఆలోచించుకో. ”

“ మాశెల్లెలు వెధవ, రజస్వల అయినప్పుడు వాడుచేసిన అల్లరి మరిచిపోయావా ? తరవాత దానికి పెళ్లి అయిందనిపించాటప్పటికి నాగడ్డి నేను తిన్నానే ? ”

“ మీనాన్న వాణ్ణి తిప్పులుపెట్టాడు. వాడు మిమ్మల్ని వీధిలో పెట్టాడు. ”

“ ఇంకేం ? ఈవిరోధం మాకు తరతరాలనుంచీ వస్తొన్నదే. నేను దాన్ని భంగపరచడం యెందుకూ ? ”

“ ఆలా కాదు. కాస్త పస్తాయించు. ”

“ బుద్ధిపూర్వకంగా కోడల్ని విషంపెట్టిచంపుతే వా డెక్కడో దేవుడంటూ నన్ను దిగతీస్తానేమిటోయ్ ? ”

“ సూతికవచ్చి చచ్చిపోతే విషంపెట్టడంటా నేమిటి నువ్వు ? రామచంద్రపురంనుంచి పెద్దడాక్టరు వచ్చి రెండురోజులయిం జెక్స్ను కూడా చేసివుండగా ముందూ టెనకా చూడకుండా గంతులేస్తా నేమిటి ? కేసు నిలుస్తుందా ? ”

“నిలిచిదాకా యెందుకూ? దహనం కాకుండా రెండుపూట లాపుచేస్తే చాలమా వాడికి ప్రాణాల్పితం?”

“నీమాటమీద మనసబు బహిరురాసి కనాన్ని అటకాయస్తాడన్న నమ్మకం యేదీ?”

“లేకపోలే అతన్ని మూత్రం వదిలిపెడతానా నేనూ?”

“నువ్వే మొగాడవు వూళ్ళోకల్లానూ. ఇంకెవడికి యేమీ చేత కాదు. ఏం?”

“ఈవిషయంలో మాత్రం నా కడ్డులేదు.”

“వాడిపక్షంలో రామభద్రచయసులుగారు రున్నారా, తెలుసునా?”

“వుం-టే?”

“రే పీపాటికి నీసంగతి యింకెక్కువో పడిపోతుంది. యెగిసే గిసిపడకు.”

“పారేస్తాను మరోచోట తెచ్చి. ఆయనే మహా వడ్డీవ్యాపారం చేస్తున్నాడా యేమిటి?”

“అంత చురుగ్గా డబ్బులు త్రేవాడవు నిన్నుగాక మొన్న యెందుకు తిరగరాకావూ నోటూ?”

“విషమప్రశ్నలు వేసి నువ్వు చంపుతా వేమట్రా నన్నూ?”

“నిన్ను చంపడంకా దిది, ఆనవసరపు గొడవల్లో మునిగి పోకుండా లేల్పడం.”

“శవం యింకా అవతలికి వెళ్లకుండానే నీకూతుర్ని స్థిరపరుద్దా మనుకుంటున్నట్టున్నావు నువ్వు, ధోరణి చూడగానూ.”

“పోనీ, నీకూతురికి మాట్లాడనా?”

“నాకు మరోసమృద్ధం దొరకవా యేమిటి?”

“నాకే దొరకదు పాపం! అవునా?”

“అయినా నన్ను విడిచిపెట్టేస్తా.”

“పట్టుకున్నావా యేమిటి? ఇక నీయిష్టం వచ్చినట్లు తంటాలుపడు. నడుంగా యీరోష్టంతా నాకెందుకూ?”

“నుంచో.....వోరేయ్! మాట పూర్తికాకుండానే తారకం అంటితే యెలాగరా దానిల్లు వల్లకాడయితేనూ?”

“నే నవతలికి పోయినా తప్పే?”

“పోయి వూరుకుంటావా యేమిటి నువ్వు? పట్టామణిని తిరగదీస్తావు. మూడువే లివ్వాలి నీకతగాడు. నువ్వు కల్లెరచేస్తే కుంయి మనలేడు.”

“రామభద్రచయసులుగారు యెందుట నిలబడితే మహాపాడి చేస్తావుకాబోలు నువ్వు!”

“నాకు కడుపు మహామండిపోతోందిరా వాణ్ణి తలుచుకుంటేనూ. వొక్కమాటు బదులుతీర్చుకోనివ్వరా!”

“కానియ్యి. నీ కడ్డేమిటి? నేను వెల్లిపోతా నన్నానుగానూ?”

“అబ్బా! తడిగుడ్డతో గొంతుక్కోస్తావురా నువ్వు!”

“నువ్వే మహాధర్మరాజవు. కదూ?”

“పోనీ, వాడప్పుడలా అల్లరిచెయ్యవచ్చునా?”

“చేశాడుకనకనే నువ్వు బదులుతీర్చుకోవా లనుకుంటున్నావు. అది వొకవిధంగా ధర్మమే; అయితే నువ్వు బదులుతీర్చుకోవాలంటే అవకాశం వుండాలా అక్కర్లేదా? వాడికోడలి పప్పును చచ్చి పోయిందింటే అందులో యేమేనా ఆనుమానాన్నదం వుందా? అలాంటికోడలు మళ్లీ దొరుకుకుండా వాడికి? అది పోయినందుకు ఇంటిల్ల పాదీ యెంతగోలపెడుకున్నారో చూశావా నువ్వు?”

“కనక తప్పకుండా అల్లరిచెయ్యాలి.”

“కానియ్యమన్నానుగా నేనూ?”

“నవనాడులూ కుంగదీశావు, కానియ్యమంటున్నావు. కింద మంటపెడుకున్నావు, వైని నీళ్లు చిల్లుతున్నావు.”

“నీకంతకష్టంగా వుంటే—”

“నుంచో.....పోనీ నావుక్రోషం పోయే వుపాయం చెప్పు.”

“నేను చెప్పింది నీకు నచ్చదు.”

“అయినా చూద్దాం.....”

“నీకిలాంటి కష్టం వచ్చిందా అని మనస్ఫూర్తిగా పరామర్శ చెయ్యి వాణ్ణి.”

“చ-ప్ప-గా వుంది.”

“జ్వరతుడికి వంచదార చేదు. పచ్చకామెర్లరోగికి జగత్తంతా పసుపు. అసలు నీజన్మ చప్పనిదీ. నీబుద్ధి చప్పనిదీ. నీహృదయం చప్పనిదీ—”

“ఇక నీదారిని నువ్వు వెళ్లు నాయనా! ఇక నేనేమీ చెయ్యనులే.”

“వాణ్ణి నువ్వేమిచేసినా నాకు పోయినా దేమీలేదు. నీకు వారిగీ దంతకంటే లేదు. కడుపు చించుకుంటే కార్ల మీద పడుతుంది.”

“అది అందరికీ వుండొద్దా?”

“వుండాలి. లేదు కనకనే యిప్పుడు బ్రాహ్మణంపై కంపు కంపు.”

“మాట్లాడితే నువ్వు లెక్కరు మొదలుపెడతావు.”



అక్క, చెల్లెలు
(కాశ్మీరము)

V. R. C.



బుడబుడక్క-లవాడు

M. K. R.

(61)

“తప్పా?...ఇంతకీ నీచెల్లెలు రజస్వల అయిందని వాడల్లరిచేస్తే నీకు వచ్చిన నష్టం యేమిటి? వెంటనే దానబ్బసమ్మంధం మరోటి వచ్చిందిగాని పెళ్లి అగిపోయిందా? పోనీ, నువ్వు మొదట స్థిరపరిచిన కొంతుదురు సమ్మంధం మహాశాస్త్రీయమైనదేమో అంటే ఆపెళ్లి కొడుక్కి పడ్డనిమిత్తం యేటగదావొడుగుయిందీ?ఈలోపున—”

“చెప్పకురా.”

“ఏం? ఇవారే వెంటువుట్టిందా?”

“వారేయ్! ఇక నువ్వు నోరు మూసుకుంటావా లేదా? కేసులు తోడేస్తావేమిటి పిశాచంలాగా?”

“నీకంతకష్టంగా వుంటే పోతానులే.”

“ఈ పువకారానికీ వాడు నీ కేం చేసినా చెయ్యవచ్చు.”

“నేను చేసింది పువకారం అని నీకు బోధపడినప్పుడు అది వాడికిగాక నీకుని తెలవకపోవడం ఆశ్చర్యమే!”

గ

“విన్నారా?”

“ఏమిటి?”

“పోనీ తెలిసిందా?”

“ఏమిటా అదీ?”

“ఇవారే శంకరప్పతండ్రితల్లిదండ్రులు.”

“అయితే?”

“నిన్నరాత్రి యెనిమిదింటికీ ప్రవేశించాడు పిచ్చాయి పేడ. మళ్ళీ యివారే వంటలయిపోయా యని కబురుమీద కబురువెళ్ళగా యిప్పు డిప్పుడు వచ్చాడితల్లికి.”

“మిరంతా అంటేగానూ? ఇప్పటి కుర్రకారుకీ మంచి చెడ్డా యేమేనా వుందా? పుట్టింది బ్రాహ్మణకులం అన్న జ్ఞానం వుందా? వాళ్ళని మేళాలకి వెళ్ళనివ్వడం లేదుగదా మీరు సరిగ్గానూ?”

“పెద్దపెద్దలుమాత్రం—”

“పెద్దలేమిటి చిన్నలేమిటి, చెడ్డపని అన్నప్పుడు అందరిదీ తప్పే. కాని వొక్క కేడా వుంది. పెద్దవాళ్ళు పూరుమాటుమని కుండా వాళ్ళయింటికీ వెళ్ళరు. తెల్లవారితే అక్కడ వుండురు. వ్రతం పాడుచేసుకుంటున్నారు; గాని వాళ్ళకులం చెరువుకోవడం లేదు. మీకు ఆచారపాటలు సాధారణంగా అక్కడేకదా?”

“అదే నేను చెప్పవచ్చేది.”

“మాకు తెలవం దేమిటి?”

“ఇది విన్నారీ.”

“కానియ్యి, పోయిందేమిటి? ఇదివరకీ చిన్నవాళ్ళకంటే చెడ్డది వుండురు.”

“బోగందాని చేతి కాఫీ తాగివచ్చాడు వాడు.”

“ఇంకా?”

“పుష్పాకూడా తినేవుంటాడు.”

“నువ్వు చూడలేదన్నమాట.”

“మీ రిలా అంటారని నాకు తెలుసు.”

“ఏమనాలి?”

“అలా చేసినవాళ్ళందరికీ సమానంగా గడ్డిపెట్టరేం?”

“రుజు వేదీ?”

“నేను చెప్పినదంతా అరణ్యరోదనమే?”

“నువ్వు చూశావా?”

“అ.”

“మరి తినేవుంటా డన్నావేం?”

“అదిమాత్రం నేను చూడలేదు.”

“కాఫీ పుచ్చుకోడం—”

“కల్లారా చూశాను. మా మేడవసారాలో మంచుంటే స్పష్టంగా కనపడుతుంది.”

“ఏంజరిగిందో చెప్పు.”

“పిచ్చాయితల్లి, వాళ్ళు కూచునివున్న గదిలోనుంచి రెండు బెండికప్పులు తెచ్చి వసారాలో కడిగింది.”

“అయితే?”

“వొకటి వాడు తాగిందీ, వొకటి అది తాగిందీనీ.”

“పోరా!”

“పోనీ, పిచ్చాయి తమలపాకుల చిలకలు వాడినోటి కందిస్తూ వుంటే నేను చూశానండీ!”

“వాడు పట్టి వేస్తాడుకాదూ?”

“.....”

“అది నల్ల మందుబొంట్టిది. తల్లిదండ్రులు అయ్యేది, చివరికి శ్రాద్ధం అయ్యేది అలవాటయినవాడు మానలేడు.”

“ఏమంటారు మీరూ?”

“ఏం వుందీ?”

“మరి నేను సుభద్రాచలం యింటో సగ్గిబియ్యపుపరమాన్నం పుచ్చుకుంటే మీరంత తర్జనభర్జన చేశా రెండుకూ ఆనెళా?”

“నువ్వు ఆపని చేశావుకనక.”

“మరి వాడు?”

“సాక్ష్యం?”

“ప్రతిఅక్షరానికి సాక్ష్యం కావాలంటే సాధ్యమా?”

“లేకపోతే మేమెంచెయ్యనూ? నువ్వు కొడిగుడ్లు తిన్నావంటాడు వొకడు వచ్చి. తగినంత నిదర్శనం లేకుండా నమ్మవలసిందేనా?”

“.....”

“.....”

“నిదర్శనంవున్నవిహడా మీరు వదిలేస్తున్నారు అనేకసంగతులు.”

“ఏమిటేమిటి?”

“చెప్పమంటారా?”

“వొకటి.....”

“.....”

“పోనీ రెండు.....”

“.....”

“నాలిక కడలదే?”

“.....”

“చెవలవాజమ్మా! నోటికివచ్చినట్లల్లా పేల్తావా?”

“.....”

“వాచూ నువ్వు యొక్కడో పోటీలు తగులడ్డారు. అక్కడ గుడ్డిగవ్వకి మారలేకపోయావు. ఇలా వేస్తున్నావు యెస్తు.”

“.....”

“అనవసరపు గొడవల్లో దిగక వొళ్లు తెలిసి మసులుకో.”

“నీతప్పహతురు బ్రూహహత్య చేసిందా లేదా మొన్న మొన్న? రామచంద్రుడుహతురు రంగూకాదారి పట్టిందా లేదా? జోగన్నశాస్త్రి మనమరాలు అత్తింటోనూ కాకుండా, పుట్టింటోనూ కాకుండా—వారంరోజులు మాయమైపోయిందా లేదా? నాగావ ధానులుగారి శంభన్న మాలపాలికాపుకి గడ్డిమో పెత్తాడా లేదా?”

“సాక్ష్యం. సాక్ష్యం. పొడిమాటలు పనికిరావు నాకు.”

“అలా అయితే: రంగూసులో నాలుగేళ్లు జమాబందీ చేసి వచ్చిన వెంకుసోదమ్మయింటో మీరంతా దేవతార్చన చేశారా లేదా?”

“దానినాలిక తెగ్గాల్సాం. పంచగవ్యాలు పడపోశాం—”

“తలోవందా కొట్టారు.”

“అదా నీయేడుపు?...మా కా తాహతు వుంది. మా కాఅధి కారంవుంది. మా కాప్రామాణికత్వంవుంది. తప్పుచేసినవాళ్లని శిక్షిస్తాం. పశ్చాత్తాపపడ్డవాళ్లని ప్రాయశ్చిత్తంచేసి వుద్ధరిస్తాం.”

“వెళ్లండి మీనీతులూ మీరూనూ.”

“మేం కదలం. మేం చలించం. నువ్వు వెళ్లవలసిందే క్షిప్రంగానూ.”

“హూ.”

“పుండాభోరా! నువ్వు మహాశిష్టాదిగురువులా యేడుస్తావు.....వీళ్లంతా వొక్కతాటిమీదే వున్నారు. అప్రాచ్యులు.”

“ఎక్కణ్ణంవోయ్?”

“పిచ్చాయియింటోనుంచి వస్తున్నాను. సూర్యనారాయణ సోమయాజులుగారి శంకరప్ప—”

“అవునుట. ఇప్పుడే చెప్పాడు భాగన్న.”

“నిజంచెబుతావా లేదా అని నిలవతీస్తే కాఫీపుచ్చుకోడం నిజమే అంది.”

“ఇలా వుంది బ్రాహ్మణ్యం.”

“ఏమిటి చెయ్యడం?”

“తదినం పెట్టాడు. అంతకే సంతోషిద్దాం మనం.”

“కాస్తకాస్త మగ్గమగ్గ హాకలేస్తూ వుండకపోతే—”

“చయనం చేసినవాడవు నువ్వే వేశ్యాలోలుడవై యున్నావు గదా—”

“వొదిలేద్దాం ఆ ప్రస్తావన.”

“ఏం? ఎందుకు వొదిలెయ్యాలి?”

“నీకిప్పుడు అవసరం లేదుకనక.”

“చాలామూరం చల్లింది ఆమాట—ఇక కట్టిపెట్టు.”

“ఏం? ఎందుకు కట్టిపెట్టాలి?”

“.....”

“.....”

“ఇంకేవీ లేవాయేమిటి చెప్పకోవలసినసంగతులు?”

“ఇది కాకపోలేగాదా?”

“అన్నీ వుడిగినవాడితో ఆ ప్రస్తావన లేమిటి పోనిస్తూ.”

“అలాగే?...పోనీ, జ్ఞాపకంవస్తే యెంతబాధ కలుగుతుందో పాపం! చెడతాను.”

“సాయంత్రం వోమాటు కనపడు.”

“ఆ.”

౬

“పునూరుమంటూ వస్తున్నావు.”

“కొట్టికాదు.”

“ఆ?”

“పైగా ఖర్చులుమాడా ముదరాయిచ్చుకోవాలిట.”

“అయ్యో!”

“మిమ్మల్ని నమ్మకున్నాను—”

“నే నేమేనా అసందర్భాలు చెప్పానా?”

“రామరామా! మీ రెలా చెప్పాలో అలా చెప్పారు. నాకోసం మీరు మొదట్లించి చివరదాకా శుద్ధాబద్ధాలు చెప్పారు.—”

“నువ్వుకనక. తెలిసిందా? మరొక డిలా చెప్పమంటే గుమ్మంలోకి రానివ్వకపోదును.”

“అవునవును. నేనెరగనూ? మాఅమ్మ బతికివున్నంతకాలమూ మావ్యవహారాలు మీరే దిద్దారు. తిరవాత మామామగారు పూనుకోడం చేత నైతేనేమి—”

“ఏమైతేయేమిలే.”

“చెప్పవచ్చిందేమిటంటే? మీ రేమీ లోటుచెయ్యలేదు; కాని—”

“నన్ను బాగా—అంటే నేను చయనం చెయ్యకమే కాకుండా గొప్పవిద్వాంసుణ్ణి, కర్మిష్ఠిని, ప్రామాణికుణ్ణి బాగా యోగును. పొగడుతాడు. ఇంట్లో కొత్తకుండతడుపుకుంటే నేను వెళ్లాలి. నాసాత్మమేనా మంజూరుచెయ్యకుండా—”

“వొక్కసంగతి విన్నాను.”

“ఏమని?”

“కనకాచలం వొక్కరాత్రి మకాంవేసిందని తెలిసింది—”

“అలా చెప్పు.”

“రామభద్రచయనులుగారు పురమాయించారుట. పాతిక రూపాయ లిచ్చాట్ట వెంకటేశం దానికి.”

“జూలాయితనంవుంది మనిషిదగ్గర. సందేహం లేదు. మున్నటి అయినాక హెచ్చుమాడా అయిందిట. పోనీ నువ్వుమాడా పంపలేక పోయావా యేవెంకటాచలాన్నేనా?”

“తీర్పు చెప్పితరవాత తెలిసింది. ఇంతకీ: కొండుశ్రాతి నిలుపునా దగాచేశాడు.”

“నేను చెప్పలేదూ వాడు రామభద్రచయనులుఖాలాకు మనిషి?”

“ఎంతవమత్కారపు రాకడ వచ్చాడో చూశారా? దస్తూరీతన జేబు; కాని సామ్యుత్వడం తాను చూడలేదుట. తనచేత నోటురాయింది, తనయెడటే సాక్షిసంతకాలుచేయించి నోటు నాచేతి కిచ్చి వెంకటేశం నాతోమాడా మాయంటిగీసి వచ్చాడు. తన కంటే తెలుసుట.”

“సాక్షులుమాడా బాగా దగాచేశారు.”

“రాధాకృష్ణమూర్తి కొంతవరకు బాగానే చెప్పాడు గాని—”

“వాడి మొగం. నవ్వున్న రూపాయలే యిచ్చాననగా వాడు కొన్ని నోట్లుమాడా యిచ్చావన్నాడు. ఇక సుందరప్ప సరేసరి!”

“రామభద్రచయనులుగారు నామీద యంతకన్న కడతా రను కోలేదు. చివుకుల రామదీక్షితులనిబట్టి నన్ను దిబ్బచేశా డాయన.”

“అసలు తొమ్మిదివందలా?”

“ఫాయిదాతో పదకొండువందల యిరవై దాటాయి. వెయ్యి న్నుటపడవోర్లు—”

“పెద్దదెబ్బ నీకు.”

“రామదీక్షితులు మంచి వ్యవహారత అనుకున్నాను; గాని—”

“అధికారి గడ్డితింటే వాడేం చేస్తాడు పాపం?”

“కొండుశ్రాతి నాదగ్గర గడ్డిమీసి—”

“తరవాత వాడిదగ్గర గుగ్గిళ్లు మేశాడు. ఇటూ అటూ కూడా కొట్టేడు వాడు. గుండెలు తీసినబంటు.”

“సూరపరాజుగారిమీదమాడా దావా పడెయ్యాలి. చయనులు గారు దానిలోమాడా—”

“పూనుకుంటాడు. తప్పుదు. పోనీ నువ్వు అతగాణ్ణి ఆశ్రయించ రాదా?”

“ఆశ్రయిస్తే రామదీక్షితులుమీద దావా పడెయ్యాలి. లేక పోలే నోటు ఆయనికి ట్రాన్సుఫరు చెయ్యాలి. ఇందులో యేం చేసినా వాడికి కైదే.”

“అదీ నిజమే.”

“ఆయన కోటిరెడ్డికిమాడా రాయబారాలు పంపుతున్నారట. కానికోటలు వచ్చిపడ్డాయి. కన్ను పొడుచుకున్నా డబ్బుపుట్టక ప్రతివాడూ ఐసీకో, అబద్ధాలకో సిద్ధపడుతున్నాడు. అసరికిమాడా ఆశ్రయంజేటట్లు కనపడదు.”

“ధూమి కొనెయ్యరా అంటే విన్నావా?”

“శనిగాడు నెత్తిమీద ముచున్నాడు. ఏం చెయ్యనూ?”

“అసీలు చేస్తావారేదా?”

“మానడం యెలాగా?”

“ఈమాటు స్లీడర్ని నేను కుదురుస్తాను. నువ్వు తొందర పడకు.”

“అలాగే.”

“ఏమంటాడు?”

“వినిపించుకుంటేనా ఏమేనా అనడానికి మానడానికినీ?”

“.....”

“కొన్ని కొన్ని చిక్కులు చూపించాను. చివరికి భయ పెట్టాను.”

“ఏమనీ?”

“దానాపడితే చాలా నష్టం అనీ, పైగా అప్రతిష్ఠ అనీ.”

“.....”

“ఏంచేసినా వొకటేమాట. “అది నాపెళ్లాంకాదు. దాన్ని నేను కోరలేదు. నే నంగీకరించలేదు. నా కేమీ తెలవనివయస్సులో మావాళ్లు చేసినదానికి నేను బాధ్యుణ్ణికాను—”

“ఎవరుట బాధ్యులు?”

“తల్లి తండ్రినిట. ఇవతల మీరుట. మీ అమ్మాయిమాక్కడా అలాంటి అధికారమే వుందిట. మళ్ళీ పెళ్లాడవచ్చుట!”

“నాడికి ఘటాశ్రాద్ధంమాడా చెయ్యవచ్చా?”

“.....”

“గొప్పవిద్వాంసు డవుతాడని యింగ్లండు పంపిస్తే పకువై వచ్చాడు. బోలెడుసామ్య—”

“అవునుట. ఆమాటమాడా నాడేచెప్పాడు. తనకోసం మీ రెంథ ఖర్చుపెట్టాకో అంతటికీ ప్రస్తుతం నోటు రాసియిస్తాడుట. తరవాత రెండేళ్లలో అణాపైసలతో తీర్చేస్తాడుట.”

“ఆ?”

“ఎంతసేపూ ప్రేమ, ప్రేమ—మరోమాట లేదు. ప్రేమ కలగనివోట పెళ్లేమిటంటాడు. వధూవరు లిష్టపడి పెళ్లి చేసుకోవాలి; కాని మగ్గు మీరంతా యేవ రన్నాడు.”

“పోనీ వొకపని చెయ్యమనలేకపోయావా?”

“ఏమి టది?”

“మాపిల్లతో స్నేహం చెయ్యమను. త నిక్కడికి వచ్చినా సంతోషమే. దాన్ని తనదగ్గరికి పంపమన్నా సంతోషమే. మా కేమీ అభ్యంతరంలేదు. ప్రేమ కుదురుకుండా, ఏలుకోవచ్చు. అవసరమైతే తనయిష్టంవచ్చినపద్ధతిలో మళ్ళీ పెళ్లి చేసుకోవచ్చు. ప్రేమ కుదరమా? మాపిల్ల మాయంటేనే వుండిపోతుంది. ఇంకేమీ మాట్లాడము. అదీ, మేమూ మాకర్మానికి యేడుస్తూపడివుంటాము.”

“ఇంత ఆలోచన తోచలేదు నాకు; కాని మరొకవిధంగా చెప్పాను.”

“ఎలాగ?”

“దాన్ని రహస్యంగా మాయంటికి తీసుకువస్తాను. మీ రిద్దరూ మాట్లాడుకోండి, నచ్చి నీకు దానిమీద ప్రేమకలిగితే తీసుకు వచ్చు. లేకపోతే మానెయ్యి—”

“ఏమంటాడు?”

“చదువురాని మాధురాలితో స్నేహం యేమిటిట!”

“తనచదువు యిలా తగులకుతోంది...పోనీ, నామాతుర్ని ప్రేమించవద్దు. దాన్ని తనపెళ్లాంకా భావించవద్దు, పెళ్లాంకా మాడ వద్దు. తనయింటికి తీసుకుపోతే చాలు. దానీపనులు చేయించుకుంటూ అయినా తనదగ్గర వుండనిస్తే చాలని యేడుస్తాం దది. తాను మరొక వారసాన్ని పెళ్లాడినా సంతోషమే.”

“అదీ చెప్పాను. అంతజౌదార్యం వుండేవాడి కిలాంటిబుద్ధి యెందుకు వుండుతుందీ?”

“ఏం చెప్పాడు?”

“నీమాతుర్ని వాడు ఇటీవల చూడలేదుట; కాని అందం గానే వుండవచ్చుట. కనక దాన్ని తనయింటో అట్టే పెట్టుకుంటే నెలలో రెణ్ణెల్లో చూసేటప్పటికి తనమనస్సు చలించవచ్చుట. దాని మీద తనకి మోహం కలగవచ్చుట. అది పెరిగిపోవచ్చుట. స్వాధీనం కాకపోవచ్చుట. దాంతో కొన్నిసంవత్సరాలు ఆజంజాటలో పడి వుండిపోవలసివస్తుందిట. అది వోపట్టిన తదలదుట. ఈసంఘటనవల్ల తనకిక పెళ్లి కాదుట. యావజ్జీవమూ యీ మాధురాలితో వున్నారు మంటూ కడపవలసివస్తుందిట. సుఖం వుండదుట. ఆనందం వుండదుట. కాంతి వుండదుట. తన అమూల్యకీవితం దుఃఖభాషన మైపోతుందిట!”

“అబ్బా!”

“ఎంత గడు స్రసంగా—”

“ఇంతకీ: ఈతప్పంతా నాది.”

“.....”

“చిన్నతనంలో చురుగ్గా వుండడం చూసి శేనే యింగ్లీషులో ప్రవేశపెట్టమని సలహాచెప్పాను. తరవాత ఆస్తి తక్కువైనా పిల్ల నిచ్చాను. ప్రాఫెసర్లంతా మంచి తెలివైనవాడని పొగడితే యింగ్లం డు పంపించాను. సామ్యా పోయింది, దిమ్మా పట్టింది.”

“.....”

“నేను చేసినదానికి క్షమామాదా నాకే అయితే బాగుండిపోను. మా అమ్మాయి గొంతుకోసినట్టయింది. దాన్ని చూస్తే కడుపు చెర్రవైపోతోంది.”

“పైవాళ్లే చూడలేకుండా వున్నారు.”

“ఇంకోటిమాడూ. ప్రేమ ప్రేమ అంటూ అంత గుంజు కంటాడు గదా? నిజంగా ప్రేమవున్నవాడయితే యింత మొండి కత్తకలదా? ప్రేమ వృధయన్నీ మృదువుపడతుందా, రాయిగా చేస్తుందా? తాను ప్రేమ కలవాడే అయితే నామాతురునీటి జారి కలక్కండా వుంటుందా?”

“నిజమే. ప్రేమపున్నచోట యింత కాశిన్యంవుండడం అసహజం.”

“కనక వాడికి నిజంగా ప్రేమించడం తెలవదు. ఎవరిమీదో కన్నువేళాడు. అది వీణి యింకా లక్ష్యపెట్టడంలేదు. దాన్ని మరిచి పోలేడు. దీన్ని సుఖపడనివ్వడు. ఇలాంటివాళ్ళకి చివరి కేలాంటిగతి పడుతుందో యెరుగుదామా?”

“అక్కర్లమా?”

“ఇలామాస్తే బ్రాహ్మణలక్షణమా లేదు. అలామాస్తే ప్రేమికుని లక్షణమా లేదు. చివరికి మనిషి అనిపాడా చెప్పడానికివీలేదు.”

“ఇంతకీ : ఇంగ్లీషు మన గొంతుకోస్తోంది.”

“అది తెలివితక్కువమాట. ఆచారాల్లోనూ, నడతలోనూ భేదం కలిగించవచ్చు. ధర్మంలోనూ, నీతిలోనూ కొత్తదారి తొక్కించవచ్చు. హిందువుగా పుట్టినవాణ్ణి క్రిష్టియనుగా మారిస్తే మార్చవచ్చు; గాని పెల్లామనీ, బిడ్డలనీ, సంసారమనీ తెలవకుండా చేస్తుందా యింగ్లీషు?”

“ఏమో! నాకు—”

“అలాకాదు; కాని వొక తెలివితక్కువ పనిమాత్రం చెస్తున్నాం మనం. ఇంగ్లీషు చదువుకున్నవాళ్ళకి అడాల్తుమాడా చదువుకోవాలని వుంటుంది. మనం మొగపిల్లలికి యింగ్లీషుచెప్పించి వూరుకుంటున్నాం గాని అడపిల్లలిక్కడా చెప్పిస్తే యీ కుర్రకారుకోగం చప్పగా కుదురుకుంది.”

“అది మరి—”

“చివరికంటా విను. ఇంగ్లీషు మొగపిల్లలికి పడమటిమాపు కలిగిస్తోంది. అడపిల్లల మాపు తూర్పుకే వుండిపోతోంది. దీనితో—”

“కాని అడపిల్లలిక్కడా యింగ్లీషు అలవాటుచేస్తే మన సంప్రదాయాలు నిమిషంలో గంగలో కలుస్తాయి.”

“అది నిజమే; కాని యీవుప్పెనమాశేవా?”

“ఏంచెయ్యడానికి తోచదు.”

“కానియ్యి. ఇంకా యెంతకాలం యిలా యేడవాలోమాపిల్ల. వొక్కపిల్ల. వైగా వజ్రపుకునక. ఎన్నిముచ్చట్లు తీర్చుకోవాలని ఆకపడ్డామరా దీనిమూలంగానూ? ఎంతవిఘాతం.....”

“అదేమిటా?”

“.....”

“ఛా! అడదానిలాగ—”

“అడదానికేగాని మొగాడికి దుఃఖం వుండదా? పది-పూజీళ్ళు వచ్చాయి. దాన్ని చూస్తూ యెలాగ భరించడం? దానికి గతి లేమిటి? పురిట్లో వొకసాధు ఆశీర్వాదమిచ్చాడు. అప్పుడే పోయి

వుంటే యింతకోత లేకపోవును మాకు. వొక్కొక్కప్పుడు దాన్ని కిరస్తానీలలో కలిపేసి— మేంకూడా కలిసిపోయి మరొకడికి పెళ్లి చేసేద్దామా అన్నంత వుద్రేకం కలుగుతూవుంటుంది. కాని వాడు దారికి రాకపోతాడా అని ఆశేవుడుకూవుంటుంది. చూడూ. ఇంతవూ రుంది. నూరిళ్ళ బ్రాహ్మణాగ్రహారం. అంతా పంపికుల్లోనే జమ. అంతా కర్మిష్టుల్లోనే టక్క. మాట్లాడితే ప్రాయశ్చిత్తా లంటారు; కాని వాడికి గడ్డిపెట్టరే? మాపిల్లకి మళ్ళీ పెళ్లిచేస్తే—”

“ఇక తరవాయా? అవి కారికలు కావు, అవిసభలు కావు, అవి చర్చలుకావు, అవి తీర్మానములుకావు, అవిబహిష్కారాలు కావు—”

“ఛీ! ఏంజాతిరా మనదీ?”

౮

“.....నూరినీళ్ళకాబోలు.”

“అవునండి.”

“చాలా బాగున్నాయి.....ఈమధ్య తమయింటో కుభ కార్యం యేమేనా జరిగిందా?”

“మాచెల్లెలిపెళ్లి చేశాం. అందుకోసమే యీపందిరి వేశా మంకి.”

“బాగుంది.....మియింటిపేరు?”

“చావలివారు.”

“నామధేయం?”

“వేంకటావధాని.”

“మీ రేం అగ్యయనంచేశారు?”

“అన్నీ అయినాయి—”

“ఏమేమిటి?”

“మొదట సహితంతా అయిపోయింది. తరవాత పరా యతం పూర్తిచేశాను. స్కూర్తం అయిందనిపించాను. చివరికి పంచ కావ్యాలుకూడా పాడేశాను; కాని—”

“ఇంకా కానీయేం?”

“వాల్లవల్ల యేమీ లాభం లేకపోగా నూక్కులు మాస్తరుగా ప్రవేశించాను.”

“ఇంగ్లీషుకూడా—”

“తెనుగే చదవలేదు. నాలుగోక్లాసు. ఇనస్పెక్టరుగారి నాశ్ర యించగా నా చిన్నతనంలో తారీఖువేసి ప్రయిమరీ సర్టిఫికేట్టు దయ చేశారు. ప్రెయినింగుకూడా వారే—”

“శాంబూలం యేమాత్రం—?”

“ఇంట్రబ్టిందే పడమటావు పెయ్యో, తోలిచూలుది వుండుగా తోలిపెట్టాను. నూటపాతికరూపాయలికి తరిమితరిమి అడిగారు చేరగాళ్లు దాన్ని.”

“బాగుంది. ఇహంలా భుక్తికి దారి. పరంలా— అయితే; ఆయన బ్రాహ్మణేనా?”

“మనవాడే. చేబియ్యంవారు.”

“అయితే; పరంలా ముక్తికి సోపానం. కిరీటంలేని రాజన్నట్లు ధారపొయ్యనిదానం.”

“చిత్తం, చిత్తం.”

“జీతం యెంత?”

“పదిపాడిస్తా రిప్పుడు.”

“అంతేనా?”

“అదేనా కడిగేస్తే.”

—పెగా—వూళ్లో—

“అవి పూర్వపుమాటలు. ఇప్పుడు దమ్మిడిమాడా ముట్టదు. గిలకలు పట్టిస్తామంటే సగం గుమాస్తాలకి దాఖలుచెయ్యాలి. ఆపైని ఇనస్పెక్టరుగారికి విందుచెయ్యాలి. ఇప్పటి ఆయనకి లంచా లక్కర లేదు; కాని పిండివంటలతో భోజనాలూ, టిఫిన్లూ—”

“మొత్తానికి మనలో మరమాట. ఇప్పుడు చదువులూ ఆలూగే వున్నాయి.”

“నిజమే. మీదగ్గర దాచడం యెందుకు? బోర్డునా రొకం దుకు పాతకాలు నడుపుతున్నారు. మే మొకండుకు మేష్టరీ చేస్తున్నాం. తల్లిదండ్రు లొకండుకు పిల్లల్ని పంపుతున్నారు. పిల్లలు మరొకండుకు వస్తున్నారు.”

“సరిగా చెప్పారు. అందరికీ కాలం గడిచిపోతోంది.”

“కాని దీల్లోమాడా వుచ్చులు బిగుస్తున్నాయి. బ్రహ్మిగాళ్లకి ట్రెయినింగుఆకలే దిప్పుడు. చేర్చుకోవడం లేదు.”

“అదోటిమాడానా? అయితే చిక్క.....మీకు సంతానం.....”

“ఇద్దరు కొడుకులతరవాత వొకమాతురు. పెద్దవాడికి మొన్ననే మాచెల్లెలిపెల్లిలో వొకపోచ వేశాను.”

“మాచెల్లెలి నేనూ రిచ్చారు?”

“ఇక్కడే పులుగుర్ర. కట్టారివారి అబ్బాయి. ఫోర్టుఫాతం చదివి, ట్రెయినింగు కానిచ్చేవాడు; కాని యింకా మేష్టరీ దొతక లేదు. అట్టింగులు—”

“కట్నం యేమాత్రం యిచ్చారు?”

“రెండువందలు కరుకులు గుమ్మరించాను. పైగా లాంఛనాలు—”

“రెండో మూడో వందలు. చెప్పేదేమిటి? ఇదంతా—”

“పాలం తనఖాపెట్టానండీ!”

“ఊహా? అద్భి! వొదిలేటప్పటికి మరొకటి తగులుకుంటుంది.”

“వొదిలిదాకా వుంటే అదీ వొకఅందమే. మీదటికి నాలుగో చెల్లెలికి పెల్లి చెయ్యాలి. అదలావుండగా మాకెద్దకుర్రవాడికి సమ్మంధాలు వస్తున్నాయి. నలుగురైదుగురు కొందరచేస్తున్నారు.”

“కట్నం యేమాత్రం యేర్పరిచారు.”

“అయిదువందలికి గుడ్డిగవ్వ తగ్గితే మాట్లాడ నక్కరలేదు.”

“పైగా లాంఛనా లివ్వాలి. బాగావుంది.”

“పుథయ్యగొప్పలూ పెట్టుకోవా లంచా మనుకుంటున్నాను.”

“ఆలోచన యెందుకూ?”

“ఆలోచనే లేదు. అనేవేశాను—”

“తమకి వసతి యేమాత్రం వుందండీ?”

“నలుగురం పంచుకోవాలి; కాని నాసంగతి—మా అత్త వారు సాయం—”

“ఇంకేం? అది అనేకవిధాల కావుదల. సమస్తమిటుంబంలో ఆమాత్రం ఆధారంవున్నవాడు చుల్కాగా తేలిపోతాడు.”

“వొకాయన దానిమాడ్డా సిద్ధపడుతున్నాడు; కాని పిల్లతాత—పితామహుడు గంగాధరత్వం—”

“ఆ? కొట్టిందాయేమిటి?”

“ఇంతకీ: ఆయన పోయి పాతికేళ్లయింది. పిల్లతండ్రి చిన్నతనంలో వారసత్వం నిలిపాడంటారు; గాని యిప్పుడు వడ్డీవ్యాపారం చేస్తున్నాడు.”

“ఇప్పుడు బంగారపుపిచికేగదా? పోనివ్వకండి.”

“తాంబూలాల పుచ్చుకోడం తరవాయి.”

“భేషగావుంది.”

“మరి తమరు పొద్దుండగా—”

“ఈవూరే వచ్చాను. ఆఖికి పెల్లి భోజనంసంగతి చూస్తాను రెండి. మాచుట్టలయింట్లో పెల్లి. బోగంమేళం కావాలి. ఈరాత్రే మాట్లాడుకొని తెల్లవారగట్ల మాడా తీసుకుపోవాలి.”

“కావలినీ పేరుపడ్డ నాయకురాలు నేను చెబితే విశేషమిది. కబురంపుతాను. భోజనంచేసి దయచెయ్యండి.”

“తమకి అలాంటి అలవాటుమాడా వుంటే చాలామంచికే; మరీ నెలవూ..”

“చిత్తం. పెద్దవేమూరివారియింటికి వెడితే మీకు భోజనం దర్జాగా—ఇవాళ వారియింటో నామకరణంకూడా అయింది. నేనుచెప్పిన నాయకురాలు మేజువాటిచేసింది వారియింటోను. వారి నడిగితే దాని సంగతి మీకు తెలుస్తుంది.”

“చిత్తం.”

“మీరు వచ్చాటప్పటికి కబురుపంపి రప్పించమంటారా?”

“నేను వచ్చాక—”

“అప్పటికి దానికి, యిల్లు కడలడానికి వీలవుతుందో కాదో? ఈల్లావుకో కబురువెడితే మంచిది.”

“దానిపే రెవరండీ?”

“పుడేనాపువ్వుఅని దానికి మారుపేరు. మంచి చురుకైనపిల్ల.”

“దానికోసమే నాప్రయత్నం. అయినా నేను వచ్చేదాకా మీరు ప్రమవడవద్దు.”

“మీరే దానియింటికి వెడతారా?”

“కొంచెం పరిచయం వుందండీ.”

“సరిసరి. ఇంకేం? మహాబాగావుంది.”

సీ. బొట్టులై నిది బ్రాహ్మణాగ్రహారమునకు;

వివిధప్రవృత్తుల, వివిధగతుల

ఛాయలేగాని అసత్యముల్ లే విందు;

పెంచనులేదు, కుదించలేదు;

అత్యవృత్తము వాఙ్మయాదర్శమునయందు

తనరూపు మించుటద్దమునతోడు

నట్లవగాహనమ్మగునంచు కూర్చితి

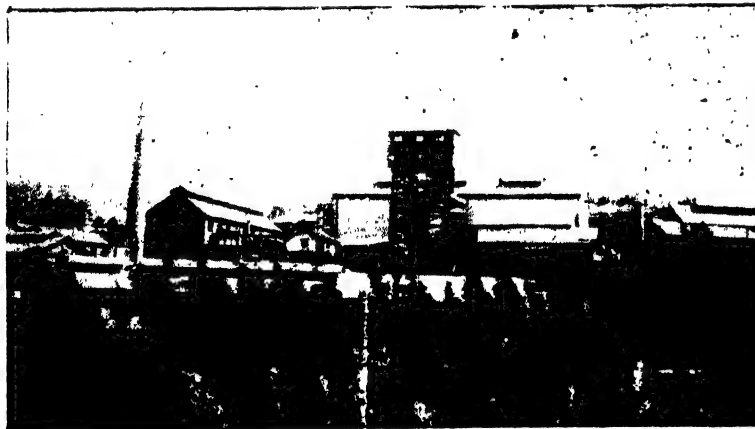
భిన్నస్థలముల వృత్త మొకట;

ఋషులు తీర్చిన ధర్మప్రవృత్తి యిదియె?

బ్రాహ్మణుని బ్రతు కేమికావలయు ముందు?

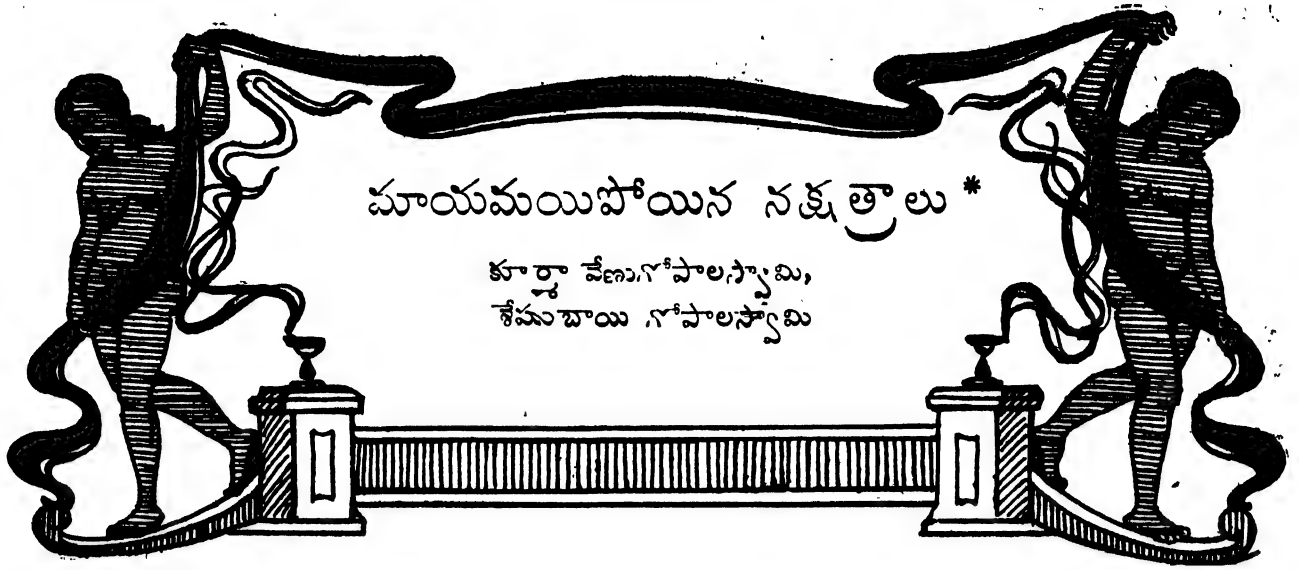
ఉడికిన ఫలమ్యులే; దూరకుండగాదు,

దిద్దుకొనుట యొక్కటె మంచి తెరువు నేను.



తేయాకు ఫ్యాక్టరీ, నీలగిరి

—యస్. వి. నాగ్ గుండరము.



హయమయిపోయిన నక్షత్రాలు *

కూర్చా వేణుగోపాలస్వామి,
శేషుబాయి గోపాలస్వామి

“సార్” అన్నాడు మానోకరు, నేను వ్రాస్తోన్న పద్యంలో రెండోచరణం పూర్తి చేస్తోండగా. “ఇద్దరు దేవతలు మీతో మాట్లాడానికి వచ్చి గుమ్మంలో ఉన్నారు సార్.”

“ఏవీ, విసిరింగుకార్డులు ఇచ్చారా?” అని నేనడిగా.

“ఇవిగోండి సార్.”

ఒకదానిమీద ‘హేలియల్’ అనిన్నీ, ఇంకో దానిమీద ‘జేఫెయిల్’ అనిన్నీ ఉండగా చదివాను. ఇద్దరూ దేవతలే. అనుమానం ఏమీ లేదు.

“సరే వాళ్లను లోపలకు రమ్మను.” అన్నా నేను.

అంతటి గొప్పవాళ్లు నన్ను చూడ్డానికి వచ్చి నప్పుడు వాళ్లని ఆదరించడం నాకు సంతోషం ఇవ్వక పోలేదు. వాళ్లు పెద్ద రెక్కలు ధరించారు. ఒక్కొక్క రెక్కకు ఏడేసి ఈక లున్నాయి. పాట్లమీద ఉండే మెత్తటి బొచ్చులోంచి ఇంద్రధనుస్సులో ఉండే ఏడు రంగులూ తెల్లపారుజామునవచ్చే మంచుపొగలాగ తళ తళ మెరుస్తోన్నాయి. వారి శరీరాలు, కనబడినంతవరకూ, స్వచ్ఛమైన మంచుతో కొంచెం గులాబీరంగు కలిపినట్లున్నాయి. వారిని కూర్చోమని చేతిని ఊపుతో ప్రార్థిస్తూ నా కీ పరిచయంకలుగచేసి గౌరవపరచడానికి కారణమేమని వినయంగా అడిగా.

“క్షుప్తంగా చెప్తాం.” అన్నాడు హేలియల్. “పదహారు సంవత్సరాలక్రిందట జూలై నెల్లో ఒకచక్కని రాత్రి మేము బిలియర్డు ఆడుకొంటున్నాం, జేఫెయిలు న్నూ నేనున్నూ, పచ్చని తివాసీ యగు ఆకాశంమీద.”

“క్షమించండి” అని నేనడ్డం వచ్చా. “నేను ఆకాశం నీలివర్ణం అని అనుకున్నా.”

“అంతటి విస్తీర్ణంలో కొన్నిచోట్ల నీలివర్ణమే; కాని యితరచోట్ల, ముఖ్యంగా పర్షియాదేశంలో ఉండే పట్నాలమీదా, బయలుప్రదేశాలమీదా అది కంటికి మిక్కిలి ఇంపైన చక్కని ఆకుపచ్చనివర్ణంగలది.”

నే నేం జబాబు చెప్పలేదు.

హేలియల్ తిరిగి చెప్పడం మొదలుపెట్టాడు:

“మాకు కనబడ్డ నక్షత్రాల్లో మిక్కిలి అందమైనవాటిని బంతులుగా వాడాం.”

“మరి బంతుల్ని కొట్టేకట్టలో?” అని నేనడిగా.

“తోకచుక్కల తోకలు: కనుకనే సహజంగా, ఆ ఆట చాలా ముచ్చటగా ఉంది. నేను గెలువడానికి సిద్ధంగా ఉన్నా. అప్పుడు ఒక పెద్దదెబ్బతో రెండు బంతులూ ఒట్టుదాటిపోయ్యేటట్టు కొట్టేసాను.”

“ఒడ్డు దాటిపోయ్యేటట్టా?”

* ఫ్రెంచ్ గ్రంథకర్త యగు కాథూల్ మెనడీసునుండి తెనిగించబడ్డది.

ది ట్రస్టీ యిన్నూరెన్సుకంపెనీ లిమిటెడ్

లాహోరు

జాతీయనాయకులగు లజపతిరాయి, మోతీలాలు నెహ్రూగార్లచే స్థాపింపబడినది.

హిందూదేశమున దినదినాభివృద్ధిగాంచుచున్న జాతీయభీమాసంస్థ.

మొదటిఅంచనాలో అధికము రు. 1,25,000

రెండవ అంచనా రు 5,25,000

అమలులోనున్న వ్యాపారము రు 3,75,00,000

క్రొత్తవ్యాపారము రు 80,00,000

ఇంకను ప్రీమియములు చెల్లించకుండ, పాలిసీలను ఉచితముగా అమలులోనుంచు సౌకర్యము గ్యారంటీ చేయబడును.

సమిష్టిజీవితము—ఎండోమెంటు శుద్ధమగు టెరం యెండోమెంటు మాప్రత్యేక లక్షణములు.

ఏజంట్లకు ఛారాశమైన కమీషను యొసంగబడును. వివరములకు వ్రాయుడు:—

జి. రంగస్వామి,

మద్రాసు బ్రాంచి:—

మేనేజరు.

నెం. 6, సుంకురామచెట్టివీధి, జి. టి. మద్రాసు.

లేక

యం. నరసన్న చౌదరి, బి. యే.

పి. ఆర్. యస్. రావు,

ఆర్గనైజింగు శైక్రటరి, రాజమృడ్డి.

ఆర్గనైజరు, బెంగుళూరు.

ప్రసిద్ధిచే గోపాలాచార్యులవారి

చ్యవనప్రాశ

చగులమును బోగొట్టె ప్రక్షులప్తును.

ద్రాక్షాసవ

టలాగుమునచ్చు పానీయము.

అశోకారిష్ట

మురుజులను బోగొట్టును

అయుర్వేదాశ్రమము మదరాసు



లోకప్రసిద్ధిబొందిన

పి. వి. రాజన్ అందు కంపెనివారి
మదరాసు ముక్కుపాడి

గాటు, కమ్మపనం, సువాసన అన్ని
టిలో శ్రేష్టమైనది. ధర నెం. 1 ముక్కు
పాడి వీశ 1-కి రూ. 4-0-0 నెం. 2
(120 తులములవీశ) వీశ 1-కి 8-4-0

కలకత్తా, పూనా, మైసూరు మొద
లయిన వస్తుప్రదర్శనశాలలలో బంగారు
పతకములు బహుమానము పొంది డాక్టర్ల వల్ల పరిశోధింపబడిన

R. S. సుగంధ ముక్కుపాడి

దీనిని వుపయోగించుటవల్ల శీతలము, శీనసము, తలనొప్పి
మొలయున శిరోరోగములను నివారించును.

ధర బాటిలు 1-కి 0-4-0 డజన్ 2-4-0.

24 తులముల టిన్ను 1-12-0.

పోస్టేజి వి. పి. వగయరా రెయిలుచార్జి ప్రత్యేకము.
మిగిలిన వివరములకు

పి. వి. రాజన్ అందు కంపెని,
నెం. 44, గోవిందప్పనాయకన్వీధి, మదరాసు. బి.

పెక్కురోజు లేదురుజూచినది !

ఇప్పుడే వెలువడినది !!

ఆది

గాన భాస్కరము

అత్యుత్తమమైన యొక సంగీత గ్రంథము.

సంగీత సాహిత్య విద్వాంసులైన

కె. వి. శ్రీనివాసయ్యంగారిచే రచియింపబడినది

వెల రూ. 7-0-0.

తపాలుచార్జి ప్రత్యేకము

సంగీతవిద్యాభ్యాసకులకును, విద్వాంసులకును, సంగీతాభిమానులకును నత్యంతోపయుక్తమైన సంగీతబాక్కి సమనందనును. మహా నీయులును, ఖ్యాతినహించిన ప్రాచీన సంగీతవిద్వాంసులును రచియించిన గొప్ప గ్రంథములయందలి సారాంశములును, వారి కీర్తనములలో ముఖ్యమైనవియు స్వరసాహిత్యములతో వ్రాయబడియున్నవి. అదియుగాక శ్రుతిసంబంధమైన విషయములును, అష్టాక్షర శతతాళవివరణములును, మేళకర్త జన్యరాగ మాదిగాల సకలరాగములయొక్క ఆరోహణావిరోహణాక్రమములును, భావ కాస్త్రప్రభావమును, పల్లవి పాడవలసిన పద్ధతియు, అభినయపద్ధతియు, శౌలిపించవలసినరీతియు వివరముగా రచియింపబడి యున్నది. ఇందు శ్రుతులకు సంబంధించిన ప్రకృతపు చర్చలును తేలుగాను ఖండనములతోను తెలుపబడియున్నవి.

ఇందలి ముఖ్యాంశములు :—

ప్రసిద్ధివాగ్గేయకారకుల సంగీతము మార్గ - దేశ్య సంగీతలక్షణములు నాదవిభాగములు.

శ్రుతిసంబంధమైన చర్చలు :—

సంగీతరత్నాకరాది సుస్మృత గ్రంథములందలి పూర్వ పాటలును నానికి ఖండనములును, వీరియందు శుద్ధవికృతస్వర నిరూపణము, స్వరముల విమర్శనము, వాద్యాది స్వరములును, అందలి చర్చలును, ఖండనములును అంతరగాంధారకాకలినిషాద నిరూపణములు.

రాగ విమర్శనములు-తాళ ప్రకరణము :—

సంగీతరత్నాకరములోని 120 తాళముల గాంధర్వలక్షణము ఉత్తమగాయుక లక్షణము శబ్దదోషములు, కారీరలక్షణము కీర్తన ములయొక్కలక్షణములును, ప్రకృతపు నవవడికలకు ఖండనమును.

శ్రీ త్యాగరాజయ్యగారు, వీణ-శుభ్రయ్యగారు, మైసూరు-సదాశివరావుగారు, పట్టం-సుబ్రహ్మణ్యయ్యగారు, క్యాట్ కాస్టులవారు, శుభ్రనాయకాస్టులవారు, ముద్దుస్వామిదీక్షితులవారు గల విద్వాంసుల కీర్తనలు-స్వరసాహిత్యములతో పరిపూర్ణవీణ లను, వారిలెక్క విమర్శనములను జూపెడి పట్టిక. అష్టాక్షర శత తాళ వివరము. సంగీత నైపుణ్యత గలుగజేయు గ్రంథమిదియే.

ఆది పాండురంగ భక్తవిజయము:--

5 భాగములు, 880 పుటలు, 21 ఆఫ్టోన్ పటములు గల భక్తిరసగ్రంథము. నాస్తికులకు దైవభక్తిని జ్ఞానమును గలిగించును. ఆస్తికులకు గల దైవభక్తిని జ్ఞానము నభివృద్ధి చేయగల అపూర్వమైన గ్రంథరాజము. దైవభక్తి, ఆచార్యభక్తి, పతిభక్తి గలిగి యుండి, తరించినట్టి సన్మార్గప్రవర్తకులగు శ్రీ, పురుష జీవితముల విపులముగా గలవు. చదివి ఆనందించవలెనేగాని దాని మహిమ వ్రాయవలవిగాదు. వెల రూ. 6-0-0.

ఆది శ్రీ త్యాగరాజ హృదయము :—

8 సంపుటములు గల ఒక పెట్టు రు. 10-0-0. ప్రత్యేకముగా తీసిన సంపుటము 1-8 రు. 4-0-0.

ఆది శ్రీ త్యాగరాజస్వామి కీర్తనములు

8-0-0.

ఆది సంగీత సుధాంబుధి

8-0-0.

ఎం. ఆది అందు కంటెని,

సంగీత పుస్తక వ్యాపారస్థులు,

11/286, ఎన్.జి.నెడ, మద్రాసు.



V. R. C.

జీలమనది



సూర్యాస్తమయము

V. R. C.

“అవును. దిక్పక్రం ఒడ్డు. ఇట్లవడంవల్ల పెద్ద విషత్తు వచ్చింది. ఎందుకంటే స్వర్గంలో రెండు నక్షత్రాలు తక్కువ అవడం చాలా ఆందోళన గలిగించేవిషయం అని మీకు తెలిసే ఉండవచ్చు. మే మా నక్షత్రాల్ని వెదికి తెచ్చి వాటిస్థలాల్లో ఎప్పట్లాగ తిరిగి పెట్టేసే వరకూ, స్వర్గంలో ఉండే ఆనందాన్ని పొందడానికి వీలేదని స్వర్గాధిపతి మమ్మల్ని ఆజ్ఞాపించాడు.

“మేము ఈ ఎడమరేల్లనుంచి, భూమికి వైన క్రింద, నక్షత్రాలు సాధారణంగా ఉండేట్లుతా ఎంత వెదికామో మీరే ఆలోచించుకోవచ్చు. కాని మా అన్వేషణ లన్నీ వృథా అయిపోయాయి.

“అనంతమైన దేశభ్రష్టతే మాకు గతి అని గుండె నిబ్బరించేసుకోబోతున్నాం. అంతలో ఒకయువతి యొక్క అసమానమైన కండ్లను గురించి విన్నాం. ఆమె మీ ప్రియురాలట— దేశం అంతా వెళ్లిడి అయిన పుకారు నమ్మదగిందయితే. మామూలుగా మానవులకు ఉండే కండ్లకు బదులు మేము వెదికేనక్షత్రాలే ఆమెకు కండ్లుగా ఉన్నాయని అన్నివిధాల సూచించడం వల్ల ఆమె వాటిని తిరిగి ఇచ్చివేయడానికి ఇష్టపడుతుందని మేము అపేక్షిస్తున్నాం.”

ఈ మాటలు నన్ను విశ్రీతంగా కలవరపెట్టేశాయి. నాప్రియతరమైన ప్రయురాలి కండ్లు నాదగ్గర నుండి తిసుకుపోతోన్నారనే మాట వినేటప్పటికే నాకు చెప్పతరముకానటువంటి దిగులు పుట్టింది. ఇద్దరు దేవతలకు వాళ్ల వైవికమయినస్థితార్జితం వాళ్లకి తిరిగి స్వాధీన పరచుకొనడంలో సాయంచేయడం నాచేతుల్లో ఉంది! నేను మెసాన్సీని పిలిపించి, ఆమెకు కొద్దిమాటల్లో ఈ విషయాన్ని స్పష్టపరిచా.

ఆమె ఆశ్చర్యపడ్డట్టుగాని, వ్యాకులత చెందినట్టుగాని కనబడ్లేదు. కాని కొన్ని క్షణాలు ఆలోచించి,

వచ్చినవాళ్లవంక తిరిగింది. తిరిగి తనకండ్లరెప్పలు తెరవడానికి సాధ్యమయినంతవరకూ తెరచి, “చూడండి, ఓచక్కని దేవతలారా, మీనక్షత్రాలని గుర్తుపట్టగల రేమో చెప్పండి.” అని అంది.

వాళ్లు దగ్గరికువచ్చారు. మెసాన్సీనిర్మలమైన కళ్లను చాలా జాగ్రత్తగా పరీక్షచేసారు. కొన్నినిమిషాలు, న్యాయమూర్తులు తమఆభిప్రాయాలు మార్చుకునేటట్లు, ఒకళ్లతో ఒకళ్లు మెల్లగా సంభాషించారు. తర్వాత హేలియల్ అన్నాడు: “కాదు. ఎడమరేల్ల క్రిందట మాయమయిపోయిన నక్షత్రాలివి కావు. ఆ జాలెరాత్రి అవి సంత్రకాశంగాఉండడాలో అంత్రకాశంగాఉన్నా, వాటికి ఈకాంతిగాని, ఈమెరుపుగాని లేదు.”

అంతట వాళ్లు మిక్కిలి విచారిస్తూ వెళ్లిపోయారు. అయితే నాప్రియురాలిని వాళ్లు నాదగ్గర నుండి అవహరించలేదని సంతోషపడినప్పటికీ వాళ్లను చూచి మనఃపూర్తిగా జాలిపడ్డా.

ఇక మెసాన్సీయో? ఆమె కడుపుబ్బ నవ్వింది. “నేను వాళ్లను బాగా మోసం చేయలేదా” అన్నది. “వాళ్లు చెప్పింది నిజమే—నేను పుట్టిన కొద్దిరోజుల్లోనూ క్షితికిలు తెచ్చిఉంటే రెండు నక్షత్రాలు వచ్చి సరిగ్గా నాకనురెప్పల్లో పడ్డట్లు మాలమ్మ నాకు ఒహ నూరుసార్లయినా చెప్పింది. అయితే ఆ దేవతలు నన్ను పరీక్షించేటప్పుడు, మొదటిసారి మీరు నాపెదిమలమీద ముద్దును ముద్దించినప్పటి సంగతి తలుచుకున్నా, ఆ ఆనందాన్ని జ్ఞాప్తికి తెచ్చుకుంటే, ఇదివరకు పోయిన నక్షత్రాలైన నా కళ్లు ఆకాశంలో ఉన్న ప్రకాశతరమైన నక్షత్రాల కంటే ఎక్కువ కాంతివంతం అవుతాయని నాకు బాగా తెలుసు, ప్రియూ.”

పండగ మామూలు

వెంపటి నాగభూషణం, యం. ఏ.,

పండగనీ-పర్వమనీ, సంబరమనీ-సంతోషమనీలోకమంతావుంది.

తత్సందర్భాలలో బంధువులు నలుగురూ కూడుకోవడం, కులాసాగా కాలం గడపడం రివాజు. కాని అట్టిసమయాలలో ప్రత్యేక గౌరవం వుండేది ఒక్క అల్లుళ్ళకే. అన్నీ దర్జగా జరిగిపోతాయి- మరీ ముసిలి అల్లుళ్లు అయితే తప్ప. తమించాలి, 'ముసిలి' అనే పదం యథా లోపాన వాడారు. 'పాత' అని ఉపయోగించాలింది ఎందుచేతనంటే ముసిలివాళ్లు గూడా (రెండో పెళ్లి, మూడో పెళ్లి మొదలైనవి చేసుకున్నవాళ్ల సంగతి మనవిజేస్తున్నాను!) ఒకప్పుడు క్రొత్త అల్లుళ్లుగా మారకం పొందుతారు. అట్టి పరిస్థితులు సంభవించినప్పుడు- ముసిలి- పడుచు తారతమ్యాలు సమసిపోతాయి. అల్లుడు!-అమాట లోనే వుంది, మంత్రం-మహిమ. ఎండిపోయి వంగివున్న తాడి చెట్టును 'అల్లుడా' అని సంబోధిస్తే, తక్షణమే లేచి నితాగా నిలబడ్డదిట. అల్లుడు-అంటే సరి, బుద్ధులు, చేష్టలు ఎల్లా వున్నారో, అత్తవారింటోనేగాక, చుట్టుప్రక్కల యిళ్లల్లోనూ, అదృష్టముంటే ఊరంతాను, గౌరవం కట్టకట్టుకొచ్చి కాళ్ళమీద పడుంది.

నామా అంటే అనుకున్నాను. మమ్మటికి అనుకున్నాను. మీమీద ఒట్టు! దీపావళికి రావలసింది అని మామగారి దగ్గరనుంచి ఉత్తరం వచ్చింది. పెళ్లి జరిగి రెండేళ్లయినా పండగకు రావలసిందని ఆహ్వానం రావడం యిది మొదటిమారే. అందుచేత అత్యావేశంతో ఆహ్వానాన్ని అందుకొని, ఫలానా లేడికి, ఫలానా రైల్లో వస్తానని మర్నాడే వ్రాసివేశాను. ఇంకా నాలుగుదినాలు వుందనగానే ప్రయాణ సన్నాహం ప్రారంభించాను. వెళ్లేది అత్తవారింటికాయో; అందులో పండగకాయో; అందులో మొదటిసారాయో. ఉన్నవాటిల్లో ఉత్తమ మైనవన్నీ రెండు పెద్ద పెట్టెలనిండా సర్దుకుని, వర్ణంలేకుండా నిర్ణయించబడ్డవారనాడు బయల్దేరాను. మా అమ్మ వాకిలిదాకా వచ్చి- "నాయనా, జాగ్రత్తమీ. ఎప్పుడూ పరాయిచోటికి వెళ్లివుంటి ఎరుగవు. ఎల్లా నిర్వహించుకొస్తావో. వెంటపంపుతామంటే ఒక్క ఆడదికైనా లేదు. పోనీ నేనే వద్దామంటే, మీనాయనకు చేసి పెట్టేవాళ్లు లేరు. నానాయిబ్బందీ పడ్తారు. కాళ్ళే, మాడుకోజులే గదా, వాళ్లు మాత్రం నీ కేం లోపం జేస్తారు? ఏదన్నా కావల్సి మొహమాటపడకు బావమరిది వున్నాడుగా, అన్నా అడిగి చేయించుకో, మరేం తప్పులేదు." అని సాగనంపింది.

నాలుగుగంటలు మాత్రమే రైలు ప్రయాణ మైనప్పటికీ, వెళ్లేది అత్తవారింటికిగదా అని ఇంటరుక్లాసుటిక్కట్టు కొనుక్కొని, కంపార్టుమెంటంతా నాదేనన్న తీవ్రతో కూర్చున్నాను. రైలు కదలడానికి యింకా అరగంట వైం వున్నది. పెట్టెలో నేను ఒక్కణ్ణే. ఏకమేవాద్వితీయంగా, మాయగా వుంటుంది ప్రయాణం అని లోపల ఆనందిస్తూ, జరుగబోయే గౌరవ మర్యాదల్ని గురించి ఉహాగానం చేస్తూన్నాను: - వెళ్లడం మొదటిమారుగదా, తప్పకుండా మామగారు స్టేషనుకు వస్తారు; బహుశా తోడిస్నేడరు దెవరిదైనా మోటారుకారు తీసుకురావచ్చు; వెంటవచ్చే నాకరు రెండుచేతులూ జోడించి దణ్ణం పెట్టి సామాను మోస్తాడు; దర్జాగా వెళ్లవచ్చు: ఒకటేమిటి, లక్ష ఆశీర్వాదాలు దొర్లిపోయినై. ఇంతలో ఏమి టాగారిమేడలు అన్నట్టుగా-గార్డు ఈలవేయడం, పచ్చజెండా ఆడించడం, రైలు కదలడం అన్నీ ఒక్కమారు జరిగినై. ఆ ఆవసానకాలంలో ఒక పాటి నల్లటి మనిషి ఒకచారలపెట్టె, రెండుమాడు మూటలు మోసుకుని, రెండుకాళ్లకు పానల్లే గభాలన తలుపుతెరిచి నాపెట్టెలో ప్రవేశించాడు.

"ఇదికాదు, ఇదికాదు, ప్రక్కపెట్టెలో ఎక్కు." అన్నాను.

"ఏం, ఎందుచేతనేం?" అన్నాడు క్యాపటోసం పెనుగులాడుతూ.

"ఏం, ఏమిటి? ఇది ఇంటరుక్లాసు. కనపడ్డంలేమా?"

"నామా ఆమాత్రం తెల్సు. ఇదియింకా ననుకున్నావా?"

"భ్రమపడ్డాను" అన్నాను.

రైలు సాగిపోతోంది. అనల్లటిమనిషి పెట్టె భద్రపరచి, మూటలు మూలకు త్రోసి, కొటు విప్పి కొంకెకు తగిలించి, ఓవైపున కూలబడ్డాడు. అతనివంక చూద్దానికిగాని, అతనితో మాట్లాడానికి కానికి యిష్టంలేక, కొన్న "హిందూ" కేపరు ముఖానికి అడ్డుపెట్టుకుని చదవడం ప్రారంభించాను. అయిదునిమిషాలు అయిందో లేదో, అతను "ఇదిగో చూడండి, పత్రిక ఓమారు యిప్పించండి" అన్నాడు, చొరవగా. వినివినపించోనట్టుగా పూర్కొన్నాను. అందుచేత అతను మరోమారు పూర్వంకన్న బిగ్గరగా-- "ఇదిగో చూడండి, మిమ్మన్నే. కాస్త ఆపత్రిక యిల్లా పారయ్యండి

అంటే, వినపడలేమా?" అన్నాడు గడుసుభార్యగారుతో చెప్పద్దూ, నాకు కోపం వచ్చింది. కాని దిగమింసుకుని, "వినపడదండీ. ఇది ఇంగ్లీషుపేషనుగదాయని వూర్కొన్నాను." అన్నాను. మున్నెరెండుపళ్లు బయటపెట్టి "ఏదో ఆమాత్రం యింగ్లీషు నాకు వచ్చండీ. మీదయవల్ల బి. యే. బి. ఇశి. ప్యాసైనాను. యం. ఏ. కు ప్రైవేటుగా వెళ్లా లనుకుంటున్నాను. ఎప్పటికప్పుడు అల్లాగే అక్రద్ధ అయిపోతోంది. ప్రస్తుతం బందరు హైస్కూల్లో మాస్టరీ వెలగ చెస్తూ నాలుగురాళ్లు సంపాదించుకుని భార్యపిల్లల్ని పోషిస్తున్న సభుంటుంటున్నా. మరింత తీసివెయ్యక్కరలేదు." అని సవినయంగా టూకీగా స్వీయచరిత్ర వెల్లడించాడు. పడ్డతొందరకి కొద్దిగా నాలుక కరచుకొని, మరోమాట మాట్లాడకుండా ప్రెకాగితం తీసి ఆయనకు అందిచ్చి, తిరిగి పేపరుచాటున ముఖం దాచుకున్నాను. రెండు మాడునిమిషాల్లో ఆయన మళ్లీ ఎలుగెత్తి "చూడండి, యిది ఎడ్వర్డు టైమ్ మెంటుకాగితం. ఆ మధ్యకాగితం యిప్పించండి" అన్నాడు. నోళ్లు మండింది. అగన్నర తగలేసి పేపరు కొంటే, ఒక్కపేజీ అన్నా సరిగ్గా చూడడానికి ప్రాప్తిలేకుండా శిఖండిమోస్తరు అడ్డు పడ్డాన్న సైతాన్నా మనసారా తిట్టి పేపరంతా మడతపెట్టి "తమరు చూడండి. నేను సావకాళంగా తర్వాత చూస్తాను." అని అందిచ్చాను. ఆనందంతో అందుకొని తిరగవేయడం ప్రారంభించాడు. ఏమిచేయడానికి తోచక, కిటకిలాించి బయట చంక్ర మణంచేస్తూన్న ప్రకృతిలీలావిచారాలను పరికిస్తూ, ఉన్నతభావాలకు, ఊర్ధ్వలోకాలకు పునాదులునెయ్యడం ఉపక్రమించాను. పట్టుమని పదినిమిషాలైనా జరగలేదు. వీపుమీద గుద్దిపట్టుగా "అయితే చూడండి." అని సంబోధించాడు. అప్రయత్నంగా ఆయనవైపు చూచాను. పేపరు మడతపెట్టి విసురుకొంటూ "ఎందాకా?" అన్నాడు. కల్గిన విసుగునంతా క్రోడీకరించుకొని, "రైలు పోయిందాకా" అన్నాను.

"అంటే?"

"అంటే అదే. రైలు ఎక్కడ ఆగితే అక్కడనాకా."

"అయితే, బందరా?"

"ఊర్."

"మనశేరు?"

.....

"ఊర్?"

.....

"బందరులో బంధువులున్నారా?"

.....

"చదువా, ఉద్యోగమా?"

ప్రక్కావలి హెచ్చిపోయి క్రుతిమించి రాగానపడడోంది, ఊర్కొన్నకొద్దీ. పెనవ సి. బి. డి ప్రశ్నలన్నీ విశేషరీతి అరకాలినుంట నెత్తి కెక్కింది. ముఖం ఎర్రజేసి ఒక్కసారిగా అన్నాను: "జేరు పార్థసారథి. ఊరు తెజవాడ. హరితస్సోత్రం. ప్రవర జ్ఞాపకంలేదు. ఇరవైనాలుగో ఏడు. కాశీలో యం. ఏ. చదువుతున్నాను..... మీదగ్గర ఎవరన్నా పెల్లికి ఎదిగిన గుంటలున్నారా ఏమిటి?"

ఇకిరిస్తూ, "కాదండీ—" అని ఏమోమో అనబోతుండగా అడ్డంవెల్లి అన్నాను: "ఒకవేళ అటువంటి అపేక్ష ఏమైనా ఉన్నట్టయితే క్షమించాలి. అదృష్టంవల్లో, దురదృష్టంవల్లో పెల్లి అయింది. ప్రస్తుతం అల్లవారింటికే చెప్తున్నాను. కోదండరావుగారు మామామగారి కేరు. వకీలువృత్తి." అని పసనచెప్పాను.

"కోదండరావుపంతులుగారు తమరి మామగారాఅండీ, చెప్పరూ. మహాదొడ్డపురుషులు. మాస్కూలుకమిటిలో మెంబరు. మహాఉదారహృదయులు. వారి అబ్బాయికి—అదే మీబావమఱికి క్రిందటేడు పరీక్షలముందు ఆరునెలలు రాత్రింబవళ్లు కష్టపడి ట్యూషన్ చెప్పాను. తర్ఫీలితంగా ఈ సంవత్సరం నాఉద్యోగం ఖాయంచేయించారండీ. మహాఉదారస్వభావులు.....అలాగా, చిత్రం—వారు మీమామగారాఅండీ, చెప్పరూ,...అయితే మీకు కావలసినవారన్నమాట...ఏదో వూర్కొక పలుకరించాను. చీకాకు పడ్డారు. కాని నాఅదృష్టం, క్రిందటిమారుమల్లేకాకుండా యీ మాటు మంచిసహవాసందొరికింది." అన్నాడు దగ్గరగా జరిగి.

అతని ఘక్కి చూస్తే చిత్రంగా కన్నడ్డది. అందుచేత ఏదన్నా వాగిద్దామని అన్నాను— "క్రిందటిమారుమల్లేకాకుండా అన్నారూ, ఏమిటి?"

"ఏదోరెండి అయిపోయింది. కడుపుచించుకుంటే కాళ్లమీద పడుంది. అదో నాటకం. బుద్ధి గడ్డితింది."

"అచ్చే, అట్లాకాదు. దాంట్లో ఏముంది. ఎవరికన్నా వస్తాయి కష్టాలు. ఏం జరిగిందో చెప్పాలి. మనలోమన కేమిటి" అన్నాను అపొయంగా.

అమాయకుడు పడ్డాడు వల్లో. ఇంకా కొంచెందగ్గరకు జరిగి షేక్స్పియరుమొహం పెట్టి ఊసు మొదలుపెట్టాడు.

"మీరు కావాలంటున్నారకాబట్టి చెప్తున్నాను. కాని అది మన యిద్దరిమధ్యే. మూడోవాడికి తెలియగూడదు."

"అచ్చే. అంటేనండి. మళ్లీ తభావతా? నాకుమాత్రం తెలియదూ." అనిఅభయహస్తమిచ్చాను.

ఉపక్రమించాడు.

"మొన్నండీ, మొన్నంటే మొన్నేనండీ, బందరునుంచి తెనాలి బయలుదేరాను. బందరుప్లాటుఫారంమీద పచ్చార్లు చేస్తుం

డగా, ఒకంపార్డు మెంటులో ఒక్క స్త్రీయే చూసొనివుంది. చెప్పస్తూ మీకు, ఆచూకీంటే అమితభయం నాకు. మా ఆవిడె అల్లా అనుభూతి వుందింది. కాని ఆలో జడేమో బుద్ధి వక్రించింది. రైలు కడలేవేళకి ఆపెట్టెలో ఎక్కాను..... బ్రహ్మాండమైన ప్రయత్నం మీద సేనుగూడా ఆపెట్టెలో వున్నాను అనేరిషయం ఆవిడెకు స్వరీంపశేయగ్లాను. మెల్ల గా సంభాషణ నశిపాను. తర్వాత గుడి బాహులో ఆసనప్పుడు ఆవిడె మరచెంబులో నీళ్లు తెచ్చి పెట్టమంది. చిద్దాకు పోయి, స్పెస్సరుకులరు - అయిన నివేదించుకున్నాను. బెజవాడలో సినినర్రావు ఆవిడె పెట్టెలు గూమూలుపూలవాడిచేత మోయించబడేమిటి అనే అటంభావంతో చిచ్చిచెక్కి సానానంతా, బజాలు క్రంగేట్టు, నడుం పక్కాచేట్టు వెయిచింపరూముదాకా మోశాను. హోటలునుంచి కార్యదర్శి అన్నం అందించాను. తిరిగి సానానంతా తెనాలిబంకిలో ఎక్కించాను. ఇక ఒకలేమిటి శాంతి, పుచ్చినకుక్కల్లే 'అటం' అనేది చంపుకుని అడ్డమైనదాకిరీ చేశాను. చెప్పటం ముగించాను. బెజవాడ స్టేషనులో వుంటూ ఫోజన మైతర్రావు అతివాగ్రధిగా ఒక్కకానీ చేతులో పెట్టి కిల్లి కొనుక్కురమ్మంది. ఇంకోకానీ యిచ్చి నన్నుగూడా కొనుక్కుమంటే ఏంపోయింది చెప్పండి? ఇంత అయితర్రావు, ఒక్కసారైనా చనుగిచ్చినప్పుడూ పూట్లాడుకుంటా, చేసిన అరచదాకినీ గురించి ఒక్క కృతజ్ఞతా వాక్యమైనా నకుండా, వాతోపాటు తెనాలిలో దిగినవా దిగకుండా చక్కా పోయింది. ఇంతకన్న ఏమన్నా వుండింట్టి భార కలి. గామ, రామ, చెట్టే సముత్తాలో లేనో, కేగిలో ఎమ్మిడి అంటే ఎమ్మిడి లేనంటూ, వాగ్గడి నేటిని, హల్లాలపట్టణా అంటూ అసహనంతోకి చేరను. వాగ్గిలోకి కేరగానే అట్టె నిర్ల అర్థగాను ఆవ్రాయంగా, "ఏం, బండికడకలానాయనా. ఏంపం నశిచుచ్చానా?" అనేసరికి సుండెకాయ మోకాళ్లదాకా జారిపోయింది. వచ్చిన కర్మం-వెళ్లింది. త్రవారింటికి. ఛా, ఛా, నానాధండాలు అయింది. అదేమిటోనంట్టి గ్రహచారం వాకప్పుడూ యిటువంటి గ్రహచారాలే సంభవిస్తాయి. పూర్వజన్మకుకృతం అమకుంటూ. ఏమిటో శాంతి, వెదముంపకు దొరికేవన్నీ..... అన్నట్లు. ఇంతకూ నా మోగాను యిటువంటి అనుభవాలే వ్రాశాడుకాబోలు చేవుడు. అం ఏమిటో లెండ్రి..... మరిచిపోయినాను, అర్థగారు బట్టలు కొనుక్కొనుని ఉబ్బిస్తే, కొంత భుక్తు పెట్టి దగ్గగా ఇంటరుటిక్కుట్టు కొనుక్కుని యిందులో పడ్డాను. అప్పుట్టభాగ్యంవల్ల మీసపావాసం లభించింది..... అల్లాగా, కోపంపరావుగారి అల్లుడుగారా మీరు, చెప్పరూ? "

"అబ్బ, ఎంతకథ జరిగిందంటి. గ్రీకుట్రాజడీని మించిపోయింది. కాబిదానువంటి కవిపుంగవుడివల్లాడా అందనటువంటి వీధి త్వరపడుటం. మీది నిజంగా రాతిసుండెకాబట్టి ప్రాణాలు నిల్చుకున్నారు. మరొకరైతేనా, పరాయి ఆవదానిచేతిలో అనవసరంగా

పడ్డ పరాభవానికి ఉద్ధరితనీళ్లలో పడి ప్రాణత్యాగం చేస్తారు. కాని, ఏమిటో శాంతి, కష్టాలు యిట్లుకట్టుకు కాపరంచేస్తాయా?"

"అవునండి. ఆభావాలు కల్లే నేనూ ఆమజాయించాను. లేకపోతే యింతనేపా. మీరు చెప్పింది ముమ్మాటికి నిజం. కాని ఏంకాగ్లను చెప్పండి. ఇంటింగ్గర గంపెడు సంసారం. ఇంకా పుట్టేవాళ్లు, పెరిగేవాళ్లాను. జీవితం దిక్కువారింది, మహాచెడ్డంట్టి. ఆవర్సాలకు, అనుచరణలకు సమన్వయం చేసుకొచ్చేసరికి తాను తెనుకుంది....."

"పాపం. నిజమేలెండి. మీరుగూత్రం ఏంకేస్తారు. అక్కడికి ముక్కుబుద్ధితోనే ప్రవర్తించారు. కాస్తనూ, మాస్తనూ ప్రాణం తీసుకుంటానా ఏం?—తీసుకుంటే తిరిగి రమ్మంటే వస్తుందా? మరి తప్పనిసరి వస్తేప్పు, ఈశ్వరుడిచ్చి ప్రాణం అనే సాక్షుతో మరయిస్తం వచ్చినట్లుగా చెలగాటం ఆడవచ్చు. రిష్టగానంట్టి?" అంటూంపగా రైలు బందరు సమీపించింది. అది గమనించి, అతను తన నూటముల్లెపూడ దీసుకుని" మరి చెలవు. ఇక వెళ్లివస్తాను. తిరిగి ఉట్లో చర్చచుచేస్తాను..... మా గ్రంథమాలిషయం కొంచెం ప్రసంగించాలిలెండి" అన్నాడు.

"మీ గ్రంథమాలేమిటి?"

"అంటూ ఒకటి లేవడిశాలెండి. సావకాశంగా చెబినేస్తాను. కాని మరోమనవి. మీమామగారితో మాత్రం నానూట, ఏసోజనం ముందో ఎప్పుడో, కాస్త చెబినయ్యాలి. అశ్వమేధ కూగం చేసినంత పుణ్య మంటుంది."

"అలాగేలెండి. దానికేమింది?"

"చాలాథాంక్స్ అండ్రి...అయితే మరచిపోయినాను, మీకే కేమిటి యిందాకా తెలియచ్చారు?"

"చెప్పినికామీ, పార్థసారథి అని...కాని యింటింగ్గరమాత్రం పార్థుని చలామణి."

"పార్థఅనేపేర పద్యాలు, కథలూ సమస్తంటాయి పత్రికల్లో. మీరేనా ఏమిటి?"

"ఆహా, నేనే—అంటూ ముచ్చన్నచోటునుంచి లేచాను, రైలు ఆగడం గమనించి.

"చెప్పరూ, ఎంతవారండీ. అల్లాగా, ఆ'పార్థ'మీరేనా?మీవి చాలా చదివానుమండీ, మహాశోరుగా వుంటాయి."

"ఏమిటోలెండి. ఈరోజుల్లో ఆంగ్రవాద్యయానికి అన్ని విధాలా అరిష్టకదినాలు వచ్చినట్లున్నై. అడ్డమైనట్లుగా వ్రాసేందుకు వస్తాను లున్నారు. అవన్నీ ప్రచురించడానికి పత్రికలూ వున్నాయి. ఉదాహరణకు చూడండి, మీకు సంభవించిన ట్రాజడీ వుందిచూడండి, అటువంటివన్నీ కథలుగా రూపాంతరం పొంది, తగుదునమ్య

అంటూ వాస్తవికతగలగానే ప్రవేశిస్తాయి. కుక్కగొడుగులతో పుట్టి గిట్టిపోయే “పత్రికారాజముల”కు ఏచెత్తయినా చాలు.”

“అవునవును. మీరు చెప్పింది ముమ్మాటికీ నాప్రపంచం. నా మట్టుకు నేను, పత్రికాధిపతి ఆహ్వానం లేనిదేనూ, నాలుగురాళ్లు రాలకపోతేను పత్రికలకు వ్రాయను. ఏది ఎట్లావున్నా, మన గౌరవ ప్రతిష్ఠలని అమ్ముకోవడమే మా పని.....” అని ఇంకేమో చెప్ప బోతూ, రైలు ఆగిందనే విషయం తెలుసుకొని, మామమగారు కంటబడ్డారేమో అనేభయంతో, తెలుపుకోసమని గభాలున, ఎక్కి సంతకం:రగానూ దిగి, అదృశ్యమై నాడు.

ఇక నానాటకం:

సామానంతా ఓదోబగా పెట్టి కిటికీలోంచి మామూ నిల బడ్డాను—మామగారి ఆహ్వానాన్ని అందుకొనేందుకు సిద్ధంగా. కాని చెల్లెవాళ్లేగాని నావైపుకు వచ్చేవాళ్లొకరూ కన్పడరు. అయిన నిమిషాలయినతర్వాత, ఒకజేత మామగారి దొడ్డి నేను కన్నడలేదని దేవుణ్ణాడుకున్నారేమోనని, రైలుకి స్టాంపుఫారంమీద నిలబడ్డాను. ఎవ్వరొచ్చినవాడా కన్పడలేదు. తనకు వీలేకపోతే కొడుకు బ్రతి కున్నాడుగదా, పోనీ వాణ్ణి అయినా పంపవలసినదా అని కోపం వచ్చింది. రైలుప్రేషనులోనే ఆగిపోయి, తిరిగి సాయంకాలంరైల్వో వెళ్లిపోదామా అని యోచనకల్గింది. కాని తమయించుకున్నాను... చివరకు సామాను మాలివాడినైతేనే పెట్టించుకుని ప్రేషనుబయటికి వచ్చాను. దూరం కాదు కన్నడని. దాన్ని బహుశః నాకోసమే పంపిస్తుంటారని ఊహించి, మాలివాణ్ణి అడిగాను “అది లేడి డాక్టరుగారిదండీ” అని ఘాటుగా జవాబిచ్చాడు. తిక్క తల కెక్కింది; విచారం విషమల్లే శరీరమంతా ఆవరించింది. కాని ఏం చెయ్యను? సరాసరి జబ్బాబు అనిగ్గర కెళ్లాను. దాన్ని ఎక్కబో తుండాగా ఒకనౌకరు మెల్లగా పక్కకొచ్చి—“బా, ఆఆ...ఆబు, మీ...యాయీ...యీ పేరేంటి?”—అని, వాడి నత్తితోపాటు తుంపరలకుపాన్ను అంతా నామొహానే విడిచాడు. నొట్లు మండి పోయింది. చేతుల్లో రివాల్వరు లేకపోయిందిగాని, వున్నట్టుయితే ధమామని వాణ్ణి పేల్చేసేవాణ్ణి. ఎందుచేతనంటే, బందరంతా సి. ఐ. డీల ముయమనీ, ఒకసారి అంటుకుంటే వదలరనీ, కాలేజీ విద్యార్థులనగ్గిరనుంచీ కద్దరు వేసుకుని ఆవృత్తికి లోబడ్డారనీ, కాపీ హోల్డర్లలో నేస్తం చేసుకొని, కుట్రకేసుల్ని పట్టియిస్తారనీ, అదీగాక వచ్చిపోయే కొత్తవాళ్లని ఆపాదమండ్రకం పరిశోధించి అవస్థపెడ్డారనీ—అనేకం విన్నాను. అందుచేత వీడుగూడా ఆ బృందంలో చేరినవాడే అనుకుని విముఖత్వం చూపాను. కాని వాడు మామమగారి బంట్రోతని తెలుసుకుని, నత్తి వున్నదని గమనించి బాధపెట్టడంకోక—“నేనే అల్లుణ్ణి” అన్నాను. వాడు వంగి వంగి దణ్ణాలుపెట్టి బండికి ముందు ఆధిష్టించాడు. నేనూ ఎక్కిన తర్వాత వాహనం కదిలింది.

పావుగంట, ఇరవైనిమిషాల్లో ఇల్లు చేరుకున్నాం. బండి దిగినానే భావమరది కార్ల కడ్డుపడి, సామాను జేరవెయ్యవలలో, బండివాడికి నౌకరుకీ చేయూతయిద్దీ నన్ను లోపలికి ఆహ్వానించాడు. ఉంటాయి పదహారు, పదిహేను నీళ్లు. కాని కాయశరీరం—నామ నావతారం అవశంచేత అంతకుండు వున్నట్టుగా అవుపించు. —నీటనాలుకెనుం, కోలకట్లు, చదరపుముక్కు—ఒక టేబిటి— వుండువలసిన అవలక్షణాలన్నీ వున్నాయి..... ఓగడిలో గృహప్రవేశ మైనాను. బట్టలువిడిచి సావకాశంగా కుర్చీ ఆక్రమించాను. అత్తి గారివసే అనుకుంటాను—ఇంట్లోవున్న సగిషేవస్తువులలో గదంతా అలంకరించి వుంది..... పదినిమిషాలు జరిగినతర్వాత భావమరది కాఫీ-పలహారం పట్టుకొచ్చాడు. బలవంతంచేసినా తినకుండా (అల వాటుంటేగా!)—అన్నీ నాకే నివేదించాడు. సోదరి నివేదితను తలతన్నీపుట్టాడు అని లోలోపల నవ్వుకుంటూ, ఆట్టే మొహమాట పడకుండా చాలాభాగం ఆరగించాను. అప్పటికి నాలుగున్నరగంట లైంది. వీకటిపడకముందు స్నానం చేద్దామనే వుద్దేశ్యంతో శాలి కుణ్ణి పిలిచి చెప్పాను. ఆజ్ఞలన్నీ “గరసాగృహ్లామి”గా నెరవేరుస్తున్న అతను అన్నీ సిద్ధంచేసి వచ్చి లోపలికి కొంచుకుపోతుండగా మామ గారు వేంచేశారు. సరినయంగా నిలబడ్డాను.

“స్నానానికి వస్తున్నావా?” అన్నాడు.

“ఊ.”

“అయితే పడకొండుగంటలైతే బయల్దేరావా?”

“ప్రమాణం కులాసాగా జరిగిందా?”

“ఊ.”

“వంట్లో కులాసాగా వుందా?”

“.....బావా, రావూ?”

“ఛీ, వెనా! బుద్ధితేమో, మాట్లాడుతుంటే చావబాడేవేళ లేక.....ఊ-మియింట్లో అంతా క్షేమమా?”

“ఊ.”

“సరే, నేను క్లబ్బువాకా వెళ్లివస్తాను. ఇంట్లో వుంటావుగా.”

“ఊ.”

నిష్క్రమించారు మామగారు. ‘నీళ్లాడ్డానికి’ వెళ్లాను నేను.

* * * *

రాత్రి సుమారు ఎనిమిదిన్నరకి భోజనానికి లెమ్మని కబురు తెచ్చాడు. శ్యామకుడు. పాపం, అంతచాకిరీ అతనే. ఇంకెవ్వరూ చేస్తారు మరి. మాఅత్తగారికి—మామగారికి—ఇంతవరకు ఒక్క కొడుకు, సూతురుమాత్రమే కల్గారు. వారు తర్వాత సంతానవృద్ధికై స్వయంకృషిగాని, దైవప్రార్థనగాని చేసినట్లు లోచదు. ఎందుచేత

సంటే, చాలావర్షాలు గడచివై. కొడుక్కి పదిహేడు; కూతురికి పదిహేను. మానవులయొక్క శక్తిసామర్థ్యాలు తెలుగుకోదానికిగాని, దేవుడుయొక్క ఆశీర్వాదం ఫలించడానికిగాని పదిహేనేళ్లు చాలు. మీ అభిప్రాయం అంతే ననుకుంటాను.

పిలుపు నందుకుని, మర్నాత్రం తీసి, బట్ట - బనీమతో వంటింట్లోకి వెళ్లాను. తక్కువైన మెరసి గంటేసి పారిపోయింది, నోడ్ల వరాండాలోకి, ఒక అమ్మాయి. తెల్లవీర జీవెంసుమాత్రం దిక్కుత్రంగా గోచరించింది. మా అవిడే అయివుండాలి. కాని రూఢిగా చెప్పలేను. ఎంచేతనంటే, రెండున్నరవీళ్ల క్రిందపై పెల్లిలో తలవంతుండగా ఏంమాతానో అంతే! తిరిగి చూడలేదు. అవకాశ మొస్తేగా! మన హిందూసంఘంలో వుండే దిక్కుమాలిన కట్టుబాట్లే యివి. బాగుపడమని, ఎంతమందిఘోషిస్తే ఏం ప్రయోజనం? ప్రవక్తలు, సంస్కర్తలు పుట్టిపోతూనేవున్నారు. మనం, మనసంఘం, క్రమమం - యిట్లాగే వున్నాం. అచాలయతనం - కాదండీ మన జీవితమకుటం - మరి!..... సరే ఈసీతీబోధల కేం గానీండి, పెల్లిలో సరిగా చూడనిమాట వాస్తవం. మీతోడుకుమంకి! అందుచేత యిప్పుడు మనకు ఆ అమ్మాయి నిష్క్రమించినవైపు జోరబడి కొంచెం సంచలనం చెందినమాట రూఢి. మళ్ళీ ఎందుకు మీతో అబద్ధం చెప్పడం. కాని అన్నిభావాలు సమరతీతో బిగబట్టుకొని - నాకగదా అని వ్రాసించి బండికంచం వున్న ఆసనం ఆక్రమించాను. అంతవరదాకా, నాసికాగ్రం హస్తాగ్రంతో మూసుకొని విశ్వామిత్రుడు పోజుబెట్టి, ఉద్ధరిణిమ నీళ్లతో ఉద్ధరిణి కాల్చి దర్శిస్తూ తపస్సుమాధిలో మున్నుడైయున్న మామగారు, పేనక అప్పురాంగనావతరణంచేత భగ్గుపరుపబడినవాని వలె కళ్లుతెరిచి నావంకమాచి, నివ్వెరబోయి, కొంచెం వొత్తిసిరి,

“అయితే పట్టుబట్ట లేలేమా?” అన్నాడు.

“ఉహూ, ”

“బనీసుగూడా విడవడం మానేశావా?”

“లేదు, కొంచెం చలిగావుంటేను, ”

“చలిగావుండీ. చలి. మేమంతా మనుష్యులం గామూ. చలివుండనుకుంటే వుంది; లేదనుకుంటే లేదు. మొళ్ళే క్లబ్బులా చెప్పారు. ఇటీవల నవంబరులో మనమహర్షి సాంబమూర్తి గారు ఉత్తరహిందూస్థానం వెళ్లి నప్పుడు కాశీలో తెల్లవారుగూమన నాలుగున్నరకేలేచి గంగలో స్నానం చేసేవారట. రాత్రిళ్లుగూడా అట్లాగే అంగవస్త్రంతో వుండేవారట. యూనివర్సిటీ విద్యార్థులందరూ ఫ్లానలునూట్లు, సర్ట్ కోట్లు, ఫుల్ ఓవర్లు, స్వెటర్లు, స్కార్ఫులు దిట్టంగా వేసుకుని, “ఇక్కడ చలి చాలా తీవ్రమండీ,

కాలువగాని, రస్టుగాని కప్పుకోండి” అని ఆయన్ను బ్రతిమాలుకున్నప్పుడు, “ఫలా, ఎక్కడ నాకేం అనిపించడంలేదే. ”-అని ఆంధ్ర అసోసియేషను మీటింగులో హాస్యంచేసారట. నీకు తెల్సుగా కాశీలో ఎంతచలా”

నేను మొండికేసి కంచంవంకే చూస్తూన్నాను. జవాబు చెప్పలేదు. ఇంతలో, నా అల్లుడుతనంమీదికి ఎగిరివచ్చే మామగారి బాణాన్ని అత్తగారనే గుడర్నచక్రం అడ్డుపడి, “పోనీండి. ఎల్లా నూర్చుంటే ఏం? విస్తళ్లు ఎడం, ఎడంగానే వున్నాయిగా. మీరు కావలీస్తే యింకా కొంచెంహారంగా జరుపుకోండి...అందరూ ఒకమోస్తరుంటారా?” అని ఎత్తిపాడించింది, వడ్డనసాగిస్తూ. అత్తగారు నాపక్షమేగదాయని ఆనందించాను. కాని మామగారేనా మెత్తగా వూర్కొనేవాడు? అన్నిపర్యతంలాగ కీలీ-“ఫండాలం ముండా, సుప్రూ చెప్పేదానివే నాకు; క్షులేక” అని గర్జించాడు. అధాటికో, లేక విధివశాత్తుగానో తెలియదు, పైన దండన ఆరవేసిన గావంచా క్రుల్లి క్రిందపడ్డది. నాసండెల్లో రాయి ప్రవేశించింది. మామగారి వైఖరిని గురించి, కోపాన్నిగురించి, కబ్బజాలప్రయోగాన్నిగురించి, యిదివరకే

విన్నాగాని, స్వయంగా అనుభవంలేదు.



“ఏమిటి నీపిండామాడు.....లేకే నేతిరప్పలా బయటపడేస్తావా ఏం?”

అందుచేత యీస్వల్పందానికే చెదిరిపోయి, భోజనం సవ్యంగా ఎల్లా వెక్కుబెట్టుకొని సంతోషం పడెను. నా ఎడంప్రక్కను కూర్చున్న బావమరిదికి ముఖాన నెత్తురు అప్పుడే నిష్క్రమించింది. అత్తగారు ఆకేకం పడిరిపోయి కిక్కురుమనకుండా వడ్డనపూర్తిచేసింది. నాకు మొదట్లో కొంచెం భయమేసిందన్నమాటేగాని, ఎంత చెడ్డా అల్లుణ్ణి గదా, తలతిక్కగా వుంటేమాత్రం వచ్చిన నవ్వుమేమిటి అనే దిగు వుతో వున్నా.

కరియబడ్డాం !

భోజనానికి ! వణుకుతూన్న చేతుల్లో అత్తగారు నేతియూసి పుచ్చుకొని, చాలు అన్నా ఆగకుండా ఓపావునేరు స్రుమ్మరించింది కంచంలో. చూశాడు యజమాని. ఛప్పున కన్నెర్రతేసి, ముక్కుల్ను ఎత్తిపెట్టి: “ఏమిటి నీసిండామాడు, సత్రబొక్కువ్యాపారంగా వుంది. అంతంతబోర్లిస్తా చెందుకు? రేపేనేతి తప్పాలా బయట పడేస్తావా ఏం? అదేమిటి నీబొంద. ఆగరు పులు అంతంత వడ్డించావు కంచంచుట్టూ-గేదెట్టు మొదలల్లే. కావాలిసి వుంటే అడిగివేయించుకోమా. మొహమాటమా ఏంకో అని స్వరయంత్రంగా పనస సారంభించాడు. ఇటువంటి ధాటిలకు అల వాటుపడ్డ అత్తగారు లక్ష్యంచేయకుండా తనపని చూచుకుంటోంది. నాకు లోపల నవ్వు వస్తోంది, రోషమూ వస్తోంది. కాని ఏమీ అనలేక నాపనిమీద నేనున్నాను. మామగారు లోటులేకుండా అడిగివేయించుకుని తింటూ, అటూయిటూ చూపుతో తనిగి మొదలు పెట్టాడు...గ్రహచారం...కంటపడ్డది!—కొడుకు, నోరు తెరవడానికి భయపడి, విస్తబ్ధో వున్న ఆగరువు ఒకదానిమీద క్రేలుపెట్టి, అది కావాలి అని తల్లికి సంజ్ఞచేశాడు. పట్టుకున్నాడు తండ్రి: “దరిద్రుడా! పానకాలరాయన్నీ, బాకీరాయన్నీ మించి పోతున్నా వేం? సత్రాలవెంబడి పంపుతారేపటినుంచీ—” అన్నాడు. నాకు ఘక్కున నవ్వువచ్చింది. సహంతపుకుని, మామగారిచైపు తిరిగి “పోనీండి, చిన్నపిల్లాడు. ఎందుకల్లా కసురుతారు?” అన్నాను.

“చిన్నపిల్లాడు...చంటిపిల్లా డన్నావుకామ, నయం రేపు రోగముస్తే ఎవరు చేస్తారు? సంపాదనంతా తిండికిమ దాక్చర్ల బిల్లుకినా? అవ్వతీరిన గంధం...సరిబ! అల్లా వుంది.”

నేను మరేమీ అనలేదు. ఇంతలో అత్తగారు విసీనినబడ కుండా “చాలు, నాటకం” అని ముఖం చిట్టించుకొని, “ఒనే అమ్మాయి, అర్కాలులో వున్న వెంకిన్నయిలా పెట్టిపోవే. మర్చి పోయినాను.” అని పొలికేక పెట్టిందిమా అవిడేగదా వచ్చి యివ్వారిసింది. తప్పనిసరిగా కంటపడ్తుంది అని ఉద్విగ్నరుకూ, ద్వారంవంక కొంచెం దొంగతనంగా చూడ్డం ప్రారంభించాను. చూస్తూనేవున్నానుకుమండీ, కాని అవ్యక్తంమీద అన్నీ వున్నాయికాబట్టి ఆ అమ్మాయి మేము కూర్చున్న తట్టున వెళుతున్న ద్వారంలోంచి వచ్చి, ఆత్రంతో గిన్నా మానెనక బారవిడిచి చక్కా

పోయింది. గిన్నా చెప్పవలసినది, మామగారు గర్జించడం—రెండు ఒక్కమారే సంభవించినై “ఉండాలా, పూచ్చిపెట్టుకుపోవాలా. పాడుపిల్లా, ఎన్నిసార్లు చెప్పాను శ్రద్ధగా వుండమని!” అన్నాడు. క్యాలకుడు గిన్నా అందుకొని నాకు అమర్చాడు. అత్తగారు పాయ సం వడ్డించింది. ఆద్రవం ఏమిటో తెలియక ఓగిరిటెడు పోసిందాకా ఓకికపట్టి, చెయ్యి అడ్డుపెట్టాను. అవిడెకు ఏంచెయ్యడానికి తోచక చూస్తూండగా యజమాని అందుకుని. “ఊ, చాలు. తెలియడం లా కావలిస్తే అడుగుతాకురే.” అన్నాడు. “అబ్బే, చాలడం, చాలకపోవడం కాదు. నాకు పాయసం సయించదు” అని చిన్న వించాను.

“సహించమా. విత్తేసం లాగుంటేను. కాఫీహోల్లల్లో అయితే వెక్కుందీ లోపలికి.” అని ఎత్తిపాడిచాడు. ఊర్కొన్నాను. అదొక్కటే భక్త్యం అవడంచేత, అది నేను ఆగరించక పోవడంచేత అత్తగారి నవనీతపు మనస్సు చివుక్కుమని, “నా చేతులు పడిపోయాయి. అల్లాగనితెలిస్తే మరోటే చేసేదాన్ని” అన్నది సన్నగా. విన్నాడు పాములచెవుల మామగారు. “ఏం, దీనికేం, తెనులా, పెద్దరోగమా. అందరి యిల్లల్లోను యింతకంటే ఎక్కువ చేసుకుంటారా?” అని ఘుమఘుమలాడుతూ, తాను మరినాలుగు గిరిటెలు వడ్డింపించుకొని, క్షీరాన్నంయొక్క గుర్రగజాల్ని విశేష రింది పొనుస్తూ జుర్రడం ప్రారంభించాడు. నక్క-కొంగ కఫ జ్ఞప్తికి వచ్చి నవ్వుకొన్నాను. తర్వాత, పెరుగు వడ్డించేపువ్వుకు మరింత రాధాంతంకో—అక్కడికి భోజనకాండ సమాప్తి.

సరాసరి నాకు ఏర్పరచబడ్డ గదిలోకి వచ్చి ఈశీచైత్రంలో విశ్రమించాను. క్యాలకుడు తాంబూలంతెచ్చి బల్లమీద పెట్టివెళ్లాడు. అంతలోకే మామగారు ప్రత్యక్షమై, “ప్రయాణ బహుళిక వుంటుంది. పడుకో. మాట్లాడేది ప్రశ్నకేం ఏముంది?” అని నేనేమీ బదులుచెప్పక పూర్వమే చక్కా పోయినాడు. చేసేదేమీ కన్పడక, తాంబూలం వేసుకోవడం పూర్తిచేసి, ఎరికట్రికలైటు ఆర్పేసి పాస్పమీద ఒరిగాను. భుక్తాయాసంచేత కొంత, క్రొత్తస్థలం అవడంచేత కొంత, చాలానేపటివరకు నిద్రపట్టక ఆలోచనాపరంపరలు విజృంభించినై. రైల్వోస్తే ప్రమైన కల్లటినుండి, తిక్కలంకరాయి అయిన మామగారు, తట్టితాప్రభోతో మెరసి మామమైన మామిడి-వరుసగా తలపుకు వచ్చినై. తుద కెప్పుడు నిద్రపట్టిందో నాకే తెలియదు.

* * * *

కొంతజాన గడచిపోయింది. బహుశా పన్నెండుగంటలు అయి వుంటుండేమా అనుకుంటూ—లోపలయింట్లోంచి కేకలు, రాధాంతం వినబడతోంది. రంగం వంటింటిచైపు అవడంచేత మామలు స్పష్టంగా వున్నాయికావు. కాని, మామగారు, అత్తగారు ఏదో వాస్తవ్యధలో ఉన్నారనిమాత్రం గుబోధక మైంది. ఇంటివ్యవహారాలేమైనా నేమో పని ఊర్కొన్నా. మరికొన్ని నిమిషాలకు వారిద్దరూ ఒక రొక్కరు

తనమకుంటూ, నేను పడుకున్నగదికి ఎడమవైపును మునుగారి ఆఫీసుగదిలోనికి వచ్చారు. ఆయన గబగబా ఏదో డ్రాయరులాగడం వినబడ్డది. అత్రేగాడు అంటోండి: “ఊర్కోండి, బాసంపడు. అతను వింటే బాసంపడు ఇంతమా మనం కంటితో చూడ లేదామో. దొంగతనం కట్టడం ధర్మమా?” “చూడకపోతే మాత్రం, అతనుకప్పు యింకవ్వరు రావడానికి అనకాం వుంది? దరిద్రం లుచ్చా. ఇంటికి పంపకని పిలిస్తే యింతపని జేస్తాడా! తెల్లవారనీ, పోలీసులకప్పులో వేయించి మక్కెలు విరళేయించి, డబ్బు కక్కిస్తాను. ఫుంఘాకోర్ వెళ్ళవ.”

“ఊర్కోండి, ఊర్కోండి. బాసంపడు. పక్కగదిలోనే పడుకున్నాను. వినబడుతుంది. నేను తగ్గినకొద్దీ, మీరు హెచ్చుతారేం?పోనీండి, నాకాసులపేరు తీసుకు ఖిచ్చుపెట్టండి. మీ నాలుగువందలు మీకు వస్తాయి.”

“అప్రాప్యమండ. నీ కాసులపేరు అడ్డమేసి అల్లుడి దొంగతనం దాస్తావా? వాడు చేసిన అపభ్రంశంపని నచ్చించే? ఇట్లాంటి అల్లి లుంపబట్టే అల్లుళ్ళ ఆలలు నానతాయి. కాసిచదువుకు వెదానని, రామేశ్వరంచూత్ర చెక్కులని, తిరుపతిమొక్కు తీర్చుకుంటానని—నూమగార్లకి ఉత్తరాలు బరాతం. అవేమీ జరక్కపోతే గదిలోకి పోనని, అన్యాయుని వల్లనని, మీ గజ పెక్కనని చెదిరింపులు. శుంతముండవాళ్ళు. అన్నింటికి అత్రేగార్ల ఆమోదన. అల్లుళ్ళ కోర్కెలు తీర్చిందాకా యింట్లో రొమ్ముమీద కుంపటివకు. దిక్కుమాలిన ఆడబాతి.....ఇవన్నీ యిట్లా వుండగా, నీపోరు పడలేక, పోనీ పంపిస్తే నాలుగువందలు తినిపోతాడు, మల్లీమార దేశం వెదాడు గదా అని పిలుస్తే—నాలుగువందలరూపాయల నోట్లూ అమాంతం మాయంచేస్తాడా. వాళ్ళు మంపిపోతోంది. చెవులేక్కని యిప్పుడే అడుగుతాను.”

“వద్దు, వద్దు. నామాట వినండి. వట్లం పెద్దాను. తెల్లవారనీండి, పోనీ మీసందేహం అట్లాగే తీర్చుకుందురుగాని. మీరు కాకపోతే, నేను అడిగి తెల్పుకుంటాను. పోలీసుదాకా వెళ్ళకండి. నలుగురునోళ్ళలోనూ పడ్డంతపు వేరే ఏం లేదు. ఇప్పటికే మన సంగతంతా చుట్టో తెలుసు. నానునవి వినండి?”

ఇంతలో నాగదితొలుపు తోసినట్టుగా శబ్దమయ్యేసరికి కన్నెత్తి చూచాను. నల్లటి చీకట్లో, తెల్లనిదుస్తులు ధరించిన వ్యక్తి వాకిలి చిగ్గర గోచరించింది. చావొడ్డుదానికి మునుగారే పరశురామావతార ప్రభతో వచ్చారేమోనని చెదిరిపోయాను. కాని కొంచెం నిదానంగా చూస్తే స్త్రీరూపం. అత్రేగారేమో ననుకున్నాను. కాని పోలిక సరిపోలేదు. కాని మా ఆవిడేమో ననుకోడానికి ఆట్టే ఆధారాలూ కన్పడలేదు.

రెండుమాడు నిమిషాలు ఆవ్యక్తి అక్కడే తలుపుచిగ్గర నిలబడ్డది. ద్వైర్యం తెచ్చుకొని పలుకరించాను.

“ఎవరు వారు?”

“ఎవరు వారు?”

“నేనే—” మా ఆవిడెగొంతు స్ఫురించింది.

“ఎందుకు రాధా?”

“ఎందుకు యిప్పుడు వచ్చావు?”

“కొంచెం చూట్లాడానికి—”

ఏమీ అర్థంకాక, మంచం దిగి స్వీచ్ వేయబోతుంటే “వద్దు” అన్నది. చిగ్గరకు వెళ్లి అప్రమత్తంగా రెండుచేతులూ రాధభుజం మీద వేసి, మంచందాకా తీసుకెళ్లి చూస్తోపెట్టాను. ఇంకా తల వంచుకునేపుంది.

“ఏమిటి విషయం చెప్పు” అని కస్తూర్ రాధయుగం పైకి యెత్తాను. కన్నీళ్లు కారిపోతున్నాయి.

“ఎందుకు ఏడుస్తున్నావు?”

“చేష్ట, ఫరహాలేదు. ఎందుకు?”

“చెప్తాను, కోపం రాదుగదా?”

“రాదు.”

“నేను చెప్పినట్టు చేస్తారా, మరి?”

“ఏమిటో చెప్పు.”

“చేసి తీరాలి. లేకపోతే బ్రతకను.”

“చేస్తాను, చెప్పు.”

మా నాన్నగారు ఆఫీసు డ్రాయరులో, సాయంకాలం క్లబ్బుకుపోతూ, పొన్నీ యెవరో యిచ్చిన నాలుగువందల రూపాయలకట్ట పెట్టారట. ఇందాక అరగంటక్రింద చూస్తే లేదుట. మీరు తీశారని ఆయననమ్మకం. ఊర్కోమని అమ్మ ఎంత బ్రతిమాలినా వినడం లేదు. రేపు పోలీసుల్తో చెప్తారేమోనూ—

“నామీదే ఎందుకు ప్రశ్నోకంగా అనుమానం?”

“సాయంకాలం మీరేగా యింట్లో వుండి. ఈగదిలోంచి పెల్లగావచ్చి తీశారని నమ్మకం.”

“డ్రాయరు తాళంవెయ్యలేదా?”

“వేళారు. కాని యథాలోపాన తాళంచెవులు బల్లమీదనే మరిచిపోయినారట.”

“నాకర్లు తీసివుండకూడదా?”



M. K. R.

గుడుకొలువ



(శ్రీ)నగరపు పడవ

V. R. C.

ది భారత్ యిన్సూరెన్సు కంపెనీ లిమిటెడ్.,

హెడ్ ఆఫీసు :

భారత్ బిల్డింగ్సు, లాహోరు.

(స్థాపితము 1896)

భారత దేశమందలి పురాతనపు జాతీయ భీమాసంస్థ.

శీత భీమావిషయమున సమస్త సౌకర్యములూ సరిగ్గా ప్రజాసేవ నొనర్చుటకు స్థాపింపబడినది.

గత అంచనా బోనసు } రు. 25/-లు. యావజ్జీవిత భీమాకు.
సం॥కు రు. 1000 లకు } రు. 21/-లు. యెండ్లో మొట్టమొదట భీమాకు.

భీమావిషయమున అత్యధికమున బోనసు ప్రకటముగా ప్రకటించినది భారత్ మాత్రమే.

“భారత్”లో యిచ్చురుచేసి దానిలాభములను పొందుడు”

“భారత్” యొక్క యేజిస్ట్రీ అనగా, ప్రజాసేవకీయుడు, గౌరవప్రసమైన స్వతంత్రతీవ్రతోపాధి సంఘాదించుకొనుచు యును.
వివరములకై యాక్రిందిస్థలములలోని యేజిస్ట్రీలకు కేరసెనను వ్రాయును.

మద్రాసు.

మధుర.

కాలికట్టు.

THE COCHIN CHEMICAL Co.,

ది కొచ్చిన్ కెమికల్ కంపెనీ,

ఆయలూరు - కొచ్చిన్ స్టేటు

(మాచే తయారుచేయబడినవి)

1. “క్లోరైడ్” టూత్ పేస్టు, టూబు	రు.	0	8	0
2. “క్లోరైడ్” టూత్ పేడర్, (ప్యాకెట్టు 0 1 0) స్టీసా	,”	0	4	0
3. “ట్రాప్ మహల్” గుడ్డలసబ్బు 50 పౌండులు	,”	8	0	0
4. “హెచ్ అండ్ యస్” రబ్బర్ సొల్యూషను డజను	,”	1	5	0
5. “హరిసన్సు” ఉష్ణప్రదేశపుతెనె, “డి” విటమిను కలిపినది స్టీసా	,”	0	12	0
6. “చాకొలాక్సు” ఆదర్శనీయమైన తీయని భేదిమందు 50 బిళ్లలు	,”	1	0	0
7. “కోకెమికో” సువాసన గల తలనూనె 4 బొంబుల స్టీసా	,”	0	12	0

హరి అండ్ సన్సు, మేనేజింగు ఏజెంట్లు.

HARI & SONS,
MANAGING AGENTS.

గ వ ర్న మెం టు

సిల్క్ వీవింగ్ ఫ్యాక్టరీ-మైసూరు

భారత దేశమునందలి పట్టు మిల్లులలో అగ్రగణ్యమైనది. మిక్కిలి నాజూకుగల సాగపైన పట్టులో అనగా, జార్జిటీ, క్రీపిడిప్రెక్, సటిక్, టఫెటా మున్నగు రకము లందు ప్రత్యేకః రిశ్రమ గామింపబడుచున్నది.

అద్దకము, నేతి మున్నగువానికి అధునికయంత్ర సముదాయము నుపయోగింపబడుచున్నది.

గవర్న మెంటువారి పైలేచరులో తీయబడిన శుభ్రమగు మైసూరు పట్టుదారమే వాడబడుచున్నది.

ఈఫ్యాక్టరీయొక్క జార్జిటీ, క్రీపి, టఫెటా రకములచీరలు మిక్కిలి మనోహరముగా నుండును.

మైసూరుపట్టు చాలకాలము నిలచుటకు, నిగనిగమని మెరయుచుండుకాంతికి చక్కదనమునకు పేరొందినవి.

రంగువెల్లబారిన పట్టుగడ్డలకు తిరిగి అద్దకమువేయుట, గొప్పగొప్ప ఖరీదుగల పట్టుచీరలు తయారుచేయుట మా ప్రత్యేకలక్షణము.

మిగిలిన వివరములు కోరువారు దయచేసి వ్రాయుడు:—

సూ ప రిం టెం డెం టు,

సెరికల్చర్ యిన్ మైసూరు.

మనంతోడి రోడ్,

మైసూరు.

“ఇద్దరునాకర్లు, దాసీని, నిన్న అయిదింటికే వెళ్లిపోయినారు.”

“మీ అన్నయ్య ఏమైనాడు?”

“వాడు ఆడుకోడానికి వెళ్లివచ్చి, మీలోపాటు భోజనం చేసి పడుకున్నాడు.”

“అయితే యిక మిగిలింది నేనే నన్నమాట. అందుచేత నా మీద అనుమానం బాగానే వుంది. మీనాయన వచ్చి పోనీ నన్ను అడగడానికి?”

“అవును నే అడుగుతారేమో తెల్లవారి. లేకపోతే పెంక మనిషి. సగాసరి వెళ్లి పోనీనా? నిబాట్లయితారేమో.....అబ్బ! భయ మేస్తోంది.” అని వెక్కిరిచి ఏడుస్తూ నాగేశ్వర మొహం దాచుకుంది.

దగ్గరగాతీ, పులికొంగుతో కన్నీళ్లు కుడుస్తూ అన్నాను—“ఏమవ్వదు. ఏం చెయ్యాలో ఆలోచించు. యథార్థానికి నాకేం తెలియదు.”

“అవును. లేకపోతే నిరూపిస్తారా, ఆయన కేమో మతిపోయిమిమ్మల్ని అంటున్నారని కాని.”

“అదే యిప్పుడు విచారించబడింది. నిం దాలోపలనే అల్లరి పెట్టాడేమో?”



“అని నడుమునుండి ఆధరణంతిసి చేతులొపెట్టింది”

“అందుకే వచ్చాను. ఇదిగో వడ్డాయి. ఉంచండి. తెల్లవారి త్వరగా అంగడికివెళ్లి, వస్తువు మార్చి పైకం తీసుకురండి. నాలుగు వందలకు పైగా వస్తుంది. నవరసస్థిర మెచ్చుగా వుంది.” అని నడుమునుండి ఆధరణం తీసి చేతులొపెట్టింది.

“అంతపని నాచేతుల్లో చెయ్యనా? వేరేమార్గ మేమీ లేమా?...ఇంతమా నేనేమీ ఎరగనే. డబ్బు యిస్తే నేనం వొప్పు కొన్నట్టు కాదా? అదిమాత్రం అపరిష్టకాదా?”

“నిజమే.....పోనీ, ఓపని జేదాం. మీరు డబ్బు పట్టుకు రండి. నేను తిరిగి దాన్ని ద్రావరులో రహస్యంగా పెట్టాను. ఆయనే చూసుకొంటాడు.”

“ఆలోచన బాగానే వుంది. కాని నామనస్సు యంతపనికీ వొప్పుకోవడం లేదు.”

“నాకోసం చెయ్యండి. దణ్ణం పెట్టాను. ఇందాకటిసుంచీ నా గుండె బ్రద్దలైపోతోంది.” అంటూ రెండుచేతులూ పట్టుకుంది.

మనస్సు కరగింది. రాగ చెప్పినట్టే చేద్దామని నిశ్చయించు కున్నా. సరేనని మాట యిచ్చాను...రాగమునం విప్పారింది. కన్నీళ్లు కట్టినై. ముగ్ధం తుడుచుకుని, వడ్డాయి నాతలగడక్రింద భద్రపరచి, “తెల్లవారగానే ఆలస్యం చెయ్యకుండా పని పూర్తి చెయ్యండి. వెళ్తాను” అని లేచి నిలబడ్డది.

“వెళ్తావా?”

“ఊ.”

“మరి, మీ నాన్న నీవడ్డాయి మేదని అడుగుతే?”

“ఏనో చెప్తాను...తర్వాతసంగతి అది.”

“నాకోసం వడ్డాయి దానంచేస్తావా?”

“ఇంకాలో పెద్దదానమా? తర్వాత మీరు సంపాదిస్తే తిరిగి చేయించకోపాడదా? అయినా వడ్డాయిమెండుకు నాకు? ఎవరికి స్రీతి నగలంటే.....మదొడ్డప్పుగార్ని ఎరుగన్నాడుకామా. ఆవిడె తన నగలన్నీ విద్యార్థులకు దానంచేసింది. వొడ్డయిల్లాలు. చదువంటే అంత ఆపేక్ష. దానము ధర్మము అంటే ఆమర్దా.....నా కెం దుకు నగలు. అన్నిటికీ మీరే వున్నారు.....వెళ్తాను.”

“ఊ. వెళ్తావా?”

“ఊ.”

“వెళ్లి పోవడమేనా? నీయొక్క మాటలచేత, చేష్టలచేత నా హృదయకుంజంలో ఆనందాన్ని పల్లవింపజేశావు. ఉన్నతభావా లతో ఉత్తేజభరితంగా జేశావు. నా భాగ్యానికి గర్విస్తాను..... ఒక్కమారు.....వెళ్లడమేనా?”.....

జవాబులేదు. ఆమెకళ్లుమాత్రం నవ్వివట్టుగా కనపడ్డాయి. చెయ్యి చాచాను...అందుకుంది. దగ్గరకు తీశాను.....

.....

చెడిరిన మాలతీచెండును, నరిగిన చీరను సరుకుని, త్రవతో తలవంచుకుని, “ఇక వెళ్లవచ్చునా?” అన్నది మెల్లగా. ఏమీ అనలేక నవ్వాను. తనూ నవ్వుతూ చీకట్లో మెరుపుతీగల్లే మెరుస్తూ, తిరిగిచూడకుండా వెళ్లిపోయింది.

క్షణమాత్రమే సంభవించిన సౌఖ్యాన్ని గూర్చి అదృశ్యమైన ఆనందమూర్తినిగూర్చి ఆలోచన నెమరజేస్తూ పడుకోగా, జరిగిన కలహం, జరుగనున్న యుద్ధకాండ తలపుకు వచ్చివై. కలతనిద్దరతో తెల్లవారింది.

* * * *

కాలకృత్యాలు తీర్చుకుని, ఛప్పున దుస్తులు వేసుకుని బయల్దేరాను. క్యాలకుడు ప్రత్యక్షమై “బయటికి వెడ్తున్నావా బావా? ఉండు కాఫీ త్రాగి వెడ్తుగాని.”

“కాఫీ లేదు, నీమేహం లేదు. మాట్లాడకు.”

“ఎందుకు, కోపంగా వున్నావు?”

“కర్మంచేత—” అని ఉత్తరీయం మీదవేసుకుని చర్చన బయటికి బయల్దేరాను. వాకిలిదాకా వెళ్లేసరికి మామగారు ఎదురొచ్చారు. అగాను.

“ఎక్కడికి బయల్దేరావు ప్రాద్దున్నే?”

“బయటికి.”

“ఎందుకు?”

“పనుండి.”

“ఏం పని?”

“వీడైతేనేం?”

“అల్లాగేం? సరే అయితే.....నేను నీతో మాట్లాడాలి.”

“మాట్లాడవచ్చు.”

“నీ న్నొకవిషయం అడగదల్చుకున్నాను, నిష్కర్ష గా.”

“అడగవచ్చు.”

“నిన్న సాయంకాలం నాఆఫీసు డ్రాయరులో నాలుగువం దలరూపాయల నోట్లకట్ట పెట్టాను. రాత్రిమాస్తే కనపడలేదు.”

“అయితే?”

“ఆవిషయం నీకేమన్నా తెలుసా?”

“ఎల్లా తెలుస్తుంది?”

“తెలియదేం?...అంచేతే. నీమీద నాకు అనుమాన ముంది!”

“సరే అయితే?”

“ఏమిటి ఆమెంశితనం...మర్యాద వుండక్కలేనా?”

“సరే.”

“ఆమెంశితనమే వద్దన్నాను. ఇచ్చేసినెయ్యి; డబ్బు.”

“ఇవ్వకపోలే?”

“ఏం చెయ్యాలో అదేచేస్తాను. తాళాకా చూడు.”

“సరే.”

“మర్యాదగా యిచ్చేయ్యి.”

“నిజం చెప్తాను. ఆవిషయం నాకేం తెలియదు. మీఅనుమానం, ఆగ్రహం—అంతా ఆధారంలేనివి. ఎందుకు అనవసరంగా గల్లంతుచేస్తారు?”

“గల్లంతు, గల్లంతుచేస్తున్నావేం? నాలుగువందల రూపాయలు, కష్టపడి చెమటబిడ్చి సంపాదించినవి పోలే నోరునూసుకు ఉండమన్నావేం?”

“అయితే నామీద ఎందుకు అనుమానం?”

“నువ్వతప్ప తక్కురించడానికి మరెవ్వరికి అవకాశం లేదు. నాకళ్లు లేరు. అబ్బాయి ఆటకీ వెళ్లాడు. ఆడవాళ్లు యింట్లో పనిలో వున్నారు. నీగదిలోనుంచి ఆఫీసులోకి ఉన్న ద్వారం తెరిచేవుంది. ఆసమయం కనిపెట్టి చేచిక్కించుకొనివుంటావు.”

“అల్లాగేనని నిశ్చయించుకొన్నారా?”

“ముమ్మాటికి.”

“అయితే సరే. ఏంచేస్తారో అది చెయ్యవచ్చు.”

“సరే, సరే. ఆమెండి ‘సరే’ ఏమిటో తెల్పిస్తాను. దబాయితే సరిపోతుందనుకున్నావేం? ఆపొగరుబోతుతనం వదిలించి, డబ్బు కక్కిస్తాను. కబడ్డార్.”

“సరే.”

“అదే, అదే, ఆజులుబునీళ్లే వదిలిస్తాను.”

“సరే”.....

ప్రాణం విసుగుకెట్టి, ముఖం చిట్టించుకొంటూ గబగబా లోపలికి వెళ్లిపోయాడు. నాత్రోవన నేను అంగడికి నడిచాను.

* * * *

గంటన్నర గడిచింది. బజారు వెళ్లి కార్యం చక్కచెట్టుకొని తిరిగివచ్చాను. వచ్చి గదిలోకి ప్రవేశించగానే రాధ మెల్లగా

వచ్చింది. నాలుగువందలనోట్లకట్ట అందిచ్చి, “పైన యింకా ఆరవై రూపాయలు వున్నాయి.” అన్నాను.

“అని మీదగ్గర వుంచండి. ఇవి నేను ద్రావరులో పెద్దాను చెప్పుకుకాకుండు.” అని సంతోషితస్వాంతంతో నిష్క్రమించింది. మరి ఐదునిమిషాలకు ఆత్తగారు కాఫీ-ఫలహారం పట్టుకొచ్చి నా ప్రక్కన బల్లమీద పెట్టి, గడపడిగి కొంచెం చాటుగా నిల్చుని, “ఎందుకు అంతతొందరగా వెళ్లారు, ప్రొద్దున, కాఫీయైనా త్రాగకుండా?... తీసుకోండి. (అని నేను నిశ్శబ్దంగా వుండడం గమనించి రెండునిమిషాలుండి) మామగారి కేకలకు ఏమీ అనుకోవద్దు. వారి భోరణి ఎప్పుడూ అంతే. ఏళ్లువచ్చినకొద్దీ ఆగ్రహం ఎక్కువవుతోంది.”

“అవును. ప్రొద్దున నాదిగ్గర కొచ్చారు.”

“మీదగ్గరకా? ఎప్పుడు? నాకు తెలియదే.”

“వచ్చారు. వచ్చి రాత్రికాండను గురించి అడిగారు.”

“నిజంగానా నాయనా?... ఆయనకు అదేం పోయేకాలం. నేను అల్లా అడగవద్దన్నానే. అయ్యో యిదేం పాపం!”

“అడిగారు, పోయినవల్లవువయం!”

“అయ్యో, అయ్యో, అపద్ధిష్ట! ఇంటికి పండక్కిని పిలవడం వేమిటి, యీ లేనిపోని మాటలేమిటి!”

ఇంతట్లో నాకిటిమొందర మోటారుకారుచప్పును, ట్రైసికిలు గంటచప్పును. ఎవరో వచ్చారని ఆత్తగారు లోపలికి వెళ్లింది. ఎవరో మామగారికోసంకాబోలు అనుకొని, కాఫీగ్లాసు, న్యూసు పేపరు దిగ్గరకు తీసుకొని, ఈజీచైరులో జార్లగిలాను. ప్రక్కఆఫీసు గదిలో మామగారిది, మరి అయిదారుగురిని గొంతుకలు వినబడ్డాయి. తరువాత క్షణంలో నాగదితలుపుకు అడ్డమున్న తెరచాటునుంచి ‘కార్, కార్’ అని వినబడ్డది.

“ఎవరూ?”

“కార్!”

“ఎవరూ?”

కర్తను తొలగించి, ఎర్రజరీతలపాగా పెట్టుకుని, కాకిపాద్య, పద్మ అలంకరించుకున్న అయ్యంగారు సబ్ యిస్పెక్టరు ఆవరించాడు.

“ఎవరికోసం?”

“మీకోసమే, కార్”

“అయితే రావచ్చు.”

“వస్తాను, కార్, వచ్చేటందుకుదా వచ్చాను.” అని దృఢంగా వచ్చి ఓకర్సీలో ఆసీనుడై, “అయితే కార్, నిండా మంచికార్యం చేయించారే?” అన్నాడు.

“ఎవరికార్యం? నే చేయించడం మేమిటి. అర్థంకావడం లేదు. నే నెరుగున్నంతవరకు యాయొంటో ఎవరి గర్భాధానకార్యం జరగలేదు. మీకు యిచ్చేందుకు ఫలప్రదానం ఏమీలేదు.”

“అంతా జోక్ గా వుందాకార్. అదిదా చెప్తాను. మామగారిది నాలుగువందలు అట్టనే గబక్కిన మాయమైందే. ఘమ్యజోర్ గా వుందా?”

“అయితే ఏంకావాలి యిప్పుడు?” అన్నాను, జరిగిందాన్ని, జరుగుతున్నదాన్ని, జరుగబోయేదాన్ని సమన్వయంచేసుకొని.

“మీరుదా కావాలి కార్. ఈనోరీ వున్నదే, కార్, యీ నోరీ, దానివిషయందా, మీకుమన్నా కొచ్చమైనా తెల్పునా, అందును. ఆ. ఆమ, అదిదా కావాలి కార్.”

“ఊ. కావాలిస్తే?”

“ఎన్నయిదీ. నిండాబ్రబుల్ గా మాట్లాడుతారే కార్. అడిగేదిదానికి నేరుగా సమాధానందా చెప్పుమీ.”

“అంటే, ఆనొంగతనానికి నాకూ ఏమన్నా సంబంధ మున్నదేమోననా ప్రశ్న?”

“ఆ. ఆమ. అదిదా ముఖ్యమూ.”

“ఆవిషయం నాకేం తెలియదు.”

“అదంతా ఇల్లెకార్. మీమామగారుదా నాకు చెప్పినారూ, మీరే తీసివుండేది అని.”

“అయితే ఆయన్నే అడగండి ఆవిషయం.”

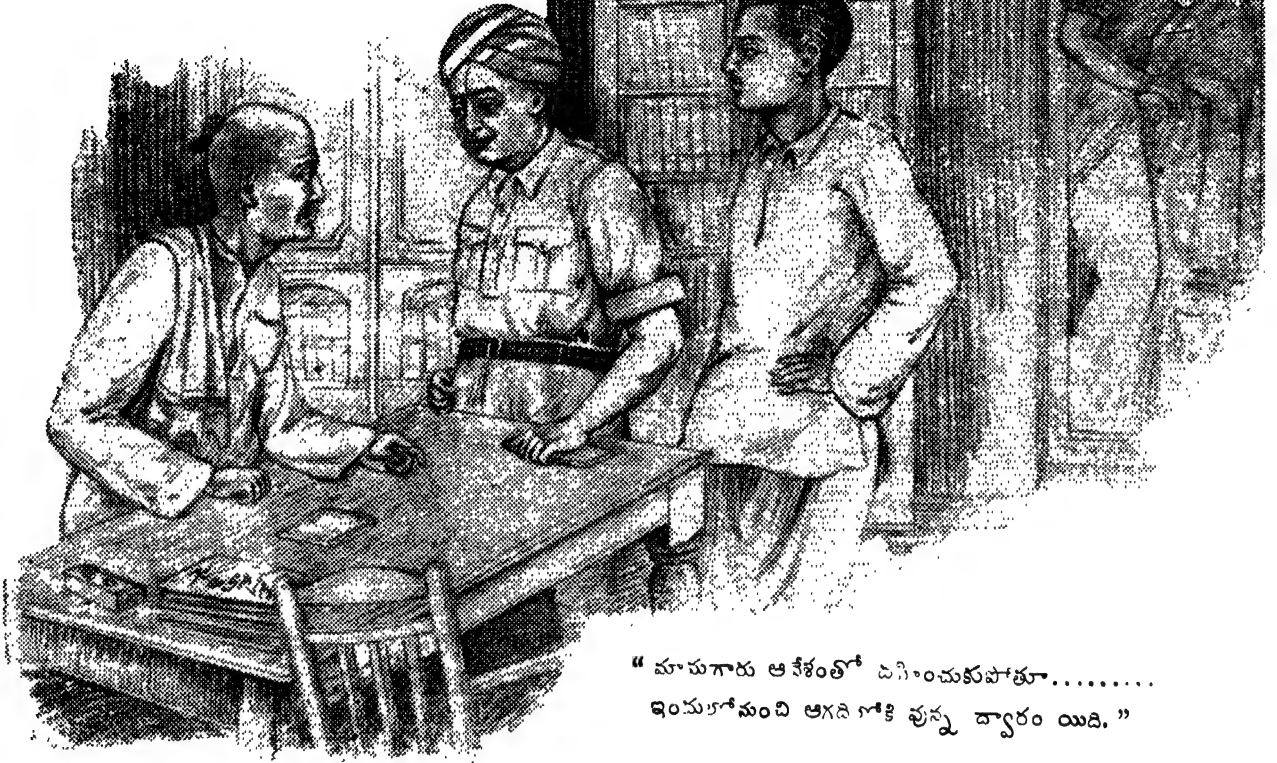
“ఘమ్య. ప్రయోజనమిల్లకబుర్లు యెందుకు కార్. నిజంకా కుయ్యకూడదా? అట్లా దుడ్డుదా ఎత్తితే, నిండా ఆక్వర్డ్ గా లేదా సామీ!”

“నోరుమయ్. సాంబారుకబుర్లు చెప్పక. అనవసరంగా బొల్లు మాటలంటే చెవు రెక్కస్తాను.”

ఇంతలో మామగారు “రండి, ద్రావరు చూపిస్తాను.” అని ఇంజనెక్టరును కేకచేశారు. అతను నన్ను గూడా రమ్మన్నాడు. పోనీ గదా అని వెళ్లాను. అఫీసుగదిలో! పోయేసరికి అఖండమైన దృశ్యం గోచరించింది. వాట్లో ఎర్రతలపాగావాళ్లు విచ్చుబాకులతో డజను మంది. ఈ కలవరమంతా గమనించి మూగిన త్రోవపొయ్యివాళ్లు రెండుడజన్లు. ఆవరణగదిలో కస్టోడియన్ కుమిలిపోతూన్న రాధ, ఆత్తగారు.

మామగారు ఆవేశంతో దహించుకుపోతూ, “ఇదిగో నండీ, యిదీద్రాయరు. తాళంచేతులు యిక్కడ మరిచిపోయినాను. ఇంచులోనుంచి ఆగదిలోకి వున్న ద్వారం యిది. తెరిచే వున్నది. నిన్న సాయంకాలం అదృష్టవశాత్తు నాకర్లండ్ల పెందరాడే వెళ్లిపోయినారు. కాబట్టి నే చెప్పేదేయంటే...”

ఇంతలో యిస్సెప్పర్లు నావంక



చూచి, “ఏమంటారు?” అన్నాడు.

“ఏమిటి అనేసి, అంచులో పెట్టారుకాబోలు. మాయమైంది.”

“మాయమైనా, కార్, తమరు తీస్తేదా మాయమౌతుంది.” అని, మామగారివై వు తిరిగి, “తాళం గట్టిదిగాదా కార్!” అన్నాడు.

“అయ్యో, గట్టిదేనండి. నాలుగులివర్లది. కాని ఏం లాభం? చెవులు బల్లమీదే మరిచిపోయినాగా? ఇదిగో చెరి, దీనితో తీసి వుండాలి.” అని చెరి అంచులో పెట్టి ద్రాయరు లాగాడు. లాగి లాగకముందే “ఆ!” అని అంబోతురంక ఒకటేసి, “ఉన్నది, ఉన్నది” అని వెలివాడల్లే గంతులేశాడు. ఇస్సెప్పర్లు మామగారివర్గరకుపోయి, చేతుల్లో కట్ట పరికించి “ఉన్నాయా, కార్, చాలగమ్యక్తుకుండే, కార్. మాడిపార్టుమెంటుపేరు చెప్పేసరికే అట్లుండాది కార్” అని ఆత్మస్తుతి చేసుకొన్నాడు. మామగారు నోట్లు సరిగా లెక్కపెట్టుకొని, ఉదారహృదయంతో, ఇస్సెప్పర్లకి, బృందానికి వందనసహస్రాలు అర్పించారు. వచ్చి చేసిన ఘనకార్యానికి సంతోషిస్తూ,

“మామగారు ఆవేశంతో దహించుకుపోతూ.....
ఇంచులోనుంచి ఆగదిలోకి వున్న ద్వారం యిది.”

అంతా తనమగి మేనని దృఢంగా నమ్మకూ, నావైపు తిరిగి, “పోదూ, కార్. నిండా బుద్ధికాలిపని తేస్త్రీ. ఒకవేళ తీస్తేకే అనుకో, తిరిగి అట్లా పెట్టివేయవలెదా. నిండా మందినాడవు కార్” అన్నాడు ఇస్సెప్పర్లు. “నోరుమయ్. ఆట్టే వాగకు. ప్రాణంతో నెత్తున్నందుకు సంతోషించు.” అని గిరాలున నాగడిలోకి వచ్చి, నాసామాను సర్దుకోవడం మొదలుపెట్టాను.

ఇంతలో ఎక్కడనుంచో రాధ వచ్చింది. తానుచేసిన ఆలోచన, ప్లాను సెగినవిగదా అనే సంతోషం ముఖంలో తాండవిస్తోంది. కాని నానాదావిడి గమనించి కొంచెం తెల్లబోయి, “ఎందుకు సర్దుకున్నాను?”

“వెళ్లిపోతున్నాను, మాడూరు.”

“వద్దు, వుండండి. వెళ్లద్దు, నాకోసం...”

“వుండను, రాధా. అడ్డుపెట్టకు. ఒక్కనిమిషంగూడా వుండడానికి నాకు ఆస్కారంలేదు. జరిగిన అవమానం చాలు. పెళ్లి అయిన రెండేళ్లకు మొదటిసారి వచ్చినందుకు మీనాన్నగారు దయ

చేసిన పండుగమామూలు చాలు. చాలాసంతోషం. కాని వచ్చినందుకు విచారం ఏమాత్రం లేదు. చాలాసంగతులు క్రొత్తవి తెలుసుకున్నాను. ముఖ్యంగా, నీయొక్క ఆపేక్ష, అనురాగం ఎంత ఉత్తమమైనవో తెలుసుకొన్నాను. నిన్ను యిటువంటివోలు వుంచడం యిష్టంలేదు. వీలైతే సంతృప్తిలో పిలిపించుకుంటాను, నా దగ్గరకు." అని సద్దేశం పూర్తిచేసి, కన్నీళ్లు వదలుకుట్టిస్తూ దీనంగా నిలబడ్డ రాధదగ్గరకు వెళ్లి, "విచారపడదు. మీనాన్న చేసిందానికి నువ్వేమి చేస్తావు? త్వరలో యిద్దరం సుఖంగా వుండాం. నే వెళ్తున్నానని విచారం వద్దు. వెళ్లడమే మంచిది." అని కన్నీళ్లు నీటివి, "మంచిపిల్లవు— బంట్లోతును బండీ తెచ్చుని చెప్పు" అన్నాను. చెప్పినదానినంతా తుణుకులో గ్రహించి, మరుమాట లేకుండా ధస్తుర వెళ్లింది రాధ.

మరి అయిదునిమిషాలకు అత్తగారు వచ్చింది, మామగారి చిర్యకు తూచుపడ చెప్తామని. కాని సామాను సర్దివుండడం గూచి నిర్ఘాంతబోయి, "ఏమిటి?" అన్నది.

"ఏమీలేదు. ఊరికి వెళ్తున్నాను" అన్నాను.

"అయ్యో, అయ్యో! అంతపనే నాయనా! నామీద ఒట్టు. ఈదిన పండుగ. అట్లు వెళ్ల మాడదు. జరిగినంతా మరచిపోవలసింది. మామగారి సంగతి తెలియని దేవునికి. నాకోసం ఉండండి. నా హుట కాస్త వినవచ్చు. మా కింక తలపిస్తున్న తిరగడానికి ఆస్కారం వుండదు. బ్రతిమాలుకుంటాను." అంటూండగా బంట్లోతు బండి వచ్చిందని కబురుచెప్పాడు. "క్షమించాలి, వెళ్తాను. వెళ్లడమే మంచిది. రాధతో యిప్పుడే మాట్లాడి అన్నివిషయాలు చెప్పాను. మీకు సావకాశంగా తెలియజేస్తుంది" అని, మాట్లాడానికి అవిడెకు యిక అవకాశ మివ్వకుండా బయటైరాను. బంట్లోతు సామాను కేర వేళాడు బండిలోకి. క్యాలకును యింట్లో లేడు. మామగారు పోలీసుదళాన్ని సాగనంపడానికి అచ్చేరీదాకా వెళ్లాడు కృతజ్ఞతా నూచకంగా. బిక్కిమొహాంతో అత్తగారు, ఆమెచాలున రాధ వాకిలిదాకా వచ్చారు. అత్తగారికి తిరిగి నమస్కరించి, రాధవైపు చూచి, "వెళ్తాను. సంతోషంగా వుండు." అన్నాను.

"ఉత్తరాలు వ్రాయండి" అన్నది మెల్లగా.

"అలాగే వ్రాస్తాను. బాగా చదువుకో" అని బండి ఎక్కి కదిలాను.

పూర్వం, బృందారణ్యసీమను, పరిసరాలను తన మృదుమధుర గానామృతంతో పునీతంచేసి, నదీనదముల్నీ, తారాగణముల్నీ రస ధారల తానమాడించి, తాండవించజేసిన నవనీరదళ్యామని, మదన మోహనుని, మురళీకృష్ణుని ఉత్సాహపరచి, ఉత్తేజితునిగా జేసిన ఆనందామృతనూర్తి రాధాదేవియే, అదృష్టవశాత్తు నారాధగా పున రుచ్ఛించినదా - ధవళచంద్రికాతుల్యమున మందహాసంతో, ఉపకాంతిసమన్వితమున విశాలనేత్రకోచిస్సుతో, తంత్రీస్వరభూయిష్ట

వాగ్విలాసంతో?... అనే లావణ్యభావసముద్రశేనమాలికాడోలి కలలో ఉయ్యెలబాగుతూ రైలుప్రయాణము పూర్తిజేశాను.

* * * *

ఇంటికి వచ్చానన్నమాటేగాని మనశ్శాంతి ఏమాత్రం లేదు. జరిగిన ఉదంతమంతా మొదటినుంచి చివరదాకా తలచుకుంటే గొప్ప ఇతిహాసరూపం దాల్చింది. లోపల్నుంచి రోషానలం ఆగ్ని పర్వతంలాగ మంకిపోవడం. ఇట్లా వుండగా, మర్నాడు ఉదయం, ఏనన్నా గ్రంథకాలక్షేపంతోనైనా శమను పొందుదామని ఆర్మాలు దగ్గరకు పోయి, ఒక్కొక్కటి దొర్లించి ఆస్థియంగా, పింగళి మాడ్చరగారి "సంక్రాంతి" పుచ్చుకొన్నాను. చదువుతూండగా కంటబడ్డది:

"అన్ని పండువులను ముఖ్య మిదిగాన
నత్తవారింటి కేసు మోక్రాత్త పెండ్లి
కొమరుడా! యందు నీకు నెక్కుడు సుఖము
ముద్దుమొదలు నీతోటి ముచ్చటాడు,
వదిలె నీతోడ నూటికి వరుసలాడు,
.....
.....

ఊరివారలు ని న్నతిగారవమున
మన్ననలు సల్పుదురు, నీదు మామమాడ
నడుగులకు భృత్యుడై మడుగులాత్తు(?)
నత్తవారింటి కేసినావయ్య నీవు!

మన్యగనిచేత భగ్నుపరుపబడ్డ తపోనిస్థాగరిష్ఠును శివుని మాడ్చడా అంత ఉద్యేగం పుట్టియుండదు. తోకత్రొక్కబడిన తాచల్లే, హరనేత్రజ్వాలలను మించిన ఉష్ణంగల బుస్సలు కొద్దూ స్వగతం ప్రారంభించాను:

"ఏమిటి, ఏమిటి అప్రభంశం వ్రాతలు! చేతకాకపోతే ఊర్లోవారి. మానవస్వభావసాగరాన్ని కూలంకషంగా మథించి వెలికితెచ్చిన ఆమృతభాండంలాగ ప్రదర్శించారు. హాలాహలమని గ్రహించాలి గ్రంథకర్తలు. వ్రాసిన యిర్వురికవులకి వారివారి అత్త వారింట అనుభవాలు అంతే అయితే కావచ్చు కాని అందరికీ అంతే అవుతుంది—తప్పకుండా అత్తవారింటికి వెళ్లండి అని ఉద్యోగవంతులకు చెయ్యడం? అదే రాజకీయమేలే ౧౮౮౭ ఎ. కెక్స్ ను పని జేసేది. కాని సారస్వతసామ్రాజ్యానికి నాధుడు లేకపోవడంచేత... వారి అనుభవమే అదికనుక అయితే "అయ్యో, మాఅదృష్టంవల్ల మాకు యిట్లా జరిగింది. మియిష్టం. మిజాతకాల్లో ఎల్లా వుంటే అట్లా జరుగుతుంది. మమ్మల్నీ నమ్మకొనిమాత్రం వెళ్లద్దు." అని సవినయంగా విన్నవించుకోవలసింది. నా ఒక్కని విషయమే చెప్పడంలేదు. ఎంతమంది అల్లుళ్ళి—అత్తవారికి—సఖ్యత వుంది లోకంలో? అత్తవారింటి మర్యాదలతో, ఆదరణలతో, ప్రవర్తన

లతో తప్పుపట్టుకొని, విసుగుపడి, విరక్తిపొందని అల్లుళ్లు ఎంత మందివున్నారు లోకంలో? తుదకు ఇల్లరికం వెల్లిన అల్లుళ్లలో మాత్రం అత్తవారిని దుష్కృతిపాత్యునివాళ్లు ఎవరున్నారు? భోజనం సరిగా లేదనో, ఫలహారాలు సరిగా అమరలేదనో, బట్టలు నవరుతాళలేదనో, చదువుకు డబ్బుయివ్వలేదనో, ఆస్తివ్రాసి కట్టబెట్ట లేదనో, ప్రతిఅల్లుడికీ ఏదో ఒక కంప్లెయింటు వుంటుంది. ఉండక పోతే శిశువైన అల్లుడు కాదన్న మాట. ముమ్మాటికీ కాదు!

ఇంత వివిధప్రకృతిగల సమస్యలు పదిపంక్తుల్లో క్లుప్తంగా, సున్నితంగా, తియ్యగా, లిఖిస్తే, ఏమిటి యీ జంటకవుల ధైర్యం? షేక్స్పియరులో వుండే గొప్పతనం ఏమిటి?— విశాలత్వం! ఎవరికీ ఏసమస్యకు సమాధానం కావలసినా అతని రచనల్లో ఉన్నాయి. అపారము! అట్టి ఉత్తమలక్షణాలు ఏమీ చూపెట్టకుండా, గీతాలు వ్రాస్తే—రామలింగారెడ్డిగారిపేరికవుంటేమాత్రం—ఎట్లా సర్వజనాదరణం అవుతాయి. అవకపోవడమే కాకుండా, అపచారంపూడాను. కాబట్టి యీకవులు రావోయే ముద్రణములోనైనా తప్పకుండా మార్చివ్రాయాలి. ఈలోపున కంటపడితే వారిపని ఉండనేవుంది! “నీదుమామగూడ నడుగులకు నీకు భృత్యుడై మడుగులాత్తు”నట!— విన్నారా? మామామగారుమాత్రం మామగారా! పండగ మామూలు!” అని ఏమిటో వెలిగోరణిలోపడి మహాబాధ పడ్డాండగా పోస్తువాడు పిల్చి ఉత్తరం యిచ్చాడు. విప్పి చూచాను. రాధ దగ్గరనుంచి నేబయిదేరిన మరిరెండుగంటలకే వ్రాసింది.

“నమస్కారములు—

నిన్న మీరు వెల్లిన మరిగంటకు మానాన్నగారు యింటికివచ్చి మీరు వెల్లారని తెలిసిగూడా ఎటువంటిచింతా కనుపర్చలేదు. డబ్బు దొరికిందిగదా అని ఒక్కటే సంతోషం. తర్వాత, కోర్టువేళకి, స్నానంచేయడానికి లేచి, తువ్వలు తీసుకోడానికిపోయి, పారబాటున మాఅన్నయ్యపైతై తెరిచారు. అందులో బట్టలమధ్య జేబు రుమాలు పొట్లం ఒకటి కనిపించగా అనుమానంతో విప్పిచూచారు. నాలుగువందలరూపాయలకట్టా మడతపెట్టివున్నది. కవున కేకవేసి మా అమ్మదగ్గర కొచ్చి, “అబ్బాయిపెట్టెలో దొరికింది చూశావా!” అన్నారు. మాఅమ్మకు ఎక్కడలేని రోషం, కోపం వచ్చి, ఆయన్ని నానామాటలూ అన్నది. తను మీమీద అన్యాయంగా చేసిన నిందారోపణకి, అన్నమాటలకు కించిత్తు పశ్చాత్తాపమన్నా కనుపర్చకుండా, మానాన్నగారు, “అబ్బాయి ఓవేళ

తమాషాకు దాచాడేమో! వాడి కింతవరకూ చెడ్డబుద్ధులు లేవు.” అంటూండగా, అన్నయ్య పరుగెత్తుకుంటూ వచ్చి, “అవునునాన్నా, తాళచెవులు యథాలోపంగా పెట్టినందుకు తమాషాచేద్దామని, దాచాను.” అని ఆయన్ను కాగిరించుకొన్నాడు. మాఅమ్మ మండి పడ్డా, “బెసా! కడుపున చెడబుట్టావు. తమాషాకు దాచావా? ఇంతకాండ జరుగుతూండగా దొంగను తేలుకుట్టినట్టు పూర్కొన్నావు. ఇంటిదొంగను ఈశ్వరుడేనా పట్టలేడు. ఎంతఅపద్ధిష్ట! అల్ల కల్లోలం! అల్లుడిమీద అనవసరంగా దొంగతనం కట్టారమ్మాఅని బ్రతికున్నవాళ్లు కాళ్ళతండా వుంటుంది. దిరిద్రంచెడవా” అని చేతుల్లో వున్న గరిటె విరిచేసింది. విధివశాత్తు తప్పింది. ఇక అక్కడ వుంటే తనకు, పిల్లవాడికి మర్యాద ఓక్కదనికాబోలు మానాన్నగారు స్నానానికి వెళ్లి, అన్నయ్యనుగూడ అక్కడనుంచి పంపేశారు. ఆయన వెల్లినతర్వాత ఆమెతో రహస్యంగా నేచేసిన సాహసం చెప్పాను. మొదలు కొంత గాబరాపడ్డదిగాని, సమయానికి తెలివిగా చేసినందుకు సంతోషించి “అవునో, అమ్మా, మంచిపని జేశావు. ఆడబ్బు అప్పుకు ద్రావరులో కన్నడకపోతే, ఆయన్ను పోలీసుకు వప్పచెప్పేవారే మీనాయన. మంచిపనిజేశావు! నాకు ఆలోచన తోచనేలేదు...ఆడబ్బు తీసుకుని మీనాన్నగారిదగ్గర నుంచి, వడ్డాణం తిరిగి చేయిస్తానులే. మీఆయనదగ్గర మిగిలిన అరవై రూపాయలతో బట్టలుగాని, ఆయనకు యిష్టమైనది మరేమన్నగాని కొనుక్కోమని వ్రాయి. తప్పకుండా—” అని నన్ను బుజ్జగించింది. కాబట్టి మీరు జరిగినదంతా మరచిపోయి ఆసామ్మ పెట్టి మీకు యిష్టమొచ్చింది పండుగపెజంటుగా కొనుక్కోండి. ఏం నిశ్చయించుకుంది వ్రాస్తే సంతోషిస్తాను. మీరు సుఖంగా ప్రయాణంజేసి యిల్లుజేరారుఅని తలుస్తాను. మళ్ళీ వారంలో కాకితివెల్లి ఆరునెలల దాకా రారుకాబోలు. తేమసమాచారం అప్పుడప్పుడు తెలియ జేయండి, దయయ్యంది.

—రాధ.”

ఉత్తరం ఒకటి—రెండు—మూడుమార్లు చదువుకొని డైరీ తెరిచి రాధఫోటోకి పక్కగా పెట్టాను. డైరీ మనిషిహృదయం మోస్తరు. ఎన్నిరహస్యాలు, ఎన్నిరహాసందేశాలు, ఎన్నిఫోటోలు, ఎన్నిపూరెమ్మలు—గుప్తంగా కాపాడుతుంది.

ఇక ఉంటాను.

శోభనములబావి

నేలపైఁ దెట్టెలై తేలిన యాంధ్రరక్తపుసారమే జలధారగాఁగ
కాకతీయుల దానగతజలపూరమే యుడివోక పొంగు క్రిమ్యాటగాఁగ
కాకతమ్మ రసార్ద్రకరుణాకటాక్షవీక్షణములే భంగసంగతులుగాఁగ
మహితరాణ్యందిర మణిగణచ్ఛాయలు నిరతసంధ్యారాగగరిమగాఁగ
ఆంధ్రసామ్రాజ్యకలితకల్యాణవేది - నమ్మతవర్షంబుఁ గురిసి, మహాప్రతాప
రుద్రసట్టాభిషేకాంబురుచిరమైన - శోభనంబుల బావి; నిజ స్తుతియొనర్తు.

గణపతిరాజు తిక్కకవికాంతుపదంబుల నే జలంబుతోఁ
బ్రణయియొనర్చి ము న్నడిగె, భారతి మంజులకాన్యనాకపైఁ
బ్రణయవిహారముల్ సలిపె భావ మెలర్పఁగ నెందు, నమ్మహా
మణిరుచిరంబు, కూపము, క్షమాసదృశంబయి రూపుమాయునే.

ప్రత్యహర్ముఖమున బ్రాహ్మణబృందంబు సాహిత్యగోష్ఠుల సల్పె నెందు
శ్రీ స్వయంభూదేవ శీర్షస్థితాంశు పీయూషధారలు ప్రిదిలె నెందు
యాదవాదుల గెల్చి యలనాఁడు రుద్రాంబ ఖడ్గరక్తంబును గడిగె నెందు
కవిరాజకంఠస్థకల్పారమాలికాగంధంబు జలములఁ గలిసె నెందు
ఆమహాకూపరాజమా ! ఆంధ్రభూప-మకుటమణిగణశోభాసమానచంద్ర
కాంత పాపాణసోపానకలిత మైన-శోభనంబుల బావి, నిజ జూచి వగతు !

రాజపురంధ్రు లెచ్చట నిరంతరమున్ జలకంబు లాడిరో
రాజకళాధరుండు గిరిరాజకుమారి; ప్రతాపరుద్రరా
ఢ్యోజితనాకపైఁ దిరుగుచుండిరొ యెచ్చట; తన్మహాజల
భ్రాజితకూప మీప్రకృతివక్త్రగతంబయి సాంపుమాయునే.

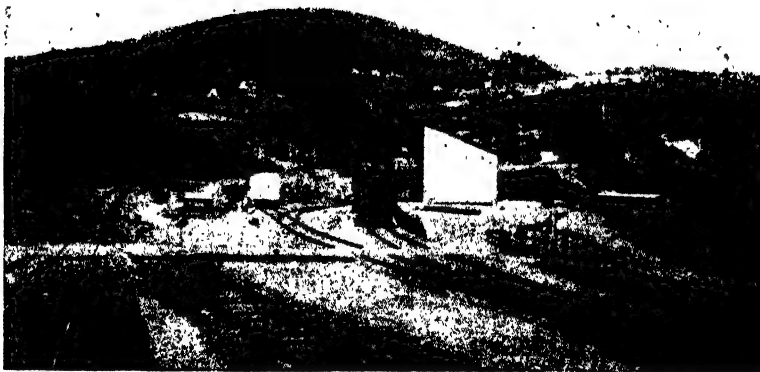
పనితనమందు నేర్పుగల ప్రాజ్ఞులు శిల్పులు ముప్పదేండ్లైన
ర్చినకృషి కాకతీయనృపశేఖరలక్ష్మికి నాటపట్టు, మా
తెనుఁగుతనంపుఁబాటవము దెల్పు మనోహరమైన చిన్న, శో
భనముల బావి మేలిమిసాబం గణగారుట చింతగూర్పదే. (?)

కలహంసాదివిహంగసంవృతమునై కల్లారపద్మాదిగం
ధిలవాఘూరితమై నృపాలతరుణీ దీప్యతనూసాంకవా

కలితంబైన మనోజ్ఞకూషమునకా, కాకత్యభూపాలని
ర్మలశిల్పంబునకా, అవాచ్య కలుషప్రారంభ సంరంభముల్ !

శిథిలముల్ దిలకించి శిల్పవిన్యాసంబు లరయుకోరిక మున్నె యంతరించె
ప్రభుపదాంకితములౌ పాషాణములపయి కను లద్దుకొనువాంఛ గంగంగలసె
జాతీయచిహ్నముల్ చారిత్రగతము గావించు రౌచికుల ధీ సంచలించె
అన్యజనాసాధ్యమగు నాంధ్రశిల్పంబు నరయువేడుక మదియందె యణగె
కాలగతిచే బ్రతాపభూపాలరాజ్య - మంతరించినయందుకుఁ శింతలేదు
నాటి కీర్త్యంకముల పరిపాటి దలచి - నగతుఁ గన్నీరు పొంగి కాల్వలయి పార.

కాకతీయుల భోగభాగ్యముల నరిసి - సమ్మదాశ్రులు విడిచిన జనుల నెఱిగి
శిథిలకూషంబునకు నశ్రుసేననంబు - నాచరింతువుగాని ర మ్మాంధ్రపుత్ర !



ఉదకమండలము రైలుస్టేషను

— యస్. మినాక్షి సుందరము.





1. వీరభద్రస్వామిమండలి, బందరు. 2. కోయంబత్తూరు వ్యవసాయశాఖ ఆంధ్రవిద్యార్థిసంఘము.

సంసారి

కీ. శే. పండిత జంధ్యాల శివన్నశాస్త్రి

ఘన కష్ట నష్ట నక్రగ్రాహ సందోహ ఘోరభీకరము సంసారజలధి
శశ్వదాయాస్యద్విసశ్వరద్విపదూర్మివారపూరితము సంసారజలధి
మహితశుభాభాసమానకార్యానేక జాలవేల్లితము సంసారజలధి
ఉత్తమర్లద్విషదుపలగర్తముహుర్ముహూరోధకమ్ము సంసారజలధి
సారసీనమ్ము నిట్టి సంసారజలధి - దాటఁజేయఁగ హరిపదధ్యాన మనెడు
నౌకయే యింక లభ్యమ్ము గాకయున్న - నబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమ్మె !

తల్లిదండ్రులు యప్పచెల్లెండ్ర మాటల నాదరింపంగ నిల్లాలు కినియు
నిల్లాలిమాటల నెల్లఁ బాటించంగ సతిమాటఁ జవదాటఁజాలఁ డండ్రు
ఉభయలకును న్యాయమూని చెప్పంగ నుభయలకోపమునకుఁ బ్రాత్రుఁ డగును
వారల కోపమ్ముబాటించకున్న గృహమునఁ గల్లోలమ్ము లతిశయిల్లు
ఇరుగుపొరుగున నుండువారెల్ల కడిఁది - చులకజూచుచునుండ్రు రచ్చలను వాని
మాటపాటించుకొండ్రు సమ్మాన ముండ - నబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమ్మె !

నిన్ననో మొన్ననో తన్నుఁ గూడెనో లేదో పెండ్లమన్నను నింతప్రీతి యేల
ఎల్లకష్టముల సహించి తన్గొంచిన తల్లియన్నను పెద్ద దయ్య మేల
పెండ్లిపేరంటముల్ ప్రీతిఁ జేసిన తన జనకుఁ డన్నను గర్భశత్రు వేల
ఏకగర్భమున జనించిన సోదరిసోదరులనఁగ నసూయ యేల
ననుచు పరిపరిగతుల నిందను బొనర్చు - లాతివారల పలుకు లెల్లను వినుచును
బ్రతుకవలయును జీవచ్ఛవంబుబోలె - నబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమ్మె !

గడగడవడఁకుచు నడుగుకు మడుగుల నెంతయొత్తిన లాభ మేమి యుండు
పెంచి పెద్దలఁజేయు పితరులగూడ వదలివచ్చెనని సుంత దలఁపవలదె
తనజీవితంబునంతయు నాత్మవశముచేసెనని యొక్కింత యోజింపవలదె
తల్లియుఁ దండ్రులు దైవమ్ము గురుఁడును తానె యంచును గృప నూనవలదె
అకటకట యేటిమాట లీయవి నెలంత-లెట్టిరేనియు మగవారి కెందు పితలె
యెక్కు - వను సతిమాట లాలించు తెట్టు - లబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమ్మె !

కవియైనచో వాని కవనమెల్లను పాడు, ధనియైనచో వానిధనము పాడు
మానవంతుండైన వాని మానము పాడు, బలియైనచో వాని బలము పాడు
శౌచియా నెడ వాని శౌచమెల్లను పాడు, నియమియానెడ వాని నియతి పాడు
ఉద్యోగియైనచో నుద్యోగ మగు పాడు, ధీశాలియైన బుద్ధి యగు పాడు
దైవభక్తుండ యగునేని దైవభక్తి-యెల్ల పాడుగు భవి కిల నలఘుదుఃఖ
మొక్కటియదక్క మిగిలిన దొండుగలదె-యబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమౌ!

గమ్యాభియానెడఁ గాఁపురంబగు భగ్న మని విచారంబు నాత్మనువహించు
సౌందర్యవతియేని జారు లెవ్వారేని యాసీంతురో యని గాసిఁ జెందు
రూపసంపద కర మేపారకున్న నా యింతిసంగతి కేవగించు మదిని
విదుషియానెడ తనపేగుప్రతిఫల కేలోపమో యని యెదను గుండు
సంధ్య యగునేని శరితాపభరితుఁ డగును - వత్స ద్విప్రసూతయై వటలెనేని
యష్టకష్టంబులకుఁ బాత్రుఁ డగుచునుండు - నబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమౌ!

పెణ్ణియైనదిమొదల్ పెండ్ల మెప్పుడు స్వగృహమున కేతెంచునోయని తపించు
వచ్చినదాదిగ నెచ్చెలికిని నింటివారికిఁ బడమికి వంతఁజెందు
దైవయోగమ్మునఁ దద్బాధలేకున్న సంతతికయి కొంత చింతఁజెందు
నదియునుఁ జేకూలు నదిమొదల్ తదపత్యరోగాదులకు మదిరోయుఁ గడిది
గడచెనేనియు నట్టిరోగంబు లెల్ల - పిదప వారలఁ బోషింప వివిధకష్ట
ములను బొందఁగవలె నెల్ల భవులుఁదిరిగి - యబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగవశమౌ!

సౌరుగువారలఁ జూపి భూషణమ్ములను జేయింపుఁడంచును నేడిపించుఁ గాంత
తాము జూచిన వస్తువతి నెల్ల కొనిపెట్టుఁడంచు సంతతి నిరోధించుచుండు
నర్పించుఁ డెల్లద్రవ్యంబును నడ్డితో ననుచు బాధించెద రహ్మవారు
అనయమ్ము గిల్లి కయ్యమునకై కాలుద్రవ్యుచునుండు రాయింటిపొరుగువారు
లజ్జ విడనాడి యిద్ది కాలమ్ముకాదు - పొండు పైసయు లేదని మ్రొక్కువటకు
వీడకయ యర్థజనములు వేచుచుండు - రబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమౌ!

మానినీమణిమోవితేనెఁ గ్రోలఁగవచ్చు పిల్లపాపల ముద్దుపెట్టవచ్చు
సుదతి యొనర్చు శుశ్రూష లొందఁగవచ్చు సజ్జనులకు నేవ నలుపవచ్చు
పితృదేవతలకునుఁ బ్రీతిఁ గూర్పఁగవచ్చు బంధువులనుఁ జాలఁ బడయవచ్చు
యజ్ఞయాగాదుల నాచరింపఁగవచ్చు అతులసౌఖ్యంబుల నందవచ్చు
అగ్ని హోత్రాదికంబుల ననవరతము - జేయఁగావచ్చు నంచు నాసించి సుఖము
పడుచునుండురుగాని ఈభవజలధిని-అబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమౌ!

తననోటవచ్చుపల్కును లక్ష్యపెట్టకే కాంత సారెకుఁ దన్నుఁ గనరికొట్టు
తమతండ్రి వట్టిమూఢమతియంచును గన్న సంతానమేని విశ్వాసముంచ

దిగ్గుపొద్దుననున్న యెల్లవారలు తన్ను చుల్కనగాఁ జేసి పల్కుచుండ్రు
గ్రామస్థులును శుభకార్యములందు తా బెద్దజేయుచు గారవింపకుండ్రు
ప్రియమెలర్పఁగ దన్నాదరింపకుండ్రు - బంధుజనములు తా ద్రవ్యవంతుఁడేని
యురుతపోద్యోగియేని గాకున్న నింక - నబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమై!

ఇల్లు గుల్లగఁజేసి యెంతఁ గూర్చినఁగాని యల్లునిఁ దృప్తుఁ జేయంగవశమై
కూతులకన్న నెక్కువప్రేమఁ జూచిన గోడండ్రకుం దృష్టిఁ గూర్చగలమై
ఎంతప్రీతిగఁ జూచెనేనియు సతికి జన్మగృహవాసముకాంక్ష మాన్పగలమై
గొప్పవిందుల నెన్ని కుడువఁబెట్టిన బంధుగుల దెప్పలను దప్పకొనఁగఁగలమై
ఘనమనోవ్యాధు లెన్ని యిక్కట్లు లెన్ని - కపటవేషంబు లెన్ని సంకటము లెన్ని
మహిని సంసార మనఁగను మాటలొక్కొ-యబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగవశమై!

జాయ జాణియైన పండుఁడంచును బల్కువారిమాటలు రద్దుపరచుటెట్లు
తల్లి పాంసులయైన తండ్రి నీ కెవఁడు వచింపుమం చన నేమి చెప్పవలయు
భగిని స్వైరిణియైన భావుకులే నీకు వీ రెల్ల రనఁగ జీవించుటెట్లు
తనహరు భూణహత్య నొనర్చువా రుండిరే న్భురంబునఁ జరియించుటెట్లు
చోరులగుచు నాత్మయు లెవ్వారుగాని - అల్ల గోదావరీన్నాన మాచరించి
యేఁగుదెంచెయేఁ దలయెత్తు టెట్లు - లబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమై!

ఎల్లవిద్వేలఁ బరియించి శిష్యుం డల్ల యాచార్యుతో గ్రుద్దులాడినట్లు
రోగముల్ పోయి యారోగ్యవంతుండగువాఁడు వైద్యునితోడ వదరినట్లు
నావ నారోపించి యావలిదరి కేఁగి పోతవాహునితోడ బోరినట్లు
పడతి పజ్జకుఁజేటుపడవడిఁ దనుఁగన్న తల్లిదండ్రులమాట నొల్లనట్లు
తమకు సంతతిగల్గునందాఁక సతులు - కడిది శుశ్రూషఁజేతురు గాంత్తు ప్రీతి
నాపదంపడి మోమెత్తియైనఁజూడ - రబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమై!

ఇంటనుండినఁ దన యిల్లాలు బెల్లమ్ము నల్లమ్ము లేదని వల్లెపెట్టు
పణ్యవీధికి నేఁగ బచ్చులు పద్దుల రద్దుజేయుఁ డటంచు రద్దెజేతు
రేపాలంబున కేని యేఁగినఁ బాలికాపులు జీతమిమ్ముని పలుకుచుందు
రేఁకూరికేని పోయిన బుణదాతలు విత్తమియుఁ డటంచు పెంటఁబడుదు
రింక నుదకాగ్నులంబడియేని వినము - ద్రావియేని ప్రాణముల్ తరలుద మన
నాత్మహత్యయ న్దోషంబు ప్రాప్త మగును - నబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమై!

సుతలనే భయపెట్టఁజూడ మే మెటులైన నన్యులమే కదా యండ్రు వారు
కోడండ్రనే కనర్కొనఁగ మే మొకరి బిడ్డలముగదా యంచు పలుకుచుండ్రు
యింటికిఁ బెద్దయెయుంట వైరమ్ము మాన్పకయున్న జననిండఁ బడయనగునే
న్నుపలకు సుతల కన్యోన్యవైరము వైజ మగుట మాన్పంగ శక్యంబుగాదు

ఈచరాచరజగముల నెల్లఁజేయు - ధాతయేనియు సందఱిఁ దన్వఁగలఁడె
యింక నరమాత్రునకు శక్య మెట్టులగును - అబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమౌ!

కుండపోయెను వంటవండు తెట్టుల నింక ననిదోడ్చు సతిశల్కు వినుటయెట్లు
బొరుగులో యనుపదంబును విన్నమాత్రన బుడుశల చెవులను మూయు తెట్లు
రాకరా కొక్కపర్యాయ మేనాఁడొ యేతెంచు బంధుగులఁ బంపించు తెట్లు
చలికాలమందు బట్టలు లేక పిల్లలగ్రాతంబు చలిమంటఁ గ్రాచుతెట్లు
స్వస్థసారంబు నిట్టి సంసారమునకుఁ - దోడు దారిద్ర్యముంఁగూడ గూడియున్న
నింక జీవించు తెట్లు మహిళలమున - నబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమౌ!

తానన్నఁ జాలపెద్దగఁ జూచువారలు తనయింటి కేతెంచఁ దన్నుననియు
ఈతఁడన్ననుఁ బెండ్లమేని మన్నిండు భీయని జనులు భాషింతురనియు
చెలికాండ్రతోడ భుజించుకాలమ్మున గరితెతో తననెత్తి జరచుననియు
ఈవెతో పెండ్లిండ్ల కేగిన నెటకేని పదిమందిలోఁ దన్నుఁ బాదుననియు
వదలిపెట్టిన నిందిత్రు భార్యనేల - వీఁ డశక్తుఁ డంచును జనుల్, వేయియేల
గడుసుపెండ్లము భూనరకంబునుండి - యబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమౌ!

వావదూకుండైన వాచాలుఁ డందురు వాచయమిని మూగవాఁ డటండ్రు
అగణితసాహసుఁ బాగరుబో తందురు స్వపథగామిని వట్టిపంద యండ్రు
సత్యభాషణుని దూషణశీలుఁ డందు రుపేక్షాస్వభావు గూబిగ వచిత్రు
శాస్త్రానుసారిని ఛాందసుఁ డందురు స్వేచ్ఛాచరుఁ తుంటవిధవ యండ్రు
లోభియండ్రు మితన్యయుఁ, లోలుఁడండ్రు-చూచినవియెల్లఁ గొనువాని, క్షోణినేలుల
నున్నవంకలు నింక నొందకుండురొక్కొ - యబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమౌ!

కప్పువీడిగఁ దినఁగల్గువారికి జొన్నయన్నమైనను సంబలైన నుండ
దర్థంసుల నోలలాడువారలకు కారపుమెతుకులును జీర్ణములుగావు
లేదనుపదముఁ బల్కిన దోషమనువారియొద్ద దమ్మిడియైన నుండఁబోదు
మెతుకుపోయిన నింక బ్రతుకుపోయెడు ననువారి భాగ్యమునకు మేరలేదు
ఇట్టి విపరీతముగ సృజించినట్టి - యల్ల చతురాస్యున కొకింతయైన మేధ
యుండునే సల్పునొక్కొ లేకున్న నిట్లు - అబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమౌ!

అనుకూలవతిని భార్యగఁ గాంచఁగావలె పాడిపంటల వృద్ధి బడయవలెను
తనయాజ్ఞ మీఱని తనయులఁ గనవలె వారికాంతలు నట్టివారె వలెను
రోగమన్మాట నెఱుంగకుండఁగవలె నెద నవిచారము గదియవలెను
సంతతి మృతినిగాంచకయుండఁగావలె సంచితకీర్తి నార్జించవలెను
తగులవలయును ధర్మార్థ తత్త్వబుద్ధి - నున్నచో నిన్నియున్ సుఖ ముండుఁ గాని
యిందు కొన్నింటినేనియు నొందకున్న - నబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమౌ!

పుత్రులకొఱకునై మొగమువాచినవారి భార్యలు వంధ్యులై పరగుచుండు
ప్రోవంగలేక మొట్టో వద్దవద్దను నరులకేటట సంతతి గడింది
సరసాగ్రగణ్యుడౌ జనునకు నిలభార్య యెడ్డిమానిసి యయి యెసగుచుండు
మూర్ఖమూర్ఖుడౌ పురుషున కిల్లాలు నెఱజాణయై కరం బరిదిఁ గూర్చు
ఒకటియుండిన యుండ దింకొకటి లేక - రెండు సున్నయ, యుండిన రెండు సెనను
రూపముగ నుండు నీభనకూపమందు - అబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమై!

కనడనలజ్జల గని ఫలమనుభ్రాంతిపడి శలభం బందు పడినభంగి
ఘనపిపాసార్తుడై కాంచి మరీచికల్ జలమంచు రయమునఁ జనినయట్లు
కాలసర్పంబును గాంచి దండం బని యెంచి హస్తమున గ్రహించినట్లు
గురుగురుద్రోహియా నగున కెఱుంగక విద్య యన్తన్న మర్పించినట్లు
సౌఖ్యసారముగలది సంసారమనుచు - మోహితాత్ములై భవవార్ధి మునిఁగి తమ య
నర్వ్యజీవిత మెల్లను న్యయముజేతు - రబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమై!

గాలిపీచుట పయికప్పడెల్లను లేచె వానచేఁ గాల్వలు వాతె నిట
ఆకలి కోర్వలేమని యేడ్చుచును బసికాయలు గుండెఁ బగుల్చుచుండు
కనునెల దాపరించిన తనయిల్లాలు ప్రసవంపువేదన పడుచునుండ
కోడలిపురిటికై కూడవెట్టిన యాముదముకుండ పగులుటఁ దల్లి యేడ్చు
కానిడబ్బును కంటికి గానకుంట - నేమిసేయఁగఁ దోచక యేడ్చుచుండ
తాను నొకమూలఁ గూర్చొని, ధాతకైన - నబ్బ! సంసారిపా ట్లారయఁగ వశమై!



ప్రకృతినటన

జి. జామన

మి

టమిట యెండ గాచినది, మేదిని పీటలువాటిపోవ, నం

తట సుడిగాలి రేగి, వసుధారజము గలగించి రేచె, బి

మ్మట నినమండలంబు తెలిమబ్బుల దాగుడుమూతలాడె, నా

దట, గలులున్న కొండలవిధంబున బేరెములెత్తె మేఘముల్.

ఉలుములు మెలుములు గల యొక - శరదము గగనమున మసలి క్షణకాలమునక
గురిసెం బ్రచండవర్షము - నిరులు గవియ మీన్నుమన్ను నేకమగుక్రియక.

మగడు దిట్టిన రోదించి మానుకొన్న - పెద్దగయ్యాలివలె వాన వెలిసిపోయె
మమత లుడిగిన సన్న్యాసిమనసువోలె - గగనమండలంబెల్ల నిష్కలుపమయ్యె.

ఆకటం దూలు సన్యశ్యామలక్షేత్ర కన్యగర్భము చల్లగా భజించె
బక్కచిక్కినకొండవాగు దటాకంబు సిరివచ్చి చిటుకలో జియ్యబట్టె
ముమ్మాయిముత్యంబువోలి తామరమీద వర్షబిందువు తాండవంబుసేసె
నడయాడు రితనంబువడువున నాడాడ నారుద్రపుర్వు బ్రత్యక్షమయ్యె
చెలగి చేయార దానంబు జేసిచేసి - కొఱతవడియున్నవాని కాపురమువోలి
యుబ్బుసెడి తూలె నొక చిన్నిమబ్బుతునక - యుత్తరంబుగ దిక్కుల కొత్తిగిల్లి.

వానదడిసిన భూమిదర్పణమునందు - ప్రకృతిరమ తలక్రిందుగా ప్రతిఫలించె
ముసలిసూర్యుని 'పసలేని మోముజూచి - మూతిముడియించె బడుచు టంభోజవనము.

పడమట, నెఱువట్టు జిగిపట్టుతిహాచులమీద, వృద్ధసూ
ర్యుడు నివసించె, వీడ్కొలుపు టుత్సవగానము లాచరించుచున్
నడిచె శకుంతకోటి సదనంబుల కంతట బ్రౌద్ధ గ్రుంకె, సం
దడులు క్రమక్రమంబుగ నణంగె, వసుంధర కన్నుమూసినక.

కళింగదేశపు తూర్పుగాంగరాజుల పరిపాలనావిధానములు

రాళ్లబండి నుబ్బరావు, యం. ఏ., యల్. టి., యఫ్. ఎ. యు.

తూర్పుగాంగవంశపురాజులనుగురించి, పశ్చిమగాంగ రాజులచరిత్ర తెలిసికొనినంతబాగుగ ఇది వరలో, అనగా ౮ లేక ౯ సంవత్సరములకు పూర్వము, తెలిసికొనుటకు తగినన్ని ఆధారములు దొరకకుండెను. ఇటీవల దక్షిణహిందూదేశశాసనములు నాల్గు, ఐదు, ఆరుసంపుటములు వెలువడినకారణమున తూర్పుగాంగ రాజులచరిత్ర మిక్కిలిబాగుగా తెలియవచ్చినది. అంత కుపూర్వము, చెన్నరాజధాని సర్కారుశాసనాధికారుల సంవత్సరాంతపునివేదికలలో ప్రకటింపబడిన శాసనపు సూచనలవల్ల నేమి, హిందూదేశశాసనావళి మొదలగు సంచికలలో ప్రకటింపబడిన ఈరాజులశాసనములవల్ల నేమి కొంతచరిత్ర (ఈరాజులకుసంబంధించినది) దొరికి నను, హిందూదేశశాసనముల సంపుటములవల్ల నే ముఖ్య ముగా పూర్తిచరిత్ర దొరికినదని నమ్మవలెను. ఇవిగాక, ఈరాజులకు సంబంధించిన బంగారునాణెములు, గంగ వంశానుచరిత్ర, మాదలాపాంజి మొదలగుగ్రంథములు, ముఖలింగ-నగరకటకము, వారణాసి-కటకము, కళింగ పట్టణము మొదలగుతావులలో దొరికిన చారిత్రకవస్తు శిథిలములు, ఈవంశపురాజులచేత కట్టబడి ఇప్పటికిని నిలిచియున్న ముఖలింగము, శ్రీకూర్మము, అరసవిల్లి, మహేంద్రగిరి, సింహాచలము, నారాయణపురము, జగ న్నాథము, కోనార్క మొదలగుస్థలములలోని దేవళ ములు- ఇవిఅన్నియు ఈరాజులచరిత్రను మిక్కిలిబాగు గా తెలియజేయును.

ఈరాజులును, మైసూరుదేశమును పూర్వము పాలించిన పశ్చిమగాంగులును ఒకేవంశమునకు ప్రాచీన కాలమున చెందియున్నను, విధివశమున వేర్వేరై, ఒకశాఖవారు కళింగదేశమునను, మరియొక శాఖ వారు మైసూరుదేశమునను స్థిరవాసము లేర్పరుచు కొనిరి. అనాదిని, అనగా గాంగులు రెండుశాఖలుగా విడిపోకముందు, ఈవంశమువారు గంగానదీప్రాంతము వారని వారిశాసనములవల్ల తెలియుచున్నది. మరియు క్రీ. పూ. ౪-వ శతాబ్దాంతమున పంజాబుదేశముపై దండెత్తి దానిని జయించిన అలెగ్జాండరు గంగానదీ ప్రాంతదేశములనుగూడ జయింపదలపెట్టగా ఆకాలమున అందుండురాజు బహుపరాక్రమవంతుడనియు, ఆతనికి సామంతులుగానున్న అందలిజాతులు గాంగరిడులు, ప్రాశ్చిజాతులని పిలువబడుచుండిరనియు గ్రీకుచరిత్ర కారులవ్రాతలవలన మనకు తెలియుచున్నది. కనుక, గంగానదీప్రాంతపువారైన ఈగాంగులు కళింగమున నివ సింతుటచేత తూర్పుగాంగులనియు, మైసూరునందు నివ సింతుటచేత పశ్చిమగాంగులనియు నవీనచరిత్రపరిశోధ కులచే పిలువబడుచున్నారు. ఈతూర్పుగాంగులచరి త్రయు, పరిపాలనావిధానములును తెలిసికొనుట మనకు ముఖ్యావసరము. ఏలనన ఆంధ్ర, కళింగదేశములందు ఈవంశపురాజులు క్రీస్తుశకము ౫-వ శతాబ్దాంతభాగము మొదలుకొని ౧౫-వ శతాబ్దార్ధభాగమువరకును తమ ఏలుబడిని చక్కగ జరిపిరి. వారికిపూర్వము దేశము

అనేక చిన్నచిన్నరాజ్యములుగా చీల్చబడియుండెను; జైన, బౌద్ధ మతములసంప్రదాయములతో నిండియుండెను. వాణిజ్యవ్యాపారములు, నాగరికతయు అడుగంటెను. వీరి రాజ్యప్రారంభమునుండియు ఆర్యమత సంప్రదాయములు, నాగరికత, బ్రాహ్మణమతము, వేదవిద్యలు, దేవాలయములు, వాణిజ్యవ్యాపారములు దేశమున నిండియుండెను. వీరిరాజ్యము ప్రప్రథమమున గంజాం జిల్లా, విశాఖపట్టణంజిల్లాలయందుమాత్రమే స్థాపించబడినను, క్రమక్రమముగా గంగా, గోదావరి(ఒకప్పుడు కృష్ణా) నదుల మధ్యప్రదేశమునందంతటను వ్యాపించెను. ఈ తూర్పుగాంగవంశపురాజులలో రెండుశాఖలు గలవు. అనగా, రాజ్యకాలములనుబట్టి రమారమి క్రీస్తుశకము ౯ - వ శతాబ్దాంతమువరకును రాజ్య మేలినవారు పూర్వతూర్పుగాంగరాజులనియు, తర్వాత రాజ్య మేలినవారు పరతూర్పుగాంగరాజులనియు పిలువబడుచున్నారు. అయినను, పీఠభయమును ఒకేవంశమునకు చెందినవారనియే నమ్మవలెను. పరగాంగరాజులశాసనములలో బేర్కొనబడిన ఒకరాజు మధుకామార్జునుడు వారివలె తనశాసనమున శకాబ్దసంవత్సరమును బేర్కొనక పూర్వరాజులవలె గాంగవంశశకసంవత్సరమును బేర్కొనుటచేత ఉభయశాఖలవారు నిజముగ ఒక్కవంశమువారినియే నమ్మవలెను. ఇదిగాక, మధుకామార్జునుని శాసనమున బేర్కొనబడిన గాంగవంశశక సంవత్సరమును, ఆతని తర్వాత రాజ్యమునకువచ్చిన మూడవ వజ్రహస్తదేవుని శాసనమున బేర్కొనబడిన శకాబ్దసంవత్సరములు, వంశావళి, రాజ్యకాలములనుబట్టి శకసంవత్సరముగా మార్పుటకు వీలు చిక్కినది. దీనినిబట్టి గాంగవంశపురాజుల కాలనిర్ణయములు స్థిరపరచబడినవి. గాంగవంశము కళింగమున రాజ్యమేలుటకు ప్రారంభముగావించినది క్రీస్తుశకము ౮౯౫-వ సం. అని తెలిసినది. ఈవిషయములు ఇదివరలో పూర్తిగా చర్చింపబడి కొందరు పరిశోధకులచే అంగీకరింపబడినవి.

పైవిషయములు తెలిసికొనినగాని, రమారమి ౧౦౦౦ సం. తూర్పుతీరము నేలిన గాంగరాజుల పరిపాలనావిధానములు బాగుగ గుర్తెరుంగుట కష్టము. పూర్వరాజుల (అనగా క్రీస్తుశకము ౯ - వ శతాబ్దాంతమునకు ముందున్నరాజుల) రాజ్యవిస్తీర్ణము మిక్కిలి చిన్నది. గంజాంజిల్లాలోని ప్రస్తుతపు బరంపురం తాలూకామొదలు గోదావరినదివరకును గల దేశము వారిస్వాధీనమున నుండెను. ప్రస్తుతము పాడుపడిన దంతపురము మొదటరాజధాని. తర్వాత నగరకటకము రాజధాని. కళింగపట్టణము, భీమిలిపట్టణము, విశాఖపట్టణము మొదలగునవి రేచస్థలములు. మహేంద్రగిరిపై స్థాపించబడిన గోకర్ణస్వామి వీరికి కులదేవత. గాంగరాజులు బ్రాహ్మణులకును, దేవుళ్లకును అగ్రహారములు విరివిగా దానముచేయుచుండిరి. ఒకప్పుడు జైన, బౌద్ధమతములతో నిండిన కళింగదేశమున వీరి యాదరణమున హిందూబ్రాహ్మణమతము స్థిరవాసము జేసెదను. పూర్వగాంగరాజులలో నొకడగు అనంతవర్మకుమారుడు దేవేంద్రవర్మ వరాహవర్తనివిషయమందలి (ఇస్పటి శ్రీకాకుళం తాలూకా) తామర చెరువు గ్రామకుటుంబినులను సమావేశముచేసి సూర్యగ్రహణసమయమందు ఆగ్రామమును ౩౦౦ మంది బ్రాహ్మణులకును, మహేంద్రగిరి గోకర్ణభట్టారకదేవునకును ౫౧ - వ గాంగశకసంవత్సరమున దానముచేసిన విషయము తెలియుచున్నది.* సాధారణముగ దానములు దేవ, బ్రాహ్మణాగ్రహారములుగా చేసి యివ్వబడుచుండెను. అట్టి దానములకు ఎట్టి పన్నులుగాని, ఆటంకములుగాని లేకుండెను. వివాహకాలములందును, యుద్ధసమయములందును, వ్యాధిపీడితులైనప్పుడును, తటాకాదినస్తసంతానప్రతిష్ఠకాలములందును, ఉత్తరాయణ, దక్షిణాయన పుణ్యకాలములందును, సూర్య, చంద్రగ్రహణ పర్వకాలములందును, రాజ్యపట్టాభిషేక కాలమునందును భూదానములు చేయబడుచుండెను.



కుటుంబమున కందరికి

కుటుంబము లో ప్రతియొక్కరికిన్ని క్వాకర్ వోట్సు ఆదర్శనీయముగు ఆరోగ్యమైన యాహారము. బిడ్డలకు వాడి నచో, త్వరలో పండ్లుకచ్చి, రక్తము శుభ్రపడి, నర ములకు బలము చేకూరును. ఆరోగ్య సాధము చిరకాలము నిలచియుండుట కది మంచి పునాదివేయును.

ఎదిగెడు బిడ్డలకు క్వాకర్ వోట్సు, నరముల పటుత్వ ము కలుగజేసి, మంచి బలిష్ఠములగు కండరములను పెంచి మెనడుకు చుఱుకుదనమును కలిగించును. అటపాటల యందు వ్యయముచేయబడిన బలమునంతయు తిరిగి సమ కూర్చును.

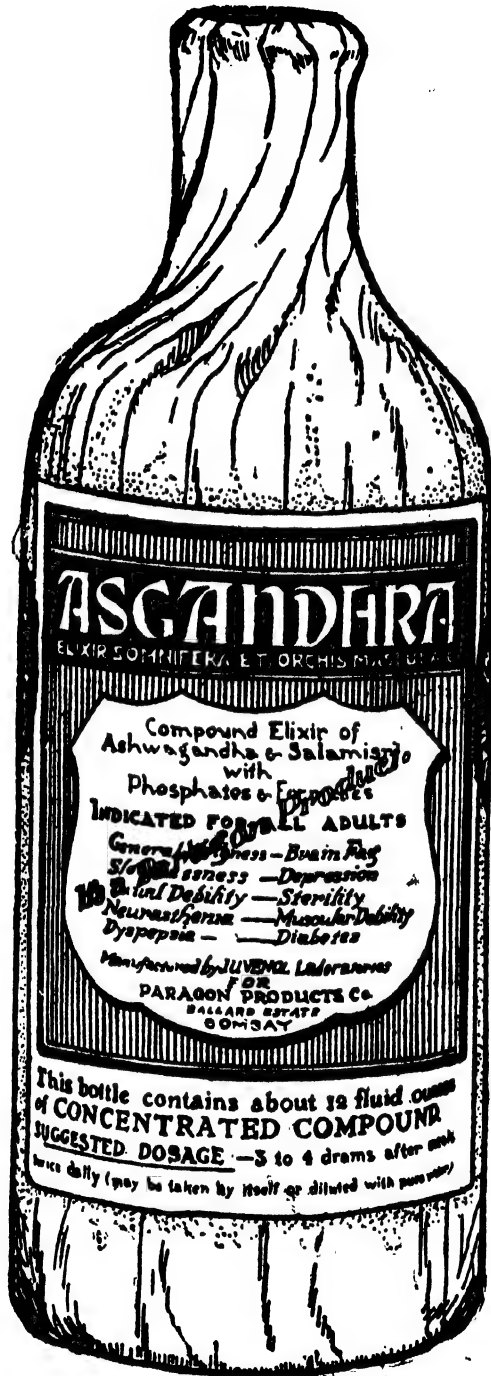
పెద్దవారికి గూడ ఆరోగ్యమున కవసరముగు బలము, నరముల పటుత్వము నొడగూరును.

శుద్ధమైనదానికి
క్వాకర్ వోట్సును
చూడుడు.

క్వాకర్ వోట్సు

చేతులతో స్పృశింపబడనిది.

బలహీనత — అపాయకరమే



కక్తి, సామర్థ్యము తగ్గుట—భోజనమునందు పనియందు అయిష్టత—జీవితము యొక్క సౌఖ్యము ననుభవించుటకు గల అనుకూలతకు యేదో—జోక కారణముండవలెనని మీరెరుగుదురు.

అశోగ్యభంగమునకు మార్గమున కిది చిహ్నమనియు, దీనిచే దుర్బలముగా కష్టములు—అనగా క్షయ, పక్షవాతము, మూర్ఛ, మతిభ్రమ, అయితే నరముల బలహీనతకు గుఱియగునట్టి యితర జబ్బులుకూడ గలుగునని మీకు తెలియును.

యొప్పుడైన యిట్టి యోచన మీ మనస్సుకు తట్టినప్పుడు, దాని మీరు అలక్ష్యముచేయక, మిక్కిలి భద్రమైన అతిశాస్త్రీయమైన, త్వరితముగా గుణమునిచ్చునట్టి ఔషధమును (తరువాత దుర్గుణములు కలుగని) నేదింపుడు.

రసాయనములన్నియు కల్పితములని తలచి వివేకశూన్యులుగాకుడు. ఎలననగా కొన్ని మాత్రమే నిజముగా అట్లుండును. అనేకమంది ఆలక్ష్యముచేయుటవలనను, ఉపేక్షవలనను వారి జీవితాశయమును వదలుకొనిరి. మీకేది శ్రేష్ఠమైనదని పరిశీలించి తెలుసుకొనుడు. వైద్యవేత్తలచే ప్రపంచమునందంతటను యేది వాడబడి, ప్రకృతిని పబడుచున్నదో, అదే రీతిగా బాధపడునట్టి వారిచే గూడ స్తుతించబడినదో—అది దుష్టవ్యాధులకూడ దేనిచో పారదోలబడినదో అట్టి దానిని నీవు గ్రహించి నేదించుము.



ఈదిగుత విషయమును జ్ఞాతమునం దుంచుకొనుట శ్రేయస్కరము



“అస్గంధర”

అస్గంధర రసాయనమునందు, (బలమునకు) సాలా మిశ్రి, (దీర్ఘాయువుకు) కాలేసియం, (మెదడుకు) ఫాస్ఫారస్, (దానికి చేరినపనుల నిర్వహించుటకు) కాయగురలందు గల విటమినులు (తిరిగి పుష్టినిగలిగించుటకు) శ్రేష్ఠమైన ఓషధులు, వేరులు మున్నగు వాటియందుగల తప్పని అద్వితీయగుణములుండుటచే హిస్ ఎక్స్లెన్సీ మద్రాసు గవర్నరుగారి యాజమాన్యముక్రింద జరిగిన ఆఖిలభారత వైద్యశాస్త్రజ్ఞులు ఎ. వి. ఎస్. అండ్ ఎస్. ప్రదర్శనమునందు బంగారు పతకము నొసగిరి.

మా మాటను మాత్రమే మీరు నమ్మవలసినదని మేము తెలుపుటలేదు! దీనిని పరిశోధించి, పుష్టయోగించినవారి అభిప్రాయమును కూడ గ్రహింపుడు. అస్గంధర ధరతక్కువ. యితర రసాయనము లన్నిటికంటె యెక్కువ గుణము నిచ్చును.

పారగన్ ప్రాడెక్టుస్ కంపెనీ,

(అద్భుతమైన ఓషధులశాఖ)

బల్లారు ఎస్టేట్, బొంబాయి.

ప.రా.—హిందూదేశము, బర్మాదేశములందలి సుప్రసిద్ధ వైద్య దుకాణములలో దొరుకును

ఆంధ్రవత్రిక - భావ సంకల్ప రాధి సంచిక



1. రామకృష్ణమూర్తి ఐ.ఎస్. రంగనాథాచార్యులుగారు. 2. మామూరి వెంకటకృష్ణారావుగారు. 3. కె. వి. రాధాకృష్ణకాశ్రిగారు.
(14) 4. రాజగోపాలాచారి అయ్యగారు. 5. పాపాచారి విరంజీ చౌదరి.



1. టి. జయ్యరదాసుగారు. 2. అల్లూరి నారాయణరాజుగారు. 3. వేముల కూర్మయ్యగారు.
4. అప్పల సుబ్బారావుగారు. 5. డా. వి. వి. సాగరుగారు.

దేవుళ్లకు నిత్యనైవేద్యపూజాదిసత్కర్మలకు దానములు చేయబడుచుండెను. అట్లు దానములు “సర్వకరః పరీహరైః” అనగా సిద్ధాయము, దండు, అపరాధము మొదలగుపన్నులనుండియు, సర్వాటంకములనుండియు అనగా, అచట, బటమొదలగువారి రాకపోకలతో నిమిత్తము లేకుండగా తప్పింపబడి ఇవ్వబడుచుండెను. అట్టిదానములు చేయబడునమయమున ఆయా గ్రామమునందలి కుటుంబినులను (వ్యవసాయదార్లను) సమావేశము చేసి వారి ఎరుకతోను, అనుమతితోను రాజాజ్ఞలను వినుపించుచుండెను. ఒక్కొక్కప్పుడు ఆయా రాష్ట్రములందలి ప్రధానులను, మాండలికులను, జానపదులను సమావేశముచేసి రాజు తనయాజ్ఞలను వినుపించుచుండెను. దానములు సరిగా జరుగుటకై సంధివిగ్రహికునకో, లేక సామంతమాండలికునకో రాజు ఆజ్ఞ యొనగుచుండెను. దానములు పొందిన బ్రాహ్మణులు వేదవిద్య నేర్పుటకును, వేదమతము, లేక వైదికమతము దేశమున వృద్ధిచేయుటకును, రాజ్యపరిపాలనావిధానములందు రాజునకు తోడ్పడుటకును నియమింపబడినట్లు తోచును.

దానార్జవునికొడుకగు ఇంద్రవర్మయొక్క గాంగ సంవత్సరము 154 తాలూకు టెక్కలిశాసనమునుబట్టి* అప్పటి కాలమానములలో బ్రహ్మదేయపుకాలమాన మొకటుండెననియు, భూములకు తటాకములందలి నీరు కాలువలద్వారా ప్రవహింపజేసి సాగుబడి చేయుచుండెడివారనియు, భూమి, నీటి పన్నులు రాజులు సంగ్రహించుచుండెడివారనియు తెలియుచున్నది. ఈ శాసన ఆజ్ఞప్తి మహామహాత్తర హరిశర్మ. ఈ మహామహాత్తర దేశమునందలి పెద్ద యుద్యోగి యని చెప్పవచ్చును. సంధివిగ్రహి రాజకీయవిషయములం దారితేరినట్టియు, యుద్ధములు, సన్నిహిత మొదలగుపనులు గల్గిన యుద్యోగి. మహామండలికుడు ఒక మండలాధిపతిగా నుండిన యుద్యోగి. మండలములు ఇప్పటి జిల్లాలకంటె చిన్నవిగాను, విషయములు, లేక భోగములు ఇప్పటి

తాలూకాలకంటె చిన్నవిగాను ఉండెను. విషయ, లేక భోగ పతులు మండలాధిపతులక్రింది సామంతోద్యోగులు. ప్రతివిషయమునను పెక్కుమందలగ్రామములుండెను. గ్రామాధిపతులు, గణకులు, కరణీకులు, ఉపాధ్యాయులు, తలవరులు, అచటబటులు, భోగిక, వారిక మొదలగు చిన్న ఉద్యోగులు ప్రతిగ్రామమునందు నుండిరి. జానపదులు, కుటుంబినులు, రాష్ట్రకూటప్రముఖులు రాజాజ్ఞలను శిరసావహించి కొనసాగించుచుండిరి. గ్రామ కుటుంబినులందరును కలిసి గ్రామము మొత్తముపై చెల్లించవలసిన పన్నులకు బాధ్యత వహించుచుండిరి.

ఈ ఇంద్రవర్మకాలమున అనగా క్రీ. శ. రమారమి ౬౨3 మొదలు ౬౫౦ వరకు దేశము బహుశాంతి గొనెను. శాసనములనుబట్టి కళింగులు ఆంధ్రభాషనే వాడుచుండి రని తెలియును. శాసనముల లిపి ప్రాచీనపు తెలుగు; భాష సంస్కృతము. దేశమున వేదవిద్యయు, వైదిక మతసంప్రదాయములును, ఘటికాశ్రమములును, దేవాలయనిర్మాణములును వృద్ధిపొందుటచేత ఆర్యుల నాగరికత హెచ్చెను. ప్రాయశః ఈతనిరాజ్యకాలముననే చీనాదేశపు బౌద్ధమూర్తికుడగు యుఆన్ ఛ్యంగు కళింగ దేశమునసంచారము చేసెను. ఆతని గ్రంథమును బట్టి కళింగ దేశము ౧౦౦౦ మైళ్లు చుట్టుకొలత గలిగియుండెను. దానిరాజధానిరమైళ్లువిస్తీర్ణముగలిగియుండెను. భూములు ఫలవంతములైనస్యసమృద్ధి గలిగియుండెను. దేశమునందలికారడపులు, కొండలు మైళ్ల కొలది వ్యాపించి మదపు లేనుగులతో నిండియుండెను. ప్రజలు అనాగరకులు, మోటువారలయ్యు విశ్వాసపాత్రులుగాను, న్యాయవాదులుగాను, స్పష్టముగా మాట్లాడువారుగాను ఉండిరి. దేశమునందు కొన్నిమందిమాత్రము బౌద్ధమతస్థులు. విశేషించి ప్రజలు హిందూమత మవలంబించిరి. దేశమున ౧౦ బౌద్ధమతము లుండ, నూరుకంటె నెక్కుడుగ హిందూ దేవాలయము లుండెను. నిగ్రంథులు (తైనులు) గూడ నుండిరి. దేశము ఋషి శాసమున జనహీనముగా నుండెను.

* Ep. Ind. vol. XVIII. pp- 307-311.

ఈ ఇంద్రవర్మ సమకాలికుడును, తూర్పుచాళుక్య వంశీయుడును, వేంగీభూపాలుడును 1 నగు మొదటి జయ సింహు (క్రీ. శ. ౬౩౩-౬౬౬) నాస్థానము నలంకరించిన దండిమహాకవి రచించిన దశకుమారచరిత్రమునుబట్టి కళింగ, వేంగీదేశములకు యుద్ధములు జరుగుచుండెననియు, నావికదళము లుండెననియు తెలియుచున్నది. కళింగులు ఆకాలమున తూర్పుదీవులు, చైనా, లంక, మొదలగు ప్రదేశములతో విరివిగా వర్తకము సాగించుచుండిరి. ఆకాలపునాణెములు గంగమాడలనుపేరను, వంగపరక లనుపేరను, పెక్కులు అనేకస్థలములందు దొరికినవి. నాణెములు ముద్రించుటకు టంకశాలలు, శాసనములు రచించుటకు లేఖకస్థానములు ఏర్పరచబడెను. సముద్రతీరపుపట్టణములందు నావికదళములు, వర్తకపుపన్నులు వసూలుచేయుటకు సుంకాలయములు ఉండెను. తూర్పుదీవులకు, సువర్ణభూమికి, లంకకు కళింగులును, ఆంధ్రులును వలసబోయి తమమతమును, భాషను, నాగరికతను అందు నెలకొల్పిరి. దీనికి ఆ దేశములలో కన్నట్లు శైవాలయములును, తెల్లులిపియందు వ్రాయబడిన శాసనములును, క్లింగులని పిలువబడు ప్రజలును నిదర్శనములు.

ఇంక, షరగాంగరాజులశాసనములనుబట్టి తెలిసికోదగిన షరిపాలనావిషయము లెన్నియో కలవు. బాబ్బిలితాయాకాయందలి నారాయణపురముననున్న నీలేశ్వరదేవాలయమునందును, గంజాంజిల్లాలోని శ్రీ కూర్మం, ముఖలింగం దేవాలయములందును, విశాఖపట్టణమునమీపముననున్న సింహాచలాలయమునందును, తూర్పుగోదావరిజిల్లాలోని ద్రాక్షారామభీమేశ్వరియాలయమందును గల పెక్కువందల శిలాశాసనములనుబట్టియు, ఈ షరగాంగరాజుల తామ్రశాసనములనుబట్టియు, ఆకాలపు రాజకీయపరిస్థితులు మిక్కిలి బాగుగా తెలియుచున్నవి. క్రీ. శ. ౧౦-వ శతాబ్దము మొదలు ౧౫-వ శతాబ్దార్ధభాగమువరకును గంగా కృష్ణామధ్యస్థదేశమునంతను షరిపాలించిన ఈ సుప్రసిద్ధ

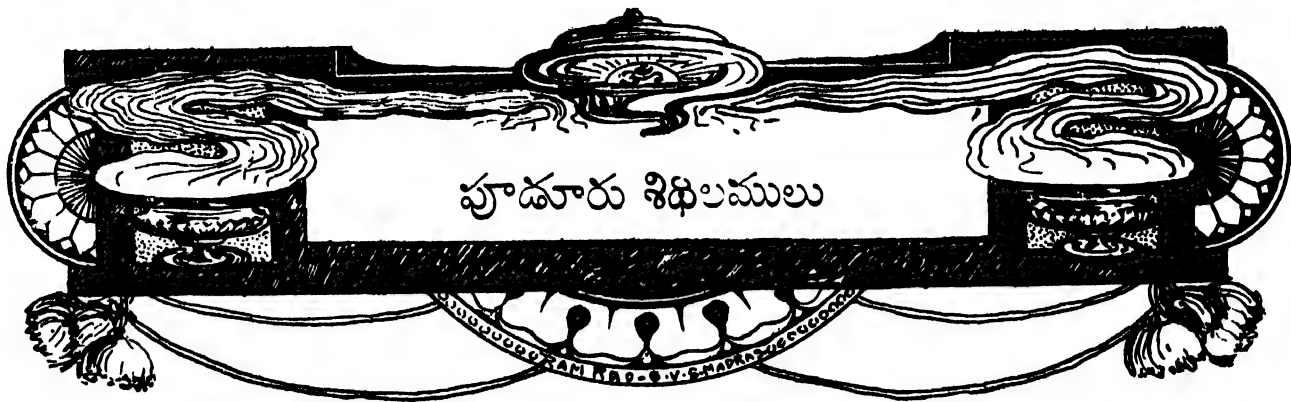
తూర్పుగాంగరాజులు తమ రాజ్యాంగవిధానములనుఉచ్చస్థితియందుంచిరి. అప్పటికాలపు రాజకీయపు టుద్యోగములు కొన్నింటి నిందు పొందుపరిచితిని. వాటినిబట్టి చదువరులే ఆకాలపు రాజ్యాంగవిషయములు గ్రహింతురుగాక.

సేనాపతి, మహాసేనాపతి, నాయక, నాయకాణి, సంధివిగ్రహి, మహాసంధివిగ్రహి, దండనాయక, మహాదండనాయక, శ్రీకరణ, రాచపురవరి, సాహిణి, లవణకరాధికారి, ప్రధాని, మూలభండారమున ముద్రహస్త, మండలిక, మహామండలిక, రాచపడిహస్త, శాసనకుడు, రట్టడి, మహాదండవాసి, మహారాణక, విషయపతి, నగరపాలక, పురోహిత, దండపాసి, తలవరి, నగరాధ్యక్ష, కళింగరక్షపాలక, రాజగురు, మహాప్రధాని, మహాపాత్ర, పాత్ర, మహాసామంత, సామంత, రాజానక, కుమారామాత్య, ఉపరిక, గ్రామాధ్యక్ష, మహాప్రతిహార, ప్రతిహార, పంచవిషయమండలేశ్వర, పంచపాత్ర, రాజపాదోపజీవిన, సామభాజి, మహామహాత్తర, మహాత్తర, బుడయివెంక, భోగపరీక్ష, కళింగదండపత. ఆకాలమున కళింగదేశము అనేకమండలములక్రింద విభజింపబడియుండెను. ఒకమండలము అనేకనాడులు, లేక విషయములుగ విభజింపబడెను. శాసనములలోని కొన్నినాడులు ఇట్లు పేర్కొనబడినవి: చోడవలనాడు, గుద్దవాడినాడు, జంతరునాడు, సరుడనాడు, ప్రోలనాడు, నుంగనాడు, పొత్తపినాడు, దిమిలసీమ, వరాహవర్తని, కులవర్తని, రూపవర్తని, క్రోమకవర్తని, ప్రక్కినాడు. ఆకాలమున రాజులును, రాణులును, ఉద్యోగులును, బ్రజలును విశేషముగా దానములను జేయుచుండుటయు, అట్టిదానములు దాతల ఆయురారోగ్యైశ్వర్యాభివృద్ధికైగాని, పుత్రపౌత్రాభివృద్ధికైగాని, మాతాపితృస్వపుణ్యాభివృద్ధికైగాని, దేవబ్రాహ్మణ, రాజ, గురు, బంధుజనప్రీతికైగాని చేయబడుచుండుట ఆచారము. దానములు అఖండవర్తిదీపమునకై చేయబడుచుండెను. అట్టిదానములు పురవరి, లేక ఇతరఉద్యో

గీయులవశమునగాని, బోయలు, లేక పశువులకాపరుల వశమునగాని పెట్టుట ఆచారము. దీపదానము జరుపుటకై ఆవులు, గొట్టెలు, మేకలు, భూములు, నాణెములు పెట్టుట కలదు. పలురకముల నాణెములు శాసనములలో పేర్కొనబడినవి. మచ్చునకు కొన్నింటిని ఉదాహరించుచున్నాను: మాడలు, గండమాడలు, గంగమాడలు, మల్లమాడలు, మత్స్యమాడలు, చిరుగండమాడలు, చిన్నాలు, టంకాలు, ససుకాణి టంకాలు, మత్స్యగద్యలు, షరకలు. రాజులకుగల విరుదములనుబట్టి వారు నిజముగ చక్రవర్తులని చెప్పవచ్చును. శకసం. ౧౦౦౩ నాటి అనంతవర్మచోడగంగుని కొర్ని శాసనమునను, ముఖలింగాలయమున నున్న శిలాశాసనములవల్లను గాంగరాజుల కందరకును అనంతవర్మ మహారాజు, రాజాధిరాజు, రాజపరమేశ్వర, పరమభట్టారక, షరమమాహేశ్వర, త్రికళింగాధిపతి మొదలగు సార్వభౌమవిరుదము లుండినట్లు తెలియుచున్నది. ఆశాసనమున రాజు వరాహవర్తనివిషయమందలి రాష్ట్రకూట ప్రముఖులను, కుటుంబినులను సమావేశముచేసి పురోహిత, అమాత్య, యువరాజు, సంధివిగ్రహి, దౌవారిక ప్రముఖ పరిజనసమక్షమున భోన్నగ్రామమును సుట్కర్మనిరతులగు ౩౦౦ బ్రాహ్మణులకు దానము జేసెనని తెలుపబడినది.

ఈగాంగరాజులు కటకమునకు క్రీ. శ. ౧౧౩౨ లో తమరాజధానిని మార్చకమునుపు సింహాచలము, ముఖలింగము, శ్రీకూర్మము, అరసవిల్లి, దీర్ఘాసి, మహేంద్రగిరి, నారాయణపురము మొదలుగాగల స్థలములలో పెక్కుశివాలయములను గట్టించిరి. అనంతవర్మచోడగంగ కటకము జయించి తనరాజధానిని అక్కడకు మార్చినదాదిగా వైష్ణవమతమునం దానత్తిగలవాడయ్యెను; పురి, లేక జగన్నాథమున పురుషోత్తమున కాలయము కట్టించెను.

ఈతనితర్వాత రాజ్యమునకు వచ్చిన రెండవ రాజరాజదేవు, రెండవ అనంగభీమదేవులకాలములలో భవనేశ్వరమున పెక్కుశివాలయములును, వైష్ణవాలయములును కట్టబడెను. మూడవ అనంగభీముని కాలమున (క్రీ. శ. ౧౨౧౧-౧౨౩౮) నరసింహమహామునులు తమమతమును వృద్ధిచేసెను. రాజు జగన్నాథాలయమున కనేకమండపములు, గోపురములు కట్టించెను. ఈతనికొడుకగు మొదటినరసింహదేవు (క్రీ. శ. ౧౨౩౮-౧౨౬౪) కోనకోనయందు సూర్యదేవునికి సుప్రసిద్ధమైన యాలయ మొకటి కట్టించెను. ఈకోనార్కాలయమును, అందలి సూర్యరథము, నాట్యమందిరము, అందలి నటకులయొక్కయు, గాయకులయొక్కయు, విగ్రహములును ఆకాలమునాటి శిల్పచాతుర్యమును చాటుచున్నవి. ఈకాలముననే ఈరాజుగురువగు నరహరితీర్థులు కళింగమున మండలికపదవియం దుండి మాధ్వమత సంప్రదాయములను కళింగదేశమునందంతటను వ్యాపింపజేసెను. అనేకమతములు, దేవాలయములు కట్టబడెను. రాజులును, మంత్రులును పెక్కు దానశాసనములను చెక్కించుటచే మనకు అప్పటికాలపు మతచరిత్ర, రాజకీయపరిస్థితులు బాగుగా తెలియుచున్నవి. నాల్గవ నరసింహదేవుని పురి (జగన్నాథము) తామ్రశాసనములనుబట్టి, రాజులు తరుచుగా దేశమున సంచారములు సల్పుచుండెడివారనియు, మహమ్మదీయులు దండెత్తకుండ దేశమును సంరక్షించుచుండిరనియు, పెక్కు సామంతరాజవంశీయులవల్ల కష్టములను గైకొనుచుండిరనియు, రాజకీయ, ఆర్థిక, మత విషయములం దారితేరి సామంతోద్యోగులను పురికొల్పుచుండెడివారనియు, రాజ్యము (గంగాగోదావరీనదుల మధ్యప్రదేశము) శాంతిని, సౌఖ్యమును పొందియుండెననియు తెలియుచున్నది.



మారేమండ రామారావు యం. ఏ., బి. ఇడి.,

చంద్రగుప్తమౌర్యనికాలమునకే జైనమతము దక్షిణాపథమున వ్యాపించినది. అంతటినుండి శ్రీ. శ. ౧౧-వ శతాబ్దివరకు నీమతము ప్రబలముగ నుండినది. శ్రీ. శ. ౧౧౫౦ ప్రాంతమున బసవేశ్వరుడు వీరశైవమతమును బోధించెను. ఆతనియేరికయం విజ్ఞలకాలాచార్యుడు జైనులనుబలన బసవేశ్వరునికి రాజాశ్రయముచే నప్పటికి ప్రబలముగనుండిన జైనులవలన పెక్కుకష్టములు గలిగెను. కడపటి నీమతబోధకుడు రాజాను చింపించి తదాశ్రయముల జైనుల ననేకవిధముల హింసించెను. కాలక్రమమున జై ననిర్మాలములై వమతవ్యాప్తమునకు ముఖ్యస్థానముగ నేర్పడెను. ఎన్నియోధ్యులు జై వమతస్థులు జైనులను జంపియు, వారిసంస్థలను నాశమునర్పియు, జైనమతమును విధ్వంసమునర్పిరి. దక్షిణాపథమతచరిత్రమునం దిదియొక ముఖ్యముగ ఘట్టము. బసవపురాణాది జైవగ్రంథములందును, కొన్ని స్థానిక చరిత్రములందును ఈమతయుద్ధములప్రశంస గలదు. అందును కాక తీయలకాలమునం దీజైననిర్వహణము ప్రబలముగ నుండిన ట్లగపడుచున్నది. ఈవాఙ్మయాద్యాధారములను బలపరచు నితర చారిత్రక ప్రమాణము లరుదుగ లభించినవి. కట్టకములనుండియు, శిల్పమునుండియు నీజైనమత విధ్వంసమునుగూర్చి యెరుంగవలెను. ఇట్టివి వైజాంరాష్ట్రాంతర్గతములగు కొల్లి పాక, గంగాపురము, పూడూరు మున్నగు స్థలముల గలవు. పూడూరుగ్రామమునందలి శిథిలములను వర్ణించి యవి ప్రేమతయ్యుద్ధవిషయకములగు వాఙ్మయాద్యాధారముల నెటులు బలపరచునో యీవాగ్ధాసమున జూపబడును.

పూడూరు మౌర్యరాజు-కర్నూలు రైలుమార్గమున గద్వాల కైదుమైళ్ల దూరమునందుండు చిన్నగ్రామము. గ్రామమును సమీపించినతోడనే రైలుమార్గ మొకదిట్టముగనున్న మట్టిగోడనుండా

పోవును. ఈగోడ గ్రామముచుట్టును వలయాకారముగ నున్నది. ఇదిగాక కేశవస్వామియాలయము, మల్లికార్జునస్వామి, వీరభద్రదేవళయ నాగ్రామమున జూడదగిన ప్రదేశములు.

కేశవాలయము చతురస్రమున నొకయావరణపు మధ్యభాగమున నిర్మింపబడినది. ఈయావరణ పడమటిగోడలలో సింహద్వారమున్నది. నీలశిలానిర్మితమును, చక్కని శిల్పముగలదియునగు నీద్వారము చాళుక్యులకాలమున నిర్మింపబడినది. స్థానికులనడుగగా నాయూరబావిని త్రవ్వునపు డీద్వార ములనే దొరకెననియు, దాని నంతకుపూర్వముండిన గుమ్మమును దీసివైచి యుం సింహద్వారముగ నమర్చిననియు జెప్పిరి. ఇచ్చటి కేశవాలయమునం దొకప్రవేశమంట పమును, దానినంటి యంతరాళమంటపమును, దానిచెనుక గర్భాలయమును గలవు. ఆలయము పైభాగమున గోపురములేదు. చుట్టును జూడదునులయొకైన నొకపట్టిగోడమాత్రము గలదు. ౧ పదునాడవ శతాబ్దియు త్తరార్థమునండుండిన గద్వాలరాజు పెదసోమధూపాలు డప్పటికి శిథిలమైయున్న పూడూరి కేశవాలయము నుద్ధరించెనని స్థానిక చరిత్రములలో నున్నది. ౧౭, ౧౮ శతాబ్దములనాటి యాంధ్రవాఙ్మయమున నీకేశవస్వామిప్రశంస విశేషముగ గన్పించుచున్నది. మొదటినుండియు నీయాలయముననుండిన కేశవస్వామి విగ్రహము గద్వాలదుర్గమునందలి కేశవాలయమునకు గొనిపోబడెననియు, ౩ గొంతకాలముయినప్పిమ్మట నొకచేయి భిన్నముకాగా నావిగ్రహము కృష్ణలో పడవేయబడెననియు స్థానికులు చెలుపుదురు.

కేశవస్వామియాలయమున కుత్తరముగా రెండుస్థానములమారమున ముందుకేర్పినబడిన మట్టిగోడ గలదు. ఈ స్థలమున నెచ్చుతెగ్గులుగాబడియున్న చదరపు శిల్పముండియు, గోడలోగల యనవాళ్లను

౧. గద్వాల సంస్థానములోని దేవళములు చాలవరకు నిటులే నిర్మింపబడినవి.

౨. గద్వాల కైఫీయతు. Loc. Rec. Vol. XXXVIII.

౩. గద్వాలదుర్గమును, అందలి కేశవాలయమును పెదసోమధూపాలునిచే శ్రీ. శ. ౧౬౯౦-౧౭౦౫ ల నడుమ నిర్మింపబడినది.

బట్టియు నిట్లగోడలో నొకద్వారముండెడివని యూహింపవచ్చును. ఈగోడ యావలిభాగమున నుత్తరముగనే బాట గలదు. ఈమార్గము ననుసరించి యొకఘర్ణాంశుల దూరమైనచో, బాటకడమవై పున చిన్న దేవళముకట్టి గన్వించును. ఇదియే మల్లికార్జునశివ. విష్ణుగులయెత్తు గలతిన్నెపై గట్టబడిన యీగుడిలో నొకలింగముమాత్ర మున్నది. వెనుక వైపునుండి యాలయము పడిపోవుచున్నది. ఇచ్చట నొకచింతచెట్టు క్రింద ౪ అడుగులయెత్తున ప్రాకృష్టిమముగ నొకచిన్నగోడగలదు. దీనినాని యీక్రిందివిగ్రహములు గలవు:

౧. ఇర్వురు ద్వారపాలకులు.

౨. కూర్చునియున్న యొకగోపీమూర్తి.

౩. అటులేయున్న పురుషవిగ్రహము.

౪. పద్మాసనమున గూర్చుని తలపైయేడుపడగల సర్పముగల యొకధ్యానజైనమూర్తి.

౫. నిలచియున్న మరియొకజైనవిగ్రహము.

౬. గుండరముగ చెక్కబడి యాభరణాదులతోనుండిన మరి యొక జైనమూర్తి.

ఈ విగ్రహములన్నియు భూమిని త్రవ్వనపుడు వెలువడిన వనియో, వీనికి జైనబ్రాహ్మణ్యులని పేరనియు స్థానికులు చెప్పిరి.

మల్లికార్జునగుడినిదాటి కొంతదూర మైనచో నొక శిలా ప్రాకారశిథిలము గాననగును. ఇదియు వలయాకారముగనే యున్నది. బహుశః ఇయ్యది బహిఃప్రాకారమై యుండును. దీని కుత్తరముగ రెండుఘర్ణాంశుల దూరమున వీరభద్రదాలయము గలదు. సరిత్రాస్వేషుల కీయాలయము మిగుల ముఖ్యమైనది. ఇందు ముందరిభాగమున నొక చిన్ని మంటపము (Porch)ను, దానివెనుక విశాలమును ప్రవేశమంటపము, నటుపై అంతరాళమంటపము, నటుపిమ్మట గర్భాలయమును గలవు. గర్భగుడిలో నొకలింగ మున్నది. ప్రవేశమంటపమున గుడివైపున వీరభద్రుని విగ్రహము గలదు. దీనినుండియే యాలయము నకు వీరన్నగుడి యనిపేరు వచ్చినది. కేశవాలయమునందువలె గాక నీగుడి వైభాగమున శిఖరము గలదు. ఇది మెట్లుమెట్లుగ నుండి పైకి పోవుచున్న సన్నమగును. ఆగ్రమున తలక్రిందుగ బోర్లింపబడిన కలశముగలదు. ఇట్టిపద్ధతినినిర్మింపబడిన శిఖరములు జైనదేవాలయములపై గాంచనగును. పశ్చిమాభిముఖున నాయాలయమున కెదురుగ నొక చిన్న మంటపమున చిక్కిని నందియో, దానివెనుక నొకవేదికపై స్వజస్తంభమును గలవు. అటుపై ఆలయ సింహద్వార మున్నది. ఈద్వారము నంటి యుత్తరముగ నొకమట్టిగోడ గలదు. ఆగోడలో నీక్రిందిశిల్పకళలములు విగింపబడినవి:

౧. ఒకచేతకత్తిని, మరియొకచేత చాలుగుల నాలుగు నాగీ విగ్రహములు.

౨. ఇరుపార్శ్వములను చామరములు వీచు స్త్రీ లుండ మధ్యభాగమున ధ్యానముద్రలో పద్మాసనమున గూర్చునియున్న జనుడు. వానిక్రింద గుఱ్ఱముపై నొకస్త్రీయు, పురుషుడును.

౩. గుఱ్ఱములపైనున్న యిర్వురు యోధు లొండొరులతో బోరుట.

౪. పై నొకధ్యానజైనవిగ్రహము. క్రిందిభాగమున నిర్వురు యోధులు కస్తూలతోబోరుట.

౫. ఒకటియు సంతకుమించినవియు నగు పడగలుగల నాగ విగ్రహములు.

వీరన్నగుడికావల ప్రాకృష్టిమముగ నొకసత్ర మున్నది. దీని కుత్తరముగ నొకశాఖయు గలదు. ఈసత్ర మిటీవల బాటసారుల సౌకర్యమునకై నిర్మింపబడినది. దీనియుత్తరశాఖయొక్క వెలుపలిగోడలో నెన్నియో మనోహరములగు శిల్పములు విగింపబడినవి. ఇవియును పాలయలదున్ను నపుడును, బావులను ద్రవ్యసపుడును నొరకినవియేయని స్థానికులు చెప్పిరి. ఈశిల్పములలో నీక్రిందివి ముఖ్యములు:

౧. ఒకద్వారబంధపుమాలము. దీనిపై చక్కని సగిపని గలదు. నడుమనున్న గజలక్ష్మివిగ్రహము మనోహరమైనది.

౨. అట్టినే మరియొకదొలము. దీనిపై తాండవనృత్యము చేయుచున్న నటరాజవిగ్రహము గలదు.

౩. రామాయణమునందలి సీతారామవనవాసమును, కూర్మ గణానాసికాచ్ఛేదమును చిత్రింపబడిన యొకస్తంభము.

౪. ఇది యొకవిశేషముగ శిల్పము. ఇందు మొదటివరుసలో చామరహస్తలగు నిర్వురు స్త్రీలనడుమ నొకధ్యాని జైనవిగ్రహమును, దానిప్రక్క నొకవేదికపై లింగమును గలవు. రెండవవరుసలో శివలింగముక్రిందనిలచిన యొకపదాతి జైనప్రతిమక్రింద నున్న యొకరాతు గుఱ్ఱమును ఈతెతో పొడుచుచున్నటు లున్నది. వీనిక్రిందుగ రాతునకుష్కరగా మృతదేహమొకటి యున్నది.

పైనకేర్పొనబడిన కట్టడములును, శిల్పములేగాక పూర్వార్థలో కర్ణాటాంధ్రభాషలలో నారుకాసనములు గలవు. వానిసారాంశము నీక్రింద నొసంగుచున్నాను:

(i) మల్లికార్జునగుడినద్ద, బాటకడమవై పున నొకచేసుగట్టు పైనున్న బండపైగల కన్నడికాసనము. దీనికాలము ౧౨-వ చాళుక్య విక్రమసంవత్సరము. ఇందు పశ్చిమచాళుక్యచక్రవర్తియగు త్రిభువన మల్లుని సామంతుడగు పూంహరహల్లకరస తనగురువును ద్రవిడసంఘ

౪. హనుమకొండలోని సిద్ధేశ్వరాలయమునకును, పద్మాక్షిగుడిపైనను, వరంగల్లులోని స్వయంభూదేవాలయముమీదనుగూడ నిట్టి శిఖరములు గలవు.

మనకు జెందిన పల్లవజీనాలయమున వసించువాడునకు కనక సేనభట్టారకునికి జేసినధర్మములు పేర్కొనబడినవి. ఈశాసనమునందలి మొదటి వైపున అడుగుభాగమున నొకసంస్కృతశ్లోక మిటులున్నది :

స్వస్తి శ్రీజగత్తలైకతిలక శ్రీపుండ్రసంజ్ఞేపురే
శ్రీమత్పల్లవరాజగు(ద్వ)జలతో దుర్గే యశస్ససేరే,
చూడామనుగంధశాలివనక సంతిష్ఠతే సద్గురుః
శ్రీమత్కాంచనసేనపండితపతిః విఖ్యాతకీర్తిప్రియః.

ఈశాసనారంభమున నొకజినప్రతిమయు, దానికింద

శ్రీమత్పరమగంధీర స్యాద్వాదామోఘలాంఘనం
తీయా త్రైలోక్యశాసన్య శాసనం జినశాసనం.

నిత్యపూజాలయ స్వర్ణం శ్రీపల్లవజీనాలయం
నిత్యపూజాలయ స్వర్ణం శ్రీపల్లవజీనాలయం.

అను ఐంగుశ్లోకములు గలవు.

(ii) పూడూరుపక్షిణభాగమున గణపతిగుడివద్ద బాటనాని యుండు బండపైనున్న కన్నడశాసనము. ఇందును ప్రారంభమున జిన విగ్రహమును, పైరెండుసంస్కృతశ్లోకములును గలవు. ఈశాసనము పైపాల్లకరస మరుసటిసంవత్సరము చేసినదానమును పేర్కొనును.

(iii) మల్లి కార్జునగుడి కైదురుగ బాటనడుముగల శిలాఖండముపై గల శాసనభాగము. కరికాలకులప్రదీపకాది తెలుగులోడ బిరుదములు గల రాజశేఖరు డనువానికాలమునాటిది.

(iv) కేశవస్వామిగుడిలో, ప్రవేశమంటపమునందలి యొక స్తంభముపై నుండు శాసనము. అరగిపోయినది. శోమార్జునవరాధీశ్వరుని ప్రశంస యిందు గలదు.

(v) వీరన్నగుడి ప్రక్కనుండు సత్రము గోడలో గజలక్ష్మీదూలముపై రెండుసంక్తులలోని పాతకన్నడాక్షరములు. “స్వస్తి శకవరిస ఎన... నాల్వత్తైబ్బె నెయ సర్వశిత్సంవత్సర ప్రవత్తిసె” యని యొకపంక్తియు, “శ్రీపొరవఁగావుడ్డమాడిసిది” యని మరియొకటియు చెల్లుచున్నవి.

(vi) అదేశత్రములో మూలలో నిలువున సగముభాగము బిగింపబడిన స్తంభముపై తెలుగుశాసనము. ఇందు “శకవరుషం, ప్రజాపతి సంవత్సర, జగదాళ, ఈశ్వరప్రతిష్ఠ, గుడి కట్టించి” యను పదములు తెలియుచున్నవి.

ఇంతవరకు సుదాహరింపబడిన కట్టడములనుండియు, శిల్పముల నలనను, శాసనములమూలమునను, మధ్యయుగమునాటి రాజకీయమత చరిత్రములకు సంబంధించిన విశేషాంశములు గొన్ని తెలియనగు

చున్నవి. మల్లి కార్జునగుడివద్దనున్న శాసనమునుండి పూడూరునకు పూర్వము పుండ్రపురమును నామముండెడిదనియు, నిట నొక దుర్గముండెడిదనియు చెలియుచున్నది. నేటికిని గాంచనగు మట్టిగోడ దాని లోనిభాగమై యుండును. ఈపూడూరిదుర్గమును పండ్రెండవ శతాబ్ది ప్రారంభమున హల్లకరసయనునతడు పాలించుచుండెను. ౧౭-వ శతాబ్ది కీపూడూరుసీమపై వీరారెడ్డియనునతడు నాడగొడుగుండెను. ఆతనియనంతర మాతని దౌహిత్రుడగు పెదనామభూపాలు డీసీమ కధిపతియయ్యెను. ఆరాజు తననివాసమును గద్వాలదుర్గమునకు మార్చినపిమ్మట పూడూరుదుర్గము క్రమక్రమముగ శిథిలమయ్యెను. పశ్చిమచాళుక్యులకును గాకతీయులకును నడుమ ఆంధ్రదేశమును తెలుగువోడు లేలిరి. ఆచారిత్రకాంశమును బలపరచుటకు పూడూరులో రాజశేఖరచోడుని శాసనముగలదు. వీరభద్రగుడివద్ద సత్రములో నొకమూలమున్న శాసన స్తంభము తరువాత జరిగిన వృత్తాంతమును చెబుతున్నది. ఇందు శకవర్ష సంఖ్యగలభాగము తెలియుట లేదు. ప్రజాపతి సంవత్సరముమాత్రము గలదు. ఇందలి యక్షరములు కాకతీయగణపతిశాసనములలోని యక్షరములను పోలియున్నవి. ఈ శాసనములోని జగదాళయనునతడు పాఖాలశాసనమున కాకతిగణపతి సామంతుడుగ పేర్కొనబడిన జగదాళుడు గానోపును. సుప్రసిద్ధ జైన సలముగు పూడూరులో శివాలయప్రతిష్ఠ చేయబడెనని యీశాసనము చెల్లుచున్నది. గణపతిదేవునికాలమున జైనులు హిందూపక్షి రనియు, జైనమతము విజృంభించెననియు స్థానికచరిత్రములు మన్నుగునవి ఘోషించుచున్నవి. కాన నీశాసనమందలి జగదాళుడు పాఖాలశాసనములోని జగదాళుడేయని చెప్పవచ్చును. దానినుండి పూడూరులోగూడ తెలుగువోడులకు వెనుక కాకతీయులు రాజ్యమేలిరని చెప్పవగును.

పూడూరుశిథిలములు మతచరిత్రమునకు మిక్కిలిముఖ్యములు. నేటివీరభద్రదాలయము మొదట జైనదేవాలయముగ నుండెనుట కాయాలమశిఖరమే ప్రబలినిదర్శనము. మల్లి కార్జునగుడివద్దనున్న కన్నడ శాసనములోని పల్లవజీనాలయ మిదియేయగును. అటులయినచో దీని చుట్టును చక్కనిమామిడితోటయొకటి యుండియుండవలెను. హల్లకరసగురువగు కనక సేనభట్టారకు డిబాసే యుండెను. మల్లి కార్జునునిగుడి ప్రక్కన గోడకాన్పియుంచబడిన విగ్రహములలో నేడుపడగలసర్పము తలవైగల దిగంబరజైనవిగ్రహమును, అచటివేయగు స్త్రీపురుషదేవతావిగ్రహములను చేర్చినచో, నొకజైనతీర్థంకరుడు, నాతనివెంబడి గాంచనగు యక్షయక్షిణీవిగ్రహములు నగును. జైనశిల్పకాస్త్రముల ననుసరించి ౨౨-వ తీర్థంగుడగు పార్వ్యనాథునితలపై నిట్టిపడగ యుండవలెను. కాన నీవిగ్రహము పార్వ్యనాథునిదనియు, నీతడు

౧. యశస్సోక తాత్పర్య భారతోద్ఘోగపర్వము, పుటలు ౬-౮.

౨. ఈయూహనుబట్టి యీశాసనములోని ప్రజాపతి సంవత్సరము క్రీ. శ. ౧౨౧౧ కు సరియైనదని నిర్ణయింపవచ్చును.

౩. Ind. Ant. for 1927, p. 8.

నీరని యక్షయక్షిణీవిగ్రహములును పూడూరు పల్ల వజినాలయమున మొదటనుండినదనియు జెప్పవచ్చును. ౧౨-వ శతాబ్దిలో కై నకై వమత ములకు యుద్ధముజరిగి, కై విము జయించి కై నమతమును విధ్వంసమొనర్చినని యిదివరలో చెప్పియుంటిమి. ఆమత సంఘర్షణము పూడూరు లోగూడ జరగినది. పల్ల వజినాలయము చీరన్న గుడిగ మారి, యందలి కై నతీర్థంకరునకుబడులుగ శివలింగవీరభద్రవిగ్రహములు స్థాపింపబడుట యందుల కొక ప్రబలిదర్శనము. ఈచీరన్న గుడివగ్గర సత్రపుగోడలో నున్న శిల్పములలో నాల్గవదిగూడ నీవిషయమునే నూచించుచున్నది. ఇది యొకసాంకేతిశిల్పమని తోచుచున్నది ఇండలితవిగ్రహమును, లింగమును కై నకై వమతములను నూచించును. వీనికింద నిర్వగు యోధులు పోరాడుట పైరెండుమతములకును జరగిన సంఘర్షణమును దెల్పుచున్నది. కై నవిగ్రహముక్రిందనుండు రాతుకాళ్ల వద్దగల మృతదేహ మాతనిదేయనియు దస్తాలమున కై నమత పరాజయమును, కై వమతవిజయమును నూచింపబడుచున్న వనియు స్పష్ట మగుచున్నది. దీనికిఫలితముగనే పల్ల వజినాలయమున శివలింగమును,

వీరభద్రవిగ్రహమును బ్రతిష్ఠింపబడియుండును. ఇచటి సత్రములోని స్తంభముపైగల కాసనమున నొక శివాలయము గట్టింపబడెనని యున్నది. ఇది నేటి వీరన్న గుడియగుటకు వీలులేదు. కాన నీయూర మరియొక శివాలయ ముండెడిదని చెప్పవలెను. సత్రముగోడలో బిగింప బడిన నటరాజవిగ్రహముగలదూల మీ యాలయములోనిదే యనియు, నీయాలయము నాదూలమువలె భూగర్భమునం దుండుననియు నూహింపవచ్చును. ఇట్టి నటరాజవిగ్రహముగల దూలము హనుమ కొండ రుద్రదేశ్వరాలయమునం దుండుట పై యూహను బలపరచు చున్నది. పూడూరులోని కేశవాలయము ౧౭-వ శతాబ్దినాటికే శిథిల మైనదని యిదివరలో చెప్పియుంటిమి. ఇచటి సత్రపుగోడలో నున్న రామాయణమునందలి ఘట్టములు గలస్తంభ మచటిదే యైయుండును.

ఈవిధమున పూడూరుగ్రామములోని శిథిలములు మిగులముఖ్య ములైనవి. ఇంతవరకును వాఙ్మయమునను, స్థానికచరిత్రములనుగును గాంచనగు మతచరిత్రమునందలి ముఖ్యాంశములు వానినుండి స్పష్ట ముగ దెలియుచున్నవి.

క్రాపింగుల గ్యాలరీ—(కొన్ని నూచనలు)



ఈ యిరుల నీమెఱపు లేలనే మిణుగురా !
ఈ నిశల నీపయన మెచటకే మిణుగురా !

విశ్వహృదయమ్ములో
వెల్లివిరిసే సుధా
ప్రేమసౌందర్య మ
స్వేషించుకొనెదవా ?—

మిసిమివెన్నెల లీను
పసిడిమాలల నల్లి
ఈ నిశాంగనగళము
నిట్టై కై నేతువా ?—

ఈ యిరుల నీమెఱపు లేలనే మిణుగురా !
ఈ నిశల నీపయన మెచటకే మిణుగురా !

నలపులే నిండ్లారు
భాగ్యజీవనముతో
ఆటగా పాటగా
అలయ నర్తింతువా ?—

జ్యోతిర్లవమ్ము లగు
ద్యుతిపరంపరలతో
పదున్నాల్గు భవనాల
బంధించివైతువా ?—

ఈ యిరుల నీమెఱపు లేలనే మిణుగురా !
ఈ నిశల నీపయన మెచటకే మిణుగురా !

వినపుచీకటిగములు
మసలు ఈరేయిలో
చుక్కలుగ చుక్కలుగ
సుధలు చిలికింతువా ?—

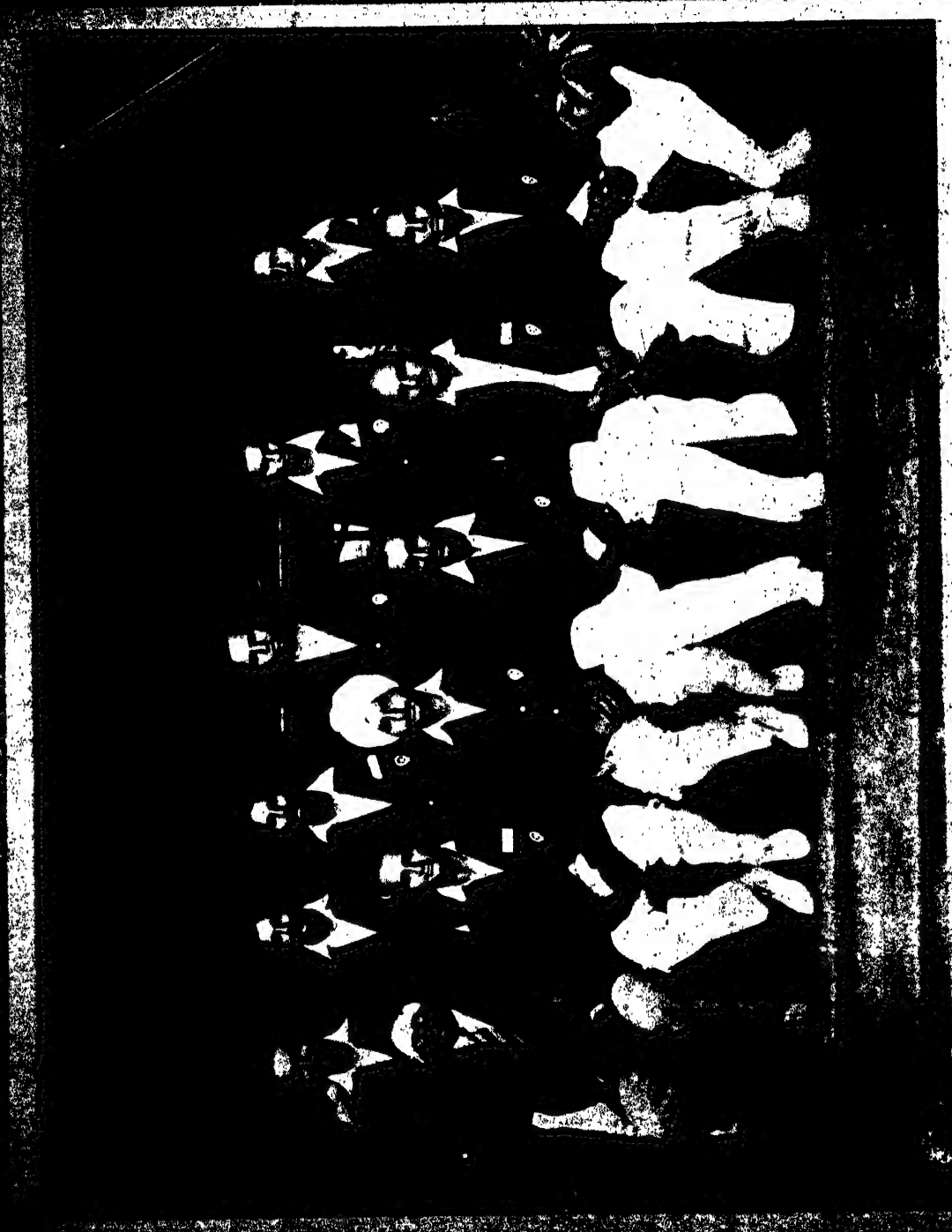
విసికి వేసారకే
విశ్రాంతియే లేక
ధాత్రిలో ఎడతెగని
యాత్రసాగింతువా ?—

ఈ యిరుల నీమెఱపు లేలనే మిణుగురా !
ఈ నిశల నీపయన మెచటకే మిణుగురా !

ఆగవే—నీపయన
మాపి, నాయెడద నీ
కర్పించు కానుకల
నందుకొందువుగాక !—

కొనిపోవగదవె ! నను
కూడ నీవెనువెంట
ఎచటికో దూరాన
పపుణ్యభూమికో !—

ఈ యిరుల నీమెఱపు లిట్టై మెఱసినదాక !
ఈ నిశల నీపయన మిట్టై సాగినదాక !



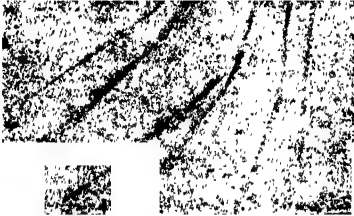


1. కెప్టెను జార్జ్ డ్రెసు. 2. పాటియాలా యువరాజు. 3. మేజరు పి. కె. నాయుడు. 4. గాదె నారాయణమూర్తిగారు.
5. విశిషాటి రామమూర్తిగారు. 6. నాటి నారాయణరావుగారు.



దేశప్రియ జతీంద్ర మోహన సేనుగుప్త

పి. సుబ్బారావు, యం పి., బి. యల్.



[" Let freedom be the thought of your day and the dream of your night. "
—J. M. Sengupta.]



దేశప్రియుని మరణవార్తను విన్నంతనే దేశమెల్ల దుఃఖాబ్ధి మునిగిపోయినది. వినయ వివేక మనోబల సంపన్నుం డగు నీ యనఘుని అకాలమృతివలన పుత్ర మిత్ర బంధవానుచరులలో చింతింపనివారు లేరు. వలచి వలసింపజేసి జీవితాంతమువరకు అత్యధికప్రేమాదర ములచే తన్నానందఊలికల నూపిన ప్రియుని పోకచే ప్రియురాలు పుత్రుల నిరువుర కొగలించుకొని పెద్ద పెట్టున విలపించినది. స్వాతంత్ర్యసమరమును సంరంభ ముతో నడపిన మహారథుడు మడిసెగదాయని మహా త్ములు కన్నీరు నించరి. ఎల్లవేళల సోదరులవలె మన్నించి ప్రేమించిన పురుషోత్తముడు తమ్ము విడనాడిపోవుటచే తురకలెల్ల శోకనిమగ్నులైరి. మానసికాధ్యాత్మికశక్తుల నెల్ల మాతృభూమి కే యర్పణజేసిన మహనీయు లొకరి వెంట నొకరు మృత్యువునోట బడుట మిగుల శోచ నీయము. జతీంద్రుడు సాటిలేని స్వార్థత్యాగి. ఐహిక సుఖముల నెన్నడు నతడు పాటింపలేదు. ఆధ్యాత్మికానందమే యతడు వాంఛించినది. స్వాతంత్ర్యరంగమే యతని పడకటిల్లు. నిరుపేదలే యతని బంధువులు. ఊణమైనను విశ్రాంతి యెరుగని పైనికోత్తముడతడు.

జతీంద్రునిజనకుడు స్వాతంత్ర్యాభిలాషి. పుత్రుని జాతీయభావముల స్తుతించువాడు. ఇంగ్లాండులో బారి

స్టరుపట్టము నొంది ౧౯౧౦-వ సంవత్సరములో జతీంద్రుడు కలకత్తా హైకోర్టులో న్యాయవాదవృత్తిని స్వీకరించెను. కాని యాతని హృదయమెప్పుడును జాతీయోద్యమంపు దెసయే తిరుగుచుండెడిది. అయిదారు వత్సరములు పెనగులాడియు న్యాయవాదులలో పేరు గడింపలేక పోయెను. అయినను ౧౯౧౮-వ సంవత్సరమునుండి జతీంద్రునిప్రాక్టీసు క్రమముగా విజృంభించినది. సాటిలేని క్రిమినలులాయరని యతనిపేరు నలుమూలలకు ప్రాకి పోయినది. ధనార్జనమునకు గొరతలేదు. మరియు నతనికి పితౄర్జితం బగు గొప్ప 'జమీ' గలదు. ధనధాన్య సాభాగ్యము లెన్నియున్నను అతడు మన భరతజాతిని మరువలేదు. రేయుంబవలు భారతజాతీయ దాన్య శృంఖలల దెగనరుకు మార్గముల నన్వేషించువాడు. పేరుపడి పైకివచ్చురోజులలో దేశసేవ కడ్డుతగిలెనని వకీలువృత్తిని విసర్జించిన సత్యాగ్రహి జతీంద్రుడు.

ఇంతలో ౧౯౨౧-వ సంవత్సరము ఏప్రిలునెల వచ్చినది. చిటగాంగులోని బర్మాటియలుకంపెనీలో పని చేయు పనివాండ్రను పాలకులు బాధింపసాగినారు. చిటగాంగు జతీంద్రుని జన్మభూమి. సోదరులమొరల నాలించి సమ్మోకట్టించినాడు. పాలకపాలితులమధ్య రాజీప్రయత్నములన్నియు విఫలమగుటచే పనిలేని ౧౯౦౦

మంది పనివాండ్ర బోపించు బాధ్యత వైనబడినను జంకక నడుముబిగించి నాయకత్వమును బూని దీనులపాలిటి కల్పవృక్షమైనాడు. వైత్యకంబగు జమీయెల్ల దెగనమ్మి వారల నందరిని నాలుగుమాసములు పోషించినాడు. న్యాయవాదవృత్తిని విసర్జించుటచే చేత గవ్వలేకుండినను రు. ౪౦౦౦౦ ఋణముజేసి పలుకష్టములకు పాలైనాడు.

ఇంతలో సహాయనిరాకరణోద్యమపు భేరిలు మ్రోగినవి. మహాత్ముడు దేవదత్తమును పూరింప నాయకులెల్ల సన్నద్ధులైరి. జతీంద్రుడు రణరంగమున దుమికి పలుమారులు కారాగృహవాసకష్టముల ననుభవించినాడు. చిత్తరంజనుడు స్థాపించిన స్వరాజ్యపక్షపు కార్యనిర్వాహకుడై యామహానీయునకు కుడిభుజమైనాడు. నిరుపమానమగు జతీంద్రమోహనుని కార్యక్షేత్ర, స్వార్థత్యాగము, పూహనిర్మాణదక్షత చిత్తరంజనుని ఆకర్షించినవి. పదునుపెట్టినకత్తి జతీంద్రుని బుద్ధి. మృదుత్వమున పూరేకులను మించినది జతీంద్రుని హృదయము. ఆంగ్లయువతి యగు గృహిణిని నెల్లీకేను తగురీతిని పోషింప దగుధనము లేకున్నను దేశప్రియుడు ఛైర్యమును వదలలేదు. విసరివైచినభక్త్యుమగు న్యాయవాదవృత్తిని మరలస్వీకరింపలేదు. నెల్లీ సతియు సదానాథుని సనుకరించు సాధ్వి. ఆంగ్లయువతి యయ్యు వస్త్రాభరణాలంకారనిత్యమర్యాదలలో భారతరమణీమణులనే యనుకరించును. అనిబిసెంటుకువలనే నెల్లీకి భారతీయులయెడ ప్రేమాదరణములు మెండు. పతిభారతజాతిని లేవనెత్తుట కామె కంకణముకట్టినది. భారతజాతీయ దాస్యవిముక్తికై పాటుపడు ప్రియునికి దోడునీడయై ప్రోత్సహించుచుండెడిది. నెల్లీ జతీంద్రుల దాంపత్యమే దాంపత్యము.

చిత్తరంజనుని బుద్ధికుశలతకు జతీంద్రుని కార్యసాధనతత్పరత తోడై వంగరాష్ట్రమున ద్వంద్వప్రభుత్వ విధానముల నంతరింపజేసినది. చిత్తరంజనుని మరణాంతరము ఆమహానీయుని స్థాన మధిష్ఠించుటకు జతీంద్రుడే తగియుండెను. వంగీయులెల్ల నేకగ్రీవముగ జతీంద్రుని

వంగరాష్ట్రీయ-కాంగ్రెసు-సభాధ్యక్షునిగను, రాష్ట్రీయ శాసనసభాజాతీయ పక్షనాయకునిగను, కలకత్తామేయరుగను ఎన్నుకొనిరి. ఇట్లు కిరీటత్రయము నొక్కఁచి ధరించిన దేశప్రియుని దీవించి మహాత్మాజీ ' సకలజనసంస్తుతి పాత్రు డగు సజ్జను ' డని సెలవిచ్చిరి. స్థానికసంస్థలను, శాసనసభలను అన్నిటిని వశఁపరచికొని నిరంకుశప్రభుత్వపు పోకడల బ్రతిఘటించుటకు స్వరాజ్యపక్షనాయకులు ప్రతిసవట్టినకాల మది. పురపాలక సంఘాధ్యక్షుడై స్వరాజ్యపక్షనాయకుడయ్యు తన పలుకుబడినంతను దేశీయోద్యమప్రాచుర్యమునకే వెచ్చింపక రేటుపేయర్ల కష్టసుఖముల పాటించి యలరిన మహారాజకీయవేత్త జతీంద్రుడు. అతని కధికారకాంక్ష లేదు. పురపాలక నియమానుష్ఠానములకును, రాజకీయవ్యవహారములకును జతీంద్రు డెన్నడును లంకెపెట్టలేదు. పురపాలకసంఘ సభ్యులగు యూరోపియనులు, తురుష్కులు, హిందువులు, హైందవక్రిస్టియనులు, ఆంగ్లోయిండియనులు-అందరును జతీంద్రుని నిష్పక్షపాతబుద్ధిని ప్రేమించి కొలుచుట వలననే అయిదుపర్యాయములు నగరమునకు మేయరై ప్రపంచవిఖ్యాతమగు కీర్తిని ఆర్జించినాడు. అతనిపాలనమున నగర మన్నివిధముల బెంపొందినది. జాతిమత భేదముల లెక్కింపని పూతచరిత్రుడు జతీంద్రుడు. ప్రాకృష్టిమనాగరకతాసంప్రదాయములు జతీంద్రునిలో మేళవించినవి. లోకమాన్యుని స్ఫురణకుదెచ్చు జతీంద్రుని పట్టుదల, ఉత్సాహము, నిరంతరఛరిత్రమ పాశ్చాత్యధర్మ సంప్రదాయముల మూర్తీభవింపజేసినవి. హైందవులకు సహజములగు సహనశక్తి, పరమార్థచింత, ఐహిక కాంక్షావిరతి, అన్నియు జతీంద్రునిజీవితమున బ్రతిబింబించినవి. జతీంద్రునివాగ్ధోరణి కరంబు స్ఫుటమై, ఆవేశపూరితమై, సర్వజనాకర్షణీయమై యుండెడిది. అతని ప్రకృతికి సహజము లగు నిష్కమటత్వము, మొగమాటములేమి, నిరహంకారము, ఫలనిరపేక్ష అన్నియు అతని నిత్యకృత్యములలో, అతని యుపన్యాసపరంపరలలో ప్రతిధ్వనించుచుండెడివి.

జతీంద్రుడు కాంగ్రెసునాయకులలో అతివాది యని కొందరందురు. చీటికిమాటికిని మతములమార్పు కొనుమత మతనికి నచ్చదు. ఆదర్శము లను సీటిబుగ్గల నెగురనెంచని కర్మయోగి జతీంద్రుడు. నిరంకుశాధి కారుల స్తోత్రపాఠముల కుబ్బి తబ్బిబ్బులై తాళములు వేయు మితవాదులన్న నతనికిరోత. తరుచ్ఛాయలగాంచి తరువులేయని భ్రమించు నజ్ఞత్వ మతనికి లేదు. స్వయంకృషియే స్వరాజ్యసోపానమార్గమని జతీంద్రుని యుపదేశము. నలువదిమూడవ జాతీయమహాసభాహాస్వాన సంఘాధ్యక్షోపన్యాసమున జతీంద్రు డిట్లుచెప్పెను: “దేశ మాతయొక్క దాస్యవిమోచనము ఆమె సంతతి వైననే ఆధారపడియున్న కతమున జాతీయంతయు నొక్క పరి నడుముబిగించి ఏకోద్దేశ్యముతో సమష్టిగా కృషి చేయుటయే శరణ్యము. స్వబలముల బ్రేరేపించుచు మనకాళ్లపైననే పూనికతో మనము నిలువవలయును. నవీనశకమున మనలనావరించిన విపరీతజాత్యాచార ములే మన విఫలప్రయత్నములకన్నిటికిని మూలాధార ములు. పురుషోత్తముడగు మహాత్ముడు పూని నడిపిన సహాయనిరాకరణోద్యమ మేల విఫలమైనది? అరవిందు డేల సన్యాసియయ్యె? చిత్తరంజనుని హృదయకుటీర మేల పటాపంచలైనది? మూఢభక్తి, సాంఘికవైషమ్య ములు, వర్ణవిభేదములు, మగువలముసుగులు (Purdah), బహుపత్నీత్వము, బాల్యవివాహములు: ఇవి అన్నియు భారతజాతీయారోగ్యవృక్షమునకు మూలహేతువులు. మనజీవితములలో పొందిక లేదు; ఐక్యము లేదు. మన దేశభక్తి సాంఘికము. మనఅన్యోన్యతయన కేవలము పరస్పరసద్భావముమాత్రమే. దానిలో జీవము లేదు; స్థిరతలేదు. ఈ నూత్నప్రపంచములో మనజాతి తల యెత్తి తిరుగవలెనన్న సనాతనత్వమునకు తిలోదకముల నివ్వవలెను. త్రుప్తవట్టిన శస్త్రాస్త్రములచే మింటనెగయు విమానముల నెగురగొట్టగలరా? స్వాతంత్ర్యపీఠమును స్త్రీకి సమర్పింపుడు. నిర్లక్ష్యముతో సగముజాతిని దాస్యకూపముల మురుగబెట్టి నిర్జీవమగు తక్కినసగ

ముతో స్వప్రయోజనముల సాధింపజాలరు. వర్ణవిభేద ముల దరుమగొట్టుడు. ఆధునికహైందవాధికజీవిత ములో అది సాధించుకార్యమేమి? ఆదిని, వర్ణాశ్రమ ముల వెన్నంటియున్న ఆర్థికోద్దేశ్యము లిప్పు డంతరించి నవిగదా! ఈవర్ణవిభేదములు అర్థములేని సాంఘికకలహ ముల కునికిపట్టు జాతీయభావముల నణగ ద్రొక్కు చున్నవి. సదా పూర్వాచారముల మన్నించు మూఢ మతము మనలో నాటుకొనియుండుటచే గతపురుషాంత రముల వేయబడినపునాదు లక్కరకు రాక వెంటనే జీర్ణించుచున్నవి. కనుకనే రామమోహనరాయ, విద్యాసాగర, వివేకానందులవంటి మహానీయులు జీవిత పర్యంతము సల్పినకృషి రవ్వంత ఫలించి జాతీయాభి వృద్ధికి దోడ్పడినను వెనుదిరిగి మరల యథాస్థానముల జేరుచున్నాము. కాన, రాజకీయవిప్లవమునకు చేదో డుగా సాగిపోవు సాంఘికవిప్లవ మత్యవసరము. సాంఘిక రాజకీయవిషయములలో క్రమేపి స్వాతంత్ర్యమును సాధింపనగునని మనము నమ్మజాలము. సమూలపరి వర్తనము లేకున్న అది దుస్సాధ్యము. రేయుంబవలు స్వాతంత్ర్యమంతమునే సంస్కరింపుడు. రానగుకష్టపరం పరల లెక్కింపక, నిరంకుశులు చేయనగు కఠినచర్యల ధాటికి చలింపక హైందవసోదరసోదరీమణులెల్ల జాతీయ పతాకముల నెగురవైచుచు సర్వమానవసమానత్వ సహోదరత్వాదిభండననాదములతో స్వతంత్రభారత సౌఖ్యపుజీవితముల పొంతకు దరలిపొండు. శక్తులన్నటి గుమిగూర్చి విజృంభించి మహోన్నతపదవిని మెరయు చుండు భరతమాత పదపద్మములచెంతకు మహోత్సా హమున దరలిపోవు మిమ్ముల నెట్టిశక్తియు నిరోధింప నేరదు.”

అఖిలభారతనియంతయై శాసనోల్లంఘనోద్యమ మును నడుపు జతీంద్రమోహనుని ౧౯౩౦-వ సం. నవం బరు మూడవతేదీన రాజద్రోహనేరముపై నిరంకుశాధి కారులు నిర్బంధించి యొకసంవత్సరము విడిఖైదును విధించిరి. పలుమారులు కారాగృహముల నిర్బంధింప

బడుటచే జతీంద్రునియూర్గాయము చెడినది. బలిష్ఠమగు కాయ మెంతకృశించినను జతీంద్రుడు సత్త్వాగ్రహవ్రతమును విడువలేదు. ఎన్నివిఘాతములుప్పట్టిల్లినను లెక్కగొనక భారతవీరుడగు కర్ణునిపోల్కి ద్విగుణీకృతతోత్సాహముతో ముందుకు దుముకుచుండెడివాడు. వివరితమైన రక్తపుపోటుచే నవయుచుండియు రణభూమిని వీడలేదు. శిక్షాకాలము ముగియగనే ఆరోగ్యాభివృద్ధికై జతీంద్రుడు పట్నీ సహితుడై ఆంగ్లదేశమున కరిగి భారత జాతీయాశయముల వేనోళ్ల చాటినాడు.

అప్పుడు గాంధీగారు రెండవ శాండుటేబిలు సభలో పాల్గొనుచుండిరి. గాంధీగారు మరల హిందూ దేశమునకు దిరిగిరాకమునుపే గాంధీ - ఇర్విన్ ఒడంబడికను నిర్మూలించ ప్రభుత్వాధికారులు నిశ్చయించి, జవ్వరిలూలు, గపూరుఖాన్ ప్రభృతుల నిర్బంధించిరి. చేయునదిలేక గాంధీజీ మరల శాసనోల్లంఘనమును ప్రారంభించ, నాయకులెల్ల నొక్కపెట్టిన కఠినశాసనముల పాలైరి. ఇదంతయు జతీంద్రుని హృదయమును తీగ్రభింపజేసినది. కష్టకాలమున మాతృభూమిని విసర్జించుట జతీంద్రునకు రుచింపలేదు. సమరసమయముల రణరంగమును వీడియుండుట వీరునికి లోపమని జతీంద్రుడు నిశ్చయించెను. శరీరమున రుగ్గత నశింపకున్నను స్వదేశమునకు బరువులెత్తెను. భారతభూమిపై నడుగిడక ముందే ౧౯౩౨-వ సం. జనవరి ౨౦-వ తేదీన ౧౮౧౮ సం.పు మూడవ రెగ్యులేషనుక్రింద మరల జతీంద్రుని నిర్బంధించిరి. అతని యూర్గాయము తిరుగ క్షీణించినది. ఇట్టి నాయకోత్తముని ఆపత్సమయమందైనను విడుదల చేయుట ప్రభుత్వమునకు 'కనీసధర్మ' మై యుండెను. ఢిల్లీసింహాసనాధిరూఢు లగు నిరంకుశప్రభువులు స్వధర్మముల గుర్తింపలేకపోయిరి. 'జల్పాయిగురి' జయిలులోను, ఆలిపూరు సెంట్రలు జయిలులోను జతీంద్రుని పలుకష్టములపాలుచేసి అవసానసమయమున 'రాంచీ' సానెటోరియమున నుంచిన లాభమేమి? ౧౯౩౩-వ సం. జూలై ౨౨ - వ తేదీ రాత్రి జతీంద్రుని రక్తపుపోటు తీవ్రముగ పోచినది. దుర్భరమగు తల

నొప్పిచే బాధపడుచు ప్రియసతియగు నెల్లీని చేరువకు పిలిచినాడు. కనుల జలములొలుక కడసారి కౌగిలీయమన్నాడు. పొరలివచ్చు కన్నీటిధారలు నేల దొరల చేసాచినది నెల్లీ. ఇంతలో జతీంద్రునికి స్పృహ తప్పినది. మూసినకనులు తిరుగ తెరువలేదు. జతీంద్రుని ఆత్మ అంతర్వీధుల నప్పడే పరుగిడిపోయినది. భౌతికశరీరమును త్యజించినాడు జతీంద్రుడు. అనాధయగు దేశమాతహృదయమెల్ల నిలుపునీరైపోయినది. మరునాడు ప్రాతఃకాలసమయమునకు జతీంద్రునిశవము కలకత్తా పురము ప్రవేశించినది. ఎల్లెడ విషాదపుముసురు. అనుచరుల ఆర్తనాదములు మిన్నుముట్టినవి. శవమువెంట నూరేగుచు శ్మశానమున మూగినమూక మూడులక్షలకు మించినది. ఆనాడు కలకత్తానగరమంతయు కన్నీటి కాలువలమయమై పోయినది. మేయరైన సంతోషకుమారబాసుగారు మృతకళేబరమును పుష్పమాలాలంకృతంబుగ నొనర్చి సాటిలేనివీరుడని హెచ్చరించిరి. విద్యార్థులు, విద్యార్థికులు, పండితులు, పాదురులు, నాయకులు, గాయకులు, పాలకులు, పాలితులు, హైందవులు, తురుష్కులు, బాలురు, వృద్ధులు, స్త్రీలు, పురుషులు-అందరును జతీంద్రుని శవమునకు జోహారు లొనర్చిరి. శాసనోల్లంఘనోద్యమమును అణచివైచితిమని తలచు నధికారు లికవైననుజతీంద్రునియెడ జనులెల్ల వెలిపుచ్చిన భక్త్యనురాగముల బరికించి తమ మతముల దిద్దికొందురుగాక! పూతచర్మిత డగు జతీంద్ర మోహను డైహికదేహమును విసర్జించినను కళంకరహితమగు ఆపుణ్యుని యాశ్మ దిక్కుచికమై మింట మెరయుచు భారతజాతిని కనిపెట్టియేయుండును. కాని, రవీంద్రుడన్నట్లు, ఇట్టిమహనీయులను కారాగృహకూపముల మడియనీయుట మనజాతికెల్ల మాయని మచ్చ.

"He was a man of peace and refinement, but when his country called he rejoiced to offer his life at the altar of his country's freedom. The memory of such a life, nobly lived and freely given, is at once India's glory and shame."

—Rabindranath Tagore.

జతీంద్రుని ఆత్మకు శాంతియగుగాక!

[మార్వాడ సంస్థానాధిపతి అమరసింగగారాబుమాతడు విమల తురకల సరకుగానక వారితోడి పెండిలి నిరాకరించి తాజపునునిదక్క వేతోక్కని వరింపనని నిక్కపుప్రతిని బట్టి కన్నియగనే కాలము గడపుచుండెను. అట్టితరి డౌరంగజేబు కిల్లాలు, విమలకు తోబుట్టువు నగు కేశరి తగు నాడంబరముతో పుట్టింటికి వచ్చెను. తలిదండ్రులు, తక్కుంగలవారు తగినరీతి నామెను గారనించిరి. విమలమాత్రము పాపభీతిచే నామె మొగము జూడనొల్లక, ఒంటరిగ నొకగదియందు హర్షుండి ముక్కంటి గొలుచుచుండ, చెల్లెలిజూచు నిచ్చతో కేశరి అచ్చటకు వచ్చి ముక్కంటి దెగడి, పాదుషాను బొగడి, అతనిని వరింపుమని పలికెను. దానికి కోపించి ప్రత్యుత్తరించిన పలుకు లివి:]

పడతిరొ : ఏల కీ మిడిసిపాటు ప్రభుం డవురంగజేబు ప్రే
ముడిచెలి మైతినంచు తలపోయుచు సర్వము విస్మరించి, యీ
బెడిదపు పోటుమాటల నుపేక్షగ దైవము దూలనాడగా
చెడుతల పేంగల్గెడు నిసీ ! తలకెక్కెనె కన్ను లింతకు.

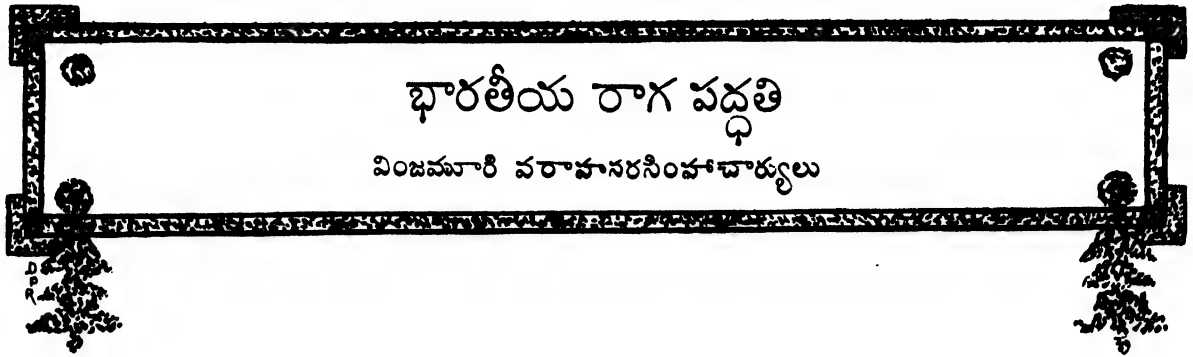
పుట్టిన రాజపుత్రకులముఖ బరికింపక, పాదుషాను చే
పట్ట కులంబుగారవము భగ్న మొనర్చి తురుష్కుజాతిలో
చెట్టతనంబున బ్రతుకుజీవిని ని న్గని మానినీమణుల్
రట్టానరించుట గనియు లజ్జను బొంద విదేమి కేశరి !

పోతపోసిన బంగారుబామ్మ వీవు - గూనిగడ్డాల పోతుసుల్తాను వాడు
వెలది, కోటికి కొల్లాయిపెట్టినట్లు - ఏమిసాం దిది తెలియ దూహించిచూడ.

చెలియరొ ! తండ్రి నీ కమరసింగు మహానయశాలి, అన్నద
మ్ములు రసపుత్రకుంజరులు, పొచ్చెములేని స్వరూపదీప్తి, కా
వలసినయంత వైభవముపై తులదూగెడి నీవు కాకిముక్కున
గలిగిన దొండపండువలె గన్నడుచుంటి తురుష్కు జేరిన.

పెల్లుగ వైభవా లనుభవించుతలంపున నీవు వీరుల
ఒల్లక, ఆర్యధర్మముల నొప్పరికించి శృజించి మానము
ఎల్లిదుడౌ తురుష్కుని గ్రహించియు “తా చెడుకోతి అ వ్వనం
బెల్లను చెర్చి”నట్టుల వచింతువు పెండిలియాడుమంచు న.

ప్రాణములవైన బాయుదుగాని మాన - ముజ్జగించి ధర్మంబు గోల్పోయి, తురక
వెధవ మొగమైన నేను దర్శింపనుమ్ము - దైవ మీమహేశ్వరుని పాదముల సాక్షి.



భారతీయ రాగ పద్ధతి

వింజమూరి వరాహనరసింహాచార్యులు

ప్రస్తావన

కడచిర ఆంగీరస. శ్రీమఖవత్సరముల ఉగాదిసంచికలందు భారతీయరాగపద్ధతినిగూర్చి చెప్పుచు గ్రామరాగకాలమందలి భాషా విభాషాంతరభాషాజాతిగ్రామరాగాది విభాగమునుగూర్చియు, అనంతరము మేళపద్ధతినిగూర్చియు చెప్పుచురామామాత్యుడు, సోమనార్యుడు, దామోదరుడు, అహోబలుడు మున్నగు వాగ్గేయులమతము ననుసరించి గ్రహింపబడు మేళములు, వీనియందలి జన్యరాగములు మున్నగువాని గూర్చియు తెలిపియుంటిమి. మరియు రాగములు పరిస్ఫుటమగుటకు వలయు గ్రహంశాదిలక్షణము భరతశార్దూలదేవరామామాత్యు సోమనార్య వెంకటమఖ్యానుల యభిమతముల ననుసరించి గ్రహింపబడునట్లు చెప్పియుంటిమి. గ్రహంశాదుల వివరమునూడ కృత్యముగ దర్శింపింపిమి.

మేళములపద్ధతి వేంకటమఖికాలము (క్రీ. శ. ౧౬౬౦) వరకు ఆనుసరింపబడినట్లు శ్రీమఖఉగాదిసంచికయందు తెలిపి యుంటిమి. ఈపద్ధతియందు వారివారిమతముల ననుసరించు ప్రకృతివికృతిస్వరములను ప్రతిమేళమునందు ఒకటి తరువాత మరియొకటి చేర్చి యిరువది, లేక యిరువదియూడు, లేక పందొమ్మిది యిట్లు మేళములు వరుసగ రామామాత్యుడు, సోమనార్యుడు, వెంకటమఖి—వీరిచే జెప్పబడిన విధము తెలిపితిమి. ఏయే మేళమునం దేస్వర మెట్లు చేర్చబడినదియు నిష్ఠ డెంచుట భాష్యము కాకపోదు. వీని నిట్లు చూడనగును :

రామామాత్యుని మేళములు:—

ఈయన వెలయించిన మేళములందలి స్వరముల నారయుటకు ముందు వీరిప్రకృతి వికృతస్వరములను గుర్తించుట ముఖ్యము. రామామాత్యుడు శార్దూలదేవునివలె ౧౮ స్వరములను గ్రహింపక శుద్ధస్వరావళిగ నెంచబడు పక్షగ్రామస్వరావళియు, మరి ఏడువికృతస్వరములను మొత్తము పదునాలుగుస్వరములు చెప్పియుండెను. ఇతని వికృతిస్వరములు—(౧) పట్టుతిరియువధము, (౨) అంతర గాంధారము, (౩) చ్యుతమధ్యమము, లేక చ్యుతమధ్యమగాంధారము, (౪) చ్యుతపంచమము, లేక చ్యుతపంచమమధ్యమము, (౫) కైశినిషాదము, (౬) పక్ష

నిషాదము, లేక కాళినిషాదము, (౭) చ్యుతపక్షము ఇట్లున్నవి. పట్టుతిరియువధసాధారణగాంధారములు, పట్టుతిరిదైవత కైశినిషాదములు, శుద్ధగాంధార పంచశ్రుతి ఋషభములు, శుద్ధనిషాద పంచశ్రుతిదైవతములు ఒక్కస్వరస్థానము కలిగియున్నవని ఇతని అభిప్రాయము. వీనిజేర్చి తన యిరువదిమేళము లిట్లు చెప్పినాడు:—

మేళములేరు

స్వరములు

౧. ముఖారి—శు. స, రి, శు. గ, శు. మ, శు. ప, శు. ద, శు. ని.

౨. మాళవగాడ—శు. స, శు. రి, చ్యుతమధ్యమ గ, శు. మ, శు. ప, శు. ద, చ్యుతపక్ష ని.

౩. శ్రీరాగము—శు. స, పంచశ్రుతి రి, సాధారణ గ, శు. మ, శు. ప, పంచశ్రుతి ద, కైశి ని.

౪. సారంగనాట—శు. స, పంచశ్రుతి రి, చ్యుతమధ్యమ గ, శు. మ, శు. ప, పంచశ్రుతి ద, చ్యుతపక్ష ని.

౫. హిందోళ—శు. స, పంచశ్రుతి రి, సాధారణ గ, శు. మ, శు. ప, శు. ద, కైశి ని.

౬. శుద్ధరామప్రియ—శు. స, శు. రి, చ్యుతమధ్యమ గ, చ్యుతపంచమ, శు. ద, చ్యుతపక్ష ని.

౭. దేశాక్షి—పట్టుతిరి రి, చ్యుతమధ్యమ గ, శు. మ, శు. ప, పంచశ్రుతి ద, చ్యుతపక్ష ని.

౮. కన్నడగౌళ—శు. స, పట్టుతిరి రి, చ్యుతమధ్యమ గ, శు. మ, పంచశ్రుతి ద, కైశి ని

౯. శుద్ధనాట—శు. స, పట్టుతిరి రి, చ్యుతమధ్యమ గ, శు. మ, పట్టుతిరి ద, చ్యుతపక్ష ని.

౧౦. అపిరి—శు. స, పంచశ్రుతి రి, సాధారణ గ, శు. మ, శు. ద, చ్యుతపక్ష ని.

౧౧. నాదరామక్రియ—శు. స, శు. రి, సాధారణ గ, శు. మ, శు. ద, చ్యుతపక్ష ని.

౧౨. శుద్ధవరాలి—కు.స, కు.రి, కు.గ, చ్యుతపంచమ మ, కు. ద, చ్యుతపడ్డ ని.

౧౩. రీతిగాళ—కు.స, కు.రి, కు.గ, కు.మ, పంచశ్రుతి, కై. ని.

౧౪. వసంతశైరవి—కు.స, కు.రి, చ్యుతమధ్యమ గ, కు.మ, కు.ద, కై. ని.

౧౫. కేదారగాళ—కు.స, పంచశ్రుతి రి, చ్యుతమధ్యమ గ, కు.మ, పంచశ్రుతి ద, చ్యుతపడ్డ ని.

౧౬. హూజ్జోజ్జి—కు.స, కు.రి, అంతర గ, కు.మ, కు.ద, కాకలి ని.

౧౭. సామవరాలి—కు.స, కు.రి, కు.గ, కు.మ, కు.ద, కాకలి ని.

౧౮. రేవసప్తి—కు.స, కు.రి, అంతర గ, కు.మ, కు.ప, కు.ద, కు.ని.

౧౯. సామంత—కు.స, వట్టుతి రి, అంతర గ, కు.మ, వట్టుతి ద, కాకలి ని.

౨౦. కాంభోజి—కు.స, పంచశ్రుతి రి, అంతర గ, కు.మ, కు.ప, పంచశ్రుతి ద, కాకలి ని.

చెంకటమఖి మేళములు:—

ఇక చెంకటమఖి మేళములందలి స్వరముల నారయదము. వికృతస్వరము లెంచుటలో రామామాత్యునకును, చెంకటమఖిని కొలదికృత్యాసము కలపనునది మరువకూడదు. రామామాత్యుడు చెప్పిన అంతర, కాకలిస్వరస్థానము లితడు చెప్పలేదు. చెంకటమఖి చెప్పిన అంతరగాంధారకాకలి నిషాదములు వరుసగ రామామాత్యుని చ్యుతమధ్యమ గ, చ్యుతపడ్డ ని స్వరస్థానములకు తుల్యములు. తక్కిన స్వరములు సమములే. మేళములు స్వరములతో నిట్లున్నవి:

మేళము పేరు. స్వరములు.

౧. ముఖారి—కు.స, కు.రి, కు.గ, కు.మ, కు.ప, కు. ద, కు. ని.

౨. సామవరాలి—* కు.రి, కు. గ, కు.మ, * కు.ద, కా. ని.

౩. భూపాల—కు. రి, సా. గ, కు.మ, కు.ద, కై. ని.

౪. హూజ్జోజ్జి—కు. రి, అం. గ, కు.మ, కు.ద, కు. ని.

౫. వసంతశైరవి—కు. రి, అం. గ, కు. మ, కు.ద, కై. ని.

౬. గాళ—కు.రి, అం. గ, కు. మ, కు. ద, కా. ని,

౭. శైరవి—పంచశ్రుతి.రి, సా.గ, కు. మ, కు. ద, కై. ని.

౮. ఆహిరి—పంచశ్రుతి రి, సా.గ, కు. మ, కు. ద, కా. ని.

౯. శ్రీరాగం—పంచశ్రుతి.రి, సా.గ, కు.మ, పంచశ్రుతి.ద, కై. ని.

౧౦. కాంభోజి—పంచశ్రుతి.రి, అం.గ, కు.మ, పంచశ్రుతి.ద, కై.ని.

౧౧. శంకరాభరణ—పంచశ్రుతి రి, అం. గ, కు.మ, పంచశ్రుతి ద, కా. ని.

౧౨. సామంత—పంచశ్రుతి రి, అం. గ, కు.మ, వట్టుతి ద, కా.ని.

౧౩. దేవాక్షి—వట్టుతి రి, అం.గ, కు.మ, పంచశ్రుతి.ద, కా.ని.

౧౪. నాట—వట్టుతి.రి, అం.గ, కు.మ, వట్టుతి.ద, కా.ని.

౧౫. శుద్ధవరాలి—కు.రి, కు.గ, వరాలి మ, కు.ద, కు.ని.

౧౬. పంతువరాలి—కు.రి, సా.గ, వరాలి మ, కు.ద, కా.ని.

౧౭. శుద్ధరామక్రియ—కు.రి, అం.గ, వరాలిమ, కు.ద, కా.ని.

౧౮. సింహారవ—పంచశ్రుతి రి, సా.గ, వరాలి మ, పంచశ్రుతి ద, కై.ని.

౧౯. కళ్యాణి—పంచశ్రుతి రి, అం.గ, వరాలి మ, పంచశ్రుతి ద, కా.ని.

పై విధములగు మేళములవలన వీరిరువురిమతములు తెలియుట యేకాక వారివారికాలములందలి లక్ష్యసంగీతముగూర్చియు నెరుగ వచ్చును. రామామాత్యుడు, శార్దూల దేవుడుచెప్పినట్లు ౧౯ స్వరము లను ఎంచక వానియందలిదోషములను, అనగా అచ్యుతపడ్డము, పడ్డ మనకు వేరుకావనియు మరియు అచ్యుతపంచమము, అచ్యుతమధ్య మములు శుద్ధములకు వేరుకావనియు నిట్లు చెప్పి తాను గ్రహించుపదు నాలుగుస్వరములను చెప్పియుండెనుకదా. ఇతడు చెప్పిన అంతర గాంధారకాకలినిషాదములస్థానముల కొక్కశ్రుతి వ్యత్యాసమున మాత్ర ముంకిన చ్యుతమధ్యమగాంధార, చ్యుతపడ్డనిషాదములు గ్రహించుట సులభము కాదని చెంకటమఖి ఎంచినాడు. గూరువత్స రములకు వెనుకనున్న చెంకటమఖి రామామాత్యునిచ్యుతస్వరములు గ్రహించియు వానిస్థానములందు అంతరకాకలిస్వరముల నొప్పించుట కాలముమార్పుగ నెంచవలసియుండును. అంతియేకాని చెంకటమఖి వలె రామామాత్యునిగూర్చి పేయముగ బలుకుట భావ్యముగ దోషదు. ఈస్వరములు సరకుజేయకయు, దన ౧౨ స్వరములను చేర్చి పై మేళములు చెంకటమఖి తనకాలమందలివానిని చెప్పియుండె నంటిమి. ఇందుచే నితడు రామామాత్యునియిరువదిమేళములు తప్పు లుగ నెంచి పదునాలుగు† గ్రాహ్యములని యభిప్రాయపడినాడు. రామామాత్యుకుసహితము ఈసంగతి గ్రహించియుండువాడే. అంతర, కాకలిస్వరములు చ్యుతమధ్యమ చ్యుతపడ్డములకు భిన్న ములగునవి యని గ్రహింపనొల్లనిచో మేళములు పదునైదుమాత్రము కలుగనని ఇత డిట్లు చెప్పినాడు:

“అంతరస్యచ కాకల్యః స్థానే ప్రతినిధిః క్రమాత్,
చ్యుతమధ్యమగాంధారః చ్యుతపడ్డనిషాదకః
అయం ద్వితీయః ఫక్షోత్ర మేలాః పంచదశ స్పృతాః.”

* స పలు అన్నిట శుద్ధములే కావున వేరుగ నాయలేదు.

† కేదారగాళ, సారంగనాటమేళము లొక్కటిగ చెప్పినందున.

కాని వెంకటమణి రామామాత్యుని స్వరములను తప్పులుగ నెంచుట చెల్లదు. రామామాత్యుడు అంతర, కాకలీ స్వరములను శార్దూలదేవుడు అంతరస్వరములుగ చెప్పనట్లు గ్రహించినచో నాపక్షమందు ౧౫ మేళములుమాత్రము కలుగుననిచెప్పియుంట వెంకటమణి గ్రహింపక పోవుట శోచనీయము. ఈసంగతి రామామాత్యు డిట్లు చెప్పినాడు :

“ ఏతదే వాభిసంధాయ కథితం శార్దూలమరిణా,
అల్పప్రయోగః సర్వత్ర కాకలీ చాంతరస్వరః.”

శార్దూలదేవుని యనంతర మీయంతరస్వరములు జనబాహుళ్యము నొందియుండునోవు. అందుచే రామామాత్యుడు వీనినిగ్రహించి వికృతస్వరములందు చేర్చిచెప్పినాడు. వెంకటమణి వీనినే గ్రహించి యు వీనిస్థానము లొక్కశ్రుతి యధికముకలదిగ జేసి చెప్పియుండెను. అందుచే నితనికి అంతరకాకలీస్వరములు రామామాత్యుని చ్యుత మృగముపక్షములకు భిన్నములుగ లేవు. ఈసంగతివలననే వెంకటమణి రామామాత్యునిగూర్చి గర్హ్యముగ పలుకుట భావ్యముగ దోషదు.

పైసంగతులవలన రామామాత్యుని వసంతభైరవియందు హోజ్జమ్మ మేళము, సామవరాళియందు శుద్ధవరాళి, బాళియందు రేవనప్రి, కన్నడగౌళియందు సామంత, సారంగనాటయందు కాంభోజిమేళము- ఇట్లంతర్భూతము లగుచున్నవని రామామాత్యు డెంచినాడు.

‘వసంతభైరవీమేళే లీన్ హోజ్జమ్మమేళకః,
అథ సామవరాళ్యాశ్చ మేళో యః ప్రాసదీరితః.

అంతర్భూతః స్ఫుటం శుద్ధవరాళీమేళకేచ సః,
బాళ్యాశ్చ మేళకే లీన్ రేవనప్రేస్తుమేళకః.

మేళే కన్నడగౌళస్య లీనః సామంతమేళకః,
సారంగనాటమేళేచ లీనః కాంభోజిమేళకః.’

రామామాత్యుని ౨౦ మేళములందు కేదారగౌళ, సారంగనాటమేళ ములకు స్వరస్థానము లొక్కటేయగునట్లు చెప్పబడుట లేఖకదోష మనవలయును. అట్లు కానిచో నితనిమేళములు ౧౪ అగును.

మరియు రామామాత్యుడు కాంభోజిమేళమందు కాకలీ నిషాదము పేర్కొనుటయు, అంతరగాంధారకాకలీనిషాదములుగల శంకరాభరణరాగము సాధారణగాంధారకైశీనీషాదములుగల శ్రీరాగ మేళజన్యముగ జెప్పుటయు, గౌళమేళజన్యములగు పాడి అద్దరిదేశిరాగ ములు శుద్ధరామక్రియమేళజన్యములుగను, భైరవిజన్యముగు ఘంటారవరాగము కన్నడగౌళజన్యముగను, నాదరామక్రియమేళము అంతర గాంధారయుతముగ జెప్పుటకు మారుగ సాధారిణగాంధారముతో వెల యించియు నిట్లు తప్పులుగ జెప్పినట్లు వెంకటమణి రామామాత్యుని గూర్చి పల్కినాడు. శతాబ్దము వెనుకనుండిన వెంకటమణికాలము నాటికి సంగీతములక్ష్యముందు కొంతమార్పు జెందియుండిన నుండ వచ్చు ననునది గ్రహింపనొల్లదు. ఇందుకు కారణము లేదు. అట్లు

లయుని రామామాత్యునిగూర్చి గర్హ్యముగ బలుకుట తనయాధిక్య మను చెప్పుకొనుటే. వెంకటమణి తీవ్రముగ నిండించుట చూడుడు :

౧. శ్రీరాగమేళము

“తథాహి భైరవీరాగః శంకరాభరణః ప్రథా,
గౌళరాగశ్చ కథితా స్వయం శ్రీరాగమేళబాః.

తత్కథాభైరవా శుద్ధభైరవతే నాన్వితానిలు,
శంకరాభరణా రాగోఽస్తరగాంధారవాం ప్రథా.

సకాకలీ నిషాదశ్చ గౌళీరాగ స్వయం పునః,
బాలో మాళవ గౌళాఖ్య రాగమేళాది సంస్థితః.

రాగాణాం పున రేలేషాం జన్య శ్రీరాగమేళకః,
కథం వికత్థనే రామ రామ రామ తవ భ్రమః.”

౨. శుద్ధరామక్రియమేళము

“యచ్ఛక్తం భవతా శుద్ధరామక్రిరాగ మేళకః,
పాడి రాగాద్దరిదేశిరాగా రాగజన్య భవేదితి.

తద్దోషబాతయే రామ రామస్మరణ మాతన,
పాడ్యాద్దరిదేశిరాగాచ ప్రసిద్ధా గౌళమేళకా.”

౩. కన్నడగౌళ

“దేశాక్షిమేళ ఏవైష కైక్యాఖ్య నిషాదకమ్.

ప్రాప్య కన్నడగౌళః స్యాద్దోష్యాతి మృషావహః,
కన్నడగౌళః శ్రీరాగమేళసతో మనో న కిమ్.”

౪. ఘంటారవ

“యచ్చ కన్నడగౌళస్య మేళే సముపజాయతే,
ఘంటారవ ఇతి ప్రోక్తం పాతకే నామనా పునః.
సత్యం విమోక్ష్యనే రామ రామనేతుం గతోఽపిన,
భైరవీమేళసంభూతో రాగో ఘంటారవః నిలు.”

౫. నాదరామక్రియ

“యద్వాప్యక్తం త్వయా నాదరామక్రిరాగమేళకే,
సాధారణాఖ్య గాంధారః సంగ్రహ్య ఇతి తత్వతః.

అపూర్వ భయకారత్వ మావేషయతి రామ కే,
నాదరామక్రియామేళ గాంధారోఽప్యంతరాభిధాః.”

౬. రీతిగౌళ

“యచ్ఛక్తం రీతిగౌళాఖ్య రాగమేళస్య లక్షణమ్,
శుద్ధాః సరిగమాః పశ్య పంచశ్రుతిక దైరతః.

కైక్యాఖ్యనిషాదశ్చ త్యక్త రామక్రియ ప్రథా,
భైరవీరాగ మేళోఽథో రీతి గౌళః ప్రక్షీర్యతే.”

౭. కాంభోజి.

“కాంభోజీరాగమేళస్య కైక్యాఖ్య నిషాదకః,
ఇతి నోవేత్తికిం వినావాదినాం గృహదాస్యతీ.”





1. శ్రీమతి కె. రామసుబ్బన్నగారు. 2. శ్రీమతి డా. మాలినిబాయి సుక్తంకరు. 3. ఖమారి కామిది.

ఇనాం!

రు. 100

ఇనాం!!

అసలు పుష్కరాగముల ఆభరణములు

గల దుకాణమునందే ఎల్ల పుష్కర లావాదేవీ చేయుటకు ప్రతియొక్కరు అభిలషింతురు. గాన మీరు యీ దిగువపలమునకు వచ్చిన మీరైన అసలు పుష్కరాగములు, ఇతర మేలగు మణుల ఆభరణములు న్యాయమైన ధరకు దొరకును.

అసలు పుష్కరాగములు కాదని రుజువుపరచునట్టివానికి 100 రూపాయలు ఇనామివ్వబడును.

జలగం సుబ్రహ్మణ్యం నాయుడు కంపెనీ,

222, చైనాబజారు రోడ్డు, మద్రాసు.

ఏలూరు, అన్న, వస్త్ర, వైద్య, విద్యాదాన సమాజము (ఏలూరు)

ఈ సమాజము 1913 సం॥ స్థాపించబడినది. దీనికి స్థలము ప్రభుత్వమువారు ధర్మముగ నొసగిరి. బొమ్మ రత్నంగారు భవనమును కట్టించి ధర్మముగ నొసగిరి. ఇచ్చట ప్రతిదినము అశక్తులకు అన్నదానము జరుగుచున్నది. సంవత్సరమున కొకసారి 15 డిశంబరు తేదీన 1000 వెయ్యిమందికిపైగా భీదలకు వస్త్రదానము జరుగుచున్నది. వేసవికాలము నాలుగు మంచినీళ్ల చలి బేంద్రలు పెట్టబడుచున్నవి. వైద్య, విద్యాదానములు జరుగుటకు ప్రయత్నములు జరుగుచున్నవి. దాతల పేరున ప్రతి సంవత్సరము సెలరోజులు రెండవవ్రాసిన అన్నదానము జరుగుచున్నది. అనాధశిశువలయుముకూడ స్థాపించుటకు ఏర్పాటులు జరుగుచున్నవి. రు. 10 లు లగాముకు కాశ్యతనిధి ధర్మమునిచ్చి రశీదులు, పట్టాలుపుచ్చుకొని సమాజాభివృద్ధికి సహాయబడ కొరుచున్నాము.

యితర వివరములకు :-

1. రా. బ మోతేగంగరాజు జమీందారు
2. కొత్తమాసు శీతారామయ్య (సోత్ బ్రష్టీలు),
3. పసుమర్తి పురుషోత్తము (పెసిడెంటు)

4. మధుల నెంకటచిన్నరాజు
5. నున్న గంగరాజు
6. కందుల రామయ్య (శైక్రబరీ)

(వైస్ ప్రెసిడెంటు)

ధీర్ఘ బిస్కెట్లు

వారల ప్రమాణబంధము

త్రివిధాపులయందు దొరకును

ప్రపంచీయ యుక్తు:-

జయభారతం కంపెనీ

హైదరాబాద్, మద్రాసు.



ఆంధ్ర పత్రిక - భావ సంవత్సరాది సంచిక - ప్రకటనలు

FOR PLEASURE & PROFIT, JOIN

THE CURRENT CIRCULATING LIBRARY

183, MOUNT ROAD, MADRAS.

BOOKS IN TAMIL, TELUGU,
ENGLISH & FRENCH
ON ALL SUBJECTS

Our Library Books are classified as follows

Section I FICTION

Classics
Detective
Humour
Mystery, Adventure
Wild West, Western
War Novels

Section II MISCELLANEOUS WORKS

Belles Letters
Biography
Drama and Poetry
Health
History
Humour
India

Palmistry
Politics
Religion
Russia
Science & Inventions
Sex & Sociology
Sports, Games and Pastimes
Travel
War Literature
Wireless, Radio

Section III JUVENILE LITERATURE

Section IV FRENCH LITERATURE

Section V TAMIL BOOKS

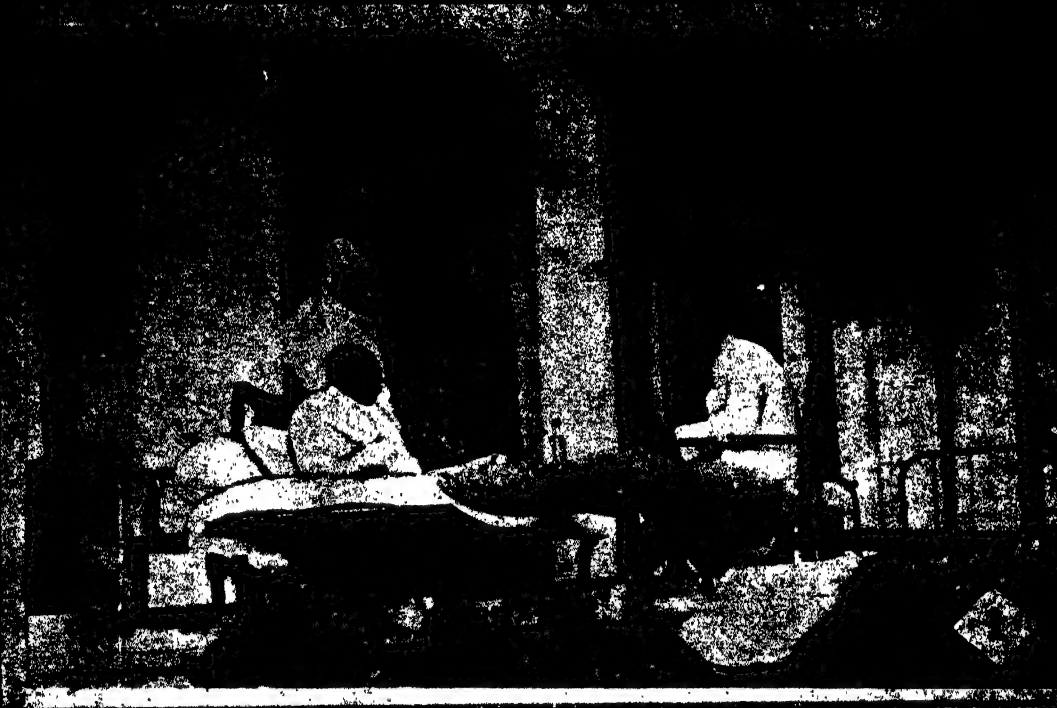
Section VI TELUGU BOOKS

Subscription for Madras residents Re. 1/- per month.

„ Mofussil „ Rs. 18/- for 4 books at a
time for 1 year.

Branches at:—

Bangalore — Coimbatore — Vellore.



(17) 1. చల్లబడియందు కుహాకృదు, సి. యఫ్. ఆంధ్రూసుగారను. 2. శ్రీ లక్ష్మీదేవవాసుగాంధీల పరిణయము



1. రైలుస్టాటుఫారములలో మహాత్ముని దర్శనమునకు. 2. గోరీ బిర్ నూరులో సభ. 3. సీతానగర సత్యాగ్రహశ్రమమునకు కాల్గినడక. 4. చికల్టాలో తోటపీకారు. 5. తిరుమారుచేరువ శ్రీరామకృష్ణ గురుకులమునకు కంకుస్థాపన.

వెంకటమణి ఇట్లు నిర్దాక్షిణ్యముగ రామామాత్యుని బుట్టుట తనకూఢిక్రమమును చెప్పుకొనుటకన్న వేరకాదని యెంచితిమి. చ్యుత వద్ధముకన్న తక్కువ నిషాదమే రామామాత్యుడు కాంభోజియందు చెప్పినాడు. ఇతని కాంభోజియందలి నిషాదము వెంకటమణి చెప్పు కాకలినిషాదము కాదనునది విశదమే. శంకరాధరణము మున్నగు వానిగూర్చి యెంచునప్పుడు కొంత భిన్నపద్ధతులు కాన్పించినను అందులకు కారణము సంగీతము లక్ష్యమందు ఆయా కాలానుసరణముగ మార్పు జెందుచుండిన దనునది గ్రహింపవలయునే కాని ఒక కాలమునందలిపద్ధతి మరియొకప్పుడు లేనిచో నది తప్పుగ జెప్పుట తగదు. లక్ష్యమందు సంగీతము మార్పులుజెందుటగూర్చి వెంకటమణి యేమి, సోమనార్యుడేమి ప్రతివారును గ్రహించుచునే యుండిరి. అప్పుడెల్ల లక్షణముకన్న లక్ష్యమే ప్రధానమని వీరెల్లరు వాకొని యున్నారు. రామామాత్యుడు

“తస్మాత్ లక్ష్యప్రధానం తన్నతు లక్ష్యప్రధానకమ్.”

నియు, కార్జునదేవుడు

“యద్వా లక్ష్యప్రధానాని కాస్తాఽన్యేతాని మన్యతే”

నియు నిట్లు చెప్పుచుండిరి. ఇట్లు ఆయాకాలములందు సంగీతము క్షణమునకు గొంతవ్యత్యాసముతో లక్ష్యమందుంటుచే నప్పుడెల్ల, క్షణగ్రంథములు లక్ష్యముననుసరించి రచింపబడుచుంటు విడితము.

“సంగీతకాస్త్రే బహునా సస్త్రేణ లక్ష్యేషుచ లక్షణేషు, సర్వసమో కృత్య స రామమత్రో తనోతు కాస్త్రం వచసా తవతి.” (?)

అని రామామాత్యుడు చెప్పినాడు. వెంకటమణి తన కాలమున ౧౯ మేళములమాత్రము వాడుకయందుండినట్లును, ప్రస్తార మేళములు డెబ్బదిరెండు తాను నిర్మించినట్లును చెప్పుకొనుటచే నితని కాలపుసంగీతమునకును, అనంతరముండినవానికిని వ్యత్యాసము కలవని గ్రహించుము. వెంకటమణికాలమునాటి మేళములమాత్రము కాక యితని అంతరకాకలీస్వరములుసహిత మిప్పుడు బాహుళ్యము నొందలే దనునది విడితము. ఏల, వెంకటమణి ౩౨ మేళముల కేర్లు కూడ నిప్పుడు కానము? ఇట్లు ఆయాకాలములందు సంగీతము కొంత వేరుగ గన్పట్టుటచే రామామాత్యుని మేళములు, జన్యరాగములు వెంకటమణికి దోవములగ దోచుట నవ్యము కాదని మామతము.

వెంకటమణి

వెంకటమణి తనస్వరములను వద్ధము, శుద్ధమువధము, పంచ శ్రుతియువధము, శుద్ధిగాంధారము, వట్టుశ్రుతియువధము, సాధారణ గాంధారము, అంతరగాంధారము, శుద్ధమధ్యమము, వరాళిమధ్యమము, పలచమును, శుద్ధదైవతము, పంచశ్రుతిదైవతము, శుద్ధనిషాదము, వట్టుశ్రుతి దైవతము, కైశినిషాదము, కాకలినిషాదము లనుపదునాడు కేర్లను

చెప్పి యిందు పంచశ్రుతియువధశుద్ధగాంధారములు, వట్టుశ్రుతి యువధసాధారణగాంధారములు, ఇట్లు పంచశ్రుతిదైవత శుద్ధనిషాదములు, వట్టుశ్రుతిదైవత కైశినిషాదములు వీని స్వరస్థానము లొక్కటియగునని యెంచి వీనిని రామామాత్యునికన్న కొంత క్రమ పద్ధతిని మేళములందు చేర్చి తన ౧౯ మేళములను వెలయించినాడు. రామామాత్యుడు రాగములకు కార్జునదేవుడు నూదించిన రాగాంగోపాంగభాషాంగపద్ధతిగ మేళముల శేర్వరచి కృతకృత్యుడాయెను. ఈమేళపద్ధతి కర్ణాటకసంగీతచేత్తలెల్లరు, సోమనార్యుడు, వెంకటమణి, రఘునాథరాయలు మున్నగువారుసహితము అనువదించు చుండిరి. అందుచే నితడు మార్గదర్శకుడుగ నెన్నబడును. వెంకట మణి తనమేళములు సహితము ప్రకృతివికృతస్వరముల క్రమప్రస్తార నిర్మితములుగ లేవని గ్రహించి మేళప్రస్తారపద్ధతి ననువదించెనని చెప్పబడును. ఇప్పు డనువదించబడునది ఇదియే.

మేళప్రస్తార పద్ధతి

మేళప్రస్తారపద్ధతి వెంకటమణి స్వనిర్మితమే యని గర్వముగ జెప్పుకొనినను ఇయ్యదియితనితండ్రి గోవిందదీక్షితనిర్మితమనియెంచుట కాధారములు కలవు. గోవిందదీక్షితులు తంజపురి నేలిన రఘునాథ రాయల యాస్థానమున సమాత్యపదవి నలంకరించి యుండెననియు, నితనివలన “సంగీతసుధ” అనులక్షణగ్రంథము వెలువడెననియు తెలియుదుము. ఈగ్రంథము రఘునాథరాయలు తాను రచించినట్లు తన కేరు పెట్టుకొనెను. వెంకటమణియు దన తండ్రిగారు సంగీత లక్షణ గ్రంథము రచించినట్లును, తనకది యాధారమగుచుండినట్లును చెప్పుకొని నాడు. ఇయ్యది “సంగీతసుధ”యే యని గ్రహింపవలెను. మేళప్రస్తార పద్ధతి ఇట్లు తండ్రిగారివలన గ్రహించియుండనోవు. అట్లయ్యది నితడు

“మేళా ద్విసప్తతిః శ్రీమద్వేంకటాద్వారి కల్పితాః.”

అని చెప్పుకొనుట తనఘనతను వెల్లడించుకొనుటకే.

మరియు గోవిందాచార్యకృత “సంగీతకాస్త్రసంక్షేపమ్” అను ప్రాచీన తాళగ్రంథమున * డెబ్బదిరెండు ప్రస్తార మేళములు చెప్పు బడియున్నవి. ఈగ్రంథమందలి మేళములకేర్లు వెంకటమణి చెప్పు చొప్పున లేవు. ఇప్పుడు వాడుకలోనుండిన కనకాంగి, రత్నాంగి, ఖరహరప్రియ మున్నగుకేర్లు ఈగ్రంథమున జాతుము. గోవిందా చార్యప్రణీతగ్రంథము వెంకటమణిగ్రంథముకన్న ప్రాచీనమైన ధని యెంచవలసినచో నీప్రస్తారపద్ధతికూడ వెంకటమణికి ఆధార మాయెనని యెంచవలసి యుండును. అందుచే నితని పై వాక్యమునందువలె ౩౨ మేళములు స్వనిర్మితములే యని చెప్పుటలో రసములేదు. ఎట్లయినను వెంకటమణి ప్రస్తార మేళములం డెక్కువ మక్కువకలిగియుండెననుట చెల్లు. ఏమికారణముననో వెంకటమణియొక్క అంతర గాంధార, కాకలినిషాదముల స్వరస్థానములుకాని, పంచశ్రుతియువధ దైవత

ములుకాని, కనకాంబరి, రత్నాంబరి మున్నగు ప్రస్తారమేళముల పేర్లు కాని ఇప్పుడు వాడబడుటలేదు. కాని దీక్షితసోదరులు మున్నగువారీ పేర్లను గ్రహించియుండిననునది మరువహాడదు. ఈసంగతులు ముందు మరియొకవ్యాసమున చర్చింతుము.

ప్రస్తారక్రమము

వెంకటమఖి స్వరావళిని పూర్వాంగోత్తరాంగము లను రెండు విభాగములుగ నెంచెను. షడ్జము మొదలు మధ్యమము వరకు పూర్వాంగస్వరము లనియు, బంచమముమొదలు నిషాదమువరకు ఉత్తరాంగస్వరములనియు నెంతుము. ఇట్లు శుద్ధమధ్యమముతో జేర్చబడిన 3౬ మేళములు పూర్వాంగములనియు, వరాళిమధ్యమముతో జేర్చబడిన మేళము లుత్తరాంగములనియు నెంచబడును. రెండువిధములగు మధ్యమము లిట్లు చేర్చబడినవి.

అ, ఇ, ఉకారములు:— ఆయాస్వరములకు అ, ఇ, ఉకారములు చేర్చి వానిని సంజ్ఞలతో వెలయించు వెంకటమఖిభావము భావ్యమే. అ, ఇ, ఉలు స్వరముల ఉచ్చస్వరమును చెప్పగలుగుచున్నవి. 'అ' కన్న 'ఇ' ఉచ్చస్వరముకలది. 'ఇ' కన్న 'ఉ' ఉచ్చస్వరము కలది. ఇయ్యవి చేరి ఓంకారమైనందున నానము ఓంకారస్వరూపముని యెంచబడుచున్నది. ఈసంగతివలనకాబోలు త్యాగరాజు 'కోలాహలసప్తస్వరగృహముల - గురులేమాక్షమరా ఓమనసా' అని పాడినాడు. పాశ్చాత్యకాస్త్రవేత్త "హెల్మహోల్ట్సు" అచ్చులస్వరముగూర్చి చెప్పుచు వీనిధ్వనిని రెక్కవేసి వరుసగ హెచ్చుధ్వనికలిగియుండినట్లు పేర్కొనినాడు. మిగుల ప్రాచీనకాలమునాటిదిగ నెంచబడిన * కుటుమియూమిలై శిలాశాసనముందు స్వరములు పై విధముగ నచ్చులతోజేర్చి చెప్పబడినవి. అందుచే నీశాసనము వెంకటమఖికి ఆధారమాయెనని యెంచ వలగుచున్నది. ఈశాసనమందలి సంగీతముగూర్చి వేరువ్యాసము వ్రాయుదును. ఎట్టాలై నను వెంకటమఖి స్వరములందు అ, ఇ, ఉలు చేర్చి ర, రి, రు; గ, గి, గు; డ, డి, దు; న, ని, ను; ఇట్లు పదునారుస్వరములుచెప్పినాడు. వాని నిట్లుగ్రహించునది:

పూర్వాంగములు.				ఉత్తరాంగములు			
స్వరము	సంజ్ఞ	తుల్య స్వరము	సంజ్ఞ	స్వరము	సంజ్ఞ	తుల్య స్వరము	సంజ్ఞ
౧. శుద్ధరి	ర	—	—	౭. శుద్ధది	ద	—	—
౨. పంచశ్రుతి రి	రి	౩. శుద్ధగ	గ	౮. పంచశ్రుతి ది	ది	౯. శుద్ధని	న
౪. మట్టుతి రి	రు	౫. సాధారణ గ	గు	౧౦. మట్టుతి ది	దు	౧౧. కైశి	ని
—	—	౬. అంతర గ	గు	—	—	౧౨. కాక	ను
౧౫. షడ్జము	—	౧౩. శుద్ధమ	మ	౧౬. పంచమము	—	౧౪. వరాళి	మి

* ౧౨-న కతాబ్దముకన్న ప్రాచీనమైనదిగ జెప్పబడినది.

సప్తస్వరములు ప్రతిప్రస్తారమేళమునందు ఉండునట్లు ప్రతిస్వరమును క్రమముగ బ్రస్తరింపబడుట ౭౨ మేళములందు చూతుము. వెంకటమఖి తన ౧౬ స్వరములు ప్రస్తరించునప్పుడు అందలి రి, గలు; రు, గిలు; డి, నలు; దు, నిలు; ఒక్కస్వరమును కలిగియున్నవనునది గ్రహించియే యట్లు రెక్కవేసి ననునది మరువహాడదు. అప్పుడు ౭౨ మేళములుమాత్రము కలుగును. ఎట్లో ఇట్లుచూడనగును.

పూర్వాంగస్వరములందు ప్రస్తారయోగ్యములు రి, గలుకదావీని నిట్లు ప్రస్తరింపవచ్చును. ఈప్రస్తారములు ఆరుఆరుగును.

- ౧. శుద్ధముషభ శుద్ధగాంధారములు లేక సంజ్ఞలతో రగ
- ౨. " సాధారణగాంధారములు — రగ
- ౩. " అంతర " — ర
- ౪. పంచశ్రుతి ఋషభ సాధారణ " ,
- ౫. " అంతర " ,
- ౬. మట్టుతి " " "

ఉత్తరాంగస్వరము లిట్లు ధైవతనిషాదములు ద, నిలను ఆరువిధములగామాత్రము ప్రస్తరింపవచ్చును.

- ౧. శుద్ధ ధైవత శుద్ధనిషాదము లేక దన
- ౧. " కైశి " — దని
- ౩. " కాకలి " — దను
- ౪. పంచశ్రుతి " కైశి " — దిని
- ౫. " " కాకలి " — దిను
- ౬. మట్టుతి కాకలి " — దును

లారింటితో జేర్చిన ముప్పదియారు మేళకర్తలు కలుగును. ఇయ్యవి శుద్ధమధ్యమ వరాళిమధ్యమయుతములుగ జేసిన డెబ్బదిరెండు మేళకర్తరాగము లగును. పైవిధమున ౧౬ స్వరములను ప్రస్తరించిన ౭౨ మేళములు కలుగవని కొందరు దురభిప్రాయ పడుచుండిరి. వీరు ౩౨ మేళకర్తలే గ్రహింతురు. ఇయ్యవి వెంకటమఖియొక్క ౧౨ స్వరముల ప్రస్తారము ననుసరించునవని వీరి యభిప్రాయము. వెంకటమఖి ౧౬ పేర్లు చెప్పినను ౧౨ స్వరముల ప్రస్తారమువలననే ౭౨ మేళకర్తల నెరిగనని వీరు గ్రహింపవలయును. వెంకటమఖి యభిమతము ననుసరించి యిట్లు చెప్పనగును. వెంకటమఖిచెప్పిన ౩ రిలు, ౩ గలు ఇట్లు ప్రస్తరించి వీనిని 'దని'లతో జేర్చవచ్చును. ఇట్లు చూడుడు:

ఋషభగాంధారములు (౧) రగ, (౨) రగి, (౩) రగు, (౪) రిగ, (౫) రిగి, (౬) రిగు, (౭) రుగ, (౮) రుగి, (౯) రుగు

ఇట్లు తొమ్మిదివిధములుగ జేర్చవచ్చును. కాని పంచశ్రుతిరిశుద్ధగ, మట్పురిరిశసాధారణగ కావున వైవానియందు రిగ; రుగ; రుగిలు గ్రహింపబడవు. కావున ౬ ప్రస్తారము లగును. ఇట్లు ధైవతనిషాదములచే నారు ప్రస్తారములు కలుగును. అందుచే ౩౬ మేళకర్తలగును. వీనియందు శుద్ధవరాళి మధ్యమములనుజేర్చి ౭౨ మేళకర్తలను జెప్పవచ్చును.

చక్రములు

వెంకటమఖి పూర్వాంగస్వరములను ప్రస్తరించి ౬ చక్రములను జెలయించుట భావ్యమే. ఉత్తరాంగస్వరములు ప్రస్తరించివ్రతి చక్రమందును ౬ మేళకర్తరాగములు చేర్చినాడు. ఇందుచే

౧ వ చక్రమందు	శుద్ధమువధ	శుద్ధగాంధారమును
౨ వ	"	సాధారణ
౩ వ	"	అంతర
౪ వ	"	పంచశ్రుతి సాధారణ
౫ వ	"	అంతర
౬ వ	"	మట్పురి అంతర

ఇట్లున్నవి. ఒక్కొక్కచక్రమందు ధైవతనిషాదము కలిగి ఇట్లున్నవి:—

౧ వ మేళకర్త	శుద్ధధైవత	శుద్ధనిషాదము
౨ వ	"	కైశికి
౩ వ	"	కాకలి
౪ వ	"	పంచశ్రుతి కైశికి
౫ వ	"	కాకలి
౬ వ	"	మట్పురి

కావున ఆయామేళకర్త ఆయాచక్రమం దాయాస్థానమున నుండునట్లు గ్రహింపవలయును. ఇందుచే మేళకర్తసంఖ్య తెలియ వచ్చిన నందలి వికృతస్వరావళి నెరుగ నగును. ఎట్లో ముందు చూతము. పైచక్రములకు వెంకటమఖి వరుసగ (౧) ఇందు, (౨) నేత్ర, (౩) అగ్ని, (౪) వేద, (౫) బాణ, (౬) ఋతు అని పేర్లు చెప్పినాడు. వీనికి దుల్యమగు వరాళిమధ్యమయుతము లగునవి (౭) ఋషి, (౮) వసు, (౯) బ్రహ్మ, (౧౦) దిశ, (౧౧) రుద్ర, (౧౨) ఆదిత్యులు. మొదటి యారుచక్రములు పూర్వాంగములు. తక్కినవి యుత్తరాంగములు. పూర్వాంగచక్రములందలి రాగముల స్వరములే యుత్తరాంగము, వానియందును వరాళిమధ్యమముతో గూడి యున్నది. ఇట్లు మధ్యమము వేరుగ నుండినంతనే పూర్వాంగములు మారుచున్నవి. ఇందుకు దృష్టాంతముగ వెంకటమఖి ఇట్లుచెప్పినాడు:

“కటావాసంభృతం క్షీరం కవలం ఓధిబిందునా,
యథా సంయోజ్యమానంతు దధిభావం ప్రపద్యతే;
తతైవ పూర్వమేలాస్తే మధ్యమేన విసంజ్ఞకాః.”

మరియు నాయాచక్రమునందలి ఈవరుసరాగములు వ్యాజికము జెందుట గమనింపదగినది.

౧ వ చక్రమునందలి ౧ వ మేళకర్త — కనకాంగి.

౨ వ “ ౨ వ “ — హనుమతోడి.

౩ వ “ ౩ వ “ — మాయామాలవగాళ.

౪ వ “ ౪ వ “ — ఖరహరప్రియ.

౫ వ “ ౫ వ “ — ధీరశంకగాభరణము.

౬ వ “ ౬ వ “ — చలనాట.

ఈరాగము లాయాచక్రములందు ముఖ్యము లగుటచే నా చక్రము లాపేర్లతో వాకొనుటయు దప్పుకాదు.

కొన్ని ముఖ్యాంశములు:—

౧. మేళకర్తలన్నియు సంపూర్ణములుగ నిష్పృడంచబడును. స, పలు అవినాళి, అనగా వికృతములు లేనివి యగును.

౨. తక్కిన వినాళిస్వరములు రి, గ, మ, ద, ని లలో మధ్యమము ౭౨ మేళకర్తలను విభాగించుచు మొదటి ౩౬ మేళముల శుద్ధమధ్యమము కలవిగను, తక్కిన ౩౭-౭౨ మేళకర్తలు వరాళిమధ్యమము కలవిగను ఉన్నవి.

౩. ౧ మొదలు ౧౮ మేళకర్తలు వీనికి సమములైన వరాళి మధ్యమయుతములగు ౩౭-౫౪ మేళకర్తలు శుద్ధమువధయుతములు.

౪. ౧౯-౩౦ మేళకర్తలు వీనికి సమములైన వరాళిమధ్యమయుతములగు ౫౫-౬౬ మేళకర్తలు పంచశ్రుతి ఋషియుతములు.

౫. ౩౧-౩౬ మేళకర్తలు వీనికి సమములైన వరాళిమధ్యమయుతములు. ౬౭-౭౨ మేళకర్తలు మట్పురిఋషియుతములు.

౬. ౧ మొదలు ౬ను, వానికిసమములైన వరాళిమధ్యమముగల ౩౭-౪౨ మేళకర్తలును శుద్ధగాంధారయుతములు.

౭. ౪౩-౫౨ మేళకర్తలును, ౧౯-౨౪ మేళకర్తలు వీనికి సమములైన వరాళిమధ్యమముగల ౪౩-౪౮ మేళకర్తలును ౫౫-౬౦ మేళకర్తలును సాధారణగాంధారయుతములు.

౮. ౧౩-౧౮ మేళకర్తలును, ౨౫-౩౬ మేళకర్తలు వీనికి సమములైన వరాళిమధ్యమముగల ౪౯-౫౪ మేళకర్తలును, ౬౧-౭౨ మేళకర్తలును అంతరగాంధారయుతములు.

౯. పూర్వాంగోత్తరాంగమేళ చక్రములందలి ౧, ౨, ౩ మేళకర్తలును శుద్ధధైవతయుతములు. ఇట్లు ౪, ౫ మేళకర్తలు

పంచశ్రుతిదైవతయుతములు. ౬-వ మేళకర్త మట్పురి దైవత మతో గూడినది.

౧౦. పూర్వాంగోత్తరాంగమేళచక్రములందు వరుసగ ౧-వ మేళకర్త శుద్ధనిషాదము, ౨-వ మేళకర్త కైశినిషాదము, ౩-వ మేళకర్త కాకలినిషాదము, ౪-వ మేళకర్త తిరిగి కైశినిషాదము, ౫, ౬, మేళకర్తలు కాకలినిషాదము ఇట్లు కలవిగ నున్నవి.

ఇట్లు ఋషభగాంధారములు మేళచక్రములను దైవతనిషాదములు చక్రమునందలి వరుసమేళకర్తలను నిరూపింపగలుగుచున్నవి.

ఈపద్ధతి యుపయోగములు

మేళచక్రములును, చక్రములందలి మేళములును నియమానుసరణముగ నుంటచే మేళకర్తసంఖ్య తెలిసిన అందలి ప్రకృతివికృతి స్వరాలి నెరుగవచ్చునని యెంచితిమి. ఉదాహరణముగ ౨౩-వ మేళకర్తయందలి స్వరాలి నారయుట కిట్లు చూచునది:

౧. తొలుత స . . . ప . . . సి ఇట్లు అవినాశి స్వరములను వ్రాయునది.

౨. సదరుమేళసంఖ్య పూర్వాంగోత్తరాంగములం దెచ్చట కలదియు నెరిగి శుద్ధ లేక వరాలిమధ్యమును వ్రాయునది. స . . శు.మ ప . . సి

౩. ఇకపూర్వాంగస్వరములు రి, గ, ల నెరుగుటకు సదరు సంఖ్య ఏచక్రమందుండునదియు నెంచునది. ౨, ౩, సంఖ్య ౪-వ చక్రమందు కలుగును. కావున నది పంచశ్రుతిఋషభ సాధారణ గాంధారములు కలిగినదగును.

స, పం, సా.గ, శు.మ, ప . . సి

౪. ఉత్తరాంగస్వరములు ద, నిల నారయుటకు సదరుసంఖ్య ఆచక్రమం దే స్థానముననున్నది తెలియవలయును. ౨, ౩, సంఖ్య ౪-వ చక్రమందు ౫-వ స్థానమున నుంటచే నిందు పంచశ్రుతిదైవత కాకలి నిషాదములు కలుగును. కావున స్వరము లిందు:—స, పం. రి, సా.గ, శు.మ, పం.ద, కా.ని, స. ఇట్లు కలవు. మేళసంఖ్య ౩౬ కు మించిన నద్దానియందు ౩౬ తీసివేసి ప్రైక్రమమున స్వరములు తెలియ నగును. ఇందు వరాలిమ. కలుగును.

కటపయాది నియమము

వైదికముగ మేళకర్తసంఖ్య తెలిసిన నందలి స్వరాలి నెంచ నగునుకదా. మేళకర్తశేరు ననుసరించి సంఖ్య నెరుగుటకు కటప యాదినియమము అని చెప్పబడును. క, ట, ప, య అనగా—కాదినవ, టా దినవ, పాదిపంచ, యాద్యష్ట — అని గ్రహింతుము. వీని స్థానములు సంఖ్యల నిట్లు తెలుపును:

	౧	౨	౩	౪	౫	౬	౭	౮	౯	౦
కాదినవ—	క	ఖ	గ	ఘ	జ	చ	ఛ	జ	ఝ	ఞ
టాదినవ—	ట	ఠ	డ	ఢ	ణ	త	థ	ద	ధ	న
పాదిపంచ—	ప	ఫ	బ	భ	మ					
యాద్యష్ట—	య	ర	ల	వ	శ	ష	స	హ	-	-

మేళకర్తల తొలిరెండక్షరములు వానిసంఖ్యను తెలుపునట్లుగ చెలుయించునప్పటి మనవారికి క్లిష్ట నర్హతాతీతము. మేళకర్తయందలి ప్రథ మాక్షరము కటపయాదులం దెచ్చట నున్నదియు గ్రహించి యా సంఖ్యను లిఖించి యద్దానివెనుక రెండవ యక్షరముయొక్క సంఖ్యను చేర్చిన నాసంఖ్య మేళకర్తను తెలుపగలుగుచున్నది. ఞ, న, లు శూన్యాంకము కలవి. మేళకర్తలందలి సంయుక్తాక్షరములలో ద్విత్య ములు గ్రాహ్యములు.

ఉదాహరణము:—రత్నాంగియందు 'ర' ౨ ను తెలుపును. తక్కిన 'త్నా'యందు 'న' తీసివేసి యది శూన్యముగ నెంచ బడుటచే నీమేళకర్తసంఖ్య ౨ మాత్ర మగును. ఇట్లు తక్కినవి గ్రాహ్యములు. కాని కొన్నిట ద్విత్యమునకు మారుగ ప్రై యక్షరమే తీసివేసినది. "చక్రవాకము" నందలి 'చ' = ౬ ను, క = ౧ తెలుపునదిగ నెంచి యద్దాని ౧౬-వ మేళకర్తగ జెప్పబడెను. 'రత్నాంగి' యందువలె ద్విత్యమున 'ర' గ్రహింపబడలేదు. ఇట్టి విధివిరోధము లగునవి కొన్ని 'కనకాంగి' మున్నగు మేళకర్తల శేర్షయందు చూతుము. వీని వివరము మరియొక వ్యాసమున వ్రాయుచును. ఇప్పటి కర్ణాటకరాగములన్నియు నిట్టి మేళప్రస్తారపద్ధతి ననుసరించి యుండినవని గ్రహింపవలయు. వీని జన్యములు, రాగ విభాగము మున్నగు నంశములనుగూర్చి వేరువ్యాసమున చెలుపుదును.

[కర్నాటకదేశమందలి బేలగామమండలములోని బేలవాడీభుయికోటకు వీరికయైన ఏసాజికి ఇల్లాలు సావిత్రి. శివాజీనైన్యాధిపతియగు దాదోజీవీరుడు ఏసాజీని, గలువగోరి భుయికోటను ముట్టడించెను. ఏసాజీ పగలజూచి బెగడొందక మగటిమితో శత్రుల డీకొనుచుండెను. కాని యధర్మయుద్ధంబున దాదోజీ ఏసాజీని హత మొనర్చెను. వీరపత్ని సావిత్రి పతిచరణమునకు కందక తన పరివారముతో రణరంగంబు జేరి పతికేబరమునకు ముమ్మారు భక్తితో ప్రదక్షిణించి తల్లడపాటుతో చెల్లాచెదరగుచున్న తన సైనికులకు శార్యాన్ని ప్రజ్వరిల్లునట్లు గర్జించిన ఘట్ట మిది:]

వీరవరేణ్యులార, పరువెత్తుదురేమి త్యజించి యుద్ధమున్
భీరువులైన స్త్రీలబలె బిక్క మొగంబులువైచి మానమున్
పౌరుషమున్ గణింపక శ్మణత్యయబుద్ధుదతుల్యజీవముల్
గోరుచు నీచశాత్రువులకున్ చెయిమోడ్చి నమస్కరింపుచున్.

ఆజి నొకింతయేనియును న్యాయములేక చలంబుతోడ ఏ
సాజిని మీప్రభూత్తముని శాత్రువు లేకత ముట్టడింప దా
దోజి మహాపరాక్రమముతో చనుదెంచి వధించియుండ మీ
తేజ మదెందు డాగెను ప్రతిక్రియకున్ దలపెట్ట రింతకున్.

మీప్రభువరేణ్య లిట్లు సమీకమందు-చచ్చిపడియుండ ప్రాణంబు లిచ్చగించి
పిరికిపందలగుచు పరువెత్తుచుంట-రాజభక్తులు మీకు ధర్మంబటయ్య!

తలచి యెరుంగరయ్య తమతాతలు తండ్రులు నీచభోగముల్
తొలగి యెరుంగరయ్య వెతతో పెనుభీతితో యుద్ధరంగమున్
నిలిచి యెరుంగరయ్య ప్రభునిన్ వధియించి పరుల్ క్రమింపగా
పలికియెరుంగరయ్య తమపాదములన్ బడువార మంచునున్.

సమరమునందు కాలిడుటా శత్రులనొంచుటా లేక తారు ప్రా
ణములను బా యుటో జరుగగావలెకాని భయంబుతోడ మా
నమును త్యజించి వైరిచరణంబుల వ్రాలి నమస్కృతుల్ రచిం
చి మనుట శౌర్యవంతులకు సిగ్గులచేటునుమీ తలంపగా.

రాజభక్తిని విడక సంగ్రామమందు - ప్రాణముల గోలుపోయి స్వర్గంబు జేరి
పూజ్యగౌరవస్థానంబు బొందినారు - ధన్యు లగుచును మీ తాత తండ్రు లకట!

అట్టివీరుల కడుపున బుట్టి మీరు - తుచ్ఛభోగంబు లాసించి ద్రోహులగుచు
రాజభక్తిని వీడి సంగ్రామమందు - మొరకుపగరకు బత్తి కేల్కొద్దు రేమి?

స్వీయదేశమానంబు రక్షించుకొరకు - ప్రతిసంవత్సరమై పడతులై
కాళికామూర్తులగుచు సంగరము జేరి - పరుల దానుమ తమకు తలవంపుగాదె.

పైనికులార్, లెండు తమ సాహససంపద జూపరండు యు
ద్ధాన నరాతివీరుల మదం బడగింపగ పొండు తేకువ
ప్రాణములక గణింపక మహాహవమందు జయంబులెండు మీ
మానము గాచుకొండు తుదిమా టిదె సిద్ధముకండు పోరికిన్.



(ప్రకృతి చిత్రము)

— శ్రీపాద కుష్ణారావు.



ఆయుర్వేదములోని అద్భుత చికిత్సలు

మంగిపూడి వేంకటశర్మ



పార్శ్వపునొప్పికి — నొప్పి గలవారిని దంతధావనము చేయక పూర్వమే సూర్యోదయమగువేళకు రమ్మని చెప్పి వారిని పడమటిముఖముగా నిలిచియుండబెట్టి వారికి ఏపార్శ్వమున నొప్పియుండునో ఆపార్శ్వమున నీడలో కనుబొమ్మమీద భూమధ్యముమొదలు కనుబొమ్మ చివరదాక మూడుమేకులను నేలలోనికి కొట్టవలయును. నీడలో కనుబొమ్మ బాగా గుర్తించి కొట్టవలయును. నీడ బాగా ఆనకయున్నయెడల ఆపార్శ్వమున చెవిలో ఒకరూళ్ల పెన్నిలుగాని, ఆలాటి సన్నని పుల్ల వేరొకటిగాని పెట్టుకొని ఆపుల్లచివర పట్టుకొమ్మని చెప్పి చెవికిని (చెవిరంధ్రమునకును) కనుబొమ్మకును ఎంతయెడము గలదో అంతయెడము మీదకు చూచినయెడల కనుబొమ్మస్థానము తెలియును. అప్పుడు మేకులు సరియైన స్థానములో కొట్టుటకు వీలగును. ఒకవేళ ఎండ మసకగానుండి ఇంకను నీడ సరిగా కనపడకయుండినయెడల మేకులు నిదానముగా గాక ఎగుడుదిగుడుగా కొట్టినయెడల ఏదోయొకమేకులయినను కనుబొమ్మమీద పడకమానదు. అదియైనను చాలును. ఒక్క మేకుకనుబొమ్మమీద పడినను పార్శ్వపునొప్పి వెంటనే ఆశ్చర్యకరముగా తగ్గిపోవును. మేకులు బాత్తిగా సన్నముగా నున్నయెడల నీడ సరిగాలేనపుడు కనుబొమ్మలో పడవు కనుక లావుపాటి బాగడమేకులు కొట్టినయెడల సులభముగా కనుబొమ్మమీద పడును. మూడు మేకులలో ఏమేకు కనుబొమ్మనీడలో దిగినను నొప్పి ఆక్షణములోనే చేతితో తీసివేసినట్లు మాయమైపోయి బరువు

తగ్గి సుఖముగలిగి యింద్రజాలము చేసినట్లు రోగికి తోచును. అట్లు నొప్పి, బరువు తగ్గి వెంటనే సుఖము కలుగనియెడల మేకులు సరియైనచోట్లన పడలేదని నిశ్చయించుకొని మరునాడు మరల జాగ్రత్తగా చూచి యీచికిత్స చేయవలయును. రెండుమూడురోజులు చేసినయెడల ఒకనాడయినను ఎండ బాగుగానుండి మేకులు కొట్టవలసినచోటు నీడలో స్పష్టముగా కనపడవచ్చును. ఈ చికిత్స మాయైద్యశాలలో వేలకొలది మందికి చేయబడినది. అందరికిని అమోఘముగా కుదిరినది. మబ్బువేసిననాడుగాని, వర్షపుదినములలోగాని ఈ మేకులవైద్యమునకు వీలుండదు. కనుక అప్పుడు ఈ క్రిందిచికిత్స చేయవలయును. నొప్పిగలవారు ఉదయమునకు పూర్వమే దంతధావనము చేసి ఒక ఔన్ను ఆవుపాలలో ఇరువదిచుక్కలు ఆవునెయ్యి వేసి త్రాగవలయును. ఇట్లు ఒకవారము, పదిదినములవరకును చేయవలయును. నొప్పి తప్పక తగ్గిపోగలదు. అనేకులకు తగ్గినది.

బుడ్డలు — చిన్నపిల్లలకు కొందరికి ఒరబీజములు (బిళ్లటి పెద్దదిగా ఒకటి చిన్నదిగా నుండును.) మిక్కిలి పసితనములోనే వచ్చును. ఈబీజములలో పెద్దదిగా నున్నదానిని లోపలికి గెంటినయెడల పోవును. మరల నడచినగాని, ఊపిరి గట్టిగా విడిచినగాని వచ్చును. అట్టిదానికి క్రింది చికిత్స చేయవలయును. కంసదుంపలు, లేక కాజదుంపలు అను పేరుగల దుంపలు రెండు తేవలయును. (కంసమొక్కలు, లేక కాజమొక్కలు ఊడుపు

చేతులలో తుచుచునుండును. కాలువలలో నీటివారను గట్టులనంటియుండును. నీరు నిలిచిన గుంటలలోనుకూడ ములుచును. వీటి ఆకులు మిక్కిలిదళసరిగా నుండును. పువ్వులు తెల్లగా - కృష్ణతామరపువ్వులవలె - కాడలవలె నుండి కొద్దిగా పలచనిరేకులు కొంచెము కలిగి యుండును.) రెండుదుంపలను పిల్లలబుడ్డలకు దిగదుడిచి ఒకదుంప అన్నము వండుకొను పొయిలో పాతిపెట్ట వలయును. రెండవదుంప యింటిగుమ్మమునకు వ్రేలాడ గట్టవలయును. ప్రాయిలోని దుంప అన్నము వండు నపుడు నిప్పుశైగకు ఉడికి కరిగి హరించిపోవుచుండును. బుడ్డకూడా తగ్గ నారంభించును. ప్రాయిలోని దుంప హరించిపోవునప్పటికి బుడ్డ సమానస్థితికి వచ్చును. ఇది అద్భుతము. అయితే ఈచికిత్సలో కొందరికి గుణము కనుపించలేదు. అనేకులకు పనిచేసినది. ఈబుడ్డలలో భేదము లుండి తగ్గలేదో మరి యేమిహేతువో శ్రద్ధగల వైద్యులు పరిశోధనలు చేసి కనుగొని వెల్లడింప వేడు చున్నాను.

తేలుకాటుకు—మామిడిచెట్టు పూచినరోజులలో ఉదయముననే చెట్టునమీషమునకు పోయి దంతధావన ము చేసుకొనవలయును. వెంటనే చెట్టుయొక్క ఒక్క వాలుకొమ్మకేసి చూడవలయును. ఆకొమ్మ చేతికి అందు నదిగా నుండవలయును. చూడగానే పువ్వులు కన్ను లబడునో ఆపువ్వులగుత్తి పట్టుకొని గుత్తి కొమ్మనుండి కోయకయే రెండుచేతులతోను నలిపి అరసమును రెండు చేతులయొక్క అరచేతులలోపలను, వెలుపలను వ్రేళ్లను వ్రేళ్లనందులను బాగుగా పట్టునట్లు పూసుకోవలయును. ఇంతవరకును ఆపువ్వులగుత్తిగల కొమ్మను వదలివేయ రాదు. అనగా కొమ్మయొక్క పూగుత్తిని పట్టుకొనగానే నలిపివేసి చేతులనిండు ఒక్కసారిగానే ఒక్కనిమిషము లోనే ఆపనరు, లేక రసము పట్టునట్లు రాచుకోవల యును. కొమ్మను వదలిపెట్టి మరల పట్టుకొని నలిపి రాచుకొనగూడదు. ఇంకొకకొమ్మకాని, గుత్తులుగాని అసలే పనికిరాదు. మొదటచూచినగుత్తులే నలసవల

యును. దంతధావనము చేసికొని పువ్వుగుత్తులు చూచు వరకును తలవంచుకొనియో, యింకొకదిక్కుకు చూచు చునో యుండవలయునుగాని చెట్టు కేసి (చెట్టువంక) చూడరాదు. ఈలాగు చేతులకు పూసుకొన్న పువ్వు రసముయొక్క మహత్త్వము ఏడాది (ఒక్కసంవత్సరము) వరకు నుండును. ఇప్పుడు పునాసచెట్టు దేశమంతటను దొరకుచున్నవిగాన ఆరునెలల కొకసారి యీలాగు చేసి నచో మరియును మంచిది. ఈరీతిగా పసరు పట్టించు కొన్నతరువాత ఇంటికివెళ్లి చేతులు కడిగి వేసికోవచ్చును. ఆనాడుమొదలు తేలుకుట్టినవారు వచ్చినయెడల కుట్టిన చోటు అడిగితెలిసికొని, కాలు అయినయెడల తొడ లవద్దనుండి క్రిందికిని, చేయిఅయినయెడల చంకలదగ్గర నుండి క్రిందికిని గట్టిగా పట్టుకొని దిగజార్చవలయును. మెస్మరిజముచేసినట్టు దిగిపోవును. రెండుచేతులతోను (కుట్టినకాలుగాని చెయ్యిగాని) గట్టిగా పట్టుకొని (తనచేతులు) క్రిందికి దిగజార్చవలయును. యక్షిణివలె బాధ తగ్గిపోవును. ఇదికూడచేసి చూడబడినది.

తేలుకాటుకు ఇతరచికిత్సలు—తేలు కుట్టినచోట వేడినీళ్ల ఆవిరి పట్టినయెడల చెమటతో విషము పైకి వచ్చి త్వరలో బాధ ఉపశమించును గనుక ఎక్కువబాధగలవారికందరికిని ఆవిరిచికిత్స ముందుగా చేయించుట మంచిది. చింతగింజ ముదిరినది, పెద్దది, అనగా వెడలుపుగానుండు నదితెచ్చి దానిపైనిగల బెరడును (పెచ్చు, లేకపెంకు) అరగదీసి తీసివేయవలయును. నీళ్లతో అరగదీయ వచ్చును. బెరడు అంతా అరగదీసివేయవలయును. లోపలిపదార్థమును అనగా చింతగింజలోనిపచ్చును తేలు కుట్టినవారు వచ్చినయెడల ఒక్కనీళ్లచుక్కవేసి రాతి మీద కొద్దిగా అరగదీసి, అనగా ఒకటిరెండుచుట్టులు మాత్రము అరగదీసిన ఆగింజకు కొద్దిగా జిగురువచ్చును. ఆగింజను కుట్టినచోట అంటించవలయును. అయిదు, లేక పదినిమిషములలో నిశ్శేషముగా బాధ తగ్గిపోవును. చింతగింజ అని తెలిసినయెడల గురియుండదు గనుక ఆగింజను గుండ్రముగా అరగదీసి మణిరాయివలె చేయ

షెలత్

సబ్బులు

వీటినే మీ రేల
ఉపయోగించవలె ననుటకు
ముఖ్య కారణములు



1. ఇవి చౌకధరలకు దొరకుటయేగాక చాలకాలమువరకు పనికి వచ్చును.
2. కొలదికాలములోనే మీ వస్త్రముల మురికినిపోగొట్టి శుభ్రపరచును.
3. ఎక్కువ కష్టములేకుండా ఈ సబ్బులు బట్టలమురికిని సుఖముగ బోగొట్టును.



షెలత్ సిరావాడుము

కారణమేమనగా

1. బుడకలు పడకుండా ధారాళముగా జారును.
2. సిరాబుడ్డిలో గడ్డకట్టుకొని యెండిపోదు.
3. కలమును బాగుగా సాగనిచ్చును.
4. విస్ఫుటమైన నీలపురంగులో వ్రాయుచు, కొంత సేపటికి నల్లగా ఆరిపోవును.
5. మిక్కిలి చౌక. మనహిందూదేశమున తయారు చేయబడినది.
6. పాంత్ మొదలగు అన్నికలములకు సుపయోగించవచ్చును.

Manufactured by:—

SHELAT Bros,

China Bazar Road, MADRAS.

ఉచిత సమాచారము పరిశీలించి మీరే తెలిసికొనుడు

కామినియా ఆయిల్ (రిజిస్టర్డ్)

తలవెండ్రుకల ఆరోగ్యమునకు

కొన్ని దినములు కామినియా తలహనె వాడినచో మెడను చల్లగా నుండును. తలవెండ్రుకలు ఊడిపోవు. నానాటికి కురులు పెరుగుచు, అతిమనోహరమైన లావణ్యమును చేహార్చును. సీసా రు. 1-0-0. 3 సీసాలు 2-10-0. పోస్టేజీ వేరు. సమాచారము 0-0-6 తపాలబిళ్లకు పంపును.

ఆటో డిల్ బహార్ (రిజిస్టర్డ్)

అత్తిదులలో అగ్రగణ్యమైనది

కొన్ని చుక్కలు చేతిరుమాలుపై వేసికొనినయెడల, చిరకాలము నిలచు చుక్కల వాసన నలుగడల వ్యాపించును. ఆటో డిల్ బహారును ప్రాద్దేశమున ఆబాలగోపాలము వాడి ఆనందించు అత్తరు. వెల $\frac{1}{4}$ డౌస్సు సీసా రు. 1-4-0. పోస్టేజీ వేరు. సమాచారము 0-2-0 తపాలబిళ్లకు పంపును.



ఆటో మస్కు-బహార్ (రిజిస్టర్డ్)

వృద్ధయాహారము గలిగించు కస్తూరివాసనలు దీనినుండి బయలుదేరును. ఈ ఆటో మస్కు-బహారునందు అరుదైన అమూల్యమైన నిజమైనకస్తూరి చేరియున్నది. వెల $\frac{1}{4}$ డౌస్సు సీసా రు. 1-4-0. పోస్టేజీ వేరు. ఉచితసమాచారము రు. 0-2-0. తపాలబిళ్లకు పంపును. సోత్-యేజంట్టు :- ది ఆంగ్లో-యిండియన్ డ్రగ్ అండ్ కెమికల్ కంపెనీ,

285, జమ్మా మసీద్, బొంబాయి 2.

రత్నప్రసవైహ్యం

నెలరోజులమందు రు. 2-8-0.

శుక్ల మేహము మొదలగు 20 మేహములు కీళ్లనొప్పులు, శీఘ్రస్థలనము, నడవము కాళ్లు లాగుట, యిట్టిరోగములను పోగొట్టి వీర్యవృద్ధి, బలము కలుగజేయును.

పట్టలగుంధకమార్ప

4 తు. రు. 2.

ఏజాతిస్తనవాని అయినను, మాన్వి రక్తమును బాగు చేయును. యితర సమస్త చర్మరోగములు, వాతములు, మూత్ర వాళమందలి వ్రణములు, తగ్గించును.

వసంతసుమకారం

1 తు. రు. 16.

అతిమూత్రవ్యాధులు, మధుమేహము, స్త్రీల కుసుమ రోగములు, తగ్గించి రక్తమును బాగుజేయు రాజౌషధము. బంగారము, మంచి మత్తము, కస్తూరి మొదలగు విలువ అయిన వాటితో తయారుకాబడినది.

శ్రీ పట్టాభిరామ వైద్యశాల,

రాయవరం, తూర్పుగోదావరి జిల్లా.



డాక్టరు వామన్ గోపాల్ ఐయోడైడ్ సరసపరిల్లా

రక్తమును చక్కగా శుభ్రపరచును.

మానవ జీవితమునకు స్వచ్ఛమైన రక్తమే ముఖ్యాధారము. అందుకు తగినది సరసపరిల్లా ఒక్కటియే. ఏ కారణము వలనగాని చెడిపోయిన రక్తమును శుభ్రపరచును. ట్యూబర్ క్లియర్ డెబిలిటీ, ఎరప్తస్సు, సిఫిరీస్, వాతనొప్పులు, చర్మ వ్యాధులు, దుర్బలత్వము, కృశించుట మున్నగు వ్యాధులందీ అమూల్యమైనది. వెల రూ. 1-4-0.

డాక్టరు గౌతమరావు కేకరాస్ ఫాస్ఫోరస్ మాత్రలు.

మొదటి అలసట కద్దుతమైన టూనిక్. సామాన్యపు సరముల బలహీనత, పుష్టితగ్గుట, శుష్కస్వయము, నోంతులు మున్నగు వాటికి అద్వితీయమైనది. వెల రూ. 1-0-0.

దిగువ విలాసమున కూడ దొరకును :-

ఉత్తరములు ఆంగ్ల భాషలోనే వ్రాయవలెను.

దామోదర్ డికో., చైనాబజారు, మద్రాసు.

Madras Agents: Damodar & Co., China Bazaar.

మ హాత్మని హరిజనయాత్ర



1. తిరుపత్తూరులో మహాత్మాడు విశ్రమించిన కైగిట్టకులాశ్రమము.
2. మహాత్మాని కనురెప్పవలె కాపాడుచు పరిచర్యలుచేయున్న మిరాబెసు కన్య.
3. నిద్ర.
4. భక్తలాసగిన ఫలాదులు విశ్రాంతిపొందవ.



1. 'జాతిమతములు హరిజనులకు పరమశ్రేష్ఠులు' అని వ్రాసిన యొక చిత్రమునకు మహాత్మాజీ నిరసము. 2. సంతకమును కోరిన యొక బాలుని పోగుల కోరుట. 3. కుమారి కామిని నిలబెట్టడము. 4. విజయవరము మహారాజుగారి

వలయును. ఈచికిత్సను వేలకొలదిమందికి చేసినాము. నూటికితొంబదిమందికి గుణమిచ్చినది. చెరుకుబెల్లము ముక్కనుతెచ్చి తేలుకుట్టినవారిని నోటిలో ఆముక్క పెట్టుకొని ఊటను మ్రింగించుచు ఆనోటిలోని ముక్కనే కొంచెము ఉమ్మితడితోనే కుట్టినచోటను రాచుచు (మెల్లగామర్దించుచు) తెల్లవాలు, తలవెండ్రుకలతుక్కు, చెరుకుబెల్లము పొగనేయవలెను. బాగుగా గుణమిచ్చును. అనేకులకు గుణమిచ్చినది.

శశువులకుకరిం(మర్మస్థానము)పుచ్చినందుకు-చిట పట కాయల మొక్క, ప్రేలుడు కాయల మొక్క అనిపిలువ బడు చిన్న ఆకులుగల మొక్క యుండును. దీనికాయలు నీళ్లలో వేసిన టప్పుమనిప్రేలును. పిల్లలు దీనికాయలను నోటిలో పెట్టుకొని ఉమ్మితడి తగులగానే అవి పగిలి చప్పడైన ఆనందించుచుండురు. ఈ మొక్కలఆకులు తెచ్చి కరిం పుచ్చి పురుగులుపట్టిన శశువులయొక్క ముచ్చికలగుంటలో (మెడకిందగుంటలో) ఆపనరు పిండి కొంతపసరు వెన్నుపోడుగునను రాయవలయును. ఇట్లు ఒకటిరెండుపూటలు చేయగానే పురుగులు పడిపోయి పుచ్చుమానిపోవును. ఇదికూడ చేసి చూచినదే. అమోఘమైనగుణము.

మూర్ఛకు— ఈమహామహిమగలమూలికారాజముపేరు తెలియలేదు. ఇదియొకతీగ. దీనిఆకులు కాకర ఆకులవలె నుండునుగాని ఈయాకులకు ప్రతిఆకునకును గూడ ఏడేసిచీలిక లుండును. ఏపుగాపెరిగినకాకరపాడు తీగలంతలావుగా దీనితీగె లుండును. ప్రత్తికాయలంత లేసికాయ లుండును. కాయపైన కొంచెము నూగు ఉండును. దురదగొండి నూగువలె ఇదియును శరీరమునకు

తగిలిన దురదపెట్టును. కాయలోపల పలుచనిదూది యుండును. ఆదూదిలో గింజ లుండును. ఆగింజలు కంది గింజలంతలేసి యుండును. గింజలరంగు గోధుమలను పోలియుండును. గోధుమగింజల కుండునంతమెరుగు లేక కొంచెము కనుమాసినరంగుగా నుండును. ఈయాకుల రసము మూర్ఛగలవారిముక్కులలో పిండనక్కరలేదు. ఆకులు నలిపి వాసనయైన చూడనక్కరలేదు, ఇంటిలో ఆతీగపాడు, లేక ఆ మొక్క, లేక ఆఆకు లుండినచాలును. మూర్ఛయనుపిశాచము పారిపోవును. ఆ మొక్కయొక్క లేక ఆకులయొక్క గాలి మూర్ఛగలవారికి సోకిన చాలును, మూర్ఛలు అమోఘముగా నివారణయి ఆరోగ్య భాగ్యము కలుగును. ఈమహామూలికపేరు బాత్రికా తెలియకుండుట శోచనీయము. ఆయుర్వేదవైద్యులు, పరిశోధనలయం దభిరుచిగల బుద్ధిమంతులు ఈమూలిక పోలికనుబట్టి (వైనివ్రాసినదానినిబట్టి) గ్రహించి ఉపయోగించి చూచి దీనిమహత్వమును వెల్లడిచేసి లోకులకు మహాపకారము చేయుదురుగాక.

మూర్ఛలకుచేకొనిదచెట్టు (క్షీరమోరటి)యొక్క ఆకులు నలిపి ఆపనరు ముక్కులలో పిండినయెడల మూర్ఛరోగము నివారించును. కొద్దినెలలనుండి ఉన్న రోగమైనయెడల ఒకటి రెండుసార్లు పిండిన చాలును. ఏళ్లకొద్ది నిలవగా ఉన్నరోగమైనయెడల నాలుగయిదు సార్లు చికిత్సచేయవలయును. చేకొనిద చిన్నచెట్టుగా నుండును. ఆకులుచిన్నవి. ఆకులు నలిపితే జిగురుగా నుండును. రసముత్వరగా రాదు. ఈచెట్టులు సామాన్య ముగా చాలమందికి తెలిసియుండును. ఈచికిత్సవల్ల అనేకులకు గుణము కలిగినది.



రక్తపుటా త్రిడి (Blood-pressure)

మండ వెంకట నరసింహారావు, బి. ఎ.

ఒకప్పుడు జ్ఞానముగూడ విషయముగనే పరిణమించును. ఎప్పుడును దెలియనవసరములేని విషయములు సైతము లోకములో గొన్నియున్నవి. కాక యట్టివిషయములు తెలిసినపిదపనే మానవునకు జెడుగులు సంభవించును. ఈ రక్తపుటా త్రిడియను విషయము గూడ నట్టివానిలో జేరును.

రక్తపుటా త్రిడినిగూర్చి మనతాతముత్రాత లెరుంగరు. ఎరుంగవలె ననుయత్నమును వారు చేయలేదు. కాని సుమారిరువదివత్సరములనుండి యీ విషయమైన విజ్ఞానము దేశమున వ్యాప్తము గాజొచ్చినది. నాటి నుండియు నేతద్విషయకములగు వ్యాధులు మానవ మానసములను గలంచివైచుచున్నవి. కనుక జ్వరము, తలనొప్పి మొదలగువ్యాధుల విజ్ఞాన మెట్లు మానవ సామాన్యమైనదో యట్లే యీవిషయముగూడ గావలయును.

రక్తనాళములలోని రక్తముయొక్క యెత్తియే రక్తపుటా త్రిడి యనబడును. గుండెకాయనుండి శుద్ధ రక్తము నాళముల కంపబడుటచేత నీయెత్తిడి గలుగుచున్నది. మనుజుని యారోగ్యమునకు గొంతయెత్తిడి యావశ్యకము. కాని యొకత్తిడిలో గాలి నెక్కువగ పూరించిన నాత్తిడియెట్లు పగులునో యట్లే రక్తాధికత వల్లగూడ జీవి కాపడ గల్గును.

మణికట్టునొద్దను, జేతులమీదను మన మీరక్తపుటా త్రిడిని కనుగొనగలము. దేహోష్ణతా పరిశీలనమున కెట్లు శీతోష్ణపరిమాణయంత్రము (Thermometer)

వలయునో యట్లే దీనిని బరీక్షించుటకుగూడ నొకయంత్రము గావలయును. నాడీనిదానమున దీని సంతగ గనుగొనలేము. దీనిని బరీక్షించుయంత్రము, యంత్రము నుపయోగించు వైపుణ్యము గలవైద్యుడు నుండిననే కాని దీనియెక్కువతక్కువలు తెలియజాలవు. ఈరక్తపుటా త్రిడిలో నత్యధికము, నత్యల్పము రెండును బ్రమాదములే. నేడు వైద్యశాస్త్రమునం దీవిషయమే యత్యధిక ముఖ్యస్థానము నందియున్నది.

అధికమగు రక్తపుటా త్రిడి మలబంధాతిశయము వల్లను, లోనిరక్తమునందుఁ గల్గుచుములు చేరియుండుట వల్లను, సారా, కల్లు మొదలగు సనహజపదార్థము లతీతములుగ నేవించుటవల్లను గలుగుచున్నది. క్రోధము, నసూయయు దీనిలో విభేదములు గలిగించును. కావున రక్తపుటా త్రిడివలని రోగములకు దేహ మానసములు రెండును నిదానములనుట స్పష్టము.

ఎంతయోకాలమునుండి చికిత్సాసాధ్యములైన రోగములుపైత మేతద్విషయకపరిశోధనాసంతరము తేలికగ గుఱుర్పబడుచున్నవి. దీనిసంబంధమగు పరిశోధన వైద్యశాస్త్రమునకుగూడ వింతపరిణామమును గల్గించినది.

అధికమగు నీరక్తపుటా త్రిడివలన గల్గెడిరోగములు నేడు సంఘమునందు విరివిగ వ్యాపించి యల్ల కర్ణాలము చేయుచున్నవి. కాన నిట్టిజాడ్యములు రాకుండా జాగ్రత్తపడుటయు, నేలోపమువల్ల నేని వచ్చినచో ద్వారగ గుదిర్చికొనగల్గు జ్ఞానశక్తి గల్గుటయు మన

కత్యావశ్యకము. ఉపవాసము, విశ్రాంతి, సుఖవిరేచనము మొదలగునవి యీజాడ్యప్రవేశము నాటంకపరచును. కనుక మనుజులెల్లపుడును మృష్టాన్నములపైని, అమితమగు ఫలాహారములపైని యాసక్తులు గాక తమ జీవితమునందు యుక్తసమయములలో పై జెప్పబడిన యుపవాసాదినియమము లవలంబించుట సర్వోత్తమము.

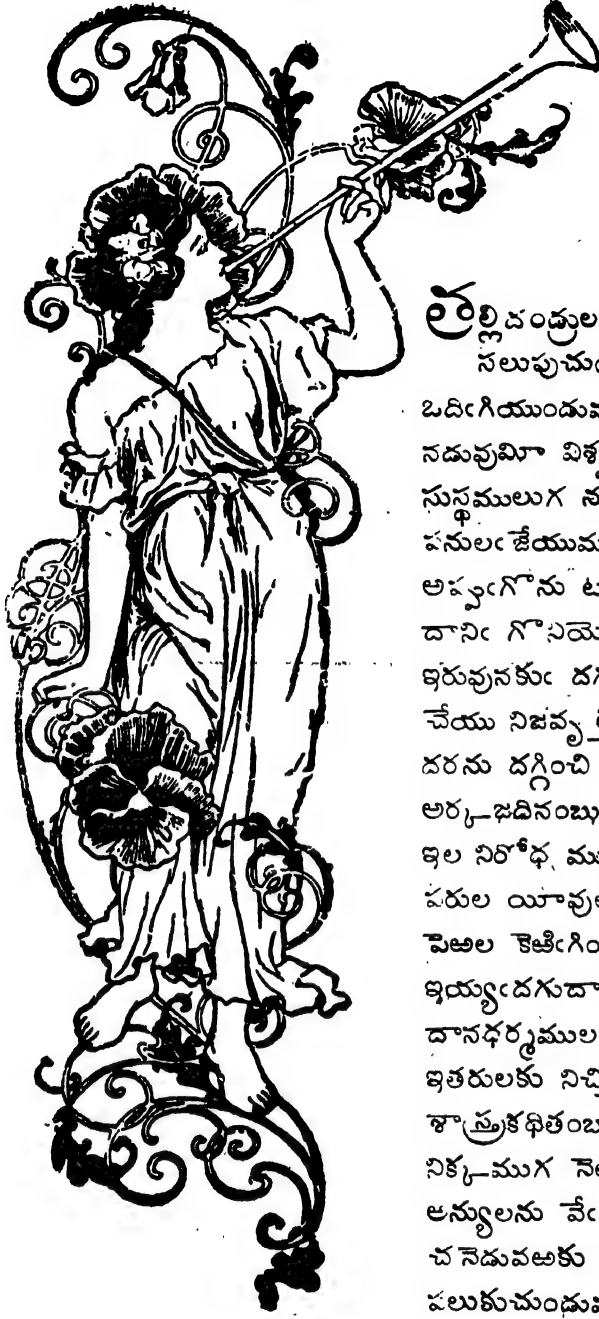
మరియొకవిషయము. మజ్జగయొక్క విలువను మనదేశ మింకను గ్రహింపలేదు. ఎందరో జనులు ముఖ్యముగ గ్రామీణులు తమభోజనమృతాంధు మజ్జగను వాళ్లకుండుట మనము చూచుచున్నాము. రష్యాదేశమున నీమజ్జగలోని సుగుణములనుగూర్చి చేసెడిప్రచార

ములో బదియవవంతు మనదేశమున జేయుచో నాయు: యమునకు హేతువులగువానిలో నొకదానిని నిర్మా లింపజేసినట్లగును. కాని పరిస్థితులు భిన్నములు. అట్టి సత్ప్రచారములకు దేశము నే డాభిముఖ్యముచూపు దృష్టిలో లేదు.

మజ్జగ యుదరములో నిరికియున్న కుళ్లును బాఱ దోలి మలబద్ధమును బోగొట్టును. దాన రక్తపుత్తి యొక్క తీక్షణ రూపుమాయును. మరియు సూర్యకిరణ ప్రసారము, సంతోషస్వాంతము, ప్రాతఃకాలమున హఠాఘ్న, లవణరహితభోజనము నివియన్నియు రక్తపు టాత్తిడివలన గల్గెడి జాడ్యములను నిర్మూలింపజేయును.



ప్రబంధనుందరి—సాదృశ్యమే నిజమైనచో (బాలకవుల కుపయోగపడుటకు చిత్రము)



బాలవోధము

శ్రీ శ్రీ శ్రీ విక్రమదేవవర్మ

(జయపురాధిపతి)

తల్లిదండ్రుల ననవరతంబుఁ బూజ
సలుపుచుం బాలనము నేయవలయుఁజుమ్మి
ఒదిగియుండుము పెద్దలయొద్ద నీవు
నడువుమీ విశ్వవిధులను గడవకుండ
సుస్థములుగ నుంచుము మనస్సును ధనువును
పనులఁజేయుము యోచించి బాగుగాను
అప్పుఁగొను టగుఁజుమ్ము నింద్యమ్ము దలఁ
దానిఁ గొనియెదవేని బితానఁదీర్పు
ఇరువునకుఁ దగునట్లు మందిరముఁ గట్టు
చేయు నిజవృత్తిని దురాశఁ జెందకుండ
దరను దగ్గించి యమ్మకు ధాన్యములను
లర్కభదినంబున శుభ మభ్యంజనంబు
ఇల నిరోధ ముత్తమము నిర్వృతి యధమము
పరుల యీవుల నడ్డగింపకుము నీవు
పెఱల కెఱిగింపకుము నీదు విత్తగరిమ
ఇయ్యఁదగుదాని యాచకుం డెఱుఁగుఁగాక
దానధర్మములను జేయఁబూను మెపుడు
ఇతరులకు నిచ్చి పిమ్మటనే భజింపు
శాస్త్రకథితంబులందు నశ్రద్ధ దగదు
నిక్కముగ నెఱిగినదానినే నుడువుము
అన్యులను వేడు టది నైచ్య మగును జమ్మి
చ నెడువఱకు సద్గ్రంథంబులను జదువుము
పలుకుచుండుము ప్రియవాక్యముల నె యెపుడు
కటమైత్రి యుద్రవకరమునుమ్మి
విషయసక్తుల సంగంబు విడుచు టొప్పు
సజ్జనులమైత్రినే సదా సలుపఁదగును
పొదలనీయకు మెపుడును మదిని వంత
సతత మఖిలాధిపతిభక్తియుతుండ వగుము.

సృష్ట్యాదికాలము

చివుకుల వెంకటరమణశాస్త్రి

సృష్టి ప్రారంభమై ఎంతకాలమైనది అనుగిడు యమును సయ్యక్తికముగ విమర్శింతుము. కాలవిధానముక మగుశాస్త్రము జ్యోతిశశాస్త్రము (Astronomy). దీని ననుసరించు ప్రాచీనోక్తులను కేవలముగా విశ్వసించక ప్రత్యక్షముగా మన కగపడు పరిస్థితులను బట్టియే ఈసృష్ట్యాదికాల నిర్ధారణనుగూర్చి విమర్శింతుము:

ఆకాశమందు కాంతివంతములుగ (వెలుగుచున్న) మన కగుపడు నవి గ్రహములు, నక్షత్రములు. అందు గ్రహములకుమాత్రము చలనమున్నట్లు మనకు ప్రత్యక్షముగా నగుపడుచున్నది. ఆకాశమందలి సూర్యసంచారమార్గమునకు (The sun's path in the heavens) క్రాంతివృత్తమని (Ecliptic) పేరు. ఖగోళమధ్యయందనగా ఉత్తర దక్షిణధ్రువములకు మధ్యనుండు వృత్తమునకు విభవద్వైత (Celestial Equator) మనిపేరు. భూగోళమందును, రెండు ధ్రువములకు మధ్యనున్నదియే భూమధ్యరేఖ (Terrestrial Equator). కావున దీని ప్రదేశమందుండువారికి సరిగా నెత్తిమీద అభిముఖముగా ఖగోళమందు విభవద్వైతముండును. ఈ క్రాంతివృత్తము విభవద్వైతముతో రెండుస్థానములందుమాత్రమే కలిసియుండి రెండుస్థానములందు దీనికి ౨౩½ భాగలమూలలో ఉత్తరముగాను, దక్షిణముగాను ఉండును. అందు కలిసినస్థానమునకు మేషుది (First point of Aries) అనిపేరు. ఇచటనుండి ౯౦ భాగల (Degrees)మూలము వరకు క్రాంతివృత్తము, విభవద్వైతమునకు త్తరముగా క్రమముగా పెరుగుచుండును. అచట, అనగా పరమక్రాంతి (Obliquity of the Ecliptic) యగు ౨౩½ భాగలమూలములోనున్న స్థానమునకే కటకాది (Cancer) యనిపేరు. అచటనుండి క్రమముగా తగ్గుచు ౯౦ భాగలమూలములో పూర్తిగ తగ్గి విభవద్వైతముతో కలియును. దీనికి తులాది (Libra) యనిపేరు. ఇచటనుండి క్రాంతివృత్తము విభవద్వైతమునకు దక్షిణముగా నుండును. ఈమూలము క్రమముగా ౯౦ భాగలవరకు పెరుగును. దీనికి మకరాది (Capricorn) యనిపేరు. ఇచటనుండి క్రమముగా ఆమూలము తగ్గుచు క్రమముగా ౯౦ భాగలమూలములో తిరిగి విభవద్వైతముతో కలియును. ఇదియే

మేషుని. ఇదియే క్రాంతివృత్తము. ఇందు సూర్యుడు సంచరించును. ఈసంగతులన్నియు మనకు ప్రత్యక్షముగా నగుపడును. ఎట్లనగా, భూమధ్యరేఖయందలి దేశములో నున్నవాడు ప్రతిదినము మధ్యాహ్న కాలమందు తననీడను పరీక్షించును. మార్చి ౨౧ వ లేదీనాడు తన నీడ నేమియు ఉండనట్లతడు చూచెను. అందుచే ఆదినమున సూర్యుడు తన నెత్తిమీద నుండెనని తెలిసికొనెను. ఆ దినమునుండి క్రమముగా అతడు తననీడను తనకు దక్షిణముగా క్రమముగా పెరుగుచుండినట్లు చూచెను. అందుచే సూర్యుడు తన నెత్తిమీదికి ఉత్తరముగా వెళ్లుచుండెననియు, క్రమముగా ఉత్తరముగా వెళ్లుమార్గ మధికమగుచున్నదనియు అతడు తెలిసికొనెను. ఇట్లు ౨౨ వ వరకు తననీడ ఉత్తరముగా పెరిగి, ఆ దినమునుండి తన నీడను వెనుక పెరిగినట్లుగా ఇప్పుడు తగ్గుచున్నట్లతడు గనెను. దీనినిబట్టి అటనుండి సూర్యుడు తిరిగి దక్షిణముగా వచ్చుచున్నట్లతడు గనిపెట్టెను. ఇట్లు తగ్గుచు, శ్రవైంబరు ౨౩-వ లేదీని తన నీడ తన ట్లతడు చూచెను. అందుచే వెనుకటివలె సూర్యుడు తన నెత్తిమీద నుండెనని యతడు గుర్తించెను. ఇట్లే ఆదినముమొదలు అతడు, తననీడను, తనకుత్తరముగా వచ్చుట చూచి, సూర్యుడు దక్షిణముగా నున్నాడని తెలుసుకొనెను. దీనివలె ౨౨-వ లేదీనాడు, వెనుక తననీడ ఎంతదక్షిణముగా నుండెనో అట్లే ఈదినమున అంతఉత్తరముగా తననీడను చూచెను. అటనుండి తననీడను క్రమముగా తగ్గుచున్నట్లును, తిరిగి మార్చి ౨౧-వ లేదీనాడు నీడ ఏమియు లేనట్లును అతడు చూచెను. దీనినిబట్టి అతడు వెనుకచెప్పిన క్రాంతి వృత్తస్వరూపమును, సూర్యసంచారమును గుర్తించెను.

అట్లే, ఇతరదేశములందున్నవారెవరైనా దీనిని గుర్తించనగును. భూమధ్యరేఖనుండి, తమదేశమున కంతదూరముండెనో (Latitude) అంతదూరముగ సూర్యుడు ధుంధురోజున వీరికి నీడ కూన్యమగును. తమనీడ క్రమముగా ఉత్తరముగా పెరిగినదివరదినమున, అచట చిహ్నముచేసి, దక్షిణముగా పెరిగినదివరదినమునగూడ నిట్లే చిహ్నముచేసి,

ఈరెండువిహ్వములమధ్యను, ఒకరేఖ గీచినచో అదియే విమవద్వృత్త మగును. ఇట్లే దీనినిబట్టి చెనుకటికలె అంతయు గుర్తించవగును.

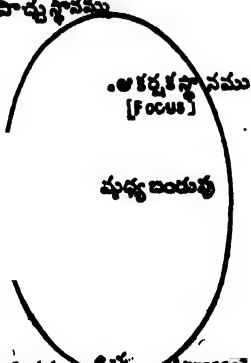
ఇట్టి వృత్తసంపాతమే (Vernal Equinox) ఆరంభ స్థానము. అటుండి క్రమముగా పెరుగుటచేత, సూర్యునికి గతిగలదని ఆతడు గుర్తించెను. ఇట్లు తిరిగి ఆస్థానమునకు వచ్చుచినమునుబట్టి ఆతడు సూర్యు డొకసంవత్సరకాలములో తిరిగి, ఆరంభస్థానములో నగుపడునని తెలుసుకొనెను. ఇట్లే చంద్రుడుమొదలైనగ్రహములను వేగచేసి, వాటికి దినగతులను, వార్షికగతులను పరీక్షించవగును. ఎట్ల నగా వేగచే నీదినమున మేషాదినుండి కొంతదూరములో గ్రహము కనబడినచి, తేపటిదినమునగూడ నిట్లే వేగ చేయగా మేషాదినుండి గ్రహమువరకు గలదూరము తెలిసెను. ఈరెంటికిమధ్యనున్న దూరము ఆదినమందు ఆగ్రహముచే ఆక్రమింపబడినదిగా నతడు గుర్తించెను.

ఈగతులనుబట్టి, వారు చక్రమును చుట్టివచ్చుట కొంతకాలము పట్టునో తెలియనగును. అట్లే ఒకసంవత్సరములో అనగా సూర్యుడు ఆరంభబిందువునుండి తిరిగి ఆబిందువును చేరుకాలములో ఏగ్రహ మెంతదూరము నడచునదియు వేగవలన తెలియనగును. ఇది మనకు ప్రత్యక్షముగా గాన్పించును. ఇట్టిపరీక్షచే ఒకసంవత్సరకాలములో గ్రహముల కొంతగతియని గుర్తించవగును.

	రా.	భాగ.	వివ.	విలి.
రవికి	౦	౦	౦	౦
చంద్రునకు	౪	౧౨	౪౬	౪౦
కుజునకు	౬	౧౧	౨౪	౯
బుధునకు	౧	౨౪	౪౫	౧౮
గురునకు	౧	౦	౨౧	౬
శుక్రునకు	౭	౧౫	౧౧	౫౨
శనికి	౦	౧౨	౧౨	౫౦

ఇట్లు పరీక్షించుటలో, గ్రహము కొంతకాలము వేగముగను, కొంతకాలము మెల్లగను, నడచుచున్నట్లగుపడుచున్నది. ఎప్పుడు భూమికిగాని, ఆకర్షకునకుగాని అతిదూరములో గ్రహముండునో

గతిహెచ్చునము



గతిహెచ్చునము తక్కు (Appogee)

దనియు కనుగొనవచ్చును. దీనికి మనవారు ఉచ్చ (Appogee) యని పేరిడిరి.

ఆపుడు గ్రహము మెల్లగ నడచు చున్నట్లును, ఆకర్షకునకు అతి సమీపములో నున్నపుడు శీఘ్రముగ నడచుచున్నట్లును వేగ వలన (by observation) కనుపడుచున్నది. దీనిని బట్టి గ్రహముల వాకర్షించు విశేష క్రియల వికాసోక్తేతాదితేజ మున్నదినియు, దాని ఆకర్షణ లోనిహెచ్చుతగ్గులనుబట్టి గ్రహ గతి హెచ్చుచు, తగ్గుచు నున్న

ఈ ఉచ్చకుగూడ కొంతగతియున్నట్లు మనకగుపడుచున్నది. ఎట్లనగా గ్రహము తిరుగుచున్న కక్ష్యవృత్తములో (Orbit) మధ్య బిందువునుండి వేగచేసినపు డొకవిధముగను, పార్శ్వబిందువు (ఆకర్షక స్థానము Focus) నుండి వేగచేసినపుడు మరియొకవిధముగను అగుపడు చున్నది. ఇట్లు ప్రతిదినము చూచుచుండగా, నీరెంటికి భేదము కొంతకాలము పెరుగుచును, మరి కొంతకాలము తరుగుచును ఉన్నట్లు మన కనుపడుచున్నది. దీనిని నిపుణముగా పరీక్షించినచో, గ్రహము ఉచ్చవద్దనున్నపుడు రెంటికిని అంతరము కనుబడుటలేదు. ఇట్లే నీచ వద్ద గ్రహమున్నపుడును భేద మగుపడుటలేదు. అనగా నీసమయము లందు మధ్యనుంచి వేగచేసినను, పార్శ్వబిందువునుంచి వేగచేసినను ఒకే విధముగా గ్రహ మగుపడుచున్నది.

ఇట్లేవిధముగను గ్రహ ఘనపడునో, తిరిగి ఉట్టుగువపు మధ్య కాలముండునో తేజానుబట్టి ఈ ఉచ్చకు గతి యున్నట్లు తెలియనగును. అనగా మేషాదినుండి కొంతదూరములో గ్రహమున్నపుడు మధ్య పార్శ్వ బిందువులలో నెచటినుండి చూచినను అంతరముగపడుట లేదు. అనగా ఆగ్రహముయొక్క ఉచ్చ (Appogee) గూడ మేషాది నుండి కొంతదూరములో నుండెనని తెలుసుకుంటిమి. తిరిగి రెండవవారు గ్రహము మేషాదినుండి కొంతదూరములో నుండెనని తెలుసుకుంటిమి. తిరిగి రెండవవారు గ్రహము మేషాదినుండి కొంతదూరములో నుండెనని తెలుసుకుంటిమి. దీనిని బట్టి ఇది సంవత్సరమున కొంతదూరము కదలునదియు, ఇది చక్రమును చుట్టివచ్చుట కొంతకాలము పట్టునదియు తెలియనగును.

ఇట్లే క్రింది విధమైన గతుల, ఉచ్చలకు ౧౦౦ సంవత్సరము లలో కావచ్చును:

రవి	ఉచ్చ	భాగది	౦	౦	౧౧	౩౬
చంద్ర	,,	,,	౧౦౮	౨౧	౩౦	
కుజ	,,	,,	౦	౦	౬	౭
బుధ	,,	,,	౦	౦	౧౧	౨
గురు	,,	,,	౦	౦	౨౭	౦
శుక్ర	,,	,,	౦	౦	౧౬	౩
శని	,,	,,	౦	౦	౧	౧౦

ఈప్రకారముగానే గ్రహములను ఉత్తరముగాను, దక్షిణము గాను ఆకర్షించుకేక్రియ "పాతలు" (Nodes) గలవని వేగవలన గుర్తెరిగిమి. అట్లైనగా, గ్రహములు కొంతకాలము క్రాంతి వృత్తమున వృత్తరముగాను, మరికొంతకాలము దక్షిణముగాను, మరి కొంతకాలము క్రాంతివృత్తముందును నడచుచున్నట్లు మన కనుపడు చున్నది.

క్రాంతివృత్త మెట్లు విమవద్వృత్తముతో రెండుస్థానము లంకునాత్రమే కలసియుండి, తిరస్కీవముగా నున్నచో అట్లే గ్రహ

ములు తిరుగు కక్ష్యవృత్తములు క్రాంతివృత్తములో రెండుస్థానము లందుమాత్రమే కలుసుకొని, తిరస్సినముగా నున్నట్లు మనకు వేధవలన అనుపడుచున్నది. ఈ రెండువృత్తములు (క్రాంతివృత్తము, గ్రహ కక్ష్యవృత్తము) కలసిసంస్థానములకే 'పాత' (Nodes) అని పేరు.

వేధవలన గ్రహ మేదినమున క్రాంతివృత్తమందు గమనించెనో అదినమున, ఆగ్రహముతో సమానమైన మేషాదిమారములో దాని పాత యుండును. ఇట్లు గ్రహము తిరిగి అచటికన్న కొంతవెనుక నుండగానే ఆగ్రహము క్రాంతివృత్తమందు దగుపడుచుండును. అందుచే గ్రహము ఒకపర్యాయము చక్రముచుట్టు తిరిగివచ్చుకాలములో, దాని పాత కొంత వెనుకకు నడచినదని తెలియుచున్నది. ఇదియే 'పాత' యొక్క విలోమగతి. ఉదా. మేషాదినుండి ౪ భాగలమారములో గ్రహ మున్నప్పుడు ఇది క్రాంతివృత్తమందు నడచుచును. తిరిగి ఆ గ్రహము దానిని దాటిపోయి చక్రమును చుట్టివచ్చి, మేషాదినుండి ౩.౭ భాగల (Degrees) దూరములో నుండగానే అది క్రాంతివృత్త మందు దగుపడును. ఇదియే పాతస్థానముగా! అందుచే నీమధ్యకాల మందు ఆగ్రహముయొక్క పాత ౦.౩ భాగలమారము వెనుకకు నడచినట్లు స్పష్టముగా మన కనుపడుచున్నది. దీనినిబట్టి 'పాత' ఒకసంవత్సరకాలములో నెంతెంత నడచునదియు, చక్రమును చుట్టి వచ్చుట కెంతకాలము పట్టునదియు తెలియనగును. ఇట్లన్ని గ్రహముల పాతలకును ౧౦౦ సంవత్సరములకాలములో విలోమగతి ఈక్రిందివిధముగ నుండును:

రాహువు లేక చంద్ర పాత గతి	౪	౧౫	౧౯	౦	౦
కుజ	౦	౦	౦	౬	౨౫
బుధ	౦	౦	౦	౧౩	౩౪
గురు	౦	౦	౦	౫	౧౩
శుక్ర	౦	౦	౦	౨౭	౫
శని	౦	౦	౦	౧౫	౫౧

రా. భా. లి. ప. వి. పర.

ఇదంతయు మనకు ప్రత్యక్షముగా వేధవలన అనుపడుచున్నది.

ఇకను మనకు ప్రకృతమందు విమృశ్యాంశమున సృష్ట్యాదికాల నిర్ణయమువద్దకు వచ్చెదము. ఆరంభకాలములో అన్ని గ్రహములు వాటి ఉచ్చలు, పాతలు, అన్నియు ప్రారంభస్థానమున మేషాది (Vernal Equinox) యందుండవలయును. అట్లారంభస్థానమందుండనిచో దానికి ఆరంభస్థాన మను సంజ్ఞ వర్ధిల్లునుగా!

కొన్నిగ్రహములుమాత్రమే ఈ ఆరంభస్థానమందున్నచో అది ఆరంభకాలము గానీరదు. అంతకుపూర్వము ఏవిధమైనగ్రహ ములుగాని, ఉచ్చలుగాని, పాతలుగాని ఏర్పడకయుంకి అప్పుడే ఏర్పడినకాలమే సృష్ట్యాదికాలమన సర్వవిదితము. అందుచే, అన్ని గ్రహములు ఉచ్చలు, పాతలు, ఒక్కమారు సృజింపబడి, ఒక్క చోటనుండి తిరుగుట ప్రారంభించినదనియు, అదియే సృష్ట్యాదికాల మనియు చెప్పక తప్పదు.

ప్రకృతమందుండు గ్రహస్థితినిబట్టియు, వాటిగతులనుబట్టియు వెనుకకు వెళ్లగా, నెప్పుడు ఈగ్రహ, ఉచ్చ, పాతల కిందరకు సామ్యముగా ఆరంభస్థానమందు స్థితియుండునో అనియే సృష్ట్యాది కాలము. ఇట్లు వెనుకకుపోగా ౧,౯౫,౫౦,౮౫,౦౩౪ సంవత్సరముల క్రిందట, ఇరన్నీయు ఆరంభస్థానమున మేషాదియందుండును. కాన నిదియే సృష్ట్యాదికాలము.

గణితమర్యాదానుసారముగా గ్రహములకు సామ్యకాలము ౪౩,౨౦,౦౦౦ సంవత్సరములు. అనగా ఇంతకాలమున కొకమారు గ్రహములన్నియు ఆరంభస్థానమందుండును. కాని ఈకాలమునకు ఉచ్చలు, పాతలు ఆరంభస్థానమునకు రానేర వని మనకు ప్రకృతము అనుచున్నందున గ్రహగతులచే స్పష్టపడుచున్నది. ఈగ్రహములకైనను ఈకాలములోపల సామ్యము గలుగ నేరదని దిక్పాత్రముగా ప్రది థించుచున్నాను.

	చంద్రగతి	కుజగతి	బుధగతి	గురుగతి	శుక్రగతి	శనిగతి
	రా. భా. లి. వి.	రా. భా. లి. వి.	రా. భా. లి. వి.	రా. భా. లి. వి.	రా. భా. లి. వి.	రా. భా. లి. వి.
౨౦౦౦ సంవత్సరములకు	౦-౦-౦-౦	౩-౨౬-౦-౦	౪-౫-౨౦-౦	౨-౧౦-౦-౦	౩-౧౩-౨౦-౦	౧-౬-౦-౦
౫౦౦౦		౧-౨౦-౦-౦	౪-౧౩-౨౦-౦	౫-౨౫-౦-౦	౬-౧౫-౨౦-౦	౩-౦-౦-౦
౬౦౦౦		౧౧-౧౫-౦-౦	౦-౧౬-౦-౦	౩-౦-౦-౦	౧౦-౧౦-౦-౦	౩-౧౫-౦-౦
౧౦,౦౦౦		౩-౧౦-౦-౦	౪-౨౬-౦-౦	౧౧-౨౦-౦-౦	౧-౬-౦-౦	౬-౦-౦-౦

సూర్యుడుమాత్రము సంవత్సరమున కొకమారు ఆరంభస్థాన మునకు వచ్చును. గ్రహములకు వైసయాపినవిధముగా ౪౩,౨౦,౦౦౦ సంవత్సరములలోపల భిన్నమగుగతు లుండునీగాని, ఏకరీతిగల గతి యుండి అన్నియు ఆరంభస్థానమునకు రానేరవు. ౪౩,౨౦,౦౦౦ సంవ

త్సరములకాలమునకు గ్రహములన్నియు ఆరంభస్థానమునకు రాగలవు. కాన ముందోచ్చలు ఈకాలములో రాలేవు. ఈకాలములో వాటి గతి ఈక్రిందరా. భా. లి. ప. వి. పరలలో కనపర్చబడుచున్నది.

రవి ఉచ్చ	౪-౧౯-౧౯-౧౨	చంద్రోచ్చగతి	౦-౦-౦-౦
కుజ ,,	౨-౧౩-౨౬-౨౪	కుజ పాతగతి	౨-౧౩-౨-౨౪
బుధ ,,	౪-౧౨-౨౮-౪౮	బుధ ,,	౫-౨౫-౪౦-౪౮
గురు ,,	౧౦-౨౪-౦-౦	గురు ,,	౨-౨-౩౮-౨౪
శుక్ర ,,	౬-౧౨-౩౬-౦	శుక్ర ,,	౧౦-౨౫-౪-౪౮
శని ,,	౦-౧౪-౨-౨౪	శని ,,	౩-౨౮-౧౯-౧౨

ఇవి ప్రకృతమందు మన
కగుపడు గతులచేత సాధింప
బడినవి.

చంద్రపాత ౦౯ రాముగతి ౦-౦-౦-౦

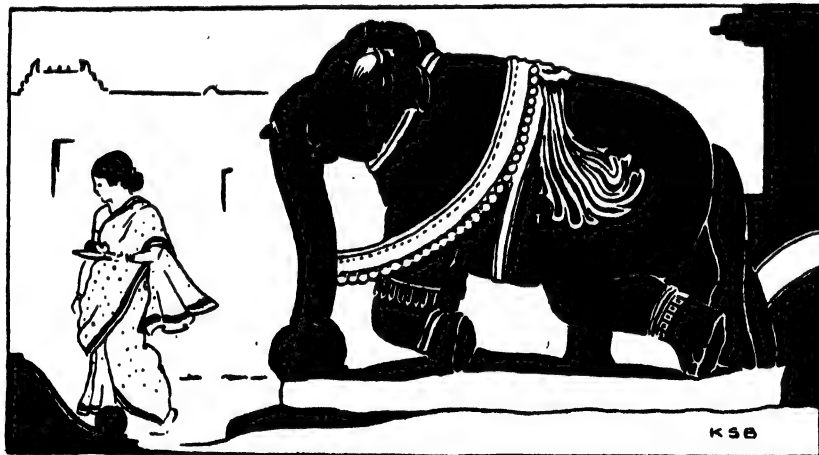
కావున ౪౩,౨౦,౦౦౦ సంవత్సరములకాలములో గ్రహము లన్నియు
ఆరంభస్థానమును మేషాదిలోనికి వచ్చినప్పుడు ఉచ్చలు, పాతలు,
ఆరంభస్థానమునకు రాజాలనందున ఈకాలము సృష్ట్యధికాలము
గానేరదు. ఈగ్రహములగతి సామ్యకాలమునకే (ఆరంభస్థానమునకు
అన్నిగ్రహములు చేరుకాలమునకు) ప్రాచీనులు గూఢముగ “మహా
యుగ” మని పేరిడిరి. వారీయాశయ మిదియై యుండనోవు!

ఇట్లే ఉచ్చ, పాతలు, గ్రహములు అన్నియు ౪౩,౨,౦౦,
౦౦,౦౦౦ సంవత్సరములకాలములో ఆరంభస్థానమునకు చేరును.

ఈలోపల చేరజాలవు. ఇందుకు ప్రకృతమందు మన కగుపడుగలిగే
తార్కాణము.

ఇట్టికాలమునకే ప్రాచీనులు ‘కల్ప’ మని పేరుపెట్టిరి.
ఇదియే దీనికి హేతువుకాబోలు!

కావున ప్రకృతమందలి గ్రహస్థితిని, వాటిగతులనుబట్టి ఈగ్రహ
ములు, ఉచ్చలు, పాతలు, ఇవన్నియు ఆరంభస్థానమునకు చేరుకాల
మును వెనుకకు శోధించగా ఇప్పటికి రహరమి ౧౯౫,౫౮,౫౫,౦౩౪
సంవత్సరములక్రిందట అయియుండునని వైవిధముగావిమర్శింపనగును.



ఆలయములో

—కొత్తపల్లి సబ్రహ్మణ్యము, కళింద.



(38) 1. పటావల్లిభూమి ప్రభుత్వోత్తరంగారు. 2. సూర్యనారాయణ సోదరకపులు. 3. కవిసేనా, పాతూరి కాశీపతిగారు (కారి భర్తృవత్త్వియు). 4. తామూరి చిదంబరంగారు. 5. అంజనేయ అవధూత ముహూర్తదస్యామిగారు.



1. దంటు నాగేశ్వరరావుగారు. 2. మంగళగిరి రాఘవదాసుగారు. 3. కొమ్మూరి బాలబ్రహ్మవందదాసుగారు.
4. ముదునూరి వెంకటకృష్ణరావుగారు. 5. చొల్ల వెంకటసుబ్బారావుగారు.

[శ్రీ విష్ణుచిత్తులు వ్రావడమునఁ బ్రసాదించిన “ కృష్ణమాడంగళ ” అను ప్రారంభముగల పాశురములు :
ద్రవిడదీక్షప్రబంధములోనిది.]

వన్నమాడువులను వరలు గోష్ఠిపురాన
వెన్నుఁ డుద్యవింపఁ జెన్నుమీఱుఁ
జమురు సున్ని గొని వసంతంబు లాడంగఁ
బంకమయ్యెఁ గృష్ణు ప్రాంగణంబు.

పరువులెత్తువారు, బడువారు, ముదమారఁ
బెనఁగువారు, నేడి బిడ్డఁడనుచు
నెమకువారు, వాయిదము గొట్టఁబాడువా
రాడువారు నైరి యాలపల్లె.

ఇడుమవాసి చెల్వి మెనఁగ బిడ్డఁడుపుట్టఁ
జూడఁబోవువారు, జూచి మరలు
వారు, వీనిసాటి రా రెన్న, రితఁడు శ్ర
వణపతి, జగమేలు ననెడివారె.

ఉట్లఁ దెచ్చి ముంగి నురలించి యాడువార్,
పాలు పెఱుఁగు నేయి పంచువారు,
నెఱికురు ల్విడంగ నెఱసి నాట్యము తెల్వి
కూలినట్టి రయిరి గొల్ల లచట.

గట్టితాటియుట్లు, గఱకైన గొడ్డండ్లు,
మొగలిసెజ్జ దండమును, చెలంగ
మొల్లసూపుదంతముల గొల్ల లపుడు “ నె
య్యాడ* ” లాటలాడి రాలపల్లె.

కాలుకేలు నిమిరి గంగాళపున్నీటఁ
జక్క నార్చి చిన్నిచాయపసపు
నాల్కగీచినట్టి నాటికి వా నూప
బిడ్డనోటఁ గాంచె విశ్వ మామె.

విశ్వ మట్లు గాంచు వెల్గుకు నఖిలెల్ల
గొల్లబిడ్డ గాఁడు, గొప్పదైవ
మఖిలసుగుణశీలుఁ డగు మేటిబాలుండు,
మాయకాఁ డటంచు మలయువారె.

పదిదినములు గడవఁ బిదపరెండవనాఁడు
అన్నిదిక్కులను జయధ్వజంబు
నిలిపి కొండతాల్పునేర్పుకానినిఁ గేలఁ
గొనుచు సంతసిలిరి గొల్లలెల్ల.

పండఁబెట్టఁ దొట్ల పగులఁదన్నును, జంక
నెత్తుకొన్న నొడలనెల్ల విఱుచుఁ
జక్కఁబట్టి టొమ్ము నేర్పఁ గడ్పునఁ బాఱు
నోర్వ కలసిపోతి నువిదలార.

వరిపయిరులమళ్ల వరగోష్ఠిపురమందు
సామి యవతరించుచందమెల్ల
వెలయఁజెప్ప విప్రవిష్ణుచిత్తుల పాట
లివి పఠించువారి కెడరు లేదు.



మను స్మృతి-వేదాధారము

జటావల్లభుల పురుషోత్తము, వి. ఏ.



ప్రస్తుతిము ౨౬౯౮ అనుష్టుప్భంధశ్లోకములతో నొప్పుచున్న మనుస్మృతిని మనువు వ్రాయలేదనునంశము మనుస్మృతిని బట్టియే స్పష్టమగుచున్నది. అందలి ప్రథమాధ్యాయమున నీక్రిందిగాఢ కలదు.

“మునులు మనువునొద్దకేగి వర్ణాశ్రమధర్మములను తెలుపవలసిన దని శోరిరి. మనువు వారికి సృష్టిక్రమమునకు సంబంధించిన కొన్ని యంశములను చెలిపి నే నిదివఱలో భృగువునకు వర్ణాశ్రమధర్మములను చెప్పియుంటిని. అతడు వానిని మీ కిప్పుడు తెలుపగలడు.” అని చెప్పెను. అంత భృగువు మనువు తన కుపదేశించినవిధముగ వర్ణాశ్రమధర్మముల నుపదేశించెను.”

ప్రథమాధ్యాయములోని ౬౦-వ శ్లోకముచివఱను భృగుని మాటలు ప్రారంభమగుచున్నవి. అంతవఱకునుగల, గాఢమ గ్రంథము చేసినవారెవరో మనకు తెలియదు. భృగువు సరిగ మనువు చెప్పిన యక్షరములతోనే ధర్మములను చెప్పియున్ననుగూడ మొదటి యరు వది శ్లోకములకును మనువు కర్తకాడనియు, నొక యజ్ఞాతకవియే కర్తయనియు చెప్పవలసియున్నది. కాని భృగువుచెప్పినధర్మములు మనువుమాటలలో లేవని స్పష్టముగ తెలియుచున్నది. ఏమన ననేక స్థలములలో ‘మనురబ్రవీత్’ అని భృగువు చెప్పుచున్నాడు. ఒకచో భృగుని స్వీయాభిప్రాయముగూడ చెప్పబడినది. (3 అ. ౧౬ శ్లో.) మఱియు నష్టశ్లోకము మనులు భృగువును ప్రశ్నించుచుండుటయు, భృగు వండులకు సమాధానముచెప్పటయు గాన్పించుచున్నది. మనులు వేయబోవుప్రశ్నలను గూడ మనువీ వదించెనని చెప్పబడు వీలులేదు గదా! ఈయంశములనుగూడ భృగువు మనువుచేసిన ధర్మోపదేశము యొక్క సారమును తనమాటలతో కుదించిగాని పెంచిగాని మను లకు చెప్పెనని లేలుచున్నది. కొన్నిచోట్ల మనువు చెప్పినమాటలే యుండిన నుండవచ్చును. మొత్తమువైన మనువుచేసిన ధర్మోపదేశమును స్మరించి భృగువు తాను స్వయముగ మనులకు వాని నుపదేశించినాడు. కావున భృగువు మనులయెదుట మనుస్మృతము లేకమనుస్మృతిని వేడి నాడని చెప్పవలెను. ఈమనుస్మృతి ప్రస్తుతమనుస్మృతిప్రథమాధ్యాయములోని ౬౧-వ శ్లోకమునుండి ప్రారంభమగుచున్నది. గ్రంథాంతము వఱకును గూడ మనుస్మృతియే యున్నది.

అట్లుగానో మొదటి యరువదిశ్లోకములలోను నచ్చటచ్చట గాన్పించు సృష్టిక్రమాదికొన్ని రహస్యములు మనుప్రోక్తము లని యందు చెప్పబడినదికదా. అవిగూడ మిగిలినగ్రంథ భాగముతో సమానముగానే ప్రమాణములా కావా యనుస్రవణ యువయించును. ఈ యరువదిశ్లోకములును వ్రాసిన యజ్ఞాతకవి తననాటికి దేశములో వ్యాపించియున్న మనుప్రోక్తము లని నమ్మబడుచుండిన యారహస్యములను తనమాటలతో నిండు వ్రాసియున్నాడని మన మూహింపవలెను. అంతకుపూర్వమే భృగుప్రోక్తములైన మనుధర్మములు ప్రజలలో పతనపాక్షములలో నుండియున్నవనియు నీ యజ్ఞాత కవి రచించిన సృష్టిరహస్యాదివిశేషములతోను పైన పేర్కొనబడిన గాఢతోను కూడుకొనిన యరువదిశ్లోకములును భృగుప్రోక్త గ్రంథమునకు చక్కని యుపోద్ఘాతముగ నేర్పడినవనియు, నందుచే వానికి మనుస్మృతితో నవివాభావసంబంధ మేర్పడినదనియు చెప్ప వలసియున్నది.

మనుప్రోక్తవిషయమును స్మరించి వ్రాయబడినది కావున దీనికి మనుస్మృతి యను నామము గల్గినదని యిదివఱలో చెప్పియున్నాను. నారదుడు వ్రాసినది నారదస్మృతి యనియు, పరాశరుడు వ్రాసినది పరాశరస్మృతియనియు నీవిధముగ స్మృతులకన్నిటికిని వాని కర్తల నామములు గనపట్టుచుండ మనుస్మృతికి మాత్ర మ స్థైల యుండవని శాందలు ప్రశ్నింపవచ్చును. ఇందులకు రెండు సమాధానములు : (౧) నారదాదిస్మృతు లాయా ఋషులచే ప్రోక్తములైన ధర్మములను తెలుపుచున్నవనియే మన ప్రాచీనులు చెప్పినారు కాని వారు వానిని లిఖించినారని చెప్పలేదు. (౨) మనుస్మృతి యన్నిటికంటెను ప్రాచీనతమమగుటచే మిగిలిన స్మృతులు వ్రాయబడుకాలమునకు స్మృతిలేబడక ధర్మశాస్త్రగ్రంథ మను నర్థమున రూఢియై శాందలు ఋషులు వ్రాసిన ధర్మశాస్త్రము లాయాఋషుల నామాంతములైన స్మృతులుగ తిరియబడుచు వచ్చిరి.

మనుప్రోక్తవిషయమును స్మరించి వ్రాయబడినది కావున దీనికి మనుస్మృతి యను నామము గల్గినదని యిదివఱలో చెప్పియున్నాను. నారదుడు వ్రాసినది నారదస్మృతి యనియు, పరాశరుడు వ్రాసినది పరాశరస్మృతియనియు నీవిధముగ స్మృతులకన్నిటికిని వాని కర్తల నామములు గనపట్టుచుండ మనుస్మృతికి మాత్ర మ స్థైల యుండవని శాందలు ప్రశ్నింపవచ్చును. ఇందులకు రెండు సమాధానములు : (౧) నారదాదిస్మృతు లాయా ఋషులచే ప్రోక్తములైన ధర్మములను తెలుపుచున్నవనియే మన ప్రాచీనులు చెప్పినారు కాని వారు వానిని లిఖించినారని చెప్పలేదు. (౨) మనుస్మృతి యన్నిటికంటెను ప్రాచీనతమమగుటచే మిగిలిన స్మృతులు వ్రాయబడుకాలమునకు స్మృతిలేబడక ధర్మశాస్త్రగ్రంథ మను నర్థమున రూఢియై శాందలు ఋషులు వ్రాసిన ధర్మశాస్త్రము లాయాఋషుల నామాంతములైన స్మృతులుగ తిరియబడుచు వచ్చిరి.

స్మృతులలో వేదములయర్థము స్మరింపబడుటచేతనే వాని కట్టిపామును గల్గినదని (ప్రతిపక్ష్యని మనయః స్మరంతి చ తథాస్మృతిం) నిగ్రహమునుండి మనవారు చెప్పుచున్నారు. గదా. మనుస్మృతియను గ్రంథములో మనువనునాతనిమాటలు స్మరింపబడి నవేదాని వేదము స్మరింపబడినదని చెప్పుటకు వీలు లేదుకదా. కావున ప్రాచీనసంప్రదాయము ననుసరించి ప్రస్తుతమనుస్మృతి నిజమును స్మృతి కాకనేపోవునుగదా యని కొందఱు వాదించవచ్చును. ఇందు లకు నేను చెప్పబోవు సమాధానము కొండఱ కాశ్చర్యమును గల్గింప వచ్చును. కాని వారు కొంచె మెక్కితో వినవలసియున్నది.

మనువును స్మరించుట యనగా వేదమును స్మరించుటయే యని యర్థము. మనువు ఋషిగ గలిగి ధర్మప్రతిపాదకమైన కొంత వేద భాగ మొకప్పు డుండెడిది. ఆభాగములో మానవులు నడచుకొన వలసినవిధానము సవివరముగ వర్ణింపబడియుండెను. ఆవేదభాగమును స్మరించి భృగువు స్మృతిని వ్రాసినపిమ్మట ప్రజలకు దురవగాహముగ నుండిన యావేదభాగము లుప్రమే యీస్మృతియే మిగిలినది. ఆవేద భాగము లుప్రమగుటకు మఱొకపేరు వది యేయజ్ఞయాగాదుల లోను పఠింపవలసినది కాకుండుటయే యని చెప్పవలెను. అందు వర్ణింపబడిన ప్రవర్తనవిధానమే ముఖ్యమగుటచేతను నదియంతయు నవినసంస్మృతములో స్పష్టముగ గన్పట్టుచుండుటచే నాదివైదిక రూపములోనే దానిని చగువవలె ననుపట్టుదల ప్రజలకు లేకుండెను. విషయములోనేకాక కొంతకంత భావలోకూడ ప్రస్తుతమనుస్మృతి యావేదభాగమునే పోలియుండుటచేతనే ప్రజలకి స్మృతియుండగ దానియవసరము గాన్పించవాయెను. వేదవాఙ్మయములో భాగమున నుండినపుడుగూడ నిది యనుష్ఠాప్యుండములోనే యుండియుండ వచ్చును. ఋగ్వేదములోకూడ వసుష్ఠాప్యుండము చాలనూక్రమములో వాడబడియున్నదిగదా! ఈవిధముక నక్షరములలోకూడ భేదములే కుండ వైదిక భాగములు స్మృతులలో గన్పట్టుట యసాధారణవిషయము కాదు. గౌతమధర్మసూత్రములలోని ౨౬-వ అధ్యాయమునందు సామవిధానబ్రాహ్మణములో నున్నదేకదా! అర్హప్రయోగములు లౌకిక ప్రయోగములుగ మాగుటయను స్వల్పపరివర్తనముతోనే యావేదభాగములో కొంత ప్రస్తుతమనుస్మృతిలో నిలచియుండవచ్చును. అర్హప్రయోగములు లౌకికప్రయోగములుగ మాగుట యనునది చాలధర్మ కాస్త్రగ్రంథముల చరిత్రములలో గన్పట్టుచున్నది. ఆపస్తంబధర్మ సూత్రములకంటె ప్రాచీనములైన గౌతమధర్మసూత్రములలో వార్షప్రయోగములు తక్కువగ నుండుటకుకారణ మాగ్రంథములోనియార్హప్రయోగములు తరువాతికాలములో నవినవ్యాకరణము ననుసరించి ధర్మరింపబడుటయే యని పాశ్చాత్యపండితులందఱు సంగీకరించిన యున్నారు. అన్నిటికంటెను నెక్కుడు పతనపాతములలో నుండిన మానవధర్మకాస్త్రములో నిట్టిసంస్కరణములు జరిగినవని చెప్పుటలో కాశ్చర్యమేమిట? కొన్ని వేదభాగములే ప్రస్తుతమనుస్మృతిలో

నిలచియున్నవను సిద్ధాంతమును ప్రతిఘటించు కొన్ని యుక్తు లకు వైన సమాధానము లీయబడగా నిక నా వేదభాగము లెట్లు వైదిక స్వరరహితమైన వనుప్రశ్న రావచ్చును. అందులకు సమాధానముకూడ వీనికి యజ్ఞకర్మలలో వినియోగము లేకుండుటయే యని చెప్ప వలెను. మంత్రభాగమే యజ్ఞములలో పఠింపవలసిన దగుటచే నదియే స్వరయుక్తముగ నేటివరకును కాపాడబడినది. యజుర్వేదమునకు సంబంధించిన బ్రాహ్మణములును, తైత్తిరీయశాఖకు చెందినయుపనిషత్తులును దక్క మఱి యేయితరవైదికవాఙ్మయమునుగూడ నేకు స్వర యంతముగ లేదు. వానినితీయే యిట్లుండ యజ్ఞకర్మలలో వినియో గము లేకుండుటతోబాటు భాషావిషయకముగ పరిణామమునకు లోనైన వైనకేర్కొనబడిన వేదభాగములమాట చెప్పుట కేమున్నది?

మనువు ఋషిగగలిగి ప్రస్తుతమనుస్మృతి కాధారమైన వేదభాగ మొకప్పు డుండెడిదనుట కార్యవాఙ్మయములో నాంతరంగిక సాక్ష్యము లేనైన కలవా యను నంశము విచారింపవలసి యున్నది. అట్టిసాక్ష్య మొకటి ప్రస్తుత మనుస్మృతిలోనే యున్నది. సృష్ట్యాదిలో పరమేశ్వరుడు మనువునకు ధర్మకాస్త్రము నొకదానిని చెప్పె నని మనుస్మృతిలో నున్నది.

ఇదం కాస్త్రంతు కృత్యాసౌ మామేవ స్వయమాదితః,
విధివద్ద్రాహయామాస మరీచ్యాదీం స్త్యహంమునీకా.

—౧ అ. ౫౮ శ్లో.

ప్రతికల్పారంభమునందును వేదములు పరమేశ్వరుని ముఖము నుండి ఋషులకు వినబడుచుండునని కాస్త్రములు చెప్పుచున్నవిగదా! అట్లు కల్పారంభమున వేదమును విననవారిలో మను నొకడని పై శ్లోకము చెప్పుచున్నది. ఆ శ్లోకములో కాస్త్రమును భగవంతుడు మనువునకు చెప్పినట్లున్నదేకాని వేదమును చెప్పినట్లు లేదేయని కొందఱు అనవచ్చును. కాని కాస్త్రమునుపదము వేదమునర్థమున కూడ వాడ బడుటకలదని 'తస్మాచ్ఛాస్త్రం ప్రమాణంలే' యను గీతావాక్యము మున్నగువానిని విననవారికెల్ల తెలియగలదు. అంతియేకాక సృష్ట్యాదిలో మనువునకు భగవంతుడు తెల్పినది వేదేతర మెన్నటికిని కాజాలదు. అట్లును వేదముకంటె ప్రాచీనమైన వాఙ్మయ ముండెడిదని యంగీకరింపవలసినవచ్చును. అట్లుంగీకరించుట ప్రాచీనార్థమతమునకే కాక నవీనపండితుల సిద్ధాంతమునకుకూడ వ్యతిరేకమే.

కావున మనువునకు భగవంతుడు తెల్పినది వేదమే యని చెప్ప వలసి యున్నది. కల్పారంభమునందు ప్రతిఋషికినిగూడ నన్ని వేద ములును వినబడక యొక్కొకని కొక్కొకభాగమే వినబడినట్లును తరువాత నివియన్నియు కలిసి వేదమునకేయిలో వ్యవహరింపబడినట్లు ను తెలియుచున్నది. ఎవని కేభాగము వినబడినదో యంత దాభాగ మునకు ఋషి. మనువునకు వినబడినభాగమున కార్యదే ఋషి యగు టయు, నాతనికి వినబడినభాగమున కంతకును గలిసి మనుసంహిత యనుపేరు గల్గుటయు నిట్లు సిద్ధించినవి.

అదిలో వేదమంతయు నందఱు ఋషులకును పూర్వముగ విన బడకుండుటయేకాక యందఱును వారివారిభాగము లాచర్యము వివరణలేదనిపూడ చెప్పవలసియున్నది. ఈసిద్ధాంతముకూడ నార్యమతమునకుగాని, నవీనపండితులసిద్ధాంతమునకుగాని విరుద్ధముగ లేదు. ఇట్లు వేదమును వినినవారిలో ప్రభములలో మనువొకడని మనుస్మృతినిబట్టియే తెలియుచున్నది.

తప స్తప్త్యా సృజన్యంతు స స్వయం పురుషో విరాట్,
తంహం విత్తస్య సర్గస్య ద్రష్టారం ద్విజసత్తపః.

అహం ప్రజాస్మిసృతుః సు తప స్తప్త్యా సుదుశ్గ్రమ్,
పశీత్ ప్రజానా మసృజం మహాన్వీ నాదితో దశ.

(౧ అ. ౩౩, ౩౪ శ్లో. లు)

ఇతరవేదద్రష్టలు జన్మించుటకు పూర్వమే మనువు జన్మించెనని యీశ్లోకములవలన తెలియుచున్నది. మను వందఱికంటెను పూర్వ ధనువిషయము వేదమునుండిపూడ తెలియుచున్నది. అందును ప్రాచీనతమమని నమ్మబడుచున్న ఋగ్వేదములోగూడ నిట్లే చెప్పబడి యున్నది. ప్రభమమండలములోని యెనుబదవసూక్తములోని పదు నారవఋక్కులలో మను వంపితకును పితయని చెప్పబడినది.

‘యా మసర్వామనుష్పితా దధ్యత్ ధియ మస్తతః’

తైత్తిరీయసంహితలోగూడ ప్రజలందఱును మనుసంతతియే యనిచెప్పబడినది

‘మానవోహి ప్రజాః’ (౨-౧-౫-౬)

మనుస్మృతిలో చెప్పబడిన మనువుతాంతము సత్యమైనదే యని యీవిధముగ వేదములు ప్రవచించుచున్నవి. మనువునకు కొన్ని వేదమంత్రములు వినబడిన వసునంశములోగూడ వేదములు మనుస్మృతిని బలపఱచుచున్నవి. ఋగ్వేదములోని (౮-౩౦) యొక సూక్తము నకు మనువు ఋషియని నేను మనకు తెలియుచునే యున్నదిగా! ఇంకను అనేకమంత్రములకు మనువు ఋషి యనియు, నాతడు తాను దర్శించిన యొక్కొక వేదభాగము నొక్కొకరికి చెప్పఁచుండెడివాడనియు వేదమునుబట్టియే తెలియుచున్నది. ఈసంపర్యమున నీక్రింది వేదవాక్యములు గమనింపదగినవి :

“మనుః పులేభ్యో దాయం వ్యభజ త్స నాభానేద్విధం బ్రహ్మచర్యం వసంతం నిరభజ త్స ఆగచ్ఛ త్సోపబ్రవీ త్కథా మా ని రభాతి తత్వా నిరభాత్ మి త్యిబ్రవీ దంగిరస ఇమే సత్ర మాసతే తే సువర్గం లోకం సప్రజానన్తి లేభ్య ఇరం బ్రాహ్మణం బ్రూహి తే సువర్గం లోకం యన్తో య ఏహం పశవ స్తాగ్ నే దాస్యన్తి తదేభ్యోపబ్రవీ తే సువర్గం లోకం యన్తో య ఏహం పశవ ఆనన్త తా నస్మాఅదదుః” —తై. సం ౩-౧-౯-౪, ౫.

అర్థము:—మనువు తన యాస్తిని పుత్రులకు పంచి యిచ్చెను. కారి వేదాస్థమును చేయుచున్న నాభానేద్విధము పుత్రునికి మాత్రము భాగ మీయలేదు. ఆపుత్రుడు వచ్చి యేహేతువుచే నన్ను భాగరహితునిగ చేసినాడని తండ్రి నడిగెను. అంత తండ్రి ‘నేను నిన్ను భాగరహితునిగ చేయలేదు. నీకు భాగమువచ్చు నుపాయము చెప్పెదను వినుము. అంగిరసుడు మున్నగు ఋషులు సత్రయాగము చేయించున్నారు. వారు స్వర్గప్రాప్తిసాధనము నెఱుగకున్నారు. నీవు చిగువుకొనియున్న యీ బ్రాహ్మణమును వారికి చెప్పుము. అట్లు చేయివేని వారు స్వర్గమును పొందగలరు. నీకు వారు మాగముచేయగా మిగిలిన పశువుల నీయగలరు. ఇదియే నీకు భాగప్రాప్త్యుపాయము.’ అని చెప్పెను. ఇట్లుపదేళింపబడిన కుమారు డాబ్రాహ్మణము నంగిర సాదులకు చెప్పెను. అంత వారినుండి యశస్తిములైన పశువులను పొందెను.

ఈగాధనుబట్టి మనువు తనకుమారున కెవ్వరును నెఱుగని యొక వేదభాగమును బోధించెనని తెలియుచున్నది. ఇదేవిధముగ ననేకుల కనేకవేదభాగముల నాతడు బోధించియుండువలెను. ఏమనః మనువు చాల వేదభాగములను చెప్పెనని వేదమునుండియే తెలియుచున్నది.

‘యదైవ కించ మను రవద త్తస్యేవజం’

—తై. సం. ౨-౨-౧౦-౨.

[అర్థము:—మనువేదచెప్పిన నది యాపిగము.]

మను వేదచెప్పిన నది మంచిదని యవలసినంతగ్రంథము గాని, యున్నదానిలో సంత ప్రాశస్త్యముగాని ప్రస్తుతవేదములో మనకు గోచరమగులేదు. పైన చెప్పబడిన విధమున వేదభాగములను మను వందఱికో యుపదేశించియుండువలెనని యీవిధముగ తేలుచున్నది. ఇంతయేకాదు. ఈవిధముగ మనువుచే నుపదేశింపబడిన వారిలోభృగు వొకవనియు, మనువుచే నితరులకు ప్రసాదింపబడిన వేదభాగములలో వర్ణాశ్రమపర్యవ్రతిపాపకముననది యొకబనియు మనుస్మృతినిబట్టి తెలియుచున్న రెండంశములకును గూడ వేదములలో బలీయములను సాక్ష్యములు గనపట్టుచున్నవి.

మనువు భృగువునకు దేనినో యుపదేశించినాడని మనుస్మృతి చెప్పుచున్నదానికి వైదికాధారమేమియో ముందుగ చూతము. ఋగ్వేదము (౭ మం. ౨నూ. ౩ ఋ) లో మనువు అస్మిని సృష్టించెనని యున్నది. ఋగ్వేదములోనే (౧-౫౯-౬) భృగువు లస్మిని మానవుల ననుముకు తీసికొనివచ్చినారని చెప్పబడినది. మనువు కనిపెట్టిన యొకపదార్థమును లోకములో వ్యాపింపజేసినవారు భృగువులని యందువలన తెలియుచున్నది. దీనింబట్టియే మనువునకును భృగువుల కును గురుకవిద్యసంబంధ మున్నట్లు స్పష్టమగుచున్నది. భృగువంశస్థు లాదిలో మనువునుండి యొకవేదభాగమును గ్రహించిరని దీనింబట్టి చెప్పుటకు నీలుగలుగుచున్నది. ఆమనుసంహిత యాచారమువారిలోనే

యొక్కదుపతనపాతములలో నుండుచే దానిరహస్యమును నావంశములోనివాడేయగు నొక డర్వాచీనకాలమున తన స్వీయవాక్యములతో చెప్పుటచే నది యనుస్మృతి యయ్యెను. ఒక్కొక్కవంశమువారియధీనమున నొక్కొక్కవేదభాగ ముండుట యమనది యందలు నెఱిగినవిషయమే. ఋగ్వేదములోని రెండుమొదలేడువంశముగల మండలములకు గోత్రమండలము (Family Books) లని పాశ్చాత్యులు పేరు పెట్టియున్నారు. ఈవిధముగ చూడ భృగువంశములోనివాడగు నొకభృగు వర్వాచీనకాలమున, ననగా వేదేతరవాద్యము ముదయించుటకు పూర్వమిస్మృతిని వ్రాసెననుట సర్వవిధములచేతను సంభవముగనే గన్పట్టుచున్నది.

మనువు ఋషిగల యొకవైదికభాగము వర్ణాశ్రమధర్మప్రతిపాదకముగ నుండెనని స్థిరపఱుపబడినప్పటికినీ కాదా యియ్యూహ చెల్లుట యను నొకపూర్వపక్షము సహజముగ వచ్చును. కావున కొన్ని వేదమంత్రములకు మనువు ఋషియని యిదివఱలో ఋశువు చేయబడినదానికి గోడుగ నిపుడు ఆట్టి వేదమంత్రములలో కొన్ని వర్ణాశ్రమధర్మప్రతిపాదకములని ఋశువుచేయుచున్నాను.

వర్ణాశ్రమధర్మము లనగా మానవులు ప్రవర్తించుకొనవలసిన విధానమును తెల్పు ధర్మములని చెప్పవచ్చును. ఇట్టి విధానము నొకదానిని మనువు ప్రజల కిచ్చియున్నాడని ఋగ్వేదములో నున్నది.

“మానః పక్షః పిత్రాన్మానవా దధిమారం నైష్ఠపరావతః.”

—ఋ. సం. ౮-30-3

[అర్థము:—హుమూర్త్యుడగు మనువు మా కేర్పఱచిన మార్గమునుండి మమ్ము దూరముగ కొంఘోము]

ప్రజ లేరిరిగ నడచుకొనవలెనో తెల్పు మనుధర్మశాస్త్ర మొకటి యీఋగు క్షుచ్చరింపబడుటకు పూర్వమే యార్ధ్యార్థమున నుండినదనునంశము దీనినుండి స్పష్టమగుచున్నది. మఱియు నా మను నిర్దిష్టధర్మమార్గము చాల ప్రశస్తమైనట్లుగూడ నిందువలన తెలియుచున్నది. ప్రస్తుతము మనకు లభ్యముగ నున్న వేదములో నెచ్చటను గూడ నట్టిమార్గము గన్పట్టుటలేదు. కాన నావేదభాగము లుత్తమైనదని చెప్పవలసియున్నది. అది యేవిధముగ లుత్తమైననో యిదివఱలోనే చెప్పియున్నాను.

మనుస్మృతి కాధారమై వర్ణాశ్రమధర్మప్రతిపాదకమైన వేదభాగ మొకప్పు డుండెనని చెప్పుటకు గల హేతువులు పైనవిధరింపబడినవి. ఈసిద్ధాంతమును బాధించునట్లు గన్పట్టు కొన్ని యంశములనుగూడ పైన గన్పఱచి వానికి సమాధానము చెప్పియుంటిని. అట్టియాతీతము నింకొకదాని నిటు పరిశీలించవలసియున్నది.

ఋగ్వేదకాలములో వర్ణపద్ధతి లేదనియు, నది క్రమముగ నేర్పడి బ్రాహ్మణములకాలమునాటికి స్థిరపడినదనియు నవినపండి

తులు చాలమంది చెప్పుచున్నారు. ఋగ్వేదములోని యనేకఋక్కులకంటె పూర్వమే మనుసంహిత మనువునకు విసభదెనని పైనచెప్పబడినది. కావున మనుసంహితనాటికి వర్ణపద్ధతియే లేదని లేలుచుండగా నది వర్ణాశ్రమధర్మప్రతిపాదక మెట్లు కాగల దనునొకప్రశ్న వచ్చును. ఇందులకీ క్రిందిసమాధానములను చెప్పుచున్నాను:

ఋగ్వేదమునాటికి వర్ణపద్ధతి యేర్పడలేదని చెప్పవారు తమ వాదము నింతవిశిష్టము రుజువుచేసియుండకపోవుటయేకాక ఋగ్వేద దశమమండలములో చాతుర్వర్ణ్యమును కేర్పొనునూక్తముఋగ్వేదకాలములోనిదికాక తరువాతదని రుజువుచేయలేకపోయినారు. ఋగ్వేదములో ప్రాచీనములని నమ్మబడుచున్న భాగములలోగూడ బ్రాహ్మణాదివర్ణములు కేర్పొనబడియున్నవి. బ్రాహ్మణశబ్దము జాతిపరముగ నెనిమిదివర్ణాయములను, పురోహితుడనునర్థమున నలువనియూరు సారులను ఋగ్వేదములో వాడబడినదని మాక్స్ ముల్లర్ (History of Sanskrit Literature Pp. 161 - 162) యంగీకరించి యున్నాడు. క్షత్రియశబ్దము చూడ ననేకపర్యాయములు వాడబడియున్నది. అది జాతిపరముగగూడ వాడబడినదని అవివాశనంద్రదాసుగారు రంగీకరించియున్నారు. ఎట్లైన క్షత్రియేతరులగు వైశ్యులుగూడ యుద్ధముచేయుట ఋగ్వేదములో గాన్పించుచున్నదని వారు తమ గ్రంథము (Rg. Vedic culture P. P. 182-188) లో వ్రాసియున్నారు. వైశ్యజాతిగూడ ఋగ్వేదకాలములో నుండెనని వా రంగీకరించినట్లు దీనింబట్టి తెలియుచున్నది. గ్రామణి తరచుగ వైశ్యుడయ్యుండెడివాడని వా రాగ్రంథముననే (పుట ౧౩౩) వ్రాసియుండుటచేతగూడ వైశ్యజాతి ఋగ్వేదకాలముననే యేర్పడెనని యీపరిశోధకుని యభిప్రాయమైనట్లు స్పష్టమగుచున్నది. శూద్రశబ్దము దశమమండలము (౯౦-౧౨) లో మాత్రమే కేర్పొనబడినమాట వాస్తవమే. అంతకంటె ప్రాచీనములగు ఋగ్వేదభాగములలో శూద్రజాతి లేదని చెప్పుట కమాత్రమును వీలులేకుండుటయేకాక శూద్రజాతి యున్నదని చెప్పుటకు గొప్ప యాధారమున్నది. ఋగ్వేదములోని ప్రాచీనభాగములో దాసశబ్దము జాతిపరముగ వాడబడినదని యందలు సంగీకరించినవిషయమే. మనుస్మృతిలోని ద్వితీయాధ్యాయములోని ౩౨-వ శ్లోకములో శూద్రునకు ప్రైవ్యసంయుతమైన నామ ముంపవలెనని చెప్పబడినది. శూద్రునినామమునకు చివర నేవకార్థభోధకమగుపద ముండవలెనని దీని యర్థము. అనగా ‘దాస’ మున్నగుశబ్దములు శూద్రుని నామమునకు చేర్పవలెనని యిటు నుండుటచే దాసశబ్దము శూద్రవాచక మెట్లుగనో తెల్లమగుచున్నది. విష్ణుపురాణములో స్పష్టముగ ‘దాసశూద్రాద్యకారయేకో’ అని చెప్పబడినది. ఇట్లే యనేకార్థగ్రంథములలో దాసశబ్దము శూద్రవాచకముగ చెప్పబడినది. ఈయంశములన్నియు చూడ ఋగ్వేదములోని ప్రాచీనభాగములలోగూడ శూద్రులప్రశంస యున్నదని చెప్పవలసియున్నది.

ఈవిధముగ బ్రహ్మశ్రీయవైశ్యకూట్రులను నాలుగుజాతుల వారసు బుద్ధివశాలములో నుండిరిని లేలుచున్నవగుడ వేదకాలములో జన్మనుబట్టి వృత్తినిర్ణయము లేదని చెప్పుచు నవివాకచంద్రదాసుగారు మాడుపేతువులను గన్పించుచున్నారు: (౧) విశ్వామిత్రుడు శ్రీత్రయైయంశియు బుషియాదేవని బుద్ధివశాలములో నున్నది. (౨) ఒకబుషితండ్రి వైద్యుడనియు, తల్లి పింకివిసరున డనియు బు. సం. ౯-౧౧౨-3 లో నున్నది. (3) బుషిపుత్రులు కొందఱు యుద్ధముచేసినట్లును, కొందఱు రథములను చేసినట్లును గలదు. పిని కన్నిటికిని సమాధానములను చెప్పుట సులభము. (౧) వర్ణధర్మములను బాగుగ బోధించుచున్న వితిహాసికగ్రంథములలోగూడ విశ్వామిత్రునిగూర్చి యిట్టివృత్తాంతము గలదు. తపోమహిమచే నతడు బ్రహ్మశ్రీయగుట మున్నగువృత్తాంతమును చెప్పుచున్న వితిహాసికవాద్యయమునాటికి వర్ణపద్ధతి సునిర్వికృతమైనదని యొప్పుకొనువారు, ఈ వృత్తాంతమునే తెలుపు వేదభాగము రచింపబడునాటికి వర్ణపద్ధతి సుస్థిరము కాలేదని లేలుచున్నదని యెట్లుచెప్పగలరో తెలియకున్నది. (౨) తండ్రి వైద్యుడును, కుమారుడు బుషియును, తల్లి పింకి విసరునడియునగుట వర్ణధర్మముల కమాత్రమును నిరుద్ధముకానని చెప్పవలసియున్నది. మనుస్మృతిలో నెచ్చటనుగూడ బ్రాహ్మణు లిగూడువృత్తులను చేయుటకు వీలులేదని చెప్పబడియుండలేదు. (3) అవసరము వచ్చినపుడు బ్రాహ్మణుడు చాపము ధరించుట యన్నియుగములలోను గాన్పించుచున్నట్లే వైదికయుగములో గూడ గాన్పించుచున్నది. ఇక బుషిపుత్రులు కుళిలులైన రథకారకులని యేలచెప్పబడినదన రథకరణమును బుగ్రచనతో పోల్చుట బుద్ధివశాలములో ననేకఫలములలో నున్నదని మాక్స్ ముల్లర్ (A History of Sanskrit Literature P. 66) చెప్పియున్న యంశమును మనము జ్ఞప్తియందుంచుకొనవలెను. అత్రుడు మనకు ఆబుషిపుత్రులు చక్కగ మంత్రములను కూర్చువారనుసంగతి తెలియగలదు. బుద్ధివశాలములో కొన్నిఫలములలో వర్ణాంతర వివాహములు జరిగినట్లు గన్పట్టచుండుటచే వాకాలమునాటికి వర్ణవ్యవస్థ సుష్టముగ లేదని నవీనపండితులు కొందఱు చెప్పుచున్నారు. కాని మనుస్మృతిలోగూడ వర్ణాంతర వివాహముల ప్రశంస యున్నదని మనము జ్ఞప్తియందుంచుకొందుమేని యీ పేతువుచే మనుస్మృతి నాటిసంఘమునకును బుద్ధివశాలమునాటి సంఘమునకును భేద ముండవలసిన యవసరము లేదని తెలియగలదు.

మానవులు నడచుకొనవలసిన విధానమును దెల్పుచు మనుస్మృతి కాధారమైన యొక వేదభాగ మొకప్పుడుండెననియు, మనుస్మృతి రాకచే నది లుప్తమయ్యెననియు చెప్పుట కవియు నాశ్చర్య ముండజాలదని యీవిధముగ లేలుచున్నది. మఱియు భృగువు మనుద్రష్టుకమైనయోవేదభాగమును స్మరించి యీగ్రంథమును చెప్పుటచేతనే దీని

మనుస్మృతియనునామము కల్గినదనిగూడ వ్యక్తమగుచున్నది. ఇక భృగువుచే చేయబడిన ఘనుస్మృతి నేటివఱకును మార్పులచెందకయే నిలిదియున్నదా, లేక నడుమ దీనిలో ప్రక్షిప్తములుకాని, లుప్తములుకాని యేమైననుండినవా యనుప్రశ్న యుదయించును. భృగుకృతమను స్మృతి మార్పులనుచెందియే మనయొద్దకు వచ్చినదని పండితులయభిప్రాయము. మనుస్మృతి పదవయధ్యాయములోని నలుబదినాల్గవశ్లోకమున యవన, కాంభోజ, పల్లవ, కేక, చీమలును, నలుబదియేనిమిదవ శ్లోకమున ఆంధ్రమేదులును శిర్కొనబడుటచేతను నీజాతులవారందఱును నీశ్లోకకర్తకు తెలియకలెనన్న నాథకు క్రిస్తుపూర్వము మూడవ శతాబ్దికిపూర్వమువాడు కాజాలవని చెప్పవలసియుండుటచేతను మనుస్మృతిలోని కొన్నిశ్లోకములు క్రిస్తుపూర్వము మూడవశతాబ్దమున వ్రాయబడినవని బుహురుమున్నగుపండితులు కొందఱు చెప్పియున్నారు. కాని ప్రస్తుతము మనకు లభ్యమైయున్న వేదేతరవాద్యయమంతలోను ప్రాచీన తమమైన నిరుక్తములలో మూడవ యధ్యాయమున దాయభాగమునిషయమై మనువునకు గల యొక యభిప్రాయమును దెల్పుశ్లోక మొకటి యుట్టంకింపబడుటచే మనుస్మృతి నిరుక్తకారునకుగూడ తెలిసియేయుండె ననియు, మహాభారతములో వందలకొలది ప్రదేశములలో మనువు ప్రమాణముగ చెప్పబడుటయేకాక మనుస్మృతిలో నేనును గన్పట్టుచున్న రెండువందల శ్లోకము లాగ్రంథమున నుట్టంకింపబడి యుండుటచేతను, గౌతమ, వశిష్ఠ, బోధాయనాదులమాత్రములలో మనువు ప్రమాణముగ శిర్కొనబడియుండుటచేతను వేదేతరమగు సమస్తహిందూగ్రంథముదాయము కంటెనుగూడ పూర్వముననే భృగువు మనుస్మృతిని చేసెనని లేలుచుండగా మహాభారతాదులగు కొన్నిగ్రంథములలో మనుశ్లోకములుగ చెప్పబడినవి నేటి మనుస్మృతిలో గన్పట్టకుండుటచేతను, ఖగ్గిభుననేకపర్యాయములు నేటి మనుస్మృతి శిర్కొనబడుండుటచేతను, ఉత్తర్యోగవయము డను నామమున గౌతమునిగూడ శిర్కొనియుండుటచేతను యవనాది నవీనజాతులను మనుస్మృతి శిర్కొనుటచేతను మనుస్మృతి ప్రథమమున వ్రాయబడుట యతిప్రాచీనకాలమండే (వేదేతరగ్రంథము లన్నిటికంటెను పూర్వమండే) జరిగినను చాల యర్వాచీనకాలమువఱకును దానిలో లోపాగమములు జరుగుదునే వచ్చినవని చెప్పవలెనని నేటిపండితుల యభిప్రాయము. కాని యీలోపాగమములు మూలగ్రంథస్వరూపమునే మార్చునట్టివిగ నున్నవని యెవ్వరును చెప్పియుండకపోవుటచే నేటి మనుస్మృతికి కర్త భృగువే యనియు, నాథకు మనుద్రష్టుకమై, వర్ణాశ్రమధర్మప్రతిపాదకమై ప్రస్తుతము లుప్తమైయున్న వేదభాగమును స్మరించి యీగ్రంథమును రచించుటచేతనే మనుస్మృతి యనునామము దీని కన్వర్థమగుచున్నదనియు చరమసిద్ధాంతము లేలుచున్నది.

మతవైషమ్యపరిహారము

శతావధాని అవ్వారి సుబ్రహ్మణ్యశాస్త్రి

త్రయీ సాంఖ్యం యోగః పశుపతిమతం వైష్ణవమితి
ప్రభిన్నే ప్రస్థానే పర మిద మతః పథ్యమితిచ;
రుచీనాం వైచిత్ర్యా సృజాతుటిలనానాపథజామం
వృతా మేకో గమ్య స్త్యమసి సరితా మర్గవచన.

ఇది యొకభక్తుఁ డొనర్చిన భగవత్పూర్ణం. ఇందు సర్వమతసమ
రసభావము పొడగఁ బట్టెడి. జీవులయభిరుచులు భిన్నభిన్న
ములై యుండునుగాన భిన్న భిన్న మతబోధ లేర్పడెనయు, గమ్యస్థాన
మొక్కదేవుఁడే యనియు సమర్థింపఁబడినది. హిందువుల నిత్యప్రార్థన
యగు సంధ్యావందనమువలన "అకాకా త్వతితం తోయం యథా
గచ్ఛతి సాగరం, సర్వదేవమస్మాకః కేశవం ప్రతి గచ్ఛతి" అని
యున్నది. వాననీ రెచ్చటఁబడియు సముద్రమునఁ జేరున శ్లేషదేవతకు
నమస్కరించినను భగవంతునకే చేరునని దీనియోశయము. ఇంతకన్న
హిందువులమతము పరమతసహనముగల దనుటకేమి నిదర్శనము కా
వలెను?

ధర్మార్థకామమోక్షములు పురుషార్థము లందురు. మనుజునకుఁ
గావలసినది పురుషార్థమందులేని కామ మెట్లు పురుషార్థమగును? భోగ
ములు నిరర్థకములు, హానికరములు నని "సర్వేంద్రియాణాం జరయన్తి
లేజా" అను నుపనిషద్వాక్యము చెప్పుచుగదా. "చెప్పకు మిట్టి కుచ్చ
కుఖముల్ మీసాలపై లేనియల్" అని పెద్దనమహాకవియుఁ బెన్న
చున్నాఁడుకదా? కాన మనుజులు కోరుచుండునవి పురుషార్థము లన
వలెను. కొందఱు ధార్మికులును, కొందఱుర్థులును, కొందఱు భోగ
పరాయణులును, మఱికొందఱు మోక్షతత్పరులును బ్రజలలోఁగవృట్టు
చున్నారు. అందఱుకోరికలును వీనిలోఁ జేరియే యుండును. అర్థము
అనుదానిలో భగవద్ధ్యానాజ్యోత్తిరీహందిత్యాదు లనేకములు చేరు.
ఇట్లు రుచిభేదములుగల ప్రజల దెందముల ననుసరించి వారికి తరణో
పాయములు బోధింపఁబడవలెను. ఒకభోగపరాయణునియొద్దకుఁ బోయి
ముముక్షువున కుపన్యసింపవలసినసన్నాధినివిధుల నుపదేశించిన శాతఁ
డదిగ్రహించి యట్లు నడచుకొని కృతార్థుఁడు కాఁగలఁడా? అట్లే ఒక
ధర్మపరునియొద్దకుఁ బోయి విషయాభోగప్రాముఖ్యమును బోధించిన
జ్ఞాని దేవతను కది నట్లునా? ప్రకరునికడ శరణుఁగినియేమిపది? అర్థ

లుబ్ధుగ నుండెనువానికి దానధర్మములు చేయుమనిన విసువుకాదా?
యశోధనుఁడు పాండవులకు నూదిమోపినంతభూమి గూడ నీయలే నన
లేదా? కావున వేదముమూడ సర్వజగదుద్ధరణమున కేర్పడినదికాన నానా
విధాంతకరణములు గలజనులకు నానావిధోపాయములను విధించు
చున్నది. దానంజేసియే వేదమున కత్రుహింసోపాయములు మొదలు
కొని సర్వము నీయాత్మయే యనుబోధవలయు గల బోధలెల్లఁ గన్ప
ట్టెడి. ఏవిధమైనకోరికకు బద్ధుఁడైనవానినైనను, బలవంతముగ నీకోరి
కను వదలుకొనుమని బోధించుపద్ధతులకన్న యుక్తిగా నారి నాపథుల
నుండి మానిపించుట మంచిది. ఇట్టిపద్ధతియే వేదమునఁ బెక్కుచిగు
లలోఁ గైకొనఁబడినట్లు తోఁచెడిని. ఆపద్ధతి యిట్టిది—ఒకవిషయ
మున బద్ధునారాగుఁడై తిప్పలుపడువాని నావిషయముకొఱక వేల్పులఁ
బ్రాధింపుమని వేదము చెప్పును. అట్లతఁ డభిష్టసిద్ధికి దేవతారాధన
మొనర్చునేని విషయము సిద్ధించుటయకాక యావిషయమున విర
క్తియు, నాదేవతమీఁద భక్తియు నేర్పడును. ఇది ద్రువునికథయందుఁ
గన్పట్టెడిని. ద్రువుఁడు సర్వోన్నతకోసము తపస్సుచేసెను. భగవం
తుఁడు ప్రత్యక్షమై దాని నిచ్చెను. ద్రువుఁ డది పడసి వెంటనే
చింతించెను. అతనిచింత యిది—అక్కటా! భగవంతుఁడు నిత్యా
నందము నొనరువాఁడు కన్పట్టినపుడు మోక్షమును గోరనైతినిగదా?
ఈలభించినయాన్నత్య మేనాఁటికేని భంగురమేకదా? చూడుఁడు.
ఈకథ యేమి తెలుచున్నది? ద్రువుఁడు దేవతాప్రార్థనచేఁ గోరిక
వడయుటయే కాక విజ్ఞానప్రాబల్యభావమునం జేసి వైరాగ్యభాగ్యము
కలనాఁ డయ్యె. పురుషప్రయత్నమున నహంకారపూరితులమై కోరి
కలను నెఱవేర్చుకొంటిమేని కోరికలు పిల్లలఁబెట్టును. అనఁగా మఱి
కొన్నికోరికల నది కలిగించును.

తనకు కామం కామానా ముపభోగేన కామ్యతి,
హరిహ కృష్ణభక్త్యై భూయన్ నాభివర్ధతే.

అని మనుష్యులి. దేవతారాధనముననే యభిష్టముల బడినీతిమీని వాంఛితములు సమపూర్ణముగాక దేవతాభక్తికూడ గల్గును. భక్తి ప్రాబల్యమునం జేసి రక్తి కొరపిడి కలిగి చైరాగ్యభాగ్యము కరతలా మలకమునను.

ఈరీతి ననుసరించి శక్తుద్వేషములపాలై యహిర్నిశములు పాటుపడువారి కాశక్తునాశనమును దేవతారాధనమున సమపూర్ణ కొనవచ్చు ననుబోధలే వేదములోని యాభిచారికవిధులు. ఇట్లే వివిధభోగపరాయణులనువారికి భోగసాధనముల సమపూర్ణము తరణో పాయముఁ జూపు దేవతారాధనలఁ జూపించుటయే వేదములోని కామ్యవిధి విధానరహస్యము.

దేవతలమీఁద నించుకంత భక్తి యేగ్గశినపిమ్మట దానిని బల పఱచుటే ఫలకాంక్షవలీ మంచిపనులను (వేదవిసేతములను) జేయు నునుట. ఇది మనభగవద్గీతలలో మొదటిశ్లోకమాదిగ ఇతిశ్రీ అనునంత దాఁక మనకు గోచరము కర్కయోగము. ఇఁక సుఖోపాసన, నిర్గుణో పాసన యను భక్తిపూర్వములును, జ్ఞానపూర్వమును, జ్ఞాననిష్ఠ యనుమోక్ష మును ఇవియెల్లఁ దారతమ్యములతో నుండెడి యుత్తమాంతఃకరణ ములవారి తరించుటల కేర్పడిన విధానములే.

ఏనరుడైన నివియెల్లఁ దెలిసికొని యేది తనయోగ్యతకుఁ దగి యున్నదో అను నంశమును పరుల (పెద్దల) సహాయముచేతను, విజ్ఞుల సలహాలచేతను నిర్ధారణ చేసికొని యాశుభధర్మమున నడచుకొననేని తరింపఁగలుగును. తన యోగ్యతకు తగనిధర్మమునఁ దాను ప్రవేశించెనేని తనతత్త్వమునకుఁబడనిమందు నేవించినవానివలె హాని గాంచును. ఇదియే 'స్వధర్మము స్వధర్మము' అని భగవద్గీతలలోఁ బ్రార్థన చెప్పనది. "పరధర్మో భయవహః" అనుటయుఁ దనచేతఁగానిపనిఁ జేయఁబూ నుట వ్యర్థమో, హానికరమో అనుటయే.

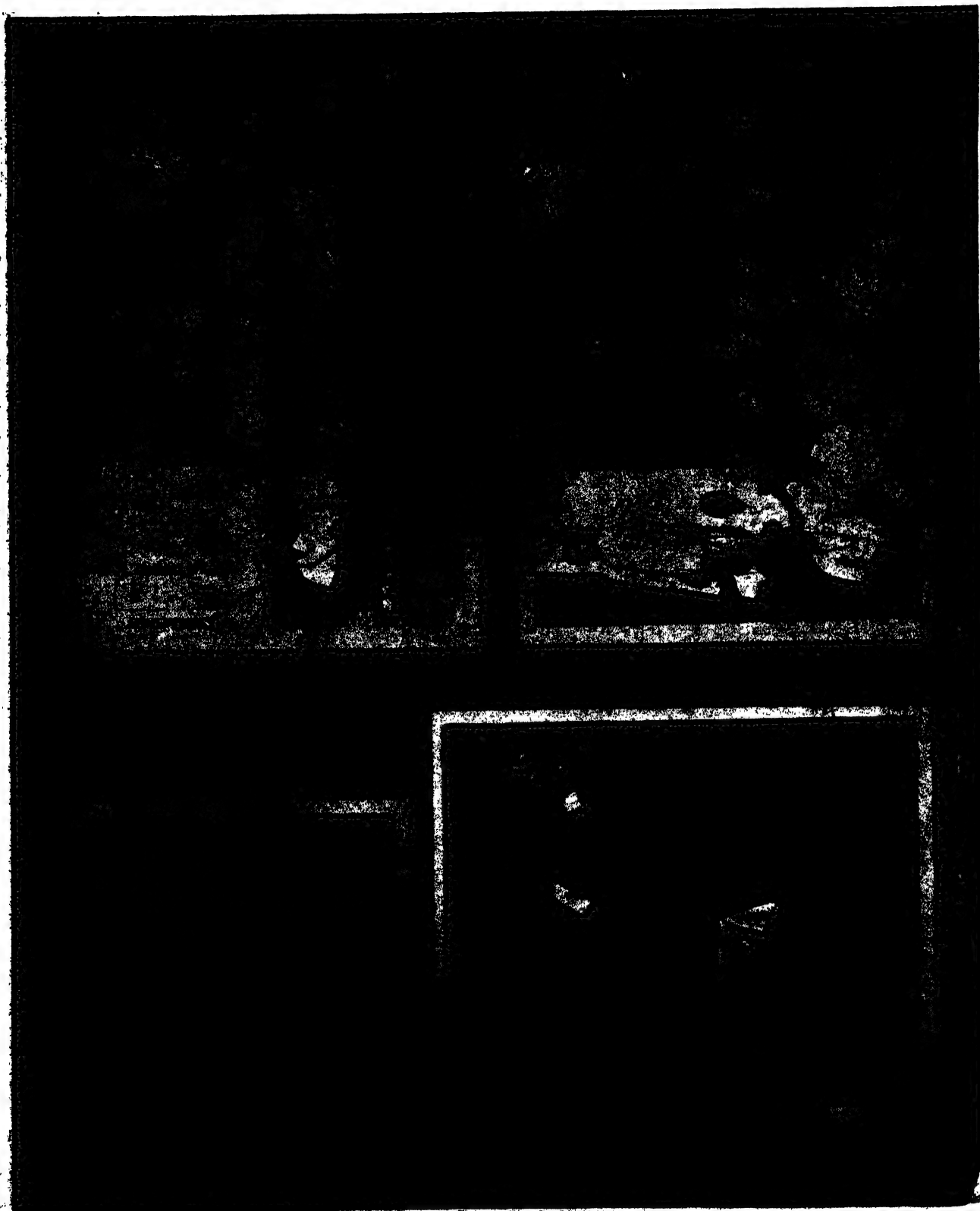
ప్రాధనలచే వాంఛితసిద్ధి ప్రయత్నము లేక కలుగునా? అను శంకయు గలుగవచ్చు. మన మెవ్వరమును ప్రయత్నములేక తపస్సు లచేఁ గోరికలను బడయుట నెఱుంగము. మనవాఙ్మయమున నేమూలఁ జూచినను ఇది ధ్వనించుచుండును. పతంజలియోగసూత్రములలో భావనచేతనే గజబూదులు గలుగునని కలను. కాని "నదేవా దండ మాదాయ రక్షంతి పశుపాలవౌ" అనునది మనకే అట్టిప్రభుమంత్రో త్సహశక్తుల వేల్పులు గల్గింతురని బోధించెడిది. ఆధ్యానములోని మహిమ యిది. ఇట్లు పనులు నెఱుంగనే దేవతల వరములుగ భావించు రని కొందఱుండ్రు. ఎట్లయిననేమి? ప్రార్థనలుకూడ పనులు నెఱవేర్చుకొనుటకు సాధనము లనునది జేవవిజ్ఞానములోఁ దెలిసి యున్న భరతఖండవాసులకుఁ గ్రాత్రగ బోధింపవలసినదికాదు. మనకుఁ జేతగానివల్ల సృష్టిలో లేవని కొందఱునుకొనిండు. హిరణ్యకశిపురావ జానులబలములు తపస్సిద్ధములని పురాణములు వాకొనుఁగదా. శంక రులు అద్వైతమే నిజమనిరి. శ్రీరామానుజులు నిట్లే కొన్ని సిద్ధాంతములను నిర్ణయించిరి. వీరిలో నెవరు సర్వజ్ఞులు? పూర్వము

బరులు కాదనుకొనుట వీరిలోఁ గలదు. అని మనకు శంక గల్గుచున్నది. కాని నేను ఐదుక మనవిచేసికొనినట్లు వారివారికాలములలో నాయా బోధల కద్దులేనశీవు లెక్కవగనుండుటయే వారి విలక్షణసిద్ధాంతము లేర్పడుటకుఁ గారణము. ఇట్లుకొనుట సర్వమతస్థుల సామరస్యము నకు హేతువు కావునను మన కుపాదేయము. శంకరులకాలమున కద్వైతతత్త్వమును నిరాకారమును బోధింపవలసినయావశ్యకతలు గల్గియుండవచ్చును. అప్పటిప్రజల యధికారములు (అర్హతలు) అట్లుండెను. శ్రీరామానుజులవారివాఁటికి మనుజు లద్వైతసిద్ధాంతమును సరిగఁ దెలిసికొలేక చేతగానిభావనలతోదిగి దురాచారాలపాలై యుండవచ్చును. వారియొడ దయగలిగి రామానుజులు విశిష్టాద్వైత మును బోధించియుండవచ్చు. అప్పుడుగూడ కొందఱు అద్వైతమున కధికారు లుండవచ్చును. ఉన్ననేమి? వారదియవలంబించియే సిద్ధు లగుదురుగాక! రామానుజబోధలు నింకయు లెట్లు? పలువు రాయన కన్నులకుఁ గన్పట్టుటంజేసి యట్టిబోధకుఁ డతడయ్యె. ఇట్లే శివ విష్ణువిధిధ్యానములును రుచిభేదములంబట్టియే యేర్పడినవి. ఒకరివారి యొకరికి ద్వేషపాత్రము కాఁగూడదు. మతకర్తలెల్లఁ బరమతఖండన మేల చేసేరని యొక శంక వొడచు. శ్రద్ధావిశ్వాసములు శిష్యులకుఁ గల్గించుటకే అని సమాధానము.

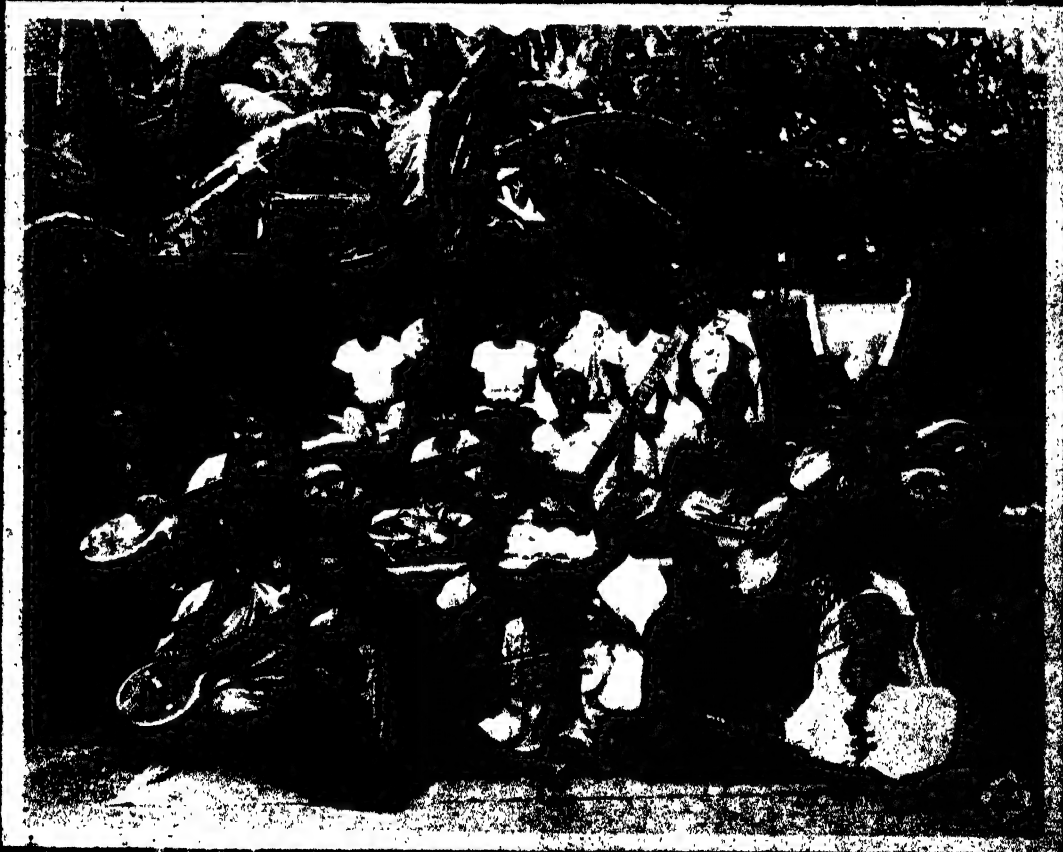
సరోస్వతీమనినంగాని యెవ్వఁడును విశ్వసింపఁడు. ఆ సర్వా స్పృత్యము పరమతఖండనమునగాని జేటపడు.

ఒక ది. ఏ. పాశము చెప్పవఁ దులవఁగా ఇంటర్మిడియేటు ప్యాసెనవఁ డెంతబాగుగఁ జెప్పనను వారియొద్ద నెవ్వఁడును సామాన్య ముగఁ బాతము చెప్పకొననెంచఁడు. అంతటి గుణగ్రహణశక్తి లోక మునఁ జాలవరకమనక తప్పదు. జేతభేదములనుబట్టి కూడ మతకర్తల మతములు భిన్నములు కావచ్చును. సుహమ్మద్, క్రీస్తు మొదలగువారి బోధ లిట్లే భిన్నాకారములతో వేలువేలుగ నుపాయములను దెల్పు చున్నవి. తన పూర్వ లేమతమునఁ బ్రవేశించికో ఆ మతధర్మముల యథాశక్తి ననుష్ఠించుచున్నఁ బరమార్థమునకు లోటుండదు.

మోక్షమునకు మనుజుని జేర్చునది భక్తి. అది పెద్ద వ్యక్తుల నెలకొనుప్రేమయే. గురువులో, దేవతలో, భగవంతుఁడో ఎవరో మన స్ఫునకుఁ దెట్టి ప్రేమింపఁబడుచుండిరేని నరుడు తప్పుక తరించును. అందులో భగవద్భక్తి దబ్బున నందదు. భగవంతుని రూపము వచ్చి దానందమయము. అట్టిహూర్నిని నరుడు తన జన్మమున నెఱుంగఁడు. రూపము నెఱిగినంగాని సామాన్యనరుడు భజింపలేడు. కాన దేవతా భక్తి భగవద్భక్తి సాధనము. దేవతలరూపములు మనయాపులకన్న విలక్షణములైనను భగవంతునివలె నవాఙ్మనసాగోచరములుకావు. కాన హిందువులలో గృహస్థాశ్రమమున దేవతాభక్తి విధింపఁబడినది. బ్రహ్మచారికి గురుభక్తి ప్రధానము. దీన వాణిజ్యేతేన వాఁడు దేవతలను గృహస్థయి యజింపఁగలుగును. పరమసాధ్యులయిన సన్న్యాసింపమునఁ బరమార్థధ్యానము హిందూమతమున విసేతముగనుట కదే కారణము



- (20)
1. శ్రీమతి సమయమంత్రి రాజ్యలక్ష్మి.
 2. మోర్పుజిగ్రీవాకు పయనమయిన బలోదా అర్చకస్వామి మహావిద్యాలయ విద్యార్థినులు.
 3. శ్రీమతి కళాంచి నీలమృ.
 4. దక్షిణభారతహిందీప్రచారక ఫభవారి పరీక్షలకు రాజమండ్రి అభ్యర్థినులు.



1. శ్రీమతి చంద్రాదత్తు సతి. 2. రాజమహేంద్రవరము శ్రీమహిళా గాన సభవారి ప్రథమ ప్రదర్శనము.



“స్వాస్తిక్” చిట్టాముదము

మీముద్దు బిడ్డల చిట్టింపు మొగములు మీరు చూడ నవసరము లేదు. రుచిగాని రంగుగాని లేదు. శాస్త్రీయ పద్ధతులపై నిర్దుష్టముగ తయారు చేయబడినది. హిందూదేశము నిజముగ గర్వపడవలసిన విషయము. “స్వాస్తిక్” కంటే శ్రేష్ఠతరమైనది లభించుట అసంభవము. మీ సమీపవైద్యుడు దానిని ధృఢపరుపగలడు.

దానిని తయారుచేయునదెవరో మరువకుడు. బాంబాయిలోని స్వాస్తిక్ ఆయిల్ మిల్సు లిమిటెడ్. ఈ వ్యాపారమునందు భారతదేశములోని గొప్ప కంపెనీలలో ఒకటియై యున్నది. అది హిందూదేశమందలి గొప్పగొప్ప వర్తక ప్రవీణులచేత నిర్వహింపబడుచున్నది.

ప్రెసిడెన్సీ యేజంటు:—

జయ భారతం కంపెనీ.,

పోస్టు బాక్సు 83.

మద్రాసు.

ఫోను 2111,

ఓప

గో స ర త్న ణ స మి తి, ఏ లూ రు.

(అహింసాపరమోధర్మః)

స్థాపితము 1918 సం॥

ఇందు డిక్టేటేని గోవులు కసాయివాని బారినండి తప్పించి రక్షించబడుచున్నవి. విరివిగా రక్షించవలెననిన, యింకను ధన మవసరము. ప్రాణదానముకంటే మించినదానము లేదు. దీనిని ధర్మమి కొనవలసియున్నది. అక్కడక్కడ దీనికి కాఖలుగా గోశాలలు నిర్మించవలసియున్నవి. చంటిబిడ్డలకు, గోసలకు, చైత్రాజకు, బీదలకు పాలు ఉచితముగా యివ్వబడును. మంచినీటిలోనికీవచ్చిన గోవులను గృహస్థులకు అమ్మెదరు. దిగువ తెలియపరచిన శాశ్వతనిధి ధర్మములకు రక్షింపబడు, పట్టాలును, ధర్మములకు రక్షింపబడు యివ్వబడును.

శాశ్వతధర్మముల తరగతులు

1. శాశ్వతధర్మకర్తలు	రు. 500 లు	6. నెం. 2 రు శాశ్వతసభ్యులు	రు. 68 లు
2. శాశ్వతపోషకులు	రు. 250 లు	7. నెం. 3 రు శాశ్వతసభ్యులు	రు. 35 లు
3. శాశ్వతసహాయులు	రు. 180 లు	8. నెం. 4 రు శాశ్వతసభ్యులు	రు. 20 లు
4. శాశ్వత అభిమానులు	రు. 150 లు	9. నెం. 5 రు శాశ్వతసభ్యులు	రు. 10 లు
5. నెం. 1 రు శాశ్వతసభ్యులు	రు. 100 లు		

యితర వివరములకు:—

(1) రా॥ బ॥ మోతే గంగరాజు జమీందారు,

(2) మద్దుల వెంకటచిన్నరాజు,

(ప్రెసిడెంటు.)

(వైస్ ప్రెసిడెంటు.)

చింతి

(3) పోలిశెట్టి గోపాలస్వామి,

(శ్రీకర.)

ది ట్రావెన్కూర్ నేషనల్ బ్యాంక్ లిమిటెడ్.

1912 లో తిరువాన్కూరునందు స్థాపింపబడినది

రిజిస్టర్డు ఆఫీసు : తిరువల్ల.

హెడ్డాఫీసు : అల్లెప్పే.

డైరెక్టరులు

కే. సి. మమ్మై మాపిల్లెగారు, బి. ఏ., యెడ్డిటర్; యి.కే.సి.ఫ్, "మళయాళ మనోరమ" కొట్టాయం (అధ్యక్షులు);
 పి. పిలిపోజ్ గారు, వకిల్, హరిపాడ్; కే. జి. తామన్ గారు, బ్యాంకరు, కాయంకులం; యి. సుబ్రహ్మణ్యఅయ్యరుగారు, యం
 ఏ యం. యల్. పిన్సిపాల్, గవర్నమెంటు లాకాలేజి, ట్రిచేంద్రము; ఏ. టి. యస్. ఖాసర్ భాయిగారు, మిల్ యజమానులు,
 క్వీలక్; కే. పి. శ్రీనివాసగారు, బి. ఏ. యల్. టి. హెడ్ మాస్టరు, యన్. యస్. యింగ్లీషు హైస్కూలు, మన్నారు;
 డబ్లివు. పి. ఏ. సౌందరపాండ్యగారు, యం. యల్. సి. పట్టివీరకపట్టి, మధుర; కే. సి. యి.పెన్ గారు, బి. ఏ. (మేనేజింగు
 డైరెక్టరు); కే. యం. యి.పెన్ గారు, యం. ఏ. బి. యల్. (కార్యదర్శి).

164 బ్రాడ్వే.

మద్రాసు బ్రాంచీలు :

హాంటురోడు.

ఇతర బ్రాంచీలు :

అలెప్పే, బొంబయి, కాలికట్టు, కొచ్చిన్, దేవికోలం, యెర్నాకులం, కొట్టాయం, కరైకుడి, మన్నారు, మధుర, ఉడిక
 మంజలము, పాల్ఘాటు, పాల్లాచి, పెరంపవూరు, క్వీలను, శ్రీరంగము, ట్రిచేంద్రము, తిరువూరు, తిరువల్లి, తిరుచనాపల్లి,
 ట్రిచూరు, త్రిపునికుర, ఉదమాల పేట, విరుధునగర్, మంగళూరు.

1938 ఫలి 31 దిశంబరులో అంత్యమయ్యే ఋతుపక్షాంతిలో అనుబంధింపబడిన డైరెక్టరుల రిపోర్టునుండి, బ్యాంకుయొక్క
 రాబోవు రజతోత్సవము నుంచి తెలియజేయబడిన యాక్రిందివిషయము గ్రహింపబడినది.

"బ్యాంకుయొక్క వివిధశాఖల కార్యనిర్వాహకము యెక్కువ తృప్తికరముగ జరుపబడుచున్నదని, 1932-వ సంవత్సర
 ములో మొదటిపర్యాయము, అందరియేజంట్లయొక్క సమావేశము గావింపబడెను. ఇట్టిసమావేశములు, మిక్కిలి ప్రయోజనకరము
 గాను, ప్రోత్సాహజనకముగాను గోచరించుచున్నవే, ఇంకను కొంతకాలము యివిధముగనే తరచుగా వార్షికసమావేశములు జరు
 పుటకు నిశ్చయింపబడెను. గత సంవత్సరపు యేజంట్ల సమావేశమునందు, బ్యాంకు, స్థాపించినదిమొదలు 1937 లో 25 సంవత్సర
 ములు గడచుచున్నట్టి, ఆపును జరుపబడు రజతోత్సవమునకు ముందుగా, కొన్ని చక్కని నిర్దేశనాత్మక పద్ధతులపై, బ్యాంకు
 వ్యాపారాభివృద్ధికిగాను, "ఏను సంవత్సరముల ప్లాను" నూచింపబడి, దానిని విజయవంతముగ నెరవేర్చుటకుగాను యేజంట్ల సమా
 కారిము అర్థింపబడెను. గతసంవత్సరమునందు బ్యాంకుగాంచిన యభివృద్ధిని, క్రిందటిసంవత్సరములలో జరిగిన పనితో పోల్చి
 చూడగా, 1938 సంవత్సరమున సదరుప్లాను నిర్వహణమునకై తలచినచానికంటె యెక్కువ తృప్తికరమగు అభివృద్ధి గలిగినది
 గమనించుటకు మేము మిక్కిలి ముడమొందుచున్నాము."

అభివృద్ధి సూచనపట్టిక.

సంవత్సరము	మూలధనము		మూలనిధి	డిపాజిట్లు	నగదు నిల్వ	జి. పి. నోట్లు వగయిరామిద పెట్టుబడి	మొత్తము వ్యాపార మూలధనము
	అనుమతిపొంది జారీ చేయబడిన	చెల్లించిన					
	రూ.	రూ.	రూ.	రూ.	రూ.	రూ.	రూ.
1912	2,00,000	13,000		19,000	211		88,000
1917	2,00,000	59,000	3,000	1,10,000	500		1,87,000
1922	10,00,000	2,60,000	24,000	3,75,000	15,000	14,000	7,17,000
1927	10,00,000	3,02,000	1,10,000	9,27,000	1,07,000	68,000	15,27,000
1932	10,00,000	4,22,000	2,00,000	36,69,000	5,86,000	4,80,000	58,18,000
1938	50,00,000	5,30,000	2,20,000	58,88,000	8,87,000	10,48,000	86,02,000

దీనినిబట్టి, గతసంవత్సరమునందు డిపాజిట్లలోని యభివృద్ధి, క్రిందటి 5 సం॥లనాటి యభివృద్ధికంటె ఎక్కువ తృప్తికరముగ
 నుండినట్లు గోచరించును. ఈబ్యాంకు, అనేకములయిన బ్రాంచీలతోను, యితరమార్గములతోను, అన్నివిధములయిన బ్యాంకింగు
 సౌకర్యము లొసంగుటకుగాను తగినకీర్తి గలదై యున్నది.

కే. యం. యి.పెన్, ఎం. ఏ., బి. యల్. కార్యదర్శి.

కావున నే మతమయినను భక్తి గలిగియున్న శ్రేయోదాయకమే. కావుననే హిందుమతములలోని కిరారులను జేర్చుకొనుట యనుసంప్రదాయము హిందూమతధర్మమై యుండలేదు. ఏమతములలోనివారామతముల సిద్ధాంతములకు లోబడి నడచుకొనుచు స్వచ్ఛావకులై భేదిమోదములపాలు కాకుండుడు. దేహము నాత్మగా భావించి కిందిజ్ఞానై శోకమోహములకును, తుత్తిపాపలకును, జరామరణములకును మీశీవమూత్రల నర్పింపకుండు అనుటయే హిందూమతసంప్రదాయము.

మనభరతఖండమునఁ బూర్వరాజులగు ధర్మరాజులు పరరాజులను జయించియు నక్కడివారినే వినీతులుగఁ జేసి యాయారాజ్యముల నిల్పి వచ్చి రనునట్టి కథలు పురాణములలో వేనవీలు కలవు.

మనహిందూమతమునైతము సర్వమతజననివలె నెల్లమతముల యభివృద్ధిని, విహితస్థానమైనను ప్రేమించును. ఈయంశం చితరమతములనారికి దుర్బోధలు చేసి తనలోఁ జేర్చుకొనుడని శ్రుతిస్మృతి పురాణాదులు చెప్పకుండుటచేతనే బోధపడుచున్నది.

ఎల్లమతములు నేదో గొప్పవస్తువునుగూర్చి మానవులభావములను బ్రయాణముచేయుచుచునే యున్నవి. అట్టియాత్రికుల యంతఃకరణములలో భక్తికి తావు లేకపోలేదు. అట్టిభక్తినే ముక్తికి యుక్తిగా వేదవేదాంతము లధికారానురూపముగ బోధించెడి. కాన ఇతరమతములో వంశకులపారంపర్యక్రమాగతముగఁ జేరియుండెడి వారిని వారిమతులు చెరచి తనలోనికి రమ్యనవలసిన యావశ్యకత మందిమతములకల?

మతధర్మమును వాసనచూచి యెఱుంగనినాండ్రయ్యను తిండి శోసమో, డబ్బుశోసమో మతములలోఁ జేరి సంఖ్యను బెంచి మత గౌరవమును సభలలోని కెక్కించెడి చెడుసంప్రదాయము నెన్నఁడును మంచిమతము శోరకుండుఁగాత! కాలప్రభావమునఁ గల్గెడి యశ్రద్ధ మతములలోఁ జేరునప్పు డెల్లమతములవశలు నొక్కరూప యని విజ్ఞులు తలంకుదుగాత. స్వాభిమానములను బోగొట్టు ధర్మశ్రద్ధ భక్తివిశ్వాసములతో లోకమున నల్లుకొనుఁగాత. భక్తుడై సుజనుఁడైనవాఁడు ఏమతమువాఁడైనను బూజ్యుఁడె. అజ్ఞులకు మతాంతర దుచిచే బుద్ధిభేదము గల్గకుండుటకు పరమతము పెద్ద బాహ్యపూజ మానినను దోషముకాదు.

అ భ య ము

కొంపెల్ల జనార్దనరావు

నావిముద్దేశశిఖము క్రొందఱుకుపోక

ప్రీతి చఱచిన అలహానజ్జ్వాలిక నను
జార్చుకొన్నది నీడదచ్చపుల, నీడు
అభయహస్తమ్మునీడల నక్షి తెఱవ.

ఒకక్షణాదాగతము పునరుత్థగగన
చకితగతిమద్విహారకౌతుకము నీడు

అభయహస్తమ్ము చలువఱుర్పయి మెలంగు

టిది అవశ్యము నీకు జ్ఞాపితమొనర్తు.

అగును మఱి యేలొ పౌనరుక్త్యమిటు?—కాని

నీఅభయహస్త మిపుడు సంచితనమర్చము:—

అంత, 'బ్రదు'కన్నదొకటి పరాస్తనకల

పూజ్యమని నాచెవుల రొదపుత్తు వీవు.



సంస్కృతనాటకము-ఉత్పత్తివిచారము

సరసకవితాధురీణ, కిషిన్ధలం కృష్ణమాచార్యులు, బి. ఏ, యల్. టి.

సంస్కృతనాటకవికాసముయొక్క ప్రాథమికావస్థలు మనకు గోచరించుటలేదు. కాబట్టి, సంస్కృత నాటకముయొక్క విశ్వసనీయమైన యుత్పత్తిని విమర్శించు ప్రయత్నము లూహలతో నిండియుండవలసినదే. ప్రస్తుతము మనకు లభించియుండు నాటకములలో మిక్కిలి పురాతనమైనవి అశ్వఘోషుని నాటకముల ఖండములు, భాసుని నాటకములును. ఇవి నిర్ణయమగు నొక పరిపక్వదశను సూచించుచున్నవి. కావున, ఇంతకుఁ బూర్వము కొన్ని శతాబ్దములనుండి యీకళ వికాసము చెందుచువచ్చిన దని యూహింపవలసియున్నది. ఆ కాలములలో నది యెట్లుండినదో, ఇప్పుడు నిర్ణయించుట సాధ్యము. యవన (Greek) నాటకసాదృశ్యము ననుసరించి యనేకప్రాకృండితులు సంస్కృత నాటకచరిత్రమును దాని యాదినుండి నిర్మింప యత్నించిరి. కాని, ఇంతవరకును వారిప్రయత్నములు నిరాశ్లేషణీయములగు ఫలితములను కలిగింపలేదు. సంభాషణల రూపమునఁగాని, స్వగతములరూపమునఁగాని యుండు ఋగ్వేదములోని యనేకసూక్తములకును యవనుల Mystery Plays కును సాదృశ్యమున్నదని యీ పండితులలో ననేకుల యభిప్రాయము. ఈయభిప్రాయమునాధారముగ నుంచికొని వీరు సంస్కృతనాటకోత్పత్తిని గూర్చిన తమ వాదములను సూత్రీకరించిరి. వీరియనంతరము సుప్రసిద్ధుఁ డగు ప్రతిరచయితయును వీరి వాదములను పూర్ణముగ విసర్జించి, తనవాదములను నెలకొల్పెను. లేదా, వీరివాదములను చాలవరకు మార్చెను.

వేదసూక్తము లన్నియును మతమునకు సంబంధించియుండవలయు నను నియమము లేదని యీవిమర్శకులలో ననేకులు గ్రహించినట్లు తోచుటలేక. నాటకమునకు మతసంబంధమైన యుత్పత్తిని స్థాపించి, దానిని వేదసూక్తములలో గుర్తించు నాత్రమున, ఈ సూక్తములలో కొన్ని తౌకికము కావచ్చునని వీరు విశ్వసించుకొన్నారు. విశ్వామిత్రసూక్తము (III 33), నసిష్ఠ సూక్తము (VII 33), మండుకసూక్తము (VII ౧౦3), ద్యూతకరసూక్తము (X 3౪) మొదలగునవి తౌకికము కాకున్న మరేమి? మతమునకు సంబంధించిన సూక్తములలో దాదాపుగ నన్నిటి నేదో క్రతుక్రియార్థముపయోగించి, పిమ్మట క్రతుక్రియావాఙ్మయము తౌకికసూక్తములను విసర్జించినది. పూర్వపు ఋషులు కొన్ని ఋగ్వేదసూక్తములను తౌకికము లని భావించిరనుట కిదియే నిదర్శనము. సంభాషణగాని, స్వగతముగాని ఋగ్వేదకవుల రచనభేదము. ఇది యెల్లప్పుడును మతమునకు సంబంధించి యుండదు. ఇది యేదో యొకవిధమున పురాణయుగమునర కుండి, పిదప నాటకమున పరిపక్వదశను గాంచినది.

మరికొందరు పండితులు Indo-Germanic తెగల సన్యాభివర్ధకక్రతువుల (Fertility rites) వంటివానిలో గీర్వాణనాటకోత్పత్తిని గుర్తించి, మండుకసూక్తమువంటి కేవలాపహాసిక సూక్తములలో వర్షాకర్షకాది క్రతువులను (rain charm etc.) చూచుచున్నారు. వీరి వాదము లింతవర కెల్లర యామోదమును బడయకున్నను, ఇవి

తుదకు సంభాషణసూక్తములలో Vedic Mysteries ను గుర్తించువారి వాదములకంటె దృఢమైనవి.

ఇంక కొందరు దేశములోని ప్రాచీనవాఙ్మయమును పరిశీలించి నాటకపుబీజముల నందు గుర్తించు నవసరము లేక, సంస్కృతనాటకమునకు యవనోత్పత్తిని సుఖముగ నాపాదించుచున్నారు. అంకవిభజనము, వస్తునియమము (Unity of action), అభియోగము (Central conflict) వంటివి యవననాటకములకును, భారతీయ నాటకములకును కొన్నిపోలికలు లేకపోలేదు. కాని, బలవత్తరము లైన యసాదృశ్యాంశము లనేకములున్నవి. యవనకవుల Tragedy సంస్కృతకవులకు తెలియనే తెలియదు. అట్లననే?—Tragedy కిని సంస్కృతకవులకును సరిపడదు. భేదము నాయకుని పక్షమున నుండునప్పుడు తప్ప, ఒకనాటకము భేదాంతమగుటవలననే యది Tragedy కానేరదు. సనాతనధర్మమును బోధించుటకు తమ నాటకము నుద్దేశించు సంస్కృతకవులు సజ్జనుల కళజయమును, దుర్జనులకు విజయమును గలుగుట సూహింపలేదు. కాఁబట్టి, భాసుని 'ఊరుభంగము' వంటి నాటకములు కొన్ని యప్పుడప్పుడు భేదాంతము లైనను, భేద మెల్లప్పుడును ప్రతినాయకునిపక్షమున నుండునట్లు వారు జాగ్రత్తగ చూచికొనిరి. అందువలన నిజముగ సంతమున నాయకుని కానందమే. యవనుల కాలనియమము, స్థాననియమము (Unities of time and place) సంస్కృత నాటకమున లేవు. మరియు, సంస్కృత నాటకములలో ప్రాకృతభాష నుపయోగించు హడుకవంటిది, యవన నాటకములలో లేదు. సంస్కృతనాటకములలోని ప్రస్తావనకును, యవననాటకములలోని Prologue కును సాదృశ్యము లేదు.

కథనము, గానము, నృత్యము, అభినయము మొదలగునవి తన వాఙ్మయమునందే యుండవానిని మేళవించి, నాటకమును ప్రభవింపజేయుట కేదేశమును పరదేశముల ప్రోద్బలమును ప్రతీక్షించు

చూడదు. యవనసంయోగము నాటకమును కొంత యలంకరించి యుండవచ్చును. కాని, అది యే యలంకారమునకు హేతుభూత మైనదో నిర్ణయింపలేము.

మరి, ఏండ్లకొలదిగ వేరువేరుగ నివసించుచున్నను, ఒకేమూలమున జనించిన రెండుజాతులవారికి తమ యభివృద్ధిలో నేదశయందును నొకరినుండి యొకరు గ్రహింపకయే, సాదృశ్యము గల పరిస్థితులలో తమతమ నాటకముల నుద్భవింపజేసికొన నసాధ్యము కాకపోవచ్చును. వారినాటకములయం దచ్చటచ్చటి సాదృశ్యములతోకూడ ముఖ్యము లగు భేదములుండుట కిదియే కారణ మేమో.

భరతుని నాట్యశాస్త్రమున నాటకోత్పత్తినిగూర్చి వింతయైన యైతిహ్యముకటి కానవచ్చుచున్నది. మనకు ప్రస్తుతము లభించియుండు నాట్యశాస్త్రమట్టి శాస్త్రము లలో మొట్టమొదటిది కాదు. ఏలనన: అం దచ్చటచ్చట శ్లోకచ్ఛందమునఁగాని, ఆర్యచ్ఛందమునఁగాని యుండు నట్టి యనువంశ్యసూత్రములును, సూత్రానుబద్ధమునుండి యావిషయమునకు సంబంధించిన కొన్ని సూత్రములును నుదాహరింపఁబడియున్నవి. అం దప్పుడప్పు డూరక 'కేచిత్' అని యితరరచయితలుకూడ సూచింపఁబడి యున్నారు. ప్రస్తుతము మనకు లభించియుండు గ్రంథము భరతుని మూలగ్రంథమునకు సంగ్రహమగుటవలన, దీనిలో నుదాహరింపఁబడియుండు సూత్రములు మూలములోనివి కావచ్చును; కాకున్న, పాణిని యుదాహరించిన శిలాలి, కృతాశ్వుడు-వీరి నటసూత్రములవంటి సూత్రముల నవి సూచింపవచ్చును. ఈవిషయమున తగిన యాధారములు లేకుండుటవలన మన యూహలీయెడలలో నిరాక్షేపణీయములు కానేరవు.

ఇంక మన మామైతిహ్యమును పరిశీలింతము. నాలుగువేదములును త్రైవిద్యలకే సంబంధించియుండుట వలన, దేవత లందరును నింద్రపురస్సరముగ బ్రహ్మకడకుఁ జని, నాల్గవవర్ణమునకుఁ జేరినవారుకూడ నుపయోగింపఁదగినదియు, మనోహరమును బోధకమును నగు

నదియు నగు నొక పంచమవేదమును సృష్టింపుమని యతనిని ప్రార్థించిరి. బ్రహ్మ ప్రసన్నుడై నాట్యవేదమును సృష్టించెను. దానిని సృష్టించుట కతడు ఋగ్వేదమునుండి కథనమును, సామవేదమునుండి గానమును, యజుర్వేదమునుండి నృత్యమును, అథర్వణ వేదమునుండి రసములను గ్రహించెను.

“జగ్రాహ పాశ్య మృగేదా త్సామభ్యో గీత మేవచ,
యజుర్వేదా దభినయా రసా నాథర్వణాఃపి.”

అతడు నాట్యవేదమును రాగల తరతరములవారి యశాన్నత్యమునకు సాధనముగ నుద్దేశించెను. దాని నతడు భరతమహామునికి బోధించి, ఇంద్రుని ధ్వజమహోత్సవసందర్భమున నొక ప్రదర్శనమువలన దేవతలను సంతోషపెట్టు మని యతనిని నియమించెను. ఆ ప్రదర్శనమున కితివృత్త మసురపరాజయము. కాబట్టి, అసురులు కోపించి విఘ్నము లొనరించిరి. రంగము మీఁది నటకులు తమతమపాత్రములను మరచిరి; వారికి నోట మాట రాకుండెను. కాలు నేతులు కదలకుండెను. వారు రంగమున చేష్టలుదక్కి నిలిచిరి. అప్పు డింద్రుడు విఘ్నకారుల నణఁగి, శాంతి నెలకొల్పెను. పిమ్మట దేవతలు బ్రహ్మపాలికి జని, అసురు లొనర్చిన విఘ్నముల నతనికి విన్నవించిరి. బ్రహ్మ తోడనే విశ్వకర్మను రావించి యొక నాట్యమందిరమును నిర్మింపుమనెను. అది నిర్మింపఁబడిన యనంతరము దేవత లందరును సాధ్య మైనంతవరకు దానిని రక్షింపవలసియుండెను.

తమప్రయత్నములన్నియు నిట్లు నిష్ఫలమగుటఁ జూచి, విఘ్నకారుల నాయకుఁ డగు విరూపాక్షుఁడు దేవతలకువలె తమకుఁగూడ మూలపురుషుఁడగుబ్రహ్మ యెల్లప్పుడును దేవతలయెడ శత్రుపాతము వహించి యుండునని బ్రహ్మను నిందింపసాగెను. బ్రహ్మకునింద సమంజసమేయని తోఁచెను. వెంటనే యతడుకోప పడియుండు తనబిడ్డలను శాంతి పరుపఁదలంచి, ఈ విధమున వారికి సంధిచేసెను. నాటకరంగమున దేవతల గుతివృత్తములేకాక, అసురులు, నృపులు, బ్రహ్మర్షులు

వీరి యితివృత్తములుగూడ ప్రదర్శింపఁబడవలయు ననియు, అవి ప్రపంచాన్నత్యమునకు సాధనములుగ నుండవలయు ననియు శాసించెను.

“లోకోపకేళజననం.....

దేవానా మసురాణాంచ రాజాకోశ్యచైవహి,

బ్రహ్మగీతాంచ విక్షేయం నాట్యం వృత్తాంతచర్యకమ్.”

అదియునుగాక, తాను సృష్టించిన నాట్యవేదము దేవతలతోకూడ అసురులును, మానవులును సమానముగ ననుభవింపఁ దగినదనియు స్పష్టము చేసెను. నాట్యశాస్త్రమునకు సమస్త శాస్త్రములును, కళలును పనికివచ్చుటవలన, దాని కుపయోగపడని యే శాస్త్రము గాని, కళగాని తనపేరునకు తగదనియు చెప్పెను.

“సతచ్చృతం సత చ్చిత్తం ససా విద్యా ససా కలా,

సాసా యోగో సతత్కర్మ యన్నాత్యేక్యే న్నదృశ్యశే.”

అప్పు డసురులు తృప్తిపడిరి. నాట్యమందిరముతో సంపూర్ణముగ వికాసము నొందిన నాటకము వాడుకకువచ్చినది.

ఇది యేదో కల్పితమని యీమైతిహ్యమును సులభముగ వివర్ణింపరాదు. సాధారణముగ నైతిహ్యము లలో చారిత్రకములగు సత్యములు కొన్ని యంతర్గతములై యుండును. ఆసత్యములను విమర్శించి వెలికియట కొన్ని సందర్భములం దసాధ్యముగనుండును. ఈమైతిహ్యమున నాటకవికాసమును గూర్చిన చారిత్రకసత్యములు కొన్నియున్నట్లు నాకుఁ దోచుచున్నది. వానిని క్రింద వ్రాయుచున్నాను.

ఋగ్వేద సూక్తములు ముఖ్యముగ పఠించుట కుద్దేశింపఁబడి యుండుటవలన నావేదము కథనవేదము. సామవేదసూక్తములు గానముచేయఁదగిన వగుటవలన నావేదము గానవేదము. యజుర్వేదమున కొన్నియెడల పురోహితులు దేవతలపాత్రములను ధరింపవలసియుండు నట్లు తెలియుచున్నది. నేటికిని, పితృశ్రాద్ధములు చేయుటయందు మనలో నిట్టి యభినయము వాడుకలో నున్నది. కాబట్టి, అభినయము మొట్టమొదట యజుర్వేదమునుండి వాడుకకువచ్చినది.

మరియు, మన శ్రాద్ధకర్మలు వేదకాలమునుండి యీ కాలమువరకును విరామములేక వచ్చుచున్నవని పండితు లొప్పుకొనియున్నారు. కావున, అభినయము యజుర్వేదమునుండి వాడుకకు వచ్చినదని మన మూహింపవచ్చును.

అథర్వణవేదము మంత్రతంత్రాదిసూక్తములతో దాదాపు నిండియున్నది. మంత్రతంత్రాదులకును ప్రేమ, భయము, కోపము, ద్వేషము, జగుప్స, కరుణ మొదలగు భావములకును పరస్పరసంబంధమున్నది. రంగమున ప్రదర్శింపఁబడునట్టి యీ భావములయెడఁ గలుగు పురుషభేదములులేని ప్రత్యేకాభిరుచియే రసము. కాఁబట్టి నాటకమునందలి రసము అథర్వణవేదమునుండి గ్రహింపఁబడియుండవచ్చును.

కథనము, గానము, నృత్యము, అభినయము మొదలగువానిని నాలుగువేదములనుండి యవి యుద్భవించినక్రమమును చూచినయెడల నాటకము క్రమక్రమముగ వికాసమునొందినదని తోఁపఁగలదు. వేదములు సహితము క్రమముగ నుద్భవించినవని సూచించు గూఢార్థముగల భాగము లందందు వేదవాఙ్మయమున కనుపట్టుచున్నవి.

“ఋచ స్సామాని జగ్ధశ్చ....”

“యాస్తస్మా దభాయత.”

కావున, నాటకము మొట్టమొదట మనపౌరాణికములలోని కథనమువలె నుండినదని యూహింపసాహసించుచున్నాను. తదనంతరమందు గానము ప్రవేశించి యుండును. అప్పుడు మన హరికథాభాగవతములవంటివి పుట్టియుండును. కొంతకాల మైనపిదప దానియందభినయము కలసియుండును. అప్పుడు నాటకము మనజాతరలు, వీధినాటకములు మొదలగువానివంటిదై యుండి యుండును. రసము వికాసమునొందినప్పటినుండి కావ్యము యొక్క యాత్మ గోచరింపసాగినది. సర్వాంగసుందరమగు నాటక మాకాలమునుండియే పరిపక్వము కాదొడఁగెను.

ఋగ్వేదములోని మైత్రిహ్యమునందలి దేవతలును, రాక్షసులును రసికలోకమును, పామరలోకమును సూచించుచున్నట్లున్నది. రసము నాటకమున కాత్మవంటి దని గ్రహించుటకుపూర్వము నాటకప్రదర్శనముఁ బీఠినాటక మాడినట్లుండియుండును. అప్పుడు రంగమని యొకటి యుండలేదు; మనవీధినాటకముల రంగమట్లే బయలైనను రంగ మగుచుండెడిది. రసమును కనుగొనినప్పటినుండి రసికులు కొందరు నాటకము నభివృద్ధిపరచి, దానిని తమవశము గావించికొనియుందురు. సహజముగ పామరులు కోపఁడి వారి ప్రదర్శనములకు విఘ్నములొనరించియుందురు. కాఁబట్టి, రసికు లావరణముల యావశ్యకత నెరిగి నాట్యమందిరములను నిర్మించిరి; తమకిష్టమువచ్చినవారినే యందు ప్రవేశపెట్టుచుండిరి. చేయునదిలేక విఘ్నకారులు వారితో సంఘి చేసికొనిరి. పిమ్మట పామరులును సప్తశస్పడు ప్రవేశింపఁదగిన సార్వజనీననాట్యమందిరములు వాడుకకు వచ్చినవి.

ఇట్లు నాటకము రెండువిధములుగ నభివృద్ధిచెందినది: రసికులది, పామరులది అని. పామరుల నాటకము, శనన్వభావములతో వీధినాటకములరూపమున నేటివరకును నిలిచియున్నను, రసికుల భాణము, అంకము, వీధి మొదలగువానికి హేతుభూతమైనట్లు తోచుచున్నది. రసికుల నాటకము సర్వవిధముల నభివృద్ధిచెందుచు నాటకము, నాటిక, ప్రకరణము మొదలగువానికి కారణమైనది.

నాట్యశాస్త్రములలోని మైత్రిహ్యమునుండి గ్రహింపఁదగిన దింతియే. ఈవిధముగ నాట్యశాస్త్రము సంస్కృతనాటకోత్పత్తివికాసముల కానుషంగికసాక్ష్యమొకటి యిచ్చునట్లు తోచుచున్నది. అయినను, ఆశాస్త్రమే యతిప్రరాతనము గాకుండుటవలన నీవిషయమున నది సాక్షాత్సాక్ష్యమియఁజాలదు. దశవిధనాటక ముద్భవించిన చాలకాలమునకు నాట్యశాస్త్రము జనించినది. నాట్యశాస్త్రమునందు కొంతవిపులముగ చర్చింపఁబడియుండు రసములు, వృత్తులు, సంధులు

సభివృద్ధిగాంచినయంతరము దశవిధరూపకములు జనించినవని వానినుండి తెలియుచున్నది. నాట్యశాస్త్రము యొక్క కాల మెద్దియైయుండవచ్చును?

నాట్యశాస్త్రమున నలంకారశాస్త్రము బీజావస్థయందు నున్నది. ఉపమా, దీపకము, రూపకము, యమకము అని యలంకారములు నాలుగువిధములనియందున్నది.

“ఉపమా దీపకంచైవ రూపకం యమకం తథా;
కావ్యవై శ్రీతే హ్యలంకారా శ్చత్వరః పరిరీతితః.”

అందు ఉపమాంకారము బాగుగ చర్చింపఁబడలేదు. అయినను, యమకము శాస్త్రసమ్మత మగు విధముననే చర్చింపఁబడియున్నది. అథ్థాలంకారములకును శబ్దాలంకారములకును భేదమున్నట్లు దానినుండి తెలియుటలేదు. ప్రస్తుతము మనకుఁ దెలిసియుండునట్టి యాలంకారికులలో మొదటివాఁడు భామహుఁడు. అతఁడలంకారములను నాట్యశాస్త్రమునకంటె విపులముగ చర్చించియున్నాఁడు. కాబట్టి, నాట్యశాస్త్రమునుండి భామహునివర కలంకారశాస్త్రము కొన్ని శతాబ్దము లభివృద్ధి చెందిన దని మన మంగీకరింపవలయును. భామహుఁడు క్రీ. శ. ౫-వ శతాబ్దమువాఁడని పండితుల యభిప్రాయము. కావున నాట్యశాస్త్రము సుమారు క్రీ. శ. 3-వ లేక ౨-వ శతాబ్దమునాటికియై యుండును.

క్రీ. శ. ఆరంభములయందు నాటకము పరిపూర్ణముగ సభివృద్ధి చెందియుండనేని, నాటకవికాసావస్థలను నిర్ణయింప నుపయోగపడఁగల సాక్షాత్సాక్ష్యము నాట్యశాస్త్రమునఁగాక మరియొకదైనను లభింపఁగలదు. అశ్వఘోషుని నాటకముఖండములయందును, భాసుని నాటకములయందును గల యభివృద్ధిని నాట్యకళ కాంచుటకు కొన్ని శతాబ్దములు పట్టియుండునని వానినుండి పూర్వమే గ్రహించియున్నాము గదా.

‘హేతుమచ్చ’ (III-౧-౨=) అను పాణినీయ సూత్రమును విమర్శించునెడ, పతంజలి యతిపురాతన మగు విషయమును తెలుపుటకు వర్తమానము నుపయోగించుటలోని సామంజస్యమును చర్చించుచు, శౌభికులు,

గ్రంథికులును ప్రేక్షకుల సమక్షమున నప్పుడే జరిగినట్లు ‘బలిబంధనము’, ‘కంసనాశనము’ ప్రదర్శించుట నుదాహరించి యున్నాడు (మహాభాష్యము III ౧). శౌభికులు పానప్రదర్శనముల (Pantomimes) లోని నటకులనియు, గ్రంథికులు వేషధారు లగు కథకు లనియు కొందరు పండితుల యభిప్రాయము. కొందరు పండితులు శౌభికులు పానప్రదర్శనములను ప్రేక్షకులకు విశదీకరించెడివారనియు, గ్రంథికులు వట్టి కథకులనియు ననెదరు. అయినను, వసుదేవునిపక్షపువారుగను, కంసునిపక్షపువారుగను అభినయము చేయుటకై గ్రంథికులు తమ ముఖములకు వర్ణములు పూసికొనుటను పతంజలియే వర్ణించియున్నాఁడు. కాబట్టి గ్రంథికులు నటకులనుట నిస్సంశయము. పతంజలికాలమున నొకవిధమగు నాటకమును, నటకులసంఘములును నుండినవని యిందొక సాక్షాత్సాక్ష్య మగపడుచున్నది. దీనితో పాణిని యుదాహరించిన నటసూత్రములను కలిపినయెడల, నాటకము క్రీ. పూ. ౫-వ శతాబ్దమునాటిదని తేలుచున్నది. ఇంతకంటె తగిన యాధారములు లేకుండుటవలన ప్రస్తుతము మన మితటితో తృప్తిపడవలసినదే.

కాళిదాసుఁడు, శ్రీహర్షుఁడు, భవభూతి వీరినాటకములలో నైతిహ్యము మరియొకటి కాననగుచున్నది. వీరి నాటకములలో కొన్నిటియందు స్త్రీలు ప్రదర్శించిన యంతర్నాటకము లున్నవి. విక్రమోర్వశీయములో ఊర్వశి మొదలైన యప్పరోవనిత లింద్రసభలో ‘లక్ష్మీస్వయంవరము’ అనునాటకమును ప్రదర్శించిరి. ప్రియదర్శికలో వాసవదత్తయొక్క చెలులు ‘ఉదయనచరితము’ అనునాటకమును ప్రదర్శించి యామెను సంతోషపెట్టిరి. ఉత్తరరామచరితములో, వాల్మీకి తన యతిథుల యెదుట సీతాపరిత్యాగము మొదలుగల కథను ప్రదర్శింపజేసెను. ఇయ్యెడలలో స్త్రీలే సాత్రములను ధరించిరి. ఈవాడుక తుద కంతఃపురములలోనైన నుండకుండిన దీని నీకవులు తమనాటకములలో చేర్చియుండరు, స్త్రీలు నాటకమాడరా దను దురభిమాన మాకాల

ములో నుండినది. అట్లుండియు, రాణివాసపు స్త్రీ లేల యానిందలపాలు గాలేదు? అంతఃపురమున నాటక మేదేని ప్రదర్శింపమని వారినాథు లేల వారిని ప్రోత్సహించుచుండిరి?

నాటకముయొక్క ప్రాథమికావస్థలలో నాటక ములయందు స్త్రీపురుషులు ధారాళముగ పాల్గొనుచుండినట్లున్నది. ఈదురభిమాన మాకాలమందే యుండినదని నానమ్మకము. ఈనమ్మకమును 'ప్రస్తావన'కొంత బలపరచుచున్నది. రంగమున స్త్రీపురుషులు కలసిమెలసి యుండుటవలన ముఖ్యముగ స్త్రీలు చెడుట సహజమే. 'జాయాజీవా'లనుపేరు నటకుల కర్థముతోడనే పెట్టియుదురు. స్త్రీ లప్పటినుండి నాటకమాడుట మానిరి. ఆదురభిమానమును మాయమయ్యెను. పూర్వకాలపు బౌద్ధసన్యాసులును, జైనసన్యాసులును తమవారు నాటక

ములకుఁ బోరాదని నియమించికొనుటకును, వారి యనంతరముండిన అశ్వఘోషుఁడు మొదలగు సన్యాసులు నాటకములను తమ మతధర్మములను ప్రచారము చేయుట కుపయోగించుటకును నిదియే కారణము.

అంతఃపురములందువలె స్త్రీలే యన్నిపాత్రలను ధరించినప్పు డాదురభిమాన ముండుటకు హేతువు లేదు. రాణివాసపు స్త్రీల యధీనమందుండినప్పుడు నాటకము వారిచే కొంతపెంపొందింపఁబడియుండుట సుసాధ్యమే. దీనికొరకే, నాటకకర్తలైన యాస్థానకవులు తమ నాటకములను, పట్టణములలోను, నగరములలోను గల నాట్యమందిరములయందు ప్రదర్శించుటకు పూర్వము అంతఃపురములలో ప్రదర్శింపఁజేయుచుండిరేమో. (సికలోకపు నాటక మిట్లు కాళిదాసభవభూత్యాదిమహాకవుల నాటకములలో పరిపక్వమైయుండవచ్చునుగదా.

కార్తీక పార్వతి

చావలి బంగారమ్మ

వృక్షులు పలుకకే పడియుండినాయి
వృక్షాలు చూచుచూ పూరకున్నాయి
తనవెంట బడుచున్న
తరుణి చూడడి దేవి
పోవుచున్నాడు తాను
అదు గడుగో
పొంగు లోకాలు గనను.
గాలిపుయ్యాలలై కదలుచుండెడి మబ్బు
కనుల కడ్డము రాగ కాలైనతడబడక
పోవుచున్నాడు తాను
తన గర్వ
పొంకములు దెలుపుతూను.

వాద్యములు వినబడవో చోద్యములు కన
బడవో
నిముసంబు నిలువ డేసిడనిలుచునో గాని
పోవుచున్నాడు తాను
గర్వంపు
పొంగు బోకారిపోను.
పక్షికలకలములే పరిభవంబని యెంచి
తెల్ల బోయినమోము తెలియకుండుటకునై
పోవుచున్నాడు తాను
తనువెల్ల
తారుమారగుటచేను.

ఉపాధ్యాయుడు - జాతీయత

తిరుమల రంగచార్యులు

వర్తమానకాలమున 'జాతీయత' అనుపదమును మన మనుషుని మును వినుచునేయున్నాము. ఉపాధ్యాయునికిని జాతీయత కును గల సన్నిహితసంబంధమును జర్పించుటయే యీ వ్యాసము ముఖ్యోద్దేశము.

ఉపాధ్యాయుడు ఉపదేశమునుగూర్చి మొదట జర్పించుట : ఈపద మిపుడు 'అ ఆ' తిద్దించుట అయ్యెనారు మొదలుకొని అధ్యాపకులవరకు నందఱిచే నుపయోగింపఁబడుచున్నది. కాని ఆమర కారుడు "ఉపాధ్యాయాధ్యాపకోఽన్ స్యాన్నిషేకాదికృద్గురుః, మంత్రవ్యాఖ్యాకృదాచార్యః—" అన్నాడు. క్షీరసావి వ్యాఖ్యానము చేయుచు "ఉపేత్య అధీయతే అస్మాత్ ఇతి ఉపాధ్యాయః" (ఈతని సమాపించి యధ్యయనము చేయుదురు. "అధ్యాపయతి ఇతి అధ్యాపకః" (అధ్యయనముచేయుచువాడు) నిషేక + ఆదికృత్, నిషేకము, సీమంతము మున్నగునవి చేయుచువాడు) గురుః, వ్యుత్పత్తి : గృహాతి ఉపదిశతి గాయత్ర్యాదికం గురుః—మంత్రవ్యాఖ్యాకృత్ (కల్పనూత్రాదినహితమైన వేదము నధ్యయనము చేయించి తదర్థమును వ్యాఖ్యానము చేయువాడు) ఆచార్యుడు. వ్యుః ఆచారం గ్రాహయతీతి ఆచార్యః మనువునాడు "ఉపనీయతు యః పూర్వం వేద మధ్యాపయే ద్విజః; సాంగంచ సరహస్యంచ త మాచార్యం విదు ర్బుధాః." (ఉపనయనముచేసి శిష్యులగుచులతో వేదసహస్య నెవఁ డెఱిగించునో యట్టిబ్రాహ్మణుఁ డాచార్యుడు) అని వచించెను. అధ్యయనమున వేదాధ్యయనమునకు ప్రసిద్ధమేకదా! ఇతఁ, ధాతువునుండి పుట్టినది ధాత్వర్థము నధ్యయనమే. కాన నుపాధ్యాయుడు, అధ్యాపకుడు, గురువు, ఆచార్యుడు అనుశబ్దములను సర్వసామాన్యముగ నందఱికి నుపయోగించు లెంతయెప్పో విజ్ఞులలోచించు గాక !

ఇక నిపుడు చదువుచెప్పువారల కంతరములఁబట్టి ఆంగ్ల భాషా పదములను "టీచర్" "టెక్నీషియన్" అనునర్థముచ్చు "బోధకుడు, ఉపాధ్యాయుడు," అనుపదములు చక్కగా అన్వయించునని నాయూహ. ఇక వీరు చెప్పుచదువును, పద్ధతియును విజాతీయములే! పదిగంటలకే పదిమెతుకులు పండ్లతో నొక్కి విససిన విద్యార్థుల కరుగుట, భాషప్రకారము పాఠము ముగిసినను ముగియకున్నను బయటికి వచ్చుట,

పాఠశాలమునాయు మగాయకముండే బ్యాటు గైకొని బంతులాడఁబరుగు లిడుట, పద్దుగ నెలకీతమును గైకొనుట, పంతులుగార్చికి పరిపాటి యొప్పొయినది. ఇంటిలోనివారి నేడిపించి కొందఱును, ఇల్లిల్లు తిరిగి యింతయోగిర మెట్లో గడించి కొందఱును, వసతిగృహములలోని వంటలవారిపై స్వారిత్రిసి కొందఱును, ఆన్నముతిన్నతాస్త్రము చేసి పరుగులతో బాటకాలచేరుట, ప్రక్కవారితో బలుముటు పకపకలు, పరియాచకములు, అయ్యవారిపృష్టి యెటువ్రాలగనె యెలుకను మ్రొగిన పిల్లవలె నుండుట, శకుపులలోఁగాలుచుండుటచే కడపటిగంట గణగణముని యెపుడు మ్రోగునని వేచియుండుట, అదియు మ్రోగిన వెంటనే యట్లే లేచి యరుగుట, సాయంకాలము కాఁగనే యాటలకుఁ గొందఱును, పాటలకుఁ గొందఱును, బరువులిడుట, వరీకులలో దొంగిలినవికొన్ని, వెంగలివికొన్ని వింతవ్రాతలు వ్రాసి గం ౩ ౩౫ కొందఱును, మొత్తముపై గొందఱును, మోసపురితిని గొందఱును గుఱుములను సంపాదించి యుత్తీర్ణు లనిపించికొనుట విద్యార్థుల విద్వేదయిపోయినది. "గంతకుఁ దగిన బొంత" యన్న ట్టివిద్యార్థులకు నాయయ్యవారలకు ముడి చక్కఁగాఁబడినది. జాతీయత సర్వతో ముఖముగ వికసించుటకు మూలకారణభూతులగు వీరిస్థితి యిట్లుండ నది సర్వాంగసాధ్యవముతో నెట్లు నిలుచును? ఏకొలదిమందియొకప్పు బోధకులందఱును విజాతీయవేషధారులే! కాని మహాత్మునిపుణ్య మా యన వీరిసంఖ్య క్రమక్రమముగఁ దగ్గిపోవుచున్నది. బాహ్యవేష ధారణము తగ్గుచున్నను భావవిజాతీయత్వముమాత్రము కాగుగ నాటి కొనిపోయినది. అనుకరణమే స్వభావముగఁ గల యర్థకులమాట చెప్పనేల? "రూపం తదోజస్వి తదేవవీర్యం తదేవ నైస్థిక మున్న తత్త్వం" అన్నరీతిగ విద్యార్థులందఱు నచ్చముగ నయ్యవారలనే యాక రింతకుఁ దెచ్చుచుండురు. ఆచార్య, అంతేవాసులస్థితి కడకు నేఁ డిట్లు పరిణమించినది.

జాతీయత యనిన నేమియో జర్పించుము. జాతీయత యన జాతీయునిస్వభావము, లేక కృత్యము. జాతికి సంబంధించినవాడు జాతీయుడు, లేక జాతికి హితుఁడు జాతీయుడు. జాతీయత యను పద మేజాతిపరముగ నుపయోగింపఁబడునో యాజాతీయత యని యర్థము. కాని మనజాతి దౌర్భాగ్యస్థితినిబట్టి యీవ్యాసాంశములు

వావిళ్ల రామస్వామిశాస్త్రులు అండ్ సన్స్

292, ఎస్.స్.నేట్, చెన్నపురి. ఈ.

త్రిలింగ TRILINGA

ప్రస్తుతపు రాజకీయపరిస్థితుల నిష్పక్షపాతముగ జరిపించు వారపత్రిక. దేశాభ్యుదయమునకై పాటుపడుచున్న ఈపత్రిక యందు ఆర్థిక రాజకీయ, సాంఘిక, వైతిక, పారిశ్రామికాది విషయములు నిష్పక్షపాతముగ జరిపించబడుటయేకాక వాస్తవ యమునకంగములగు విమర్శనములు, పరిశోధనలు, శాస్త్ర చర్చలుపూడఁ బ్రకటింపఁబడుచున్నవి. ఈపత్రికకు తాము చందాదారులుగా కేరీ అన్నివిధములఁ దీనియభివృద్ధికి దోహదపడుదురని ప్రార్థన.

సంవత్సరమువకు చందా రు. 2—8—0.

మేనేజరు:—త్రిలింగ.

223, తండయార్చేట, చెన్నపురి.

ఆంధ్ర వచనభారతము

ఆదిపభావర్యములు	ప్రతి 1-కి రూ.	2-8-0
ఆరణ్యపర్వము	"	2-8-0
విరాటోద్యోగపర్వములు	"	2-8-0
భీష్మద్రోణపర్వములు	"	4-0-0
కర్ణ, శల్య, సాపిక, స్త్రీపర్వములు	"	2-8-0
శాంతిపర్వము	"	4-0-0

అనుశాసనము మొదలు ఆరువరకు (అచ్చగుచున్నది.)

శతఘంటము వేంకటరంగశాస్త్రికృత

ఆంధ్ర వచనభాగవతము

ద్వాదశస్కంధములు, ఒక టే సంపుటము, రూ.	6-8-0
" 3 సంపుటములు "	7-0-0

ఆంధ్ర వచనరామాయణము

రెండుసంపుటములు రూ. 12-0-0.

హిందూ యువజనసంఘము,

ఏలూరు

Young Men's Hindu Association, Ellore

ఈసంఘము 1904 సం॥ స్థాపించబడినది. 1918 సం॥ రిజిస్టరుచేయబడినది. ఈ సంఘమునకు రెండు బి॥ మోతేగంగ రాజుజమిందాగుగారిచే రు 50000 (యాభై వేలరూపాయలు) చెచ్చించి దివ్యభవనము నిర్మించి ధర్మ మొనగబడినది. ఇందు దిన, వార, పక్ష, మాసపత్రికలు 60-వరకు వచ్చుచున్నవి. అంగ్ల, ఆంధ్ర, సంస్కృత గ్రంథములు 10000 పదివేలవరకు గలవు. మాజీకలంకర తప్పించబడినది. ప్రతిసంవత్సరము ఆదాయమునుమించిన వ్యయమునుచెప్పి. ఎలక్ట్రిసిటీ, కేజీమో ఆవసరము. ఇంకను తప్పించవలసిన గ్రంథములు చాలగలవు. దాతలెల్లరు రు. 10 లు లగాయను శాశ్వతనిధిధర్మమునకు సహాయపడి రక్షితులును పట్టాలును పుచ్చుకొని గ్రంథాలయాభివృద్ధికి తోడ్పడగోరుచున్నాము. ఇతర వివరములకు:—

రా॥ బి॥ మోతేగంగరాజుజమిందారు,

(ధర్మకర్త సభాధ్యక్షుడు.)

మద్దుల వెంకటచిన్నరాజు,

(ధర్మకర్త సభాగౌరవకార్యదర్శి.)

ఆంధ్రపత్రికా కార్యాలయము,

పోస్టుబాక్సు నెం. 212, మదరాసు.

కాన్యాశ్రమము	2	0	0
ఆంధ్ర ఋతుసంహారము	0	8	0
ప్రార్థనగీతావళి	0	4	0
హిందీ తెలుగు బాలశిక్ష	0	6	0
హిందీ తెలుగు మొదటివాచకము	0	6	0
ఏకభాషాలిప్రశంస	0	4	0
ఆరోగ్యసాధనము	0	4	0
ఆంధ్రశబ్దచింతామణి	0	6	0
నైహూనివేదిక	0	8	0
శ్రీరామవిజయము	0	4	0
అడవిపువ్వులు	1	0	0

శతకములు:—వృషాధిప, నర్మేశ్వర, దేవకీ

నందన శతకములు. ఒక్కొక్క శత

కము వెల

0 1 0

అమృతాంజన శతకము

0 1 0

DONGRE'S
BALAMRIT
CHILDREN'S TONIC



డంగ్రే గారి
బాలామృతము
బలవంతులైన బిడ్డ
లకు వ్యయమున్న
బలమున్న. అర్ధ
గ్రాము. నిచ్చును.
అన్ని పిల్లలకును
దొరకును.

Madras Agents :—

DAMODAR & CO.,

China Bazaar.

సాంధ్య సాధనము

సాంధ్య సాధనము



ప్రతి నవలారత్నము యీ జర్నలి రబ్బరు సాధనము ధరింపవలెను. వికాలమై సాక్ష్యమైన రొమ్ము భాగము కలిగియుండి ఎనలేని చక్కదనము పొందును. నవనవోమ్ములమైన యావనదళాలని యీ రత్నము పొందవచ్చును.

చెల ఒక్కొక్కటి రు 3/-లు. 3 రబ్బరుల ఫిరదు రు 7/-లు.

ఒకసారి 3 రబ్బరుల కొనువారికి పోస్టేజి యుచితము.

SCIENTIFIC PUBLISHING CO.,

(Novelty Dept.),

Bhowanipore, Calcutta (6)

(Copyright).

తగ్గింపుధరలు

తగ్గింపుధరలు

1. సువర్ణ సూర్యావర్తి

మేహపైత్యము, నిక్కాక, వాంతులు, అక్షితి. మొదలగునానికి పనిచేయును. తులం రు. 5-0-0

2. శతపుత కృష్ణాభ్రకృష్ణము

మేహ, ఉడుకు, అతిసూత్రము, క్షయ, మాస్సును. దీనినిగూర్చి విరివిగా వ్రాసునక్కరలేదు. తులం 3-0-0

3. మాదీఫలరసాయనం

పైత్యము, శేరు, ఉడుకు, మొదలగు వానిని మాస్సును. గర్భిణీ ప్రసవము మిక్కిలి ఉపయోగము 4 బొమ్మలసీసా 0-12-0

4. కేతకి తైలం

నరములజాలు, తీపు, పక్షవాతములకు చాలామంచిది. 4 బొమ్మలు 0-12-0

5. మహాభృంగామలక తైలము

శిరోవ్యాధులు, నేత్రవ్యాధులు, మాన్వి జ్ఞాపకశక్తిని వృద్ధిపొందించును. విద్యార్థులు మున్నగు మనోవ్యాధులకు ముఖ్యము. 4 బొమ్మలు 0-12-0

6. తామరమందు

తామర, తీబ, మొదలగు గర్భవ్యాధులకు మంచిది. 1 బొమ్మ సీసా 0-8-0

మీకు యింకను యేమికావలసినను మాకు వ్రాయును.

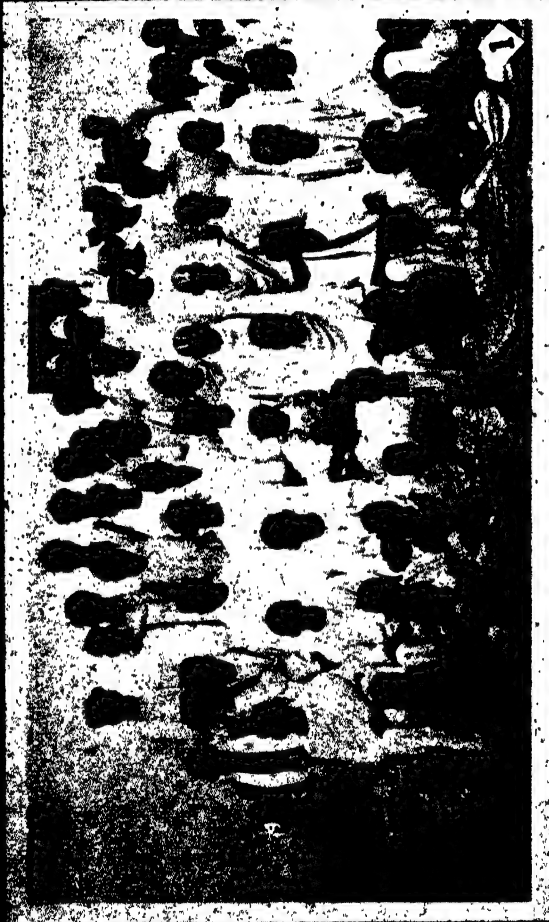
విరివిగా తీసినవారికి మంచికమీషన్ యివ్వబడును.

కట్లాగునకు నేడే వ్రాయును. యినాముగా పంపబడును.

వైద్యభూషణ, వైద్యరత్న,

గూడూరు మల్లేశ్వరరావు,

శనివారపేట, యేలూరు.



1. పెదపాలెము ఆర్యులసమాజగ్రంథాలయపు 28-వ వార్షికోత్సవము, అధ్యక్షులు: కా. నాగేశ్వరరావు గారు.



1. తిరువాంతురు దివాను సర్ మహమ్మదు హాసీబుల్లాగారికి అల్లాసు గోవిందరావుగారి నిలయ.
2. ఉత్తరహిందూదేశమున సంపారముచేయుటకై వెనరిష్టముదరాసు హిందూసంపారములకు వినుతోట.



కేటి వైట్ రోజు తలనూనె (రిజిస్టర్డ్) నెం. 777 శ్రీ కృష్ణ కళా సంస్థానాది నామక ప్రకటనలు

వెండ్రుక లూడిపోవుటమాన్ని, నూతన అందమును గూర్చును. హిందూ దేశములో ఉష్ణ ప్రదేశములందు, విశుంధలములు అశోగ్యస్థితిలో నుండుటకు ప్రత్యేకపోషణ మనవలయును. కావున మీరు వాడవలసినది కేటి వైట్ రోజు తలనూనె నెం. 777 అది మీ మెదడును చల్లగా నుంచుటయేకాక, తలనొప్పి మున్నగు బాధలు రాకుండుకాపాడును. మీరు కొనునప్పుడు సీసామీద 777 నెం. (రిజిస్టర్డ్) శ్రీ కృష్ణ కళా సంస్థానాది గమనింపుడు. సీసా వెల 0-14-0 లు. పాస్టిజ్ వేరు.

కేటి ఆటో రోజు (రిజిస్టర్డ్)

ఇది అసమానమైన వాసన గలది. గులాబిపువ్వుల సారముతో తయారుచేయబడినది. దీనివాసన క్రొత్తగా పుష్పించిన గులాబిపూవుల వాసనవలె అతి మనోహరముగా నుండును.

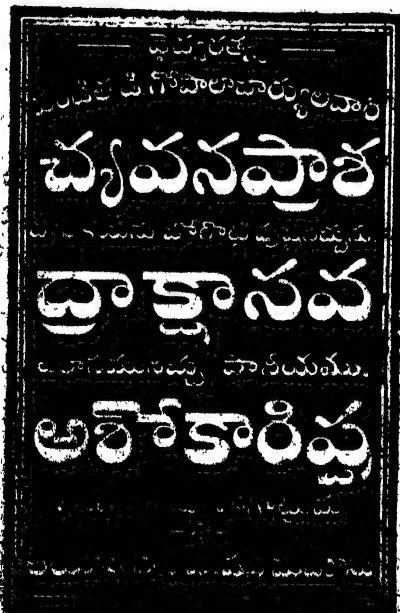
1 డౌన్సు సీసా రు. 1-12-0 లు.

1 డౌన్సు సీసా రు. 1-0-0 లు.

పాస్టిజ్ వేరు.

సాత్ యేజంటలు:— **ది కతియవార్ ప్రేడింగ్ కంపెనీ,**

కేట్ వాడి మెయిన్ రోడు, బొంబాయి. 4.



ఈ గ్రంథము ప్రతిగృహమందుండిన వైద్యసహాయ ముక్కురలేదు
ఈ గ్రంథము వైద్యనివర్తనమండిన మిక్కిలి సహకారిగానుండును
50 సంవత్సరముల నుండి

ఆంధ్ర దేశమందంతటను కొనియాడబడుచున్న

వస్తుగుణదీపిక

**MATERIA MEDICA.
DICTIONARY OF DRUGS MEDICINAL
PLANTS EATABLES & etc.**

ఆరవకూర్పు క్రొత్తప్రచురణము తయారై అమ్మకమునకు సిద్ధముగ నున్నది. 1100 పుటలుగల గ్రంథము నిండు క్యారి కోతో సందముగ లైండుచేయబడినది.

ఈ గ్రంథము సమస్త వస్తువుల ముగ్గుల దుర్బలములను, స్నానము, నిద్ర, వ్యాయామము మొదలగు నిత్యకర్మముల విధులను యింకను అనేక విషయములను గురించి చక్కగ బోధించు మహత్తర గ్రంథరాజము. ఈ కూర్పునందు అనేక నూతనాంశములం జేర్చి ముద్రింపించితిమి.

వెల రు. రె. పోస్టుభారము ప్రత్యేకము. వర్తమాను ప్రత్యేక కటాక్షము దుర్బలములను కలయికగా— వైద్యవిజ్ఞానము.

కర్తా సీతారామయ్య, బొంబాయి.

విజయలక్ష్మి

జనరల్ ఆస్యూరన్సు కంపెనీ, లిమిటెడ్,

హెడ్డాఫీసు: మదరాసు.

చేర్వే

సామి వెంకటాచలం చెట్టిగారు యం. యల్. సి.

మేనేజింగ్ యేజంట్లు

పున్నయ్య, చెంచయ్య అండ్ కో., లిమిటెడ్.

అనుమతిపొందిన మూలధనము	రూ 5,00,000
జారీ చేయబడిన మూలధనము	రూ 2,00,000
చందామూలధనము	రూ 1,00,000
చెల్లించిన మూలధనము	రూ 1,00,000

ఆధునికపద్ధతులమీద ప్రజోపయోగకరముగా నడుపబడుచు, శ్రేష్ఠమైన నమ్మకమైన

శుద్ధ స్వ దేశీ జీవిత భీమా సంస్థ

మాకంపెనీయొక్క నిర్వహణమునుగూర్చి 1934 సం.రం జనవరి 2వ తేది రికార్డుచేయబడిన సుప్రసిద్ధులగు యండియనుయాక్చుయరి, జి. యస్. మరాఠే, యం. ఏ., ఏ. ఐ. ఏ. గారియభిప్రాయము:—

“విజయలక్ష్మి జనరల్ ఆస్యూరన్సు కంపెనీ లిమిటెడ్ యొక్క మేనేజింగు డైరెక్టరు, దర్శి చెంచయ్య గారు, కంపెనీ హెడ్డాఫీసునకు దయతో నన్ను ఆహ్వానించి కంపెనీ నిర్వహణమునందు వాడబడుచున్న బహువిధములగు పుస్తకములు, రికార్డులు చూపించిరి. నదరుపుస్తకములు ఎక్కువ తెలివితేటలతో ఆధునికపద్ధతుల ననుసరించి యేర్పాటుచేయబడెనని కనుగొంటిని. ఏజంట్లుగూడ తృప్తికరముగా వ్యాపారాభివృద్ధికి తోడ్పడుచున్నారు. ఇప్పటికి కంపెనీ స్థాపించి రి నెలలుగడచినను, పుస్తకములలోని ప్రస్తుతపు లెక్కలనుబట్టి నేను చెప్పగలిగినవిషయమేమనగా, వ్యయములు సరిగాను సాధ్యమైనంత తక్కువగాను మదరాసునట్లు ప్రయత్నింపబడుచున్నది. ఈకంపెనీ యిప్పటివలెనే తదునమర్థతతోను, నమ్మకమైన పద్ధతులతోను నిర్వహింపబడుచున్నచో అది శ్రీఘ్రముగా నభివృద్ధిగొరచగలుగునని నా యభిప్రాయము.”

నేడే మాకంపెనీయందుభీమాచేసి మీ వృద్ధాప్యదశకును, ఆకాలమరణము సంప్రాప్తించినచో మీ ఆలుబిడ్డల పోషణమునకును తగినవసతి కలుగజేసికొనుదు.

విజయలక్ష్మి జనరల్ ఆస్యూరన్సు కంపెనీ లిమిటెడ్,

తెలంగాణ ప్రజా సంఘాల రాజకీయ పరివర్తన



ఈ రెండు చిత్రాలూ తెలంగాణ ప్రజా సంఘాల రాజకీయ పరివర్తనకు సంబంధించినవి. పైన చిత్రంలో ఉన్నవారు ప్రజా సంఘాల నేతలు. క్రింద చిత్రంలో ఉన్నవారు ప్రజా సంఘాల సభ్యులు.



1. బాపూలో పెళ్ళిచే ఉత్సవములు-భజన. 2. బాపూలో భాగ్య లక్ష్మి పితరులు.

మనకే యొక్కవగ నన్వయించుచున్నది. ఏలన, — ఒక్కొక్కజాతికి నొక్కొక్క రీతియైన వేషమును, భావమును, ఆచారమును, వ్యవహారమును, సహజములై యుండును. వీనినిబట్టియే యీతః డీజాతివాడని త్రొత్తవారిని సామాన్యముగా గుర్తింపవచ్చును. దీని గల్గు సుపయోగములుగూడఁ బెక్కులు. మచ్చన కొకదృష్టాంతము: విదేశములకుఁ బోయినవాఁ డొకఁడవలె గడగండ్లఁ బడుచుండునపుడు తనదేశముఁ జెప్పఁజైన నచటికి రాఁదలపించిన నతనిఁ గనుకొనుటకు జాతీయతకుఁ బే నేటుసాధన మెట్టి? అంతవఱకు నొకరిముఖము లొకరు చూడకున్నను స్వదేశ వేషభాషాదులు ప్రోత్సాహపఱచుచుండు నపు డాత్రొత్తవాఁడు కొడు నాపన్నునికే జేతనై నంతసాయము చేయుఁగదా! పరిచితులైనచో ఇంకఁ జెప్పఁబనియేమి? జాతీయవేషధారికానిచోఁ జిరపరిచితులఁగూడ గుర్తింపఁ గట్టమనుచుండుట ప్రసిద్ధమేకదా!

కాన జాతీయత యనునది కాలానుసారములైన మార్పులతోఁ గూడఁ జక్కఁగాఁ బోషింపఁదగినది. మార్పులనుటలోని యభిప్రాయ మేమన, కాలప్రవాహమునఁబడి కొట్టుకొనిపోవునపుడు మంచివైనను జెడ్డవైనను గొన్నిమార్పులు కలిగియేతీరును. కాని బుద్ధికాలలను జాతీయు లీమార్పులుగూడ దేశకల్యాణమునకై యుపయోగపడునట్లు చేయవలయు. తేకున్న మున్ముందుఁ గీసుకల్గుటయేకాక జాతీయతకు మొదటికే మోసమువచ్చు. ఎవరివైన జాతీయతాభివృద్ధియంతయు నాధారపడియుండునో యట్టివిద్యార్థులకు జాతీయశీలితక్షణ నొసఁగుచున్న బోధకుల బాధ్యత యెంతయొక్కవయో, వా రెంతమెలకువతో నుండువలయునో వేఱుగ వక్కాణింపనేల? విద్యార్థులశీలిత మంతయు విద్యాబోధకులపై నెక్కువగా నాధారపడియుండుఁగదా? అట్టియే బోధకులకే జాతీయతాభిమానము పూర్ణానుస్వారమహిమ వారిమాటలే వేషవాక్యములుగను, వారిసవనవియే యాచర్యముగను దలచు విద్యార్థులశీలి విజాతీయముగనే యుండుక తప్పదుగదా! ఇట్టి వీరు పెద్దనారైనను బాల్యదశనుండి పట్టువడిన విజాతీయత్వ మెట్లు విడువగలరు?

ప్రకృతకాలశీలినిబట్టి ఉపాధ్యాయుడు, అధ్యాపకుడు, గురువు, ఆచార్యుఁడనుపదముల నెవఁడు నన్వర్తముచేయువీలులేదు. విద్యాకాల లన్నియు విజాతీయవిద్యాస్థానము లగుచే నం దధ్యయనాదులకుఁ జోఁపెక్కడిది? ఉపాధ్యాయు లనఁబడువారు పెక్కుండ్రు ప్రభుత్వముయొక్కయు, దర్శనశులనే తఱచుగా ననుసరించు స్థానికసంఘములయొక్కయు, నితర ప్రశ్నోక్తసంఘములయొక్కయు యజమాన్యమునకు లోబడియున్నారు. వేషధారణ మనుగూర్చి కొన్ని నియమములుగూడ నేర్పడియున్నవి. ఆనిబంధన ములలోఁ గొన్ని విజాతీయవేషధారణమునకుఁ ప్రోత్సాహము నొసఁగుచున్నవికదా యనవచ్చు. నిజమే కాని, యొగ్గమైనవేషము ధరింపవలెనని యానిబంధనముఖ్యాభిప్రాయ మగుటచే జాతీయవేషధార

ణమున కవి యేమాత్ర మడ్డుతగులుట లేదు. ఐనను గొండులు భావదాస్యమునకు లోనై విజాతీయవేషధారు లగుటచే నిబంధనము లెఱుంగనియితరులుగూడ వారినే యనుసరించుచున్నారు. అట్లు కాక బోధకులంఁగలు నియమముల యతరాధమునఁజేరి యొకమత్యముతో జాతీయవేషధారణము నొనర్చిన వేషధారణవిషయమున నైనను జాతీయతను నిల్పుకొనవచ్చును. ఇపుడేపుడు పునాదుల నేర్పఱచుకొనుచున్న దాక్షిణాత్యబోధకసంఘము, దానియుపసంఘములు నీయంశమును జక్కఁగఁ జర్చించి యొక్కొక్కటి నిక్కార్థము నెఱవేర్చవచ్చును. ప్రస్తుతపాఠశాలలలో (సంస్కృతపాఠశాలలు తప్ప) నధ్యయనమునుగూర్చిమాత్ర మనుకొననైన నకాళము నహి. విశ్వవిద్యాలయబాధ్యక్షులు మొదలొకని విద్యాలయబోధకులవఱకు నందఱును ప్రకృతవిద్యాపద్ధతి విస్తరింపఁదగినదని విధివిధముల ఘోషించుచున్నారు. కాన మున్ముందు దెల్పుడైన జాతీయవిద్యాప్రణాళిక యేర్పడునా యనునాళ యంతురించుచున్నది.

ఇప్పటి పాఠశాలలలో నెక్కువగ శ్రద్ధగైకొని నేర్పఁబడునది యాంగ్ల భాష. కాన బోధకులెల్లరుఁడద్యాపావేత్తలుగనే యున్నారు. ప్రాథమిక పాఠశాలలలోఁగూడ నాంగ్ల భాషావేత్తలను బోధకులసంఖ్య క్రమముగ నతిశయించుచున్నది. ఆంగ్ల భాషాబోధన కాలమున దానినే యుపయోగింపక తప్పదు. విద్యాలయవ్యవహారముగూడ విదేశభాష గుండు నడుచుచున్నది. ఇంతియకాక దేశచరిత్రము, భూగోళ శాస్త్రము మున్నగునవిగూడ నాంగ్ల భాషలోనే బోధింపవలయు. విద్యార్థులును బరీక్షలలోఁ బై భాషనే పదింబదిగ నుపయోగింపవలయు ఇట్లుండ స్వభాషావిషయమున సంప్రార్థమున దృష్టినిల్పుటకు వీ రెక్కడ? అని ప్రశ్నింపవచ్చు. ఇదియథార్థముగూడ. కాని యిట్టివిషమపరిస్థితులు గలవు కాబట్టియే విద్యాలయబోధకులు వివేకము నెక్కువగ నుపయోగింపవలసివచ్చినది. ఇట్టిపరిస్థితులలోఁగూడ జాతీయభాషను నిల్పుకొనుటలోనేకదా యొక్కవగ నేర్పును గన్పఱుపవలయు. అ దెట్లు నిజుటన, ఒక విశ్వవిద్యాలయ ప్రణాళికను జూచి మఱొక్క విశ్వవిద్యాలయము గూడ ఆంగ్ల భాషనుతప్ప నితరాంశముల నన్నిటిని మాతృభాషలోనే బోధింపవలెనని సిద్ధాంతీకరించుచున్నవి. కాన నిఁకఁగొన్నాళ్లలోనే యన్నిటి నాంగ్ల భాషలో బోధింపవలెననుట యదృశ్యముగను. పాఠశాలావ్యవహారవిషయమున అధికారులతో నుత్తరప్రత్యుత్తరముల జరుపుటలోఁ దప్పనిసరిగ నాంగ్ల భాష నుపయోగించియే తీరవలెను. కాన నిం దేమిమార్పుచేయుటకుఁ బ్రస్తుతము వీలులేదు. కాని చి క్కచటఁగల్గుచున్నదన బోధకులు విదేశభాషాబోధన సమయమున గుఱితైలి యుపయోగింప స్ఫురింపక నడుమనడుమ మాతృభాష నుపయోగించుటయు, మాతృభాషలో మాటాడవలసినపట్ల మదికిరాకయు, నభ్యాసవశమున విదేశభాష నుపయోగించుటయు తలపించుచున్నది. మాతృభాషలో మాటలాడునపుడుగూడ నవతసర

ముగ నాంగ భాషాపదముల నుపయోగించుదు. చేళ, వంటవాడు, పిల్లవాడు మున్నగుపదములకుఁ గూడ విదేశభాష నుపయోగించుచున్నారు. వీరినే యాచర్యముగ నుంచుకొన్న విద్యార్థులుగూడ నీవెట్టిలో మున్నగు కడ్డేమి? ఎంతటి యాంగ భాషావేత్తలైనను జిన్న నాటినుండి యుగభాలతో బాటుగ నలవడియున్న మాతృభాషను నుఱచిపోయారా? దాశుల చిటికిమాటికి నితరభాషాపదముల నుపయోగింపవలయు? తమభాషలో లేనట్టియు, గల్పించుకొనఁగూడఁ గట్టమయినట్టియు మాటల నుపయోగించుటలో నర్థము కలను; కాని సులభముగ స్ఫురించు సర్వసామాన్యపదములకు మాటుగ నితర భాషాపదముల వాడుటలో నర్థమున్నదా? విద్యావంశులగు వీరిట్లుపయోగించుచుండుటచే నితరులు గూడ దీనిలో నేమో గొప్పతన మున్నదని యాపదధృతి యనుసరింతురు. ఇపుడీపదధృతి పల్లెలకుఁగూడఁ బ్రాకి, కొన్ని జాతీయపదము లప్యశ్యములగుస్థితి యరుఁజించినది. ఇంతకును గారణమేమన ఏ. డి. సి. డి. లు నేర్పియు నేర్వకముందే స్వభాషలో వ్రాయుటకని, నాటలాడుటకాని నాగరికతకు లోపమని తలచునొక గ్రామిగఁ గొనితెచ్చుకొనిన యీ విజాతీయభాషా శ్రేష్ఠుడేమని నైతికక్రించుకొనుటయే. ఇట్లుచేయుటయేకాక స్వభాషాగ్రంథములమొగమైనఁ జూడక చదువుటకుఁగూడ విదేశభాషాగ్రంథముల విరివిగ నుపయోగించుటచేఁ దమభాషలో ధారాళముగ మాటలాడుటకుఁ జేతకానండి నలుగురిలో మాటలాడవలసిన నైచ్యానుసంధానముకూడ నానవిడిచి చేయవలసినట్లు. దీనికిఁబోడగ విదేశజేషధారణము, విజాతీయసంప్రదాయము వచ్చినచో వీరిక్రింది విద్యార్థుల కలగుననవి వింతవేషములు, విచిత్రభాషలు, వింతపోకడలుతప్ప మఱేమి? కాన బోధకులు ఆత్యంతాశక్తిగమైనపుడు తప్ప మిగిలినసంపర్కముల మాతృభాష నెక్కువగ వాడుచు భాషావిషయమునఁగూడ జాతీయతను నిలువఁజెల్పవలయు. 'సంఘే కక్షిః కలౌ యుగే' అన్నరీతిగ బోధకసంఘము లీయంశమున శ్రద్ధబూనవలయు.

జాతీయసంప్రదాయములు బోధకులకు జక్కఁగాఁ దెలియవలయు. తెలిసికొనుటయేకాక వాని ననుసరింపవలయు. సర్వధారి సంవత్సరమున్న చరిత్రచూచువారును, మాఘమాసమున్న మనికిరాక మార్చి నెలయాయను బోధకులును ఎందఱులేరు. 'గాంజెన్, అనువఱకు గంగయను పదము తలఁపుతురాని వీరికి 'శతద్రు' నదియే సట్లబ్ద అన్నచో నాశ్చర్యము జనింపదా! నైదువై కాదిగనాడుకూడ విందులుకుడుచువారి వివేకము నేమనవలయు? బంధుమిత్రులలో నెవరి కెరితి లేఖలవ్రాయవలయునో యనుటకూడ దెలియనివారెందఱు లేరు? మహామూలఁ గాంచినపుడు మనఃపూర్వక నమస్కృతు లర్పించురీతిమాత్ర మెందఱికిఁ దెలియును? బోధకులనఁబడు కొందఱు స్వభాషాగ్రంథములఁ జదువుసంప్రదాయముకూడఁ దెలియక సామాన్యుడగు పల్లెటూరిపంతులు చక్కఁగాఁ జదువుచుండ వినినపుడు పురపురఁ బొక్కవలసినదేకదా! పర్వములనాఁ

దాకంతపరిపూర్తిగ భజించుటతప్ప నవి యేల యాచరింపఁబడుచున్నవో యని తెలిసినవారెందఱు? తెలిసికొనఁ దలంచైన వీరికిఁ గలదా? జాతీయసంప్రదాయములఁ జక్కఁగ నెఱుంగమిచే దదవలంబగులఁ జూచి తటాలున నవ్వుటయేకాక తలఁచుమాటిన వేళాకోళము చేయు సర్వజ్ఞమృత్యులఁ జూచి విష్ణులు పరితపింపవలసినదేకదా! చెప్పఁబూన నిట్టి చెన్నియో యున్నది. ఆచర్యప్రాయులగు నయ్యవారలే యిట్లుండ సంప్రదాయముగ వారి ననుసరించు నష్టాలగు విద్యార్థి లంతకంటె నొకయంజ యధికముగా నైతుడు. కాన బోధకులు స్వజాతీయసంప్రదాయ విషయమై పూర్ణశ్రద్ధగైకొనవలయు. ఇంతియకాక అనాలోచితముగ నిట్టివానిని నిరసించుటలో నహనుపామికను జూపుట గూడ మానవలయును.

వ్యాయమక్రీడలపైఁగూడ బోధకులు పరిపూర్ణశ్రద్ధను గైకొనవలయు. ప్రస్తుత పాఠశాలల కనుబంగములుగ బ్యాడ్ మింటన్, హాకీ, క్రికెట్ మున్నగుక్రీడావిశేషముల నేర్పించియున్నారగుదా! నేటివిద్యాప్రణాళిక ప్రకార మిది నిర్బంధముగ నావలసిన నియమములు లేకున్నను బాలకాలమునుండి యలవాటువడుటచే నీయాటలు పాఠశాలలోఁదిప్పక యేర్పఱుపవలెననునభిప్రాయము సర్వసామాన్యముగ వ్యాపించినది. ఒకొక్కపాఠశాలయు నీక్రీడాపరీకరములకై యేఁటేట నెంతవైకము చెచ్చుమొనర్చుచున్నదో చూచినఁ బరితాపము జనించును. విద్యార్థులుగూడ విలువ యెక్కువగల యాపరీకరముల విశేషముగఁ గైకొందురు. బోధకసంఘము లీయనర్థమును గుర్తించి యుపాధ్యక్షములఁ బ్రత్యేకనామములతోఁ జేర్చొనఁబడు జాతీయ వ్యాయమక్రీడల నేలయేర్పఱుపరాదు? హాకీ, క్రికెట్ మున్నగు వానికంటె జాతీయక్రీడ లేక్కువయపాయకరములు కావుగదా? మీఁదుమిక్కిలి విజాతీయక్రీడావస్తువులపై చెచ్చించువిశేషధనవ్యయముకూడఁ దగిలినపు. విద్యాశాలలలో విధిగ నేర్పఱుపవలయు ననుకొన్నను వానిలో నేమాత్రము సంబంధములేని క్రీడాసంఘములలోఁగూడ వీనినే యేల యేర్పఱుపవలయు? ఇట్టిసంఘము లీకాలమున నెన్ని యేర్పడుచున్నవో చూడుడు. మొత్తముపై నివి యన్నియుఁగూడ విజాతీయక్రీడలఁ బ్రోత్సహించునవియే. విద్యాశాలలలోని విజాతీయక్రీడలఁ జూచియు, విద్యాబోధకులకుఁ గూడ వీనియందుఁ గొంతకుఁగొంత సంబంధ ముండుటచేతను బ్రత్యేకసంఘములుకూడ పరంపరగ నీక్రీడల నేర్పఱుచుచున్నవి. బోధకులు కొందఱు జాతీయభాషావేషములయావశ్యకతలు గ్రహించి యున్నారు. కాని యీయంశముమాత్ర మింతవఱకు నెవరికి నెదవాటలేదనుట సాహసము కాదు కారణ మేమనఁ గతానుగతి కత్యమే! జాతీయవాదులగు బోధకులస్థితియే యట్లుండఁ దదితరులఁ గూర్చి తడవనేల?

వ్యాయమసభాసకూచేకాదికముల విమర్శితము. ఉపన్యాసములలోఁ జన లేకపోయినను ఉన్నతీతములు తప్పవు. అచార

ప్రకార మానూనొట్ట నధ్యక్షమహాశయు నరయక తప్పదు. ఎంత పెద్దయుద్యోగ యధ్యక్షుడుగ దొరికిన నంత మేలు. అన్నియు సమమాడిన అధ్యక్షునాధిక్యమును జెప్పుట యరగంబు అతనినైచ్యాను సంధానమునంతయు. కల్పవృక్షరీతిగఁ గార్యవర్తి కార్యవృత్తాంత నివేదికను జనువు టాకగంట. ఇంతలోనే శ్రోతల కింతింతయనరాని విసుగు జనించును. కానఁ జర్చనీయాంశము చకచక చెప్పక తప్పదు. ఉపన్యాసకుఁడు తన్మయఁడై యుబుసుపాక మాట లుజ్జించి ఉపన్యసించిన నొక్కొక్కరే యూహని బాడుచును. ఆద్యంతము నధ్యక్షులయభినందనములు కార్యక్రమ ములో నతిమృదుములు. కానఁ బ్రధానాంశము లుపన్యసించుటకు మిగులుకాలము మిగులఁ గొంచెము. వక్తలీ కొంచెపుకాలములోనే శ్రోతల కంతత వైకుంఠము చూపింపవలయును. ఇట్లుంటచే ఏయుపన్యాసకునికేమి మెట్టిది? ఎంతసే పరఁడు వింతమాటలఁజెప్పెను? ఎవని రూపరేఖా విలాసములు హెచ్చు? ఎవఁడు గవగవఁ జెప్పెను? అనుప్రశ్నములే యచటిశ్రోతలకుఁ గలుగుననిగదా! ఎవరోయపరిచి తులు, నెక్కువవిద్యావంతులును చ్చినపుడు, అట్టివారినంపటి కెలు కపటుపవలసినదేకాని ఎప్పుడును ఇనాముపట్టావలె అధ్యక్షుడవయు నధిష్ఠించువారికి ఇగుగుపొగుగువారికి నవవసరాభినందనము లేల? విషయము విశిష్టమైనపు డుపన్యాసకులు వేళ్లకై గడియారములఁ జూడ

నేల? ఒకగంటకాలములో నుపన్యాసము లున్నవన్నియు ముగింప వలెననుటకంటె నొత్తపైనదొక్కటి చాలదా? చేతికినయవకాశము చెడిపోవుననుట కన్నియు నభిలభారతసభలు కావుకదా? కాన బోధకు లీ యవసరాడంబరముల నుజ్జించి సభాకాలము సద్వినియోగపఱు నట్లు విద్యార్థులకు చెల్లడిచేయవలెను.

ఎవ నూత్న పద్ధతుల సన్నిటి నుజ్జరింపవలెనా? బాతీయత యనుపేర వివాదీయములైన యుత్తిమపద్ధతులను విడువవలయునా? నేలముచెట్టతో వివాదీయపద్ధతుల ననుసరించు వివేకన శక్తిలేని విద్యార్థుల వివేకులఁ లేదు వీలగునా యనుప్రశ్నయు లీలఁ గల్గవచ్చును. బాతీయములైనను, వివాదీయములైనను చక్కనిపద్ధతు లనుసరింపఁ దగినవే. కాని యాపద్ధతులు తమప్రత్యేకస్వమునకుఁ గురునట్లు సరి పుచ్చుకొనవలయుఁగాని యనర్థకరములగునన్ని పద్ధతులను శు, చ, లు తప్పక యనుసరింపఁగూడదనియే యాన్యాసరచనోద్దేశము. ఉన్న వి కొన్నియు, లేనివికొన్నియుఁ జెప్పుచు నుచ్చృంశులవృత్తినున్న బోధ కులే విద్యార్థిపతనమున కుత్తరవాదు లనక తప్పదు. ఇట్టివీరినిజూచి విద్యార్థులును, వీరిఁగాంచి చెట్టిలోకమును చెడిపోవుచున్నది. కాన బోధకులు దమయనితకమువలన బాతీయత కట్టిభంగము గలుగు చున్నదో గుర్తించి సంఘశక్తి నుపయోగించి స్వబాహుధ్యధరణ మునకుఁ గడంగునుగుగాక!

బకడు

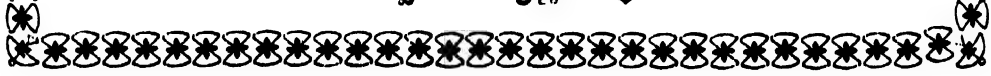
దయిర జీవితమ్ము నాశించినాడు
ముసలిగొంతుల హుంకరింపులకు దలకి
దిగులుఁడైనాడు నవనవేంద్రీవరార్ద్ర
హృదయసుకుమారసేత్రాల కొదిగినాడు.
దద్దరిల్లును కులఁకర్వతాలు కెరలి
ఘూర్ణమైపోవు సప్త మహార్ణవములు
విరుచుకొనిఁడడ్డ జీవనవిషమభరము
జాలిగా ఆమెకన్నుల వ్రాలినంత.
గ్రుడ్ల నెత్తుటి పొంగు క్రుక్కుకొనినాడు
సానుభూతిని హృదయమ్ము చాచినాడు
గుసగుసలువోయినారు ముక్కోటిజనులు
తొలగిపోలేదు; హృదయ మందుకొనలేదు.
బుసలుగొట్టుచు చంద్రికావినరమందు
ఁకర్వకొని రేకురేకు నాశీర్వవమ్ము

ఉభయభాషాప్రవీణ, ఇంద్రకంటి హనుమచ్ఛాస్త్రి

క్రక్కినది యెరుగ దామె హాస్యమున నవ్వు
మల్లెపూదండ యగునె ఈతెల్లత్రాచు?
ఏటిగాలికి పొంగిన పాటతీపి
కరచుకొన్నది యామె రక్తంపు తెదను
పచ్చివెన్నెల కన్నుల పడున మరసి
పాటలకు నోచుకోని నిర్భాగ్యగళము.
ఒకరి చూచిన నొకరు నవ్వుకొనినారు
ఎదతెరచి యాతిధేయ మందిచ్చె నతడు
పేదకన్నుల సుధవోసి శిలిచె నామె
పిడుగుఁడైనది : ఇరువురు వడకినారు.
ఁగులదన్నుము వజ్రకవాటములను
ఆపులించి గూండ్రించు సింహాల నదిమి
బాబ్బలెత్తింపు! కృతసతాస్ఫోటనమున
యువక, సీన్సిగ్ధహృదయమ్ము ఉడికెనేని.

ప్రాచీనకాలమందలి వ్యవసాయము

దువ్వూరి బాలకృష్ణమూర్తి



మనదేశములో పూర్వకాలమునందు వ్యవసాయ మెట్లుండెడిదో గ్రహించుటకు ప్రత్యేకాధారములు ఏమియు లేకపోవుటచేత శ్రుతిస్మృతులలోను, పురాణేతిహాసములలోను, తరువాత శాస్త్రకావ్యప్రబంధాదులలోను సందర్భానుసారముగ నుదాహరించబడిన చెదురుముక్కలనుబట్టి ఊహించవలసినదేకాని, యిదమిశ్రమని నిశ్చయముగా నొక్కిచెప్పట కేఆధారగ్రంథములును లేవు. ప్రత్యేకముగా వ్యవసాయశాస్త్ర మొకటి యుండియుండినను మన కింతవరకు నెచ్చటను లభ్యముగాలేదు. వృక్షాయుర్వేదము, సస్యానందాది ఖండగ్రంథము లుండినను వాటివలన పూర్వకాలమునందు మనదేశమునందలి వ్యవసాయ మిట్లుండెనని చెప్పటకు వీలుకలుగకున్నది. కాని, యితరదేశములలో వ్యవసాయాభివృద్ధిమార్గములు తలయెత్తకమునుపే, యీ దేశమందలి వ్యవసాయపద్ధతులు మంచిమార్గముల ననుసరించియుండెనని దృఢముగా చెప్పటకు కౌటిల్యుని అర్థశాస్త్రమే ప్రమాణము.

ఈగ్రంథరాజమును విష్ణుగుప్తుడు, చాణక్యుడు అను నామాంతరములు గల కౌటిల్యు డను మహారాజకీయవేత్త క్రీస్తుశకమునకు పూర్వము నాగవశతాబ్దములో రచించియుండె నని చరిత్రకారులు నిర్ధారణ చేసియున్నారు. శ్రీరామచంద్రమూర్తి రావణసంహారము జేసి విభీషణునికి పట్టము గట్టినరీతి నీ మహామహుడు సందవంశము నున్మూలనముచేసి చంద్రగుప్తునికి రాజ్యము నిచ్చినవాడని విష్ణుపురాణాదిగ్రంథము లుద్ఘోషించు

చున్నవి. ఈ అమూల్యగ్రంథము సత్ప్రయోనవైన సంపాదించి ఆంగ్ల భాషాంతరీకరణముతో ప్రచురించిన మైసూరు సంస్థానాధీశుల ప్రాచ్యగ్రంథ భండాగారాధ్యక్షు లగు శ్రీయుత ఆర్. శ్యామశాస్త్రిగా రెంతయు అభివందనీయులు. వారి భాషాంతరీకరణసహాయము లేనిదే మాతృకను సరిగా అర్థముచేసుకొనుట బహు కష్టము. ఇందు రాజసీతి తంత్రమంతయు నూటయూభై అధ్యాయములుగా విభజింపబడి, యితర ధర్మశాస్త్రములరీతినే సూత్రములుగా గద్యపద్యాశ్మకముగా రచింపబడినది. అందు వ్యావసాయకవిషయములను బది పండ్రెండు అధ్యాయములలో సూక్ష్మముగా వివరించెరి. వాటిలో “సీతాధ్యక్షః” వ్యవసాయాధ్యక్షుని విధులను నిరూపించిన అధ్యాయములో నేద్యపుసంగతులెన్నో కలవు. అందు ముఖ్యసూత్రము లీక్రింద నుదాహరించబడినవి:

“సీతాధ్యక్షః కృషితంత్రగుల్మవృక్షాయుర్వేదజ్ఞస్తజ్ఞసఖోవా సర్వధాన్యపుష్పఫలశాక కందమూలపాల్లీ కృతౌమకార్పాన బీజాని యథాకాలం గృణయాత్.”

(వ్యవసాయాధికారి (సీతాధ్యక్షుడు) తరు గుల్మల తాదులను పెంచుటలో తగినవ్యవసాయజ్ఞానము కలిగిగాని, అట్టిశాస్త్రజ్ఞానము గలవారి సహాయమునుపొందిగాని ధాన్యపుష్పఫలశాక కందమూలాదుల విత్తనములను యుక్తకాలములో భద్రముచేయవలెను.)

“బహువాలపరికృష్టాయాం స్వభూమా దానకర్మకరదండప్రతికర్తృభి ర్వాపయేత్.”

(శృష్టికరముగా బహుపర్యాయములు దున్న బడిన రాజన్యభూములయందు నౌఖర్లచేతనున్న, కూలీలచేతనున్న ఖైదీలచేతనున్న విత్తనములను చల్లించవలెను.)

“కర్షణయన్తోఽకరణబలీవర్తైశ్చైషా మనంగం కారయేత్.”

(వ్యవసాయపుడనిముట్లు, పశువులు తక్కువగుటచే పైవాళ్లచే చేయించివలసినదని చెడిపోనట్లుగా నుండవలెను.)

“కారుభిశ్చ కర్మారకుభ్యః కేదకరజ్జ వర్తక సర్వగ్రాహాదిభిశ్చ.”

(కమ్మర్లు, వడ్రంగులు, తోలలు కోయువారు, త్రాళ్లువేయువారు, పాములనుకట్టువారు, మొదలగువారి సహాయమును సంపాదించుటలో ఆలస్యముచేయరాదు.)

“తేషాం కర్మఫలవినిపాతే తత్ఫలహానం దండః.”

(పైవాళ్లవలన గలిగేనష్టమునకు తగినంత అపరాధమును విధించవలెను.)

“షోడశద్రోణం జాంగలానాం వర్షప్రమాణ మధ్యర్థ మనూపానాం దేశవాపానా మర్థత్రయోద శాశ్వకానాం త్రయోవింశతి రవస్తీనా మమిత మపరాంతానాం ఘైమన్యానాంచ కుల్యావాపానాంచ కాలతః.”

(ఎడారిప్రదేశములలో కురియువాన ౧౭ ద్రోణములుండును. తేమగలదోట్ల ఇంకొక అర్థభాగ మెచ్చుగా నుండును. వ్యవసాయయోగ్యమైన ప్రదేశములలో మహారాష్ట్రములో ౧౩౪ ద్రోణములు, ౨౩ ద్రోణము లవంతిలోను, పశ్చిమ ప్రదేశములో అమితవర్షమును హిమాలయ ప్రాంతము మొదలగు వ్యవసాయమున కుపయోగపడు నీటికాలువలుగల ప్రదేశములలో అమితవర్షము కురియును.)

“వర్షాత్రిభాగః పూర్వపశ్చిమమానయోః

ద్వాత్రిభాగా మధ్యమయోఃసుషమా రూపం.”

(కురియువర్షములో మూడోవంశ సస్యారంభాంత్యమాసములయందును మిగిలిన రెండువంతులు

మధ్యకాలమున కురిసినయెడల సస్యానుకూలవర్షమని చెప్పవచ్చును.

“తస్యోపలభి ర్బృహస్పతే స్థానగమన గర్భాధానేభ్యః శుక్రోదయాస్తమయచారేభ్యః సూర్యస్య ప్రకృతివైకృతాచ్చ—”

(బృహస్పతి స్థితిగమన గర్భాధానాదులను బట్టియు, శుక్రోదయాస్తమయ చలనాదులను బట్టియు, సూర్యుని ప్రకృతివికృతులబట్టియు వర్షపాతమును సూచించవచ్చును.)

“సూర్యాబ్జసిద్ధిః, బృహస్పతే స్సస్యానాం సమృథాంతా, శుక్రా ద్వృష్టి రితి.

(సూర్యునివలనబీజోత్పత్తిని, బృహస్పతివలనసస్య వృద్ధిని, శుక్రునివలన వర్షపాతమును కనిపెట్టవచ్చును.)

“త్రయస్సప్తాహికా మేఘా అశీతిః కణశీకరాః;

షష్టిరాతపమేఘానాం ఏషావృష్టి స్సమాహితా,

వాతమాతపయోగంచ విభజ న్యత్ర వర్షతి,

త్రీకర్షకాంశ్చజనయా తత్ర సస్యాగమో ధ్రువః.”

(ఏడురోజులువిడవకవర్షించు మేఘములు మూడు, తుంపరలుమాత్రముపడుమేఘములుయెనభయి, ఎండతో కలిసివర్షించు మేఘములు అరవయి. ఇదే వర్షపాతము.)

గాలి యెండ లేకుండ మూడుదక్కులు దున్నుట కనుకూలమగునట్లు వర్షించినయెడల మంచిపంటలు పండుట నిశ్చయము.

“తతః ప్రభూతోదక మల్పదకంవా సస్యం వాపయేత్—”

కనుక వర్షపాతముయొక్క హెచ్చుతగ్గుల ననుసరించి ఎక్కువనీరు తక్కువనీరు కావలసినపైర్లవిత్తనములను చల్లించవలెను.

“శాలి వ్రీహి కోద్రవ తిల ప్రియంగు చారక వరకాః పూర్వవాపాః—”

(వరిరకములు, ఆరికలు, నువ్వులు, సజ్జలు, పిల్లిపై సర మొదలగు పూర్వసస్యములను వర్షారంభమున చల్లవలెను.)

“ముద్గమూషతైభ్యః మధ్యభాషాః—”

(పెసలు మినుములు మొదలగునవి మధ్యకాలమున బిల్లనలెను.)

“కుసుమ్మమసూర కుభుత్తః యవగోధూమ కలా యాతసీ సర్వపాః శ్వాద్వాపాః—”

(కుసుమలు, మసూరీలు, ఉలవలు, యవలు, గోధూమలు, శ్వాద్వమినుములు, నీమలవిసి, ఆవాలు వర్షాకాలాంతమున చల్లవలసిన సస్యములు.)

“యథర్హవశేనవా బీజావాపాః—”

(లేక, ఋతువులమాన్యునుబట్టి విత్తుచుండవలెను.)

“కూలీనిః చాలక చల్లకుండా మిగిలినభూమిని సంగముపాలికి పండించుకునేవాళ్ళ కీయవలెను.)

“స్వప్రీతిః జీవినోవా చతుర్థ పంచభాగికాః య క్షేప్త మన పసికభాగం దన్య రన్యత్ర కృచ్ఛేభ్యః స్వసేతుభ్యః.”

(స్వయముగా కష్టపడి పనిచేయవారలకు పండిన పంటలో నాలుగవ సంఘకో, అయిదవ వంతుకో విడిచి పెట్టవలయును. న్యవసాయముచేయుటకు కష్టతరమైన స్యంతభూములు మినహా మిగిలినవాటిని పండించువారికి భారము లేకుండా వాళ్ళిచ్చునంతకు కేయియ్యవలెను.)

“హస్తప్రావర్తిమముదకభాగం పంచమందద్యః.”
(చేతులతో నీళ్లుతోడుకుని సాగుచేయువారు నీటిపన్నుక్రింద పంటలో అయిదోభాగ మీయవలెను.)

“స్కంధప్రావర్తిమం చతుర్థం.”
(బుజాలమీద నీళ్లుమోసి పండించువారు పంటలో నాలుగోభాగ మీయవలెను.)

“స్తోతో యస్త్రప్రావర్తిమంచ తృతీయం.”
(నీళ్లుతోడు యంత్రములతో పండించువారు మూడోవంతు.)

“చతుర్థం నదీసర స్త్రాకకూపోద్భూటం—”
(నదులు, సరస్సులు, చెరువులు, బావులలోనుండి నీరుతోడి పండించువారు పంటలో నాల్గవవంతు నీటి పంట యీయవలెను.)

“కర్మోదక ప్రమాణేన కేదారం మైమనం
దైష్ఠికంవా సన్యం స్థానయేత్—”

(లభ్యమగు కూలీలనుబట్టిని, నీటివసతికి తగినట్లుగా వ్యవసాయాధ్యక్షుడు మాగాణిపైర్లుగాని, శీతకట్టుపైర్లుగాని, వేసవిపంటలనుగాని పెట్టించవలెను.)

“శాల్యాదిశ్రేష్ఠమ్—”

(వరిపైరు ఉత్తమము)

“పండి మధ్యమః—”

(కాయగురలు మధ్యమము.)

“ఇత్యుః ప్రత్యవరః ఇక్షివోహి బహ్వబాధా
న్యయగ్రాహిణశ్చ.”

(చెరకు కనీసము. చెరుకుకు న్యయప్రయాన లెక్కువ.)

ఇంకను నేలలస్వభావములను ఉత్పత్తినిబట్టి వాట్లలో వేయతగినపైర్లు వివరించబడినవి. విత్తనములు భద్రముగా నుంచుటకు తగుయోర్వాట్లు చెప్పబడినవి.

విత్తనములను చల్లునప్పుడు చేయవలసినవిధులును, ఈక్రిందిమంత్రమును చెప్పబడినవి.

“ప్రజాపతయే కాశ్యపాయ దేవాయచనమః
సదా, సీతా మే ఋధ్యతాం దేవీ బీజేషుచ ధనేషుచ.”
పనివాళ్ళకీయవలసినజీతములుభత్యములువివరించబడినవి.

దేవబ్రాహ్మణవినియోగము చేయవలసిన సంగతులును పరిగయేరుకొనుట ధర్మములు చెప్పబడినవి. చేలను కోసి కుప్పలువేసి కల్లములలో గమనించవలసినవిధానములుపేర్కొనబడినవి.

కొలతలు, తూనికలు, దేశకాలములను విభజించు మార్గము లెన్నో చెప్పబడినవి.

ప్రభువులకొట్లమీద అధికారులవిధులను చెప్పటలో వ్యవసాయమునకు సంబంధించినసంగతులు విశేషముగా వివరించబడినవి.

ఇట్టి విశేషాంశములు గలిగిన గ్రంథరాజమును తగినవారు ఆంధ్రీకరణము నొనర్చి ఆంధ్రదేశమున కుపకారము చేయుటకు ప్రార్థించుచున్నాను.

చండభాస్కరభరతర సంచయంబు

అగ్నికీలము గురియించి నట్లు దోచు
నర్వజీవితకోటులు సంచలింప,
అబ్జజాండము తహతహ లాడజొచ్చె!

సరసు లింకెను సెలయేళ్లు తఱిగిపోయె
లలితశృంగారవనవృక్షరాజి బడలె
పాంథజనకోటి మృగతృష్ణపాలం బడియె
నోలి గ్రీష్మర్తుష్ణ దినాలవేళ.

ప్రీతిఁ గార్తాంతికులు గ్రహవీక్షణముల
గతులఁ దిలకింప; ఛాందసగణములెల్ల
సంచితగతి సహస్రఘటాభిషేక
మీశునకుఁ జేసి పూజించి రెల్లవిధుల.

ఆకసంబునఁ గనుపించె నంత చిన్ని
జలదఖండాలు నీలపుం జాలువోలె
స్మరహరుని దిక్కునం దోచె మెఱుంగుదీగ
వానకురిసెను గడుపువ్వసోనవోలె!

భూజనంబులు సద్భక్తిఁ బూజనేయ
నమలసంతోషరసపూరితాత్ము లగుచు,
నమరకోటులు రాల్చు హర్షాశ్రులనఁగ
నాటి వర్షంబు చెన్నొందె నందునందు!

ప్రబలజంఘానిలోద్ధూత బహుళభయద
ఘుమఘుమధ్వానసంకీర్ణ ఘోరనిబిడ
నీలసీరదనంఘాత నిర్గమములు
కానుపించెను మఱునాడు గగనవీధి.

సలిలదంబుల కెదురేగె చాతకంబు
చండకరుఁ జేరె పరివేషమంశుంబు
కుక్కురా రానమును సల్పె కోకిలంబు
జనులు సందియపడ నిద్రగనుపు దోచె!

భూరివారణకరనిభధార తెసఁగ
నాకసము చిల్లివడినట్లు అమితగతిని
నింగి నేలయు నేకమై పొంగిపూరిం
గురిసె నెడలేకవారంబు కుంభవృష్టి!

మిఱ్ఱుఁబల్లంబు జలరాశి మేదినియును
నొక్కతీరునఁ గాన్పించె లెక్కలేక
నురుఁగుకెరటాలతో నొడల్ వినుచుకొనుచు
వచ్చె గౌతమి ప్రజ తన్ను మెచ్చిచూడ.

తీర మొఱయుచుఁ జనుదెంచు తీరు గాంచి
యంచితంబుగ భయభక్తు లతిశయిల్ల
పౌరకాంతలు పుష్పాలఁ బసుపుకుంకు
మముల గౌతమిఁ బూజించి మఱి రంత.

రమ్ము మానోముపంట! రారమ్ము తల్లి!
మాతృగమనాపహారి! సమ్మాన్యచరిత!
లీలఁ జరియింపు గోదావరీసవంతి
యంచునెంజలులై జను లాత్మక బాంగ!

క్షుభితకుటిలతరంగనిర్ఘోషణములు
వాత చలితోరుభూరుహధ్వానములును
ప్రథితమండుక సంకులారావములును
భూనభోంతరములు నిండిపోయె నంత!

సందె - నిక కనుచీకటిసమయమందు
సగము మునిగిన లంకల చక్కెర బెక్కు
తాళవృక్షాలు కనుపించె దవ్వదవులఁ
దలలు విరబోసికొన్న భూతాలఁగిది.

చలితనిర్భరిణీవీచికలను దేలి
లీల నూగుచు చిన్నియుల్లాలఁబోలి
దరికిఁ జనుదేరయత్నించు తరణి యొకటి
గాతమిని దోచె దూరానఁ గన్నుఁగవకు.

ప్రళయకాలమహాధ్వంతఃపటలసదృశ
తిమిరసంఘాత మెల్లెడ దీటుకొనఁగ
సర్విశూన్యంబుగాఁ దోచె జగతిఁగన్ను
దెఱచినను మూసినను నొక్కకరణి నంత !

జగతినంతయు మెఱయించి సంభ్రమించి,
మబ్బుతునుకలలో మటుమాయమయ్యె
విమలవిద్యుల్ల తాకాంతి వీక్షణంబు -
ఁనుల మిఱుమిట్లు గొలుపుచు క్షణములోన!

అసలె వర్షంబు దానిపై నంధకార -
మశనిపాతంబు - నామీఁద అనిలఘాత
మట్టిసమయాన ధైర్యం బదెట్టు నిలచు
మఱచితిని నావమాట, యమ్మెఱపు మాట !

కాంచుచుండఁగ విడియె మేఘాల గుంపు
తభుకుమంచును దారకానభులు దోచె
పిదప చంద్రోదయం బయ్యెఁ బిండియార
బోసిన విధాన వెన్నెల పాలుపుమీఱ !

హిమకరుడు నాదుమేను దహింపసాగె
క్రమ్ముకొనె రోమకూపాల ఘర్మజలము
మండె కన్గవ యది నేమి మాయయె నట
నప్రయత్నాన “ వెన్నెల ” యంటి నేను !

జాముపొద్దెక్కె వెన్నెల నేమి? ఎలని
రింతలా యంచు నానతి సుంత నవ్వె -
సూర్యకిరణాలు మేనెల్లఁ జుట్టుకొనఁగ
కన్నువిచ్చితి విభ్రాంతిఁ గలయటంచు !



నంది

—(గొత్తపల్లి సుబ్రహ్మణ్యము, కాకినాడ.

ది యునైటెడ్ ఇండియా లైఫ్ ఆస్యూరెన్సు కంపెనీ, లిమిటెడ్.

చారిత్ర ప్రసిద్ధిగాంచిన చెన్న పురిపట్టణమున

పురాతనముగ స్థాపింపబడిన జీవితభీమా సంస్థ

మంచినమ్మకము జాగ్రత గలిగిన కంపెనీ. కేవలము భారతీయులచే నిర్వహింపబడుచున్నది.

“యునైటెడ్ ఇండియా” యొక్క వర్తమానస్థితి, మితవ్యయముసామర్థ్యము మిళితమైయున్న భారతీయుల నిర్వహణప్రవీణతకు నిదర్శనముగ నున్నది.

యునైటెడ్ ఇండియాలోని పాలసీ నమ్మకమైన వెట్టుబడి

యునైటెడ్ ఇండియా యేజన్సీయనగా, గౌరవప్రదమగు స్వతంత్ర జీవనోపాధియార్జించుచు సాంఘిక సేవ చేయుట యని తాత్పర్యము.

వివరములు హెడ్డాఫీసునుండిగాని, బ్రాంచీలనుండిగాని, లేక దేశములోని చీఫ్ యేజెంట్లు, యేజెంట్లు, యితరప్రతినిధులు మున్నగువారినుండి గాని బడయవచ్చును.

హెడ్ ఆఫీసు:

“యునైటెడ్ ఇండియా

ఆస్యూరెన్సు బిల్డింగ్సు”

శంభ దాసవీధి, పోస్టుబాక్సు నెం. 281

మద్రాసు.

యం. కే. శ్రీనివాసన్,

మేనేజింగు డైరెక్టరు.

గొప్పరకము సబ్బులను ఉచితనమోనాలపరీక్షించి
మీరే తెలిసికొనుడు

కామినియా టాయిలెట్ సబ్బులు

మీరు ముఖ్యముగా కోరెదరు
మనోహరములైన నానావిధ వాసనలతో నిండిన
శ్రేష్ఠమగు సబ్బులు

మకోల్లాసము గలిగించు పరిమళముతో గూడిన గొప్పరకము. "కామినియా
టాయిలెట్ సబ్బులు" మీకు యింపుగా నుండును. "కామినియా టాయిలెట్టు
సబ్బు" శరీరమును శుభ్రపరచి మృదువుగా నుండునట్లు చేయును. ఈక్రింది

"కామినియా టాయిలెట్టు సబ్బులు"లలో నేదీయైనను నిత్యస్నానమునకు వాడినచో శరీరము మృదువుగానుండి హాయిగానుండును.

"కామినియా వైట్ రోజ్ సోప్" గొప్పరకము సబ్బు, గులాబివాసనలను బెదజల్లు చుండును.

"డిల్ బహార్ సోప్" "ఆల్ డిల్ బహార్" పరిమళము గలది. దానివాసన చిరకాలము నిలచును.

"కామినియా శాండల్ సోప్" శుద్ధ చందన పరిమళముతో ఘనమయించు చక్కని సబ్బు. మిక్కిలి యింపు
గాను, మనోజ్ఞముగాను నుండును. ఒక్కొక్కరకము 8 బిళ్లలుగల పెట్టె. రు. 1-0-0. పోస్టేజి వేరు. పైరకము సబ్బులలో
యొకదాని ఉచిత నమోనాకై 0-0-8 పోస్టలింగ్ పంపును.

సోల్ యేజంట్లు:— డి ఆంగ్లో యిండియన్ డ్రగ్ అండ్ కెమికల్ కంపెనీ,

285, జిమ్మా మశీదు, బొంబాయి. 2.



BADSHAHI SOAP



ప్రపంచఖ్యాతిగలది

బాద్ షాహి సబ్బు

సువాసనతో కూడినది. నిల్లవుడు నువయోగింపుడు

నవీన రోమనా శని

పెంట్లుకలను రాల్చివేయు రకములలో నీసబ్బు ఒక్కటియే మిక్కిలి శ్రేష్ఠమైనది

నిరుపయోగమైన నమూనాలను జూచి మోసపోకుడు

నాజాకైన టిన్ను పెట్టెలలోగల 8 బిళ్లల పెట్టె రు. 1-0-0 పోస్టేజి ప్రత్యేకము.

ప్రతిచోటను విక్రయింపబడును.

Madras Agent:-

J. M. SHETH,

26, China Bazar.

C. C. MAHAJAN & CO BOMBAY 2



1. అఖిల భారత మహిళా మహాసభ సమావేశము, చెన్నైలో. అధ్యక్షురాలు: కృష్ణమాచార్యసతిగారు.
(26) 2. తేదీ విల్లింగ్డను నైడ్య పాఠశాల (ఎగ్జూరు) వార్షికోత్సవము.



1. లండనున మహాత్మున కాలిఫర్నియాలో షిర్ జురియట్ లిస్టరుగారు మదరాసు స్వదేశీ ఎంపూరియమును దర్శించుట.
2. మదరాసు చీనాబాగులలో డి. పి. రామ్ అంను కో., కౌన్సిలర్ గారము ప్రారంభోత్సవము.

జపాను-జాతీయాభివృద్ధి

ప్రతివాదిభయంకర పార్థసారథి వి. ఎ., వి. కామ్., ఎల్. ఎల్. వి.,

జపాను ఎక్కడనున్నదియు నాగరికప్రపంచమున జెబ్బది సరిక
తగ్గరములకుపూర్వ మెవరికిని తెలియదు. ఏకాదశమంధికా
జపాను పసిఫిక్ సముద్రమున నున్న యొకచిన్న ద్వీపమనిమాత్రము
తెలిసియుండిన నుండవచ్చు. అంతమాత్రమే. అట్లంతవరకును నామ
రూపములు లేని జపాను, నేకు, ప్రపంచమందలి ముఖ్యరాజ్యములలో
నెల్లరచేతను గణన చేయబడుచున్న గొప్పపదవిని పొందియున్నది.
నేకు జపా నేమిచెప్పినను, ఏమిచేసినను ప్రపంచమంతయు నాకుర
తతో జెవులొగ్గి విని గమనించుచున్నారు. మొన్న మొన్నటివరకు
నానాజాతిసమితిలో జపాను చాలాముఖ్యమనపదవి నధిష్ఠించియుండి
నది. నేటికి, నానారాజ్యసమితి (League of Nations) నిగూఢ
ధిక్కరించి, మొత్తముమీద ప్రాకృతిమరాజ్యములెల్ల ద న్నెదుర్కొ
నినను లక్ష్మిపెట్టక, తననిశ్చితమును సాగించుకొనుటకు వలయు శక్తి
సామర్థ్యములను సంపాదించినది. ఇట్టిమహద్భూతమున జపానుభివృద్ధి
ప్రపంచ చరిత్రయందు కాకృతస్థానమును బొంది, దేశ మెంతక్లిష్ట పరిస్థి
తులలో నుండినను, దుస్సాధ్యములను నాటంకము లేనివియుండినను,
నేటిలోటుపాటుండునను, నేడేకమైనను, వినుగువిరామములేని పట్టు
దల, స్వార్థహీనమైన దేశభక్తివలన దేశము నెంతటిమహోన్నతపదవికి,
యెంత స్వల్పకాలములో లేగలవో ప్రత్యక్షనిదర్శనముగ నుండగలదు.
అందునువిశేషించిగూడ-వ సంవత్సరమునకుపూర్వము, నేకుహిందూ
దేశ మెట్టిస్థితియందున్నదో, అంతకన్న నీచస్థితియందుండియు, స్వశక్తి
చే నిట్టిమహోన్నతిని బొందగలిగినదన్నచో, తననవకాశములు గలిగి
నచో, దేశాభిమానము తమరక్తనాళములయందు ప్రవహించు
చున్నచో జపానుదేశము నాదర్శముగ గొని, ప్రతిభారతీయుడును
తనదేశాభివృద్ధికై ప్రాణములనైన ధారవోయుటకు వెనుకంజవేయదు.

నేటి జపానురాజ్యము విస్తీర్ణము గుమారు ౩,౬౦,౩౦౦ చదు
రపుమైళ్లు. నేటి జపానురాజ్యమున హోన్షు (Honshu), షికోకు
(Shikoku), క్యూషు (Kyushu), హోక్కైడో (Hokkaido),
కురీల్ (Kuriles), లూచూ (Luchu), షాగలియన్ (Shagalien),
కొరియా (Korea), ఫార్మోసా (Formosa) ఇంకను ననేకచిన్న
ద్వీపములు మాడియున్నవి. ఈరాజ్యపు జనసంఖ్య ౩౯,౨౦-వ సంవ
త్సరపు జనాభా లెక్కలప్రకారము గుమారు, ౩,౩౦,౦౫,౫౦౦.

దేశమంతయు పర్వతపంక్తులతోడను, నన్ని పర్వతములతోడను నిండి
యున్నది. చిన్న చిన్న ద్వీపము లగుటవలన, నదులు చాల చిన్నవియు,
వడిగా ప్రవహించునవియు నగుటచే నాకాయానమున కుపయుక్తము
కాదు. కాని వ్యవసాయమునకును, విద్యుచ్ఛక్తి సుత్పత్తి యొనర్చుట
కును నవసరముగనీటిని వర్షాధిక్యముచే నీనదులు నిరాటంకముగ సరుదు
బాటు చేయుచున్నవి. చిన్న సరస్సులును, చెరువులును దేశరామ
ణీయకతకు తోడ్పడుచున్నవి. పర్వతములుగలచే, వికాలముగ సమ
ప్రదేశములు లేకున్నను, కొండలోయలు, ఇతరములగు చిన్న మైదా
నములు మిక్కిలి సారవంతములైనవి. అందు పెద్దపదు లగు టోకా
(Tons), అరకావా (Arakawa) నదులచే తడుపబడి టోకియో
(Tokio), యోకోహామా (Yokohama) మొదలగు ముఖ్యపట్టణము
లకు నిలయమై, కోటిజేవులకు పైగా ఆక్రమస్థాన మగు క్ర్యాంటో
మైదానము ముఖ్యమైనది. జపానురాజ్యము మొత్తముమీద అధిక
ముగా ద్వీపములయొక్కయు, ద్వీపకల్పములయొక్కయు సముదాయ
ముగలచే విస్తారమైన సముద్రతీరమును, అత్యధికముగ హార్బరులును,
నాకాశ్రయములును కలవు. జపాను శీతోష్ణపరిస్థితుల ముఖ్యస్వరూ
పము సకాలవర్షము (Monsoons). వేసవియందును, వర్షాకాలమందు
ను వర్షములు మిక్కిలముగ నుండును. శీతకాలమందు తీవ్రమగుగాలి
యత్యధికముగ వీచుచుండును. తరుచుగా తుపాను గాలివాన ఇబ్బం
దుల గలుగజేయుచుండును. వృక్షజాతులు, జంతువులు, పక్షులు మిక్కిలి
విరివిగా నుండుటయే కాక ప్రపంచమున దితరప్రాంతముల నెచ్చటను
లేని కొత్తరకములగు జాతు లనేకములు గలవు. దేశమంతయు బర్వత
మయమై యుండుటచే దైర్ఘసాహససమన్వితులగు హిమాలయప్రాంత
ఘూర్ణాలవంతిహారి నిలయమాయెను.

జపాన్ దేశము చిరకాలమునుండియు సోగా (Soga)
వంశీయుల పరిపాలనలోనుండి, కాలక్రమమున నధికారమంతయు,
౮-వ శతాబ్దమున 'వోగనెట్ట'ను జమిందారులనాస్థముల
చిక్కి రాజవంశము మాదుమూలన త్రొవ్వెయ్యబడినది. జపాన్ రాచ
రికమంతయు నప్పటినుండియు గూడ-వ సంవత్సరమువరకును
వోగనెట్ట నాస్థములందేయుండెను. ఈవోగ నెట్ట ప్రభుత్వము శకల
విలాసపురుషులతోడను, త్రాగుబోతులతోను, బాచియలతోను నిండి

యుండుటచే, దేశము నానాటికి దౌర్భాగ్యస్థితికి రాదొడగినది. సాంఘికముగ దేశము మిక్కిలిహీనగతికి వచ్చినది. ప్రజలలో తారతమ్యము లభికములై, పరిపాలకజాతివారు, జమీందారులు తమ కన్న తక్కువవారియొడ చాలనీచముగ బ్రవర్తించుచుండిరి. పాశ్చాత్యమతబోధకులు, వర్తకులు, నితరదేశములకువలెనే జపానుకుగూడ రాదొడగిరి. విదేశీయులు సందుదొరకినదిగదాయని, తమ కర్తృధిక లాభకరమగు పద్ధతులపై, శక్తిహీనమైయున్న షోగన్లుప్రభుత్వముతో సంధివరకుల నేగ్గరచుకొని, జపానులో, జపానీయులకన్న నధికమగు సదుపాయముల సంపాదించిరి. అందువలన జపానుప్రజలలో షోగన్లుప్రభుత్వముపై నసహ్యతయు, విదేశీయులపై నీర్వ్యయు నానాటికి వృద్ధికాజొచ్చినవి. దేశముం దెల్లెడ నసంతుష్టి, కలహములు, తిరుగుబాటు, కల్లోలములు అధికముగాజొచ్చెను.

సాంఘికముగా జపాను అనేకకాలము నితరదేశములతో సంపర్కము లేకనూత్రము లేక మూల నొదిగియుండుటచే నభివృద్ధి మార్గము లేదాయెను. భూస్వామిఅధికారపద్ధతి (Fuedalism) ప్రబలి, దేశమంతయు దాదాపు 300 చిన్న స్వతంత్ర సంస్థానములక్రింద విభజింపవడి తత్సంబంధమైన బాధ లభికముగా నుండెను. ఆధికముగా దేశము చాల దిరిద్రస్థితియుం దుండెను. ఆస్తిప్రాణములకు భద్రత లేకుండెను. బలవంతులు, జమీందారులు శక్తిహీనుల నడగద్రోచి వారిప్రాణము, ధనము నపహరించుచుండిరి. దేశప్రజలలో సాంఘిక విభేదము లభికమై సమానత్వము, స్వాతంత్ర్యము నశించిపోయెను. రైతులు భరింపలేకగముకాని ప్రభుత్వపుష్పములచేతను, సర్వాధికార సమన్వితకుల భూస్వాముల లంచములతోడను కీర్చి పిప్పిగా జేయబడిరి. తుదకు కొన్నిచోట్ల ఎవనికి వాడు తనకునచ్చిన వృత్తి నవలంబించుటకుగాని, తన యిచ్చనచ్చినచోప్పున నడచుటకు గాని, స్వాతంత్ర్యము లేకుండెను. జమీందారులు మొదలగు ఉన్నత వంశీయులు (Upper classes) పీఠులలో చెడలనప్పుడు త్రోవగోసున్న ప్రతిసామాన్యజాతీయుడును (Commoner) ముఖము నేల కంటునట్లు నమస్కరింపవలెను; లేకున్న శిక్ష. భూస్వాములును, అధికారులును జరిపెడి యత్యాచారములపై ప్రజలు ప్రభుత్వము నకు విన్నపము చేసుకొను సాధికారము గూడ లేకుండెను. సామాన్య జాతివారు ఆస్తి కొనుట గాని, అమ్ముట గాని పైజాతివారి యనుమతిలేక చేయరాదు. పన్నులనుగాని, మరియునేక పేరులతో రాబట్టెడి లంచములగాని సకాలమున నీయనిచో పిపున కంచీతో దెబ్బలు కొట్టుట (Whipping) సర్వసాధారణముగ శిక్ష. ఈబాధల సహింపజాలక పల్లెలు, గ్రామములు, భూములు, ఆస్తులు విడిచి, పాటకపుజనము పట్టణములకు బయడసాగిరి. పట్టణములందు జనసమృద్ధి యధికముగదాచే నిరుద్యోగసమస్య నానాటికి వృద్ధికాజొచ్చెను. అందుచే నెక్కడచూచినను విప్లవవాతావరణము ప్రబలము కాజొచ్చెను. వర్తకవ్యాపారసంఘములన్నియు “జా” లని

పిలువబడు వాణిజ్యసంఘముల (Guilds) లెక్కకుమీరిన కట్టుబాట్లకు లోనైయుండెను. “జా” సంఘసభ్యుడు కానివాడెవడును వర్తకము చేయరాదు; కాని “జా” సంఘసభ్యులసంఖ్య అత్యల్పముగను, భూస్వాములహస్తగతమయ్యి నుండెను.

దేశ మన్ని విధముల నిట్టిదుస్థితులపాలై, యంతటను అసంతుష్టి ప్రబలియుండుటచే, జపానులో నూతనజాతీయభావోద్రేక ముదయించెను. దేశమందలి చిక్కులనెల్ల బోగొట్టి, శక్తియుతమగు కేంద్రప్రభుత్వమును బునరుద్ధరించి, విదేశీయులబారినుండి జపానును కాపాడవలె ననుదీక్ష ప్రతిగానిహృదయమునను బయలుదేరెను. తత్ఫలితముగ, ప్రశమమున, షోగన్లుప్రభుత్వము సాధికారమునుండితప్పించి, రాజ్యభారమును, దేశాభివృద్ధిని జపానురాజవంశీయుడగు మీజీ మెన్సో ప్రభువుహస్తములందుంచి, కేంద్రప్రభుత్వమును బలపరుప బూనుకొనిరి. దీనికే Meiji Restoration అనియు, The Bloodless Revolution of 1838 అనియు ప్రసిద్ధి. మీజీప్రభువు రాజ్యభారము వహించుటతోడనే జపానుదరిత్రలో నూతనశక మారంభ మాయెను. జపానుభావిభాగ్యోన్నతికి పునాదులు వేయబడెను.

సహజమగు మధిష్ఠించుసరికి ౧౮ సంవత్సరముల బాలుడైనను, చిన జీవితమంతను జీర్ణజపానుదేశోద్ధరణకై ధారబోయుచు బ్రతినవట్టి, పట్టాభిషేకసమయమున, మీజీసార్వభౌముడు ఈ క్రింద వివరించినవిధముగా తనప్రజలకు ౧౮-వ మార్చి ౧౮౬౮-వ సంవత్సరమున వాగ్దానము చేసెను:

౧. దేశమందు బహిరంగసభలు జరుగుట కెట్టి యాచంకము నుంచరాదు.

౨. రాజ్యపాలనమంతయు జపానుజాతి, జపానుదేశము అభివృద్ధి పొందుమార్గములందే, వాని అభ్యుదయమునకై మాత్రమే జరుపబడును. పాలకులును, పాలితులును ఆ ఆశయమునకే పాటుపడవలెను.

౩. దేశమందలి రాజోద్యోగీయులందరు అన్నివిధములగు స్వతంత్రపరిశ్రమలను పెంపొందించుటకును, ఎవనిశక్తికి తగినటుల వాని ప్రత్యేకపరిశ్రమను వృద్ధిచేయుటకును, తమ అధికారమును వినియోగపరుపవలెను.

౪. దేశమందలి నైతిక, సాంఘికనష్టములను, ఇతర అన్యాయములను తొలగింపవలెను.

౫. ప్రపంచమందలి అన్ని భాగములనుండియు నుపయోగకరమగు విజ్ఞానమును సంపాదించి, దేశమున జ్ఞానాభివృద్ధికి వలయు యత్నములన్నియు జేయవలెను.

ఈశపథమునకే జపానులో “గొజొనోగొసీబమ్” అని పేరు. ఇతరదేశములలో రాజుల ప్రతిజ్ఞలకెన్నిది కేవలము ముఖప్రతిష్ఠధము.

అవసరమునుబట్టియు జేయబడినవి కావు. రాజ్యభారము వహించిన ఊరిమునుండియే మీశీసార్వభౌముడు తన విధిని నెరవేర్చుటకు మొదలిడెను. అంతరికాలములో దేశములోని భూస్వాముల దురంతములు, సాంఘికతారతమ్యములు వాతము చేయబడినవి. ప్రజలందరు సమానహక్కు గలవారైరి. భూస్వాముల పూర్వపు అధికారములు, ఆధిక్యములు అంతరించినవి. ప్రైవేట్ ప్రాపర్టీ (Private Property), అందరి హక్కులకు రక్షణ యేర్పడినది. వృత్తవలంబనమునకు గల యడ్డంకులన్నియు దొలగింపబడినవి. వర్తకవ్యాపారసంఘములగు “జా”లను, వాటి కట్టుబాట్లను రూపుమాపి స్వేచ్ఛావ్యాపార, స్వతంత్రపరిశ్రమపద్ధతులు పెంపొందింపబడినవి. తాను సింహాసనమధిష్ఠించి ఆరునెలలు కాక పూర్వమే, భిన్నభిన్నముగా చీలియున్న వివిధ స్వతంత్ర సంస్థానముల గూడదీసి, వాని నన్నిటిని దనవశమొనర్చుకొని, కేంద్రప్రభుత్వపుబిధికారమును జపానులో సంతటను బలపరచెను.

౧౮౭౦-వ సంవత్సరమున నాధునికపద్ధతులపై నడుపబడు మొదటివర్తకసంఘము (Commercial Company) టుషోకైషా (Tsusho Kaisha) అనుపేర స్థాపింపబడినది. దానిపెంటనే ‘బ్యాంకింగ్ కార్పొరేషను’ కూడ నెలకొల్పబడినది. ౧౮౭౦ మొదలు ౧౮౮౩ వరకు ప్రభుత్వమువారే స్వయముగ పరిశ్రమలను నెలకొల్పినది, వ్యాపారమును సాగించుచుండిరి. దేశమంతటి ముఖ్యకార్యగారములన్నియు ప్రభుత్వమువారికే చెందియుండి, వారిచే నడుపబడుచుండెను. రైలుమార్గములు, బొగ్గుమొదలగు ఇతరగనులు, నాణానిర్మాణము, వస్త్రపరిశ్రమ, పట్టుపరిశ్రమ, గాజుపిండాణీవస్తువుల తయారుచేయుచుండెడి ప్రభుత్వమువారు స్వయముగ స్థాపించి పట్టువలతో నడిపింపసాగిరి. ౧౮౮౩-వ సంవత్సరప్రాంతమున దేశమంతటి పరిశ్రమలన్నియు చాలవరకు స్వతంత్రముగ వృద్ధికి రాదొడగెను. స్థాపించుటకు వలయు కష్టనష్టముల కన్నిటికిని ప్రభుత్వమువారు బాధ్యతవహించి, స్వతంత్రముగ నవి పెంపొందిగల్గితికి రాగనే, వాటిని వ్యక్తిమాజమాన్యమునకు (Private enterprise) అప్పగించిరి. ౧౮౯౩-వ సంవత్సరమున నాణెముల చలామణి, ఇతరదేశముల నాణెములతో మారకపువిధులు నిర్ణయించు చట్టములు (Currency, Exchange and Bank acts) కావింపబడినవి. ౧౮౯౪-వ సంవత్సరమున ‘చైనాజపాను’ యుద్ధముతో ప్రభుత్వమువారు స్వయముగ పరిశ్రమల స్థాపించుట, వానిని నడపించుట పూర్ణముగా మానివైచి అంతయు వ్యక్తులకును, కంపెనీలకును వదిలివేయబడినది. ౧౮౯౮-వ సంవత్సరమున మొత్తముమీద ఘనము ౨,౬౦,౦౦,౦౦౦ యెన్నుల విలువగల జపానువర్తకము ౧౮౯౩ నాటికి ౧౪,౯౫,౮౪,౦౦౦ యెన్నులవరకు వృద్ధిచెందెను. (యెన్ను అనగా ఘనము పండ్రెండణాలన్నర ప్రస్తుతపు విలువగల జపాను నాణెము) కాని అంతటితో తమపని ముగిసిట్లు తలచి యూర

కుండక, జపానుప్రభుత్వమువారు పారిశ్రామికాభివృద్ధికి వలయుమార్గములన్ని నశ్వేషించుచు, వానికివలయు సహాయమును, సదుపాయములను సమకూర్చుచు నితరదేశములలోవలె పరిశ్రమలు వర్తకము అస్తిపాశ్చాత్యుల హస్తగతము కానీయక కాపాడి సర్వహక్కులును జపానియుల హాభముకొరకే యేర్పక నట్లు పాటవడిరి. విదేశములలో షాగనెట్టుప్రభుత్వమువారు చేసుకొన్న వ్యవదాయము లగు సంధివరతుల నన్నిటిని తిరిగి మార్చుగావించి, సమాన హక్కులు, సమానహోదాపద్ధతులమీద మీశీప్రభువు ౧౮౯౪-వ సంవత్సరమున ఇంగ్లాండుతో ప్రధమమున సంధిగావించుకొనెను. చెంబునే యితరదేశములుకూడ ఇంగ్లాండుపద్ధతినే యనుసరించినవి.

జపాను అంతరికలహముల నడగించి రాజ్యమును బలపరుప మొదలిడగనే యితరదేశములతో విరోధములు, యుద్ధములు సంభవించెను. ఇతరదేశములు తమపై దండెత్తి రాకుండుటకై, తమ ప్రక్కనేయున్న ‘కొరియా’ లో ౧౮౯౬ - వ సం. మన జపాను సంధిగావించుకొని, కొరియాలో సంస్కరణాభివృద్ధికి జపాను ప్రయత్నింపసాగెను. కాని చైనాకు, తదితరదేశములకు కొరియా అభివృద్ధిచెండుట యిష్టము లేదు. కొరియా స్వతంత్రరాజ్యమైనను, చైనాకు సామంతరాజ్యమువలె స్రుడ్డిగ చైనా ననుకరించుటయే తన విధిగ నెంచుచుండెను. పాశ్చాత్యులు చైనాకొరియాలో తమ అధికారమును స్థాపించుకొనుట కప్పుడు సమయము లభించునాయని యెదురుచూచుచుండిరి. జపాను, ఈరానున్న అపాయమును గ్రహించి, తాముకూడ పాశ్చాత్యవిధానముల నవలంబించి తమ దేశము నభివృద్ధియొనరించుకొనుటయేకాక, కొరియాలో నూతనవికాస ముదయింపజేసి, పెంపొందింప యత్నించుచుండిరి. కాని చైనాదేశము తనపూర్వాచారములను, ప్రాచీనపద్ధతులను విడచుట కేమాత్ర మిచ్చగింపక, చెనుకబడియుండుటయేకాక, కొరియాలో కూడ నెట్టిసంస్కరణము జరుగుటయు సహింపలేకుండెను. జపాను కొరియాలో సంస్కరణాభివృద్ధికై యత్నించుచుండ, చైనా అట్టిసంస్కరణమున కడ్డుతగులుట చైనాజపానుల సంఘర్షణకు కారణమై, తుడకు యుద్ధముగా పరిణమించెను.

౧౮౯౪-౯౫ సం. మన జపానుకును చైనాకును యుద్ధము జరిగి, అందు జపానుకు అద్భుతవిజయము లభించెను. తత్ఫలితముగ చైనావారు “షిమనోషీకి” వద్ద సంధి గావించుకొనిరి. అసంఖ్యవరతులప్రకారము జపానుకు చైనావారు,

౧. ౨౦,౦౦,౦౦,౦౦౦ టేల్లు నష్టపరిహారములక్రింద యివ్వవలెను. (టేల్ అనగా ఘనము పదమూడణాలన్నర విలువగల చైనానాణెము).

౨. దక్షిణ చైనా సముద్రతీర సమీపమున నున్న ఫార్మోసా (Formosa), పాస్కోడెరిస్ (Pascoderes) ద్వీపముల వదలివేయవలెను.

3. లయటాంగ్ (Liaotung) ద్వీపకల్పమును విడువవలెను.

౪. కొరియాదేశము సర్వస్వతంత్రముగ నుండవలెను.

౫. చైనాదేశములో ముఖ్యముగ నాలుగుశత్రుపట్టణములలో జపాను వ్యాపారమునకు స్వేచ్ఛ యొసంగవలెను. యాంగ్ టోజీనదియందు స్వేచ్ఛగ జపానువారు నాకాయానము లొనర్పవచ్చును.

ఈసంధివరకుల ప్రకారము జపానునకురొక్కమూలమును అధిక లాభమే కాక నూతనరాజ్యవిస్తీర్ణమును, అధిక హక్కులను సంక్రమించినవి. కాని రష్యా, జర్మనీ, ఫ్రాంసు మొదలగుదేశములు జపానుకు గతినిలాభమునకు ఓర్వలేక ప్రాచ్యదేశకాంతిరక్షణ మనుషేర జపానును వెదరించి లయటాంగ్ ద్వీపకల్పమును మరల చైనాకు వదలి వేయునట్లు బలవంతపరచిరి. అందుకు బదులుగ చైనానుండి జపానుకు తిరిగి 3,00,00,000 పరిహారము చెల్లించబడెను.

అంతవరకు చైనాయన్న భయపడు విదేశీయులెల్లరు చైనా యొక్క దుర్బలత్వమును గ్రహించినంతనే ఒకరోకరుగ చైనాతో స్నేహము చేసుకొని విద్యోయకమిషమిద కొన్ని ప్రాంతముల తమస్వాధీనానుభవములలోనికి తెచ్చుకొనిరి. ఆ విధముగ జర్మనీ కియాచా (Kiachow) లోను, రష్యామంచూరియాలలోను హక్కుల సంపాదించుకొనిరి. ఫ్రెంచివారుకూడ కొన్ని ప్రాంతములకు కవులుకు సంపాదించుటకైకా కొన్ని రైలుమార్గముల నిర్మించుటకును, నడవులకును అధికారమును బడసిరి. ఇతరదేశములలో బాటు బ్రిటుకుకూడ వీహైవీ (Weihaiwei) ప్రాంతమును కవులుకు పొందెను. ఈయపాయమును గ్రహించి జపాను, ఫాక్స్సా కదురుగానున్న ఫుకీను (Fukien) పరగణాను ఇతరులకేరికిని అన్యాయక్రాంతము చేయకుండునట్లుగ చైనాతో మరల సంధిగావించుకొనెను.

ఇంతలో చైనా అధికారముబలము తగ్గగానే రష్యా క్రమముగ కొరియాదేశములో నధికారమును సంపాదించ మొదలిడెను. తనస్వాధికారములో నున్న మంచూరియానుండి కొరియానుకూడ క్రమముగ నాక్రమింపవచ్చుననియు, జపాను 'అడ్డుపెట్టిన' ఓడింప వచ్చుననియు రష్యా వ్యూహముల బన్నుచుండెను. కొరియానుండి అన్యోన్యాధికారములవిషయమై జపానుకును రష్యాకును నానాటికి విరోధములు వృద్ధికాజొచ్చెను. జపాను సంధివరకులను నూచింపగా రష్యా అతిపేళనముగా వానిని నిరసించి, నీచముగ వరకుల మరల నూచింపసాగెను. ఈ అన్యోన్యవైషమ్యమే ౧౯౦౪ లో రష్యాజపానుయుద్ధమునకు కారణమాయెను. ఈకాలమునకు పాశ్చాత్య రాజ్యములలోనెల్ల రష్యా చాల గొప్పదీయు, యూరప్రదేశమున సగమునకుపైగాను, ఆసియాఖండమున సగమునకు అధికముగ విస్తీర్ణము నేలుచు రాజ్యవిస్తీర్ణకాంతిదీక్షలగు నిరంకుశప్రభుత్వ పాలనలో నుండి రష్యానున్న నెల్లరకు భయము గలిగించుచుండెను. దానికితోడు జపానుకు పడమరను, ఉత్తరమునను నరినాడు నంటి

రష్యారాజ్య ముండుటచే వీనిముసమున హతాత్తుగా తమపై బసు దురో యనుభవము జపానువారిని పీడింపసాగెను. జపాను తన్ను రక్షించుకొనుటకు, ప్రాచ్యకాంతి రక్షణకును మరల నొకదురు రష్యాపై కత్తిమాయక తప్పదాయెను. వీరినిదిమందియో అశక్తులు, స్త్రీలు, బాలురు తప్ప జపానుజాతియంతయు విజయమో, లేక మరణమో రెంటిలో నేదియో యొకటి తప్పదని నిశ్చయించుకొని యుద్ధమునకు బయలుదేరిరి. జపానుజాతి జీవించియుండుటయో, నశించి పోవుటయో యనునది యాయుద్ధపర్యవసానముమీదనే ఆధారపడునని గట్టినమ్మకము జపానుఅంతటను ప్రబలమాయెను. క్రమముగ రష్యా వైష్యములను తమకన్న మిక్కిలిబలమైనవియు, సాధన సంపత్తులతో కూడుకొనినవియునైనను హృదయమందు రుల్కూనిన దేశభక్తియను దివ్యతేజోబలమున జపానీయులు తమ విరోధుల నొక దుర్గమునుండి మరియొకదుర్గమునకు పారద్రోల మొదలిడిరి. ఎంతపట్టుదతోపొరాడి ఆరునెలలవరకును విరోధికి లొంగకుండినను తుదకు రష్యములు పోర్టు ఆర్థరును (Port Arthur)ను కూడ వీడవలసి వచ్చెను. ముకుడేన్ (Mukuden) యుద్ధములో రష్యావారు సంఖ్యాత్వముగా నోడింపబడిరి. మరియొకవంక, నతిక్లిష్టమును ప్రమాదప్రమాసమున కొర్చి జపానుతీరమును జేరుకొనిన రష్యనునాకాదేశమును ౧౯౦౫ లో జపానునాకాదేశాధిపతియగు అస్మిరల్ టోగోచే జపానుసముద్ర పరిసరప్రాంతముల నుండకుండ జెనరకొట్టబడెను. అంతటితో రష్యా యొక యుద్ధమును సాగించుట నిరుపయోగమని నిశ్చయించుకొని ౫-వ సెప్టెంబరు ౧౯౦౫-వ నాడు పోర్టుస్మత్ (Portsmouth) వద్ద జపానుతో నీక్రిందివరకులతో సంధి కుదుర్చుకొనిరి:

౧. కొరియాదేశములో జపానుఅధికారమును, అందుపై జపాను సార్వభౌమత్వమును అంగీకరించుట.

౨. లైటాంగ్ ద్వీపకల్పమును కవులుహక్కులన్నిటితోను జపానుకు వదలివేయుట.

3. దక్షిణమంచూరియా రైలుమార్గమును దానికి సంబంధించిన గనుల హక్కులతో సహితముగ జపానుకు స్వాధీనము జేయుట.

౪. షాగెలియన్ (Shagelian) పరగణాలోని దక్షిణార్ధమును జపానుకు విడచుట.

ఈ రెండుయుద్ధములఫలితముగ జపానుయొక్క అధిక్యము స్థిరపడి, అంతవరకును “పచ్చకొతు”లని (Yellow Monkeys) పెక్కిరింపబడిన ఆజాతితోనే పాశ్చాత్యులెల్లరు సఖ్యము నొడగూర్చుకొన మొదలిడిరి. ప్రపంచమందలి గొప్పరాజ్యములలో జపా నొకటిగ పరిగణింపబడ మొదలిడినది. ౧౯౦౫ - వ సంవత్సరమున తిరిగి బ్రిటిషువారు తా మిదివరలో జపానుతో చేసుకొనిన సంధివరకుల వృద్ధిచేసి, ఒకరికొకరు సహాయము చేసుకొనుటకును, ఒకరిహక్కుల మరియొక రంగీకరించి వాటిని కాపాడుటకును,

తూర్పు ఆసియా, హిందూ దేశములందు కాంతిని ఇరువురును రక్షించుటకును మొదలగు సమానబాధ్యతలకు వరకులతో సంది కావించుకొనిరి. ఈయుద్ధముల ఫలితముగ నిట్లు జపానుహాదా విదేశముల యందెల్ల ప్రకటితమగుటయేకాక, జపానుఆర్థికాభివృద్ధికి మిగుల సుపయోగించెను. చైనా యుద్ధములమున జపానుకు లభించిన ౨౩ కోట్ల ధనమును పారిశ్రామికాభివృద్ధికి వినియోగింపబడెను. దానితో తోడు విదేశములతో సందిపరకులన్నియు లాభకరముగ సేర్పాటు చేసుకొనబడినందున వర్తక మభివృద్ధి బొందసాగెను. ఎటుచూచినను జపానున కభివృద్ధియే కన్పించెను. ప్రపంచమును సామాన్యముగ యుద్ధము నభ్యుక్తరమైనను, జపానుకుమాత్రము ఈలింపుయుద్ధములు లాభదాయకములు, అభివృద్ధికి మూలకారణములు నాయెను.

ఇదివరలో ఎరె జపాను ఆత్మరక్షణకై భయపడవలసినయగత్యములేరించెను. అందుకుమారు విదేశములే జపానుసఖ్యమున కదురుచూడ మొదలిడినవి. అంతేకాక జపాను నొకకంటితో కనిపెట్టి చూచుచుండవలసిన యవసరముచూడ కలిగెను. ఫ్రాంసు, రష్యా, అమెరికా దేశములుచూడ, బ్రిటువలెనే ఆన్యోన్యసహాయపద్ధతులపై నను, చైనాయందు వర్తకాధికార మందరకు సమానముగా నుండవలె నను మొదలగుపద్ధతులపై నను జపానుతో సందిగావించుకొనిరి. ఇట్లుండగా ౧౯౧౦ లో జపాను తనరక్షణక్రిందనున్న కొరియా రాజ్యము నాక్రమించుకొని దానిని తనసామ్రాజ్యమందు కలుపుకొనెను. ౧౯౦౫ మొదలు ౧౯౧౩ వరకు జపానుపారిశ్రామికాభివృద్ధిచరిత్రలో స్వర్ణ యుగముని యొంచకతప్పదు. అంతటి మహోత్సాహమున కారకుడగు మీశీప్రభువు జూలై ౩౧ - వ రేది, ౧౯౧౨ నాడు కాలగతి నొందెను.

త్వరలోనే ప్రపంచపరిస్థితులలో కల్లోలము లేర్పడెను. ౧౯౧౪ లో ఐకోపానుహాసంగ్రామము మొదలుపెట్టబడెను. ఈ సంగ్రామములో జపాను జర్మనీకి విరోధముగ మిత్రమంచుకొని పూర్తి నను మిగిలినవారివలె ప్రధానరంగముగ నున్న దుముకవలసిన యగత్యము సందేహింపలేదు. అందుమూలమున యుద్ధమున తమ యావచ్చుతులను వినియోగపరచుచున్న ఐకోపాదేశీయులకు వలయుసరకులను,

యుద్ధసామగ్రిని నొకలనుగూడ జపాను ఎగుమతి జేయసాగెను. ఇతరులపోటీ లేనందునను, సరకులకు మితిలేని అమ్మక మేర్పడుట వలనను జపాను కపారముగ ధనము రాదొడగెను. దేశమందలి పరిశ్రమలు, పరిశ్రమాలయములు నానాటికి పెరుగజొచ్చెను. జపాను ఆధికారము, ప్రాముఖ్యము ప్రపంచపరిస్థితులలో నధికమాయెను. ప్రాచ్యప్రాంతమంతటను సముద్రములపై జపాను సర్వాధికారియాయెను. మహాసంగ్రామసందిసభలలో జపానుప్రాతినిధ్యము చాల బలముగా నుండెను. ఆసందిపరకులములమున జపాను గతయుద్ధమున తాను జర్మనుఆధికారమునుండి బయించి స్వాధీనముచేసుకొనిన హెంబుర్గ పరగణాలో సర్వసామ్యమును, భూమిస్థలభు క్తులమున నున్న జర్మను దక్షిణసంద్రపురాజ్యమును, మార్షల్, కరోలైను, యాక్ ద్వీపములతో సహా రక్షణసామ్యము (Mandate) జపానుకు నానాజాతీసమితినిర్ణయమువలన నొసగబడెను.

౧౯౨౧ - వ సం. మన జపానుయువరాజు ప్రపంచమూత్రపై న విదేశములకుబోయి, అచ్చట సేర్పకొనవలసినవిషయములనెల్ల దెలిసికొనుటయేకాక, యితరరాజ్యములనెల్ల సందర్శించి వారి పరస్పరమైత్రి నభివృద్ధిచేసెను. ఈవిధముగ నాతడు బ్రిటును, ఫ్రాంసు, బెల్జియం, హాండు, ఇటలీ మొదలగుదేశములందు సంచరించి, దేశాభివృద్ధికి వలయు విషయములనెల్ల గ్రహించి, తనదేశమునకు తిరిగినచెప్పెను. ఆసంవత్సరమే సార్వభౌమని ఆస్పష్టతవలన యువరాజు రీతెంటుగా నియమింపబడుటచే, తాను పాశ్చాత్యదేశములందు సేర్పిన పాలనావిధానములెల్ల నమలులో నుంచి, బాధ్యతాయుక్తప్రజాప్రతినిధిసంఘములసలహాతో రాజ్యము పాలించునట్లేర్పాటు చేసెను. ఈవిధముగ విజ్ఞానార్జనమే ముఖ్యాశయముగ నెంచి, ౧౯౨౫ లో జపానుసార్వభౌమని రెండవపుత్రు డున్నత విద్యాభ్యాసమునకై ఐరోపాభుండమున కేగెను. జపానుప్రభువులు, ప్రజలు దేశాభివృద్ధికై తమ యావచ్చుతులను, విజ్ఞానమును ధారవోసి, జపాను నత్యల్పకాలములో నేటిమహాన్నతస్థితికి లేగలిగిరి. జపాను వర్తకవ్యాపారపరిశ్రమల అభివృద్ధి యీక్రింద పొందుపరుపబడిన వివరణమువలన లేటపడగలదు.

సంవత్సరము	ఎగుమతుల విలువ (యెన్నులలో)	దిగుమతుల విలువ	మొత్తము
౧౮౮౮	౧,౫౫,౫౩,౦౦౦	౧,౦౬,౯౩,౦౦౦	౨,౬౨,౪౬,౦౦౦
౧౯౦౩	౨౮,౯౫,౦౨,౦౦౦	౩౧,౭౧,౩౫,౦౦౦	౬౦,౬౬,౩౭,౦౦౦
౧౯౧౫	౭౦,౮౩,౦౭,౦౦౦	౫౩,౨౪,౫౦,౦౦౦	౧,౨౪, ౭,౫౬,౦౦౦
౧౯౧౮	౧,౯౬,౨౧ ౦౦,౦౦౦	౧,౬౬,౮౧,౪౪,౦౦౦	౩,౬౩,౦౨,౪౪,౦౦౦
౧౯౨౪	౧,౮౦,౭౨,౩౩,౦౦౦	౨,౪౫,౩౩,౯౦,౦౦౦	౪,౨౬,౦౬,౨౩,౦౦౦

జపానుపారి మూలధనము (Capital)తో స్థాపింపబడి జపాను (All Companies) యొక్క మూలధన మెట్లు నానాటి కభివృద్ధి జ్ఞానిహక్కుగా నడుపబడుచున్న అన్నివిధములను వర్తకసంఘముల యగుచు వచ్చెనో యీ క్రింది పట్టికవలన తెలియగలదు:

సంవత్సరము.	మొత్తము మూలధనము (యొన్నులు)	నూతనమూలధనమును పరిశ్రమలయందు వినియోగించి జపానువారు తమపరిశ్రమల నితరప్రఖ్యాతిపాఞ్చాత్యదేశములవానితో కుల్యస్థితికి చేగలిగిరి.
౧౮౯౩	౨౩,౧౯,౬౬, ౦౦౦	
౧౯౦౩	౮౮,౭౬,౦౬,౦౦౦	
౧౯౦౫	౯౭,౫౦,౦౦,౦౦౦	
౧౯౧౩	౧,౯౮,౩౦,౦౦,౦౦౦	
ఈక్రిందివివరింపబడిన జపానుజాతీయభాగ్యమును నూచించు పట్టికను పరిశీలించిన జపాను ఎంతకీఘ్రుకాలములో నత్యధికార్థ వృద్ధిని జూపగలిగినదో స్పష్టమగును.		
౧౯౧౪ మొట్టమొదట ౧౯౧౫ సంవత్సరములమధ్య సంవత్సరమునకు ౧౦,౦౦,౦౦,౦౦౦ మొదలు ౧౫,౦౦,౦౦,౦౦౦ వరకు		

జపాను జాతీయైశ్వర్యము (Japan's National Wealth)

ఆస్తి వివరము	౧౯౧౩ సం॥ లో విలువ (యొన్నులు)	౧౯౧౯ సం॥ లో విలువ
భూములు (Lands)	౧,౩౭,౯౫,౦౦౦	౩,౩౦,౮౬,౦౦౦
గనులు (Mines)	౧౪,౬౩,౦౦౦	౬౪,౧౩,౦౦౦
సరస్సులు, నదులు, నౌకాశ్రయములు వగైరా (Seas, Lakes, Rivers, Harbours)	౨౭,౬౭,౦౦౦	౪౫,౯౭,౦౦౦
కలప (Trees)	౧౭,౬౦,౦౦౦	౪౫,౩౪,౦౦౦
భవనములు (Buildings)	౩౬,౩౨,౦౦౦	౮౫,౬౦,౦౦౦
గృహోపకరణములు (Furniture and Household effects)	౧౫,౬౬,౦౦౦	౪౪,౨౪,౦౦౦
పారిశ్రామికయంత్రములు (Machinery for manufacture)	౩,౯౯,౦౦౦	౧౧,౦౨,౦౦౦
మచ్చికజంతువులు (Domestic animals)	౧,౫౪,౦౦౦	౫,౦౩,౦౦౦
రైలుమార్గములు, ట్రాములు (Railways and Tramways)	౨,౯౯,౦౦౦	౧౧,౧౧,౦౦౦
ఇతరశక్తిములు (Vehicles)	౪౭,౦౦౦	౧,౮౨,౦౦౦
నౌకలు (Ships)	౪,౭౧,౦౦౦	౧౧,౮౨,౦౦౦
జలయంత్రములు (Water works)	౭౭,౦౦౦	౨,౪౯,౦౦౦
వంతెనలు (Bridges)	౯౫,౦౦౦	౨,౩౪,౦౦౦
పంటలు (Agricultural Products)	౯,౯౪,౦౦౦	౩౬,౨౪,౦౦౦
అపవిత్రదార్థములు (Forest Products)	౪౧,౦౦౦	౮౮,౦౦౦
పారిశ్రామికవస్తువులు (Manufactures)	౭,౪౮,౦౦౦	౨౬,౩౦,౦౦౦
గనులనుండి వచ్చిన వస్తువులు (Mineral Products)	౮౫,౦౦౦	౩,౮౭,౦౦౦
జలవస్తువులు (Marine)	౨౦,౦౦౦	౪౩,౦౦౦
దిగుమతిపరుగులు (Imports)	౧,౯౭,౦౦౦	౪,౪౫,౦౦౦
పండి బంగారములు, నాణెములు (Gold and Silver bullion and coin)	౭,౪౭,౦౦౦	౨౩,౬౦,౦౦౦
ప్రభుత్వశాఖల ఆస్తి (Property of Govt. departments)	౧౧,౧౬,౦౦౦	౧౫,౪౮,౦౦౦
చక్రవర్తి స్వంత ఆస్తి (Property of Imperial House)	౩,౪౬,౦౦౦	౭,౨౭,౦౦౦
ఇతరములు (Others)	౩౦,౮౨,౦౦౦	౭౭,౯౩,౦౦౦
ఇతరదేశములనుండి తమకురావలసినవాళ్ళిలు (Balance in favour of claims)	౧౮,౬౦,౦౦౦	౩,౫౬,౦౦౦

మొత్తము ౩,౨౦,౪౩,౦౦౦

౮,౬౦,౭౭,౦౦౦

విశోపామహాసంగ్రామకాలమున మితిమీరి యభివృద్ధిచెందిన పరిశ్రమలు, వర్తకము, నూతనకంపెనీలు మొదలైనవన్నిటికి, ప్రపంచ శాంతియేర్పడి పూర్వప్రపత్తికి తేర్చుకనే, ఇతరదేశములలోవలెనే ౧౯౨౧-వ సం. మన విహితము కలిగినది. యుద్ధసమయమున దేశ మందు మితిమీరి వృద్ధిఅయిన నాణెములు, బ్యాంకునోట్లు ధరలను అధికముగా పెంచినది. యుద్ధానంతరము మామూలుపరిస్థితు తేర్చుక నందున అన్నిదేశములు తిరిగి పరిశ్రమలు, వర్తకము విరివిగా మొదలిడి నందున, ఒక్కమాత్రంగా ధరలు తగ్గిపోయెను. అందుచే ననేక కంపె నీలు, బ్యాంకులు నాశనము జెందినవి. వర్తకము ముందరించినది ఎక్కడమాచినను నష్టమే. అంతటితో పెద్దపెద్ద కంపెనీల మూల ధనము (Capital) తగ్గింపబడి మొత్తముమీద సెప్టెంబరు ౧౯౨౨ నాటికి ౯౮౦ నోట్లు తగ్గింపబడినది. ఈదిక్కులలోనుండి విజయము మరల శక్తిసంపాదించుకొన యత్నించుచున్న సమయములో ౧౯౨౩-వ సెప్టెంబరులో జపానులో మహాప్రదర్శనకరమగు భూకంపము, దానితోబాటు అగ్నిపర్వతప్రమాదము కలిగి మితిలేనినష్టము కలిగించి నది. జపాను ముఖ్యపట్టణములన టోక్యో, యోకోహామాలు నిగూఢము లయినవి. సుమారు ఒకలక్ష జీవులు మరణించిరి. వీరిధము చేసినను, ఈసమయమున జపానుకు మొత్తముమీద ౫౫౦,౬౩, ౮౬,౦౦౦ నష్టము సంభవించినట్లు అంచనావేయబడెను. ఈవిహితము జపానుకు తీరనినష్టమును గల్గించుటయేకాక, యభివృద్ధియందు గొప్పయంతరాయమును గల్గించినది. జపాను తిరిగి పునర్నిర్మాణము జేసుకొనవలసిన యగత్య మేర్పడినది. మరియొకదేశ మేదైనను ఇంతటితీవ్రమగునష్టమును బొందినచో నడుగంటియుండవలసినదే కాని, జపానీయుల ఆత్మవిశ్వాసము, పట్టుదల, ధైర్యవైర్యముల వలన, నిర్మాణమైన తమముఖ్యపట్టణములను మరల పూర్వముకన్న నధికమగువైభవముతో పునరుద్ధరించుటయేకాక, ఆర్థికప్రపంచమున దమయున్నతపదవిని నిలుపుకొనగలగుచున్నారు.

ప్రస్తుతము జపానులో ప్రతిసంవత్సరమును ౧౦ లక్షల చొప్పున జనసంఖ్య అధికమగుచున్నది. జపానురాజ్యమున కీనానాటికివృద్ధి యగు జనసంఖ్యను భరింప శక్యము కాకయున్నది. దానికితోడు అమెరికా, కనడా, ఆస్ట్రేలియా మొదలగు దేశములన్నియు జపా నీయులపోటీకి తాళలేక, జపానీయులను తమదేశమునకు వలసరాని యక ఆటంకపుచట్టముల నేర్పరచిరి. ఒకవంక వింతరకమను నల్లమందుమత్తున నిదురించుచున్న చైనా మేల్కొంచి తనస్వాతంత్ర్యమును గాపాడుకొన నిశ్చితమై జపాను కెదురుతిరిగి యుద్ధము గూడ జేయుచున్నది. రష్యామొదలగురాజ్యములు జపానును పడమర చైపు భూభాగమున రాజ్యవైకాల్యము బొందుట కడ్డువులును. ఇక పసిఫిక్ మహాసముద్రమున గలదీవులలో అమెరికావారు తమ యధికారమును స్థాపించుకొనిరి. అట్టిస్థితిలో జపానుకు ఊపిరి తిరుగనిస్థితి సంభ వించకతప్పదు. ఈసమస్యను జపాను ఎటులపరిష్కరించునో తెలియదు.

జపాను నేను కేవలము పరిశ్రమలపైనను, వర్తకముపైనను ఆధారపడియున్నది. జపానులో వ్యవసాయప్రదేశము చాలతక్కువ. ఇదిగాక దేశము చిన్నదైనను జనసంఖ్య చాలా హెచ్చగుచున్నది. అందుచే జపానులో పాశ్చాత్యదేశములలోవలెనే తమపరిశ్రమల కవసరమైన ముడివస్తువుల (Raw material)నిమిత్తము, తమ ఆహార పదార్థములనిమిత్తముగూడ నితరదేశములపై నాధారపడవలసివచ్చినది. జపాను తానుతయారుచేయు వస్తువులలో చాలా కొలదిభాగము మాత్రమే తనదేశమున ఖర్చుపెట్టుకొనగలను. మిగిలినభాగమంతయు విదేశములం దమ్మనలెను. నేను ప్రపంచముందు వ్యాపారవిషయకముగు పోటీ అధికమైనది. ప్రతిదేశమును, తనసరకులనిగుదలకు వీలగు వికాల మైన విక్రయప్రదేశములను (Foreign Markets) సంపాదించు కొనుట కనేకవిధముల ప్రయత్నించుచున్నది. అన్నిదేశములకంటెను పరిశ్రమాభివృద్ధి ముందుగ మొదలిడి, తమవస్తువు లక్యుత్తములుని పేరుప్రఖ్యాతులు సంపాదించిన ద్రివి నొకవంక, ఆధునికపద్ధతులపై, చక్కని కట్టుబాట్లతో వస్తుగుణమును చెప్పియక ధరల తగ్గింపుచువచ్చేది అమెరికా మరియొకవంక, చిరకాలమునుండియు నొక్కొకవస్తువును తయారుచేయుటలో బ్రసిద్ధిజెందిన ఫ్రాంసు, ఇటలీ మొదలగు యూరపియను దేశములు చేరొకప్రక్క, జపాను వ్యాపారాభివృద్ధి కంతరాయములుగ నున్నవి. వీటికితోడు, ఇక నెన్నటికిని తలయెత్తజాలవని తలంపబడిన జర్మనీదేశము, యుద్ధానంతరము మరల నతితీవ్రముగా పరిశ్రమల నభివృద్ధిపరచి తనలూర్వపు మార్కెట్టుల వశపరచుకొని, యుద్ధాపూర్వముకంటె నధికముగు వ్యాపారము చేయుమొదలిసినది. వీని అన్నిటికంటెను ఆశ్చర్య కరముగ శతాబ్దములతరబడి పారిశ్రామికవాసనలేక కేవలవ్యవసాయ మున కలవాటుపడిన రష్యాదేశము మాచుచుండగనే గారడీమార్పునది, ప్రజాస్వామ్యపరిపాలనమున చిత్రమగుమార్పును జెంది పారిశ్రామికాభి వృద్ధికి సర్వశక్తుల వినియోగించుచున్నది. ప్రతిదేశమునను పరిశ్రమలభి వృద్ధి నొందించి యేదేశమునకు వలయువస్తువులు వారే తయారుచేసు కొనవలె ననుభావము విస్తరించినది. జపానుకు ఇంతవరకున్న చౌక యగుహాల్గయ్యమువలన కలుగు లాభముగూడ సంతరించుచున్నది. జపానులోగూడ పూర్వముకన్న నేను కూలీవ్యయము చాల అధికమైనది. అందువలన వస్తువులు తయారుచేయుట కగువ్యయము అధికమై, ధరలు పెరుగుటచే, నితరదేశములకన్న తక్కువధరలకు తనవస్తువుల విక్ర యించుసమపాయము తగ్గినది. అందుమూలమున జపానుకు ముందు క్లిష్టపరిస్థితు తేర్చుకవచ్చును. జపాను భావిభాగ్యోన్నతి యీరెండు సమస్యలను పరిష్కరించుటపై నాధారపడియున్నది.

జపాను ఇంత యత్యల్పకాలములో సంతటి మహాత్కృష్ట దేశమవచ్చుటకుకాగణము లనేకము లున్నవి. అందు మొదిటిది దేశీ యాభిమానము, జాత్యభిమానము. జపానులో ప్రతియింటను తల్లి పసిపిల్లల కున్నపాలతోబాటు జాతీయభావమును శరీరమున బట్టించుదురు.

ఉయ్యెల్లలోని బాలుని బోకొట్టుచు దేశాభిమానమును దెలుపుపాటలనే పాడుదురు. పాఠశాలలో పుస్తకములందు దేశాభిమానము వృద్ధి జేపించు పాఠములు బోధింపబడును. జపానులో బ్రతివ్యక్తికిని జాతీయత, దేశాభిమానము ప్రతిపాదనమునందును రక్తముతోబాటు నిరంతరము ప్రవహించుచుండును. జపానీయులు తమదేశక్షేమము మొనటిదిగను, వ్యక్తి తరువాతదిగను గణించుదురు. దేశరక్షణ ఆవశ్యకమైనప్పుడు తమయావదాస్తిని నిర్లక్ష్యముగ ధారపోయుటయే కాక, ఆత్మత్యాగముతో జీవితమును మాత్రం దేశక్షేమమునకై విడుతురు, ఈవిషయమున వారి స్వార్థత్యాగము నిరుపమానము, “జననీ జన్మ భూమిశ్చ స్వర్ణాపి గరియనీ” యన్ననుపమానము వారికి చెల్లును. ఇట్టి స్వార్థరహితమును నిష్కలంకదేశాభిమానమే జపానుఅభ్యుదయమునకు గారణము.

ప్రజలయందలి దేశాభిమానమునకు నోడు ప్రభువులు, పాలక వర్గమువారుమాత్రం నట్టి మహోన్నతాశయమునకే పాటుపడి, దేశ సౌభాగ్యమే తమసౌభాగ్యముగ నమ్మి, విధివిరామములు లేక సర్వ కర్తృల ధారవోసి, దేశోన్నత్యమునకు పునాదులు వైచి, భావి భాగ్యోదయమునకు బాసటయై నిలచిరి. ప్రపంచచరిత్రయందు మరెచ్చటను ఇట్టిగాజాదరణము కన్పింపదు. దేశమున పరిశ్రమలు లేనికాలమున ప్రభుత్వధనము చెచ్చించి, పరిశ్రమాలయముల నిర్మించిరి. విదేశములనుండి గొప్పగొప్పపంటిలను, కాస్త్రజ్ఞులను గావించి దేశముందు విజ్ఞాన మభివృద్ధిపరచిరి. విద్యార్థివేతనము రిచ్చి విద్యార్థుల విదేశములకంపి వృత్తివిద్యలను (Technical Education) విరివిగా వృద్ధిపరచిరి. ఇంతటితో తృప్తి నొందక కంపెనీలు కాని, వ్యక్తులు కాని పరిశ్రమల స్థాపించినపుడు వాటికి వలయు సర్వసదుపాయము నొడగూర్చుటయే కాక, మూలధనమును సర్కారువారు ఆర్యులనుగ వడ్డీలకు ఋణమిచ్చుచుండిరి నాకానిర్మాణ మభివృద్ధిచేయుటకు ప్రగమమున ప్రభుత్వమువారే స్వయముగ నిర్మాణాశ్రయముల (Dock Yards) నిర్మించిరి. తరువాత నీపరిశ్రమ నభివృద్ధి నొందించుటకై Navigation Bounty Laws, Overseas ship Subsidy Act, Ship-building Encouragement Act మొదలగు చట్టముల గావించి దూరము ప్రయాణముచేసిన, జపానువారిచే, జపానుదేశములో, జపానుధనముతో నిర్మింపబడి, జపానునావికులచే నడుపబడు ప్రతినౌకకు నెంతదూరము పయనమొనరించిన నంత పారితోషికమిచ్చుట మొదలగువిధముల పరిశ్రమ కుత్సాహము గలిగింపజేసిరి. ఇదేవిధముగ, చౌకగ నమ్ముటకై వస్తువును తుచ్చపురకముగా తయారుచేసినవారు దండింపబడుదురని మరియొకకాస నము గావించి, లోకములో జపానువస్తువులను నెందుకును కొరగాని వను నిదివరలోని యపవాదమును తొలగించివేసినారు. వేయేలకే నేడు జపాను ఇంతటిసృష్టపదవిని బొందగలిగినవో నదియంతయు రాజాదరణము, ప్రజాభిమానముచేతనేకాని మరియొకకారణములేదు.

దీనితోడు జపానుదేశములో పరిశ్రమలలో కూర్చుని యంతయు సామాన్యముగ స్త్రీజనము చేయుచుండుటచే, పాశ్చాత్య దేశములన్నిటికంటె చాలచౌకగ కూర్చుని దొరుకుదురు. అందుచే ఉత్పత్తిచేయుట కగుభర్చు చాలతక్కువగును. దానినిబట్టి యితర దేశములకన్న మిక్కిలిచౌకధరలకు వస్తువులను జపానువారు విక్రయింపగలుగుచున్నారు.

జపానీయులందఱును చాలపాటు పడెడివారునా, పట్టుదల గలవారును. తమసోదరజాతియగు చైనావారికి గల మాండ్యము దీనికి లేదు. దీని అన్నిటికన్న మిన్నయగునది, యేయితరజాతియందైనను సరే నేర్వవలసినసంగతులున్నచో, నిత్యంకతో, నీచణ్డాత్రమైన దురభిమానము లేక స్వీకరించెదరు. పాశ్చాత్యప్రపంచముతో సంబంధము కలుగగానే తమపూర్వపుటలవాట్లను, కట్టుబాట్లను భైర్యముగా వదిలివైచి, వారి యాధునికపద్ధతుల నింతమనముతో నంగీకరించి యావిధానములపైననే జపాను నభివృద్ధికి దెచ్చిరి. ఇతరుల పద్ధతుల నవలంబించుటయందును, వానిని తమ కనుగుణముగ నుపయోగించుకొనుటయందును జపానీయులకు గల యనువదించుటకై (Adaptability) మరి యే యితరజాతికిని లేదు. మనహిందుదేశములోవలెనే జపానులోను పూర్వ మనేక విభేదము లుండునను, ఉన్నతజాతులవారు తమయధికారములను దేశక్షేమమునిమిత్తము బుద్ధిభార్యకముగా వదులుకొనుటచే దేశమున నైకమత్యము గుర్తముగా వ్యాపించి జాతీయాభివృద్ధికి వారిత్యాగము సహాయకమయ్యెను. జపాను పాశ్చాత్యవిధానముల నంగీకరించినను, పాశ్చాత్యనాగరికతను స్వీకరించినను వాటిసారమునే గ్రహించి యుపయోగించుకొనుచున్నదిగాని, గ్రుడ్డిగా వాటి ననుకరించి పాశ్చాత్యులలో లీనము కాక, జపాను తనవ్యక్తిత్వము నంతటను గాపాడుకొనుచున్నది.

ఇదేవిధముగ నేదేశమైనను, ఎంతటి యధోగతియందున్నను, తమస్వకీర్తి, పట్టుదలతోగూడిన జాత్యభిమానముచే నత్యల్పకాలములో నున్నతస్థితికి రాగలదని జపానుచరిత్ర ప్రపంచమునకంతకు నాదర్శమై చాటిచెప్పుచున్నది. ప్రాచ్యదేశీయులు సహజముగ నలసబుదులనియు, వేదాంతులనియు, మాధవిశ్వాసములుగలవారనియు (Philosophic and Superstitious)నిరుపయోగములును, అభివృద్ధికాటంకకరములునునగు ప్రాచీనాచారముల నంటిపెట్టుకొనియుండు వారనియు, నైహికప్రపంచమున నాధికాభివృద్ధికి తగరనియు జాతెడి పాశ్చాత్యులకును, మనవారికిని, జపానుఅభివృద్ధి తగురీతిని ప్రత్యుత్తర మీయగలదు. నేటికైనను మాధవిశ్వాసములను, అంతఃకలహములను విడలి, తమకుం దణియున్న క్రిసామర్థ్యముల గ్రహించి, జపాను నాదర్శముగ గొని, భారతీయులు తమదేశాభివృద్ధికి, జాతీయాభివృద్ధికిని యత్నింతురుగాక.

[జపాను అభివృద్ధిని మూచించు ముఖ్యవిషయములు మాత్రమే యిందు తెలుపబడి, సాధ్యమైనంతవరకు వివరములు తగ్గింపబడినవి.

యూనిక్ ఆస్యూరన్సు కంపెనీ, లిమిటెడ్ వారితో భీమాచేసికొనుడు

స్థాపితము : 1912—హెడ్ ఆఫీసు:—కలకత్తా

చేశబంధు సి. ఆర్. దాసుగారిచే

స్థాపించబడినది.



దానిపాలిసి లగిక వ్యయము
లేకుండా (1) శాశ్వత అశక్తులకు
లాభమును, (2) వృద్ధాప్యమును
లాభమును సమకూర్చును.

గలిగిన పాలసీలు సవీన
స్కీములో మరల నుద్ధరింపబడు
చున్నది. ఇందు పాతబాకీ ప్రీమి

యములు చెల్లింప నక్కరలేదు
కాన పాలసీదాన్లు ఎవ్వధమైన
నష్టము నొందరు.

హక్కుదారుల గూర్చి చిక్కే
మియు లేనియెడల చావునుతెలియ
చేసినచో సగము సొమ్ము ముం
దరగా పంపబడును.

ఈ కంపెనీ మిక్కిలి ఉత్తమమైనట్టియు, సవీనమైనట్టియు, భీమావిషయముల నేర్పాటుచేసియున్నది.

కడపటి అయిదుసంవత్సరముల లెక్కల కట్టాటలో రు 1000 లకు రు 50 లు

బోనసును ప్రకటించియున్నది. ఈదఫా వాల్చుయేషనుకు

యొక నెక్కువబోనసు నివ్వ వీలున్నట్టి సూచనలుగలవు.

ఈ కంపెనీ ప్రీమియములు చాల తక్కువ.

యూనిక్ వారి ఏ జెస్సి తీసికొనిన మీకు లాభింపగలదు.

వివరములకు యీదిగువ విలాసమునకు వ్రాయుడు:—

బ్రాంచి ఆఫీసులు:— మదరాసు, లేక బెజవాడ.

చీఫ్ ఏజెంట్లు:—మెస్సర్సు శ్రీనివాస అండు కో.,

నైజాంరాష్ట్రము, ఒరంగల్.

మోటారుస్పిరిట్

ఏవియేషనుస్పిరిట్

మోటారునూనె

మోటారు గ్రీనులు

కిరోసిను

ఫ్యూయల్ నూనె

యిండస్ట్రీయల్ లూబ్రికెంటు

మైనపువత్తులు, లక్క

మెక్ స్పాల్ టు

స్పెర్ మాక్ సు

కోలాన్

షెల్ టాక్సు

మలేరియల్

బర్తా షెల్ ఆయిల్ స్టోరేజ్ ఆండ్

డిస్ట్రిబ్యూటింగు కంపెనీ ఆఫ్

యిండియా లిమిటెడ్.,

(ఇంస్టాంసులో స్థాపించబడినది)

ఏజెంటు:—

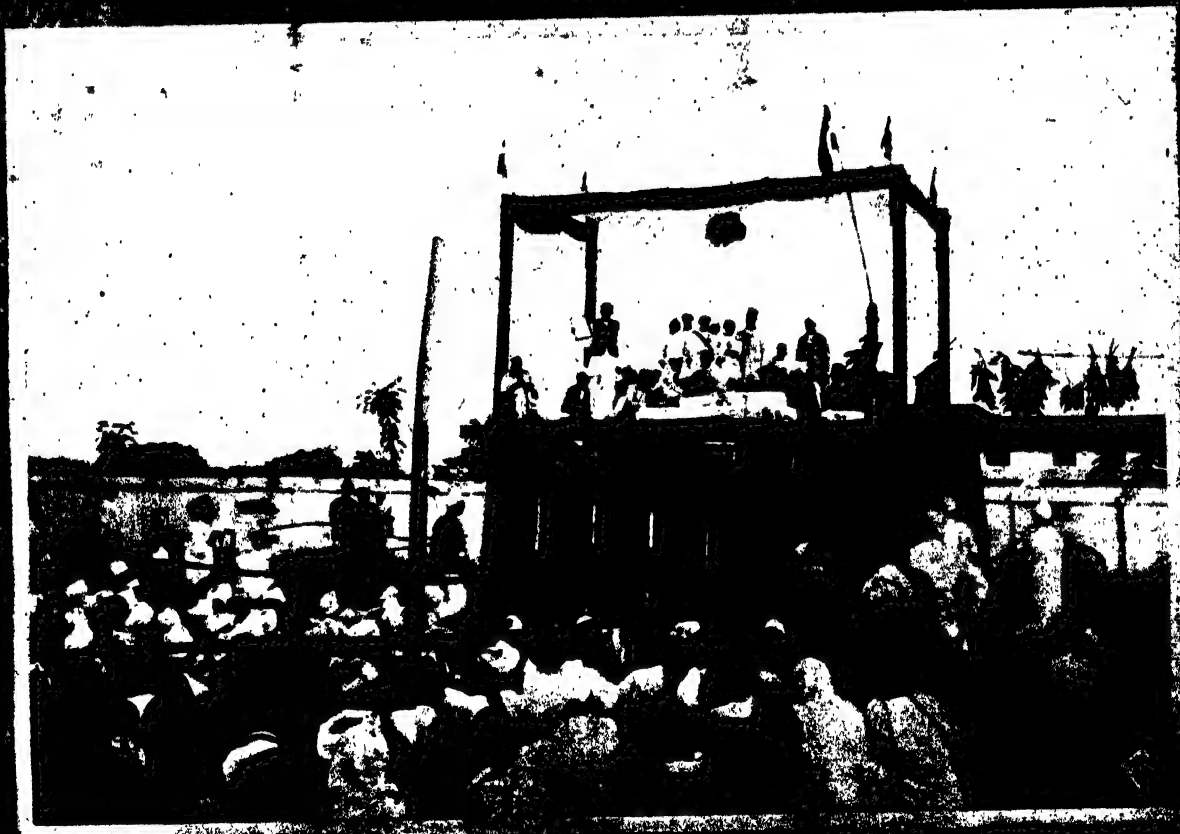
మద్రాసు-శివకామండలం-సికింద్రాబాదు - తిరుచునాపల్లి - శాఖపట్టణము

తండ్రి వత్రిక - భావనం వత్తురాదీనం చిత్ర
(మహాత్మాని చిత్రములు)



(35)

1. మహాత్మాని సమర్పణ అక్రమమునాది బహుమతి. 2. సెల్లూరులో ని. ఆర్. కాశీ అవతరణమున బహిరంగసభ.



1. మహాత్ముడు పెంకటగిరిలో. 2. సింహాద్వారములో.

జీవనభి

జీవనభి

సర్వసుఖవ్యాధులను సహమేహ కిరిమేహదులచే గలుగు దాసరిపాము వంటిపాడలు యింద్రియవేగి నష్టవీర్యము బోనణచి రక్తకండ వీర్యపుష్టి గజబలిమి శింసాపరాక్రమము నొసంగును. 6 ఔన్నుగల సీసా 2-0-0.



ఆశం దామృత తలనూనె

మిక్కిలి మేహశాంతమును వనసూరికలచే తయారుకాబడినది. యిందు పైటాయీల్ మొవలగు నెంట్రికలను హానికరమును పదార్థములు యేమియు చేరలేదు. అట్లు చేరినట్లు రుజు చేసినవో రూ. 100 లు యిప్పబగును 2½ ఔన్ను సీసా 1-కి రూ. 1-0-0.

గుడూచి ఇది శ్రీలపాలిటి వరప్రసాదము.

చాలాకాలమునుంచి వేధించు ముట్టుకుట్టు మోనిసూల కుసుమవ్యాధులు అకాలబహిష్టు వినవో మైలసరిలేకపోవుట లేక మితిమించి అగుట వంశ్యత్వము మృతసంతానము యెడలేగని బహుళిక గర్భస్రావాదుల కిది వరప్రసాదము. 6 ఔన్నుగల సీసా 1-కి రూ. 2-0-0

గుడూచి

విమలాంజనం డిపో.,

నెం. 40, వరదాము త్రియప్ప వీధి, జి. టి. మద్రాసు.



LATEST PARIS DESIGNS

GUARANTEED 10 YEARS

INDISTINGUISHABLE FROM GOLD



RS. 2-10 per pair



EXCELSIOR TRADING Co

ప్రాంసు జేకములోని శ్రీమంతులకు నగలు చేసియిచ్చు పనివారే వీనినిగూడ తయారు చేసిరి. యెక్స్‌క్లెయియర్ నగలయందు మంచి పనితనముయొక్క నిపుణత, అందము గలవు. గుండిమొదలు కంఠహారము వరకు దొరకును.

యెక్స్‌క్లెయియర్

శ్రేడింగు కంపెనీ,

సీతారాం బిల్డింగు,

హార్న్‌బీరోడు, బొంబయి. 1.

ప్రకృతి చికిత్స

వీధిమైన స్వల్పమందులుగాని, కస్తూరకాయలుగాని, ఇంజక్షన్‌ల పోటులుగాని లేక యెల్లవ్యాధులు మూర్ఖకాంతిలోను, జలమలోను, మృత్తుకలోను, అపకవాహరములోను వ్యాధులును, మర్దనానగైరా చికిత్సలలోను కుదుర్చబడును. వలయువారు ప్రకృతిచికిత్సకు లగు బొల్టాప్రగడ సుందరగోపాలరావుగారికి రాజమహేంద్రవరముని వ్రాసి వివరములను తెలిసికొనవచ్చును. జవాబు నిరుత్తము లేక టపాబిల్లు పంపకలేదు. అది లేని పుత్తరములకు జవాబులు వ్రాయబడవు. "అపకవాహరార్థైకశిక్షాంతము" వైచారి వ్రాసి తెప్పించుకొనవచ్చును.

దీనివల పోస్టేజిగాక రూ. 2-0-0.

బి. రమణయ్య, రాజమండ్రి, 25-1-20.

S. GANESAN PUBLICATIONS

50% Reduction allowed on the Prices.

Rs. As.	Rs. As.	Rs. As.	Rs. As.	Rs. As.	Rs. As.	Rs. As.	Rs. As.
Young India ...	4 0	India in England ...	2 0	The Philosophy of Art... (By D. Raghurama Acharya)	0 12	Hindu Culture ...	2 0
Supplement ...	1 8	(By Miss Helena Normanton)		Ideals of Non-Co-operation		(By K. S. Ramaswamy Sastry, B.A., B.L.)	
Indian Home Rule (By M. K. Gandhi)	0 8	Indian Currency and Exchange ...	3 8	And other Essays ...	1 0	The Indian Teachers in China ...	2 8
To the Students ...	1 0	(By K. C. Mahindra B.A.)		The Man and His Work "Josiah C. Wedgewood" (By Lajpat Rai)	2 0	(By Phamindranath Bose)	
Terence Macswiney (By C. F. Andrews)	0 8	History of England (in Tamil)	1 0	The Truth of Life ...	0 8	Nehal the Musician & other Tales ...	2 0
The Making of a Re-public (By Kevin R. O'Shield)	1 8	(By N. Vasudeva Iyer, M.A., L.T.)		(By Rabindra Kumar Ghose)		(By Snehalata Sen)	
The Sayings of Kabir ...	0 8	The National Being: Thoughts on an Irish Policy (By A. E. George-Russel)	1 0	Ahimsa and World Peace	1 8	Some Financial Problems of India ...	2 0
The Sayings of Thulasidas (By Lala Kanno Mal M.A.)	0 8	The Dawn of a New Age And other Essays ...	1 0	The Spiritual basis of Democracy ...	3 0	The West ...	2 0
The Failure of European Civilization ...	1 0	The Duties of Man With Biographical Introduction ...	1 0	(By Wilfred Wellock)		(By K. Kunhigannan M.A., Ph.D.)	
(By S. E. Stokes)		(By W. W. Pearson)		Letters from Abroad ...	2 0	Labour in Madras ...	2 8
Principles of Freedom ...	2 0	Need in Nationalism ...	0 8	(By Rabindranath Tagore)		(By B. P. Wadia)	
(By Terence Macswiney)		(By Aurobinda Ghose)		Faith and the Future ...	0 12	Satyagraha in Champaran	2 8
The Story of My Life ...	1 8	Landmarks in Lokamanya's Life ...	1 3	From the Council o God (By Joseph Mazzini)	0 12	(By Babu Rajendra Prasad)	
(By Bhai Paramanand)		(By N. C. Kelkar)		The Revolt of the East ...	1 0	Swaraj Constitution ...	1 0
The Future of Indian Fiscal Policy ...	0 12	The Gospel of Swadeshi (By Prof. Kalelkar)	0 4	Food, Mind & Health ...	0 8	(By S. Sreenivasa Iyengar, F.A., B.L.)	
(By D. V. Divekar)				Menace from the West ...	0 4	The Aphorisms of Narada	0 8
The Aims of Labour: An Ideal Commonwealth	1 0			The Foreign Policy in India	0 4	(By Lala Kanno Mal, M.A.)	
(By the Rt. Hon. Arthur Henderson)				Agitate ...	0 4	Women in Hindu Law...	0 8
				(By Bernard Houghton)		(By K. T. Bhashyam Iyengar, B.A., B.L.)	
				Rambles in Vedanta ...	2 0		
				(By B. R. Rajan Ayyar)			

N. B.—A commission of two annas & four annas Per Rupee is allowed on purchase of not less Than Rs. 10/- & Rs. 20/- respectively (after allowing 50% reduction) at a time, the purchase shall be one book only of every kind in the list of the Catalogue.

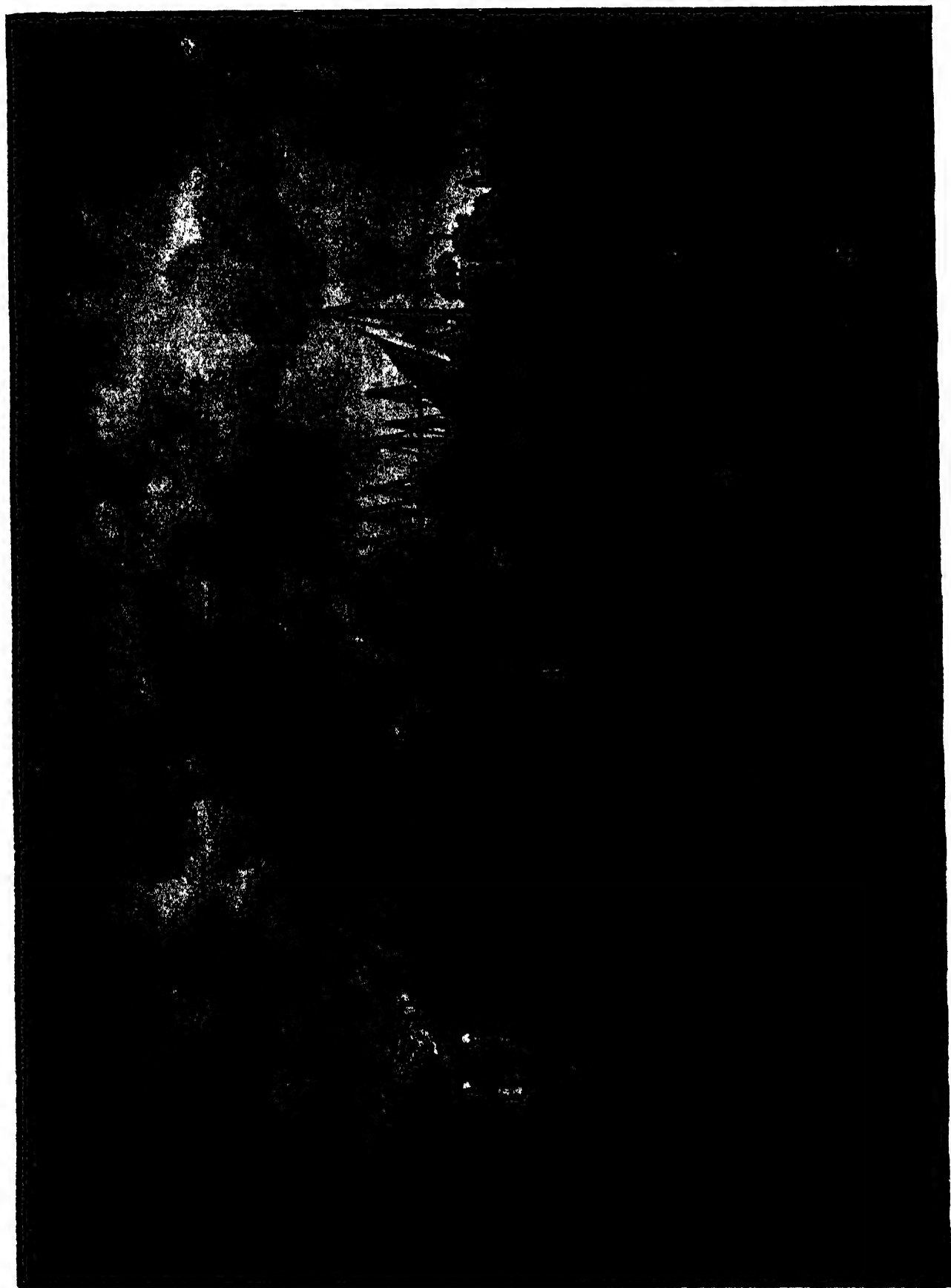
For Book Sellers, Libraries etc. special discount will be given on application.

Packing Charges will be free, and Postage or Railway Freight is to be borne by the purchasers.

25% of the amount of the order is to be sent in advance stating clearly the full address. If the books are to be sent by Railway, the name of the nearest Railway Station in bold Types is to be mentioned.

Ask for our Detailed Catalogue

ANDHRA PATRIKA OFFICE, No. 7, Thambu Chetty Street, MADRAS.



ఆంధ్రపత్రిక - భావనంవత్సరాదినంచిక
(మహాత్మాని చిత్రములు)



1. వీధిమధ్యన తాత్కాలిక ప్రభుత్వ మిరాచిగారు వారిజనభారితో ఖద్దరుపంచెపైనుండి, 2. సిరియల్స్ ముద్ర అడవిలో
మార్గమధ్యమున గ్రామములలో మహాత్మాని సంభాషణ, 3. పైవనలవద్ద జనసమూహము, 4. విశాఖపట్టణములో విశ్వభాగంగారి చేపట్టిన మహాత్మాని.



1. పాలకొల్లునద్ద జనశాశ్రమమునకు మూలరాయశేయుట. 2. కావతి వధిరా.

ఆర్థికపరిణామము, చరిత్ర, రాజ్యాంగవిధానము మొదలగు ఇతర వివరము లెరుంగునగా రీక్రిందచెప్పినపుస్తకముల జూడగోరెదను:

౧. The Economic aspects of the History of the Civilisation of Japan—3 Volumes. by Y. Tokokoshi.

౨. History of Japanese religion with special

reference to the Social and Moral life of the nation.

by Anesaki Masahara.

౩. The Economic development of Japan.

by Yuhara.

౪. Japan Year Books.]

జీవిత తత్వము

ఉమర్ అలీషాకవి

* రాగము: బిలహరి - తాళము: అట

జీవునికథనము, జేప్పెదవినుము,
ఈవిశ్వమును జేరగ, వచ్చినత్రోవ.

ఆవిరాట్టునుండి, ఆనాడు తెగిపోయి-
ఆవిర్భవించి మర్త్యాకారమందగ
చావుపుట్టుకలనెడు ద్వైధీ
భావములఁ బడి జడునికై వడి
కేవలాజ్ఞానాంధకారమె
తావలంబగు తనువుతానను.

ఈపంచభూతాల, నిమిషిన విషయాల
ప్రాపుజేరి ప్రపంచములోపల
ఆపదలనుభవింపగను జన్మించి న
ద్రూపముచెడియేదో, రూపము నైకొని.

కాపురము జేయుచును సతిసుత
రూపతాపత్రయములను బడి
ఆపరబ్రహ్మస్వరూప ము
హాపదార్థము మఱచి తిరిగెడు

జీ.

జీ.

జీ.

శారీరకపు సారు, కారణమగుతీరు

కోరి పుత్రదా, రీషణావస్థల

జీ. మీఱగలేక సంసారఘోరపారా

పార మీదు దారి, నేరక గాఢాంధ

కారమగు ప్రారబ్ధకర్మా

గారమున జడుడగుచు తొంబది

యాఱుచక్రములున్నతనువను

నీరథంబును నడుపుచున్న.

జీ.

జీ. రేలని పగలని, కాలచక్రములోని

కీలుదెలియలే, కార్తి పాలై కల

కాలము విషయ సాఖ్యాభి నోలలాడి

యీలోకమే నిజము, చాలోచించి యెపుడో.

కూలియీ తిరుగలిని బోలెడు

కాలనిహితినీ బూడిదైతుది

ధూళిధూసరములను గలిసి వి

శాల విశ్వము విడిచి పోయె.

జీ.

* రామునిచరితము - కోమలివినచ-అనుబంధం.

మాయయు ఆప్రతి, చ్ఛాయయు గలనుప
దేయమైనయీ, కాయమే యవి
ద్యాయతమగు దే, హావరణ విక్షేప
మైయొప్పు కూటస్థ, మైయున్న పరమాత్మ
కీయుపాధియు నింద్రియంబులు
నీరజస్వత్వాదిగుణముల
నేయవస్థల నంట కదిజల
తోయజంబుల తీరు దనరును, జీ.

అణురూపముగమాటి, జననిగర్భముజేరి
జననమొంది బా,లేందు బింబాకృతి
దినదినము పెరిగి జీ, వననాట్యరంగమున
జని కాలుమోపిన, ర్తనము చేయుచు స్వీయ
ఘనమహాచరితంబు పాడుచు
వినుచు నీమూనాళ్ల సంతను
గనుచు నిది తనదనుచు తుది కల
గను విధంబున విడచినడచే. జీ.

ఈకర్మవాంఛల, చీకాకు పడిచాల
కోకమోహభ, యైకమా నూహల

ఆకాశమునకు భూ,లోకంబునకు త్రాళ్ల
తో కట్టియూగగ, ప్రాకిప్రాకియెఱుహ
ఈకలేబర మిచట విడచియు
నాకమున కేకాకియై యా
భీకరములగు పథములను బడి
పోకమునుపే తెలిసికొనుటకు. జీ.

ఆటాటుతత్వముల, మీఠినయోంకార
కారమైన యా,కారమె జీవుడు
ఆరూఢి సుషుమ్న, దారినివ్వరిముల్లు
తీరుమెఱయుచు హరిని, జేసు ధారణయందు,
ఆరహస్యముతెలిసి ఉమ
రాలిపాకవివలెను సాధకుఁ
డాటితేరి వివాద మణచియు
నూరకొను నానందమందుచు. జీ.

ఇదేసమాధి,యియ్యదే యోగ,మిదియెశాంతి
శాంతిపాతకుడా యిట్లు స్వాంతశరధి
పొంగి పొరలుతరంగాల మునిగితేలి
వ్రాసితిని గీతి యిరీతి, పాడిపాడి.



స్వసంరక్షణ సూత్రము

వల్లూరి సూర్యనారాయణ రావు

ఈ ప్రపంచమునందుండు చరాచరసృష్టిలో ఒకజీవి మరియొకజీవిని తినుచున్నగాని తాను బ్రతుకనేరదు. ఇది ప్రకృతిలో స్వభావజన్యమైనది. జీవత్వము వృక్షాదులయందఁకూడ కలదని జగదీశచంద్రబోసు మొదలగు భౌతికశాస్త్రజ్ఞులందరు ఒప్పుకొన్నవిషయమే. అట్టి జీవులను తిని కీటకాదులు, సరీసృపములు, పక్షులు, మృగములు, మనుష్యులు మొదలగు జీవరాసులన్నియు బ్రతుకుచుండుటయేకాక వీనిలో కొన్ని ఒండొరులను చంపుకొని తినుచు జీవించుట మనము కన్నులార ననుదినము చూచుచునే యున్నాము. ఈ నిరంతర మగు పోరాటములో బుద్ధిబలము, శరీరబలము కలవి యెక్కువకాలము జీవించుచు, వానిసంఖ్యను వృద్ధిపరచుకొనుచుండును. మానవునకు తక్కిన జీవరాసులకంటె, ప్రకృతిపరిణామమునుబట్టి బుద్ధిసంపద యెక్కు డగుచుండుటవలన, తాననేకపరికరములను, సాధనములను, ఆయుధములను, యంత్రములను మొదలగువానిని కనిపెట్టి తక్కిన జంతువుల నన్నిటిని తనస్వాధీనము చేసికొని వానిమీద జీవించుచున్నాడు. ప్రకృతిరహస్యములను ఇంకను పరిశోధించి కనుగొనుచున్నాడు. ఈ కారణముచేతనే తన పూర్వులును, అతిసమీపబంధువులును నగు ఓరాంగు, చింపాంజీ, గిబ్బన్, గోరిల్లా మొదలగు మర్కటజాతులను కూడ పరిమార్చి, తాను కోటానుకోట్లకొలదిగ వృద్ధియై ప్రపంచమంతయు నిండిపోవుచున్నాడు. అనేకవిధములైన ఉద్భిజ్జములను తాను జీవించుటకు పెంచుచున్నాడు. తన నాగరికత వృద్ధియైనకొలది తనసోదరు లగు అనాగరికజాతులును, నానావిధములైన వన్యమృగములును పేరు

లేకుండ అనేకలక్షలశతాబ్దములనుండి క్రమక్రమముగా కృశించి నశించిపోయినవి. ఇప్పుడును పోవుచున్నవి. ఇట్టి స్వార్థపరత్వము ప్రకృతిలో సంతటను మనకు గోచరించుచున్నది. ఆత్మరక్షణసూత్రము ఎల్లెడలను వర్తించుచున్నది.

కాని, మానవులు పూర్వకాలములో ఒకరినొకరు చంపుకొని తినుచుండినను, ఇటీవల వారి బుద్ధివికాసము వృద్ధియైనకొలది, మానవజీవిని పోషించి నిలుపుచుండుట సంఘాభివృద్ధికి ముఖ్యమని యెంచి, నరమాంసభక్షణమును మానుకొనుటయేకాక ఆత్మహత్య కూడ పాపకార్యమని శాసించిరి. అన్యజంతువుల మాంసభక్షణమునుమాత్రము మానలేదు. కాని, దయాదాక్షిణ్యములు పెంపొందించుకొని వానికి అనవసరమగుబాధకలుగజేయకుండ వానిని భజించుచున్నాడు. అట్లు వీరు చేయనిచో ఆజీవరాసులు వృద్ధియై మానవులకు తినుటకు గడ్డికూడ దొరకకుండ చేసియుండును.

“అహింసా పరమోధర్మః” అనునీతిసూత్రములన్ని మతములలోకూడ ప్రతిపాదించబడియున్నది. హింసయనగా కేవలము జీవముతీయుటయే కాదు. ఇతర ప్రాణులయొక్క మనస్సునకైనను, శరీరమునకైనను ఉపద్రవము కలుగజేయుట, అట్లుచేయతలంచుట సైతము హింసక్రింద వచ్చును. కాని, స్వసంరక్షణసూత్రమునకు ఈ అహింసాసూత్రము సామాన్యముగా లోబడక తప్పదు. “జీవితం మరణా చ్ఛేదో జీవన్ ధర్మ మవాప్నుయాత్”, “జీవన్మదాని పశ్యతి” బ్రతికియుండిన ధర్మమొనర్పదగును. ధర్మసాధనముకైనను ముందుగా,

బ్రతుకు తెరపు చూచుకొనవలెను. కావుననే ధర్మదృష్టి ననుసరించి చూచినను మరణముకంటె జీవితము శ్రేయ స్కరము. మానవులలో ఎక్కడనో కొందరు ఉత్కృష్ట మేధాసంపత్తికలిగి వాదప్రతివాదనలను దూరదృష్టితో విమర్శించి, స్థూలసూక్ష్మధర్మములను పరిశీలించి, తమ దేశముకొరకుగాని, తోడ్పడజలయోగజ్ఞేమమునకై కాని తమప్రాణముల నిచ్చెదరుగాక. ఇది యంతయు ప్రకృతి స్వభావమునకు విరుద్ధమేయని చెప్పవలసియుండును.

మనుష్యులలో వ్యాఘ్రుత్వ మెన్నటికిని పోనే రదు. వీరు వ్యాఘ్రములకంటెను నైతికవిషయములలో, అధములనియే యెంచవలెను. వ్యాఘ్రము తనయొక్కయు, తనపిల్లలయొక్కయు తత్కాలపు ఆకలిని తీర్చు కొనుటకుమాత్రమే యితరజంతువులను హింసించును. మానవుడు తనసోదరులను కొల్లగొట్టియు, హింసించి యు, ద్రోహము చేసియు తనకు, తనపిల్లలకేకాక, తనకు కలుగబోవు భవిష్యత్సంతానపరంపరకు వంశ పారంపర్యముగ నుండునట్లు ఆస్తిని నేకరించుటకు నదా ప్రయత్నించుచునేయుండును. తా ననుభవించుటకు భోగవస్తువుల కంతము లేదు. ఆశకు మేరలేదు. జీవరాసులలో మానవుడే యెక్కువ హింసను కలుగ జేయుజంతువు. తనకుటుంబమును, తనజాతిని వృద్ధిపరుచు కొనుటకు ప్రపంచములోనుండు నానావిధ సృతలతా గుల్మములను, తక్కినజీవరాసులను తానువశపరచు కొని, ప్రపంచమునంతయు నేలుచున్నాడు. తనకు, తన జాతికి హానిచేయు జంతువులను చంపివేయుచు తాను తినదగినప్రాణులను మచ్చికజేసికొని తానిని పెంచుకొని తినుచు, తనపొట్టపోసికొనుచున్నాడు.

మానవకోటిలో వ్యక్తులమధ్యనే యిట్లు హింస ప్రబలియున్నపుడు, జాతులనుగురించి వేరుగ చెప్ప నక్కరలేదు. ఈ ప్రపంచములోని వివిధ మానవసంఘములు, పిల్లలు ఒండొంటితో పోరాటములుసల్పుచు, బలహీనమైనవానిని పెద్దవిమ్రంగివేయుచు వీలుగానిచోట్ల సంఘిచేసికొనుచు సామదానభేద దండో

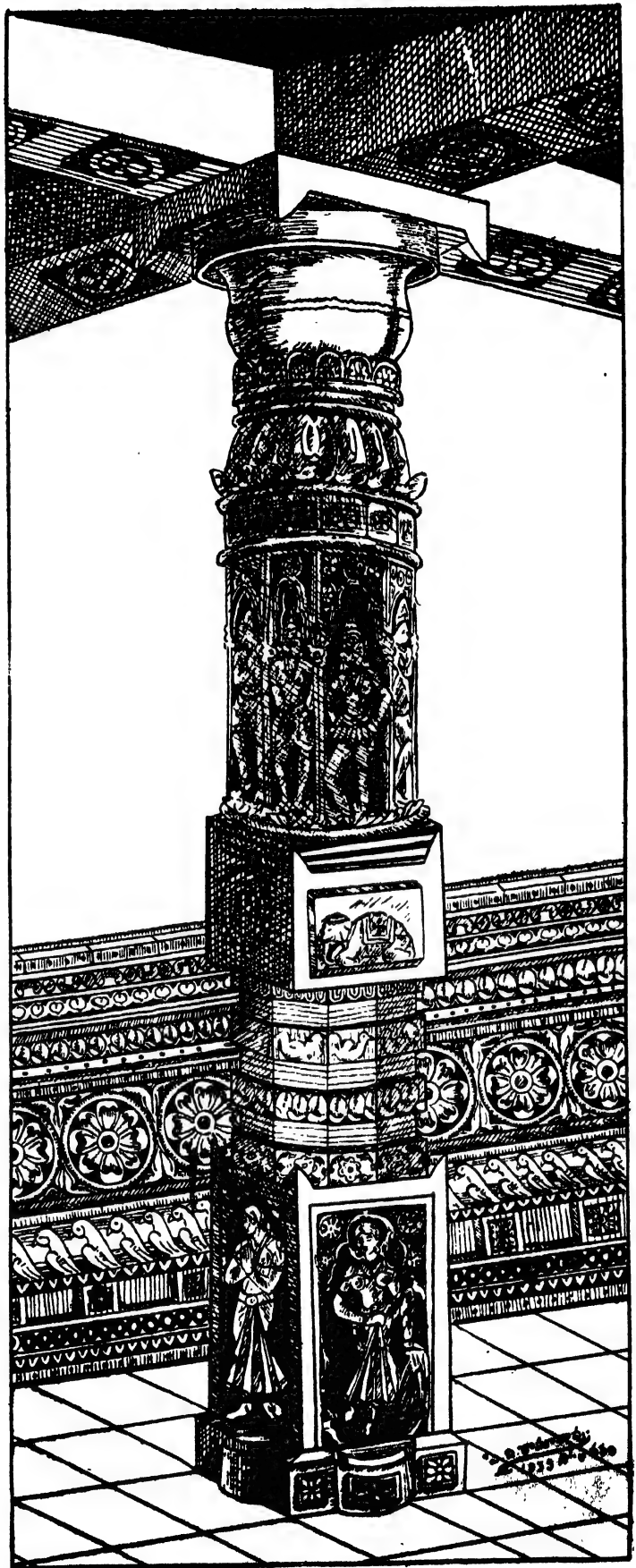
పాయముల నుపయోగించి జీవించగలుగుచున్నట్లునానా దేశచరిత్రలు స్పష్టపరచుచున్నవి. ప్రతికుటుంబములో ధనవంతులు, ప్రయోజకులు, దరిద్రులు - ఎట్లు వంశ పారంపర్యముగ మార్పులు జరుగుచున్నవో ఆవిధము గానే మానవసంఘములకుకూడ వృద్ధిక్షయములు కలు గుచునేయుండును. నేటికిని అట్లే జరుగుచుండుట మనము చూచుచునేయున్నాము. మానవసాభ్రాత్ర మనుమాట కొందరి నాలుకలమీద ఆడుచుండునేగాని ఆచరణలో ఏజాతిలోను లేదని యాయురువదవశతాబ్దములో కూడ స్పష్ట మగుచున్నది.

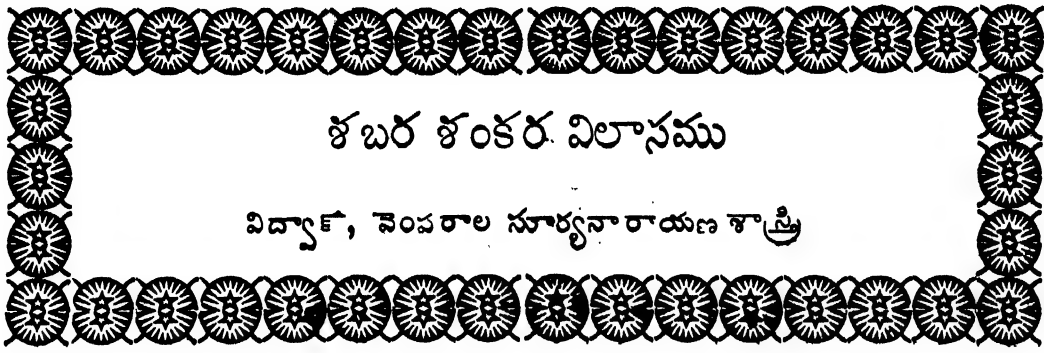
కాబట్టి గాంధీమహాత్ముని అహింసా సూత్రము నకు దేశకాలపరిస్థితులనుబట్టి అనేకములు మినహాయింపు లకు అవకాశము లున్నవి. ఈయన నరమాంసభక్షకుల సంఘములో నుండుట తటస్థించునెడల, ఈ సూత్రము లకు ఆసంఘమువారిని ఒప్పించలేదు సరికదా యీయ నయే జీవించుట కడుదుర్లభము. భగవద్గీతయే దీనికి దృష్టాంతము. దాని యుపక్రమోపసంహారములే యిం దుకు తార్కాణము. సామ దాన భేద దండోపాయ ములు సర్వదా ఆయా కాలపరిస్థితులను బట్టి, సంఘము లోని అధికసంఖ్యాకుల యభిప్రాయమును బట్టి ఉపయోగపరచబడుచుండును. అట్లు చేయనిచో ఆ సంఘము జీవించనేరదు. బలమైనజాతికి బానిసయై తుదకు దానిలో కలసిపోవును గాని, దాని ప్రత్యేకతను నిలుపుకొనజాలదు. ఈ అంతర్జాతీయ మగు పోరాటము ఎన్నటికిని సమించదనుటకు నానాజాతినభయము, ఆయుధ విసర్జనసభయము, ఆర్థికవిషయకసభయము విచ్ఛిన్న మగు చుండుటయే ఒక గొప్ప దృష్టాంతము. దొంగలు దొంగలు కలసి ఊళ్లు పంచుకొనునట్లు బలవంతులైన కొన్నిజాతులు బలహీనజాతులను పీడించుటకే యిట్టి సభలు యేర్పాటైనపుడు, వారిలోవారికి పాళ్లు తెగక యెవరిస్వార్థమును వారు రక్షించుకొన ప్రయత్నించు చున్నారు. ఇది ప్రకృతియొక్క స్వభావలక్షణమే కనుక మన మాశ్చర్యపడవలసినపని లేదు. ఈ విధానములో

స్వసంరక్షణసూత్రము

తప్పాప్పులు పాటింప నక్కరలేదు. చర్చల కఠీతమైనది. స్వసంరక్షణకొరకు అట్లు ప్రతిసంఘము చూచుకొననియెడల అది అస్వాభావిక మనే యనవలెను. త్యాగము మానవునికి స్వాభావికము కాదుగనుకనే, అది వారిలో అరుదుగ కనుపడుచుండును. దానిని ఉత్కృష్టధర్మముగా ప్రజ లెంచుకొనుట తటస్థించుచుండును. ఇట్టి మానవస్వభావమును మార్చుకొననియెడల, మనము శత్రుతుల్యులమని వేదాంతాలు చెప్పుచుందురు. అట్లుగాక మరియేమి?

ఈనూతననైతికాభివృద్ధి అనేకవేలసంవత్సరముల క్రిందటనే మొదలుపెట్టబడి వ్యక్తులలో ప్రబలి సంఘము కట్టుబాట్లకు, సంఘసిద్ధివ్యయముకొరకు సాంఘిక, మత, రాజకీయశిక్షలవలన పెంపొందచేయబడినవి. కాని, యీనైతికమార్గము, కడుపుకాలుచున్నపుడు ప్రజలంగీకరించుట అసంభవము. మతసాంఘికరాజకీయనిబంధనలన్నియు స్వసంరక్షణసూత్రము నుల్లంఘించితిరుననియే పాలకులు పాలితులుకూడ యెరిగియుండి, పట్టు విడుపులతో రాజ్యపరిపాలన కావించుచున్నారు. వారిలో బలహీనజాతులు, స్వసంరక్షణకు వివిధోపాయములను ఆచరణలో పెట్టుచుందురు. ఆంగ్లేయపార్లమెంటులో, నిజమును మరుగుపరచుకుండ కుండబ్రద్దలు గొట్టినట్లు చెప్పువాడు చర్చిల్ దొర ఒక్కడే. తక్కినవారు తమ నిజాభిప్రాయములను మరుగుపరచి, రాజనీతి తంత్రజ్ఞులుగా ప్రవర్తించి తమదేశజలస్వార్థమును జాగ్రతగ కాపాడుకొనుచు, మనకు కొద్దిమెతుకులు పారవేయజూచుచుందురు. 'మొండివాడు రాజకంటే బలవంతు' డనుసామెతనుబట్టి మనలో కొందరు సహాయనిరాకరణవిధానము నవలంబించెదరు. వీరిలో ఎవరికిని అహింసాసూత్రమునందు నమ్మకము లేదు. స్వసంరక్షణకొరకే యీసామదానభేదదండోపాయములు వ్యవహరించేతను, సంఘములచేతను అవలంబింపబడుచున్నవి.





శబర శంకర విలాసము

విద్యాక, వెంపరాల సూర్యనారాయణ శాస్త్రి

[ప్రదేశము:—హిమవత్సర్యమందలి వనము.

పార్థివలింగమును బూజించుచుఁ దపస్వివేషధారియగు నర్జునుఁడు ప్రవేశించును.]

అర్జు:—(ధ్యాననిమిత్తాత్మకఁడై ఫలమున నంజలిపట్టి)

బాలశకాంకశేఖర, యపారకృపాకర, ముక్తివల్లికా
వాల, మునీంద్రమానసనివాస, జగత్పతి, సర్వమంగళా
క్షీతితవామగాత్ర, నిజశింకరకింకర, దేవదేవ, నా
పాలిటి కల్పకంబ, పరిపాలననేయవె నన్ను శంకరా!

కారవనాగకల్పితనికారమునకా సహధర్యచారిణీ
గౌరవభంగముకా గమలఁ గాంచి, త్యజింపఁగలేక ప్రాణముతో
భీరువులట్లు కుండు చుటవికా బహిష్కరించెను మాకు నీపదాం
భోరునాముతోగదా శరణముతో జగదీశ్వర, శంకరా, హరా!

తల్లి యనాధయై ట్లడలు కాయలయింబు వసింది; బిడ్డలలో
తల్లిని బాసి, రన్నలును దమ్ములు ద్రోపది కామ్యగంబునఁ
దుల్లల పొక్కుచుండు, రిట నొక్కడనేఁ దపమాచరింతు నీ
స్థలితాంఘ్రిపద్మయల స్వాంతమునకా ఘటియింది శంకరా!

బాల్యంబాది విరోధనూని మముఁ జంపకా జూది, చాకున్నదా
శీలం బొప్ప, దురోచరంబున మహీశ్రీమానముతో గొంచు హృ
చ్చల్యంబా నల ధార్తరాష్ట్రుని సపుత్రక్షేత్రమిత్రానుజా
త్యాప్తంబుగఁ గ్రుంప కెక్కరణి నాస్వాంతంబు కాంతం బగునా?

పారాశర్యమహోపదేశమున జంభద్యేషి నేవించి, త
త్సారాస్త్రంబులఁ బొంది, పాశుపతమంత్రశ్రేష్ఠ మార్జించి యా
చారం బొప్ప జపింతు నెన్నఁటికి నోచంద్రార్థకోటిర, యీ
దారిక వత్తువా? వచ్చి వత్సలతఁ జేతఃకాంక్షితం బిత్తువా!

(కన్నులుదెరిచి నలువంకలఁ గాంచి)

తారైపాటెను కొండయేగుల, దమంతకా బుట్టి పుష్పచ్చదాం
కూరోదారములైన భూరుహలతాకుంజమ్ములకా, సుస్వర
క్రూరజన్మకళాకలాదికమునకా, జెల్లెస్వరభావోత్కలం
కారోదారణంబుగా వెలయు నీకాంతార మూహింపఁగా.

అభిలాషయవతాప మాటంగ సోకెను శీతలపవనానపోతములును
గమలకుఁ జల్ల నై కనుపట్టు కోమల క్యామలచ్చదమహాభూమిజములు
శ్రవణపర్యంబుగా రవళించు పరభృత శారీపికాదిద్విజాతిగణము
రసనారసాయనక్రమమైన కైలాగ్ర విశ్వవృతనిర్మల విమలజలము

నాసికాపుట సంతర్పణంబు సలుపు

సకలసుమగంధములును నైసర్గికముగఁ

గలుగుచుండంగ మును లేల కానవిడిచి

కృత్రిమసుఖంబు గార్హస్థ్య మిచ్చుగింఁగ్రు.

ఎంతసుఖంబులేనిదె మునీంద్రులు దారసుతాదివైభవం
బంతయు రోసి యాకలము లాకటికికా దినుచుకా మహీరుహ
ప్రాంతము లాశ్రయించి చలిభాగకు నెండుకు మేనొసంగి యా
త్మాంతరుపాధులై వనములందుఁ దపింపఁగ జెట్టివారొకో!

ఫలవళజలంబు లొక్కొక్క

నెలనోజనముగను మూఁడునెల లరిగిన నీ

నెల వాయుమాత్రభక్షణ,

మలవటిచిన నదియు శివువయకా సుఖమిచ్చునా.

(నుటియొకవంక దృష్టిసారించి చూచి)

ప్రళయకాలపయోదవలంబు నటు మీటు కర్మశనీహకలికతమవు
మగ్ధమానాభిభ్రమన్మందరధ్వనిఁ గొనగోటఁ జిమ్ము ఘుర్గురరవంబు
సంచరద్వనమృగకింవిద్ధ్వనిశ్రుతిగళితానలకణిక్షణంబు
భూజాతమూలసమున్మూలనపటిష్ఠదంఘ్రివిభూషితోద్దండపోత్ర

మమర నల్లదె యొక వరాహంబు సర్వ

చేతనభయావహంబు నిస్సీమవేగ

ధూర్వహంబయి కనుపట్టు దూరమందు

(సంభ్రమముతో) వపునిటులై వచ్చుచుండె నేలా యుకేతు ?

కోదండకాండతూణి

రాదుల ధరియింతు నింక నాఁగిన వన మీ

భూదారముపాలై చెనుఁ

గాదన కిటుఁ బూనవలసె కృత్రిము నిపుడే.

(ధనుస్సునియే నిలిచి)

చాపవిముక్త కాశకరసామ్యమునకా రయమొప్పు ఘోషి యీ
దాపున కేగుదంచె నితఁ దప్పక గాంధీవముక్తబాణధా
రాపతితం బొనర్చెద;—విరాగిని నాకు నగర్మ—మైననే
నేపగిదికా వృథామృతి సహింతుఁ బ్రతిక్రియ నేర్పియుండియున్.

ఇదె విడిచితిఁ గోలముపైఁ

బ్రసరం బీదబృహదేఁ బడి మృతిగను—న

ల్లదె వేటొకబాణము నా

ప్రదరముతోఁబాటె యవలిప్రక్కను దాఁకెన్.

ఇది యెటునుండి వచ్చెనొకా—(బాణమువచ్చినవంకఁదేటిపాటఁజూచి)

యెవ్వఁడో యొక్కకిరాతుఁ డట్లు య

ల్లదె కనుపట్టు—కాశకరసామ్యముతో కయిఁబూని వచ్చుచుం
డెఁదరిన యూర్పులూర్పుచు గణిల్లుగణిల్లుని కంఠశృంఖలతో
రొదయెనరింపఁ గుక్క లవె రూక్షనిరీక్షణ మొప్పు వచ్చెడున్.

మాకలిడుచు మైకొకల

కాకులు ధరియించి కాకులటు గుంపయి, కా

లాకృతుల శబరసేన ల

వే కావించిని హసించి యేతెంచు వడిన్.

కాంతు లొకింత డీలుపడ ఘర్మజలంబులు ఫాలపట్టికా
క్రాంతములై కపోలములఁ గ్రమ్మగఁ బయ్యెద నొత్తునుకా, లలూ
టంతపభానురోచి కకటా! కనుదమ్ములు వాడుదేర, నా
చెంతనె యుస్సురుస్సురని చెంచిత వచ్చుచునుండె నల్లదే.

వేటకు నీశబరుఁడు రా

నోటు నబలుఁ డగుచు; వీని క్కొటువడి నిరా

ఘాటజవంబున నీకిరి

నాటెంకిఁ బాటుదేర, నారస మేయున్.

ఆయమ్మును, నాయమ్మును,

గాయమ్మునఁ జొచ్చి యసునికాయముఁ గొనఁగాఁ

గాయ మ్మిలపైఁ బడి కిరి

మాయమ్మైపోయె నేమిమాయయొ యపురా!

నిట్టూర్పులు దందడిగొనఁ

గట్టలయిక మాటరాక, గరమెత్తి, ననుకొ

గిట్టుగతి యలుకయాపుల

నుట్టిపడఁ గిరాతుఁ డేమో వివఁబుకున్.

(యథోక్తరీతి శబరుఁడు ప్రవేశించును)

శబరుఁడు:—

అపురా యెంతగఁ బోతరించిత మృగవృత్తాంత మూహింప, క
న్యదనాటకులక్ష్యజంతుహాననవ్యాపారముం బూని రి

యనితేకం బెట్లనెర్పకొంటివి వరాహం చేమిగానీ! దుర
ధ్వనిహారికా నినుఁ దొల్లఁ గూర్పు నిదె చాపం పెక్కుడింపకొజుమి.
శిరమునఁ గంజవతో, మెయి నశేషమునకా బసుమంబు, వల్కులాం
బరములుఁ దాల్చి మానిమహిమకా గనుపట్టుచు, విల్లు దాల్చి, ని
ష్కరుణపు వ్యాధివీరము గైకొని,యందును నీతితప్పి నా
శరమున కడ్డువచ్చెదవె? చంపకయందునె యిట్టి నీచునిన్?

మూఁచుడినాలనుండి జలముకొన న కన్నము నిద్రలేక యీ
క్రోడమువెంబడికా గిరులుఁ గోసలుఁ గానలుఁ జొచ్చిచొచ్చి యీ
నాఁ డగపడ్డ సంతసిరి నాదొరసానికి దీని మాంసముకా
నూడినసేయ నేయ, నెడఁజొచ్చితివే శ్రమమెల్ల వమ్ముగన్.

భంగములేకుపాయనము పట్టితివేని ననుకా స్వయంగ్రహా
లింగనలాలికుకా జలిపి లేమ మనంబు నొనంగనుండ నో
వెంగలి, యడ్డువచ్చితిని, వేయిపునర్జననంబు లైతిన్కా
సంగతమానె యిట్టితరుణం, తెలు నైచెద నిట్టి నిన్నికన్.

అరు:—(సక్రోధముగా)
దుర్మదవృత్తిఁ జిత్తమునఁ దోచినవైఖరిఁ బ్రేలుచుంటి మ
త్కార్యక మింతకుకా సయిచెఁగాని యింకా సహింపనోప, దీ
దుర్మఖతాప్తి మాని, తొలుదొల్ల భవత్సరిగండపాలికా
నిర్మితప్రభంగకమనీయతఁ గాచికొనంగ నెంచుమా!

మాకును లక్ష్యలక్షణసమన్వితమే మృగయానయంబు, నేఁ
డికడ మాని నాయుఁ దపియించుట శత్రుకృతావమానముకా
బోకడవెట్టి నెంచి గుమి; పుట్టుక రాచకాలంబునందు; నీ
మాకలకే చలింతునొకా కొమ్ము శరసము పల్కు లేటికిన్.

ఎవడనటంచుఁ జిత్తమున నెంచితివో చతుర్థవీర
తమకుమతీంద్రమాళిమణిధాగధగీపరిచుంబితాంఘ్రియంకా
వివిగమహాగ్ధరవ్రతపవిత్రతమూర్తియు నైన పాండుభూ
ధవుసుతుడకా యుధిష్ఠిరుని తమ్ముడఁ ద్రోణుని ముఖ్యశిష్యుడనన్.

ఖాండవ మగ్ని కొనఁగి యా
ఖండలముఖ్యామరేంద్రగణము నోడిచి యీ
గాంధీవముఁ గొనిన మహా
ద్దండుడఁ బార్థుండ నన్నుఁ దాఁకెద వటరా.

కానీరా భుజకండుపుకా దోలచి చక్కకాజేనెడకా ధర్మజాం
దానాఁ డున్నతి రాజనూయమును జేయకొబూన నానావనీ
జానివ్రాతము నొంచి విత్తములు మెచ్చకా దెచ్చు కొరొగ్గియీ
లోనకా డిందనటంచు నెంచకుర లోలో రాజాచుండకొజుమా.

శబరుడఁ దీవు నీతియును జాతియు మాలిన మూర్ఖ వంతెకా
దబలకు దేనామే నొనగనట్టి మనోజరుజాకరుండ నె
ట్లు బవరమందు నిల్వ? వనిలో నినుఁ జంప ఫలంబు గున్న,
శబరీ సుమంగలీత్య మెడనెల్పుటమాత్రము తక్కు నిష్పిరో!

ఎటుక యసుమంత లేఘిని
'నెఱు'కన వ్యతిరేకలక్షణేరితనామం
విరవొందు నమంగళవా
సరమునకును మంగళాఖ్య సమహరిటున్,

శబరుడు:—(మండిపడుచు)

న్యాయములేప్పి నాకు గుఱియైన వరాహముఁ గూలనేసియున్
బోయవు మూర్ఖ వం చనెదు; మూర్ఖుఁ డెవండో తలంచి చూడు, మీ
చాయవనింప నీకవఁ డొసంగ ననుజ్ఞ? మదాజ్ఞ లేకయే
యాయెడ నుం బెకాక, తగవీగు పెకా కిటు ప్రేలఁజొచ్చితే!

పాండుసుతుడవో లేక యాఖండలాత్య
జంఘవో యెవ్వఁడైన నొక్కఁడెనాకు
గాండివమొ బెండో నాకేల? భండనమున
సర్వ మెఱుంగంగ ననుఁగాదె తులములొన.

అటుఁగక చేసినాడె తుమియింపుము న"న్నని వేడ కీక్రియన్
విరుసుదనంబు మానవు; విభీషికలకొ వినినంత భీతిమై
జొఱుగుదునే నినుకొ గఱకుఁదూపులకొపుల రూపుమాప; కె
జ్జెఱుకులరాజు నైతి నిటులే నినుబోటుల కోహటిల్లువోన్.

ర మొకించుక పురుషకారముగలాడ
వేని ధను వందికొను మది యిపుడ తెలియుఁ
గాతరుడవేని యొకననుస్కార ముంచి
చనుము 'శరణ'న్నఁ జంపమి శబరసీతి.

(అని యిరువురును విండ్లెక్కిడి యుద్ధము నేయుచుండుదురు)

శబరి:—

దిగ్దంతర్గత బాధిర్యసంధానుక జ్యోతింక్రియాప్రచండారవంబు
పుంఖానుపుంఖవిముక్త బాణగరుచ్చటాచ్చానతాశావి యత్తలంబు
తత్త్వనభజన దర్పవాచాట్టహాసాహోపురుషికాసమంచితంబు
నన్యోన్యసంప్రయోక్తాంబక దిశనక్రియాసఘలక్ష్యరిజ్ఞానయుతము

నైన యీవీరపురుషఘోరాహవంబు
నకట! దూరస్థిని నిల్చి యరయు నాకు
నవరె గుండెలు, ప్రాణముల్ చెదిరె, భయము
ముదిరె, జెనుటలు గదిరె, సమ్మాహ మెదిరె.

అటునిటుపడు ఖండితాశుగంబులుదాఁకినిదురించుపులిండు బెదరిపాఱఁ
దప్పించుకొను నంపతాఁ కునఁగుంభికుంభములు భేదిల్లి ముత్యములురాలఁ
బాదాభిఘట్టనఁబనువృక్షములక్రిందసమటుంబముగమ్మగీచయ మడంగఁ
బైకేసు కూపుల సోఁకొంది పక్షులు విలనిలఁ దన్నుకొం చిలసు గూల

వెనుకముందటఁ గ్రిందమీఁదను గనంగ
సర్వతోముఖముగ వనీపలము విలయ
భావపరిపాకమునఁ బొందె నీవిపత్తు
తత్త్వజేయు సమగ్ధ లీధాత్రి గలరె.

(శబరు నూచించుచు)

అయ్యయో! పార్థుఁడైన యంబకంబు
ఫాలమునఁ గాఁడి ప్రారేయభాను మ్రింగి
వ్రేలు రాహువుచందాన వ్రేల నాథుఁ
డొఱుగుచున్నాఁడు మూర్ఖిల్లి ధరణిమీఁద.

అహహ! యంతటిలోన లేఱుకొని చండాస్త్రంబులకొ కాత్రవుకొ
నిహతుండేసి తదంబకంబులను దూఱిరంబులకొ కాంబరీ
పిహితం బొనటు నేయ; డిల్లపడి కంపింపంగ దేహంబు, దు
స్సహకొపంబున వింటున్నాఁడై బలిమస్తం బర్జునుం డయ్యయో.

(సంతోషముతో)

బెండువడక నాయకుఁ డ
గ్గాండివము గంగపాలుగా మాయమొన
ర్పిం; డీలుపడియు నరుఁ డదె
ఇందాగొని మోదె నకట! కాంతుని తలపై.

అబ్బురం! బల్ల కత్తి మాయంబొనర్చి
నామనోహరుఁ డదె చిఱునగవుతోడఁ
బలుకుచున్నాఁడు విస్మయభయదురంత
కొపఘూర్ణితహృదయుడో కుంతిసుతుని.

శబరుడు:—

దండమువైట్టి యిష్టయిన 'దాసుఁడ'నం చన వీడువాఁడఁ గో
దండము మండలాగ్రము వృథాయగుటకొ గనియుంటి, వింకనుకొ
భండనవాంఛ డెండమునఁ బాయవయేని భుజాభుజికొ సమి
త్కొండముఁ బూర్ణముకొ జలిపెదకొ గ్రహియింతువుగాక తద్రుచిన్.

అర్జు:—(తనలో)

నిర్జరనాధాదులకుకొ
దుర్జయమయి వెలుగు నాధను స్త్రీశబరం
దూర్జస్త్వయయి హరించెనె
యర్జునుఁ డిక బ్రదుక నేల యవనికి బరువై.

(ప్రకాశముగా)

మాయలమారివై రణసమర్థత చాలక చాపఖడ్గముల్
మాయమొనర్చు నిన్ను నసమానమదీయభుజద్వయోఘుర
ట్రాయతయంత్రమార్జితనిజాంగుని జేయక వందనంబులకొ
జేయుదునంచు నెందియె వచించితే? రమ్మికఁ జూతు వారుచిన్.

శబరి:—

ఉరములు పొంగ, బాహువుల నొక్కరవంబుగ నప్పించుచుకొ
బెరిగి గభీరయానములఁ బృథ్వి చలింపఁగఁ, దానకంబులకొ
వరలుదు, నొండొరుకొ గదిసి, పాయుధుఁ, బట్టుచు, దోర్మగంబులకొ
బోరిఁబోరి నొంచుకొంచు, నది పోరుచునుండిరి మల్లపద్ధతిన్.

వికాశవర్ధనము నొనరించుచుండలే ఉపకారము. 2. అంధ్రదేశసంచారము ముగించి హిందూమతమును మైముద్రనము
 3. కాశీలో జూర్పించియు ఉపకారము. 4. మైముద్ర ప్రయాణోద్ద్యమము.
 5. మైముద్రోద్యమమునాటికి నొనరించుచుండలే ఉపకారము. 6. మైముద్రోద్యమము.

